









## अथ प्रथममुद्रणकालिकी-प्रस्तावनिका ।

श्रीमद्भारते वर्षे तीर्थराजश्रीपुष्करादुदीच्यां दिशि पंचदशयोजनानन्तरं मरुसङ्गदेशे बीकानेरविषयान्तर्गतश्रीरत्नगढनिवासिना गौडवंशावतंसश्रीगुह्ययजुर्वेदीयमाध्यादिनवाजसनेयिना शिवालपाह्वयेन श्रीरामकृष्णपौत्रेण श्रीकस्तूरीचन्द्रात्मजेन पंडितश्रीचतुर्थी लालशर्मणा मया 'श्राद्धप्रकाश' नामाख्यग्रथोऽनेकनिबंधानुरोधेन कृतः, अत्र च हेमाद्रिः, पराशरमाधवः, कात्यायनमन्त्रम्, कर्कभाष्यम्, काशिका, देवयज्ञिकभाष्यम्, पारस्करमन्त्रम्, हारिहरभाष्यम्, मनुस्मृतिः, मेधातिथिगोविंदराजौ, याज्ञवल्क्यः, मितक्षरा, वृद्धपाराशरी, मदनरत्नम्, स्मृतिसंग्रहः, अष्टादशस्मृतिः, अष्टाविंशतितत्त्वानि, यजुर्वेदीयश्राद्धतत्त्वम्, निर्णयामृतः, मदनपारिजातः, त्रिस्थलीसेतुः, श्राद्धमथूलः, ब्राह्मणसर्वस्वम्, पितृभक्तिः, मत्स्यपुराणम्, कूर्मपुराणम्, बृहद्भरुडपुराणम्, ब्रह्मपुराणम्, वायुपुराणम्, अत्यष्टयर्कः, स्मृतिचंद्रिका, शतपथब्राह्मणम्, इत्यादिमहानिबंधेभ्यः प्रमाणान्युपसंगृह्य बहुशो वारंवारं विचार्य अनेकशान्नाधर्निर्णयविभूषितपद्धतिसंग्रहेऽकारि एतादृशो गौडानां महानिबंधोऽयमनेकपण्डितैः संशोध्य टिप्पणीभिश्च सनाथीकृत्य सुबय्याख्यराजधान्यां स्वधर्मपरायण वैश्ववंशावतंसश्रीयुतश्रीकृष्णदासात्मजाय श्रेष्ठिश्रीक्षेमराजगुप्ताय तदीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये सीसकाक्षरैः सुन्दरचिह्नगुह्येषु मुद्रयित्वा प्रकाशयितुं परमसंमानसंतुष्टचेतसा मया समस्तपुनर्मुद्रणाद्यधिकारप्रदानपूर्वकं दत्तः । स चोक्तश्रेष्ठिना श्रीक्षेमराजेन स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये मुद्रयित्वा प्रकाशितः । इतः परमन्यः कश्चिदपि पुस्तकव्यापारी मुद्रणसाहसं मां कार्षीत् । अभ्यर्थये च विद्वदग्र्यान् । सदयहृदयेन सगिकगुणग्रहणसदृष्टौ विद्वद्भिरयं ग्रंथपरिश्रमः कृतकृत्यः करणीयः । यदि च, अस्य शोधनसमयेऽनवधानाद्वदोषाद्वा स्थलविशेषे क्वचिदोषो दृश्येत, स च विद्वद्भिः क्षंतव्यः शोधनीयश्चेति शम् । श्रीकस्तूरीचन्द्रात्मजपंडितश्रीचतुर्थीलालगौडः ।

## प्रस्तावना ।

विदित हो कि शत्रुओं का त्याग होने के अनेक उपाय लिखे हैं, परन्तु जैसा श्राद्ध करने से होता है वैसा और किसी से नहीं होता है; उक्त च द्वाभ्यां व्योमेन--“श्राद्धाभ्यन्तरं नास्ति श्रेयस्तत्पुनराह्वयम् । तस्मात्सर्वव्योमेन श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः ॥” देखो-“अयोगी प्रक्षालयश्च विप्रयुः पुन्योक्तावन् । सर्वव्योमेनो जै च श्राद्धकारी भवेदिह ॥” इत्यादि अनेक मन्वादिवाक्यों से श्राद्ध करना श्रेष्ठ है, पांच कलिकाळनी प्रवृत्तता से तथा युगहास होने से मनुष्यों की बुद्धि नास्तिकता से बच होगई इस कारण बहुत मनुष्य विप्रियों के संतो से तथा शत्रु के अन्याय से और धूर्त लोगों के कटने से तत् शत्रुका विवास नहीं करते हुए श्राद्ध न करने में अटक बैठ निकालते और प्रत्यक्षमाण दिखाते हुये श्राद्धादि महायज्ञको विपत्त कहते हैं तथा भोले भाले मनुष्यों को वैदिकनातकर्म से बच करके अर्थमार्ग में लगा देते हैं सो बड़ा ही हानि है । महाभाग ! जैसे यज्ञादिकों में मंत्रद्वारा इंद्रादिकता शक्तिक के अपने २ स्थल में आते हैं । यमानका विषय हुआ पूजन होम बलिदान आदि कर्मों में दिये हुये हविः (पदार्थ) को देखके तुम होते हैं और यमानके प्रयायको समझ करके, इसी प्रकार श्राद्धों में भी “अयमु नः पितरः” इत्यादि वेदमंत्रद्वारा आये हुये पितापुत्र वयुरूप होकर ब्राह्मणके शरीर में स्थित हुये नाना प्रकारके पाप आदि पदार्थों को उतार देते हैं । फिर पुत्रादिकों को आयु, पुत्र, धन, संपत्ति आदि अनेक काम्य मनोरथों को देते हैं । देखिये संपूर्ण ही जात पशुकुल कर्मों में प्रवृत्त होता है निष्कल कर्मों को देता है । जैसे यज्ञादिकों में देवों को फलदातृत्व है ऐसे श्राद्धादिकों में दिव्यपितृताओं की फलदातृत्व है । किन्तु नैक नास्तिक हेतुवादी कहते हैं, इंद्रादिकता तो चेतनाविशिष्ट ज्ञानक्रियाशक्तिनाल है इसलिये वेदमंत्रद्वारा कहे गये आते हैं । परंतु श्रुत पिता आदि मनुष्यापुत्र तो स्वस्वकर्मानुसार नानायोगियों में गये हुये देवशक्तियों को अतीन्द्रियता पूर्णरिति से है तथा पदार्थको दर्शनमात्र से ग्रहण कर सकते हैं ? यदि आते हैं तो फिर देखते क्यों नहीं, आप क्यों कि इंद्रादिकता क्या दिखाई देते हैं ? पांच देवताओं की तो अतीन्द्रियता पूर्णरिति से है तथा पदार्थको दर्शनमात्र से ग्रहण कर सकते हैं ? यदि आते हैं तो फिर देखते क्यों नहीं, आप क्यों कि कर्मानुसार नानायोगियों में भ्रमण होते हैं किस्मस्मात् श्राद्धदर्शन से आते हैं ? और कैसे उतार होते हैं तथा पदार्थको दर्शनमात्र से ग्रहण कर सकते हैं ? और पितरों की अतीन्द्रियता का अभाव होने से तथा अपने किस प्रकार मिळता है ? इस लोक में दिया हुआ अन्न पालेकशायियों को नानायोगियों में गये हुये को क्या मिळता है ? क्या पि नहीं मिळता है ? इस प्रकार नास्तिक लोग कहते हैं; पांच जैसे इंद्रादिकता में चेतनाविशिष्टाति है वैसी ही दिव्यपितृगण अग्निवाचादिकों में भी तब शक्ति है और पितरों की वसु, रुद्र, आदिय विधेयवर्ण भी तो सहायता करते हैं तो फिर श्राद्ध क्यों नहीं मिळता, कस्यही पितागणों को मिळता है । जैसे गर्भवाती स्त्री आने खाये हुये अन्न काके आप भी तृप्त होती है और अपने गर्भको भी पोषण करती है तथा अन्नदेवताओं को भी उपहार करते हैं भेरी वसु रुद्र, आदिय, देवता भी श्राद्धके अन्नको देखकर तृप्त होती हैं और अपने अर्धांग पिता आदिकों को भी तृप्त करते हैं तथा श्राद्ध करनेवालों की भी मनोरथ पूर्ण करते हैं । और अग्निवाचा आदि दिव्य पितृगण मंत्रशक्तिक के नापानेद्वारा पुत्रादिकों का दिया हुआ अन्न नानायोगियों में गये हुये पितादिकों को तत् तत् योगिके योग्य भस्म पदार्थ पुराते हैं । और पुत्रादिकों को उन्नम फल देते हैं जिसके प्रमाण के लिये नचें धराशक्ती कवन लिखते हैं सो कृपाकरके देखना और समझ पढ़ना ( मनुस्मृति-मन्यपुत्रगण-पद्मपुराण-महाभारत-गण्डपुराण-मार्कंडेयपुराण-हेमाद्रि ) ।

“सौषडीकरणे जाते गतादे च स्वर्गमभिः । देवावं वा मनुष्यावं पितृवर्गान् । १ ॥ विभिन्नाहाराणां आहारे वै तु भेद कथ्यः । पदव्यन्त्येद्विभुक्तं दूयते यदि बालः २ ॥ शुभाष्टुभासकैः प्रेतैस्तद्वचं मुञ्जते कथम् ॥ आद्वयव्यवहारकं तु अमावस्यास्य ३ ॥ ४ ॥ तस्यान्नाममृतं भूत्वा देवत्वेत्युपाति च ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥ २०१ ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ २०९ ॥ २१० ॥ २११ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥ २१६ ॥ २१७ ॥ २१८ ॥ २१९ ॥ २२० ॥ २२१ ॥ २२२ ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ २२५ ॥ २२६ ॥ २२७ ॥ २२८ ॥ २२९ ॥ २३० ॥ २३१ ॥ २३२ ॥ २३३ ॥ २३४ ॥ २३५ ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥ २४१ ॥ २४२ ॥ २४३ ॥ २४४ ॥ २४५ ॥ २४६ ॥ २४७ ॥ २४८ ॥ २४९ ॥ २५० ॥ २५१ ॥ २५२ ॥ २५३ ॥ २५४ ॥ २५५ ॥ २५६ ॥ २५७ ॥ २५८ ॥ २५९ ॥ २६० ॥ २६१ ॥ २६२ ॥ २६३ ॥ २६४ ॥ २६५ ॥ २६६ ॥ २६७ ॥ २६८ ॥ २६९ ॥ २७० ॥ २७१ ॥ २७२ ॥ २७३ ॥ २७४ ॥ २७५ ॥ २७६ ॥ २७७ ॥ २७८ ॥ २७९ ॥ २८० ॥ २८१ ॥ २८२ ॥ २८३ ॥ २८४ ॥ २८५ ॥ २८६ ॥ २८७ ॥ २८८ ॥ २८९ ॥ २९० ॥ २९१ ॥ २९२ ॥ २९३ ॥ २९४ ॥ २९५ ॥ २९६ ॥ २९७ ॥ २९८ ॥ २९९ ॥ ३०० ॥ ३०१ ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥ ३०४ ॥ ३०५ ॥ ३०६ ॥ ३०७ ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥ ३११ ॥ ३१२ ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥ ३१५ ॥ ३१६ ॥ ३१७ ॥ ३१८ ॥ ३१९ ॥ ३२० ॥ ३२१ ॥ ३२२ ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥ ३२७ ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥ ३३१ ॥ ३३२ ॥ ३३३ ॥ ३३४ ॥ ३३५ ॥ ३३६ ॥ ३३७ ॥ ३३८ ॥ ३३९ ॥ ३४० ॥ ३४१ ॥ ३४२ ॥ ३४३ ॥ ३४४ ॥ ३४५ ॥ ३४६ ॥ ३४७ ॥ ३४८ ॥ ३४९ ॥ ३५० ॥ ३५१ ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥ ३५६ ॥ ३५७ ॥ ३५८ ॥ ३५९ ॥ ३६० ॥ ३६१ ॥ ३६२ ॥ ३६३ ॥ ३६४ ॥ ३६५ ॥ ३६६ ॥ ३६७ ॥ ३६८ ॥ ३६९ ॥ ३७० ॥ ३७१ ॥ ३७२ ॥ ३७३ ॥ ३७४ ॥ ३७५ ॥ ३७६ ॥ ३७७ ॥ ३७८ ॥ ३७९ ॥ ३८० ॥ ३८१ ॥ ३८२ ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ ३८५ ॥ ३८६ ॥ ३८७ ॥ ३८८ ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥ ३९१ ॥ ३९२ ॥ ३९३ ॥ ३९४ ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥ ४०८ ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥ ४११ ॥ ४१२ ॥ ४१३ ॥ ४१४ ॥ ४१५ ॥ ४१

सीतया ॥ पितरो विप्रदेहं वै श्रुत्वा द्यावप्यः कचिद्वा ॥ ३१ ॥ ग्रहाणां पित्राणां वै रामो वसुपुत्रगमत् ॥ ततः पुष्करयात्रार्थं रामोऽप्यासीदित्या सह ॥ ३२ ॥ तौ च अपि समागत्य श्राद्धं ग्राह्यवान्मु सः ॥ आयाता ऋषयः सर्वे ये रामेण निमज्जिताः ॥ ३३ ॥ तान्मुनिनागतान्दृष्ट्वा वैदेही जनकात्मजा ॥ रामायाश्चमादाय पवित्रेषु पुगता ॥ ३४ ॥ अयमर्पितो दूरे विप्रमध्ये तु संस्थिता ॥ गुह्यमराच्छाद्य चात्मानं निगदं सा सिधता तदा ॥ ३५ ॥ गतेषु द्विमुल्लेखे प्रियां रामोऽब्रवीदिदम् ॥ कथं लतासु लीना त्वं कारणं क्व मा चिमू ॥ ३६ ॥ एवमुक्त्वा तदा भर्जो सीता साधोऽमुर्वी स्थिता ॥ मुञ्चती चाक्षुसमानं रावणं वाक्यमब्रवीत् ॥ ३७ ॥ पिता तव भया दृष्टो ब्राह्मणप्रभु रावणः ॥ सर्वभरणसंग्रहो द्वौ चान्यौ च तथाविधौ ॥ ३८ ॥ दृष्ट्वा त्वत्पितरं चाहमपक्रांता तवात्तिकात् ॥ इति श्रुत्वा प्रियावाक्यं रामो विस्मितमानसः ॥ ३९ ॥ आश्चर्यमिति तज्ज्ञात्वा तदा स्वरथानमगमत् ॥ सीतया पितरो दृष्टा यथा तत्ते नरोदितम् ॥ ४० ॥ तस्माच्छ्राद्धं चोद्भूत्वा शक्येऽपि यथाविधि ॥ कुर्वीत समये श्राद्धं कुले कश्चिन्न सोदति ॥ ४१ ॥ ये यजति पितृन्स्वेवान् ब्राह्मणंश्च हुताशनम् ॥ समभूतांतात्मानं मामेव हि यजति ते ॥ ४२ ॥ समात्तेन विधिना श्राद्धं कृत्वा स्वविभवोचितम् ॥ ब्रह्मस्थानपर्यन्तं जगतीणाति मानवः ॥ ४३ ॥

इत्यादि अनेक शास्त्रके वाक्योपे श्राद्ध करना अवश्यकार्थ है । श्राद्धके तुल्य कोई उत्तम कर्म नहीं है इसलिये सर्वधर्मात्माओंको श्राद्ध करना चाहिये । और नास्तिक धर्म हेतुवादिजैस दूर ही रहना योग्य है । इसलिये मैंने परमेश्वरका प्रति और लोकप्रकाशके अर्थ यह “गौडार्थश्राद्धप्रकाश” नाम महानिबंध संवत् १९५५ में श्रीमान् सेठ बेमराजजीको छापनेके लिये दिया उन्होंने अत्युत्तम छापकर जो प्रकाशित किया वह हाथहाथ प्रेमसे हमारे भिन्नजगणने उगालिया हमको देश देशांतरके अनेक पंडितमहाराजोंके भयवाद पत्र मिले जन्मसे प्रसक्ता और उत्साह बढ़ा उन महाराजोंका हम धन्यवाद देते हैं । अब यह महानिबंध द्वितीयवृत्तिमें पहलसे भी अत्युत्तम अग्राह से सूदर रसको देखकर प्रसन्न होंगे और हमको तथा सज्जनोंको इतार्थें करेंगे । और हमारे गौडार्थोंको उचित करनेके लिये हमने “चातुर्थ्यालंकार” नाम महानिबंध बनाया है जिसके प्रकाश अर्थात् प्रकरण १२ हुये हैं छापसंख्या ७५००० है किमसे नीचे लिखे प्रकाश छपके तैयार है शांतिप्रकाश १, प्रतिष्ठप्रकाश २, जलशयोक्त्यप्रकाश ३, गौडार्थश्राद्धप्रकाश ४, भयुगनामकाश ५, सुदृढप्रकाश ६, संस्थाप्रकाश ७, शेष प्रकाश, समयानुकूल छपते होंगे । अन्य ग्रंथ भी हमारे बनाये हुये छपे हैं । रुद्रश्राद्धप्रदीप १, रुद्रश्राद्धप्रदीप २, रुद्रवास्तुप्रदीप ३, तुलसीभवाहप्रदीप ४, नियमसंग्रहप्रमाणाल ५, वेदोक्तचातुर्थालंकार ६, किवाह प्रदीप ६, पारमश्राद्धप्रदीप ७, अंगीकरणप्रदीप ८, कर्मवादसमुच्चय ९, इत्यादि छोट २ ग्रंथ छपे चाहिये सो मंगना ।

आमलगाका द्वितीय-

पण्डित श्रीचातुर्थ्यालाल गौड कर्मठरत्न-रत्नगहनवासि.

# अथ गौडीयश्राद्धप्रकाशस्थविषयाणामनुक्रमणिका ।



विषयः	पत्राङ्काः	विषयः	पत्राङ्काः	विषयः	पत्राङ्काः
मङ्गलचरणम् ....	१	निर्विद्धदेशः ....	३	त्रयोदश्यापकोदित्यम्	"
श्राद्धवरूपं ....	"	श्राद्धकालः ....	४	महालयेचतुर्दशीश्राद्धनिर्णयः	"
श्राद्धमहिमा ....	"	मासप्रत्यक्षपक्षश्राद्धम्	"	चतुर्दशीश्राद्धादिस्मृतानामेव	"
श्राद्धऋतुदोषः ....	"	अपपक्षप्रशंसा	"	चतुर्दश्यांस्मृतस्यापि तिदिनकोटिष्टम्	६
स्वर्गादिवैकान्तानां श्राद्धेनृत्ति- प्रकारः ....	"	महालयाः ....	"	चतुर्दश्यापार्वणक्षरणेदोषः	"
हस्तकव्यप्रपञ्चाधिष्ठितारः ....	"	षोडशमहालयनिर्णयः	"	महालयेनवैदर्पणम्	"
श्राद्धेयताः ....	"	महालयेक्षयाहप्रशंसा	"	अमाभयायाण्डैर्दत्तम्	"
तेषांलक्षणाणि ....	"	अन्नस्मृतिविशेषश्राद्धम्	"	महालयेभ्रात्रादिभ्यस्कोटिष्टम्	"
श्राद्धाधिकारणः ....	३	मवाक्येयदेशश्राद्धम्	"	युगादयश्राद्धकालः ....	७
ऋद्धेशः ....	"	त्रयोदशीश्राद्धमहिमा	"	मन्वन्तराद्यःकालः ....	"
		त्रयोदशीश्राद्धकरणेनिरा	"	संवत्सरिककालः ....	"
				संवत्सरिकश्राद्धऋतुदोषः ....	७
				क्षयाहऋतुदोषः अमावास्यायां	"
				श्राद्धम् ....	"
				श्राद्धाहोर्वाहणाः ....	"
				वाजसनेयोधप्रशंसा	"
				अनुकल्पोक्तब्राह्मणाः ....	"
				वर्जनीयब्राह्मणाः ....	८
				पितरः ....	"
				विधेदेवाः ....	"
				विधेदेवानामनुचितः	९
				श्राद्धोपकरणानि	"

विषयः ।	पत्राङ्कः	विषयः ।	पत्राङ्कः	विषयः ।	पत्राङ्कः	विषयः ।	पत्राङ्कः
कुर्याः ....	९	वर्णानुगमनि ....	१०	विनाशान्दा ....	११	गृहवन्द्यम् ....	१५
दुर्मेल्यम् ....	"	शाकसंज्ञाद्वयाणि ....	"	विश्वसंस्मरणोपेतम् ....	"	श्राद्धसंदः ....	"
पवित्रप्रपञ्चः ....	"	श्राद्धोपादानि ....	"	निमग्नप्रकारः ....	"	श्राद्धदेवयानि ....	"
ग्रीष्मवयस्त्रम् ....	"	निमिद्विज्ञानि ....	"	निमिद्विज्ञानि ....	"	अपराह्वयम् ....	१६
पितृव्यलक्षणम् ....	"	वर्णदार्ढ्यः ....	"	श्राद्धोपनिषाः ....	१३	अपराह्वयः ....	"
पवित्रलक्षणम् ....	"	वर्णयुद्धानि ....	११	श्राद्धोपनिषाह्वयम् ....	"	कुपुष्पाळः ....	"
वर्णकुशाः ....	"	श्राद्धवस्त्रम् ....	"	पञ्चमसिद्धिः ....	"	ब्राह्मणऽज्ञाह्वयः ....	"
कुपुष्पातिनिधिः ....	"	रात्रौवन्द्यः ....	"	पञ्चमसिद्धिः ....	१४	गोमयेमंडलकरणम् ....	"
घोषातिशयः ....	१०	ब्राह्मणनिमग्नम् ....	"	असत्तत्त्वज्ञानादिद्वारा ..... पातत्रापवर्गः द्वितीयः ....	"	गोमयपराक्षा ....	"
निमिद्विज्ञानः ....	"	निमग्नश्राद्धोपनिषद्वयम् ....	"	पातत्रापवर्गः द्वितीयः ....	"	मंडलपरिमाणम् ....	"
पिण्डपरिवर्तद्वयम् ....	"	असंभवे वाचान्द्वाराचार्यम् ....	"	पातत्रापवर्गः द्वितीयः ....	"	ब्राह्मणादिचतुस्तरसिद्धिः ....	"
देवयोरुत्तानिधः ....	"	निमग्नश्राद्धोपनिषद्वयम् ....	"	पातत्रापवर्गः द्वितीयः ....	"	ब्राह्मणानामात्मनः ....	"
श्राद्धधनानि ....	"	निमग्नश्राद्धोपनिषद्वयम् ....	१२	पातत्रापवर्गः द्वितीयः ....	"	प्रत्यक्षमन्त्रोपदेशात् ....	"
वर्णधनानि ....	"	देवयुक्तम् ....	"	पातत्रापवर्गः द्वितीयः ....	"	उपवेगम् ....	"
श्राद्धधनानि ....	"	पितृयुक्तम् ....	"	पातत्रापवर्गः द्वितीयः ....	"	आत्मनि ....	"

विषयः ।	पत्राङ्काः ।	विषयः ।	पत्राङ्काः ।	विषयः ।	पत्राङ्काः ।	विषयः ।	पत्राङ्काः ।
उपविश्रादणनिष्ठाः ..	१७	आवाहकप्रकारः	२०	श्रुत्यर्थानि	२३	युक्तेतिनामसत्यनेहम्	२४
पृथिवीमुन्यादिद्वन्द्वम्	"	अर्धपत्राणि	"	वक्ष्य्याद्याः	"	अपात्रमेज्यादिद्वेषः	२५
संभारप्रोक्षणादि	"	तेजुज्यादिप्रोक्षणम्	"	दोषसंज्ञाः	"	अवय्वजनयगोचरकृत्यः	"
संकेतः	"	अर्थदानप्रकारः	२१	वक्ष्याणि	"	हुताज्यविश्रादिति	"
गोत्रसंज्ञेवाच्यम्	"	प्रतिवर्तमानगुणितप्रोक्षणप्रकारानामनः	"	स्त्रीप्रत्ययेर्णवक्ष्याणि	"	परहृश्रद्धकरणसूत्रानिउज-	"
विभक्तिविचारः	"	पट्टमर्थः	"	यज्ञोपवीतनविन्यासनिर्दि-	"	दानम्	"
गायत्र्यादिव्यपः	१८	प्राग्मेहनम्	"	लताः	"	परिवेषणम्	"
नीतिविवेकन्याख्याः	"	ससर्वविन्यासगोद	"	आसनादीनि	"	परिवेषणोद्देश्यान्निषेधः	२६
नीतिविवेकप्रसङ्गद्वयः	"	ग्रात्रिमोक्षादि	"	गंधादिदानविक्यानि	"	पत्राज्जलमन्	"
सर्वादिविक्रियेणमत्राः	"	प्राग्दोषाद्वन्द्वम्	२६	काष्ठानुसमेषप्रदानानुरूपे-	"	अवयवत्रितिलप्रोक्षणेदोषः	"
पाकप्रोक्षणकूमांडधूतम्	"	गंधादिदानम्	"	मिथ्याः	"	अंगुष्ठनिर्मेकानम्	"
प्राक्ष्याज्जलप्रोक्षणाः	२९	गंधाविविधाः	"	मंडलकरणम्	२४	अवयवसंख्याः	२७
दोषोत्पत्त्याः	"	वक्ष्य्यागंधाः	"	अष्टौकरणनिर्णयः	"	अच्छिद्रतावाचकम्	"
आसनादिनोदिव्यवसाः	"	विहितपुष्पाणि	"	साहित्यप्रोक्षणाः	"	जपनिर्णयः	२८
नुतिनातप्रकारः	"	वक्ष्य्यानिपुष्पाणि	२३	समाप्तिविश्रादणप्रोक्षणाः	"	जोसत्यवयवः	"



विषयः ।	पत्राङ्कः	विषयः ।	पत्राङ्कः	विषयः ।	पत्राङ्कः	विषयः ।	पत्राङ्कः
विक्रीदि ..	२८	श्रमधारणम्	३१	पिंडप्रातिपत्यः	३४	वृद्धश्राद्धकालः	३७
विक्रिसत्रास्तद्विधाश्च	२९	प्रयवनेनम्	३१	कामनाभेदेनवादिभ्यः पिंडदानम्	३४	नंदिश्राद्धनैवेद्यम्	३७
पिंडदानस्थानम्	३०	नंदिनिवसने	३२	पुरुषकामेभ्यश्चैवपिंडदानम्	३४	आदौमातृकास्थापनम्	३७
सेवाकारणम्	३०	पिंडपुरुषाणि	३२	पिंडोपवातेदोः	३५	तामसामानि	३७
उभुक्तयामणम्	३०	गंधादिदानम्	३२	वैश्वदेवकाळनिर्णयः	३५	नंदिश्राद्धानुष्ठानः	३७
छिन्नमृदुश्रास्ताणम्	३०	विप्रहस्तेषूद्कादिदानम्	३२	वैश्वदेवयोगः	३५	अन्नब्राह्मणसंख्या	३७
सहोच्छिन्नलक्ष्यम्	३०	अक्षय्यादेकं	३२	वैश्वदेवोक्तं	३५	कर्मप्रकारः	३७
अवन्जनम्	३०	काशीदानम्	३३	श्राद्धाद्योभिरुपमातिन्योर्दयम्	३५	नंदिश्राद्धैतृकजननिषेधः	३८
पिंडाः	३०	संध्यावाचनं	३३	श्राद्धशेषनाड्योवनेदोषः	३५	अत्राऽऽहृतप्रकारः	३८
पिंडपासाणम्	३१	दक्षिणा	३३	श्राद्धदिनेऽपवासादिनिर्णयः	३५	अग्नौक्षणं संव्येनैव	३८
पिंडदानेनैक्यः	३१	दक्षिणासंकर्यः	३३	भोजनानन्तदांतभोक्तृनिर्णयः	३५	पिंडवत्स्थानवद्वैविमिश्राः	३८
गोत्राऽन्ननैकाग्र्यगोत्रं	३१	पिंडोत्थापनम्	३४	एतच्छ्राद्धमुपनांतोपिकार्यम्	३५	अर्घ्यपिंडदानकरणाऽकरणपौर्ण-	३८
हस्तोत्तापनम्	३१	सहोच्छिन्नान्यथौ क्षतज्यानि	३४	पार्वत्समाप्तिः	३५	अर्घ्य	३८
आचमनम्	३१	विजर्जनम्	३४	एकोद्विष्यणम्	३५	पिंडदानाद्यप्रदशविशेषः	३८
अर्घ्योत्पादक्याद्यनुष्ठानं	३१	दोषनिवारणादि	३४	श्रद्धाह्वयम्	३५	एवंशूराणांभिक्षातयम्	३८

विषयाः ।	पत्राङ्काः	विषयाः ।	पत्राङ्काः	विषयाः ।	पत्राङ्काः
नित्यश्राद्धम् ....	३८	तत्रस्थविधेयदेवमातृकानावमन्तयाः	३९	जोवायितृकोटमृत्मातृकः ....	४०
नित्यश्राद्धेष्वाहाणामोचयत्	४०	अत्रश्राद्धनवदैवकायम्	४०	ग्रस्तातो गत्वश्राद्धकुर्यात्	४१
ब्राह्मणऽप्योक्ते श्राद्धाविप्रहृत्वा- दद्यात् ....	४१	तत्रदैवकाद्वारदेवयादेशभेदा दिनाविकल्पः ....	४१	गयाश्राद्धकालाः ....	४१
सर्वथाविद्याल्यभोक्त्वात्	४१	अत्रपितृव्यादीनामेकाद्विष्टमेव	४१	गयाश्राद्धमेयमासादिनिषेधेन	४१
नित्यश्राद्धेष्वद्वैतं ....	४१	अत्रलोपिदानमात्रं ....	४१	गयासहिम अक्षणेदोषः ....	४१
अत्रऽऽवाहनदिनिषेधः	४२	तथैवश्राद्धेऽप्यवाहनादिनकार्यम् ...	४१	तार्थादायपुनर्नादश्राद्धादिकरणम्	४१
दक्षिणादानेविकल्पः ....	४२	पिण्डद्वयाणि ....	४२	अथानुकालिकाः पार्वणादिप्रयोगाः	४१
श्राद्धकरणऽश्नतोबिद्यनेन	४२	पिण्डं तु तोयिष्येत् ....	४२	मुखकल्पाशक्तौ यत्नुक्तमायुशने	४२
अथ तथैवश्राद्धम् ....	४२	गयाश्राद्धो विशेषः ....	४२	मुखकल्पाशक्तिमांस्तु अनुकल्पनं	४२
तथैवस्नानादिषु तत्रयन्निप्रवचोप्रा- हम् ....	४२	गयायात्रानिमित्तकक्षेत्रश्राद्धमेवकुर्यात्	४२	कुर्यात् ....	४२
अत्रब्राह्मणपरिधानकार्या	४२	गयायानिनिमित्तकक्षेत्रश्राद्धमेवकुर्यात्	४२	अनेकब्राह्मणभावोपेक्षेत्यश्राद्धम् ....	४२
तथैवश्राद्धेऽनुपादिकालावश्यकतानं	४२	गयायानिनिमित्तकक्षेत्रश्राद्धमेवकुर्यात्	४२	एतत्समात्रमविकल्पम् ....	४२
		गयायानिनिमित्तकक्षेत्रश्राद्धमेवकुर्यात्	४२	श्राद्धश्राद्धेऽनुपजन्तूणां	४२
		गयायानिनिमित्तकक्षेत्रश्राद्धमेवकुर्यात्	४२	आत्मश्राद्धपार्वणविधिना कुर्यात्	४२

विषयः ।	पत्राङ्कः ।	विषयः ।	पत्राङ्कः ।	विषयः ।	पत्राङ्कः ।	विषयः ।	पत्राङ्कः ।
सन्ध्यापूजापत्रनामोक्तम्	४२	अत्राऽपसामर्थ्यं कर्तव्यता	४३	इन्द्रचोबोविपुत्रोऽपिकार्यम्	४४	द्वितीयप्रकरणम् ।	
सन्ध्याः.....	....	दौष्ट्यप्राप्तिपञ्चदशम्	....	अनष्टनाऽप्रणयप्रविष्टम्	४५	प्रेतकायः ....	४६
शुद्धाश्वाह्वयः.....	....	एतच्छुद्धाश्वाह्वयवर्णविधिता- कर्तव्यम्	....	इन्द्रशृङ्गापिकार्यम्	....	अंशुप्रियालम्	....
शृङ्गाणांस्वपोगम्	....	एतज्जोबोविपुत्रोऽपिकार्यम्	....	अप्रतामनालोविषद्वयो	....	मेषध्वजदिदानम्	....
लोचनद्वन्द्वकृशाक्षव्यास्यानेमः	....	अष्टकाऽनष्टनाश्राद्धं	....	ग्रहणनिमित्तश्राद्धम्	....	दशदानानि	....
शङ्खः ।	....	अष्टकास्तिनः	....	ग्रहणश्राद्धसंस्कारोऽपमानेन का- र्यम्	....	मण्डूददानानि	....
शृङ्गाणामाद्यदिनीपञ्चाख्यार्यम्	....	केशचिमेतत्तद्वहः	....	एतच्छुद्धं अश्वचिमेतद्वहिकार्यम्	....	केशविद्यादिदानम्	....
आमाकाशायत्यसेनहस्तश्राद्धम्	....	अष्टकाऽनुपुमांस्तथाःकोमणश्राद्धं	४४	ग्रहणदिनवार्णिकादिनयानि आमावे	....	दहादिर्गन्तं	....
पुत्रजननादौहस्तश्राद्धम्	....	अष्टकादेवताः	....	त एव	....	नियमाणसङ्कल्पम्	....
हेमश्राद्धन्याकाचिदपवादः	....	याद्रादाऽपरपञ्चाष्टम्यपञ्चा	....	आमेहमश्राद्धकेचुचिमेतद्वहोभवाति	....	सर्पणाकाळेदन्तशिरस्त्वम्	....
हेमश्राद्धपैडनान्दिप्रकारः	....	अष्टकानामिनाकाळः	....	पैडनो निषिद्धवाक्यः	....	समानान्दक्षिणदिशस्त्वम्	....
हेमश्राद्धप्रकारः	....	अनष्टकापञ्चाशतिनिष्ठावागणा-	....	संज्ञांतिनिमित्तकार्पेणं विनाशश्रा	....	दहहालेक्षुक्षुशिरसस्त्वुजानं च	....
सांकायिकश्राद्धनियमः	४३	वसुमन्तश्राद्धकाळः	....	दम्	....	उत्तान्नाथोमुखवयोर्विचारः	....
श्राद्धेयान्दिगन्त्याऽल्योपचानुक्त	....	नवम्याऽनष्टकाश्राद्धात्रिचानुक्त	....	युगादिश्राद्धेषु पिडनान्तकार्यम्	....	सर्पणाकाळेनमसविधायकम्	४७
सः	....	दैत्यम्	....	युगादिश्राद्धेषु पिडनान्तकार्यम्	....	तीर्थयात्रास्थ	....

विषयः ।	पत्राङ्काः	विषयः ।	पत्राङ्काः	विषयः ।	पत्राङ्काः	विषयः ।	पत्राङ्काः
सणोत्तर्कम् ....	४७	इतिहासः ....	४८	तथैवस्थिक्षेपविधिः ....	४९	द्रव्यनियमः ....	५०
पुत्रकानिअत्रादीनांभवनम् ....	५१	गुह्यमनम् ....	५२	द्रव्यादिभेदेन नतःप्रायश्चित्तम्	५३	दशपिडविषयाऽवस्थाः	५४
समणकायवृष्टिर्पिडाः ....	५५	निबन्धनादिप्राशनं ....	५६	गगादिपुष्पक्षेपप्रकारः दशऽहस-	५७	त्रयशरीरदशपिडदानप्रकारः	५८
तृणकाष्ठज्योदःशूद्रादिमनननिषिद्धम्	५९	आशान्ननियमः ....	६०	ज्योदःपुष्पक्षेपगमणमूलव्यातिः	६१	सवाशौचपिडदानप्रकारः	६२
चित्तायोग्यकाशानि ....	६३	विमदिनेगुह्यातिभिःसहयोग्यम्	६४	प्रेतापिडप्रयोगः ....	६५	नवश्राद्धम् ....	६६
आदिदानोत्सवाः ....	६७	भोजनदिवसम् ....	६८	पिण्डोदकदानाद्यवदशौचकार्यम्	६९	नवश्राद्धविषमितिनुष्कार्यम्	७०
दाहान्तर्गतदादिगमनम् ....	७१	दिनयशिमयादौजलश्रीपात्रदानम्	७२	सर्ववर्णभूषणदशपिडाः ....	७३	प्रेतश्राद्धेनवयवदार्थाः ....	७४
अंजलिदानम् ....	७५	अस्यसंचयनम् ....	७६	उदकदानवयवपिडदानं न सर्वैः क-	७७	प्रेतक्रियायवसंपादिश्राद्धकरणम्	७८
मातामहादियोजलिदानम् ....	७९	ददविमदिनेनुष्कार्यम् ....	८०	चैत्यम् ....	८१	प्रेतकर्मचक्रजुदभैरवकार्यम्	८२
बह्नातिभिराधिकचिदुदकदानं कर्तुं	८३	ब्राह्मणानां चतुर्थीति ....	८४	पुत्रेषु ज्येष्ठपुत्रपिडदानात्	८५	प्रेतश्राद्धोदकमेदयम् ....	८६
व्यम् ....	८७	अहारादौचतुर्थीति ....	८८	प्रथमदिवसेनपिडोदकमेतत्त्वम्	८९	प्रेतश्राद्धेन आशेषःद्विगुणादर्या०	९०
होमपतिपुत्रश्रव्यादिमयउदकदा	९१	अहारादौचतुर्थीति ....	९२	पिडातांदातयम् ....	९३	जप० पिण्डशब्द० स्वस्वव०	९४
नंनवाधेयम् ....	९५	सवाशौचेलहाहान्तर्गतम् ....	९६	पिडातांदातयम् ....	९७	शमोदिशब्द० पात्रालयावगा-	९८
उदकदानानंतरापिडदानम् ....	९९	आस्यसंचयनोतीयातन्त्रविनियमः	१००	पिडदशाः ....	१०१	हौ० उन्मुखश्रावणं रेखाकरणं	१०२
बांघवैश्रवशासनकार्यम् ....	१०३	तत्प्रकाशश्च ....	१०४	पिडदश्याणि ....	१०५	विक्रियश्च इत्यादयः पदार्था नक्का-	१०६
						योः	१०७

[illegible]



विषयः । पत्राङ्काः

## तृतीयप्रकरणम् ।

निसर्तपणम् .... ६८

तर्पणस्फाटदशौ .... ११

जयशब्देतर्पणव्यात् .... ११

य लयः सले .... ११

यत्राद्युच्चिस्त्रलत्रलकुप्यात् .... ११

असंस्कृतप्रमीतान्तुस्येव .... ११

तर्पणसाधनानि .... ११

अजलिंसल्या .... ३९

हस्ततथैवैतान्तुद्विषयः .... ११

तर्पणप्रक्रमः .... ११

तर्पणप्रयोगः .... ७७

नामादिद्विषयविचारः .... ७९

मात्रादिपण्यत्तमाद महर्तपणम् .... ११

काम्यतर्पणम् .... ७९

विषयः ।

तर्पणसंक्रम

संयत्ताद्व्यादम्

जीवच्छादम् (जायवाच)

जयशब्देतर्पणम्

लिगणुणोक्तजीवच्छादम्

जीवच्छादहोमः

कुष्ठप्रणविधानम्

रजश्चमृताविधिः

गर्भगुप्तौ

सूतिकादौ

चतुर्दशश्रद्धतानिकादिशिव

घायकं इतिहासम्

जीवितपुत्रस्यश्राद्धाद्याः कर्तव्य

विचारश्च

मन्त्रास्य श्राद्धविचारः

पत्राङ्काः

७२

११

११

७३

७४

११

७५

७६

११

७७

११

७९

११

७९

११

७९

११

७९

११

विषयः ।

महालक्ष्मिद्वयसंस्कार्यम्

महामामृतानामलक्ष्मिद्वयम्

पिण्डयज्ञेषुपुस्तकयोर्विचारः

स्वितोत्रम्

रस्तां चित्तोत्रम्

चतुर्थप्रकरणम् ।

पद्मतिवृन्दः ।

सपत्रः दर्शनीचमयद्वयस्या

वैष्णवश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

सपत्रश्राद्धपद्धतिः

पत्राङ्काः

७८

११

११

७९

८०

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

११

विषयः ।

जीवितपुस्तकनिर्देशव्यवस्था

पर्वण्यपद्धतिः

अयत्नतर्पणम्

संज्ञानियतर्पणम्

नियतश्राद्धपद्धतिः

तीर्थश्राद्धपद्धतिः

देवार्चिपुस्तकप्रयोगः

नवैश्वर्यतर्पणश्राद्धपद्धतिः

पिण्डदानमात्रतर्पणम्

गयाश्राद्धम्

गयाश्राद्धपद्धतिः

पुण्यश्राद्धम्

पुण्यश्राद्धपद्धतिः

पुण्यश्राद्धपद्धतिः

पुण्यश्राद्धपद्धतिः

पुण्यश्राद्धपद्धतिः

पुण्यश्राद्धपद्धतिः

पुण्यश्राद्धपद्धतिः

पुण्यश्राद्धपद्धतिः

पत्राङ्काः

११९

१२४

१२९

१२०

१२१

१२३

१२७

१२९

१३०

१३१

१३२

१३३

१३४

१३५

१३६

१३७

१३८

१३९

१४०

१४१

१४२

विषयः	पत्राङ्काः	विषयाः	पत्राङ्काः	विषयाः	पत्राङ्काः	विषयाः	पत्राङ्काः
रामशिल्पकृत्यम्	....	१४२	क्षीरोदकदानप्रयोगः	....	”	सानोदकुम्भदानम्	.... २०९
तृतीयचतुर्दशिकृत्यम्	....	१४३	अश्विसंवन्योनिचक्राः ० ५०	....	१९३	जन्मासिद्धिआद्याः	.... २१०
पंचमदिक्कृत्यम्	....	१४४	दशग्रात्राद्वपद्वतिः	....	१९५	जन्मासिकादिपंचदशद्वययोगः	.... ”
षष्ठदिक्कृत्यम्	....	१४५	आशौचादिचक्रम् ०	....	१९६	सांस्कारिकोद्विष्टम्	.... २१३
सप्तमदिक्कृत्यम्	....	”	एतादृशहृदिनक्षत्रमणिवृषात्सर्पापद्धतिः	....	”	मातृकैवोद्विष्टप्रयोगः	.... २१६
अन्यतदिक्कृत्यानि	....	१४६	गोदानपद्धतिः	....	१६०	स्त्रोक्तकैवोद्विष्टम्	.... २१९
<b>पंचमं प्रकरणम् ।</b>							
प्रेतपद्धतिकृत्यः	....	१४९	नारायणवलिप्रयोगः	....	१६२	जन्मकैवोद्विष्टम्	.... २१९
मरणकालीप्रयाश्चित्तम्	....	”	ब्रह्मादिपंचसूक्तानि	....	१८२	<b>षष्ठं प्रकरणम् ।</b>	
दशदानानि	....	”	नारायणवलिप्रयोगः	....	१९०	जीवच्छाद्वपद्वतिः	.... २१९
महाष्टौदानानि	....	”	पंचकशांतिः	....	”	जलधेनुदानप्रयोगः	.... २२७
वैतरणीपेदुदानप्रयोगः	....	”	त्रिपादशांतिः	....	१९५	जीवच्छाद्वसामग्री	.... २२८
दुर्मरणप्रायश्चित्तप्रयोगः	....	”	आद्यादिषोडशम् ० ५०	....	१९६	खिण्णपुराणोक्तजीवच्छाद्वपद्वतिः	.... ”
दुर्मरणप्रायश्चित्तप्रयोगः	....	”	षष्ठस्तुतशतत्रयपिंडदानप्रयोगः	....	१९९	<b>शूद्रश्राद्धमकरणम् ।</b>	
मरणसमयकृत्यम्	....	१५०	शय्यादानप्रयोगः	....	”	मंगलम्	.... २३०
दहकर्मपद्धतिः	....	”	सर्पिण्डश्राद्धपद्धतिः	....	२००	शूद्रमरणसमयाश्चित्तम्	.... ”
	....	”	मैथिल्योक्तसर्पिण्डनप्रयोगः	....	२०८	धेनूदादिशदानानि	.... २३४



विषयः	पत्राङ्कः	विषयः	पत्राङ्कः	विषयः	पत्राङ्कः	विषयः	पत्राङ्कः
एकादशहृदयकर्मणि द्योत्सर्गः...	२३५	प्रतिमामकराद्यात्मवैकर्म्ये		शुद्धमण्डनानां नायणवलिः	२५५	तत्पुस्तकपत्रम्	२५८
शुद्धाणां द्योत्सर्गपद्धतिः	...	वर्दिने कार्यम्	२४४	दुर्गणमन्त्राद्यश्चितम्	...	प्रायश्चित्तहोमोपस्थापनम्	...
द्वैविध्यादकारः	२३६	शुद्धाणामनुमासिद्धादिचदशश्राद्ध-		सम्यक्स्थापनम्	...	दुर्गान्दिका	...
गोदानप्रयोगः	...	पद्धतिः	२४६	अष्टशक्तौनास्थापनप्रकारः	...	एकादशविष्णुश्राद्धानि	२५९
शुद्धाणां एकादशश्राद्धेषु षोडशश्राद्ध	...	ऊर्जमासिद्धादिपुञ्जकालः	...	कवचस्थापनप्रयोगः	...	एकादशदानानि	२६०
पद्धतिः	२३७	शुद्धमन्त्रसंस्कारादिश्राद्धपद्धतिः	२४७	सर्वश्राद्धजनप्रयोगः	...	ब्रह्मादिपञ्चश्राद्धानि	२६१
शय्यादानप्रयोगः	२३९	शुद्धपवित्रश्राद्धपद्धतिः	२४९	पञ्चकल्लास्यापनम्	...	नारायणवलिमाश्रा	२६२
त्रयोदशपदानम्	...	सत्तायैस्तोत्रम्	२५१	ब्रह्मादिपञ्चदेवस्थापनप्रकारः	...	शुद्धपञ्चकशक्तिः	...
उत्कुम्भदानम्	...	आभ्युदयिकश्राद्धम्	२५२	पञ्चदेवतानां तर्पणम्	२५७	मरणदिनकृत्यम्	...
शुश्रूक्षशतत्रयपिडदानप्रयोगः	...	आभ्युदयिककालः	...	श्रवणपत्रम्	...	पुत्तलनिर्माणम्	२६३
सर्वदेवश्राद्धम्	२४०	मातृकाद्वजनम्	...	विष्णुतर्पणम्	...	शुद्धपद्धतिः	...
शुद्धाणां सर्वदेवश्राद्धपद्धतिः	...	वर्मात्रापुजा	...	छात्रतर्पणम्	...	पञ्चदानानि	...
ऊर्जमासिद्धादिमासोदसुभदानम्	२४४	श्राद्धपिडदानकृत्यम्	...	यमार्तपत्रम्	...	ग्रंथसमाप्तिः	२६४

इति गौडीयश्राद्धमकराद्यविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्राद्धप्रकाशः ॥ स्वपुरःपिण्डदातृणांपितृन्पापपुत्रानपि ॥ समुद्धतंकृपयानौमिवेगदाधरम् ॥ १ ॥ उभवापूतेवि  
धिक्कृत्स्नंनव्योमाधवमाधवौ ॥ पितृन्मातामहांश्चैवपितृणांपूर्वजनौ ॥ २ ॥ कातीयपारस्करद्वह्मसूत्राण्यथोपुराणस्मृतिपद्धतीश्च ॥ सतांच  
वाक्यानिचार्यसम्यक्स्वशाखिनांश्राद्धविधितनोमि ॥ ३ ॥ गौडग्रंथविलोपंतुदृष्ट्वासमयभेदतः ॥ तदुद्धारायकुर्वेदग्रंथैर्विशिष्टसमतम् ॥ ४ ॥  
ग्रंथास्तुबहवःसन्तिदाक्षिणात्याश्चमथिलाः ॥ तथापिभूमिदेवानप्रीतिदियंभविष्यति ॥ ५ ॥ ( तत्रतावच्छ्राद्धस्वरूपम् ) देशकालपात्रेषुपित्रा  
द्युद्देशेनविधिहविस्तिर्लदर्ममंत्रश्राद्धविभिर्दानंश्राद्धम् ॥ तथाच ( पराशरः ) देशकालेचपात्रेचविधिनाविषयाचयत् ॥ तिलैर्दमेश्चमैश्चश्राद्धं  
स्याच्छ्रद्धयायुतम् ॥ ( ब्रह्मपुराणेपि ) देशकालेचपात्रेचश्रद्धयाविधिनाचयत् ॥ पितृवृद्धिश्चविप्रभ्योदत्तंश्राद्धमुदाहृतम् ॥ ( मरीचिः ) प्रेतं  
पितृंश्चनिर्दिश्यभोज्ययन्त्रियमात्मनः ॥ श्रद्धयादीयेत्यत्रतच्छ्राद्धंपरिर्कीर्तितम् ॥ इति ॥ तस्मिंश्चर्मणिगयागादाविद्वादीनामिवपित्रादेर्देवतात्वं  
तदुद्देशेनमंत्रद्वाराद्रव्यन्यागात् ॥ यथाच ॥ यागादौमंत्राहूताइंद्रादयःशक्तिमात्रेणतत्तत्स्थलेआविर्भूतायजमानस्यक्तद्रव्यदर्शनेनतृप्यन्तस्ते  
षामभीष्टफलंयथासाधयंतितथाश्राद्धेपिमंत्राहूताःपित्रादयःसमागताःपुत्रादित्यक्तद्रव्यभोगेनतृप्यंतोविशिष्टप्रदाइत्येवंकल्पनीयमिति ॥  
(अथश्राद्धमहिमा यमस्मृतौ) आयुःपुत्रान्यशःस्वर्गकीर्त्तिपुष्टिर्बलंश्रयम् ॥ पशून्सौख्यंवनधान्यंप्राप्नुयात्पितृषूजनात् ॥ (यज्ञवल्क्येपि)  
आयुःप्राजानंदंविद्यांस्वर्गमांशुखानिच ॥ प्रयच्छन्तिथारज्यंप्रीतानर्णापितामहाः ॥ ( सुमंतुरपि ) श्राद्धपरतर्नान्यच्छ्रेयस्करमुदाह  
तम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्राद्धकुर्याद्विचक्षणः ॥ ( ब्राह्मे ) तस्माच्छ्राद्धनरोभक्त्यशार्कैरपियथाविधि ॥ कुर्वीतश्रद्धयातस्यकुलेकश्चित्रसा  
दति॥(वसिष्ठः)पितामहश्चैवतथप्रपितामहः॥उपासतेसुतंजातंशकुंताहवपिपलम् ॥ मधुमसैश्चशार्कैश्चपयसापायसेनच॥ एषनोदास्य

तिश्राद्धवर्षासुचमघासुच॥इति॥अथश्राद्धऽकरणेदोषप्रवर्तकानिवाक्यानि॥(तत्रतावदादित्यपुराणे)नसंतिपितरश्चितिकृत्वामनसियोनः॥  
श्राद्धंनकुरुतेमोहात्तस्यारूपिर्बन्नि॥(हमाद्राशातपः)अमावास्याव्यतीपातपौर्णमास्यष्टकासुच॥विद्वाञ्छाद्धमकुर्वोणनरकंप्रतिपद्यते॥  
एतन्माध्यादिपरमिति कल्पतरुः॥(ब्रह्मपुराणे)आश्वयुज्यांतुक्रुणायात्रयोदश्यामघासुच॥प्रावृत्तौयमःप्रतान्पितृश्रूयथयमालयात्॥  
विसर्जयतिमूलैकंकृत्वाधून्पचकंशुभम्॥तेपुत्रादेःप्रकक्षंतिपायसंमधुसंयुतम्॥कन्यागतसवितरिपितरायतिवैष्णवान्॥अमावास्यादिनेप्रा-  
तेशृद्धारंसमाश्रिताः॥श्राद्धाभावेनभवनंशापदत्त्वाव्रजति॥अतोमूलैःप्रलंबापितृथायुदकनयैः॥पितृवृत्तिप्रकुर्वीतनैवश्राद्धविजयेत्॥  
(गृहडनागरखंडयोः)अमावास्यादिनेप्रातेशृद्धारंसमास्थिताः॥वायुभूताःप्रवाञ्छन्तिश्राद्धंपितृगणानृणाम्॥यवदस्तमनभानोःक्षुत्पिपा-  
सासमाकुलाः॥ततश्चाऽस्तंघातेसूर्येनिराशादुःखसंयुताः॥निःश्वसंतश्चिरंयातिगर्हयतस्ववशजम्॥तस्माच्छ्राद्धंप्रयत्नेनअमार्थकितुमर्हती-  
ति॥ननुपुण्योत्कर्षवतास्वर्गलोकांगतानामनुष्यपितृपितामहादीनाममृताऽऽहाराणंस्तार्कथ्यब्राह्मणभोजनविनश्येनमनुषेणचान्ननृत्तिःसं-  
भवति॥पापीसांवावित्यर्थोनिगतानांतृणाद्याहाराणंस्तप्रीदिरूपंगतानांवारुधिराद्याहाराणंस्तामिति॥(अस्यक्षेपस्यसमाधा-  
नंहेमाद्रौदवलोक्य)देवोद्यदिपिताजातःशुभकम्भानुयोगतः॥तस्यान्नमदृतभूत्वादवत्वेऽप्यनुगच्छति॥गांधर्वभोगरूपेणपशुत्वेचतृणं  
भवेत्॥श्राद्धंवायुरूपेणनागत्वेऽप्यनुगच्छति॥पानंभवतियक्षत्रोक्षसर्वेत्तथामिषम्॥दानवत्वेथामांसप्रतन्त्रेक्षरुधिरादकम्॥मानु-  
षत्वेऽन्नपानादिनानाभोगसोभवेत्॥(मार्कण्डेयपुराणे)पितापितामहश्चैवथप्रापितामहः॥पिण्डसंबंधिनोद्भोतेविज्ञेयाःपुरुषास्त्रयः॥लेपसं-  
बधिनश्चान्येपितामहापितामहात्॥प्रभृत्युक्तास्त्रयस्तेषांयजमानश्चसतमः॥तथान्येर्षवजाःस्वर्गेयचान्येनरकौकसः॥येचित्यर्थब्रह्माण्नायेच

भूतादिसंस्थिताः॥तान्सर्वान्यजमानोवैश्राद्धकुर्वन्त्यथाविधि॥ समाप्यायतेतान्स्वयेनेनशृणुष्वत॥अत्राविक्षेपणंयत्तुमुष्यःक्रियतेभुवि ॥  
तेनतृप्तिमुपायान्तिथिपशान्तचमागताः॥यदंबुध्नानवस्त्राभूमौपततिपुत्रक ॥ तेनतेतरुताप्रातास्तेषांतृप्तिःप्रजायते ॥ यास्तुगंधादिकणिकाः  
पततिधरणीतले ॥ ताभिराप्यायनंतेषियेदेवत्वंकुलगताः ॥ उद्धतेषुचण्डेषुयाश्चान्नकणिकाभुवि ॥ ताभिराप्यायनंतेषानियेदेवत्वंकुलगताः ॥  
येचादृताःकुलेबालाःक्रियायोग्यास्त्यसंस्कृताः ॥ विप्रश्नास्तेतुविकिरांसमाज्जनजलाशिनः ॥ भुक्त्वाब्राह्मणमनयश्चजलेयदङ्घ्रिसेचने ॥ ब्राह्म  
णानांतैवाप्यायनेनतृप्तिप्रयातिवै ॥ तेनानेककुलेतत्रतद्योन्यन्तरंगताः ॥ प्रयात्याप्यायनंस्वसम्बद्धादिक्रियावताम् ॥ यथागोषुप्रनष्टवै  
वत्सोर्विदतिमातरम्॥एवंश्राद्धेऽनुसृष्टिमुमंत्रःप्रापयतेपितृन् ॥ (मात्स्यपाद्मयोः) नामगोत्रं पितृणां तु प्राणकंहव्यकव्ययोः॥श्राद्धस्यमंत्रास्तद्  
चउपलभ्यानिभक्तितः॥पित्रादिनामादीनिउपलभ्यानिज्ञातव्यानीत्यर्थः॥नन्वचेतनवान्नामादीनांकथंहव्यकव्यप्रापकत्वमित्याशयेत्युक्तम् ॥  
अग्निष्वात्तादयस्तेषामधिपत्येव्यवस्थिताइति॥अग्निष्वात्तादयःपितृविशेषणामाद्यधिष्ठाताःप्रापकाइत्यर्थः॥ तत्रैव ॥ नाममंत्रास्तदोदशाभ  
वान्तरगतानपि ॥ प्राणिनःप्राणियंयेतेतदहारन्वमागतान्॥ (वायुपुराणेपि) यथागोषुप्रनष्टवैवत्सोर्विदतिमातरम्॥तथाश्वानयतेमंत्राविप्रो  
तुयत्रावतिष्ठते ॥ नामगोत्रं चमंत्रश्चदुक्तमन्नयति ॥ अपिथोनिशंतप्रातास्तृतांस्तनुपतिष्ठति ॥ इति ॥ (अथश्राद्धभेदानहमदनपारजातेवि  
श्वामित्रः) नित्यनैमित्तिकं काम्यवृद्धिश्राद्धं संपिडनम् ॥ पार्वणचेतिविज्ञेयं गोष्ठ्यां शुद्धचथमष्टमम् ॥ कर्मांगनवमंप्रोक्तैर्देविकं दशमं स्मृतम् ॥

१ पार्वणं चतुर्विधं, त्रिदैवत्यं, षड्दैवत्यं, नवदैवत्यं, द्वादशदैवत्यं च । तत्र त्रिदैवत्यं साधिकानां क्षयाहे । निराशिकानां तु संपिडने । महालये दौहित्रप्रातिपदिच । षड्दैवत्यं दशमं क्रा  
तिश्रेयोदश्यादिषु । नवदैवत्यं वृद्धिमहालये अन्यशुक्लया निमित्तादिश्राद्धेषु । द्वादशदैवत्यं, तीर्थमहालययायात्रादिषु क्षेत्रेषु । तदुक्तं हैमाद्रौ-त्रिदैवत्यं मृताहेषु द्वादशैवत्यं  
तु दर्शके । वृद्धेतुमवदैवत्यं तीर्थे द्वादशदैवत्यम् ।

यात्रास्वेकादशप्रोक्तपुष्टयर्थद्वारांस्तुमिति ॥ (एषांलक्षणाभिनिविष्ये) अहन्यहन्यच्छ्रद्धांस्तन्नित्यमिति कीर्तितम् ॥ वैश्वदेवविहीनं तदश-  
क्तवदुक्तेनतु ॥ एकादिष्टुपुष्ट्यांशं तन्नैमित्तिकमुच्यते ॥ तदप्यद्वैतवत्तद्व्यभुमानभोजयद्भिजान् ॥ (अत्र षोडशप्रतश्चाहान्यपि सप्तद्वैतेको  
द्विष्टरूपत्वात्) ॥ (तथा च हेमाद्रौ गालवः) द्वाहादाभ्यदातव्यं श्राद्धनैमित्तिकमुधैः ॥ नियमाद्वत्सरायावदिनालवभाषितमिति ॥ कामायविहितका-  
भ्यमभिप्रैतार्थसिद्धये ॥ वृद्धयार्त्तिकयते श्राद्धश्राद्धतदुच्यते ॥ गंधोदकतिलयुक्तं कुयात्पात्रचतुष्टयम् ॥ अद्यार्थपितृपात्रेषु प्रेतपात्रेषु च  
येत् ॥ येसमानाह तद्वाभ्यामैतज्ज्यसंपिंडनम् ॥ अमावास्यायां क्रियते तत्पार्वणमिति स्मृतम् ॥ क्रियते पार्वणियत्तत्पार्वणमिति स्थितिः ॥  
(पार्वणि विष्णुपुराणे) वतुर्दशपृष्ठी चैव अमावास्या च पूर्णिमा ॥ पार्वण्येता निराजं द्रविंसक्रमणं तथेति ॥ गोष्ठ्यायां क्रियते श्राद्धं गोष्ठी श्राद्धतदुच्य-  
ते ॥ बहूनाविदुषांसपत्सु सार्थपितृहृतये ॥ क्रियते शुद्धये यत्तु ब्राह्मणानंतु भोजनम् ॥ शुद्धयर्थमिति तत्प्रांश्राद्धं पार्वणवत्कृतम् ॥ निषेकं  
लेसामेचसीमंते ब्रयने तथा ॥ ज्ञेयं पुंसवने श्राद्धकर्म गंवृद्धिवत्कृतम् ॥ देवादिशयच्छ्राद्धं तदुदेविकमुच्यते ॥ गच्छन्देशांतरं यस्तु श्राद्धं  
कुर्यात्सर्पिषा ॥ यात्रार्थमिति तत्प्रांश्राद्धं च न संशयः ॥ (सर्पिषा सर्पिः प्रधाने केन) शरीरोपचये श्राद्धमर्थोपचयवच्च ॥ पुष्टयर्थमेतद्विज्ञेयमापचा-  
यिकमुच्यते इति ॥ अत्रानित्यपद्वैवतमद्वैतम् ॥ नैमित्तिकमकोदिष्टं च ॥ काम्यम् उपरागादौ कामनोपाधिकं पार्वणवत्कृतम् ॥ वृद्धिश्राद्धं पुत्र-  
जन्मविवाहादौ क्रियमाणं न वैवृत्यम् ॥ सर्पिडनं पार्वणकोदिष्टोभयात्कर्म ॥ पार्वणं प्रतिपर्वक्रियमाणं पद्वैवतम् ॥ गोष्ठी श्राद्धं पार्वणवत् ॥  
शुद्धयर्थमपि पार्वणवत्स्मृतम् ॥ कर्मोद्गयादौ क्रियमाणं वृद्धिवत्कृतम् ॥ दैविकनित्यश्राद्धवत् ॥ यात्रार्थं न वैवृत्यं वृद्धिश्राद्धवत्कृतम् ॥ पुष्टय

र्थचर्पावर्णवज्ज्ञेयमित्यर्थः ॥ (अथश्राद्धाधिकारिणः ॥ हेमाद्रिसुमंतुः ॥ मातुःपितुःश्रुतवत्संस्थितस्योरसःसुतः ॥ पितृमेधिकसंस्कारमंत्रपूर्वकमाह  
 तः ॥ इति मंत्रपूर्वकद्विजनामेव न तु शूद्राणाम् ॥ (विष्णुपुराणो गारुडे च) पुत्रः पौत्रः प्रपौत्रो वा तद्भ्राता भ्रातृसंततिः ॥ सपिंडसंततिर्वापि क्रियाहानृपजय  
 ते ॥ तेषामभावे सर्वेषां समानोदकसंततिः ॥ कुलद्वयेपि चोच्छिन्ने भूमिकार्याः क्रियाः खगाः ॥ (मार्कण्डेयपुराणेपि) पुत्राभावे सपिंडास्तु तदभावे सहोद  
 काः ॥ मातुः सपिंडायेव स्युयेव मातुः सहोदकाः ॥ कुर्यान्निर्वर्धिसम्यगपुत्रस्य सुताः स्मृताः ॥ कुर्यान्माता महयैव पुत्रिका त न्यस्तथा ॥ सर्वाभावे  
 स्त्रियः कुर्युः स्वभर्तृणा ममंत्रकम् ॥ तदभावे च नृपतिः कारयेत्तस्य रिकृतः ॥ तज्जातीयेभ्यः सभ्यः गृहाद्याः सकलाः क्रियाः ॥ सर्वेषामेव वर्णानां  
 धवो नृपतिर्यतः ॥ इति ॥ सहोदकाः समानोदका इत्यर्थः ॥ (सपिण्डेन विशेषो गारुडे) भ्राता वा भ्रातृपुत्रो वा सपिंडः शिष्य एव वा ॥ सपिंडीकरणं कुर्या  
 त्पुत्रहीने स्वोश्च ॥ सर्वेषां पुत्रहीनानां पत्नी कुर्यात्सपिंडनम् ॥ ऋत्विजं कारयेद्ब्रथपुराहितमथापि वा ॥ इति ॥ पूर्वमध्यमोत्तरासु क्रियासु त्रानादीनां व्य  
 वस्थितमाधिकारं दर्शयति (पराशरो विष्णुपुराणे) पूर्वाः क्रियामध्यमाश्चतुर्थोत्तरसंज्ञिताः ॥ त्रिप्रकाराः क्रिया ह्येतास्तासामिदं शृणुष्व मे ॥ आदा  
 हादादशहाचमभ्येयाः स्युः क्रियामताः ॥ ताः पूर्वमध्यमामासिमास्यकोद्विष्टसंज्ञिताः ॥ प्रेतोपितृत्वमपन्नो सपिंडीकरणादनु ॥ क्रियंत्याः क्रिया  
 पित्र्याः प्रोच्येताना नृपत्तारः ॥ (माधवीये) सपिंडाद्यैरवनपत्यैः पूर्वाः क्रियामध्यमाश्च कर्तव्याः पुत्राद्यैः वभ्रातृसंतत्यैः दौहित्राद्यैश्चोत्तराः क्रि  
 याः कर्तव्याः न सपिंडाद्यैरवनपत्यैरित्यर्थः ॥ औरसः सुतोऽनुपनीतोऽपि दाहादिकार्याः कुर्यात् (तदाह सुमंतुः) श्राद्धं कुर्यादवश्यं तु प्रमीतपि  
 तुको हियः ॥ व्रतस्थो वा व्रतस्थो वा एक एव भवेद्यादि ॥ इति ॥ अव्रतस्योऽनुपनीत इत्यर्थः ॥ (स्मार्तदेपि) पित्रोऽनुपनीतोपि विवध्यादौरसः सुतः ॥ औ  
 ध्वदैहिकमन्येतुं संस्कृताः श्राद्धकारिणः ॥ (स्मृति संग्रहे) कृतवृद्धे नृपे तश्च पित्रोः श्राद्धं समाचरेत् ॥ उदाहरेत्स्वयाकारं नृवेदाक्षराण्यसविति ॥

एवंपितृव्यादीनामपिश्राद्धकुप्यते ॥ ( यथाहजातूकर्ण्यः ) पितृव्यभ्रातृमातृणामपुत्राणांतथैवच ॥ मातामहस्याऽपुत्रस्यश्राद्धादितिपुत्रद्वे-  
त् ॥ इति ॥ पितृवदित्यावश्यकत्वात्तदनुपार्जनं विधानार्थं मातृपदंसपत्नमातृपरमित्यर्थः ॥ ( गारुडे ) नवश्राद्धसंपिडनंश्राद्धान्वपिचषो-  
डश ॥ एकैवतुकार्याणिस्विकृत्यनन्वपि ॥ अथश्राद्धदेशः । ( तत्रमनुः ) शुचिदेशंविपिक्तंयोगमयेनोपलेपयेत् ॥ दक्षिणाप्रवणचैवप्रय-  
त्नेनोपपादयेत् ॥ अवकाशेषुचक्षुषुनदीतीरेषुचैवहि ॥ विकृतेषुपतुष्यतिदत्तेनपितरःसदा ॥ इति ॥ चक्षुषुस्वभावशुचयोऽऽण्यादिप्रदेशा-  
स्तोष्वित्यर्थः ॥ ( विष्णुधर्मोत्तरे ) दक्षिणाप्रवणेदेशेतीर्थादौच्यहेपिवा ॥ भूस्स्कारादिसंयुक्तश्राद्धकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ भूस्स्कारःगोमयादिनोपले-  
पइत्यर्थः ॥ ( स्कंदे ) तुलसीकाननच्छायायत्रयत्रभवद्विजातत्रश्राद्धप्रदातव्यपितृणांवृत्तिहेतवे ॥ ( शंखस्मृतौ ) गंगायमुनयोस्तीरपयोऽथभर-  
कंदके ॥ नर्मदाबाहुदतीरेभृगुलिगोहिमालये ॥ गंगाद्वारेप्रयागेचनैमिषेष्व्करेतथा ॥ संहृत्यागयायांचदत्तमक्षयतां व्रजेत् ॥ अपिजाये-  
त्सोस्माकंकुलेकश्चिन्नरोत्तमः ॥ गयाशीर्षवटश्राद्धयानोदवात्समाहितः ॥ एष्टव्याबहवःपुत्रायद्वेकोपिगयांव्रजेत् ॥ यजेतवाश्वमेधेननी-  
लंवावृषमुत्तुजेत् ॥ ( स्मृत्यन्तरे ) अश्वमेधोगयाश्राद्धकन्यादानंतथैवच ॥ तथानीलवृषोत्तमःसममेतच्चतुष्टयम् ॥ ( वायवीये ) शमीपत्रप्रमाणेन  
पिंडं दद्याद्गयाशिरे ॥ उद्धरेत्सतसगोत्राणि कुलभकोत्तरं शतम् ॥ पितृमाताचभार्याचभगिनीदुहिता तथा ॥ पितृमातृज्यसचैषांसतसगोत्राणि वै वि-  
दुरिति ॥ ( स्मृत्यन्तरकूर्मपुराणयोः ) जीवतोवाक्यकरणत्वात्स्याहभूरेभोजनात् ॥ गयायापिंडदानञ्चत्रिभिःपुत्रस्यपुत्रता ॥ ( अथनिषिद्धेशः  
स्कंदपुराणे ) त्रिशंकोजयदेशं सवद्वादेशं योजनम् ॥ उत्तरेणमहानद्यादक्षिणेनतुकीकटात् ॥ देशैश्चैत्रशंकेवोनामश्राद्धकर्मणिर्वर्जितः ॥  
( वायुपुराणे ) कारस्करःकोलिगाश्चसिंधोरुत्तरमेवच ॥ प्रनद्याश्रमधर्माश्चेदेशावज्याःप्रयत्नतः ॥ ( दिवोदासीये ) म्लेच्छदेशेत्तरात्रासंन्यायाविप्र-



वर्जिते ॥ नश्राद्धमाचरेद्ब्रह्मचाऽऽकारं कथंचन ॥ (यमस्मृतौ) परकीयप्रदेशेतु पितृणां निर्वपेतुयः ॥ तद्धूस्वामिपितृभिश्च श्राद्धकर्मविह-  
 न्यते ॥ अटव्यः पर्वताः पुण्यनद्यस्तार्थान्यानि च ॥ सर्वाण्यस्वामिकान्याहुर्न हितेषु परिग्रहः ॥ हंसकृमिहतं क्लृप्तसंकीर्णो निष्ठाधिकम् ॥ देशं  
 त्वनिष्ठशब्दं च वर्जयेच्छ्राद्धकर्मणि ॥ इति ॥ क्लृप्तं संपङ्कम् ॥ संकीर्णम् अन्यैः सङ्कीर्णमित्यर्थः ॥ (अथ श्राद्धकालानां हयाज्ञवल्क्यः) अमावास्या  
 षट्काष्टाद्दिः कृष्णपक्षोऽयनद्वयम् ॥ द्रव्यब्राह्मणसम्पत्तिविषुवत्सूर्यसंक्रमः ॥ व्यतीपातो गजच्छायाग्रहणं चंद्रसूर्ययोः ॥ श्राद्धप्रतिरुचिश्चैव  
 श्राद्धकालाः प्रकीर्तिताः ॥ अस्यार्थः ॥ यत्र दिने चंद्रमानदृश्यते सा अमावास्या तस्या महद्व्यव्यापिन्यामपराह व्यापिनी ग्राह्या ॥ अपराह  
 पिण्डपितृयज्ञश्च द्वादशनेऽमावास्यायामितिकान्यायनमूत्रात् अपराहः पितृणां मिति वचनात् ॥ अपराह्मश्च पञ्चधा विभक्ते दिने चतुर्था भागस्त्रि-  
 मुहूर्तः ॥ अष्टकाशब्देन पौषमाघफाल्गुनकृष्णाष्टम्यः ॥ अमावास्यास्ति स्रोऽष्टकास्ति स्रोऽन्वष्टका इति विष्णुस्मरणात् ॥ वृद्धिः—भुञ्जन्मा-  
 दिनिमित्तवक्ष्यमाणकालः ॥ कृष्णपक्षोऽपरपक्षः ॥ अपरपक्षे श्राद्धं कुर्वीत इतिकान्यायनमूत्रात् ॥ अयनद्वयम् दशिणायनमुत्तरायणं च ॥  
 द्रव्यं कृसरतिलव्रीह्यादिकम् ॥ ब्राह्मणः श्रुतोऽध्ययनसम्पन्नतया सम्पत्तिलाभेयस्मिन्काले सतथोक्तः ॥ विषुवत् मेघतुलां संक्रान्ती ॥ सूर्ये  
 संक्रमः सूर्यस्य राशयन्तराप्रतिः ॥ व्यतीपातो योगविशेषः ॥ गजच्छाया “यदेन्दुः पितृदेवत्ये हंसश्चैव करो स्थितः ॥ याम्यातिथिर्भवेत्सा हि गज-  
 च्छाया प्रकीर्तितेति यमेन परिभाषिता ॥ इदुश्चंद्रः पितृदेवत्यो मघा हंसः सूर्यः करो हस्तः याम्यातिथिश्चादशीत्यर्थः ॥ हस्तिच्छायेतिकेचित्सेह  
 नमृह्यते कालप्रक्रमात् ॥ ग्रहणं सोमसूर्ययोरुपरागः ॥ यदा कुतः श्राद्धं प्रति रुचिर्भवति तदैव कर्तव्यम् ॥ चकारोऽप्येपि पुगादिप्रभृतयो वक्ष्यमाणाः  
 श्राद्धकालाः संगृह्यन्त इत्यर्थः ॥ अथ भाद्रपदाऽपरपक्षः ॥ अत्र यद्यप्यपरपक्षश्राद्धं कुर्वीत शक्येनापि नाऽपरपक्षमतिक्रामेदित्यादिभिर्द्वादशैः



परपक्षश्रद्धैः सामान्यवचनैः भाद्रपदापरपक्षोऽपि गृहीत एव ॥ तथापितस्य पुण्यतमव्यतिपादनार्थं तदतिक्रमप्रत्यवायप्रतिपादनार्थं च स्मृतिपुराणादिषु विशेषतस्तस्याभिधानं कृतम् ॥ ( तथाच विष्णुधर्मोत्तरे ) उत्तरादयनाद्वाज्यं स्याद्दक्षिणयनम् ॥ याम्यायनां मसं तत्रमुत्तरे शवे ॥ श्रोतृणां परः पक्षस्तत्रापि च विशेषतः ॥ पंचम्यूहृतत्रापि दशम्यूहृततोऽप्यति ॥ मघाशुक्लातुत्रापि शस्तावत्तदं दशी ति ॥ उत्तरायणदक्षिणायनश्रद्धाकरणश्रुतं सर्वस्मादक्षिणायनादपि तन्मध्यवत्युपेन्द्रनिद्वादिना द्वाषाढयाः पूर्णमास्याः प्रभृतिमासचतुष्टयं श्रेष्ठम् ॥ तस्मादपि सवस्मात् श्रोतृपक्षस्य सास्याऽपरपक्षः ॥ तत्राऽपि पञ्चम्या ऊर्द्धदशदिवसाः तत्राऽपि दशम्या ऊर्द्धपंच ॥ तत्राऽपि मघाशुक्ला तत्रयोर्दशीत्यर्थः ॥ ( ब्रह्मपुराणेपि ) अश्वकृष्णपक्षे तु श्रद्धाकार्यदिने दिने ॥ त्रिभागहीनपक्षवात्रिभागत्वं द्वमेव वा ॥ ( नागरखंडेपि ) आषाढयाः पंचमेपक्षे कन्या संस्थे शिवाक्षरे ॥ यौवैश्राद्धनः कुयादिकस्मिन्नपि वासरे ॥ तस्य संवत्सराय वत्तताः स्युः पितरो ध्रुवम् ॥ ( मार्कण्डेयपुराणे ) कन्यागते सवितरि दिना निदश पंचवा पाव्स्वनेन विधीनत श्रद्धाविधीयते ॥ प्रतिपद्द्वन्वाभायद्वितीया द्विजप्रदा ॥ वरार्थी नीतु तीया च चतुर्थी शत्रुनाशिनी ॥ श्रियं प्राप्नोति पंचम्या षष्ठ्या पूज्या भवेन्नरः ॥ गणाधिपत्यं सप्तम्या षष्ठ्या बुद्धिमुत्तमम् ॥ स्त्रियानवम्या प्राप्ति दशम्या पूर्णकामताम् ॥ वेदांस्तथाश्रयास्तस्वर्गानि कादृश्या क्रियापरः ॥ द्वादश्या हि मला भंच प्राप्नोति पितृपूजकः ॥ प्रजामेधां पशुपुष्टिस्वातंत्र्यं वृद्धिमुत्तमम् ॥ दीर्घमासुरथैर्धनुर्ध्वानां रतुत्रयोर्दशीम् ॥ युवानः पितरो यस्य मृताः शस्त्रेण वैहताः ॥ तेन कार्यं चतुर्दश्यां तेषां तपि मभीप्स ता ॥ श्रद्धं कुर्वन्मावास्या मन्त्रेन पुरुषशुचिः ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति स्वर्गावांसमभुत इति ॥ भाद्रपदशुक्लपूर्णिमा प्रशंसा पुराणसमुच्चये ॥ प्रशस्ता पूर्णिमा सुख्यस्ति तथा बोद्धवताः ॥ यथा तिलनैलं चतुर्थ्यैश्चेतकृणयोः ॥ पूर्णिमायां ममायांचं समम् पुण्यफलं द्रयोः ॥ पूर्णपक्षे

नभस्यस्यतिथिः पूर्णाप्रशस्यते ॥ अस्यां दत्ते पितृणां वैतृत्विः सांवत्सरी भवेत् ॥ नभस्य कृष्णपक्षे प्रतिपत्तिप्रभृतिशृङ्गपंचदिनानि कृष्णोऽपरपक्षः  
 सवितरि कन्यागते सति महालग्न इति प्रोक्तः ॥ तत्र पावर्णेनैव विधिना श्राद्धं कुर्यात् ॥ ( तदा हवृद्धमनुः ) नभस्यस्यापरः पक्षे यत्र  
 कन्यां ब्रजे द्रविः ॥ समहालयः सन्नाः स्याद्भुजच्छया ह्यस्तथा ॥ पवर्णेनैव विधिना श्राद्धं तत्र विधीयते ॥ ( आदित्यपुराणे ) कन्या  
 गते सवितरि यान्यहानि तु षोडश ॥ क्रतुभिस्तानि तुल्यानि पितॄणां दत्तमक्षयम् ॥ ( काष्ठाजिनिमनुगौतमाः ) आदौ मध्येऽऽसने वा यत्र क  
 न्यां ब्रजे द्रविः ॥ सपक्षः सकलः पूज्यः श्राद्ध षोडशकंप्रति ॥ इति ॥ अत्र यद्यपि बहुवचनेषु पक्षश्रुतिर्यथात्मकः पक्ष उक्तस्तथापि क्रदाचित्तिथि  
 बृद्ध षोडशदिनात्मको भवति ॥ अत्र षोडशत्वमपि त्रयाव्याचख्यौ ॥ तिथिबृद्ध्या प्रथमः पक्षः ॥ भाद्रपदपूर्णिमा सहेति द्वितीयः ॥ आश्विनशुक्ल  
 प्रतिपदा सहेति तृतीयः ॥ अत्र अन्य एव तु युक्तः तस्यापि क्षीणचंद्रत्वा विशेषणाऽपरपक्षानुपवेशं भवति ॥ ( तथा चेहमाद्रिमाधवयोर्दे  
 वलः ) ॥ अहः षोडशकं यत् शुक्लप्रतिपदा सह ॥ चंद्रक्षया विशेषणसापि दर्शात्मिका स्मृता ॥ इति ॥ यदि प्रतिपदादि दर्शान्तं श्राद्धं क्रतुमसमर्थ  
 श्वेतपंचम्यादि दर्शान्तमष्टम्यादि दर्शान्तं वा यथाशक्ति श्राद्धं कुर्यात् ॥ ( तथा चेहमाद्रौ गातमः ) ॥ अपरपक्षे श्राद्धं पितृभ्यो दद्यात् पंचम्या  
 दि दर्शान्तमष्टम्यादि दर्शम्यादिसर्वस्मिन् वा इति ॥ ( कात्यायनमनुजैः ) अपरपक्षे श्राद्धं कुर्वीत ऊर्ध्वचतुर्थाय दहः संपद्यते सप्तम्या ऊर्ध्वय दहः सप्त  
 म्योत्तरे चतुर्दशी श्राद्धेनान्यपरपक्षानातिक्रमेत् ॥ ( मनुर्पि ) कृष्णपक्षदशम्यादावैक्यं यित्वा चतुर्दशीम् ॥ श्राद्धे प्रशस्तास्तिथयो यैस्तानतथै  
 तराः ॥ इति ॥ अत्राऽप्यसामर्थ्ये एकस्यातिथौ यासंभवं श्राद्धं कुर्यात् ॥ ( तथा च कात्यायनः ) अशक्तः पक्षमध्येतु करोत्येकादिनेतदा ॥ निषिद्धपिदि  
 ने कुर्यात्पिदं न्यथा विधीयते ॥ निषिद्धे न द्वाभगं वादिदनेऽपि त्यर्थः ॥ ( अत्र क्षयाहदिनप्रशंसानागरखंडे ) ॥ आपाब्ध्याः पंचमपक्षे कन्यासंस्थे

दिवाकरे ॥ मृताहनिपितुयावैश्राद्धदास्यतिमानवः ॥ तस्यसंवत्सरयावत्संतुष्टाः पितरोऽप्युवम् ॥ (कात्यायनोपि) यातिथिर्यस्यमासस्य  
 मृताहेतुप्रवर्तते ॥ सातिथिः पितृपक्षेपिपूजनीयाप्रयत्नतः ॥ तिथिच्छेदोक्तव्याविनाशौचंयहृच्छया ॥ पिंडश्राद्धं चकन्यविच्छित्ति  
 नैवकारयेत् ॥ इति ॥ अथात्रयोदशीश्राद्धविशेषः ॥ (तत्रमदुः) ॥ यत्किंचिन्मधुनामिश्रप्रदद्यात्तुत्रयोदशीम् ॥ तदप्यक्षयमेवस्याद्र्षसुच  
 मघासुच ॥ (ब्राह्मे) ॥ त्रयोदश्याप्रयत्नेनवर्षसुचमघासुच ॥ नास्मान्परतरः कालः श्राद्धेष्वन्येषुवर्तते ॥ यदत्रपितरोदत्तं हन्तिस्मृतमक्ष  
 यम् ॥ इति ॥ अत्रनिषेधवचनन्यापिकेचित् (तत्रअंगिराबृहस्पती) ॥ कृष्णपक्षत्रयोदश्यायश्राद्धं कुरुतेनरः ॥ पंचवत्सत्यजनीयाज्ज्ये  
 ष्ठपुनस्यनिश्चितम् ॥ मघासुचर्षतः श्राद्धं ज्येष्ठपुत्रो विनश्यति (हेमाद्रौषट्त्रिंशन्मते) गृहीत्रयोदशीश्राद्धं न कुर्यात्पुत्रवानपि ॥ उपवा  
 संचसंक्रांताग्रहणेचंद्रमूर्ययोः ॥ इति ॥ अन्नमघात्रयोदश्याश्राद्धनिषेधः केवलपितृवर्गविषयः ॥ (तथाचमाधवीयेकाष्णाजिनः) श्राद्धं  
 तुनैकवर्गस्यत्रयोदश्यासुचक्रमेत् ॥ अतृतास्तत्रयस्यस्युः प्रजार्हिसंति तत्रते ॥ (स्मृत्यंतरेपि) इच्छेत्रयोदशीश्राद्धं पुत्रवान्यः सुतायुषोः ॥  
 एकस्यैवतुनोदद्यात्पार्ष्णितुसमाचरेत् ॥ इति ॥ अस्यार्थः—यः पुत्रवान्सुतायुषेर्भृष्टदिमिच्छेत्स एकस्यैकवर्गस्यैवश्राद्धं नोदद्यात् अपितुमा  
 तामहर्वाद्देशेनापिपार्ष्णसमाचरेत् तस्मादेकवर्गोद्देशेनैवमघात्रयोदश्याश्राद्धं निषेधो न तु पार्ष्णस्यैवतच्छ्राद्धस्य प्रशस्तत्वादित्यर्थः ॥  
 अथाऽपरपक्षचतुर्दशीश्राद्धनिर्णयः ॥ (तत्रयाज्ञवल्क्यः) प्रतिपद्यमृतिष्वेकां वचयित्वा चतुर्दशीम् ॥ शस्त्रेण तु हतोयैवेतभ्यस्त  
 त्रप्रदीयते ॥ (ब्रह्मपुराणोपि) युवानः पितरो यस्य मृताः शस्त्रेण वाहताः ॥ तेन कार्यं चतुर्दश्यातेषां तृप्तिमभीप्सता ॥ इति ॥ एतच्चतुर्द  
 श्याश्राद्धनिषेधोऽप्यशस्त्रहतविषयः दुर्मरणमृतानां चतुर्दश्यामेवश्राद्धं कुर्यात् ॥ (तुदाहहेमाद्रिमाधवाश्राद्धतत्त्वेषुमर्गचिः) विषयः

स्त्रथापदाहित्यब्राह्मणघातिनाम् ॥ चतुर्दश्याक्रियाकार्येऽन्येषां तु विर्णिता ॥ ( प्रचेता अपि ) वृक्षारोहणलोहादिविद्युज्जलविषादिभिः ॥  
 नखिदंष्ट्रिविषानामेषां शस्ता चतुर्दशी ॥ इति ॥ अनेन श्लाघितानामेव चतुर्दश्याकालमात्रं नियम्यते ॥ ननु चतुर्दश्यामेव हतानां  
 किन्तु तेषामन्यस्मिन्नापि काले भवत्येव श्राद्धम् ॥ इति हेमाद्रिमाधवप्रभृतयः ॥ शस्त्रहतस्यापि तु महालये चतुर्दश्यामेकोद्दिष्टमेव ननु पार्वणम् ( तदा  
 हमाधवेऽमुंतुः ) समत्वमागतस्यापि पितुः शस्त्रहतस्य तु ॥ एकोद्दिष्टमुतैः कार्यं चतुर्दश्यामहालये ॥ इति ॥ समत्वमागतस्य सर्पिडीकृतस्य  
 शस्त्रहतस्यापि तु चतुर्दश्यामहालयेऽपि तु एकोद्दिष्टकार्यमित्यर्थः ॥ दिनान्तरे तु पार्वणकार्यम् ॥ एकोद्दिष्टश्राद्धेन पितृमहादितृस्य सिद्धेः ( तथा  
 च हेमाद्रौ प्रजापतिः ) संक्रांता वृषारगे च वर्षांस्तस्मिन् महालये ॥ निर्वपेत्तत्पिडां स्त्रीनिनितां ह प्रजापतिः ॥ इति ॥ चतुर्दश्यामृतस्याऽपि महालये  
 एकोद्दिष्टकार्यं ननु पार्वणम् ( तथा च हेमाद्रिनागरखंडयज्ज्ञानोवाक्यम् ) यः कश्चिन्मानवः श्राद्धं स्वपितृभ्यः प्रदास्यति ॥ पितृपक्षे चतुर्दश्यां  
 न भस्ये मासि संस्थिते ॥ प्रेतानां राक्षसानां च भूतानां तद्भव्यति ॥ एतस्मात्कारणाच्छ्राद्धं पार्वणं नैव कारयेत् ॥ पितृपक्षे चतुर्दश्यां कन्यास  
 स्थे दिवा करे ॥ तैर्नेकोद्दिष्टमेव त्रिकर्तव्यं ननु पार्वणम् ॥ एतस्मिन् ग्रहनिर्गते व्यर्थं श्राद्धं भवदत्तः ॥ इति ॥ यस्य तु पितृमहोपशिक्षादिना हतस्त  
 स्यापि महालये चतुर्दश्यामेकोद्दिष्टं पित्रादिषु त्रिष्वपि शस्त्रादिना हतेषु त्रयाणामपि पृथक् पृथक् एकोद्दिष्टकार्यम् दिनान्तरे तु पार्वणविधानेनैव  
 कार्यमिति विवेकः ॥ इति चतुर्दशी श्राद्धनिर्णयः ॥ अत्र महालये श्राद्धं न वैदव्यं कर्तव्यम् ॥ ( तथा च हेमाद्रौ धर्मः ) महालये गया श्राद्धे वृद्धौ चान्वष्ट  
 कामुच ॥ न वैदव्यमत्र श्राद्धे षष्ठादप्यैरुषविदुरिति ॥ शेषम् - अमावास्यादिश्राद्धम् त्रिदिव्यमृताहृतं षडैव न्यतुर्दशको ॥ वृद्धौ न वैदव्यं तिथौ प्रो  
 ष्ठमघासुच ॥ इति कारिकाया मुक्तावत ॥ न वैदव्यं तत्रात्रैवम् ॥ एकः पितृवर्गः ॥ द्वितीयो मातृवर्गः ॥ तृतीयो मातामहवर्गः ॥ इति ॥ मातामहवर्गं च स्त्री

णांसहोदोःकर्तव्यं न पृथक् ॥ तथाच निर्णयमृतैर्मृत्युसारे च तत्रमातृश्राद्धं पृथक्कायमातृमाहानां संपन्निकमेवेति ॥ (हेमाद्रौ कर्मप्रदीपे  
पि) ॥ नयोषिद्धः पृथग्दद्यादवसानदिनाहते ॥ स्वभर्तृपदमात्रमभ्यर्चयन्मृतिं सांप्रकीर्त्तिता ॥ (हेमाद्रौ छागलेयः) क्षयाहकेवलाः कार्यावृद्धवादी  
प्रकीर्त्तिताः ॥ सर्वत्रैव हि मम स्थानान्न्यः कथं स्तुमातारः ॥ इति ॥ सर्वत्र निमहलयेऽवपृष्टकागयाश्राद्धे च मध्यमविनवेशः ॥ (तथा च सत्यव्रतः)  
पितृणां प्रथमं न मातृणां तदुत्तरम् ॥ ततो मातामहानां चक्रमभ्यर्चयन्तीत्येतोः ॥ काशिकायां तु चतुःपार्षणमुक्तम् ॥ तथाच (कात्यायनः) कुर्याद्वा द  
शैद्वन्यं प्रेतपक्षेतुसर्वदा ॥ यथातीर्थेणार्थाचपणधर्मः स न तनः ॥ आदौ पितृ ततो माता ततो मातामहस्तथा ॥ मातामहस्ततो दद्यात् प्रेतपक्षेतुस  
र्वदा ॥ (सुमंतुरपि) पितृभ्यः प्रथमं दद्यान्मातृभ्यस्तदुत्तरम् ॥ ततो मातामहेभ्यश्च तत्पत्नीभ्यस्तथैव च ॥ गयायां च तथा तीर्थे प्रेतपक्षे विरोधतः ॥  
कुर्याद्वा दशैद्वन्यमेको हि दृष्टतः परम् ॥ इति ॥ अपरकर्मद्वनपारिजातयोस्तु गयामहलयादौ मातृश्राद्धं पृथग्वासद्वत्स्वभर्तृभिरित्युक्तम् ॥  
(तथा च कात्यायनः) स्वेन भर्त्रा संश्राद्धमातामुक्तमुवाससम् ॥ पितरसहीचस्वेनैव तथैव प्रपितामही ॥ (चंद्रिकायां) क्षयाहं वंजयित्वैकं क्षाणां  
नास्ति पृथक् क्रिया ॥ केचिद्विच्छन्ति नारीणां पृथक् श्राद्धमर्हयः ॥ अत्र वृद्धाचारतो व्यवस्था इति ॥ पितृव्यप्रातृभिरन्यादीनां महलयश्चाद्ध  
मेको हि द्विविधानेन कर्तव्यम् ॥ (तदुल्लेखं भुला) संपिंडीकरणदूर्ध्वपक्षत्रचदीयते ॥ प्रात्रेभिरन्येषु प्रायस्वाभिनेमातुलाय च ॥ पितृव्यपुर  
वे श्राद्धमेको हि दंशनपार्षणम् ॥ (हेमाद्रौ अपि) उपाध्यायगुरुभ्यः पितृव्याचार्यमातुलाः ॥ क्षुरा प्रातृतनुप्रातृविकशिष्यपेषकाः ॥ भगिनी  
स्वामिदुहितृजमातृभगिनीसुताः ॥ पितरौ पितृपत्नीनां पितुर्भातृश्वससा ॥ सखिद्रव्यदशिष्याद्यास्तथैव महलये ॥ एको हि द्विविधानेन  
पूजनीयाः प्रयत्नतः ॥ इति ॥ इतराणि पित्रादीनां पार्षणमिति (आपस्तंबेऽपि) अपुत्राय मृताः केचित् द्वित्रयश्च पुरुषाश्च ये ॥ तेषामपि च दयस्यादेको

दिष्टंनपार्षणम्॥स्त्रियो भगिन्यादयः॥पुरुषा भ्रात्रादयः॥(कात्यायनोपि)संबंधिबांधवादीनामेकोदिष्टतुसवदा॥इति॥एतच्च भाद्रपदापरपक्षप्रति  
 पत्रभृतिषुचतुर्दशीवर्ज्यममावास्यापर्यन्तासुतिथिषुप्रत्यहमक्षौतन्मध्यरात्र्यथासंभवनंवेदव्यपार्षणविधानेन पितृव्यादीनामन्येषचैकोदि  
 श्वविधानेनतंत्रणपाकं कृत्वा पृथक् पृथक्परपक्षश्राद्धकर्तव्यमितिस्थितम्॥इतिभाद्रपदऽपरपक्षश्राद्धकालः॥(अथयुगादयो भविष्ये) वेशा  
 खस्यतृतीयायानवमीकार्तिकस्यच॥पौर्णमासीचमाघस्यनभस्यसत्रयोदशी॥युगादयःस्मृताहोतादत्तस्याक्षयकारकाः॥(युगांता ब्रह्मपुराणे)  
 मूर्यस्यसिंहसंक्रांत्यामंतःकृतयुगस्यतु ॥ अथवृश्चिकसंक्रांत्यामंतस्त्रेतायुगस्यतु॥ज्ञेयतुवृषसंक्रांत्यांद्वापरांतश्चसंज्ञया ॥ तथाचक्रुंभसंक्रांत्या  
 मंतःकलियुगस्यतु ॥ युगादिषुगतिषुश्राद्धमक्षयमुच्यते ॥ (मन्वंतरादयो मात्स्ये) आश्वयुक्कुनवमीद्वादशीकार्तिकस्यच ॥ चैत्रस्यतुतृती  
 यायातथाभाद्रपदस्यतु ॥ फाल्गुनस्यद्वमावास्या पौषस्यैकादशीतथा ॥ श्रावणस्याष्टमीकृष्णतथाषाढस्यपूर्णिमा ॥ आषाढस्यापिदशमी  
 माघमासस्य सप्तमी ॥ कार्तिकीफाल्गुनीचैत्रज्येष्ठपंचदशीतथा ॥ मन्वंतरादयश्चैतादत्तस्याक्षयकारकाः ॥ इति ॥ (अथ सांवत्सरिककालो  
 ब्रह्मे) प्रतिसंवत्सरकार्यं मातापित्रोर्मृताहनि ॥ पितृव्यस्याप्यष्टुत्रस्यश्रुतुर्ज्येष्ठस्यचैवहि ॥ (प्रभासखण्डे) मृताहनिपितृयस्तुनकुर्त्यार्था  
 च्छ्राद्धमादरात् ॥ मातृश्चैववरागेहे वसरांन्तेमृताऽहनि ॥ नाऽहत्तस्यमहादेवि पूजांश्लागिनोहरिः ॥ तस्माद्यत्नेनकर्तव्यं वर्षेष्वमृताऽहनि ॥  
 (मनुस्मृतौ) पूर्वाह्नेद्विकंश्राद्धमपरह्नेतुपार्षणम् ॥ एकोदिष्टंमध्याह्नेप्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्॥(ब्रह्मपुराणेपि)पूर्वाह्नेमातृकंश्राद्धमपरह्नेतुपु  
 त्रकम् ॥एकोदिष्टंमध्याह्नेप्रातर्वृद्धिनिमित्तकमातृकाश्राद्धमप्यष्टकाश्राद्धमित्यर्थः॥(भस्वपुराणे)प्रातःकालोमुहूर्तास्त्रिनिंगवस्तत्तवेवतु ॥  
 मध्याह्नेस्त्रिमुहूर्तःस्यादपरह्नेस्ततःपरम्॥सायाह्नेस्त्रिमुहूर्तःस्याच्छ्राद्धंतत्रनकारयेत्॥राक्षसीनामसावेलागर्हितासर्वकर्मसु॥क्षयाहाऽपरिज्ञानेअ

मावास्यायांश्राद्धम् ॥ ( तथाच भविष्ये ) मृतान् ह्यनेन जानाति मानवो विना तामजातिं न कार्यमावास्यांश्राद्धं सांस्वत्सं नृप ॥ इति ॥ अथ श्राद्धीयब्रह्म  
 णाः ( तत्र मनुः ) वेदविवाव्रतनाताञ्छ्रियान्यहमेधिनः ॥ पूजयेद्व्यकथेन विपरीतांश्च वर्जयेत् ॥ गृहमेधिनः गृहस्थाः ॥ ( याज्ञवल्क्यः ) ॥  
 अथः सर्वेषु वेदेषु श्रित्तीयब्रह्मविद्युवा ॥ वेदार्थविज्जगृहसामाजिमनुष्यसिमुष्णिगैः ॥ कर्मनिष्ठास्तोनिष्ठाः पंचाग्निब्रह्मचारिणः ॥ पितृ  
 मातृपराश्वैव ब्राह्मणाः श्राद्धसंपदे ॥ ( कात्यायनसूत्रे ) स्नातकानेके यतीन् गृहस्थान् साधून् वा श्रोत्रियान् वृद्धान् न वद्यान्स्वकर्मस्था  
 निति ॥ ( मात्स्ये ) ॥ अथ वर्णवेदविच्छेदात्वंशकुलान्वितः ॥ पुराणवेत्ता ब्रह्मण्यः स्वाध्यायजपतत्परः ॥ शिवभक्तः पितृपरः सूर्यभक्तोऽ  
 थैवर्णवः ॥ ब्रह्मण्यो गोविच्छातो विजितात्मा सुशीलवान् ॥ एतांस्तु भोजयेन्नित्यं हृदयेऽपि त्र्येच कर्मणि ॥ ( कात्यायनमनुव्यासाः ) गायत्री  
 सारमात्रोपि वां विप्रः सुयंजितः ॥ नायंजितश्च त्वेव देव स वांशीसर्वविक्रयी ॥ ( हेमाद्रिभास्वरे ) गायत्री जाध्यनिर्तहव्यकोयषु योजयेत् ॥ पापं  
 तिष्ठति नास्मिन्नाब्धिं दुर्दिवपुष्करे ॥ अर्थादिदुःखं दुर्दिवपुष्करे ॥ ( ब्रह्मवैवर्ते ) एतां पुत्रसमायुक्ताञ्छ्राद्धकर्मणि योजयेत् ॥ देहस्याद्धस्सु  
 तापनीनसमग्रे विना तया ॥ नवाऽपुत्रस्य लोकोऽस्ति श्रुतिरेषा सनातनी ॥ ( कौर्म्ये ) महादेवार्चनं तोमहादेवपरायणः ॥ वैष्णवो वाऽथ यो नि  
 त्यं स विप्रः पत्तिपावनः इति ॥ ( मुह्ययजुर्वेदीयमाध्यन्दिनप्रभंसा हौलिभाष्ये ) ऋग्वेदीचपितृस्थाने यजुर्वेदीपितामहः ॥  
 त्रिवेदीप्राप्तुः स्थाने विश्वेदेवाद्भ्यश्च विजिप्रविशेषेण श्राद्धकर्म निरन्तरम् ॥ शुद्धा प्रशस्ता कुष्णातु यजुस्तन्निषेधतः ॥  
 तस्मात्कव्यानि हव्यानि दातव्यानि द्विजातये ॥ वाजिनेदुत्तमैः कुतः कोटिगुणैर्न भवत् ॥ ( विष्णुधर्मोत्तरे ) देवा ब्रह्मणरूपेण चरं  
 ति स्थितीमिमाम् ॥ तस्मात्संप्राप्तमतिरर्थं प्रयत्नं न तु भोजयेत् ॥ ( अथानुकरणं याज्ञवल्क्येन दर्शितः ) स्वसीयः क्रतुविगजामा



तृयाज्यश्चक्षुःमातुलः ॥ त्रिणाचिकेतदौहित्रशिष्यसंबन्धिर्वाधवाः ॥ ( मरुपि ) अनुकरयस्त्वयंज्ञेयः सदासद्भिर्नुष्ठितः ॥ मातामहंमातुलं च  
 स्वसीयंश्चक्षुर्गुरुम् ॥ दौहित्रविदपितृबन्धुमृत्विग्याज्यौचभोजयेत् ॥ मातामहः मातुः पिता ॥ मातुलोमातुर्भ्रातास्वमीयः भगिन्याः पुत्रः ॥  
 गुरुः उपाध्यायः ॥ विदपतिः जामाता ॥ ऋत्विक् याजकः ॥ याज्यः यस्यात्विज्यं क्रियत इत्यर्थः ॥ अभावेऽपि शिष्यान् स्वाचारानिति  
 कात्यायनसूत्रे ॥ ( ब्रह्मवैवर्ते ) शिष्याश्च ऋत्विजोयाज्याः सुहृदः शत्रवस्तथा ॥ श्राद्धेषु धक्षुराः श्यालानभोज्यामातुलादयः ॥ ( वायु  
 पुराणेपि ) नभोजयदेकगोत्रान्भोजयन्प्रवर्गस्तथा ॥ एतेभ्योहिहविदंभुंजंतंनपितामहाः ॥ अत्रविकल्पेशिष्टाचाराद्भवस्था ॥ ( माधवी  
 येतु ) श्राद्धे ऋत्विक्पितृव्यसोदर्यसर्पिडा वैश्वदेवस्थाने नियोक्तव्याः नपित्रादित्थाने इत्युक्तम् ॥ ( अत्रिपि ) ऋत्विक्पुत्रादयोहोते  
 सकुलस्य ब्राह्मणाद्विजाः ॥ वैश्वदेवेनियोक्तव्यायद्योते गुणवत्तराः ॥ इति ॥ अथवर्जनीयाब्रह्मणाः ॥ ( तत्र याज्ञवल्क्यः ) रोगी  
 हीनतिरिक्ताङ्गः काणः पौनर्भवस्तथा ॥ अवकीर्णकुंडालौ कुनखौ श्यावदंतकः ॥ भृतकाध्यापकः क्लीबः कन्यादूष्यभि  
 शस्तकः ॥ मित्रशुकपिशुनः सोमविक्रयी परिविदकः ॥ मातापित्रेभृतरुत्यागी कुंडाशीघ्रपलायजः ॥ परपूर्वार्वापतिः स्तेनः कर्म  
 दुष्टश्चर्नदितः ॥ इति ॥ ( अस्यार्थः ) रोगी उन्मदादिरोगभक्षः ॥ हीनं न्यूनमतिरिक्तमधिकमां यस्यासौ हीनतिरिक्ताङ्गः ॥ एकेनाऽ  
 क्षणायोनपश्यतिअसौकाणः ॥ द्विरूढा पुनर्भूतस्यां जतः पौनर्भवः ॥ अवकीर्णी क्षतव्रतः ॥ कुनखौ दुष्टनखः ॥ श्यावदंतकः ॥  
 स्वाभाविककृष्णदंतः ॥ वेतनंमृत्विग्याऽध्यापयतिभृतकाध्यापकः क्लीबः द्युपशकः ॥ असतस्तवादीषणकन्यादूषयिताकन्यादूषी ॥  
 महापातकादिशुक्तोऽभिशस्तः ॥ मित्रशुक मित्रद्रोही ॥ परादपत्न्येनशीलःपिशुनः ॥ सोमविक्रयी यज्ञसोमस्यविक्रेता ॥ परिविदकःपरि



वेत्ता ॥ कुंडस्याग्नेयोऽश्वात्पसौकुंडशी ॥ वृषलोनिधमस्तत्सुतवृषलामजः ॥ परपूर्वापतिः पुनर्भूयति ॥ अदत्तादायीस्तेनः ॥ कर्मदुष्टाः  
 शान्निविरुद्धकारिणः ॥ एतेऽश्वोनिधिताः वर्या इत्यर्थः ॥ (कात्यायनसूत्रे) द्विनगं-मुकु-विह्वं-धिः श्यावं-दन्तं विह्वं-जननं व्याधितं-व्यङ्गि-  
 र्धिः त्रि-कुं-पु-सि-वज्यमिति ॥ (मनुः) नश्रद्धेयोजयति नक्षत्रधनैः कदास्यसग्रहः ॥ नाऽर्निमित्रं यविद्यान्तं श्रद्धेयोजयति ॥ यस्य मित्रप्रधाना  
 नि श्राद्धानि च हर्षाणि च ॥ तस्य प्रेत्य फलं नास्ति श्राद्धेषु च हर्षः पुच ॥ (व्यासः) संध्याहीनव्रतः प्रवेष्टुं प्रवेष्टुं विजिते ॥ दीयमानं रतयत्रां किं  
 मया दुष्कृतं कृतम् ॥ (मनुः) न ब्राह्मणं परीक्षत देवैर्कर्मणि ययं भित् ॥ पित्र्ये कर्मणि तु प्राप्तं परीक्षत ययन्नतः ॥ (जातूकण्यः) तस्मात्परीक्ष्यं  
 जितश्राद्धे वैदार्थ्यं वित्तमान् ॥ आनं त्यस्वल्पमप्येति प्रदत्तं सुपरीक्षितं हति ॥ तीर्थश्राद्धे ब्राह्मणपरीक्षानकर्तव्या ॥ (तथा च पद्मपुराणे) तीर्थे  
 पुत्रा ब्राह्मणान्नैव परीक्षेत कथंचन ॥ अन्नार्थं न मनुजान् भोजयेन्मनुजान्मातृ ॥ (अथ पितरः मनुस्मृतौ) वसवः पितरो ज्ञेयारुद्रज्ञेयाः पितामहाः ॥  
 प्रपितामहास्तथादित्याः श्रुतिरपासनात्मीनी ॥ तैत्रेय-सोमपासनाविधानां त्रियाणां हि विभुजः ॥ वैश्यानामाज्यपानामद्राणां तु मुकालिनः ॥  
 (अथ विश्वेदेवाः हेमाद्रिश्राद्धतत्त्वयोः शंखबृहस्पती) इष्टि श्राद्धेऽनुदक्षोऽस्य नोदिमुखे गतुः ॥ नैमित्तिकेऽस्य कालौ काम्ये च धृत्वा लोचनौ ॥  
 पुरुषावद्रवौ चैव पाण्ड्ये समुदाहृतौ ॥ तत्रैव-ज्योतिना भवेत्तथा न विदुषा द्विमातयः ॥ अयमुच्चारणीयस्तैः श्लोकः श्रद्धासमन्वितैः ॥ आगच्छन्तु म  
 हाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ॥ ये यत्र विहिताः श्राद्धे सा वधाना भवन्तु इति ॥ (आदित्यपुराणे) विश्वेदेवोऽक्रतुदक्षः सर्वास्विष्टिपुकीर्तिता ॥ नित्यं नदि

टी० १ दुश्कर्मा २ अनिगाः ३ विचित्रकायकाः ४ जनैर्वैकुण्ठदंतः ५ छिन्नमेदुर्चमा ६ महारोगी ७ हीनगः ८ श्वेतकुण्डली ९ गलितगः

१० स्वभावाच्छ्रुतिनमस्वी ।

मुखश्राद्धे वसुसत्यौचैपतृके॥ नवात्रालभनेद्वौकामकालौसदैवहि॥ अपिकन्यागतेमूयश्राद्धेचधुरीलोचनौ ॥ पुरुरवाद्वैचैव विश्वेवैचपावणे  
 इति ॥ कन्यागतेसूर्यइतिकेवलकाम्यबुद्ध्याक्रियमाणे॥ उभयबुद्ध्याकृतेतुपुरुरवाद्वैववेवा॥ (तत्रविश्वेषादेवानामुत्पत्तिर्ब्रह्माङ्गरुद्रहेमाद्रिषु) दक्ष  
 स्यदुहितासाक्षाद्विश्वानामेतिविश्रुता॥ विधिनासातुधर्मज्ञदत्ताधर्माधीमते॥ तस्याः पुत्रमहात्मनोविश्वेदेवाइतिश्रुतिः॥ विख्यातास्त्रिभुलोकै  
 पुसर्वलोकैकनमस्कृता इति ॥ अथश्राद्धोपकरणानि ॥ (तत्रतावत्कुशाः हारीतस्मृतौ) अथश्वेदेदक्षिणादिशंगत्वादक्षिणप्रणतान्समूलान्दृभो  
 नाहरेत् ॥ (यमस्मृतौ) समूलस्तुभवेद्भर्मः पितृणांश्राद्धकर्मणि ॥ मूलनलोकाज्यतिशक्रस्यतुमहात्मनः ॥ (गोभिलः) कुशमूलस्थितोब्रह्माकुश  
 मध्येतुकेशवः ॥ कुशाग्रेशंकरंविद्यात्सर्वदेवाः समंततः ॥ (दर्भलक्षणमाहकौशिकः) सप्तत्राः कुशमादृभोस्तिलक्षेत्रसमुद्भवाः ॥ ते प्रशस्ता  
 द्विजातीनां देविष्वेचकर्मणि ॥ अप्रभूताः स्मृतादृभोः प्रभूताश्चकुशाः स्मृताः ॥ समूलाः कुतपाः प्रोक्ताश्चित्रायास्तृणसंज्ञिताः ॥ अप्रभूता  
 अपुष्पिताइत्यर्थः॥ (हारीतः) दृभोर्ग्रैवैर्मित्युक्तं समूलग्रतुपैतृकम् ॥ तत्रमूलंविनायेतुतेकुशाः कुतपाः स्मृताः ॥ अच्छिन्नाग्रान्सप्तत्राश्च समु  
 लान्कोमलान्कुशान् ॥ पितृदेवजपार्थचसमादृढान्कुशान्द्विजः ॥ (हेमाद्रौयमः) समूलस्तुभवेद्भर्मः पितृणांश्राद्धकर्मणि ॥ बहिरूनाः  
 सकृल्लूनाः सर्वत्रपितृकर्मणि ॥ बहिरूनाः उपमूल्लूनाइत्यर्थः ॥ (व्यासः) तर्पणादीनिकार्याणिपितृणयानिकानिच ॥ तानिस्तुद्विषुजै  
 र्दृभैः सप्तत्राविशेषतः ॥ (हेमाद्रौविष्णुगणेशे) सर्पिडीकरणंयष्टजुर्दृभैः पितृक्रिया ॥ सर्पिडीकरणादूर्ध्वद्विषुजैर्विधिवद्भवेत् ॥ (श्राद्ध  
 तत्त्वे कात्यायनः) सप्तत्रिः सदृभोवाकर्मणिपितृकर्मणि ॥ अशून्यंतुकां कुचां सप्तत्राचमनंचरेत् ॥ नोच्छिष्टंत्यपिचित्रतु  
 लोच्छिष्टंतुवर्जयेत् ॥ पवित्रं ग्रंथिमत्सवित्रमित्यर्थः ॥ (अत्रिरपि) उभाभ्यामेवाणिभ्यांविधौर्दृभैः पवित्रके ॥ धारणीयेप्रयत्नेनब्रह्मार्थिसम

निवृत्ते ॥ ब्रह्मयज्ञेजपचैव ब्रह्मग्राथि विधीयते ॥ भोजनेन वर्तुलः श्रोतः एवं माननीयते ॥ (एतत्प्रकारस्तु हेमाद्रौ) ॥ द्विगुणीकृतानन्दभक्षित्वा  
नापाशः प्रदक्षिणमद्धवेदनविधाय पश्चाद्भागो नयदाप्रवेश्येत तदवलुप्रग्रथिः ॥ यदा समावप्रादक्षिण्येन समग्रवेष्टनविधाय पुरोगेन प्रवेश्येत  
तदा ब्रह्मग्रथिः ॥ (तथा च बृहदारुण्डे) अद्धप्रदक्षिणीकृत्य शिखां पार्श्वप्रवेशयेत् ॥ वैष्णवेन समागणेन वृत्तग्रंथोपवित्रके ॥ वैष्णवो मार्गः पश्चा  
द्भाग इत्यर्थः ॥ (ब्रह्मग्रंथिमत्यपवित्रलक्षणमपितत्रैव) संत्यज्य वैष्णवमार्गं ब्रह्मभागं विनिःसृतम् ॥ सकृत्प्रदक्षिणीकृत्य अपवित्रमभिधीयते ॥ तद्ध्रस्व  
ग्रंथिमत्यपवित्रवेदादिभिः ॥ पवित्रकर्तुरभिमुखः प्रदेशः ब्रह्ममार्ग इत्यर्थः ॥ (पवित्रलक्षणमाह कात्यायनः) अनन्तर्गभिणंसां प्रकाशं  
द्विदलमेव च ॥ प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रयत्र कुत्रचित् ॥ एतदेव हि पिञ्जल्यलक्षणं समुदाहृतम् ॥ आज्यस्योत्पन्नार्थयत्तदप्येतावदेव तु ॥  
(पवित्रकरणप्रकारमाह योगियाज्ञवल्क्यः) ॥ पवित्रस्थितिर्मेतरेण द्वयपवित्रे च कारयेत् ॥ नातर्गभैः कुशच्छिन्नैः कुशैः शिखां प्रदक्षिण्येन विनिःसृतम् ॥ नातर्गभि  
शिखारहितैः कुशच्छिन्नैः कुशैः नावेष्ट्य चिच्छेत् कुशमयपवित्रेऽप्येवैष्णव्यादिति च्छेदनं त्र इत्यर्थः ॥ पवित्रदभक्षित्वा संख्या ( मार्कण्डेयपुराणे )  
चतुर्भिर्दभैर्पि जलैः ब्रह्मणस्य पवित्रकम् ॥ एकैकं न्यनुद्विष्टं वैष्णवैर्गणैः यथाक्रमम् ॥ सर्वेषां भावद्वभ्यां पवित्रग्रंथितं नवा ॥ (अथ वर्ज्या  
न्कुशानाह हमाद्रिः श्रद्धतत्त्वयोः हारीतः) चितौ दर्भाः गन्धिर्दभेयदर्भा यज्ञभूमिषु ॥ स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् पारवर्जयेत् ॥ ब्रह्मयज्ञे  
च ये दर्भा यदभ्याः पितृतण्डणे ॥ धृतामृत्पुरीषाभ्यां तेषां त्यागा गोविधीयते ॥ (त्यागापवादमपितत्रैव) ॥ नदीमध्येतु ये दर्भा ब्रह्मसूत्रे च कृताः ॥  
पवित्रांस्तां निजानीयाद्व्याकाशस्थथैवे ॥ समित्युष्णकुशादीनि श्रोत्रियाः स्वयमाहरेत् ॥ शूद्राहृतैः कुशैर्विप्रैः कर्मकुर्वन्त्रजत्यधः ॥ (कुशा  
लभे प्रातिनिधिमाह शंखः) कुशाभावे द्विजश्रेष्ठः कुशैः कुर्वीत यन्ननः ॥ तपणादीनि कर्माणि काशाः कुशसमाः स्मृताः ॥ (स्मृत्यन्तरे) कुशकाशा

शरोद्वायवगोधूमबल्वजाः ॥ सुवर्णराजतंताम्रदशदर्भाः प्रकीर्तिता इतिकुशनिरूपणम् ॥ अथ तिलाः ॥ ( गारुडे विष्णुवाक्यम् ) मम देहसमुद्भू-  
 तास्तिलास्तार्क्ष्यपित्रकाः ॥ अमुरादानवौ दैत्या विद्रवन्ति तिलैस्तथा ॥ तिलाः श्वेतास्तिलाः कृष्णास्तिला गोमूत्रसन्निभाः ॥ ( मात्स्ये ) विष्णो-  
 र्देहसमुद्भूताः कुशाः कृष्णतिलास्तथा ॥ श्राद्धस्य रक्षणार्थ इति त्राहुर्महर्षयः ॥ ( आपस्तम्बः ) अटव्ययेसमुत्पन्ना अकृष्टफलितास्तथा ॥  
 तैव श्राद्धपत्रास्तु तिलास्तेन तिलास्तिला इति ॥ ये अटव्यामुत्पन्ना अकृष्टायांच भूमौ फलितास्ते श्राद्धकर्मणि शस्तमास्तिलाः ॥ ये तु ग्र-  
 म्याः कृष्टेन प्रफलिताः प्रसिद्धास्तिलास्ते न तिला इति हेमाद्रिः ॥ ( ब्रह्मण्डे ) यतिस्त्रिदंडीकरणराजंतयात्रमेव च ॥ दौहित्रः कुतपः  
 कालञ्छागः कृष्णाजिनंतया ॥ गौराः कृष्णास्तथा रण्यास्तैव विविधास्तिलाः ॥ पितॄणां तु तये समुष्टा दशैतैर्ब्रह्मणा स्वयम् ॥ ( अथ रजतं  
 मात्स्ये ) शिवेन त्रोटद्वयस्मात्तपितृवल्लभम् ॥ अमंगलं च यद्गेषु देवकार्येषु विविजितम् ॥ रजतं दक्षिणामाहुः पितृकार्येषु सर्वदा ॥  
 ( प्रभासखंडे ) हृष्यं पितृणामतिवल्लभं तद्वत्त्वानरे वल्लभतमुपैति ॥ सोमस्य लोके लभते सतातुद्धुवो निषङ्गः ऋषयो हियावत् ॥ ( अथ ग्रा-  
 ह्याणि धान्यानि मनुस्मृतौ ) तिलैर्ब्रीहियैर्वैषां पराद्भिर्मूलफलैश्च ॥ दत्तेन मासं प्रीयते विधिवत्पितरो नृणाम् ॥ ( प्रचेता अपि ) कृष्णमाषा-  
 स्तिलाश्चैव श्रेष्ठाः स्युर्नवशालयः ॥ महायवा ब्रीहियवास्तैश्च चमयूलिकाः ॥ कृष्णाः श्वेताश्च लोहाश्च प्रह्व्याः स्युः श्राद्धकर्मणि ॥ यवाः शितशू-  
 काः ॥ शालयः कलमाद्याः ॥ महायवा ब्रीहियवाश्च विशेषाः ॥ मधूलिकाः यावना लघान्य विशेषाः ॥ कृष्णाः स्थलजाः कृष्णवर्णविह्वः ॥ लो-  
 हारक्तशालय इत्यर्थः ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) यैर्व्रीहितैर्लोमाणां धूमैश्चणकैस्तथा ॥ संतर्पयत्पितॄन्मुद्गैः श्यामाकैः सप्तपद्मैरिति ॥ ( अत्रिदेवलो-  
 अगोधूमं च यच्छ्राद्धमाषमुद्गं विविजितम् ॥ तिलं क्केन रहितं कृतं मय्यकृतं भवेत् ॥ तिलं क्केन तिलं तैलं क्केन इत्यर्थः ॥ ( अथ वर्ज्यानि धान्यानि मरीचिः )

कुलन्याश्रयकाः श्रद्धेन देयैश्चैव कोद्रवाः ॥ कटुकानि च सवाणि विरसानि तथैवेति । चणकषु विकल्पो देशाचारत् ॥ कटुकानि पिपल्यादीनि ।  
 (विष्णुः) राजमाषमयं पशुष्विषितं कृतं लवणा निचवर्जयेत् ॥ पशुष्विषितं मोदकादिवर्ज्यं कृतं लवणं क्षारमृत्तिकायाश्च कृतं लवणमित्यर्थः ॥ (अथ ब्राह्म  
 फलानि ब्रह्मपुराणे) आम्रमात्रातं कविष्यद्वाडिमं विजूरकम् ॥ चीणां कलंकुचं बूभेयं धृतं थारुकम् ॥ प्राचीनामलं क्षीरं नालिकेरं पल्लवकम् ॥  
 नारंगं चमसजूरं द्रक्षानलिकपित्तकम् ॥ पटोलं च प्रियालं च कर्कशं बूबदराणि च ॥ एतानि फलजतीनि श्रद्धे देयानि यत्नतः ॥ तथा ॥ कालशा  
 कं तंडुलीयं वास्तुकमूलकं तथा ॥ शाकमारण्यकं च वृहदाण्डानुषान्यमूनि च ॥ (शाकादि संस्कारद्रव्याण्यादित्यपुराणे) मधुकं रामठं चैव कपूर्  
 मरिचं चूडम् ॥ श्राद्धकर्मणि शस्तानि सैधवं च पुस्तथा ॥ (अथ वज्याः मार्कण्डेयपुराणे) लघुनं गुंजनं च पल्लवं पुंडमूलकम् ॥ गंधार  
 कामलवृत्तं लवणान्याषाणि च ॥ वज्रैस्तानि वै श्रद्धेयं च वाचानश्रयते ॥ गुंजनं गजजडं त्रिप्रसिद्धम् ॥ पल्लवं कांदादिति प्रसिद्धम् ॥ (कर्म)  
 विपलं रुचकं चैव तथैव च ममूरकम् ॥ कुष्माण्डालादुवात्ता किभूस्तुंगं सुरस्तथा ॥ राजमाषं स्तथा क्षीरं माहिषास्यं विवर्जयेत् ॥ रुचकं सौवर्च  
 लम् ॥ (अथ ब्राह्मणिवर्ज्यानि च क्षीरादीनि कौर्मै) क्षीरं क्षीरविकारश्च पायसं रंकरामधु ॥ देयं श्रद्धेयुत्तनेन सर्वदा पितृभृतये ॥ (पाद्ममातस्य  
 योः) अन्नं च सदधि क्षीरं गोघृतं रंकरान्वितम् ॥ मांसप्रीणातिवैसर्वाच्च पितृन्त्यब्रवीदजः ॥ (मनुकृत्यायनौ) संवत्सरं तु गव्यं पयसा पण्यसे  
 न च ॥ पितरस्तृप्यन्तीति शेषः ॥ (यमः) अनिर्देशाया गोः क्षीरमाजं माहिषमेव च ॥ आविकं संधिनी क्षीरं मूषमैकं शफं च यत् ॥ वज्रैर्द्वौ वत्सा  
 याः पयैश्चैवान्यवत्सयाः ॥ आरण्यानंतु सर्वेषां वर्जयित्वा तु माहिषम् ॥ आविकदीनि वर्ज्यानि सदा स्यायं भुवोऽब्रवीन् ॥ (शंखः) सर्वासां  
 द्विस्तनीनां क्षीरमोज्यं अजावर्जमिति ॥ (सुमंतुः) पयोदधिघृतं चैव गोश्राद्धेषु पावनम् ॥ माहिषाणि घृतं प्राहुः श्रेष्ठं न तु पयः क्वचित् ॥

( ब्रह्माण्डेमाधवीये च ) द्विःस्त्रिंशपरिदग्धचतुर्थैवब्राह्मणलेहितम् ॥ शर्कराकीटपाषाणैः केशैर्यक्षाद्युपद्रुतम् ॥ पिण्याकंमथितंवेवतथा  
 तिलवणंचयत् ॥ दधिशकं तथाभक्ष्यमुष्णं चोष्णविवर्जितम् ॥ वज्रैश्चतथाचान्यान्स्वर्वाभितानपि ॥ सिद्धाः कृताश्चयेभक्ष्याः प्रत्यक्षल  
 वणीकृताः॥ वाद्रुष्टाभवाद्रुष्टाश्चद्रुष्टैश्चोपहतास्तथा ॥ वाससाचोपयूतानिज्यानिश्राद्धकर्मणि इति ॥ अस्यार्थः-द्विःस्त्रिंशवारद्वयपक्षम् ॥  
 परिदग्धं द्रवांशसंशोषणात् भांडाग्निनापरिलुष्टम् ॥ अप्रक्षालितम् अग्रे उपरिभागे मार्जारादिशिरवलीढं दूधभक्ष्येनास्वादितंवा। शर्कराश्च  
 ताश्मज्जातिविशेषः ॥ कीटाः पिपीलिकादयः ॥ पाषाणः दृषत् ॥ केशः लोम एतद्वर्षितम् ॥ पिण्याकं निस्त्रैहिलवृणं खलीइतिलयतम्॥  
 मथितं आलोडितं दधि ॥ अतिलवणं अतिमात्रलवणम् ॥ सिद्धाभक्ष्याः आमलकादयः प्रत्यक्षलवणेन मिश्रिताः ॥ वाग्द्रुष्टाः निंदा  
 दिरूपया वाचा दूषिताः॥ द्रुष्टैश्चोपहताः श्वमुर्काकाकुम्भकुट्टादिभिर्नम्रपातितपाषण्ड्यादिभिश्चदर्शनस्पर्शनादिव्याघराकृताश्च ॥ वाससाचोपे  
 धृतानि येषामुपरिमक्षिकाद्यपगमार्थवस्त्रमवधूयतेतान्चान्नानीत्यर्थः ॥ ( अथवज्यान्व्युदकानिब्रह्माण्डे ) दुर्गाधिपेनिलशरपंकलं पल्वलोदक  
 म्। नभेवद्यत्रोत्सृजितंनैववायुपाहतम्॥ यन्नसर्वायचोत्सृष्टयच्चाभोज्यानपनिजम् ॥ तद्रज्यसलिलतातमदैवश्राद्धकर्मणीति॥ अस्यार्थः-शार  
 कद्रुम् ॥ पल्वलोदकंक्षुद्रजलशयोदकम्॥ नक्षत्रात्राजुपाहतम्॥ यत्क्षूपादिकतत्कर्तृभिःसर्पप्राण्युज्जीवनाथनोत्सृष्टनपरित्यक्तंत्सलिलंपितृ  
 कर्मणिवर्ज्यम् ॥ कूपसमुद्रतपश्चादिपयोदकधारणार्थोजलशयः निपानंतजंतस्त्रिस्थितमपिजर्जनीयमित्यर्थः॥ (कात्यायनः) आपोनिशिनसृ  
 क्ष्मीयान्निषेचकदाचन॥ (हरितः) राज्ञोवेतावरुणंप्रविशतितस्मान्नरात्रौहृत्वात् ॥ (आदित्यपुराणे) चिरंपथुपितृवापिद्रुद्रस्पृष्टमथापिवा ॥  
 वर्जयेदितिशेषः॥ पृथुर्षितंजाह्नवीभिन्नान्यंतरितम् ॥ द्रुद्रस्पृष्टशौचाचारहितद्रुद्रस्पृष्टमित्यर्थः ॥ अथब्राह्मणनिमज्जनम्॥ (तत्रतावत्कालेवि

बुद्धिस्तौ अथ श्रद्धेऽपि पूर्वबुद्धिर्वातापि निमित्तयेति ॥ श्रद्धेऽपि श्रद्धाकर्तुमिच्छुः श्रद्धाकर्ता तत्र प्रयतो वा सर्वजः ॥ पूर्वबुद्धिः पूर्वस्मिन् दिवसे  
श्रद्धयोरप्यनुज्ञाणादपि निमित्तयेत् निमित्तजोऽप्यनुज्ञेय इत्यर्थः ॥ (हे श्रद्धा श्रद्धादित्ययं देवलोपि) श्रद्धाकर्तास्मीति निश्चित्य दत्ता विप्रान्निव्रजे  
तानि रामिषं सहृदुना सर्वमुक्तमहे ॥ असंख्यपरबुद्धिप्रज्ञाणां सामिं ययेत् ॥ अज्ञातिनसमानार्षनियुमानात्मशक्तितइति ॥ अज्ञातिन्  
यजमानभिन्नोत्रान् ॥ असमानार्षात् पित्रावरात् अहुरागत् ॥ पूर्वबुद्धौ श्रद्धाकर्तव्यं तत् पूर्वस्मिन् दिवसे ॥ अज्ञातिन्  
निमित्तयेतियवार्न् सम्यग्निष्पन्नयथादितात् ॥ पूर्वबुद्धिः यदहः श्रद्धाकर्तव्यं तत् पूर्वस्मिन् दिवसे ॥ अपरबुद्धिः अशक्तस्तु श्रद्धादिवत् इत्यर्थः ॥  
(यज्ञरत्नयोपि) निमित्तयेत् पूर्वबुद्धिप्रज्ञाणां नानाजन्तुचिः ॥ तैश्च पिंसयतौर्ग्यं मनोवाक्कायकर्मभिरिति ॥ आत्मवाननियतेन्द्रियः ॥ बुचिप्रय  
तश्च ॥ तैरपि निमित्तब्रह्मणोर्मानवाक्कायव्यापारः स्यते नियतौ भवितव्यमित्यर्थः ॥ (वाराहश्रद्धातस्ययेरपि) वद्वाराचादिकृत्यं श्रद्धाकर्तव्यं  
तिजानता ॥ स्थानोपलान्कृत्यततः विधातुमनयेत् ॥ इतः कष्टं वीरसृजं द्रुक्ष्वरादुचिभवेत् ॥ (नगरखंडेऽपि) पूर्वबुद्धिः सायमासाद्यश्रा  
द्धाहाणां द्विजपनाम् ॥ गृहं तान्त्रिपिदं तां सप्तस्तां निमित्तयेत् ॥ यतीन् दृष्ट्या नसाधूश्च श्रान्तिप्रज्ञाचारिण इति ॥ राजा विप्रदोषात्पराजो  
निमित्तजोऽप्यमिति हेमाद्रिः ॥ तत्र कर्ता स्वयमेव निमित्तजोऽपि ॥ दत्ता विप्रान्निव्रजे विदितं दलवचनात् ॥ असंभवेत्यनेन निमित्तजं कारयि  
व्यं तच्च साधुना पुरुरेण ॥ (तथा कर्मैर्) गार्ग्यनोर्दक्षैर्गार्ग्यो विद्याप्रयत्नतः ॥ समांश्र्य द्विजान् सर्वान्साधुभिः समिन्नयेत् ॥ सर्वे  
रे निमित्तजं कारयितव्यम् ॥ (अतस्त्वमेव तत्) स्मृतौ ॥ सर्वजं प्रयत्नं दत्तां द्विजानामुपमंत्रणे ॥ सर्वजं शब्देऽत्र सजतिरिति पलक्षणार्थः ॥  
(असर्वजं प्रणेतोऽपि माह माद्वै नारायणः) अभोज्यं ब्रह्मणस्य ब्रह्म त्रियाद्यैर्निमित्तम् ॥ तथैव क्षत्रियादीनां बृषलेन निमित्तम् ॥



वृषलेन शूद्रेण ॥ ( शतातपः ) अभोज्यब्राह्मणस्यान्नवृषलेननिर्मात्रितम् ॥ तथैववृषलस्यान्नब्राह्मणेननिर्मात्रितमिति ॥ ( अथनिर्मन्त्रणी  
 यब्राह्मणसंख्या तत्रतावदाह कृत्यायनः ) देवयुगमानयुगमान्यथाशक्तिपित्र्यएवइति ॥ अयुगमानविषमसंख्याकानिन्यर्थः ॥ ( याज्ञव  
 ल्क्योपिदेवयुगमान्यथाशक्तिपित्र्ययुगमास्तथैवचेति ॥ युगमानसमसंख्याकान् ॥ ( मनुवासिष्ठौ ) द्वौदेवपितृकृत्यत्रैकैकमुभयत्रवा ॥  
 भोजयेत्सुसमृद्धोपिनप्रसज्येतविस्तरे ॥ सात्त्विकां देशकालौचशोचब्राह्मणसंपदम् ॥ पंचैतान्विस्तरोहंतितस्मात्त्रेहतेविस्तरम् ॥ ( बृहस्प  
 तिरपि ) एकैकमथवाद्वात्रौदेवपित्र्येचभोजयेत् ॥ सात्त्विकाकालपात्रादिनसंपद्येताविस्तरात् इति ॥ अतएवयाज्ञवल्क्येनापिसको  
 चएवपक्षोविहितः ॥ द्वौदेवप्राकृत्यः पित्र्येउदगैकैकमेववा ॥ मातामहानामप्येवंतत्रवावैश्वदेविकं इति ॥ देवैश्वदेवैद्ब्राह्मणौ प्राक्  
 प्राङ्मुखौपित्र्योपित्रादिस्थानेत्रयः उदक्उदङ्मुखोऽप्येवैश्वदेविकं इत्यर्थः ॥ एकैकमेवेतिब्राह्मणाद्यसंभवेवदितव्यम् मातामहानामप्येवमितिपूर्वो  
 क्तपितृश्राद्धवत्कर्तव्यम् उभयत्रवैश्वदेवतंत्रेणवाकर्तव्यम् ॥ तत्रशब्दः समुदायवाचकइत्यर्थः ॥ यदातुद्भवेवब्राह्मणौलब्धौतदतुवैश्वदेवपात्रं  
 करण्यउभयत्रैकैकब्राह्मणानिन्युज्यात् ॥ ( यदाहवासिष्ठः ) यद्येकंभोजयेच्छ्रद्धैवंतत्रकथंभवेत् ॥ अन्नपात्रेसमुद्भूतसर्वस्यप्रकृतस्यच।देवता  
 यत्नेनकृत्वातः श्राद्धंप्रवर्तयेत् ॥ ( प्रास्येदन्नंतदग्नौतुद्याद्ब्राह्मचारिणइति ॥ अत्राशक्तोवेकब्राह्मणमपि ॥ ( यत्तुशंखेनोक्तम् ) भोजयेदथवाप्येकं  
 ब्राह्मणं पंक्तिपावनमितितदप्यलभविषयम् ॥ ( हेमाद्रौदेवलोपि ) एकैनापिहि विप्रेणषट्पिण्डश्राद्धमाचरेत् ॥ षडर्घ्यानृदापयेत्तस्मै षड्  
 भ्योऽद्यात्तथासनमिति ॥ ( एकब्राह्मणपक्षे वैश्वदेविकनिर्णयोब्रह्मांडे ) एकएवयदाविप्रोऽ्द्वितीयोऽनोपपद्यते ॥ पितृणांब्राह्मणोयज्योदेवे  
 त्वर्धिनियोजयेत् ॥ ( विस्तारिन्दा हेमाद्रिब्रह्मपुराणयोः ) देशकालधनलाभादेकैकमुभयत्रवा ॥ शेषाच्चवित्तानुसारेण भोजयेदन्ये





यथाहारा ब्रह्मचर्यपरायणाः ॥ अहिंसासत्यमक्रोधोद्वेगमनक्रिया ॥ आभारोद्ब्रह्मनंचेति श्राद्धस्योपसनावधीति ॥ यस्त्वा  
 मंत्रणमंगीकृत्य भोजनसमर्थोऽपितत्परा एजतितस्यदोषोऽस्ति ॥ (तथाचमनुः) केतितस्तुथान्यायं हव्यकव्योद्विजोत्तमः ॥  
 कथंचिदध्यतिक्रामन्वापः सूकरांतं व्रजेत् ॥ केतितः उपनिमंत्रित इत्यर्थः ॥ (यमः) आमंत्रितस्तुयोविप्रोभोलुमन्यत्रगच्छति ॥  
 नरकणां शंतगत्याचांडालेष्वभिजायते ॥ (देवलोपि) पूर्वनिमंत्रितोऽन्यनकुर्यादन्यप्रतिग्रहम् ॥ ॥ कुतहारोऽथवापुंतेमुकृतंतस्य  
 नश्यति ॥ निमंत्रितब्राह्मणपरित्यागेप्रत्यवायोऽस्ति ॥ (तथाचनारायणः) नरकतंनकारयित्वा निवारयति ॥ ब्रह्महत्यामवाप्नोतिशू  
 द्रयो नैव च जायते ॥ इति ॥ यश्चासंमंत्रितः कदाचन ॥ कृताह्वानोऽप्यनागमनेन कुतपादिश्राद्धकालातिक्रमं करोति तस्य दोषः आदित्यपुराणे दर्शा  
 तः ॥ “आमंत्रितश्चैनं वकुर्याद्विप्रः कदाचन ॥ चिरकारी भवेद्वागीपच्यते नरकाग्निना” इति ॥ दातृभोक्तोर्ब्रह्मचर्यानि यमातिक्रमं दोषोऽवृ  
 द्धमनुनेक्तः ॥ “ऋतुकालं निधुकोऽपि नैव गच्छेत्स्त्रियं क्वचित् ॥ तत्र गच्छन्समाप्नोति हानिं पुण्ड्रमेव तु” ॥ (तत्रैव) आमंत्रितस्तुयः श्राद्धे वृष  
 ल्यासहमोदते ॥ दातृयदुष्टं किंचित्तत्सर्वं प्रतिपद्यते ॥ (यमः) पुनर्भोजनमध्वानं भाराध्ययनमैथुनम् ॥ संध्यां प्रतिग्रहं होमं श्राद्धभुग्व  
 र्जयेत्सदा ॥ होमं स्वयं न कुर्यात् अन्येन तु कारयेत् ॥ (होतुरन्यस्याऽल्लोपे आह उशनाः) दशकृत्वः पिबेदपो गायत्र्या श्राद्धमुग्निद्विजः ॥ ततः  
 संध्यामुपासीत जपेच्च दुह्यादपि ॥ (श्राद्धतत्त्वायुपराणे) अध्वनीनो भवेदध्वः पुनर्भोजि च वायसः ॥ होमकृत्त्रेणी स्यात्पाठादुपग्रही  
 यते ॥ दानं निष्फलतामेति प्रतिग्राही दीरद्विताम् ॥ कर्मकृत् जायते दासो मैथुनीसूतो भवेत् इति ॥ कर्मात्रमारोद्ब्रह्मनादिकमिष्यर्थः ॥ (अथ  
 श्राद्धकर्तुर्नियमानाह कात्यायनः) तद्दहः शुचिरक्रोधोऽन्वरीतोऽप्रमत्तः सत्यवादी स्यादध्वमैथुनश्रमस्वाध्यायांश्च बर्जयति ॥ तद्

हः श्रद्धदिने ॥ शुचिः स्नानादिभिः शुद्धदेहः ॥ अक्रोधनः क्रोधवर्जितः ॥ अत्यरित-द्रुतकारिर्वहनः ॥ अप्रमत्त-प्रमादशून्यः ॥ सत्यवादी सत्यवदनशीलः ॥ अध्वानंदुराध्यासनम् ॥ मैथुनं स्त्रीसंयोगः ॥ श्रमः धारोद्देहादिजनितः क्रेशः ॥ स्वाध्यायशब्देन सांगत्यवेदस्याध्ययनमध्यापनं च विवक्षितमित्यर्थः ॥ (बृहन्नुरपि) निमग्नविष्वात्सराहोवज्रयन्मैथुनं शुभम् ॥ प्रमत्ततां च स्वाध्यायं क्रोधाऽशौचं तथा नृत्तमाशुं क्षुरक्षुर्कर्म ॥ (हेमद्रौजाबालिः) तांबूलं दंतकाष्ठं च स्नेहस्नानमभजनम् ॥ सत्योपययागानि श्रद्धकर्तव्यं जेत्येत ॥ (आणस्तंबः) अमैथुनहयः सर्वे नियमाः श्रद्धाशीलाः ॥ अप्रमत्तेन कर्तव्याः प्रमादो निरयं द्वेजत् ॥ (वाराहे) नशक्नोति स्वयंकर्तुं यदाह्वनवकशतः ॥ श्रद्धं शिष्येण पुत्रेण तदन्वयेनापि कारयेत् ॥ नियमानाचरत्सोपनिविहिताश्वधुंधरे (मात्स्येपि) पुनर्भोजनमध्वानं भारमायासमैथुनम् ॥ श्रद्धकुच्छाद्भुक् चैव सर्वमेतद्विजयेत् ॥ स्मयं च कलहं चैव दिवाभ्यापयत्वैव च ॥ (वाराहपुराणे) ब्रह्मचर्यादिभिर्भूतिरिनिगमैः श्रद्धमक्षयम् ॥ अन्यथाक्रियमाणं तु मोघमेव न संशयः ॥ अथ श्रद्धादिनपूजाकृत्यम् ॥ श्रद्धकर्ता ब्रह्मे मुहूर्ते उत्थाय यथापदेशं शौचं विधिं विधायाचाभेत् दंतधावनं तु न कुर्यात् ॥ (अतएव भविष्योत्तरे) श्रद्धशुभात्कृत्याय प्रकुर्यादंतधावनम् ॥ श्रद्धकर्तान्कुर्वीत दंतानां धावनं बुध इति ॥ अतः श्रद्धकर्तान्तधावनमभ्युत्पत्तिं विधायाचमनं विधिं निष्पादयेत् ॥ ततो नद्यादौ यथास्तनानं कृत्वा स्नानाद्गतर्पणं विधाय अहते द्यौते सिते वाससां परिधानाद्द्विदक्षणां धर्मप्रकुर्यात् परिदधीत ॥ (तथा च हेमाद्रौ गौतमः) स्नानेन दानेन पोषादेवोपैव ज्येष्ठकर्मणि ॥ वस्त्रायाः कक्षांशेषकाले यथाशुचि ॥ अनंतरं सूर्याग्रांतं हंसं च कृत्वा पाकशुभिममुलेपनादिभिः संस्क्रुयात् ॥ (यथाह उशनाः) गोमयेदकैर्मिमभजनशौचं कुर्यात् ॥ (ब्रह्मार्पि) भूमिः श्रद्धं पंचगव्यैर्लिता शोद्धा तथोत्सुकैः ॥ गोमृत्तिका च चक्षुःश्रकी

धर्तिलसर्पपादति॥अथैवंसंस्कृतायामुविशोधितेषुनवेषुच भण्डेषुपाकं कर्तुमुपक्रमेत्॥(तथाचेद्वलः॥तथैव यंत्रतोदाता प्रातःस्नान्वासहस्रं॥  
 आरभेतनवैःप्रात्रन्नारभेचर्वाधेवैरिति॥स्नातयापरिहिताधावकयौतथेतवाससापन्त्यासह शक्तियुतःस्वयमेव समस्तपाकारंभसमाप्तिकुर्यात्॥  
 अशक्तश्चेत् स्वयमारंभमात्रं कृत्वा अचारंभं मुस्नातवाधेवैः स्वजनैः कारयेदित्यर्थः॥ पत्न्या स्वहस्तेनपाकः कर्तव्य इत्यत्रार्थे लिङ्गदर्शनं  
 हेमाद्रौ चमत्कारखंडे च॥ “ततश्चप्रयागमासतदर्थजनकोद्धया॥गामदेशात्स्वयसाध्याविनयेनसमन्विता॥”(व्यासोपि)शुद्धिर्नैवमुस्नाता  
 पाकं कुर्यात्प्रयत्नतः॥ निष्पन्नेषुचपाकेषु पुनःस्नानं समाचरेत्॥ (पराशरः) शुद्धाग्निशुद्धेवानां ब्रह्मचारितपस्विनाम्॥ तावन्नदीयते किं  
 चिद्यावत्पिडाब्रह्मनिर्वपेत्॥ पाककारणे वर्ज्याः॥(ब्रह्मपुराणे) रजस्वलांच पाखंडां पुंश्चलीं पतितां तथा॥ त्यजेच्छूद्रां तथावंध्याविधवां  
 चान्यगोत्रजम्॥ व्यंगकर्णींचतुर्थाहःस्नातामपरिजस्वलाम्॥ वर्जयेच्छूद्रपाकार्थममादृपितृवंशजम्॥मादृपितृवंशजभिन्नात्यजेदित्यर्थः॥  
 गर्भिण्यपिपाकंनकुर्वीत्॥ (पाकपचनभाण्डाभिहेमाद्रौ) सौवर्गान्यथाप्याणितभ्रकं स्योद्धवानिच॥ यार्तिकान्यपिभग्यानिनूतनानिहृदा  
 निच॥ नकदाचिपचेदन्नमयःस्थालीषुपैतृक्रम॥ अयसोदर्शनदेवपितरोविद्वन्तिहि॥कालयसंविशेषणानदितिपितृकर्मणि॥फलानचैवशा  
 कानाच्छेदनार्थानियान्ति॥महानसपिशस्त्राणतैवामवहिसन्निधिः॥ (आदित्यपुराणे) पचेदन्नानिमुन्नातःप्राग्नेशुषुचिषुस्वयम्॥स्वर्णादियतु  
 जातेषुमुन्मयेष्वपिबुधः॥ अञ्चिद्गुणिलिप्तुतथातुपहतेषुच॥ नायसेषुनभिन्नेषुदूषितेष्वपिकर्हिचित् इति॥ (भृगुसंस्कारानन्तरं सुक्तं  
 देवलस्मृतिर्कूर्मपुराणयोः) ततोऽन्नं दुसंस्कारं नैकव्यञ्जनमभ्यवत्॥ चोष्यपेयसदृचयथाशक्तिप्रकल्पयेत्॥ अस्यार्थो हेमाद्रिणाकृतः॥  
 बहुसंस्कारम् सुपकारशान्नोपदिष्टैः समृद्धतरुहजनप्रतिसिद्धिहेङ्गुमरैचलाकर्ग्रादियुक्तिजन्यैराभङ्गारसनीयैरतिशयविशेषैर्युक्तम् ॥

नैकव्यञ्जनमभ्यवत् व्यज्यतेऽनेनान्नस्यसइति व्यञ्जनं सूपशार्कादिकम् ॥ दतैरवलंब्यद्युज्यतेतद्द्रव्यम् ॥ अस्यश्राद्धोदशनसना  
 विदिर्मनिपीडितस्य सफ्टकारेण मुखमाहतेनसोनिणीयते तच्चोप्यम् यथेक्षुषण्डादिकम् ॥ पेयम् द्रवैकस्वभावं पानकादि ॥ उपल  
 क्षणं चैतद्भोज्यलेह्ययोः ॥ यत्वनतिकाठिन्यादतिप्रयत्नस्वंदनपेयं चर्वयित्वैवनिगीर्यतेतद्भोज्यम् ॥ यत्सुसान्द्रवस्वभावतयादर्शनान  
 भेक्षेणरसनव्यापारेणस्थते तत् लेह्यम् ॥ यथाशक्ति शक्तिमन्तिकम्प्रयत्नं संपादयेदित्यर्थः ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) गुडशर्कर  
 आस्यंद्योदियंफ्राणितमुर्ध्वम् ॥ तव्यपयोदधिघृतैलचितिलसंभवम् ॥ मत्स्यंढी उत्कृष्टः शर्कराभेदः ॥ फ्राणितम् इषक्काथितस्य  
 आसस्य द्रव एव विकारः सुर्ध्वः गुडमरिचैलामिश्रयोगोभूयस्थूलवर्णविकारइत्यर्थः ॥ तथा ॥ पायसंशालिमुद्गाढ्यं मोदकादीश्चभक्तितः ॥  
 पूरिकांचरसालांचगोक्षीरञ्चनियोजयेत् ॥ यानि चभयदह्यार्णि स्वादुस्निधानिभोद्विजाः ॥ इषदुष्णकटूच्यवेद्यानिश्राद्धकर्मणि ॥  
 मोदकः लड्डूदकः ॥ पूरिकाः पूरीतिनाम्ना प्रसिद्धाः ॥ रसाला शर्करात्वगेलानांकेसरमधुमरिचमिश्रमनुद्धतस्नेहभागं वस्त्रेसंघृष्य  
 गालितं गोदधिक्षुतेत्यर्थः ॥ ( कूर्मपुराणे ) दूषशाकफलनीक्षुन्ययोदधि घृतं मधु ॥ अन्नचयथाकामविविधं योज्यमे  
 यकम् ॥ यद्यदिष्टदिष्टेन्द्राणां तत्तत्सर्वमिदमेतत् ॥ ( देवीपुराणे ) सर्वेषामेवचान्नानां परमांत्रचपायसम् ॥ सर्वाग्रदः  
 सप्तप्रोक्तोयदनन्तनुपायसमिति ॥ अन्नसामिकनवैश्वेद्वधपृथक्पाकःकर्तव्यः ॥ एवं समाप्तेचपाके श्राद्धश्रमिसंस्कारकर्तव्यः ॥  
 ( तत्रतावच्छ्राद्धयोग्याश्रमविष्णुधर्मोत्तरे ) गोमयेनोपलिप्तमुश्राद्धकांश्याह्वेषुच ॥ मनोज्ञेषुविचित्रेषु रुचिरेषूतमेषुच ॥ उद्यानेषु  
 विविचित्रेषु सैकतेषु समेषुच ॥ ( मात्स्ये ) गोमयेनोपलितेतु दक्षिणाप्रवणस्थले ॥ श्राद्धं समारभेद्भक्त्या गोष्ठेवाजलसन्निधौ ॥

( विष्णुस्मृतौ ) संवृतेष्वश्राद्धकुर्व्यात् नरजस्वलांश्चेन्नश्वानंविद्व्राह्मणान्प्रभुभक्तुं प्रयत्नाच्छ्राद्धमजस्यदर्शयेत् ( ब्रह्मंडे ) ॥ तस्मा  
 त्परिवृतेदद्यात्तिलैश्चान्वयकीरयेत् ॥ राक्षसानां तिलरक्षा शुनां वै संवृतेनचेति ॥ एषममतेगृहकर्मणि गृहजनकृत्यमाहहरतिः ॥  
 कृतकर्मणः सन्नीबालवृद्धाः सुरभिस्नाताः शुचयः शुचिवाससः स्थुरिति ॥ सुरभिस्नाताः सुगंधितैलादिद्रव्यस्नाता इत्यर्थः ॥ इतश्चा  
 भ्युदयिकविषयमितिहेमादिः ॥ अथाहः साद्धग्रहे व्यतीते निमंत्रितानांब्राह्मणानांनवरोपकल्पनं ( छेदनं ) कारयित्वातेभ्यस्तैलादिकं  
 स्नानसाधनंदंतवावनसाधनंचंदद्यात् ॥ ( तथाचकात्यायनस्मृतिमविष्ययोः ) तैलमुद्रतनंस्नानंदंतंयवनमेवच ॥ कृतरोपनखेभ्यस्तुदद्या  
 नेभ्योऽपरेहनि ॥ अपरेहनिश्राद्धदिनइत्यर्थः ॥ यत्तुपचेतसोक्तम् ॥ "तैलमुद्रतनंस्नानंदद्यात्पूर्यह्वतु ॥ श्राद्धसुभ्योनखश्मश्रुच्छेदनंतुका  
 रयेत्" इति ॥ अत्रविकल्पोवृद्धाऽऽचारतेह्यः ॥ अथश्राद्धसंपदः ॥ ( तत्रमनुयमहारीताः ) ॥ अपराह्णस्तिलादर्थावास्तुसंपादनंतथा॥सृष्टिर्मु  
 ष्टिर्द्विजाश्चाग्न्याः श्राद्धकर्मसुसंपदः ॥ अस्यार्थः ॥ अपराह्णः अपराह्णकालः ॥ तिलादुर्भक्ष्यपूर्वश्रुताः ॥ वास्तुसंपादनम् वास्तु श्राद्धार्थं वै  
 श्व तस्यसंपादनं गोमयादिनांशोधनम् ॥ सृष्टिः अकार्पण्येनान्नादिविसर्गः ॥ ऋषिहोत्रादेश्चमाजनंस्वाहुतावा ॥ अग्न्याः पक्षिपावनादय  
 श्चब्राह्मणाः ॥ एतानि वस्तूनिश्राद्धसंपदःश्राद्धार्थद्रव्यसमुद्भयः ॥ श्राद्धार्थिनसर्वाणेतानिसंपादनीयानीत्यर्थः ॥ ( ब्रह्मपुराणे )  
 उपमूलंसकृल्लूनान्कुशांस्तत्रोपकल्पयेत् ॥ यवांस्तिलान्बुसीः कांस्यमापः शुद्धैः समाहताः ॥ पाणराजतप्राणिपात्राणिस्थुः  
 साभिन्मधु ॥ पुष्पधूपसुगंधादिकौमममूत्रंचमक्षणम् ॥ बुसीः त्रितियोभ्यानिकुशादिनिर्मितान्यासनानि ॥ कांस्यम् कांस्यमयमग्नौ  
 करणद्वयभाजनम् ॥ शुद्धैः शौचादिशुद्धैः समाहताः आनीताः आपः जलानि ॥ कौममूत्रं दुकूलमूत्रम् ॥ मक्षणम् दर्वी इत्यर्थः ॥

( मनुस्मृतौ ) त्रीणिश्राद्धेपवित्राणिदोहित्रः कुतपस्तिताः ॥ त्रीणिचात्रप्रशंसतिशौचमक्रोधमम्वराम् ॥ तत्रैव ॥ व्रतस्थमपिदोहित्रश्राद्धे  
यत्ननभोजयेत् ॥ कुतपं चासनेदद्यात्तिलैश्चविक्रेमहीमिति ॥ व्रतस्थं ब्रह्मचारिणमपि ॥ दोहित्रं पुत्रिकायाःपुत्रम् ॥ कुतपनेपालदेशप्र  
भवं कंबलमित्यर्थः ॥ ( स्मृतिसंग्रहे ) उच्छिष्टशिवनिर्मल्यवर्तचतुर्दशकम् ॥ श्राद्धेसप्तपवित्राणिदोहित्रःकुतपस्तिताः ॥ इति ॥ उच्छि  
ष्टम् वत्सस्योच्छिष्टदुग्धम् ॥ शिवनिर्मल्यं गंगादकम् ॥ वातं मधु ॥ मृतकपर्पटं कोशेयं तसरी पट्टं वा इत्यर्थः ॥ ( प्रभासखंडे ) ब्राह्मणाः  
कंबलोगोवोहूयाथ्यतिथयस्तथा ॥ तिलादर्भाश्चकालश्चनवैकुन्ताःस्मृताः ॥ अथश्राद्धदेशश्चर्यानि ( यमस्मृतौ ) कुङ्कुटोविद्धराह  
श्चकाकश्चाथविडालकः ॥ वृषलीपतिश्चवृषलःषण्डोवीरारजस्वला ॥ एतेतुश्राद्धकालैर्वैवर्जनीयाःप्रयत्नतः ॥ खंजःक्राणःकुणिःश्वरी  
दातुःप्रेष्यःकरस्तथा ॥ न्यूनांगोऽयतिरिक्तांगस्तमप्यनयेत्ततः ॥ ( बाधुपुराणे ) अन्नपश्वेष्टेतेतुयदिवैवर्जनीयाः ॥ उत्सष्टव्यं  
प्रधानार्थसंस्कारस्त्वापदिस्मृतमिति ॥ कुङ्कुटदिभिर्दध्मन्नम् उत्सष्टव्यम् परित्याज्यम् ॥ प्रधानार्थं अग्नौकरणब्राह्मणभोजनाद्य  
र्थम् ॥ आपदिनुोत्सष्टव्यं किनुतस्यैवपवित्रीकरणं कर्त्तव्यं तदुक्तंजमदग्निना ॥ “ शुद्धवत्योत्सष्टव्यमां डचः पावमान्यस्तरत्समाः ॥ पूते  
नवारिणादभौश्रदोषमुपानुदेदति ॥ एतान्वद्रस्तवामेत्याद्यास्तिसंस्तुवःशुद्धवत्यःश्रुवदिनाम् ॥ यदेवदेवदेहमनित्याद्यास्तिसःकूर्ममां डचः  
यजुषाम् ॥ यदंतियस्त्रदूरकइत्याद्याःपावमान्यःसामगानम् ॥ तरत्समदीधवतीत्याद्यास्तत्समाअथर्वणामित्यर्थः ॥ ( मनुस्मृतौ ) चांडालश्च  
वराहश्चकुङ्कुटःधातथैवच ॥ रजस्वलाचषण्डश्चनेक्षेत्रश्रतोद्भिजात् ॥ होमेप्रदानेभोज्येचयदेभिर्भिवीक्ष्यते ॥ देवैकमणिपित्र्ये  
वातदूच्छान्यथातथम् ॥ घ्राणेनमूकरोहतिपशवतेनकुङ्कुटः ॥ श्वातुदधिनिपातेनस्पर्शेनावरवर्णज इति ॥ अवरवर्णजः शुद्धइत्यर्थः ॥



(पृथ्वीचंद्रादेये) पादुकोपानहैछत्रचित्ररक्तांबंतथा ॥ रक्तपुष्पचमाजार्श्राद्धभूमौविवर्जयेत् ॥ (निर्णयप्रदीपे) घंटानिनादोहयसन्निधानं  
 शंखकशंसंकदलीदलंच ॥ उन्मत्तजात्यर्कहयारिजनिश्राद्धस्यवैष्णवकरणमृनि ॥ घंटानिनादः घंटशब्दः ॥ हयोऽधः ॥ सन्निधानेश्राद्ध  
 समीपेवर्ज्यः शंबूकं शुक्तिकां उन्मत्तोपचरः ॥ जात्यर्कप्रसिद्धौ ॥ हयारिजमहिषाक्षरादीत्यर्थः ॥ अथापराद्धकृत्यम् ॥ तत्रतत्तवदपराद्धकालः ॥  
 (मत्स्यपुराणे) ऊर्ध्वमुहूर्तास्तु तपाद्यन्मुहूर्तंचतुष्टयम् ॥ मुहूर्तपंचकं ब्रह्मेतत्स्वधाभवनमिष्यते ॥ (कुतपमाहपराशरः) अह्नौमुहूर्ताविलयात्  
 दशपंचचसर्वदा ॥ तत्राष्टमोमुहूर्तोयः सकालः कुतपः स्मृतः ॥ (मातस्ये) मध्याह्नेसर्वदायस्मान्मंदीभवतिभास्करः ॥ तस्मादुन्नतफलदस्तत्रारंभो  
 विशिष्यते ॥ इतिकुतपेप्रारभ्यतददिपञ्चमुहूर्तेषुपरिसमापनंश्रेयस्करमित्यर्थः ॥ एवमपराद्धमुक्तवाब्राह्मणाह्नादिदिक्मर्तुच्यते ॥ तत्रश्राद्धक  
 र्त्तास्नात्वाशुक्लवाससीपरिदध्यात् ॥ (तथाचमाधवीयेउशनाः) स्नात्वाधिकारीभवतिदेवैर्पित्र्यैचक्रमणीति ॥ श्राद्धकृच्छुक्लवासाः स्यादितिप्रचेत  
 सोक्तम् ॥ (स्नानानंतरंयत्कर्तव्यंतदुक्तंप्रभासखण्डे) ततोऽपराद्धसमयेश्राद्धकर्त्तासमाहितः ॥ स्वयंप्रभाह्वयेद्विप्रान्सर्वणैर्वसमाहुतान् ॥ समाहु  
 तान् स्नातान् ॥ (विष्णुपुराणे) पादशौचादिनागेहमागतानर्चयेद्विजान् ॥ अर्चयेत्सत्कुर्वात् ॥ (मार्कण्डेयपि) स्नातः स्नातान्समा  
 हूतान्स्वागतेनार्चयेत्पृथगिति ॥ स्वागतेनभक्तस्वागतमितिप्रश्रवाक्येन अर्चयेत्समानयेत् ॥ एतस्मात्तमस्माकमितिप्रतिवचनप्रत्येकंते  
 ब्रूयुरित्यर्थः ॥ (यमस्मृतौ) ततःस्नानान्निवृत्तेभ्यः प्रत्युत्थयकृतांजलिः ॥ पाद्यमाचमनीयंच संप्रयच्छेद्वथाक्रमम् ॥ (पादप्रक्षालनेमन्त्रो  
 भविष्ये) प्रक्षालयेद्विप्रपादाच्छ्रोत्रेवीरितितृचा ॥ (ब्रह्मनिर्गते) पाद्यंचैवतथाध्वंचैवदेवादेप्रदापयेदिति ॥ (मार्कण्डेयपुराणे) संपू  
 ज्यस्वागतेनानभ्युपेतान्यहोद्विजान् ॥ पवित्रपाणिराचंतांनानेनपूशयेत् ॥ (कौर्म) यथोपविष्टान्सर्वान्स्तानलंकुर्याद्विभूषणैः ॥



समदामभिः शिरावैधूपदीपऽदुलेपनैरिति ॥ ततोऽहद्राभिमुखस्थिते अंगणप्रदेशे गोमयणे हुत्राभ्यमंडलद्रव्यंकुर्यात् ॥ (तथाच मात्स्ये) एवमासद्यत्तत्सर्वमन्यग्रतोऽपि ॥ गोपयेत्तुलितायां गोसूत्रेण तुमण्डले ॥ (गोमये विशेषमाहजबलिः) अपेध्याऽनग्न्या नानीरुजानतिं गवाम् ॥ अयं गार्तचस्रस्कंशुचिगम्यमाहृतः ॥ (बौधायनः) उपलिप्ते सस्रथान्शुचैः शुक्लसमन्विते ॥ चतुर्संत्रिकोणं तु वर्तुलं चार्द्धचंद्रकम् ॥ कर्तव्यमानुष्येण ब्राह्मणादिषु मण्डलम् ॥ ब्राह्मणादिकमाश्चतुर्गुणित्यर्थः ॥ (मंडलपरिमाणमाह) लौगाक्षिः) हस्तद्वय मितं कार्यवैश्वदेविकमंडलम् ॥ तदक्षिणे चतुहस्तं विप्राणामंशिशोधने ॥ (इत्योर्मंडलयोः क्रमेणऽशतकुरादिभिः स्ननमाह) हेमाद्रौ व्याघ्रपादः) उत्तरेऽशतसंशुक्ता नूर्वग्रांन्विन्यसेत्कुरान् ॥ दक्षिणे दक्षिणाग्रंश्च सतिलान्विन्यसेद्द्विजः ॥ (शंखलिखितौ) पाद्याध्याचमनीयो दकानि दत्त्वा ब्राह्मणानुपसंग्धोपवेशयेदसनमालभ्येति ॥ (हेमाद्रौ अत्रिः) ॥ तत्रासनानि देयानितिलैश्चैव कुरैः सह ॥ पृथक्पृथगासनेषु तिलैर्लेनदीपिका इति ॥ तत्र श्राद्धदेशे आसनानि देयानि ॥ कुरैः सह तास्तिलश्च देयाः श्राद्धसंगोपवेशनीयाः ॥ पृथक्पृथगेकैकस्यासनं स्वसमीपे एकैकतैलदीपिका देया इत्यर्थः ॥ (श्राद्धतत्त्वब्रह्मपुराणयोः) पृथक्पृथगासनेषु तिलैर्लेनदीपकाः ॥ अविच्छिन्नास्तथा देयास्ते तु शंखैर्विद्विजा इति ॥ रक्षति श्राद्धं द्विजा इति संबोधनमित्यर्थः ॥ अपात्रके श्राद्धे चैकैकश्राद्धादिपि इति वृद्धः ॥ (उपवेशनमाह) मनुः आसनेषु तु कुतेषु बर्हिष्मत्सु पृथक्पृथक् ॥ उपस्पृष्टे दकान् सम्यग्विप्रांस्तानुपवेशयेत् ॥ कुतेषु स्थापितेषु ॥ बर्हिष्मत्सु दमोतरेषु ॥ उपस्पृष्टे दकान् कृताचमनान् इत्यर्थः ॥ (याज्ञवल्क्योऽपि) अपात्रे समभ्यर्च्यैवागतेनागतं स्तुतात् ॥ पवित्रपाणि राचां तानासनेषु प्रवेशयेदिति ॥ अत्र वैश्वदेविकानामादुपवेशनं कार्यं पितृभ्यां तु पश्चात् इति हेमाद्रिः ॥ (आसनानि स्मृतिसंग्रहे) क्षौमं दुकूलं नैपालमाविकीरुजं

तथा ॥ तार्षणबृसीचैवविष्टरादिचिविन्यसेत् ॥ अग्निदधान्यामनानि भग्नानिचविवर्जयेत् इति ॥ क्षौमम् अतसीत्त्वक्संभ  
 वंतुसंभवम् ॥ दुक्कलंसूक्ष्मवस्त्रम् ॥ नैपालं नेपालदेशजंक्वलम् ॥ आविकम् ऊर्णरचितम् ॥ दारुजं काष्ठमयं ॥ कालायसण्डिकाकलिकादिह  
 तम् ॥ तार्षणं तृणादिरचितम् ॥ पाणं पर्णात्मकम् ॥ बृसीं कुशासनमित्यर्थः ॥ ( वाराहे ) पवित्रपाणिगर्चतानासनेषूपवेशयेत् ॥  
 ( विष्णुपुराणे ) प्राङ्मुखान्भोजयेद्विप्रान्देवानामुभयात्मकान् ॥ पितृपैतामहादीनांभोजयेद्वाप्युदङ्मुखान् ॥ उभयात्मकान्  
 पित्रादिमातामहादिश्राद्धद्वयार्थं वैश्वदेविकद्वयसंबन्धिन इत्यर्थः ॥ ( याज्ञवल्क्ये ) मातामहानामप्येवमिति ॥ ( मरीचिरपि )  
 तथामातामहश्राद्धं वैश्वदेवसमान्वितम् ॥ कुर्वीतभक्तिसंपन्नस्तंत्रवावैश्वदेविकमिति ॥ अत्रद्वयोरपिश्राद्धयवैश्वदेविककर्म  
 णः तंत्रवृत्तिविधानदेकप्रयोगविधियोज्यत्वं भिन्नप्रयोगविधियोज्यत्वंचप्राप्तमित्यर्थः ॥ ( उपविष्टब्राह्मणनियमानहमुंतुः )  
 पवित्रपाणयः सर्वे तेचमौनव्रतान्विताः ॥ उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पर्शं वर्जयन्तःपरस्परमिति ॥ मौनित्वं ब्रह्मोद्यथाव्यतिरिक्तावि  
 पयम् ॥ ( अतएव यमः ) ब्रह्मोद्याश्चक्रयाःकुतुः पितृणामेतदीक्षितम् ॥ एवमुपविष्टेष्वपि ब्राह्मणेषुयतिब्रह्मचरीवायद्यागच्छतितदासेऽपिश्राद्ध  
 भोजयितव्यः ॥ ( तथाच यमः ) भिक्षुकोब्रह्मचरीवा भोजनार्थमुपस्थितः ॥ उपविष्टेष्वनुप्रातःकामंतामपिभोजयेदिति ॥ कामं दृष्टिपयतमित्यर्थः ॥  
 अथपृथिवीस्तुत्यादिकृत्यम् ॥ तत्र तावदासनेपविष्टानां ब्राह्मणानंप्रातःकुशोपेष्टतायामुपविष्टोपवीती प्राङ्मुख उपविश्याचम्यप्रमाद  
 कृताविज्ञातशुचित्वनिवृत्त्यर्थं शुचिवाशयार्थवा प्रथमतः पुंडरीकाक्षस्मरणं कुर्यात् ॥ ( तथाच वायवीये ) शंसचक्रधरं विष्णुद्रुमजं  
 पीतवाससम् ॥ आरंभेकर्मणाविप्रपुंडरीकंस्मरेद्धरीमिति ॥ स्मरणं चान्नोच्चारणमित्यर्थः ॥ ( गरुडेपि ) अपवित्रपवित्रवासवार्थंगतोपिवा ॥

यः स्मरेत्तुडरीकाक्षसम्बद्धाभ्यन्तरः शुचिः ॥ ( प्रोक्षणं ब्रह्माण्डे ) नाम्नाक्षितं स्पृशत्काचिद्द्वीपिच्येचकर्मणीति ॥ नस्पृशेद्ब्रह्मादित्यर्थः ॥  
 आचारात्तुडरीकाक्षः पुनान्वित्युच्चार्य सैक इतितरिगिण्यामुक्तम् ॥ अनन्तरं च पृथिवीस्तुतिः कर्तव्या ॥ ( तथाच वाराहे ) प्रणम्य शिरसाभू  
 मिनिवापस्य चधारिणीम् ॥ वैष्णवी काश्यपीचेति अक्षयेति च नामत इति ॥ अत्र प्रणवादीनि नमोन्तत्तत्तुथ्यतानि वषण्व्यादिनामानि  
 प्रयोज्यानीत्यर्थः ॥ ततः श्राद्धप्रदेशंगत्यात्मकत्वेन तदेकदेशस्थितगदाधारं च ध्यात्वा तयोश्च नमस्कारं कृत्वा तत्तत्कर्म प्रवर्तयेत् ॥ ( तथाच  
 ब्रह्माण्डपुराणे ) श्राद्धभूमागया ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ॥ ताभ्यांचैव नमस्कृत्य ततः श्राद्धं प्रवर्तयेत् इति ॥ ताभ्यामिति चतुर्थी द्वितीया  
 र्थे ॥ नमस्कारश्च मनोवाक्कायैर्विधेयः ॥ श्राद्धं प्रवर्तयेदिति श्राद्धकारण्ये इत्येवमुपविष्टान् ब्राह्मणान् पृच्छेदित्यर्थः ॥ अथ शिष्टाचारप्राप्तं देश  
 कालसंकीर्तनं कुर्यात् ॥ ( तथाच भाविष्यपुराणे ) संकल्पेन विनाराजन् यत्किञ्चित्कुरु रतेनरः ॥ फलं चात्परात्पकृतस्य धर्मस्याद्भक्षयो  
 भवेत् ॥ मासपक्षतिथीनां च निमित्तानां च सर्वशः ॥ उल्लेखनमकुर्वाणो न तस्य फलभाग भवेत् ॥ गृहीत्वैदुम्बरपात्रं वारिपूर्णं गुणान्वितम् ॥  
 दर्भत्रयं साममूलं फलपुष्पतिलान्वितम् ॥ जलाशयारामकूपे सङ्कल्पे पूर्वदिङ्मुखः ॥ साधारणे चोत्तरास्य ऐशान्यानिक्षिपेत्तय इति ॥ उदुं  
 बं पात्रं त्रात्रपात्रमित्यर्थः ॥ गोत्रसम्बन्धनामानि यथावत्प्रतिपादयेदिति प्रचेतसोक्तम् ॥ ( पारस्करोऽपि ) गोत्रसम्बन्धनामानि पितृणाम  
 दुकीर्तयति ॥ ( वृद्धपाशशोऽपि ) सङ्कल्पासनयोर्द्वयं गंधेन च वनजने ॥ गोत्रसम्बन्धनामानि निषेदप्रत्ययनेने ॥ सूत्रेऽक्षये प्रतिष्ठाये  
 कीर्तयेत्यतः सदा ॥ आद्योचान्तिमयोः षष्ठी सम्बुद्धिमितेषु चेति ॥ आद्ये प्रतिज्ञासङ्कल्पे ॥ अन्तिमयोश्च योऽदक्षिणायांचेत्यर्थः ॥ ( हे  
 माद्रौ नारायणः ) विभक्तिभिस्तु यत्काचिद्विद्यते पितृदेवते ॥ तत्सर्वसफलज्ञेयं विपरीतं निरर्थकम् ॥ ( तत्रैव व्यासः ) चतुर्थी चास्मने

निर्यसंकरेषुचिविधीयते ॥ प्रथमातर्पणप्रोक्तासम्बुद्धिमपरेजगुः ॥ ( मत्स्यपुराणेपि ) नामगोत्रपितृणां तु प्रापकंहव्यकव्ययोः ॥  
( ब्रह्माण्डे ) उभौहस्तासमौकृत्वा जानुभ्यामंतरस्थितौ ॥ सप्रश्रयश्चोपविष्टान्सर्वान्पृच्छेद्विजोत्तमान् ॥ सप्रश्रयःविनयान्वित इत्यर्थः ॥  
तथा ॥ श्राद्धंकरिष्यहयेवं पृच्छेद्विप्रान्समाहितः ॥ कुरुष्वेति सत्तैरुक्तो दद्याद्दर्भान्संततः ॥ ( कात्यायनोपि ) प्रश्रुतुपङ्क्तिमृद्वदन्यपृच्छ  
तिसर्वान्वा इति ॥ ( दर्भान्सनान्पूर्ववग्रायत्र्यादिजप्यमाह प्रचेताः ) गायत्रीप्रणवांपिजप्त्वाश्राद्धमुपक्रमेत् ॥ ( ब्रह्मपुराणमभिव्योक्तोत्तरश्राद्ध  
तत्त्वविष्णुधर्मोत्तरेषु ) उपविश्यजपेद्विप्रान्वाग्रायत्रातदनुज्ञया ॥ पापापहंपापवमानीमश्वमेधफलांतथा ॥ मंत्रवक्ष्याम्यहंतस्मादमु  
तंब्रह्मसंभवम् ॥ देवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यश्च ॥ नमःस्वधायैस्वाहायै नित्यमेवनमोनमः ॥ आद्यावसाने श्राद्धस्यत्रिरा  
वृत्तजपेत्सदा ॥ पिंडनिर्वपणेचापिजपेदेतत्समाहित इति ॥ शिष्टास्तु नमःस्वाहायैस्वधायै नित्यमेवनमोनमः ॥ इतिपठति ॥  
( ब्रह्माण्डेपि ) ॥ देवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यश्च ॥ नमःस्वाहायैस्वधायै नित्यमेवनमोनमः ॥ आदिमध्यावसानेषुत्रिरावृत्त  
जपेद्बुधः ॥ पितरःक्षिप्रमायांति राक्षसाःप्रद्रवंतिचेति ॥ ( विष्णुपुराणे ) अमूर्तीनांसमूर्तीनांपितृणांदिप्तैजसाम् ॥ नमस्यामिसदातेषांध्या  
यिनांयोगचक्षुषामितिमंत्रोऽप्यादिमध्यावसानेषुपठितव्यः ॥ अत्रावसरं नीवींबोधिवेद्यहतिहेमाद्रिप्रमृतयः ॥ शिष्टास्तुविक्रिणतिकुर्वति ॥  
नीवींबंधश्चाऽपसव्येनकर्तव्यइतिहेमाद्रिः ॥ पितृदेवत्यावैनीवीरिति शतपथ्यालिंगदर्शनेनपितृदेवत्यंक्रम्यनीवीमताकर्तव्यमित्यवगमात् ॥  
( आश्वलायनोपि ) नीवीवासोदशान्तेनस्वस्वक्षत्रां प्रबंधयेत् ॥ ( योगियाज्ञवल्क्यस्तु ) दक्षिणेकटिदेशेतुलैः सह कुशत्रयम् ॥ तज्यं  
तीहैदृत्यानांयथानाणयमस्तथा ॥ ( कात्यायनः ) नीवीकार्यादशागुमिवमकुशैः कुशैः सहेति ॥ एतद्दक्षिश्राद्धे ॥ पितृणांदक्षिणेपार्श्वेविपरी

ततुद्वैक्रे ॥ इतिस्मृत्यन्तरात् ॥ पितृणांपितृश्राद्धे ॥ द्वैकेनेदीश्राद्धइत्यर्थः ॥ अत्रवामेदक्षिणेवाइत्याचाराद्व्यथाइतिभदनपारिजातः ॥  
 नीवीबन्धनप्रकारोदेवयाज्ञिकभाष्ये ॥ कुशतिलसंयुक्तानां ब्रह्मदशानां सव्यभागेपरिहितवस्त्रेणसंषुष्यावाहननीवीकरणमिति ॥ सव्यभागे  
 वामकुशवित्यर्थः ॥ नीवीनामात्रतिलकुशान्वितानांपरिहितवस्त्रोत्तरांचलदशानां वामकर्णसंलभ्यब्रह्मभागनसंवष्टयागपनमितिकर्त्तव्यं  
 पाठ्याय ॥ (मंत्रस्तुब्रह्माण्डे) ॥ निहनिमसवयवमध्यवद्भवेदताश्चसर्वेऽसुरदानवामया ॥ रक्षांसिधक्षाश्चपिशाचगुह्यकाहतामयायातुयानाश्चसर्वे  
 इति ॥ अन्तरं देवप्रदेशयवान्विकार्यपैतृकप्रदेशपरितस्तिलान्गौरसर्षपंश्चविकिरेत् ॥ (तथाच ब्रह्मपुराणे) अक्षतैर्देवताक्षांचक्रेचक्रगदाधरः ॥  
 अक्षताश्चयवौषध्यः सर्वदेवान्नसंभवाः ॥ रक्षतिसर्वास्त्रिदशान्नक्षार्थानिभिताहिते ॥ (मार्कण्डेयपुराणे) रक्षान्नास्तुण्ठेन्मंत्रास्तिलैश्चविकिरे  
 न्महम् ॥ सिद्धार्थैश्चक्षार्थश्राद्धेहिषंखलम् ॥ खलंयातुयानादिकृतो विघ्नः ॥ (ब्राह्मे) ततस्तिलान्महेतुस्मिन्विकिंचाप्रदक्षिणम् ॥  
 नमोनमस्तेगोविन्दपुराणपुरोत्तम ॥ इदंश्राद्धहृषीकेशरक्षतांसर्वतोदिशः ॥ (द्वादशेशतिलकुशप्रक्षेपणमंत्रः स्कंदपुराणे) तिलारक्षं  
 त्वमुरादूर्मांस्तुरक्षसात् ॥ पङ्क्तुवैश्रात्रियोरक्षदत्तिथिःसर्वशक इति ॥ (श्राद्धप्रदेशस्यपरितःप्राच्यादिदिक्षुमथ्येचितिलविकिरणमंत्राः ॥  
 (भविष्यपुराणे) अग्निवृत्ताःपितृगणाः प्रार्चयान्तुमदिशम् ॥ तथाबहिषदःपतंयाम्यथिपितरःस्थिताः ॥ प्रतीचीमाज्यपातद्वदुदीचीम  
 पिसेमयाः ॥ अधोऽर्धमापिकोणेषु विकोणेषुचसर्वशः ॥ रक्षोभूतापिशाचेभ्यस्तथासुदोषतः ॥ सर्वथाधिपस्तपथमाशंकरांतये ॥  
 वायुभूतापितृगणंचतुर्भिर्भवतुशश्वती इति ( ब्रह्माण्डे ) रक्षाधिपतुसत्रस्य त्रिकृत्वसर्वतोदिशम् ॥ तिलांस्तुप्रक्षिपेन्नम्रमुच्चा  
 र्य्यपहताइति ॥ तिलविक्रणानंतरंप्रमादोपजातस्यप्रभितस्यवा मार्जारादिदृष्टिदोषस्यनिवृत्तये कस्मिंश्चित्प्राज्ञेजलंघृहात्वादर्भे

रालोडय कूष्मांडीभिः पाकप्राक्षणकुत्वाऽन्यानिपिकुशकुसुमादीन्सर्वान्पदार्थान्प्राक्षयेत् ॥ (तथाच कात्यायनः) कूष्मांडीमंत्रमुत्तेन  
 कुय्यात्तोयाभिमंत्रणम् ॥ अत्रानिप्राक्षयेत्तेनैतेव श्राद्धमाचरेत् ॥ कूष्मांडीमुक्तं यदेवादेवहेडनमित्यादि कंडिकात्रयम् ॥ (परशरोपि)  
 अप्राक्षितं चयत्किंचित्युषितं विवर्जयेत् ॥ (हेमाद्रा वसिष्ठः) शुद्धवतीभिः कूष्मांडीभिः पावमानीभिः पावकादिप्राक्षेत् ॥ शुद्धवतीभिश्चंदोगाः  
 कूष्मांडीभिर्याजुषाः पावमानीभिर्वह्वचश्च प्राक्षणकुश्रित्यर्थः ॥ (प्राक्षणाभावेदोषमाह याज्ञवल्क्यः) अनभ्युक्ष्यानुप्रमृशजुहातिच  
 ददातिच ॥ नैर्ऋतं भागेयस्यात्तस्मात्प्राक्षणाभावेत् ॥ ततः प्राक्षितमग्नहरयेनैवद्व्यश्राद्धं कुर्यात् ॥ (तथाच विधानपारिजाते)  
 विष्णोर्नैवेदिताव्रेनयष्ट्व्यं देवतां तस्म ॥ पि यश्चापि तदेयं तदन्त्ययं कल्पते ॥ पितृशेषं तु यो हृद्वा हरे परमात्मने ॥ रेतोघाः पितरस्तस्य स  
 वंति क्लेशभागिनः ॥ (ब्रह्मपुराणेपि) यः श्राद्धकाले हस्तिखुरशेषं ददाति भक्त्या पितृदेवतानाम् ॥ तेन विपंडास्तुलसीविमिश्रानां करुणको  
 षि पितरस्तु तृता इति ॥ केचित्तु वैष्णवपरमिति वदन्ति ॥ अथ दर्शनादयः पदार्थाः ॥ ते च सर्वस्यैव पूर्ववत्कृत्वा त्वद्वैद्विजेष्पनुष्ठेयास्ततः  
 पैत्र्याद्विजेषु ॥ (तथाच देवलः) ॥ यद्यनुक्रियते कर्म पितृकैव ब्राह्मणान्प्रति ॥ तत्सर्वमेव कर्तव्यं वैश्वेदेवत्यर्थं कर्मिति ॥ (आसनादिदाने दिङ्नि य  
 ममाह शातातपः) उद्धुस्वस्तु देवानां पितृणां दक्षिणमुखः ॥ प्रदद्यात्पाव्यवर्णश्राद्धं देवपूर्वविधिनतः ॥ (जानुनिपातमाह कात्यायनः)  
 दक्षिणपाते यज्जानुदेवानां पितृणां चरन्सदा ॥ पातयति रज्जुपितृन्पारिचरन् ॥ जानुपातनंतरमासनादनाक्षपूर्वाद्ब्रजहस्तेषु जलप्राक्षयेत् ॥  
 (तथाच याज्ञवल्क्यः) पाणिप्रहालनं दत्त्वा विष्टरथान्कुशानपि ॥ (प्रवेताः) दर्भाश्चैवासने दद्याद्ब्रतुपाणां कदाचन ॥ पितृदेवमनुष्याणां स्या  
 द्द्रुष्टिः शाश्वती तथेति ॥ रुष्टिः कलहः ॥ ब्राह्मणहस्ते देवपितृस्तु ष्य प्रजापत्याभितार्थानां सद्राद्धस्तं विन्यस्तेषु दर्भेषु मंदमंदमिति देवादीनां

कलहः स्यात्तस्माद्धस्तेन दद्यादित्यर्थः ॥ ( अत्र कुत पावासनोपरि ग्रहस्य कुशासनस्य प्रदेशविशेषो ब्रह्माण्डे दर्शितः ) आसने चासनं दद्याद्भगवदक्षिणेऽपि वा इति ॥ वामेति ब्राह्मणस्य आसनवस्थितस्य वामभागवस्थिते आसने प्रदेश एव दक्षिण इत्यर्थः ॥ अत्र दक्षिणैश्वदेविकविषयं वामेति पितृकविषयम् ॥ ( तदुक्तं पराशरेण ) पितृकार्येषु वास्तवैकर्मणि दक्षिणमिति ॥ एतच्चासनं देवानां यवसाहितं देवैर्देव्यं पितृणां तु तिलसहितैः ॥ ( तथा च बोधायनः ) देवानां सयवादर्भाः पितृणां द्विगुणास्तिलैः ॥ सहिता इति शेषः ॥ द्विगुणाः मध्यभागेन द्विगुणीकृता इत्यर्थः ॥ ( बृहस्पतिरपि ) ऋजूसव्येनैकृत्वा देवदर्भान् प्रदक्षिणम् ॥ द्विगुणानपसव्येन दद्यात्पितृभ्योऽपसव्यवत् ॥ ऋजवः द्विगुणरहिताः ॥ अपसव्यवत् अप्रदक्षिणमित्यर्थः ॥ वैश्वदेविकं सवकर्म प्रदक्षिणकर्मणा पितृकर्म प्रदक्षिणकर्मणा च कार्यम् ॥ ( तथा बोधायनः ) प्रदक्षिणं देवानां पितृणां मप्रदक्षिणम् ॥ देवानामुजवो दर्भाः पितृणां द्विगुणामता इति ॥ आसनदाने विभक्तिविशेषस्तु पूर्वमेव दर्शितः ॥ ( नागरखड्गेऽपि ) विभक्त्या पूर्वयतिषामासनं च प्रदापयेदिति ॥ एवमेव माता महाद्विब्राह्मणेभ्योऽप्यासना निदद्यात् ॥ पितरौ यत्र पूज्येते तत्र माता महाश्रुयमिति वृद्ध्या ज्ञवत्कथं वचनात् ॥ ( अथावाहनं कालिकापुराणे ) रक्षणाय ततो देवान् विश्वान् यस्तत्र योजयेत् ॥ रक्षणाय श्राद्धस्येति शेषः ॥ तत्र योजयेत्तेषु ब्राह्मणेषु आवाहनेन सन्निधापयेदित्यर्थः ॥ ( कात्यायनः ) आसनेषु दर्भानां स्तीर्य विश्वान् देवानां वाहयिष्यति पृच्छत्यावाहयेत्यनुज्ञात इति पृच्छति यजमानः अनुज्ञातो हि जेत्यर्थः ॥ ( कौर्मपि ) ततस्त्वावाहयेद्वा न्नाह्मणानामनुज्ञा ॥ उद्दुस्वोऽथान्यायं विश्वे देवास इत्युच्यते ॥ ( याज्ञवल्क्येऽपि ) पाणिप्रक्षालनं दत्वा विष्टारार्थं न्कुशानपि ॥ आवाहयेदनुज्ञातो विश्वे देवास इत्युच्यते ॥ आवाहनं विष्टारं विष्टारं हीत्वा तु विश्वान् देवान् समाह्वयेत् इति ॥



(आवाहनप्रकारस्वाह कात्यायनः) विश्वेदेवास आगतेत्यनयाऽवाह्याऽवकीर्य विश्वेदेवाः शृणुतेममितिजपित्वेति ॥ (वृद्धपराशरोपि)  
 देवानावाहयिष्येमितिवाचदरीरेयत् ॥ आवाहयेदनुज्ञातो विश्वेदेवासऽआगतः ॥ विश्वेदेवाः शृणुतेममितिमन्द्रयंपठेत् ॥ (उत्पत्तिना  
 माऽज्ञाते आह बृहस्पतिः) उत्पत्तिनामचतेषां नविदुर्यद्विजातयः ॥ अयमुच्चारणीयस्तैश्चक्रः श्रद्धासमन्वितः ॥ आगच्छतुमहाभगा  
 विश्वेदेवामहबलाः ॥ येयत्रविहिताः श्राद्धे सावधानाभवतुते इति ॥ उत्पत्तिश्चैषां दशकन्यायां विश्वायं धर्माज्ञाता इत्यादिहेमाद्रैर्दश  
 ता ॥ नामप्रयोगश्च गृह्यवाद्बौचवर्णवर्णसमुदाहृतावित्यादि शंखबृहस्पत्युक्तेश्चेत्यर्थः ॥ ( भविष्ये ) आवाहयेद्यैर्वैश्वानपसव्यांतैलैः  
 पितृनिति ॥ यवैः यवहस्त इत्यर्थः ॥ ( अथपित्राद्यावाहनमाह याज्ञवल्क्यः ) द्विगुणांस्तुकुशान्दचक्षुशन्तस्त्वेत्यृचापितृन् ॥ आवाह्यत  
 दनुज्ञातो जपेदायंतुनस्ततः ॥ ( कर्मपुराणेपि ) अपसव्यंततः कृत्वा पितॄणां दक्षिणामुखः ॥ आवाहनंततः कुर्यादुशंतस्त्वेत्यृचाबुधः ॥  
 आवाह्यतदनुज्ञातो जपेदायन्तुन इति ॥ ( कात्यायनोपि ) अथपितनावाहयिष्य इतिपृच्छन्यावाहयेत्यनुज्ञात उशन्तस्त्वेत्यनयावाह्या  
 वकीर्य अयंतुनः जपतीति ॥ अक्कीर्यतिलानितिशेषः ॥ अथार्घ्यपात्रासादनादि ॥ ( तत्रतवर्धयपात्राणि ब्रह्माण्डे ) सौवर्णराजतां  
 भोजमणिपात्राण्यथापिवा ॥ अर्घ्यार्थं संस्कारोत्प्रेक्षुभंपत्रपुटादिवा इति ॥ अभोजंताम्रमयम् ॥ पत्रपुटाः पलाशादिपत्रकृतानिपात्राणी  
 त्यर्थः ॥ ( हेमाद्रौ वैजवापः ) राजतानिप्रशस्तानि पित्र्यैर्हैमानिदेविके ॥ अपिवाताम्रपात्राणिदेवैः पित्र्येऽर्घ्यकर्मणि ॥ ( कात्यायनसूत्रे  
 पि ) सौवर्णराजतोदुंबरखड्गमणिमयानां पात्राणामन्यतमेषु यानिवाविद्यतेपत्रपुटेष्विति ॥ उदुंबरं ताम्रम् ॥ खड्गं गंडकशृङ्गोद्भवमित्य  
 र्थः ॥ राजतंतुपित्र्येकर्मण्येवतनुदेवे ॥ ( तथाच मत्स्यपुराणे ) शिवनेत्रोद्भवस्य ताम्रस्य पुराणे ॥ अमंगलंतद्यनेन देवकायैव



जितम् ॥ शिवनेत्रोद्भवं रुद्राश्रुसंभवमित्यर्थः ॥ ( तैत्तिरीयश्रुतिरपि ) यदश्रु अशीर्यतद्भजतं हिण्यमभवेदिति ॥ अश्रुप्रभवत्वादेवा  
मङ्गलम् ॥ ( पात्ररूपणविधिमाह याज्ञवल्क्यः ) यवैरन्वकीर्यार्थं भाजनेनसपवित्रके ॥ शन्नोदेव्यापयःक्षिप्यायवोसीतियवांस्तथा ॥  
यादिव्याहृतिमेत्रेण हस्तेष्वर्घ्यं विनक्षिपेत् ॥ ( कात्यायनोपि ) पत्रपुटेष्वैकैकस्यैकेनददति सपवित्रेषुहस्तेषु यादिव्याहृतिः ॥ ( नागरस्व  
देपि ) शन्नोदेव्यातिमेत्रेण अध्यर्पात्रेविनक्षिपेत् ॥ यवोऽसि यवयास्मति अक्षतांस्तत्रनिर्वपेत् ॥ अक्षतान् यवान् ॥ पात्रयुग्मपात्रमात्स्ययोरुक्तम् ॥  
विधेदेवान्यैः पुष्पैरभ्यर्च्यासनपूर्वकम् ॥ गुर्येत्यात्रयुग्मंतु स्थायदूर्ध्वपवित्रके ॥ शन्नोदेवीत्यपदेद्याद्वयोसीतियवानपि ॥ ( हेमाद्रौ मात्स्येपि )  
शन्नोदेवीत्यपो दद्याद्वयोसीतियवानपि ॥ गंधपुष्पैस्तु संपूज्य वैश्वदेवं प्रतिन्यसदिति वैश्वदेवमिति ॥ वैश्वदेविकब्राह्मणानां पुरतः ब्राह्मण  
द्वयपक्षेपात्रयुग्मं ब्राह्मणकपक्षेपात्रमेकंच न्यसेत् ॥ अध्यर्पात्रं स्थापयेदित्यर्थः ॥ पात्रेषुगंधादिदानतूष्णीम् ॥ तूष्णींपुष्पाणिचंदनमिति  
योगियाज्ञवल्क्यवाक्यात् ॥ ( पराशरोपि ) यवोसीतियवांस्ततूष्णींपुष्पाणिचंदनमिति ॥ ( अत्राध्यर्पात्रसंपात्तिरस्त्वितिप्रश्नपूर्वकंवाक्यं  
माहहेमाद्रौतूष्णीं कुर्यात् ) ततोध्यर्पात्रसंपात्तवाचयित्वाद्विजोत्तमान् ॥ तदर्थेचाध्यर्पात्रमुस्वाहाध्याहृतिविन्यसेत् इति ॥ अनंतरंपात्रस्थं  
पवित्रविप्रकेरुत्वापादप्रभृतिमृद्वन्तंपूजयेत् ॥ ( तथाचहेमाद्रौ गार्ग्यः ) इत्वाहस्तेपवित्रंरुक्त्वापूजांचपादतः ॥ यादिव्याहृतिमेत्रेणहस्तेष्वध्य  
विनक्षिपेदिति ॥ पादतःपादप्रभृतिमृद्वन्तमिति न्यर्थः ॥ ( तथाचप्रचेताः ) पादप्रभृतिमृद्वन्तं देवानांपुष्पपूजनम् इति ॥ अध्यर्दानेनस्वाहातःशब्दःप्र  
योक्तव्यः ॥ ( तदुक्तंहेमाद्रिमाधवयोगाभरणे ) स्वधेतिचैवमंत्रातिपितृगंधचनंयथा ॥ स्वाहेतिचैवदेवानांहात्मकमप्युद्धरेत् इति ॥ होमशब्दो  
त्रत्यागप्रक्षेपरूपत्वाद्यैविवर्तते ॥ स्वाहेति नमःशब्दोपिप्रयोज्यः ॥ नमोदेवानामिति श्रुतेः ॥ एतच्चसर्वं वैश्वदेविकानुष्ठानहम् ॥

(अथपित्राद्यर्धदानप्रकारमाह याज्ञवल्क्यः) यवार्थस्तुतिलैः कार्यः कुर्यादध्यादिपूर्ववत् ॥ पूर्ववत् वैश्वदेविकाध्यादिवत् ॥ आदि  
 शब्देनगंधधुण्यादिदानंयुह्यते ॥ (छंदोगपरिशिष्टे कात्यायनः) अपसव्यतदामिंचित्पितृपात्रेषुपूर्ववत् ॥ ततस्तिलास्तिलोसीतिगंधधुण्या  
 णिचैवहि॥पूर्ववत् शन्नोदेवीरित्यनेनेत्यर्थः ॥ (गंधदानंतर्जन्याएवकार्यं तदुक्तं ब्रह्मपुराणे) पितृणामप्येद्वंधंतजन्याचसद्वहति ॥ (अथ  
 प्रतिपात्रंसमंत्रकतिलावापमाहमाद्रौ कात्यायनः) यज्ञियवृक्षचमसेषुपवित्रातिहतेष्वैकैकस्मिन्नपआसिंचति शन्नोदेवीरित्यैकैकस्मि  
 न्नैवतिलानावपति॥तिलोऽसिसोमदेव्यागोसर्वदेवनिर्मितः॥प्रन्नमाद्भिःप्रतःस्वध्यापितृलोकान्प्रीणाहिनः स्वधानमहति ॥ ( माधवीये  
 शौनकोपि ) पात्रेषुदर्भान्तरितेष्वपःप्रदायशन्नोदेवीरभिष्टयइत्यनुमांत्रितासुतिलानावपति ॥ तिलोसिसोमदेव्यगोसर्वदेवनिर्भमतः ॥  
 प्रन्नमाद्भिःप्रतःस्वधया पितृनिमाल्लोकान्प्रीणयाहिनः स्वधानमहति॥एवमेवहमाद्रिस्थगोभिलआश्वलायनमूत्रेषुअग्निपुराणादावपि दृश्यते॥  
 मैथिलस्तु स्वाहातंपठतिस्वपरंपराव्यवहारसिद्धत्वात् ॥ युक्तंस्वधातमेवपैतृकत्वात् ॥ ( तथाच गार्ग्यः ) स्वधेतिचैवमंत्रतिपितृणां  
 वचनंयथाहति ॥ ( पित्रादिनामगोत्रोच्चारणपूर्वकत्वंमुक्तमात्स्ये ) एवंपात्राणिसंकरय्यथालाभंविमत्सराः ॥ याद्व्येतिपितृनामगोत्रै  
 र्दर्भैरन्यसेत् ॥पित्रादीनामगोत्रोच्चार्यदर्भयुक्तेब्राह्मणदक्षिणःकरेऽध्यन्यसेदित्यर्थः ॥ (व्यासोपि) गोत्रसंबंधनामानिपितृणामनुक्रीतयन् ॥  
 एकैकस्यतु विप्रस्य अध्यर्षपात्रंविनिक्षेपेत् ॥ एकैकस्यविप्रस्यदक्षिणःकरे अध्यर्षपात्रं अध्यर्षपात्रस्थजलंविनिक्षेपेत् दद्यादित्यर्थः॥(ब्रह्मपुराणे  
 विशेषः-) ततोवामेनहस्तेनगृहीत्वाचमसान्क्रमात् ॥ पितृतीर्थेनततोयं दण्डणेनचपाणिना ॥ इतदभोदेकहस्ते विप्राणां च पृथक्पृथक् ॥  
 दद्यान्मंत्रंजपंश्चथ याद्व्यया आप इत्यपि ॥ अमुकामुक्तगोत्रतत्तुभ्यमस्तुतिलोदेकम् ॥ तिलोदेकमित्युच्चारणंप्रायेणसांप्रिकविषयक

मिति हेमाद्रिः ॥ असावेषतेऽर्घ इति कात्यायनेनानुपूर्वाविशेषोपादानात् ॥ एषो वहस्तार्घः स्वाहानमः ॥ एषो ते हस्तार्घः स्वाहानम इति सिद्धम् ॥ अथ संस्रवविनियोगादि ॥ तत्र कात्यायनसूत्रे ॥ एकस्मिन्संस्त्रान्समवर्नीयपुत्रकामो मुखमनन्तीति ॥ अर्थाः--एकस्मिन्प्रथमपितृपात्रे संस्रवान्पितामहार्घ्यपात्रस्थिताञ्जलशेषान् ॥ (तथाच शतथश्रुतिः) संस्रवो ब्रह्मवल्लु परिशिष्टो भवतीति ॥ केचित्तु हस्तगलितान्मुक्त्वा नित्तु तत्तु मत्तन्तरे ॥ समवर्नीय एकत्र संस्रव्य पुत्रकामो यजमानः मुखम् अनन्ति स्म मुखमंज्यात् माज्येदित्यर्थः ॥ (शतातपोपि) प्रथमपितृपात्रे तु सर्वान्संभृत्य संस्रवान् ॥ अनन्ति वदनं पश्चात्पुत्रकामो भवेद्वदति ॥ वदनं मुखमित्यर्थः ॥ (नागरखंडे तु) आशुष्कामस्य संस्रवजलेन लोचनावसेचनमुक्तम् ॥ पितृपात्रे समादाय अर्घ्यपात्राणि कृत्स्नशः ॥ आयुष्कामस्तु ततोयं लोचनाभ्यां परिक्षेपेदिति ॥ पितृपात्रे पितृर्ध्वपात्रे ॥ अर्घ्यपात्राणि पात्रस्थिताञ्जलशेषाः ॥ समादाय निक्षिप्य लोचनाभ्यां परिक्षेपेत् ॥ नेत्रावसेचनं कुर्यादित्यर्थः ॥ (हेमाद्रौ वाजसनेयिनान्तु प्रथमपात्रसम्भृतं संस्रवादकं हस्ते गृहीत्वा आपः शिवा इति मंत्रेण प्राङ्मुखोपपिष्टस्य यजमानस्यान्येनाभिषेकः क्रियत इत्युक्तम् ॥ एतानि च मुखजनादीनि काम्यानि कर्माणि यज्ञोपवीतनायजमानेन कर्तव्यानि ॥ अनन्तरं विमोक्षादि ॥ (तत्र तावद्द्वे पात्रस्योत्तानं स्थानं बृहद्रुखे) ततः पात्रं दक्षिणेतु देवभ्यः स्थानमस्यथ ॥ उत्तानं स्थापयेदेव नोद्वेग्नच चालयेत् ॥ दक्षिणे देवि प्रदक्षिण इत्यर्थः ॥ ततोऽपस व्यने पितृपात्रस्य न्युज्ज्वलणम् ॥ (तथाच अत्रिः) अपसव्यं ततः कृत्वा पितृपात्रे समाहितः ॥ शिवाद्भुषपवित्राणि मोचयेत् संस्रवांस्ततः ॥ (कात्यायनः) प्रथमपात्रे संस्रवान् समवर्नीयपितृभ्यः स्थानमसीति न्युज्ज्वलपात्रं करोतीति ॥ प्रथमपात्रे पितृपात्रे संस्रवान्पितामहार्घ्यपात्रस्थजलादीन् समवर्नीय निधाय पितृभ्यः स्थानमसीति मंत्रेण न्युज्ज्वलपात्रं करोति स्थापयेदित्यर्थः ॥ (नागरखंडे) अधोमुखं

चतुर्पात्रं विजनेस्थापयेत्तत् इति ॥ विजनेश्चाद्धीयद्रव्याऽऽनयनापयनपरिवेषणादिकर्तृकजनसंस्मरणदोषरहितेप्रदेश इत्यर्थः ॥ शिष्टास्तु  
 पितृविप्रवामप्रदेशेऽवस्थापनं कुर्वति ॥ (हिमाद्रौ प्रचेता अपि) न्युञ्जमुत्तरोन्यसेत् इति ॥ उत्तरशब्दो वामपर्यायवाचक इत्यर्थः ॥ विप्रवामे  
 इति हलायुधः ॥ (याज्ञवल्क्यः) दत्त्वाऽर्घ्यसंस्मर्यस्तेषां पितृभ्यः कृत्वा विधानतः ॥ पितृभ्यः स्थानमसीति न्युञ्जपात्रं करोत्यधः ॥ अग्रभूमौ वैव  
 नतुपीठवृत्त्यादिषु ॥ (कूर्मपुराणेऽपि) संस्मर्यंश्च तत्सर्वान्पात्रैः क्रुत्यान्समाहितः ॥ पितृभ्यः स्थानमसीति न्युञ्जपात्रं निधापयेदिति ॥ पितृ  
 पात्रन्युञ्जानंतरं पितामहप्रपितामहपित्रे अपितदुपरिन्यसेत् ॥ (तथाच हेमाद्रौ यमकात्यायनौ) पैतृकं प्रथमं पात्रं तस्मिन्पैतामहं न्यसेत् ॥  
 प्रपितामहंततो न्यस्य नोद्धरेन्न चालयेदिति ॥ पैतृकं पितृपात्रं न्यस्य न्युञ्जीकृत्य तस्मिन्तदुपरि पैतामहं पितामहपात्रं तदुपरि  
 पितामहपात्रं च न्यसेत्स्थापयेत् ॥ ब्राह्मणविसर्जनपूर्वकालात्पूर्वच नोद्धरणीयमित्यर्थः ॥ एवमेव मैथिलश्रीदत्तादीनां व्यवहारः ॥ अत्र मिलित  
 पात्रत्रयन्युञ्जकरणरुद्धरलिवनं प्रमाणञ्जन्यम् ॥ मातामहादेः संस्मरानपि पितृकार्यवद्गृहीत्वा न्युञ्जीकुर्यादिति श्रूयणीः ॥ एतच्च पात्रं विस  
 र्जनादिकालात्पूर्वनोद्धरणीयमित्याह—(यमः) नोद्धरेत्प्रथमं पात्रं पितणामर्घ्यपातितम् ॥ आवृतास्तत्र तिष्ठति यावद्विप्रविसर्जनमिति ॥  
 प्रथमविप्रविसर्जनान्तरपूर्वं विप्रविसर्जनपूर्वकालान्पूर्ववा पितृणामर्घ्यपातितं पितृणामर्घ्यकर्मणि न्युञ्जीकृतपात्रं नोद्धरेदिति हेमाद्रिः ॥  
 विप्रविसर्जनपूर्वकालान्पूर्वकालः दक्षिणादानपर्यंतमित्यर्थः ॥ (पराशरः) आश्रित्य प्रथमं पात्रं तिष्ठति पितरो नृणाम् ॥ श्राद्धे तस्मान्नत  
 द्विद्वानुद्धरेत्प्रथमं मुधीरिति ॥ प्रथमं पितुः पात्रमित्यर्थः ॥ (उद्धाटने दोषमाहृत्य मापस्तंबौ) उद्धरेत्तु यदा पात्रं विवृतं वा यदा भवेत् ॥ अभोज्यत  
 द्भवेच्छ्राद्धं देवैः पितृगणैः सह ॥ विवृतम् उद्धाटितम् ॥ (कात्यायनः) स्पृष्टमुद्धृतमन्यत्र नीतमुद्धाटितं तथा ॥ पात्रं दृष्ट्वा व्रजं त्याज्यु पितरः

प्रतपन्ति चेति ॥ स्पृष्टवृत्तादिना संयोजितम् उद्धृतम् उल्लिख्यम् ॥ अन्यत्र नीतिं स्थानान्तरागतम् ॥ उद्धादितम् अपनीतपिधानम् ॥ पात्रं अर्धपात्रम् ॥ दृष्टपितरः व्रजति श्रद्धांशयजन्ति शपति च यजमानप्रतिस्वभुतेऽनायुधनो भव इत्यादिप्रकारानि फलवाचमुत्तुजति ॥ तस्माज्जनसंचारहिते प्रवेशस्थानं कुर्यादित्यर्थः ॥ अथांगधादिदानम् ॥ (तत्र कान्त्यायनः) अत्रांगधेषु षड्पदीपतंबूलवाससां च प्रदानमिति ॥ (विष्णुयामांतरे) आदौ समस्येद्विप्रान्वैश्वदेवान्वेशितान् ॥ निवेशितांश्च पित्र्यैततः पश्चात्समर्चयेत् ॥ (हेमाद्रौ पैठी नसिरपि) नाम गोत्रे समुच्चार्य दद्याच्छ्रद्धां समन्वितः ॥ पितृवृद्धिर्यद्विप्रैर्गंधादीन्देवपूर्वकम् इति ॥ (मात्स्येपि) यादि व्येत्यर्घ्यमुत्सृज्य दद्याद्गंधादिकंतः ॥ वस्त्रोत्तंगंधपूर्ववाक्यं कृत्वा यथाविधि ॥ इति वस्त्रोत्तरमित्यादिना समुदायदानवाक्यगंधस्य पूर्वमुच्चारणं वस्त्रस्य तिते उच्चारणस्योपास्ये उच्चारणमिति सूचितमित्यर्थः ॥ तत्र प्रदत्तस्य गंधस्य ब्राह्मणे पलेपनोपयोज्यत्वमुक्तम् ॥ (ब्रह्मपुराणे) श्वेतचंदनकर्पूकुमुमानि शुभानि तु विलेपनार्थं दद्यात्सुच्चार्य तत्पुल्लभमिति ॥ विलेपनचद्विजानां श्रद्धां कर्तुं कुर्यात् ॥ तेष्ववकुशुरित्यर्थः ॥ अत्र वर्तुलतिलकंकनैर्मितेह माद्रिः ॥ (गंधानाह मार्कण्डेयः) चंदनागरकर्पूकुमानि प्रदापयेत् ॥ (बृहस्पराशरेपि) गंधाश्च विविधा दद्याः कर्पूरगुरुमिश्रिताः ॥ यज्यांगंधाः ब्रह्मपुराणे) घृतिकं मृगनाभिं च गोवर्णं रक्तचंदनम् ॥ कालीयं कंजोद्भूतं रुक्मं चापि व्रजयेत् ॥ घृतिकं सुगंधितृष्णविशेषः ॥ मृगनाभिः कस्तूरी ॥ गोचना गोरोचनम् ॥ रक्तचंदनं प्रसिद्धम् ॥ कालीयकजोद्भूतं गंधद्रव्यविशेषौ ॥ तुरुक्मः सिंहकदं त्यर्थः ॥ अथ पुष्पाणि वायुपुराणे) शुक्लः सुमनसः श्रेष्ठास्तथापद्मोत्पलानि च ॥ गंधवर्णेषु पद्मनिधानि चान्यानि कृत्स्नशः ॥ अत्र पद्मोत्पला निःशुक्लोत्पलाण्यपि देयानि ॥ (अत्र विष्णुः) जलजानि रक्तान्यपि दद्यात् ॥ (मार्कण्डेयपुराणे) जात्यश्वसर्वादातव्यामल्लिकाश्चेत्यधिका ॥

जलोद्भवानिसर्वाणि कुमुमानि च चंपकम् ॥ जात्यः मालत्यः ॥ मल्लिका मुद्गराख्यानि पुष्पाणि ॥ श्वेतयूथिका हेमकुसुमानि ॥ (अथ वज्र्या  
नि मात्स्ये ) पद्मबिल्वार्कधत्तूरणारिभद्राटरुषकाः ॥ नदयाः पितृकायेषु पयश्चैवाविकृतथा ॥ पद्मपत्रस्थलजप्रतिषिध्यते जल  
जस्य विहितत्वात् ॥ पारिभद्रो मंदारः ॥ आटरुषो वासकः ॥ ( हेमाद्रौ शंखः ) उग्रगंधी न्यगन्धी निचैत्यवृक्षोद्भवानि च ॥  
पुष्पाणि वर्जनीयानि रक्तपर्णानि निच ॥ जलोद्भवानि देयानि सर्वास्मिन् जलकर्मणि ॥ रक्तान्यपि विशेषतः ॥ उग्रगंधीनि अहद्व्य  
गंधीनि ॥ चैत्यवृक्षः श्मशानवृक्षः ॥ धूपद्रव्याणि विष्णुधर्मोत्तरे ) धूपस्तु गुग्गुलुह्यस्तथा चंदनसारजः ॥ अगुरुश्च मकरपूरस्तु  
रुक्कस्तत्त्वतश्चैव च ॥ तुरुष्कः सल्लकीवृक्षः ॥ त्वक्लवंगम् ॥ ( हेमाद्रौ विष्णुः ) घृतमधुतुलंगुलुं श्रीखंडे वदारु सरलादि दद्यात् ॥ ( ब्रह्म  
पुराणे ) चंदनागुरुणी चोभेतैव शीरपद्मकम् ॥ तुरुष्कं गुग्गुलुश्चैव घृताक्त्युगपदेहेत् इति ॥ ( वज्र्यधूपानाह देवलः ) ॥ ये हि प्राण्यद्भजा  
धूपान् हस्तवाताहताश्च ये ॥ न ते श्राद्धे नियोक्तव्या ये च केचोऽग्रगंधयः ॥ घृतं न केवलं दद्याद्घृत्वा तृणगुग्गुलुम् ॥ प्राण्यद्भजाः कस्तूर्या  
दयः ॥ तृणगुलुं राल इति प्रासिद्धम् ॥ ( दीपसह माह विष्णुः ) घृतेन दीपो दातव्यस्तिलैस्तैलेन वा पुनः ॥ वसामेदोद्भवदीपं प्रयत्नेन विवर्ज  
येदिति ॥ वसा पाकात्समुद्धृतो मांससहः ॥ मेदस्तु दृढयकमलच्छादको मांसविशेष इत्यर्थः ॥ ( वस्त्राणि ब्रह्मपुराणे ) कौशेयश्चैव मकरपांसं  
दुकूलमहंतं तथा ॥ श्राद्धेष्वेता नियोदद्यात्कामान्नाति चेतमान् ॥ ( अहतलक्षणमाह कात्यायनः ) ईषद्धैतं नवं शतं सशयव्रथा  
रितम् ॥ अहतं तद्विजनीयात्सर्वकर्मसु पावनम् ॥ ईषद्धैतम् अकारुधौतम् ॥ स्त्रीश्राद्धे स्त्रीणां वस्त्रादीनि दद्यानि ॥ ( तथाच विष्णुधर्मोत्तरे )  
स्त्रीणां श्राद्धेषु सद्गुरुदंष्ट्रुश्वंडातकानि च ॥ निर्मात्रेताभ्यः स्त्रीभ्योऽयेत्युः सौभाग्यसंयुताः ॥ चंडातकानि स्त्रीपरिधानोचितान्यंशुकानि ॥

( ब्रह्मैवैतन् ) यज्ञोपवीतं तद्व्यवस्थाभावे विजानता ॥ पितॄणां वस्त्रदानस्य फलत्वेन भुतेऽस्विलम् ॥ ( आदित्यपुराणे ) यज्ञोपवीतदानेन विना श्राद्धं तु निष्फलम् ॥ तस्माद्वज्ञोपवीतस्य दानमावश्यकं स्मृतम् ॥ ( भविष्ये ) श्राद्धेषु भक्तिसंयुक्तो जलपूर्णकर्मण्डलुम् ॥ दद्यादभिषेकं द्विजेभ्यः पितृवृत्तये ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) आसनाचिरम्याणि पितृभ्यो यथैव प्रयच्छति ॥ स आस्तेऽसु चिंकरालत्रिदशैरपि पूजितः ॥ ( तृप्तिहपुराणे ) उपानच्छत्रवस्त्राणि भुङ्क्ते प्राञ्चकर्मण्डलुम् ॥ शयनासनयानानि दर्पणव्यजानानि च ॥ अन्यत्पितृगंधं तांबूलदीपचामरम् ॥ पितृभ्यो यः प्रयच्छेत्तु विष्णुलोकं समगच्छति इति ॥ गंगादिदानवाक्या न्युच्चारणीयानि तानि च ब्रह्मपुराणे दर्शितानि ॥ इदं वः पाठ्यमर्घ्यचण्डणधूपविलेपनम् ॥ अयं दीपप्रकाशश्च विधेर्देवाः समर्प्यते ॥ अयं वीर्यं धन्युस्त्वा गंधं दद्यात्सु शोभनम् ॥ इदं वः पुष्पमित्युक्त्वा पुष्पाणि च निवेदयेत् ॥ अयं वीर्यं धन्युस्त्वा तदग्रे तु देवतः ॥ अयं वीर्यं धन्युस्त्वादी पंहर्षानि वेदयेत् ॥ अनङ्गलं ग्रसद्ब्रह्मं भवेद्यत्तद्युगं शुभम् ॥ इदं वीर्यं धन्युस्त्वा त्रितयं वा निवेदयेत् ॥ इदं वीर्यं धन्युस्त्वा दद्यान्माल्यं सुशोभनामिति ॥ माल्यं ग्रथितपुष्पाणि ॥ स्वीकारकालेऽस्वासनम् ॥ सुगंधः ॥ सुपुष्पाणि ॥ सुघृतः ॥ सुदीपः ॥ स्वाच्छादनमिति प्रतिविचनं ब्राह्मणा ब्रूयुरिति हेमाद्रिप्रभृतयः ॥ शिष्टाचारश्चापि ॥ एवं गंगादिदानं पदार्थानुसमयेन वा काण्डानुसमयेन निवेदय्य श्राद्धमभिषेकनादिकुर्यात् ॥ अत्र पदार्थानुसमय एव मुख्यः ॥ कात्यायनेन देवावाहनानन्तरं पित्र्यावाहनोक्तेः ॥ एकैकस्मिन्नप्यभिषेचतीति च सर्वपात्रेषु जलप्रक्षेपावगमात् शिष्टाचाराच्च ॥ ( भृगुयाद्रिशुद्धिः कालिकापुराणे ) निर्वर्त्य ब्राह्मणदेशात् क्रियां भवेयथाविधि ॥ पुनर्भूमिं संशोध्य णेत्यन्तरमाचरेत् ॥ भाजानां ततो दद्याद्भस्मं शौचं पुनः क्रमात् ॥ अस्यार्थः ॥ एवमेनेन प्रकारेण ब्राह्मणदेशात् ब्राह्मणा



उन्नया गंधादिदानांक्रियां निष्पाद्यार्चनप्रसङ्गपतितकुशकुसुमादिद्रव्ययुक्तमर्चकपदपातोपहतां भूमिपतितकुशद्वापनयने करप  
 रिमार्जनेन संशोध्य शुचिकृत्य पंक्तेरनन्तरं भोजनपात्रस्थापनपर्याप्तदेशं परितोभस्मादिरिक्वांविचितमंडलैरन्योन्यव्यवधानं कुर्यात् ॥  
 भाजानि भोजनपात्राणि दद्यात् यथोक्तमण्डलेस्थापयेत् ॥ ततो ब्रह्मणहस्तक्षालनायजलंदत्वापात्रक्षालनंकुर्यादित्यर्थः ॥  
 मर्यादाहस्तप्रक्षालनयोः पौर्वपर्यविपर्यये दोषोभस्मपुणोऽभिहितः ॥ अकृत्वाभस्ममर्यादायःकुर्यात्पाणिशोधनम् ॥ आसुरं  
 तद्रवेच्छ्रद्धं पित्राणोपतिष्ठते ॥ मर्यादाशब्देनात्रपङ्क्रेतरमेवोच्यते ॥ (तथाच ब्रह्म) मंडलानिचकार्याणिनैवैरचूर्णकैः शुभैः ॥  
 गौरमृत्तिकयावापिप्रणतिनाथभस्मना ॥ पाषाणचूर्गसंकीर्णमाहृतश्चविवर्जयेत् ॥ (भृगुणाश्राद्धतत्त्वविशेषोक्तम्) ॥ भस्मनावा  
 रिणावापिकारेयन्मण्डलंततः ॥ चतुष्कोणंदिजाग्रस्यत्रिकोणंक्षत्रियस्यतु ॥ मंडालकृतिर्वैश्यस्य शूद्रस्याभ्युक्षणंस्मृतम् ॥ मण्ड  
 लाकृतिर्वर्तुलाकारम् ॥ अथाग्नौकरणनिर्णयः ॥ तत्राग्नौकरणहोमः किं सव्येनकार्योऽपसव्येनवा इतिसन्देहोचिन्यते ॥ तत्रस्वाहादि  
 देविकधर्मयुक्तेनयज्ञोपवीतिनाकार्यः स्वधादिपैतृकधर्मयुक्तेनप्राचीनवीतिनावाकार्यइतिमन्यते ॥ तथाहि—(कात्यायनः) अग्नौकरण  
 होमश्चकर्त्तव्यउपवीतिना ॥ प्राङ्मुखेनैवदेवभ्योजुहोतीतिश्रुतिश्रुतेः ॥ अपसव्येनवाकार्योदक्षिणाभिमुखेनच इति ॥ (कर्कभाष्येपि)  
 सव्यंकृत्वाप्राङ्मुखउपविश्यदक्षिणंजान्वाच्य मेक्षणेन द्वेअहुती देवभ्योजुहोति अग्नयेकव्यवाहनयस्वाहा सोमायपितृमते स्वाहा इति ॥  
 (शौनकोपि) स्वाहाकारेणहोमेतुभवेद्यज्ञोपवीतवान् ॥ तत्रप्राग्नयेद्वेत्वापश्चात्सोमायहूयते इति ॥ अग्नौकरणंचप्राचीनवित्युपवीतवाकु  
 र्यादीतिमाधवः॥(याज्ञवल्क्यः) अग्नौकारिष्यन्नादायपृच्छत्यग्रंनलुतम् ॥ कुरुष्वेत्यभ्यनुज्ञातो हुवाग्नौपितृज्ञवत् ॥ अस्यार्थः-अग्नौकारि



अन्यदृष्टुं घृतात्मकमद्भादाय ब्राह्मणनृपृच्छेदशौकरिष्य इति ततस्तैः कुरुष्वेत्यजुहात प्राचीनवीथियुगपसमाधाय मेषणेन वदयजुह्यात् ॥  
 अशयेकव्यवाहनयस्वाहा ॥ सोमाय पितृमते स्वाहा ॥ इति पिण्डपितृहोमकरणेन त्रौदुच हुत शेषिन्नादिभाजनेषु दद्यादित्यर्थः ॥ अयं होमस्तु  
 साधिकानाम् ॥ निरप्रिकानां तु देवभक्षुता देवविप्रकरे पितृकथमयुक्तः पितृविप्रकरे वा होमं कुर्यात् ॥ ( तथाच हेमाद्रौ ) साधिकावने  
 श्रितुद्रिजपाणै तथाभुवा ॥ क्षुर्यादशौक्र्या नित्यलौकिकेनेति निश्चितम् ॥ ( अनुस्मृतवापि ) अश्वभावे तु विप्रस्य पाणावे  
 वोपपादयेत् ॥ यक्ष्वाग्निः सद्भिर्जाविर्मत्रं दशभिर्भिरुच्यते ॥ ( हेमाद्रौ ) यदैविककर्मभर्मेण यज्ञोपवीतेन स्वाहाकरणेन च यं होमः  
 क्रियते तदैविकविप्रपाणौकर्तव्यः ॥ यैश्चैतत्कर्मभर्मेण प्राचीनवीतेन स्वधाशब्देन क्रियेतैस्तु पितृकविप्रदक्षिणकरे कार्यः ॥ तत्राऽ  
 स्माकं यजुर्देवगौडानां तु प्राचीनवीतेन एव ॥ तथाच ( योगियाज्ञवल्क्यः ) छंदोगाजुह्युः सव्येनापसव्येन यजुषा इति ॥ छंदोगाऽसाम  
 गा इत्यर्थः ॥ ( यजुर्देवयश्राद्धतत्त्वेपि पिण्डपितृयज्ञे शतपथश्रुतिः ) ॥ पातित्वामजानुनामजवनेन प्राचीनवीतीभूत्वा दक्षिणामुख आसी  
 न इत्युपक्रम्य द्वे आहुती जुहोति ॥ ॐ अग्रयेकव्यवाहनयस्वाहा ॥ ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा इति ॥ एवमेव हरिहरद्वालयुगकर्कवा मुदेव  
 हरिर्मंडूलापणिरायमुकुटचार्यचूडामणिप्रभृतयः ॥ एवंच पितृभक्तौ सव्येन इतिलेखनं प्रमाणशून्यमिति रघुनंदनः ॥ तत्रमव्यपक्षप्रथ  
 मोपविष्टस्य देवविप्रस्य पाणौ होमः ॥ ( तदुक्तं वायुपुराणे ) वैश्वदेवैर्देवैर्कस्मिन् भवेयुर्बहो द्विजाः ॥ तदैकपाणौ होतव्यस्याद्विधिर्वहितस्त  
 था इति ॥ अपसव्यपक्षे पितृकंपत्तयुपविष्टस्य प्रथमस्य पाणवेव ॥ तथाच ( कात्यायनः ) पेत्र्येयः पङ्क्तिमर्द्धन्यस्तस्य पाणावनप्रिकः ॥  
 हुत्वा मंत्रवदन्येषां तूष्णीं पात्रेषु निक्षिपेत् ॥ इति पात्रेषु पितामहादिपात्रेष्वित्यर्थः ॥ यत्र दैवविप्रकरे होमस्तदा पितृमातामहश्चाद्धद्वयार्थमपि

सकृदेवानुष्ठेयः ॥ यदापित्र्यविप्रकरे होमश्चिकीर्षत् तदापितृपंत्यपुषिष्ठमुल्यद्विजकोदुत्वामातामहस्यसंबंधी यो ब्राह्मणस्तस्यापि करे  
 पृथग्होमं कुर्यादिति हेमाद्रिमाधवौ ॥ एतत्तुसाश्रिकपरम् ॥ (तदुक्तं तत्रैव कात्यायनेन ) मातामहस्यमेदपिकुर्यात्तंत्रेणसाश्रिकइति ॥  
 हस्तेन्नाकरणं कुर्यादग्नौवासाश्रिकाद्विजः ॥ इतिपरशरस्मरणात् ॥ निग्निकस्तुसकृदेवकुर्यात् ॥ एवमेवापितृभक्तौश्रीदत्तः ॥ तत्रावाहनतिल  
 विकिरणाशौकरणाजपाश्राविकिरणादिकंसकृदेवानुष्ठेयमिति ॥ शिष्टाअप्येवमेवकुर्यात् ॥ पात्राभावे ब्राह्मणस्थानेनर्धबटुनिवेशजलादी  
 नामवकाशः कार्यः ॥ (तथाच मात्स्ये) अग्न्यभावेतुविप्रस्यपाणौवाथजलेपिवा ॥ अजकण्डश्चकणधगोत्रेयथशिवालये इति ॥ अग्न्यभावे  
 विप्रपाणौ विप्राभावेजलादिविप्रस्यपाणौवाथजलेपिवा ॥ अजकण्डश्चकणधगोत्रेयथशिवालये इति ॥ अग्न्यभावे  
 ब्रवीत् ॥ रजतेचतुर्वर्णेचनित्यंवसतिपावक इति ॥ अंजजलादौहोमः सव्येनाऽपसव्यवकुर्यात् ॥ अत्राऽग्न्यंजनयोगेनकर्तव्यः ॥  
 (तथाच विष्णुपुराणे) जुहुयाब्जंजनक्षारवर्जमन्नंततोऽजले इति ॥ व्यंजनंशकादि ॥ क्षाराणिजलवणस्सर्वंतिद्रव्याणीत्यर्थः ॥ अथ हुताव  
 शिष्टप्रतिपत्तिः याज्ञवल्क्याऽऽह ॥ हुतशेषंप्रदद्यात्तु भाजनेषुसमाहितः ॥ यथालाभोपपन्नपुरोषेषुतुविशेषतः ॥ अत्रपितृप्रियोऽय इति  
 वचनात् पैतृकविप्रभाजनेष्वितिगम्यते ॥ (हेमाद्रौ वसिष्ठः) पित्र्यविप्रकरे हुत्वा शेषंपत्रेषुनिक्षिपेत् ॥ पिडेभ्यः शेषयोत्कचिन्नदद्याद्देव  
 देविके ॥ (श्राद्धतत्त्वे यमोपि) अग्नौदणशेषं तु पित्र्येषुप्रतिपादयेत् ॥ प्रतिपाद्यपितृणांनुदद्याद्देवदेविके ॥ (ब्रह्मडिपि) अग्नौकरणश  
 षतुनदद्याद्देवदेविके ॥ नहिस्मृताः शेषभाजोऽर्धदेवाः पुराणैरिति ॥ अयंपशःसाश्रिकानां पितृविप्रकरोजुहतांच ॥ निग्निरपि देविक  
 ब्राह्मणपाणौहोमंकृत्यशेषंपित्र्यब्राह्मणपात्रेष्ववनिक्षिपेत् ॥ (तथाच वायुपुराणे) हुत्वादेवकरेऽग्निः शेषंपित्र्येनविदयेत् ॥ नहि

स्मृता शेषभाजोविश्वेदेवाः पुराणैः ॥ ( हेमाद्रौ यमोपि ) दैवविप्रकोऽनाग्निः कृत्वाग्नाकराणिद्विजः ॥ शेषेयपितृविभ्रेभ्यः पिडार्थं  
 चावशेषयेत् ॥ ( पाणिनिलेखशेषान्नस्यविनियोगमाह गृह्यपरीशिष्टे कात्यायनः ) यच्चपाणितलेदत्तयद्धान्यदुपकरितम् ॥  
 एकीभावेनभोक्तव्यंयुग्मभावोनिविद्यते ॥ अन्नपाणितलेदत्तवृषभश्रंत्यबुद्धयः ॥ पितरस्तेनृप्यांतिशेषान्न नलभतिते इति ॥ इयं  
 व्यवस्थासपात्रकेक्षेया ॥ पात्राऽभावेजलदुतशेषान्नस्येनवेवपात्रद्वये अपसव्येन पितृपात्रेषुदद्यात् ॥ अनाहितग्नौविप्रस्ययदग्नाकराणंदुत  
 म् ॥ वैश्वदेवायदातव्यं पश्चात्पित्रान्नवेदयेदिति श्राद्धतत्त्वसमुद्गरधृतवचनात् ॥ एवमेवमार्थिलश्रीदत्तरुद्रधरप्रभृतीनान्यवहारः ॥ इयं  
 शौकरणादि ॥ अत्रपरकीयगृहेश्राद्धकरणेभूस्वामिपितृभ्योऽन्नदानम् ॥ ( तथाच ब्रह्मपुराणश्राद्धतत्त्वयोः ) परकीयगृह्यस्तु स्वान्पितॄ  
 स्तप्येजडः ॥ तद्भूमिस्वामिनस्तस्यहरन्तिपितरोबलात् ॥ ( यमोपि ) परकीयप्रदेशेषुपितृणांनिर्वेत्तयः ॥ तद्भूमिस्वामिपितृभिःश्राद्ध  
 कर्मविहन्यते ॥ अग्रभागंततस्तेभ्योदद्यान्मूल्यचजीवतामिति ॥ भूस्वामिपितृभ्योऽन्नप्रथमतोदेयम् ॥ पार्वणादौप्राचीनवीतित्वादिनांदिसु  
 खेऽपवीतित्वादिना इतिश्राद्धतत्त्वादयः ॥ स्वगृहकरणेभूस्वाम्यन्नदानाभावात् ॥ ( अथपारिवेषणमाह प्रचेताः ) द्रुतशेषपितृभ्यस्तुदत्तवान्नपारि  
 वेषयेत् ॥ हविष्यंमधुमांसानिपायसाणमेवच ॥ मांसकलौनदेयं नकलोपलैपैतृकमितिश्रीमद्भागवतवाक्यात् ॥ ( शौनकः ) पाकंसर्वमुपानीय  
 संवेद्यच पृथक्पृथक् ॥ विधिनादेववृत्तुपारिवेषणमाचरेत् ॥ ( तत्रप्रकारमाह मनुः ) पाणिभ्यामुपसंगृह्य स्वयमन्नस्यवर्द्धितम् ॥ विप्रातिके  
 पितृन्याय्यञ्चनैकरूपनिक्षिपेत् ॥ अस्यार्थः ॥ अन्नस्यवर्द्धितम् अन्ननूणभाजनम् अन्नस्येतिदृतीयाथषष्ठी ॥ रसतयाकागाराद्वाभ्यांकरा  
 भ्यांस्वयंगृहीत्वातत्रत्यमन्नं विप्रातिके भोजनाथपात्रे शनकैः यथाभाण्डभेदः शब्देवानेत्यद्येततथा निक्षिपेत् पारिवेषयेत् ॥ स्वय

भित्तिवचनास्तत्रयं परिवेषणं मुख्यम् ॥ ( अतएव वायुपुराणे ) फलस्यानंतताप्रोक्तास्वयंचपरिवेषणे ॥ स्वयमितियजमानेन ॥ ( यत्तु भ  
 विष्योत्तरे ) भार्ययाश्राद्धकालेतुप्रशस्तं परिवेषणम् ॥ ( वायुपुराणे ) परिवेषणं प्रशस्तं स्यात्पितृकर्मणि भार्यया ॥ पितृदेवमनुष्याणां  
 स्त्रीसहायोयतः स्मृत इति ॥ भार्ययापि सवर्णैव कर्तव्यं नान्यवर्णया इत्यर्थः ॥ इति हेतुवन्निगदानुसृत्य तया यजमानकटुकवपरिवेषणं  
 भार्ययाः सहकारिमात्रत्वं न तु मुख्यत्वमिति गम्यते ॥ ( मात्स्ये ) उभाभ्यामथ हस्ताभ्यामाहृत्य परिवेषयेत् ॥ प्रशान्तचित्तः  
 सति लदुर्भपाणिर्विशेषतः ॥ ( ब्रह्माण्डे ) नापवित्रेणैकैकहस्तेन न विनाकुशम् ॥ नायसैनैव पात्रेण श्राद्धेतु परिवेषयेत् ॥ आयसेन लोह  
 पात्रेण ॥ ( ब्राह्मणसर्वस्वे वसिष्ठेऽपि ) आयसेन तु पात्रेण यद्वस्त्रं प्रदीयते ॥ भोक्ता विष्टासंभुङ्क्ते दाता च नरकं व्रजेत् इति ॥ केचित् आयसं सृज्य  
 मितिवदंति तत्र ॥ सीसकायसरीति पात्राण्ययन्नियानीति पठेन सिस्मरणात् ॥ ( हेमाद्रौ ) कार्णाजिनिः ) ॥ द्रव्यं द्रव्यं शृतान्नं च समस्तव्यं ज  
 नानि च ॥ उदकं यच्च पक्वान्नं नो द्रव्यं तु कदाचन इति ॥ शृतान्नं पायसौ दनादि ॥ पक्वान्नं मोदकादि ॥ उदकादिदानेन दर्वानिषेधात् ॥ पात्रान्तरेण  
 दानं कर्तव्यमित्यर्थः ॥ ( शातातपः ) हस्तदत्तास्तु ये स्नेहा लवणं व्यंजनादयः ॥ पितृणां पतिष्ठान्ति भोक्ताभुजितं किल्बिषम् ॥  
 हस्तदत्ता हस्तेन दत्ताः ॥ स्नेहाः घृतादयः ॥ ( वसिष्ठः ) तस्मादतिरिक्तं देयं पणैनाथतृणेन वा ॥ प्रदद्यान्न तु हस्तेन नायसेन कदा  
 चन ॥ ( संग्रहे ) अपक्वतैलपक्वच हस्तेनैव प्रदीयते ॥ ( मत्स्यपुराणे ) यत्किञ्चिन्मधुना युक्तं गोक्षीरघृतपायसम् ॥ दत्त  
 मक्षयमित्याहुः पितरः पूर्ववृताः ॥ ( स्मृत्यन्तरे ) अन्नमध्ये प्रतिष्ठाप्य दक्षिणे घृतपायसम् ॥ शाकादिपुतः स्थाप्य भक्ष्यं  
 भोज्यञ्च वामतः ॥ उक्तंच मुनिभिः श्राद्धे विधिविवाजसनेयिनाम् ॥ परिवेषणं भूमावेस्थितेषु पात्रेषु कर्तव्यम् ॥ न तु दाशशिलादिपा

पारप्रभुरतिलाग्निक्षिपेदितिमैथिलरुद्धरालिसनंप्रमाणशून्यम् ॥ सर्वदाचितलाग्राह्याः पितृकृत्यविशेषतः ॥ भोज्यपत्रेतिलान्दृष्टानि।  
 शाःपितरोगताइतिपृथ्वीचंद्रोदयेपरशरस्मरणात् ॥ अतोभोजनपत्रपरितोविक्रोदितिसमीचीनम् ॥ अथान्नसंकल्पः ॥ ( तथाच प्रभा  
 सखण्डे ) द्विजपात्रेषुदत्त्वान्नकृत्स्नसंकल्पमाचरेत् ॥ द्रव्यादिस्थननोपसंधोदृश्यतेततः ॥ ( अग्निः ) ॥ अकृतेवन्नसंकल्पे यःपात्रं  
 चोद्धरेद्विजः ॥ वृथाभवतितच्छ्राद्धं दातानसंकल्पजेत् ॥ ( धर्मप्रदीपे ) सिद्धान्नस्यतुसंकल्पोभूमावेवप्रदीयते ॥ हस्तेषुदीयमानंयत्पतृणां  
 नोपतिष्ठति ॥ ( ब्राह्मे ) पितृकर्मणिवाभोतैवेदद्वानुदक्षिणे ॥ संकल्योदकदानंस्यान्नित्यश्राद्धेयथास्मिचि ॥ ( हेमाद्रावत्रिः ) संबंधनामागो  
 त्राणि इदमन्नंतः स्वधा ॥ ( ब्राह्मिणि ) अमुकमुकगोत्रतत्तुभ्यमन्नस्वधानम् ॥ अथसावित्रीजपादि ॥ ( तत्र पारस्करः ) संकल्यपितृदे  
 भ्यः सावित्रीमधुमज्जपः ॥ श्राद्धंनिवेद्यापोशानं जुषप्रैषोऽथभोजनम् ॥ अस्यार्थः—देवेभ्यःपितृभ्यश्चात्रसंकल्य यथोक्ताविधिनान्यक्त्वा  
 सावित्रीं सवितृदेव्यांगायत्रामधुमतींचजवाश्राद्धंचनिवेद्य दर्शयिष्यमाणेनप्रकारेण श्राद्धस्याच्छिद्रवाचनंकृत्वाऽऽपोशानजलंचद्विज  
 करेदत्त्वा जुषध्वमितिप्रैषेण भोजयेदित्यर्थः ॥ मधुमेचनादिकमच्छिद्रवाचनप्रकारंचाह—( यमः ) अन्नमधुमयंकृत्वामधुवातोतीमात्रितम् ॥  
 अब्रह्मीनंक्रियाहीनं मंत्रहीनंचयद्भवेत् ॥ सर्वमच्छिद्रमित्युक्त्वा ततोयत्नेनभोजयेत् ॥ एतच्चापोशानदानात्पूर्वमेवकृतेव्यपश्चात्करणेहिप्र  
 चेतसा दोषस्योक्तत्वात् ॥ आपोशानकराग्राणमच्छिद्रस्यतुभाषणात् ॥ निराशाःपितरोगांति द्वैःसहनसंशयः ॥ ( पारस्करः ) गाय  
 त्रीन्त्रिसकृद्वापिजपेद्ब्राह्मदतिपूर्विकम् ॥ मधुवाताइतिन्युचमंभित्येतद्विक्रजेत ॥ ( याज्ञवल्क्योपि ) सव्याहृतिकांगायत्रमधुवाताइति  
 न्युचम् ॥ जवायथासुखंच्यंभुजंरिंस्तेतिवाग्यताः ॥ अस्यार्थोमिताक्षरायाम् ॥ अनंतरं विश्वेभ्यादेवेभ्य इदमन्नंपरिविष्टपरिवेष्ट्यमाण

चातुर्भोरितयवादकेनदेवेनवेद्य तथापित्रैअमुकगोत्रायामुक्तशर्मणे इदमन्नंपरिविष्टणैर्विद्व्यमाणंचातुर्भोरितिलेदकप्रदानेनपित्रेनवे  
 द्य एवं पितामहादिभ्यश्चनिवेद्यानंतरमापाशा नंदत्वापूर्वोक्ताभिर्व्याहृतिभिः सहितां गायत्रीं मधुवाता इति त्र्यचंभुमधुमध्वितित्रिवारंजत्वा  
 यथासुखंजुषध्वमितिब्रूयात् ॥ तेपिब्राह्मणवाग्यतामोनिनेभुजीरन्नित्यर्थः ॥ (जपेविशेषमाह कत्यायनः) अश्रत्सुजपत्तव्याहृतिपूर्वागायत्रीत्रिः  
 सृष्ट्वा रक्षोघ्नीः पितृमंत्रान् पुरुषसूक्तमप्रतिरथमन्यानिपवित्राणीति ॥ अस्यार्थः ॥ अश्रत्सुभुञ्जानेषुप्रणव्याहृतिपुक्तां गायत्रीं त्रिः वार  
 त्रयं वा सृष्ट्वा वारंजपेत् पठेत् रक्षोघ्नीः कृणुष्वपाजइत्याद्याः पंचर्चः ॥ पितृमंत्रान्नरदीरतामवर इत्यादि त्रयोदशर्चः ॥ पुरुषसूक्तं सहस्र  
 शीर्षेत्यादिषोडशर्चः ॥ अग्निरथम् आहुः शिशानइत्याद्यादशर्चः ॥ अन्यानिपवित्राणि सप्तव्याधाइत्यादीनिपितृरुचिस्तुत्यादिबोधका  
 निश्रुतिपुराणादिप्रतिपाद्यानीत्यर्थः ॥ (विष्णुपुराणे) रक्षोघ्नमंत्रपठनं भूमेरास्तरणंतिलैः ॥ कृत्वाध्येयाश्चपितरस्तत्सर्वद्विजसत्तमाः ॥  
 (मनुस्मृतौ) स्वाध्यायंश्रावयेत्पित्र्ये धर्मशान्नाणिचैवहि ॥ आभ्यानानीतिहासंश्च पुराणानिखिलानिचेति ॥ स्वाध्यायः वेदः ॥ धर्म  
 शान्नाणिमन्वादिप्रणीताग्रंथाः ॥ आभ्यानानिसौर्षणमंत्रावरुणादीनपौराणानिसप्तव्याधाभ्यानप्रभृतीनि ॥ इतिहासाः महाभारतादयः ॥ पुरा  
 णानि ब्रह्मपुराणादीनि ॥ खिलानि श्रीसूक्तमहानामिका शिवसंकल्पदीनि ॥ एतानिभुञ्जानन्ब्राह्मणञ्श्रावयेदित्यर्थः ॥ (मात्स्येपि)  
 स्वाध्यायंश्रावयेत्पैत्र्यपुराणानिखिलानिच ॥ ब्रह्मविष्णवर्करुद्राणांस्तोत्राणिविविधानिच ॥ (शंखलिंगितौ) पवित्रपाणिदंभेष्वसीनो  
 मधुवाताइतिजपेत् ॥ पवित्रपाणिः दुर्महस्तः ॥ दुर्भेष्वसीनः दुर्भेषुर्पविष्टः मधुवाताऽक्रतायतइति तिस्रः ऋचोजपेदित्यर्थः ॥ अत्रगायत्रीमधु  
 वाताइतिजपः प्राचीनानीतिनवकार्येइतिहेमाद्रिः ॥ ( ब्रह्मपुराणे) वीणावंशध्वनिवायविप्रेभ्यः सन्निवेदेयदिति ॥ अन्यान्यपिपसमाचारात्

पवित्राणि जयानीति हेमाद्रिः ॥ अयंचसर्वाणि जपः उपवीतिनाकार्यः ॥ ( तथाच हेमाद्रिब्रह्माण्डपुराणयोः ) कुशपाणिः कुशासीन उपवीति  
जपेत्ततः ॥ वेदोक्तानि पवित्राणि पुराणानि खिलानि चेति ॥ ( हेमाद्रिमाधवयोजसद्विग्रहपि ) अपसव्येन कर्तव्यं सर्वश्राद्धं यथाविधि ॥ सूक्त  
स्तोत्रजपं मुखविष्णोर्वाचविस्मर्जनम् ॥ ( तत्रैव वृद्धशतातपोऽपि ) कृतापसव्यः कुर्वीत मुखवायस्त्वश्रताञ्जपः ॥ अस्यार्थो हेमाद्रिणा कृतः ॥  
अश्रतामित्यश्रुब्राह्मणेषु यजमानेन क्रियमाणो जप इत्यर्थः ॥ अश्रतामिति ग्रहणात् ब्राह्मणभोजनकालादन्यत्र योजपस्तत्राचीना वीतमेव  
कर्तव्यमित्यर्थः ॥ मैथिलस्त्वपसव्येनैव कुर्वीत तत्रमाणाऽभावादुक्तम् ॥ ब्राह्मणद्वाराकारितु प्राचीनोपवीत एव यत्कइति विवेकः ॥ अथ  
विकिरादिः ॥ ( तत्र कान्त्यायनः ) तृताञ्छात्वाऽन्नप्रकीर्त्यं सकृत्सकृदपोदत्वापूर्ववद्वायत्राजत्वाधुमतीमधुमध्वितिवत्तुताः स्थितिपृच्छति  
तृताः स्मृत्यनुज्ञातः ॥ शेषमन्नमुपज्ञायति ॥ अस्यार्थः—तृताञ्छात्वा ननु मनोनिविज्ञाय प्रकृतसर्वजातीयमन्नमेकस्मिन्नात्र गृहीत्वा वक्ष्यमाण  
संस्कारयुक्तायां विप्रकीर्त्याऽऽचम्य विरलप्रक्षिप्य पात्रमनोभयविमोचनार्थं सकृत्सकृदपः प्रदाय त्रिः सकृद्वाणायत्रं मधुवातेत्यादि स्तत्रयञ्च  
जत्वा मधुराब्दं च त्रिरुक्त्वा तृताः स्थिति विप्रान्यजमानः पृच्छेत् ॥ तैश्च तृताः स्मद्व्युक्तं शेषमन्नाकिं क्रियताम् इत्यत्र शेषविनियोगानुज्ञाभ्यर्थेने  
कृते विप्रैः श्रष्टैः सह मुज्यतामिदुक्ते सति पिण्डं दद्यादित्युत्तरेण संबध इत्यर्थः ॥ ( पात्रमात्स्ययोः ) तृताञ्छात्वा ततः कुर्वाद्वादि किं सर्ववर्णिकम् ॥  
सोदकं चात्र मुद्रुत्थं सति प्रक्षिपेद्भुवि ॥ ( मरुतपि ) ॥ सार्ववर्णिकमन्नाद्यं सन्नायाऽप्यवधारिणः ॥ समुत्तुजेदुक्तवतामन्नतो विकिरन्भुवि ॥  
अस्यार्थः ॥ वर्णशब्दः प्रकारवाची ॥ सर्वप्रकारमन्नादिकं व्यजनादिभिरैकीकृत्य उदकेन प्लावयित्वा कृतभाजनानां ब्राह्मणानां पुरतो भूमा  
दग्धेषु निक्षिपेदित्यर्थः ॥ ( तत्रैव ) असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनः कुलयोषिताम् ॥ उच्छिष्टं भागधेयं स्याद्दग्धेषु विकिराश्रयः ॥ ( श्राद्धतत्त्वे



ब्राह्मेच ) उच्छिष्टेसतिलान्दभेन्दक्षिणाग्निधापयेत् ॥ यद्यग्निवेदितं किंचित्पितृभ्यश्च तत्र च ॥ तस्मान्तास्माच्च भागं तु हवीत्वा चमसे शुभे ॥  
दत्त्वा मृताभिधानं तु विप्रैश्च भ्यश्च सकृत्सकृदिति ॥ उच्छिष्टहृदयुच्छिष्टसमिधा विन्यर्थः ॥ सार्पिड्यादौ क्षयाहे च कोद्विष्टे च वर्षणे ॥ विकीरेण  
विनिकुर्यात्तद्वृथा मनुब्रवीत् ॥ ( विकीरं यत्र माहमेमाद्राष्ट्ररूपतिः ) उपशृष्टे दुर्कानां च ब्राह्मणानां तथा श्रतः ॥ सोदकं विकीरेदं ब्रह्मं ब्रह्ममुदा  
हरेत् ॥ अनग्निदध्याये जीवायेऽग्निदग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूसौदत्तेन तु यन्तु तत्तातु परांगतिम् ॥ ( मात्स्येपि ) समुत्सृजेदुक्तं तामग्रतो विकि  
रन्मुवि ॥ अग्निदध्याश्वये जीवायेऽप्यग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूमौ दत्तेन तु यन्तु तत्तातु परांगतिम् ॥ येषां न मातानपि तान् बधुन चान्नसिद्धि  
र्न तथा ब्रह्मस्ति ॥ तन्मयं ब्रह्म विदत्तमेतत्प्रयातुलोकान्यनुवायते तु ॥ ( प्राचीनपद्धतिश्चाद्वतन्वयोरपि ) अग्निदध्याश्वये जीवायेऽप्यद  
ग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूमौ दत्तेन तु यन्तु तत्तातु परांगतिमिच्छन् ॥ एवमेव पितृभक्तौ श्रीदत्तैरुक्तम् ॥ ( विकीरप्रक्षेपादनंतरं करणीयमुक्तं ब्रह्म  
पुराणश्चाद्वतन्वयोः ) ततः प्रक्षाल्य हस्तौ च त्रिगचम्य हारं स्मरेत् ॥ सव्याहृतिकां संप्रणवां गायत्रीं च पठेत्तथा ॥ यठेऽभ्युमतीः पुण्यास्त  
थाचम्य भुमध्विति ॥ ( मरीचिः ) श्राद्धेषु विकीरं दत्त्वा योनाचाभेन भतिप्रमात् ॥ पितरस्तस्य षणमासं भवत्युच्छिष्टभोजिन इति ॥ अनंतरं  
गंडूषार्थमुदकं ब्राह्मणेभ्यः प्रत्येकं दद्यात् ॥ ( तथाच मार्कण्डेयपुराणे ) ततस्त्वाचमनार्थं यदद्याच्चापः सकृत्सकृदिति ॥ पितृब्राह्मणपूर्वकं दद्या  
दिति हेमाद्रिमाधवौ ॥ ( विष्णुरपि ) उदङ्मुखं तेष्व्वाचमनमादौ दद्यात्ततः प्राङ्मुखं वेष्टु इति उदङ्मुखेषु पितृब्राह्मणेष्वित्यर्थः ॥ ( पितृभक्तौ  
श्रीदत्तोपि ) ब्राह्मणभोजनोत्तरमाचमनं विसर्जनं च पितृपूर्वकमिति ॥ ततः कात्यायनेन विकीरोत्तरं गान्ध्यादिजपस्तुतिप्रश्नश्च उक्तः त  
त्पूर्वमेव मन्त्रव्याख्यातम् ॥ अथ पिंडदानम् ॥ ( तत्र कात्यायनः ) सर्वभद्रमेकत उद्धृत्योच्छिष्टसमिधौ भेषं पुत्रास्त्रिणपिंडानवनेन ज्यदद्यादिति



ध्वित्येके इति ॥ सर्वमन्नमेकस्मिन् पात्रे उद्धरेत् ॥ सर्वशब्दः प्रकृतज्ञातिसर्वत्वार्थः ॥ अतः पायसौदनापूम्णादिजातियेभ्यः प्रकृत  
 श्राद्धप्रयोगार्थमाधितेभ्यः सर्वेभ्योऽन्नेभ्यः किंचित्किंचिदादाय पिंडपयातिपरिमाणमन्नसमुदायमेकस्मिन्पात्रे संभृत्येतदुक्तं भवति ॥  
 उच्छिष्टसमीप इत्युच्छिष्टप्रदेशात् ॥ व्यामन्यरत्निवाह्वादित्यवहितदेशे इत्यर्थः ॥ त्रींशानिति वीप्सा मातामहादिपिंडत्रयमपेक्ष्य पिंडान्दद्या  
 दिति व्याख्याकाराः ॥ ( याज्ञवल्क्योपि ) सर्वमन्नमुपादाय सतिलं दक्षिणमुखः ॥ उच्छिष्टसन्निधौ पिंडान् दद्याद्वै पितृयज्ञवदिति ॥ ब्राह्म  
 णार्थं कृतमन्नं सर्वमुपादाय सतिलं तिलमिश्रं दक्षिणमुख उच्छिष्टसन्निधौ पिंडपितृयज्ञरूपेण पिंडान् दद्यादित्यर्थः ॥ केचिद्ब्राह्मणभोजनात्  
 पूर्वमर्चनानन्तरमग्नौ कारणानन्तरं वा पिंडनिर्वपणं कुर्वन्ति ॥ तत्तु मतान्तरम् ॥ ( तत्र तावत्सिद्धदानस्थानमाह—व्यासः ) अरत्निमात्रमुत्तुज्य  
 पिंडांस्तत्र प्रदापयेत् ॥ यत्रोपरस्मृतां वापि प्राप्तुवन्ति न विदुः इति ॥ तत्र तास्मिन् श्राद्धप्रयोगे उच्छिष्टप्रदेशादरत्निपरिमितं प्रदेशं  
 परित्यज्य यो देशोऽवतिष्ठते तत्र पिंडान् प्रदद्यात् ॥ सकनिष्ठिकः करः अरत्निरित्यर्थः ॥ ( हेमाद्रौ देवलः ) उपलिप्तेशु च देशे स्थानकुर्वन्ति  
 सैकतम् ॥ मंडलचतुरस्रं वा दक्षिणावतं महत् इति ॥ उपलिप्ते गोमयगोमूत्राभ्यामुपलिप्ते सैकतं सिकतामयं स्थानं मंडलं वृत्ताकारमित्यर्थः ॥  
 ( ब्रह्मपुराणेपि ) हस्तमात्रा तथा भूमेश्चतुरंगुलमुच्छ्रिता ॥ पिंडनिर्वाणार्थं यरप्रणीया विशिषतः ॥ ( अथ उल्लेखनादि ब्राह्मे ) सव्योत्तराभ्यां  
 पाणिभ्यां कुर्यादुल्लेखनं बुधः ॥ दर्भैरिति शेषः ॥ उल्लेखनं तु सकृदेव ॥ ( तदुक्तं शतपथीये ) सकृदुल्लेखति ते द्वेदिभाजनमिति ॥ वेदिभाजनं वेदि  
 स्थानीयम् ॥ ( ब्रह्मादेपि ) खंडोपपन्नं च तथैवोल्लेखनक्रिया ॥ सकृदेव पितृणां स्याद्देवानां तुरिफ्रुच्यते इति ॥ खंडनं बर्हिगोदेच्छेदनम् ॥ पेषणं  
 भूमिघर्षणादिकम् ॥ उल्लेखनक्रिया रेखाकरणं पितृणां पितृकार्यं सकृदेव स्यादित्यर्थः ॥ रेखाकरणं मंत्रोऽपहता इत्यादि ॥ दक्षिणेनोल्लेख

त्यपहता इति कात्यायनमुत्रात् ॥ ( उल्लेखनन्तरं पश्चादुल्लेखनिधानमाह कात्यायनः ) उल्लेखं परस्तात्करोति यैरुपाणीतिरेखायाः पर-  
 स्ताहक्षिणप्रदेशे उल्लेखं निधायतीत्यर्थः ॥ ( स्कंदपुराणेपि ) यैरुपाणीति मंत्रेण न्यसेदुल्लेखमन्तिके ॥ अंतिके दक्षिणाशयामित्यर्थः ॥ उल्ले-  
 खमंत्रमणवामावर्त्तनकर्तव्यम् ॥ ( ततः छिन्नमूलकुशानामास्तरणमाह हेमाद्रौ देवलः ) तस्मिन्स्थाने ततो दर्भानि कर्ममूलाच्छिन्ना बन्धून् ॥  
 दक्षिणाग्रानुदक्षपादान् सर्वस्तान् स्तनुयात्समम् ॥ अस्यार्थः तस्मिन्निति ॥ यत्र पिंडाः प्रदातव्याः तत इत्युल्लेखनाद्यनन्तरं दर्भान् कुशान् ॥  
 तदभावे काशादीन् ॥ एकमूलं सलग्नं बहु शिवान् ॥ शिवान् साग्रान् ॥ बहून् एककस्मिन् पिंडे त्रित्वात्प्रभृतियथेच्छं यथासंभवं च ॥  
 दक्षिणतोऽग्रेषु पाते दक्षिणाग्राः ॥ उदक्षपादाः उदङ्मूलाः ॥ स्तनुयात् विस्तारयेत् ॥ संसममस्थलतय इत्यर्थः ॥ ( कात्यायनोपि ) उप-  
 मूलं सकृदाच्छिन्नानि लेखां कृत्वा यथावनिक्तं पिंडान् ददात्यसावेत्त इति ॥ ( अस्याथो देवयाज्ञिकभाष्ये ) ततो मूलसमीपे एकैव प्रयत्ने  
 न च्छिन्नानि दर्भतृणानि दक्षिणाग्रे रेखाया मास्तीर्य यथावनिक्तं यत्र यत्रावनेज्जंयस्य स्य दत्तत्रतत्र पिंडान् ददाति असावित्यस्य स्थानेऽ-  
 मुकगोत्राऽपुत्रशर्मन्नित्यर्थः ॥ ( उपमूलं रूपां स कृदाच्छिन्नान्मुक्तं शतपथे ) अथ सकृदाच्छिन्नान्युपमूलं दितानि भवति अत्र भिक्वदेवानामध्य-  
 भिवमनुष्याणां मूलमिव पितृणां तस्मादुपमूलं दितानि भवन्ति सकृदाच्छिन्नानि भवन्ति इति ॥ दितानि खंडितानीत्यर्थः ॥ ( तैत्तिरीयश्रुतावपि )  
 सकृदाच्छिन्नं बर्हिर्भवेत्तिसकृद्विहित इति ॥ बर्हिः कुशाः ॥ मात्स्ये ) निधाय दर्भां च्छिन्नानि विदक्षिणाग्रान् समाहितः ॥ त्रिद्विन्पिडान् यो दद्यात्सर्वा-  
 नेव तिलैर्युतान् ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) स पिञ्जलाश्च हरिताः स्निग्धाः पुष्टाः समाहिताः ॥ गोकर्णदीर्घाश्च कुशाः सकृच्छिन्नसमूलाकाः ॥ स पिञ्जला-  
 अपृथक्कृतदलाः ॥ हरिता हरिर्दर्गाः ॥ स्निग्धाः अरुक्षाः ॥ गोकर्णदीर्घाः अनामिकां गुष्ठविस्तृतप्रमाणा इत्यर्थः ॥ ( स्मृत्यन्तरे ) पिंडनिर्वपणकार्यं

कुशाभावेचक्षणैः। काशेपुण्ड्रवासुपित्रपरमहेते ॥ राजदूवा अतिदीर्घदूवा इत्यर्थः ॥ दर्भास्तरणानंतरम् अवनेजनमुक्तं हेमाद्रिभाविष्यत्पु-  
णेसुमंतुना ) असाववनेनिश्चेतिपुरुषंरुपंयुप्रति ॥ त्रिस्त्रिकेनहस्तेनविधीतावनेजनम् ॥ इति। असावित्यत्रगोत्रसंबंधनामानिसुबुद्धयंतानि  
क्रमेणोच्चार्यवनेनिश्चेत्यभिधायवनेजनायापितृणांकारशोधनायोदकंदद्यादित्यर्थः ॥ ( कात्यायनसूत्रेपि ) ॥ उदपात्रेणावनेजयत्यपसव्यं  
सव्येनवोद्धरणसामर्थ्यादसाववनेनिश्चेतियजमानस्यपितृभृत्यतत्रानुपमूलं सकृदाच्छिन्नानिलेवायाद्वान्वयथावक्तोपदानंददात्यसवे  
ततइति ॥ ( अस्याथौ देव्याह्निकभाष्ये ) उदकस्यपात्रमुदपात्रं तेनाध्वयुः यजमानस्यपितृभृत्यतिपितुरारभ्यत्रात्रुर्वाग्नं पितृपि  
तामहप्रपितामहान् अपसव्ययथास्याद्धस्तस्यसव्यप्रदेशादक्षिणप्रदेशेनउदकनिनयनं यथास्यात्तथांशुप्रदेशेनित्योरन्तरालेन अवनेजय  
तिअवनिक्तान् शुचीन्करोतिपिंडदानायअसावितिसुबुद्धयंतगोत्रनामादेशपूवकम् अमुकसगोत्रयजमानस्यपितामुक्तशर्मन् अवनेनिश्चे  
त्वायासूलमध्याग्रप्रदेशेमुदक्षिणसंस्थमवनेजनंनकायमित्यर्थः ॥ ( शतपथेपि ) अथोदपात्रमादायावनेजयत्यसाववनेनिश्चेतियजमानस्य  
पितरमसाववनेनिश्चेति पितामहसाववनेनिश्चेतिप्रपितामहसाववनेनिश्चेतीति। ( स्मृत्यंतरे ) गंधपुष्पादयमलिलैश्चिन्नमूले क्रमणैव ॥  
दद्याद्वात्रावनसम्यक्प्रतिदातुंजलंस्पृशेत् ॥ जलंस्पृशेत्सकरंकुश्यादित्यर्थः ॥ अत्रकात्यायनेनबर्हिस्तरणात्पवमवनेजनमुक्तम् ॥ तथांशुम  
तुप्रभृतिभिस्तुदर्भास्तरणानन्तरं चोक्तंभूतंअनेजनबर्हिस्तरणयोः पौर्वापर्यविकल्पः ॥ यद्यपिविकल्पोदृश्यते तथापिब्रह्मपुराणादौर्भो  
पथ्येवावनेजनोक्तत्वात् ॥ भविष्यत्पुराणसुमंतुनाविशेषोपादानात् ॥ हेमाद्रिमाधवापितृभक्तिमदनरश्राद्धमथूवादिमहानिबंध  
कारैः शिष्टैश्चाङ्गीकृतत्वाच्च सकृदाच्छिन्नदंभेष्ववनेजनंकार्यमितिविवेकः ॥ ( अथपिंडानाह मनुः ) त्रींस्तस्माद्धविशेषात्

पिंडानुकृत्वासमाहितः ॥ औदकेनैवविधिनानिर्वपेदक्षिणामुखमिति ॥ तस्माद्विधिशेषात् इत्यग्नौकरणहविःशेषात् ॥ उदकमि  
 त्यग्नौदकोविधिरित्यर्थः ( याज्ञिकदेवभाष्ये ) आर्द्रमलकमात्रः प्रथमः पिंडः तदपेक्षयाद्वितीयः स्थूलः तृतीयः स्थूलतः ॥  
 ( देवलः ) अभ्यव्यमधुसर्पिर्भ्यतान्वपेत्कुशसंचये ॥ वपेत् निदध्यात् ॥ ( बृहस्पतिः ) सर्वस्मात्प्रकृताद्गन्नात् पिण्डान्मधुतिला  
 निवतात् ॥ पितृमातामहादीनदद्याद्ब्रह्मविधानतः ॥ पिंडदानंचसव्यजान्वाच्यकर्तव्यम् ॥ ( तदुक्तं वायुपुराणे ) मधुसर्पिस्तिलयु  
 तांस्त्रीन्पिंडान्निर्वपेद्बुधः ॥ जनुकृत्वा तथासव्यं धूम्रापितृपरायणः ( विठ्ठलीये काल्यायनः ) शाल्योदनंगवक्षीरमाषान्नतिलमि  
 श्रितम् ॥ पिंडं दद्यात्प्रयत्नेन यजुषांचविशेषत इति ॥ पिंडदानं वाग्व्याख्याय न हस्तेन कार्ष्णम् ॥ ( तदुक्तं शंखलिविताभ्याम् ) पिंडं निदध्या  
 त्सव्येन पाणिना दक्षिणपाणिपुरःसरेण इति ॥ ( पिंडपरिमाणमाहभरीचिः ) आर्द्रागलकमात्रंस्तुपिंडान्कुर्वीतपर्वणे ॥ एकोद्विष्टविल्व  
 मात्रं पिंडमंकतुर्निर्वपेत् ॥ नवश्राद्धेस्थूलतरं तस्मात्पिंडं तु निर्वपेत् ॥ तस्मादपिस्थूलतरमाशौचप्रतिवासरम् इति ॥ नवश्राद्धम् आशा  
 चमध्येप्रथमतृतीयादिदिनेष्वेकादशेचदिनेविहितंश्राद्धम् ॥ प्रतिवासरं प्रतिदिवसं दर्शमात्रेऽप्यन्यथं नवश्राद्धपिंडादिस्थूलतरं पिंडं दद्यादि  
 त्यर्थः ॥ ( पिंडदाने संकल्पमाहपारस्करः ) अर्घ्यदाने संकल्पे पिंडदाने तथाऽऽख्ये ॥ गोत्रसंबंधनामानियथावत्प्रतिपादयेत् इति ॥ संक  
 ल्पशब्देनात्रिद्विभोजनस्यत्यागोऽभिधीयते इत्यर्थः ॥ गोत्राज्ञानेकाश्चपंगोत्रं कर्तव्यम् ॥ ( तथाच शतपथश्रुतिः ) तस्मादाहुःसर्वाः प्रजाः  
 काश्चप्यइति ॥ गोत्रनाशेतुकाश्चपइतिव्याघ्रपात् ॥ अथहस्तेनमार्जनम् ॥ ( तथाच मनुस्मृतौ ) न्युष्यपिंडंस्ततस्तान्स्तुप्रयतोविधिपूर्वकम् ॥  
 तेऽपुर्बेषुतहस्तेनमृज्याल्लेपभागिनमिति न्युष्यपिंडं तद्वत्तर्भलहस्तेनलेपंकुर्यादित्यर्थः ॥ ( लेपभागिनो मनुस्मृतिमतस्त्यपुराणयोः

दर्शिताः ) लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिंडभागिनः ॥ पिंडदः सतमस्तोषासापिंडयंसातपौरुषम् इति ॥ चतुर्थाद्याः वृद्धप्रपितामहमृ-  
 तयः ॥ तान्वृद्धप्रपितामहादीन्निदिशेत्तपाभयभागोऽस्तिइत्यभिधानः ॥ प्रथमापिंडधारभूतदमूलेषु हस्तानिमृज्यात् ॥ निमाजनचहस्तल  
 श्रस्यान्नस्योदकस्यवापरेचनाय दमेषु संश्लेषणंकारवधर्षणमित्यर्थः ॥ करलोपाभावोपिकरनिमृज्यादेवेतिधातिथिहोहरप्रभृतयः ॥ हस्तमा  
 र्जनानन्तरमाचमनं कुर्यात् ॥ एतच्चाचमनहस्तप्रक्षालनपूर्वकत्रिंशत्कर्तव्यम् ॥ ( तथाच ब्रह्मपुराणे ) ततोदमेषुविधिवत् संमार्ज्यचक्रौ  
 ततः ॥ प्रक्षाल्यजलेनाथत्रिरचम्यहरिस्मरेत् ॥ आचमनादिकंच यज्ञोपवीतिनाकर्तव्यम् ॥ अत्रत्रिराचम्येत्यभिधानात् ॥ तुलकत्रयाम  
 कस्याचमनपदार्थस्यत्रिरित्यनेनान्वयात् ॥ तुलकनवतयाऽऽचमनं मन्यन्ते शिष्टाः ततोऽत्रापितरइत्याद्यनुष्ठानम् ॥ ( पिंडपितृयज्ञेआह-  
 कात्यायनः ) अत्रापितरइत्युक्तोदङ्कुस्तआतमनादवृत्त्यामीमदन्तेतिजपतिइति ॥ आतमनात् प्राणायामात्थवायुणीडावधिउदङ्मुखआ-  
 सीत् ॥ ततोऽनुच्छ्वसन्नवपयावृत्त्यामीमदन्तेतिमनसाजपित्वोच्छ्वसदित्यर्थः ॥ अमंत्रप्राणान्निध्यैतिकर्तव्याः ॥ ( अत्रविशेषः कर्मप्रदीपे ) वामे  
 नावर्तनेकेचिदुदगतप्रक्षते ॥ आवृत्यप्राणमायम्यापितृदृन्ध्यायन्यथाहतः ॥ जपंस्तेनैवचवृत्यततःप्राणान्प्रमोचयेत् इति ॥ जपन्  
 अमीमदन्तेतिमंत्रमिति विशेषः ॥ तैनेववामेनैवभागेणप्राणान् प्रमोचयेत् ॥ उच्छ्वसदित्यर्थः ॥ ( विष्णुनाप्युक्तम् ) दत्त्वाचपिंडान्नि  
 वृताननुमंत्रयेत्ताऽत्रापितरोमादयध्वंथाभागमावृषयाध्वमिति ॥ ( स्मृत्यन्तरे ) श्वासस्यधारणपूर्वं ततःप्रत्यवनेजनम् ॥ इतिक्रम  
 विशेषस्तुज्ञेवाजमनोयिनाम् ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) दत्त्वात्रापितरश्चितपठश्चोदङ्मुखः स्थितः ॥ संचितयनितृनुष्ठान्स्मर्वांन्प्राप्स्वर  
 मूर्तिंकात् ॥ अमीमदन्तपितरइतिपश्चात्प्रजप्यठेदिति ॥ ( प्रात्यवनेजनमाह कात्यायनः ) अवनज्य पूर्ववदिति ॥ पूर्ववदित्यने-

नधूवावेनेनेतिकर्तव्यतातिद्विथेतसाचोदपात्रादिरूपादशैवपूवर्षामन्त्यथः ॥ ( स्मृत्यंतरेपि ) अत्रनेजनवाशष्टस्तुजलैर्मध्यदिनी  
यकः ॥ अनंतम् ॥ ( कात्यायनसूत्रे ) ॥ नीर्वीविस्रुत्स्यनमोवइत्यंजलिं करोतिदिति ॥ नीर्वीविस्रुत्येतिवामकुशवं रीयवस्त्रदशा  
संगेपननीतिः तां विस्रुत्य उन्मच्य विस्रंसनविधानादितः पूर्वतस्याः धारणं कर्तव्यमित्यगवम्यते ॥ नमोवइत्यंजलिं करोतीति सूत्रम् ॥ नमोवः पित  
रो रसायेत्यादिभिः षड्भिर्मंत्रैः प्रतिनमस्कारमंजलिं करोति ॥ अंजलिः करमसंपुटः ॥ अंजलिमाध्यापिडाभिमुखः पितृभ्यानमइतिनमस्कारमकु  
र्व्यादित्यर्थः ॥ तेचमंत्राः वाजसेनैयिभिः पठ्यंतैतिहेमाद्रिः ॥ ( शतथेपि ) अथनीवीमुद्धृत्यनमस्करोतिनमोवः पितर इति ॥ ततः पिंडेषु सूत्राणि  
दद्यात् ॥ ( तथाचपिंडपितृयज्ञे कात्यायनः ) ॥ एतद्वद्वत्युपास्यति सूत्राणि प्रतिपिंडमूर्णदशावावयस्युत्तरेयजमानलेमानिवाइति ॥ अस्यार्थो  
भाष्ये ॥ प्रतिपिंडं बहुवचनात्त्रीणि सूत्राणि उपास्यति पिंडानामुपरिनिदधाति ॥ ऊर्णमिषरोमाणि तन्निमित्तवस्त्रदशावा दशाः वस्त्रांचल  
सूत्राणि ॥ बहुत्वविशिष्टाः प्रतिपिंडमेतद्वः पितरो वास इत्युपास्यति ॥ अथवा यजमानस्य पंचाशत्तमवर्षादूर्ध्वं यजमानलेमानिपलिता  
नि हृदयस्थानि सूत्रस्थाने प्रतिपिंडं प्रास्यतीति ॥ ( पाराशरोपि ) पंचाशद्द्वार्षिकेयस्तुदद्याच्छोमस्वयं युक्रमिति ॥ एतच्च सूत्रादिवस्त्राभावे वस्त्र  
स्थाने दातव्यं सति तु वस्त्रे वस्त्रमेव ॥ वस्त्रार्थे सूत्रमेव वा इति वायुपुराणात् ॥ ( ब्रह्मपुराणेपि ) दद्यात्क्रेभणवासांसि दशांवाधेतवस्त्रजाम् ॥  
एतद्वः पितरो वासस्त्विति जल्पन्पृथक्पृथक् ॥ अमुकमुकगोत्रैतत्तुभ्यं वासः पठेत्ततः ॥ ( काशिकायाम् ) सर्वाभावे कुशाग्र्यसेदिति ॥  
ततस्तूष्णीं गंधादिदानम् ॥ ( तथाच छंदोगीरिशिष्टे ) गंधादीनि क्षिपेत्तूष्णीं तत आचामयेद्विजान् ॥ ( मातस्त्रेपि ) गंधघृषादिकंदद्यात्कृ  
त्वा प्रायवर्तेजनम् ॥ दीपप्रज्वालनंतद्वत्कुर्यान्पुण्यार्चनबुधः ॥ ( याज्ञवल्क्यः ) तुलसीभृंगराजंच अपामार्गशर्मतथा ॥ पितृमुद्ध

नियोदद्यात्सयातिप्रसांगंतिम् ॥ शमी शमीपत्राणि ॥ पित्रुहृदि निषिद्धाणि इत्यर्थः ॥ ( पद्मपुराणेपि ) तुलसीगंधमाघायांपतरस्तु  
 द्यमानसाः ॥ प्रयाति गरुडहस्तास्तपद् चक्रपाणिनः ॥ ( हेमाद्रौद्वयलः ) दक्षिणांसर्वभोगांश्चप्रतिपिंडं प्रदापयेत् ॥ भक्ष्या  
 नपूनानिक्षुश्चयंजनान्यशानिच ॥ दक्षिणाशब्देन ब्रजतादि ॥ ( तत्रैव शंखः ) ॥ यत्किंचित्पच्यतेगोहे भक्ष्यभोज्यविवाहितम् ॥  
 अनिवेद्यनभोक्तव्यापिंडमूलक्यंचन इति ॥ एवापिडभोगधपुष्पादि दत्त्वा वारिदानं पुनर्ब्राह्मणहस्तेषु शिवा आपः संतिन्या  
 दिभिर्मन्त्रकर्तव्यम् ॥ ( तथाचमात्स्ये ) आचतुषुनर्दद्याजलपुष्पाक्षतोदकम् ॥ ( मार्कंडेयोपि ) गंधमाल्यादिमयुक्तं  
 दद्यादाचमनंततः ॥ ( कात्यायनोपि ) आचतुषुसोदकपुष्पाक्षतान् अक्षय्यादिकचदद्यादिति ॥ इदमनुपुष्पाक्षतदानदेवपुतुस  
 व्येन पितृव्येनपसव्येनकार्यमितिकर्कभाष्ये ॥ ( छंदोगपरिशिष्टे वृद्धिश्रद्धप्रकरणे कात्यायनः ) शिवा आपःसंतिवित्संवित्युक्तं  
 पुनश्चैतःसौमनस्यमस्त्वितिचपुष्पादानंमत्तःपरम् ॥ अक्षतंचारिष्टमस्त्वित्यक्षतान् प्रतिपादयेदिति ॥ अक्षतान् यवानित्यर्थः ॥ अक्षतशब्दे  
 नयवाउच्यते इतिहेमाद्रिः ॥ अत्र अक्षतान् तंडुलानितिभौथिलरुद्रयल्लेखनमयुक्तमेव ॥ अक्षतास्तुयवाःश्रोक्ता भृष्टाधानाभवन्ति इति  
 कात्यायनवक्तव्यत ॥ (ब्रह्मपुराणेपि) आचतुषुदक्षदद्यात्पुष्पाणिसयवानिच ॥ यवोसीपिण्डेनमंत्रं श्रद्धाभक्तिसमन्वित इति ॥ यवदानंचवै  
 श्वदेविकद्विजहस्तेष्वेव ॥ पितृहस्तेषुतुति लदानमेवकार्यम् ( तथाचहेमाद्रौ ब्राह्मे ) सतिलंबुपितृवदौदत्त्वादेषुसक्षतमिति ॥  
 ( अत्रोदकादिदानेनमंत्रानहहेमाद्रौश्राद्धतत्त्वेच शातातपः ) अग्रामध्येस्थितदेवाः सर्वमनुप्रतिष्ठतम् ॥ ब्राह्मणस्यकरेन्यस्ताः शिवाओपा  
 भवंतुनः ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेपुलक्ष्मींसतिपुष्करे ॥ लक्ष्मीर्वसत्सदासोमे सौमनस्यसदास्तुमे ॥ अक्षतंचास्तुमेपुण्यं शांतिःपुष्टयृति



श्रमो॥यद्यच्छ्रयस्करं लोके तत्तदस्तुसदा मम इति ॥ हस्तदत्तानांचांषुषुषाक्षतानां कस्मिंश्चिच्छुचौशेषविप्राः प्रक्षेपकुय्युरितिहेमाद्रिः ॥  
 (मात्स्ये) दत्तवाशीःप्रतिगृह्णीयाद्विजेभ्यः ॥ अधोराःपितरःसंतु संत्विद्युक्तेषुनर्द्विजैः ॥ गोत्रं तथावर्द्धतानस्तथेयुक्तः  
 सतैःपुनः ॥ दातारोनाभिवर्द्धतामन्नचवैत्युदीरयेत् ॥ एताः सत्याशिषःसंतु संत्विद्युक्तश्चैतः पुनः इति ॥ दत्त्वा अक्षय्योदकं दत्त्वा इत्यर्थः॥  
 (कात्यायनमूत्रेपि) अधोराः पितरः संतु संत्विद्युक्ते गोत्रंनोवर्द्धतामिद्युक्ते दातारोऽभिवर्द्धतां वेदाःसंततिरेवच॥ श्रद्धाचनोमाव्यगम  
 द्रुह्येयंचनोस्त्विन्याशिषः प्रतिगृह्णीते ॥ ( मनुपराशरयाज्ञवल्क्याः ) दातारो नाभिवर्द्धतां वेदाः संततिरेवच ॥ श्रद्धाचनोमाव्यगमद्रुह्येयं  
 चनोस्त्विति इति ॥ अस्यार्थः ॥ दातारोहिरण्योदेःनोऽस्माकंकुलेऽभिवर्धतां बहवोभवंतु वेदाश्चवर्द्धताम् अध्ययनाध्ययपनतदर्थज्ञानानुष्ठान  
 द्वाराण संततिश्चपुत्रपैत्रादिपरंपरयाश्रद्धाच पित्र्ये कर्मण्यास्थानोऽस्माकं माव्यगमत् मागच्छतु देयं च हिरण्यादि बहु अपरिमितमस्माकं  
 भवत्वितिजपेदित्यर्थः ॥ ( गारुडस्कांदयोः ) अन्नचनोबहुभवेदतिथ्याश्रलभेमाह ॥ याचितारश्चनः संतु मा चयाचिष्मकचन॥एतेषामाशिषः  
 सर्वागृह्णीयात्प्रतिभाषितमिति ॥ एताआशिषःप्राङ्मुखवपवीती एवगृह्णीयात् ॥ ( तथाच हेमाद्रौ मरीचिः ) प्रदक्षिणंशिवायपोजपाशीःस्व  
 स्तिवाचनम् ॥ विप्रेषुदक्षिणादानंषट्सव्यानिप्रचक्षते इति ॥ अस्यार्थो हेमाद्रिणाकृतः ॥ प्रदक्षिणं विसर्जनानंतरं बहिर्निर्गत्यमंडलेपय्यव  
 स्थितानां ब्राह्मणानांप्रदक्षिणंकरणम् ॥ शिवायापः संत्विन्यादिमंत्रैः क्रियमाणं कर्म ॥ जपशुरुषसूक्तादि आशीश्च ॥ दातारोनाभिवर्द्धतामि  
 न्यादिकाभिप्रेता ॥ स्वस्तिवाचनं स्वस्तिभवंतो ब्रुवत्वितिवाचनम् ॥ विप्रेषुदक्षिणादानं यद्विप्रोद्देशेन दक्षिणादानंक्रियेततदत्राभि  
 मतम् ॥ नतुयत्पित्राद्युद्देशेन विप्ररूपाधिष्ठानंक्रियेत इति ॥ एतानिषट्कमाणिसव्यानि सव्यधर्मभाणि इत्यर्थः ॥ मनुविष्णुभ्यां तु विसर्ज



नानतरं दक्षिणमुखेन पितृव्यश्वकार्यामित्युक्तं तत्तु साक्षिकमात्रम् ॥ ( तथाच मातस्ये ) विमृज्य ब्राह्मणांस्तुतेषां कृत्वा प्रदक्षिणम् ॥  
 दक्षिणादिशमाक्षन् पितृव्यचेतसाग्रिक इति ॥ अत्रादप्रादुर्मुखो वाचनग्रहणं कुर्यात्तदाद्यज्ञोपवीत्येव इति हेमाद्रिः ॥  
 ( अनंतरमाह कात्यायनः ) आशिषः प्रतिगृह्य स्वधाचनीयान् सपवित्रान् कुशागस्तनीयं स्वधादाचयिष्य इति गृच्छति वाच्यतामित्य  
 नुज्ञातः पितृव्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्योऽप्रातमहेभ्योऽवृद्धप्रमातामहेभ्यश्च स्वधोच्यतामित्यस्तु स्वधेयुच्यमाने स्वधावा  
 चनीयेष्वपानिषिचति उर्जमिति ॥ अस्यार्थः ॥ ( अत्र सांप्रदायिका व्याचक्षते ) ॥ स्वधावाचनार्थमुपकल्पिताः कुशाः  
 स्वधावाचनीयाः पवित्राण्यास्तनीयं पिंडानामुपरि दक्षिणाश्रान् तेषु पिंडावनेन पात्रस्थितमुदकं दक्षिणकरे गृहीत्वा उर्जं  
 वहतीरित्यादिकं मंत्रमुच्चार्य पितृतीर्थेन निषेचनीयमित्यर्थः ॥ ( पराशरपि ) उर्जं वहतीरुच्चार्य जलं पिंडेषु दापयेदिति ॥ ( अनं  
 तरमर्घपात्रोत्तानीकरणं दक्षिणादानं चाह कात्यायनः ) उत्तानपात्रकृत्वा यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् इति ॥ ( पराशरपि ) न्युञ्ज  
 पिंडार्घपात्राणि कृत्वा उत्तानानि संस्रवान् ॥ दक्षिणां दद्यादित्यर्थः ॥ ( नागरखंडेपि ) उत्तानमर्घपात्रं त्रुक्त्वा दद्याच्च दक्षिणाम् ॥ हिरण्यं  
 देवतानां च पितॄणां रजतं तथा इति ॥ ( पात्रचालने विशेषमाह जातूकर्ण्यः ) पात्राणि चालयेच्छ्रद्धेस्वयं शिष्योऽथ वा सुतः ॥ नस्त्रीभिर्न च बा  
 लेन न सज्जात्याकथं चन ॥ ( प्रचेतास्तु ) श्रद्धेभोजनपात्राणि स्वयमेव प्रचालयेदिति वदति ॥ ( दक्षिणादाने विशेषमाह बृहस्पतिः ) तस्मा  
 त्पणं कर्किणं वा फलं पुष्पं मथापि वा ॥ प्रदद्यादक्षिणां श्रद्धेतया ससफलं भवेत् इति ॥ ( दक्षिणादाने सव्यापसव्ययोर्विकल्पमाह हेमाद्रौ जम  
 दग्निः ) सर्वकर्मपसव्येन दक्षिणादानं वर्जितमिति ॥ अनेन दक्षिणायां सव्यमुक्तम् ॥ ( अपसव्यपक्षापि तत्र वेतेनातः ) अपसव्यं तु तत्राह मातस्यो

हिमगवान्मनोः इति ॥ अनयोःपक्षयोर्द्वितीयःपक्षयुक्तः पेतृकृत्वात् ॥ पितृणामपसव्येनदद्याद्वाप्येतुदक्षिणामितिस्मृत्यंतरावक्यात् ॥ अप  
 सव्येतुत्राहमस्त्योहिमगवान्मनोः इतिविशेषवाक्याच्च ॥ ( माघवीयेपि ) पित्रुद्देशेनदक्षिणादानंप्राचीनावीतिनकार्यमिति ॥ अथदक्षिणा  
 दानानंतरमप्याह ( पिंडपितृद्वेजेकात्यायनः ) अवधायवाजिग्रथितयजमानः उल्लुक्ससकृदाच्छिन्नान्यन्नाविति ॥ ( अस्यार्थो भाष्ये ) पिंडानध्व  
 शुःस्थाल्याप्रान्यवधायततोयजमानः सव्यंकृत्वा पिंडावस्थालीस्थानवजिग्रथि अवघ्राणकरोति पूर्वसकृदाच्छिन्नानि यानिरेखायामास्तृता  
 न्यभूवन् तान्यग्नौप्राक्षिप्य उल्लुक्कंचतत्रैवप्राक्षिपति इत्यर्थः ॥ ( अथविसर्जनमाह कात्यायनः ) विधेदेवाः प्रीयंतामितिदेवजापित्वावाजे  
 वाज इति विमृज्येति ॥ ( याज्ञवल्क्योपि ) वाजेवाजइतिप्रातः पितृपूर्वविसर्जयेत् ॥ ( प्रचेताः ) विमृजेद्भक्तिसंयुक्तःसीमांतचाप्यलुघ्र  
 जेदिति॥सीमांतस्वगृहसीमापर्यंतमित्यर्थः ॥ ( कात्यायनमूत्रेपि ) आमावाजस्येत्यनुब्रूव्यप्रदक्षिणीकृत्योपविशेत् ॥ ( विष्णुधर्मोत्तरेपि )  
 पश्चाद्विसर्जयेदेवाल्बूषतमहान्द्रिजान् ॥ मातामहानामप्येवं सहदेवैःक्रमःस्मृत इति ॥ एतद्विसर्जनंतुजमदक्षिनासव्येनोक्तम् ॥ युक्तमपिस  
 व्येनैव ॥ परंचशिष्टानाचरंतिपूर्वमपसव्येनवाहनविधानात् अपसव्येनैवविसर्जनंकुर्वति॥अत्रशिष्टाचारएवयामाणिक इति ॥ अनंतदेवता  
 भ्य इतित्रिजपः कर्त्तव्यः ॥ ( तथाच ब्राह्मे ) देवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यएवचानमःस्याहाथैरुवधायैनित्यमेवमनोमनः ॥ आद्यावसाने  
 श्राद्धस्यत्रिरावृत्त्याजपेत्सदा ॥ पिंडनिर्वपणेपिंडानादूर्वमित्यर्थः ॥ ततोदीपनिर्वाणपणम् ॥ (तदु  
 त्तदेवलेन ) निर्वृत्तपितृमंधेतुदपंप्रच्छदपाणिना ॥ आचम्यपाणीप्रक्षाल्यज्ञातीच्छेषभोजयेदिति ॥ प्रच्छद्वानिर्वाप्यइत्यर्थः॥अपसव्येन  
 दीपनिर्वाणथेदक्षिणामुख इतिश्राद्धकलाकारः ॥ ( स्मृत्यंतरेपि ) दीपंहस्तेननिर्वाप्य पवित्रत्रयागपूर्वकम् ॥ पादशुद्धिद्विद्विराचामिदु

च्छिष्टेद्वास्तनतः ॥ तथा ॥ अपसव्यतः कृत्वा दीपनिर्वाणचरेत् ॥ ततः सव्येन हस्तादिप्रक्षाल्याचार्य यत्न  
तः ॥ न्यूनादिदोषशान्ते तु सांगकर्मप्रवृत्तये ॥ स्मृत्वा संप्राथयेद्दिणुं यथाश्रुतिनिदर्शनम् ॥ ततः श्राद्धीयवस्तूनि  
ब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ पिंडादिकजलादे तु प्रक्षिपेद्विष्टसिद्धये इति ॥ अथ पिंडप्रातिपत्तयः ॥ (तत्र हेमाद्रौ देवलः) ततः कर्मणि  
निर्वृतेतर्वापिंडास्तद्वनतम् ॥ ब्राह्मणोऽशिरजोर्वाभक्षयदभुवाक्षिपेत् ॥ (याज्ञवल्क्योपि) पिंडास्तुगोजविप्रभ्योदद्याद्वा  
जलेपिवा ॥ प्रक्षिपेत्सन्धिवेषुद्वाजोच्छिष्टमजयेत् इति ॥ जले अगाधे जले प्रक्षिपेदित्यर्थः ॥ सन्धुविप्रभुभोजनदशावस्थितेषुद्वा  
जोच्छिष्टमजयेत् ॥ नोद्वासयेदित्यर्थः ॥ (मनुस्मृतावपि) गांविप्रमजमाद्देवाप्रशयेदभुवाक्षिपेत् ॥ वयोभिः स्वादयन्त्यन्ये प्रक्षिपन्त्यन  
लेषुवा ॥ (मात्स्येपि) पिंडास्तुगोजविप्रभ्योदद्यादनेजलेपिवा ॥ विप्रातिवाथविकिंद्याभिरथवाशयेदिति ॥ पुत्रार्थमध्यमपिंडं  
पत्न्यैदद्यात् ॥ (तथाच वायुपुराणे) पत्न्यैप्रजार्थीदद्यात्तुमध्यममंत्रपूवकमिति ॥ (मंत्रस्तुमस्त्येनदर्शतः) आधत्तापितरोगभमंत्रः संतान  
वर्द्धन इति। कात्यायनमूत्रे आधत्तेति मध्यमपिंडं पत्नीप्राश्रितपुत्रकामा इति ॥ अस्यार्थभाष्ये ॥ गर्भग्रहणयोग्याऋतुक्षतापत्नीमध्यमपिंडप्रा  
श्रति । पत्नीबहुत्वपिंडविभागमनाश्रितश्चातिघृतस्वामी ॥ (पाराशरः) ॥ पिंडानमध्यमपिंडं पितृभ्यामध्यमपिंडं प्राशयेत्पुत्रकामा तुभा  
यार्तं श्राद्धदस्य च ॥ सुषवापितरोगज्ञापुत्रकामाद्विजाज्ञया ॥ आधत्तापितरोगभ्याहृत्यैद्वाजलेतयः ॥ महारोगगृहीतावातद्रोगोपशमाय च ॥  
घृतं मे पितरोगमित्युक्त्वा प्राशयेत्तान् ॥ अत्रान्यसुहुताशेषे हि देविजाज्ञया अजायवाप्रदद्याच्च आद्विप्रविसर्जनम् ॥ (मनुस्मृतौ)  
पतिव्रतार्थमपत्नीपितृपूजनतत्परा ॥ मध्यमंतुतः पिंडमद्यात्सम्यक्कुतार्थिनी ॥ आयुष्मंतसुतवद्वाशोमेधासमान्वितम् ॥ धनवंतं

जावंतर्धामिकंसात्त्विकं तथा इति ॥ रागाभिततेनप्रथमोऽब्राह्मकामेनतुचरमः पिंडोभक्षणीयः ॥ ( तथाच हारीतः )  
 आयुर्दुःप्रथमः पिंडो द्वितीयः पुनरुः स्मृतः ॥ ऋद्धिदस्तुतयोर्वै तस्मान्मध्यमाशयेत् ॥ पुत्रकामायजनपत्नीतिशेषः ॥ ( ब्रह्मांड  
 पुराणे ) पिंडमग्नौसदादद्याद्भोगार्थीप्रियमनः ॥ पत्न्यै प्रजार्थाद्व्याद्वैमध्यममत्रपूर्वकम् ॥ उत्तमांगतिमन्विच्छन् गोभ्यानिन्यग्रयच्छति ॥  
 आज्ञांप्राज्ञांशः कीर्तिमप्सुपिंडंप्रवेशयेत् ॥ प्रार्थयन्दीर्घमायुश्च वायसेभ्यः प्रयच्छति ॥ आकाशंगमयेदमुं स्थितोवादक्षिणामुखः ॥ पि  
 ण्णांस्थानमाकाशं दक्षिणादिक्तथैवच इति ॥ मध्यमपिंडप्रारणंचकेवलकाम्यमेव नान्त्यमितिद्वैतनिर्णये ॥ (पिंडोपवातेहमाद्रौ देवलः)  
 श्वश्रृगालवरैः पिंडः स्पृष्टोभिन्नः प्रमादतः ॥ मार्जारसूषकैः स्पृष्टश्चांडालपतितादिभिः ॥ कर्तुराण्युच्यनाशः स्यात्प्रेतस्तनोपसर्पति ॥ (तदो  
 षनिवृत्तिमाह जातुकर्ण्यः) तदोषपरिहारार्थप्राजापत्यंप्रकल्पयेत् ॥ पुनः स्नात्वातदाकर्तापिंडकुशं दद्याद्विवि इति ॥ पाकंतरणेतेनपा  
 केनचार्पिंडदानमात्रं पुनः कार्यनसर्वश्राद्धवृत्तिरिति सवसमतामतिकमलाकरप्रभृतयः ॥ ( अथवैश्वदेयादिं ) तत्रतावैश्वदेवकालनिर्णयः ॥  
 ( हेमाद्रौ ब्रह्माण्डे ) वैश्वदेवाहुतीरनाववागब्राह्मणभोजनात् ॥ जुहुयाद्धूतयज्ञादि श्राद्धं कृत्वा तु तस्मृतम् इति ॥ अर्वागब्राह्मणभोज  
 जनात् इत्यनेनाग्नौ करणानंतरं वैश्वदेव जुहति जुहुयादित्यर्थः ॥ श्राद्धं कृत्वा भूतयज्ञादिस्मृतम् इत्यनेन भूतयज्ञस्यैव श्राद्धं ते कर्तव्यतेति कृतार्था  
 वैश्वदेवाहुत्यनंतरमेव बलिहरणकार्यमिति दर्शितमिति स्मृतिचंद्रिकाकारः ॥ अयमेकोऽनश्विकवैश्वदेवस्य कालः ॥ द्वितीयोऽपि ( भवि  
 ष्यपुराणे ) पितृन्संतर्प्य विधिवद्बलिं दद्याद्विधानतः ॥ वस्वदेवंततः कुर्यात्पश्चाद्ब्राह्मणवाचनम् ॥ बलिशब्दोपितत्रैव व्याख्यातः ॥ योऽग्निद  
 ग्धातुमत्रेण भूमौ यात्राक्षिपेद्बधः ॥ जानीहि तं बलिं वारं श्राद्धं कर्मणि सर्वदेति ॥ अनेन विकिरसंज्ञकबलिप्रदानानंतरं स्वस्तिवाचनात्पूर्वं वैश्वदेवं

कुर्व्यादिदुष्टंभवति ॥ अयद्वितीयः कालः ॥ अथ तृतीयोपि स्मृतिपुराणादुक्तः ॥ ( तत्राह मनुः ) उच्छेषणंतुतिष्ठेयावद्विप्राप्तस-  
 र्जिताः ॥ ततोऽहर्विल्लुक्कुर्यादितिधर्मव्यवस्थितः ॥ ( अस्याथमेषातिथिनाकृतः ) भुञ्जानेषु द्विजेषु यदुज्यविकरणपात्रलभ्यंयु-  
 चपतितमंत्रस्माद्देशात्तान्मन्त्रमाष्टव्ययावद्ब्राह्मणाननिष्क्रान्ताः ॥ ततोनिष्पन्नैश्श्राद्धकर्मणि अनंतरैर्वैदवहमान्बहिःकाकातिष्ठ्यादि-  
 भोजनं च कर्तव्यमित्यर्थः ॥ ( अयेमावार्थस्तस्यपुराणे ) उच्छेषणंतुतिष्ठेयावद्विप्राप्तसर्जिताः ॥ वैश्वदेवतःकुर्व्यान्निवृत्ते-  
 पितृकर्मणि ॥ ( माधवीये पौठनासिः ) ॥ श्राद्धनिर्वत्यविधेद्वैश्वदेवादिंकृतः ॥ कुर्याद्विज्ञातयेद्याहंतकारादिकं तथा इति ॥  
 निष्प्रक्रानांकातीयानांश्राद्धतैस्वैश्वदेवैतिकाशिनथप्रभृतयः ॥ सर्वेषांश्राद्धतैस्वैश्वदेवादिंकर्मतः कुर्यान्म्राधिप इति ॥ अतोऽनप्रिकर्षक-  
 ( श्राद्धतत्त्वे भविष्यपुराणमपि ) कृत्वाश्राद्धमहवहोब्राह्मणाश्चविमृज्यच ॥ वैश्वदेवादिंकर्मतः कुर्यान्म्राधिप इति ॥ अतोऽनप्रिकर्षक-  
 स्य वैश्वदेवैस्त्रयःकालाः ॥ एकोऽत्रौकरणानंतरम् अन्योविक्रिादुपरि तृतीयो ब्राह्मणविसर्जनत्पश्चादिति ॥ एतत्सर्वंतुसपात्रकविष-  
 यम् ॥ आपानकेतुश्राद्धति ब्राह्मणभोजनात् प्रागेव ॥ साधिकानंतुसर्वत्रश्राद्धत् पूर्वमेव वैश्वदेवः ॥ इति वैश्वदेवकालनिर्णयः ॥ ( अथ  
 वैश्वदेवकरणप्रकारो माकंड्यपुराणे ) स्वाहातास्ताजलेवामाकुर्व्यात्पंचाहुतीःकृमात् ॥ ब्रह्मजपतिर्ब्रह्माःकथ्यपनुमतिस्तथा ॥ १ ॥  
 चतुर्थतैर्जलिस्त्वा वैश्वदेवकालिचरेत् ॥ पञ्चन्यभापःपृथिवी धातापिचविपूर्वगः॥२॥ चतुर्थायुःप्राज्यवाची प्रतीचीचापुदीच्यपि ॥ ब्रह्मान्त-  
 रिक्षमूर्ग्यश्चवैश्वेवास्ततः परम् ॥ ३ ॥ विश्वेभूताद्याश्चापि भूतानांचपतिस्तथा ॥ अपसव्येनसतिलं पितृभ्यश्चस्वधानमः ॥ ४ ॥  
 सनकादिसप्तमर्त्यैर्योहंतंकंठोपवीतवान् ॥ यद्भूततंचसव्येनजलनिर्णेजनमः ॥ ५ ॥ दद्यात्काकाश्चचांडालाः पतिताःपापसंगिनः ॥

ततः कीटपतंगाश्च गायः शनैर्नितः परम् ॥ ६ ॥ चतुर्थतानुपादाय नमोऽनक्रमतः पठेत् इति ॥ उच्छिष्टमार्जनानंतरं वैश्वदेवकृत्वा  
शेषमन्नं बांधवैः सह भुंजति ॥ ( तथाच मास्यपुराणे ) ततस्तु वैश्वदेवांतं समृत्युत बांधवः ॥ भुंजतीति थिसंयुक्तः सर्वपितृनिषेवितामिति ॥  
( ब्रह्मपुराणे ) एवं सम्यग्गृहस्थेन देवतः पितरस्तथा ॥ संप्रुत्याहव्यकव्याभ्यामग्नेनातिथिबांधवाः ॥ भूतानि भृत्या विकलाः पशुप  
क्षिपिपालिकाः ॥ भिक्षवेयाचमानाश्चैवान्येयाचकागृहे इति ॥ विकलाः अंधबधिरमूकादय इत्यर्थः ॥ ( हेमाद्रौ ) बन्दिमागधमूताश्च  
तौर्यत्रिकविदस्तथा ॥ अलब्धलाभाः श्राद्धे न शयंति भद्रशः ॥ तस्मात्तपि विभक्तव्याः सकलसंविभज्यच इति ॥ तौर्यत्रिकं नृत्यगी  
तवाद्यानि ॥ अलब्धलाभाः अप्रातन्ना इत्यर्थः ॥ एतत्क्षयाश्राद्धपरमिति वृद्धाः ॥ क्षयाहे धूरिभोजनमितिकौर्मात् ॥ ( शेषभोजनकृते दोष  
माह देवलः ) श्राद्धकृत्वा पुन्यमात्यानि भुङ्क्तेऽथ कदाचन ॥ देवाहव्यं न गृह्णाति कव्यानि पितरस्तथा इति ॥ ( अतएव श्राद्धदिने उपवासनिषेध  
माह व्यासः ) आदित्यऽहनि संक्रांतं वासितैकादशीग्रहे ॥ व्यतीपाते कृते श्राद्धे पुत्रानोपवसेद्गृही ॥ ( कात्यायनव्यासौ ) उपवासोऽयदानीत्यः  
श्राद्धं नीमितं कर्तव्यम् ॥ उपवासं तदकुप्यदाप्रायपितृसंवितम् इति ॥ ( श्राद्धशेषान्नभोजनस्य क्वचिन्निषेधमाह मार्कंडेयः ) पित्रादीनाम  
थान्येषां श्राद्धशेषान्नभोजनम् ॥ व्रतिनां विधवानां च यतीनां च विगर्हितम् ॥ ( अथ भोजनानंतरं दातुं भोक्तृनियममाह बृहस्पतिः ) तानि शां  
न्नक्षचारीत्या च्छूदच्छूदच्छूदम् ॥ अन्यथा वर्तमानैर्तैस्त्यातां निरयामीनौ ॥ ( मात्स्येऽपि ) पुनर्भोजनमध्वानं यानयायामैश्वर्यम् ॥  
श्राद्धच्छूदभोक्तृचर्मसमर्पद्विजयेत् ॥ ( जाबालिः ) तां ब्रूलं तं कष्टं वसेह स्नानभोजनम् ॥ रत्यौषधिपानं च श्राद्धकर्त्ता विजयेत् ॥  
( मात्स्ये ) एतच्चानुपनीतोऽपि कुप्यं तस्युपवसेत् ॥ श्राद्धसाधारणं नमस्पर्कमाफलप्रदम् ॥ भार्याविरहितोऽथेतत्प्रवासस्थोऽपि भक्तिमान् ॥

शुद्धोप्यमंत्रवन्दुयद्देनेनविधिनानृ ॥ इति गौडीयश्राद्धप्रकारो पर्वणश्राद्धप्रयोगनिर्णयः ॥ अथैकोद्दिष्टप्रयोगः ॥ ( तत्र कात्यायनः )  
 अथैकोद्दिष्टमेकपात्रमेकोऽव्ययैकपिण्डनावहनं नाशौकरणं नात्रविश्वेदेवाः स्वादितमितितृप्तिप्रश्रः सुस्वादितमित्यनुज्ञानोपतिष्ठतामित्यक्ष  
 व्यस्थानेअभिरम्यतामितिविसर्गे इति ॥ ( यज्ञवल्क्योपि ) एकोद्दिष्टं दैवहानमेकाध्यैकपात्रकम् ॥ आवाहनाग्नौकरणरहितं  
 ह्यपसव्यवत् ॥ उपतिष्ठतामक्षय्यस्थाने विप्रविसर्जने अभिरम्यतामितिवेदुल्लेभिताः स्मह ॥ अस्यार्थः-एकोद्दिष्टम् एक  
 उद्दिष्टोयस्मिन् ॥ श्राद्धेदेकोद्दिष्टमितिकर्मनामधेयं दैवरहितं विश्वदैवरहितं एकाध्यपात्रमेकदभपवित्रकं च आवाहना  
 शौकरणहोमेनचरहितम् अपसव्यवत् प्राचीनावीतब्रह्मस्रवत् तत्रक्षय्यस्थाने उपतिष्ठतामितिवेदत् ॥ विप्रविसर्जने कर्तव्ये  
 वाजोज इतिजयान्तरं अभिरम्यतामितिद्वयात् तेचाभिज्ञाः स्मृति ब्रूयुः ॥ शेषपावणवादित्यर्थः ॥ इत्येकोद्दिष्टम् ॥  
 अथ पर्वणविकृतिरूपश्राद्धश्राद्धनिर्णयः ॥ तत्रतावदृद्धिर्नामपुत्रजन्मादिनिमित्तोपलक्षितः कालः ॥ ( तथाचेहमाद्रौ वसिष्ठः )  
 पुत्रजन्मविवाहदौ वृद्धिश्राद्धशुक्लतम् ॥ ( श्राद्धतत्वेमात्स्येच ) अग्नप्राशोचसीमते पुत्रोत्पत्तिनिमित्तके ॥ पुंसवेचनिषे  
 केच नववेश्मप्रवेशने ॥ वेदव्रतजलादीनांप्रतिष्ठानतथैवच ॥ तीर्थयात्रावृणोत्सर्गे वृद्धिश्राद्धं प्रकीर्तितम् ॥ ( ब्रह्मपुराणपि ) जन्म  
 न्यथोपनयने विवाहेपुत्रकस्यच ॥ पितृश्रादीमुत्साम्नामतयेद्विधिपूर्वकम् ॥ देवव्रतेपुत्राधानयज्ञपुत्रमनेषुच ॥ नवाग्नभोजनेस्नाने  
 उदयाःप्रथमात्तवे ॥ देवारामतडागादिप्रातिष्ठामुत्सवेषुच ॥ राज्याभिषेकेबालाग्नभोजने वृद्धिसंज्ञकम् ॥ वनस्थाध्वश्रमच्छन्  
 पूर्वेषुसत्यपश्रवा ॥ पितृन्मूर्खोक्ताविधिनान्तयेत्कर्मसिद्धये ॥ ( हेमाद्रौ जाबालिः ) यज्ञोद्गाहप्रातिष्ठामु मेसलान्वधमोक्षयोः ॥ पुत्र

जन्मवृषोत्सर्गे वृद्धिश्राद्धसमाचरोदिति ॥ इदंचावश्यकम् ॥ बृद्धौ न तर्पितायै पितरो गृहमधिभिः ॥ तद्धीनमफलज्ञेयमासुराविधिरेवमः ॥  
इति शतातपोक्तेः ॥ ( अत्र श्राद्धत्रयं स एव आह ) मातृश्राद्धं तु पूर्वस्यापि तृणांतदन्तरम् ॥ ततो मातामहानांच वृद्धौ श्राद्धत्रयं स्मृतम् ॥  
( तत्कालमाह पृथ्वीचंद्रादये गार्ग्यः ) मातृश्राद्धं तु पूर्वेषुः कर्माहं निरूपेतकम् ॥ मातामहं चोत्तरेषु वृद्धौ श्राद्धत्रयं स्मृतम् ॥ ( अत्राप्य  
शकौ स एव ) ॥ पृथग्दिनेष्वश्वेदकस्मिन् पूर्ववासरे ॥ श्राद्धत्रयं प्रकुर्वीत वैधेदं वंदंतु त्रिकम् ॥ ( वृद्धमनुरपि ) ॥ अलाभो भिन्नकाला  
नां नां दीश्राद्धत्रयं बुधः ॥ पूर्वेषु वृद्धौ प्रकुर्वीत पूर्वान्ति मातृपूर्वकमिति ॥ पूर्वोऽह्नि त्रिसाद्धप्रहरपरः ॥ एतच्छ्राद्धं तु मातृपूजापूर्वकं कार्यमित्यर्थः ॥  
( कर्मपुराणेपि ) पूर्वतु मातरः पूज्या भक्त्या वैसगणे श्वराः ॥ ( कात्यायनोपि ) कर्मादिषु तस्येषु मातरः सगणाधिपाः ॥ पूजनीयाः प्रयत्ने  
न पूजिताः पूजयंति ताः ॥ प्रतिमासु च शुभ्रासु लिखिता वा पादादिषु ॥ अपि वक्षत एंजेषु नैवैश्वर्यमर्थः ॥ कुड्यलघ्नां वसाधारां सप्तधारां  
घृतनतु ॥ कारयेत्पंचधारां वानिनी चानचोच्छ्रिताम् ॥ आयुष्याणि च शांत्यर्थं ज्ञातव्रतसमाहित इति ॥ आयुष्याणि आयुष्यवर्द्धन्य  
मित्यादि मंत्रत्रयम् ॥ ( एतन्मातृपूजनस्य कारणे भविष्यपुराणे दोषो दर्शितः ) ॥ अकृत्वा मातृयज्ञं तु यः श्राद्धं परिषेपेत् ॥ तास्तस्य क्रोध  
संज्ञा हि संकुर्वति दारुणम् ॥ ( तासां नामान्याह कर्मप्रदीपे कात्यायनः ) ॥ गौरिपद्माश्च भीमघासा वित्री विजया जया देवसेना स्वधा स्वाहा  
मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मदेवता साह ॥ विनाथकेन सहिताः पूजनीयाः प्रयत्नत इति ॥ ( श्राद्धनुक्रमो मत्स्य  
पुराणे ) उत्सवानंदसंताने यज्ञोद्वाहादिमंगले ॥ मातरः प्रथमं पूज्याः पितरस्तदन्तरम् ॥ ततो मातामहाः पूज्या विश्वेवास्तथैव च ॥  
( शातातपवसिष्ठवपि ) मातृभ्यः कर्षयेत्पूर्वं पितृभ्यस्तदन्तरम् ॥ ततो मातामहानांच कुर्याच्छ्राद्धं क्रमेण वै इति ॥ कात्यायनेन तु



अयंश्राद्धः षट्पुरुषात्मकः कथितः ॥ तत्तुच्छदोगानामेव न्तु सर्वेषाम् इति ॥ केचित् मातामह्यादित्रिदैवत्यंचतुर्थमपिश्राद्धमाचक्षते ॥ तन्तु  
 शाखान्तरविषयम् ॥ (ब्राह्मणसंख्या मार्कण्डेयपुराणे) युगमाश्चात्रद्विजाः कायार्थेऽप्येज्याश्चप्रदक्षिणम् ॥ (वृद्धशततर्पाणि) त्रिष्वप्येते  
 बुभुगमास्तु ब्राह्मणान्वितः शुचिरिति ॥ त्रिभुमातृपितृभूतामहश्राद्धेष्वित्यर्थः ॥ (विष्णुपुराणे) युगमास्तुप्राङ्मुखान्विप्रान् भोजये  
 न्मनुजैः ॥ (हेमाद्रौ छागलेयः) एकैकस्यतुवर्गस्य द्वौद्वौविप्रौसमचयेत् ॥ वैश्वदेवतथाद्वौच नप्रसज्येतविस्तरं इति ॥ एवं चात्राष्टौ  
 ब्राह्मणाःसंप्रदाते यकश्चिदतिथिरागच्छेत् सन्वभोपितत्र भोजनीय इति हेमाद्रिप्रभृतयः ॥ (अत्रविशेषः कात्यायनेनदर्शितः )  
 आभ्युदयिके प्रदक्षिणार्थमुपचारः ॥ पूर्वोक्ते पित्र्यग्रजवर्ज्यजपकृज्जवोद्भर्गयवैस्तिलार्थाः संपन्नमितितृप्तिप्रश्नः सुसंपन्नमितिरे ब्रूयु  
 र्दधिबदराक्षतमिश्राः पिंडा नंदीमुखान् पितृनावाहयिष्य इति पृच्छत्यवाहयेत्यनुज्ञातौ नंदीमुखाः पितरः ग्रीयतामित्यक्षयस्थाने  
 नंदीमुखान्विनितृन् वाचयिष्य इतिपृच्छति वाच्यतामित्यनुज्ञातौनंदीमुखाःपितरो भूतामहाश्च ग्रीयतामितिनस्वर्धाप्रयुज्यंजीतयुगमानाशये  
 दत्र इति ॥ (हेमाद्रौ शततपः) कर्तव्यंचाभ्युदयिकंश्राद्धमभ्युदयार्थिना ॥ सव्येनचोपधेतेनऋतुर्दुर्भक्षधर्मता ॥ पितृणांरूपमास्थायदेवा  
 अन्नसमश्नुते ॥ तस्मात्सव्येनदत्तव्यंषुद्धिश्राद्धेतुनित्यशः ॥ यथैवोपचरेद्देवांस्तथाषुद्धैःपितृनपि ॥ (कात्यायनोऽपि) सदापरिचरेद्भक्त्या  
 पितृनप्यत्रदेवकृत् ॥ निपातेनहिसव्यस्यजानुनोविदतेकचित् ॥ नात्रापसव्यकरणंनिष्यतार्थमिष्यते ॥ मधुमाध्वितयस्तत्रत्रिजपः श्रेय  
 इच्छता ॥ गायत्र्यन्तरःसोऽत्रमधुपत्रंविजितः ॥ नचाश्रमुजपेदत्रकदाचित्पितृसंहिताम् ॥ अन्यएवजपः कार्यःसोमसामादिकःशुभः ॥  
 यस्तस्याविकिरोऽन्नस्य तिलवानयववांस्तथा ॥ उच्छिष्टमग्निधैयोऽत्रतृप्तुषुविपरीतक इति ॥ वैश्वदेविकः यववान् पित्र्यः तिलवान्

विपरीतकः सर्वापियवशानित्यर्थः ॥ अनेनवैश्वदेविके येधर्मास्तेसर्वेष्वयत्रकर्तव्यानिपित्र्यश्राद्धधर्माइत्युक्तंभवति ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) स्वाहा  
 शब्दंप्रयुंजीतस्वधास्थानेचवुद्धिमान् ॥ वृद्धिश्राद्धे सदासर्वं यज्ञसूत्रंचकारयेत् ॥ कुशस्थानेचतूर्वाःस्युर्मगलस्याभिवृद्धये ॥ ( हेमाद्रौ प्र  
 चेताः ) नजपेत्यैतद्वृत्तंजप्यनमस्तत्रदापयेत् इति ॥ अत्रजप्यशब्दात् यामुंजानेषुद्विजेषुपितृलिङ्गकानामंत्राणांजपःसएवनिषिद्धयते नतूश  
 तस्त्वेत्यादिप्राधान्यानुष्ठानकारणीभूतानामपि॥(अतएव जातृकथ्यः ) पितृलिङ्गेन मंत्रेण यत्कर्ममुनिभिः स्मृतम् ॥ तेनैवतद्विधातव्यमंत्रम  
 कृतयतः ॥ ( कात्यायनः ) अतःपरंप्रवक्ष्यामि विशेषइहयामेवत् ॥ प्रातराभितानविभ्रात् युगमुभयतस्तथा ॥ उपवेश्य कुशानुदद्याद्  
 जुनेवहिपातितान् इति ॥ उभयतः द्वेपित्र्येच इत्यर्थः ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) विभ्रात्प्रदक्षिणावत्प्राङ्मुखानुपवेशयेत् ॥ ( छागलेयपि ) सर्वो  
 नेवतुतानविभ्रात्प्राङ्मुखानुपवेशयेत् ॥ प्राङ्मुखानुदङ्मुखानुपवेशयेत् ॥ ( आवाहनप्रकारश्चब्राह्मेदर्शितः ) नांदीमुखानुपितृभक्त्या  
 सांजलिश्चसमाह्वयेत् ॥ पठेत्यवित्रमंत्रतुविश्वेदेवासआगतइति ॥ अत्राभ्यर्चनंचद्वयोर्द्वयोर्विप्रयोर्हस्तौभेलयित्वादद्यात् ( तथाच पद्मपुराणे )  
 दद्याद्दध्यर्च्योर्द्वयोरिति ॥ अर्घ्यदानानंतरं गंधपुष्पादिकंदेयमितिहेमाद्रौ ॥ अत्राशौकरांसर्वेनएवदेविकवत्तर्धमन्वात् ॥ ( पिंडदानेविशेषो  
 भविष्ये ) एवंभुक्तेषुविप्रेषु दद्यात्पिंडान्समाहितः॥दध्यक्षतैर्विभिथास्तुबदौश्चखगाधिप ॥ ( विष्णुपुराणेपि ) दध्यक्षतैः सबदौः प्राङ्मुखो  
 दङ्मुखोपिवा ॥ देवतीर्थेनवैपिंडान् दद्यात्कामेनैकनृप इति ॥ कामेन इच्छया इच्छामावेतुनदद्यात् ॥ ( पिंडदानकरणाकरणयोर्व्यवस्था  
 उक्ता भविष्यपुराणे ) पिंडनिर्वपणंकुर्यान्नैवकुर्यान्नराधिप ॥ वृद्धिश्राद्धेसहाहो कुलधर्ममवेक्ष्यवै ॥ अनेनयोषांकुलेवृद्धपरंपरयावृद्धि  
 र्द्वेपिंडदानमनुष्ठीयते तैः कर्तव्यं येषांकुलेनानुष्ठीयते तेनकर्तव्यमिति व्यवस्थादर्शिता ॥ इयंचव्यवस्था निराशिकानामेव ॥ साश्रिकैस्तु

सर्वदकर्तव्यमिति ॥ तथाच ब्रह्मपुराणे ) योऽत्रैतुविद्यमानोऽपि वृद्धोऽपि डातननिर्वपेत् ॥ पतन्ति पितरस्तस्य नरकेऽमुतुपच्यते इति ॥ ( अत्रपिण्डदानायप्रदेशविशेषमाह शाततपः ) प्रदद्यात्प्राङ्मुखोऽपि ण्डान्वृद्धौ नाम्नासवाह्यतः ॥ सः श्राद्धकर्त्ता ॥ बाहृतः भोजनशालाया बहिः ॥ नतृच्छिद्यसमीप इत्यर्थः ॥ ( हेमाद्रौ ) शेषमन्नमुज्ञाप्य वैश्वदेवक्रियांततः ॥ श्राद्धाहिश्राद्धशेषेण वैश्वदेवंसमाचरेत् इति ॥ अत्र प्रागुक्तविशेषातिरिक्तधमजतपावर्णवत् कर्तव्यम् ॥ ( तथाच विष्णुधर्मोत्तरे ) वृद्धैः समचर्येद्विद्वान्निनयनदीमुखान्पितॄन् ॥ संपादितोविशेषतु शेषपावर्णवद्भवेत् ॥ ( पद्मपुराणे ) एवंशूद्रोऽपि सामान्यं वृद्धिश्राद्धंतुसर्वदा ॥ नमस्कारेणमत्रेण कुर्यादानादिबैश्वयः ॥ इतिवृद्धिश्राद्धप्रयोगः ॥ अथानित्यश्राद्धप्रयोगः ॥ ( तत्र याज्ञवल्क्यः ) कुर्याद्दह्रहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेनवा ॥ तृतीयवैपितॄणांतु आत्मनःश्रेय इच्छता ॥ ( कूर्मपुराणे ) एकंतुभोजयेद्विप्रं पितृनुदृश्यप्रितॄन् ॥ नित्यश्राद्धंतुदृश्यपितृयज्ञागतिप्रदः ॥ ( कात्यायनोऽपि ) एकमप्यशयेद्विप्रं पितृयज्ञार्थसिद्धये ॥ ( मनुस्मृतावपि ) दद्याद्दह्रहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेनवा ॥ पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यस्तृप्तिमाहर्न् ॥ कुर्याद्दह्रहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेनवा ॥ पितृनुदृश्यविप्रांस्तु भोजयेद्विप्रमेववा इति ॥ एकस्यापि विप्रस्य सन्निहितालाभे भोजनपर्याप्तान्नासंभवाविषयेच कात्यायनेनोक्तम् ॥ अर्द्धेनान्तिचेदन्योभोक्ताभोज्यमथापिवा ॥ अयुक्तृत्ययथाशक्त्याकिंचिदन्नयाविधि ॥ पितृभ्यहर्दमित्युक्त्वा स्वधकारमुदहेत् ॥ एतच्चान्नं ब्राह्मणस्थानगत्वातस्मैदद्यात् ॥ यत्रप्राप्ततोगतिरितिचनत् ॥ सर्वथाविप्रालभेतुतदन्नमद्याभ्युवाक्षिपेत् गवेवादद्यात् ॥ ( तदाहर्देवलः ) पात्राभोवक्षिपेद्गौगैरेदद्यात्तामुवाहति ॥ एतच्चश्राद्धषड्वैश्वदेव्यकर्तव्यम् ॥ ( तथाच व्यासः ) तनुषट् पुरुषद्वयदक्षिणापिण्डवर्जितमिति ॥ दक्षिणार्थविकल्पः ॥ किंचिद्व्यविसर्जयदितिप्रचेतसोक्तः ॥ ( हेमाद्रौ ) व्यासोऽपि नित्यश्राद्धेदेवज्जास

र्वमेवमदक्षिणम् ॥ ( मत्स्यपुराणे ) नित्यतावत्प्रवक्ष्यामि अध्यवाहानवर्जितम् ॥ अद्वैतं द्विजानीयात् पार्वणं पर्वसुस्मृतम् ॥ ( भविष्यो  
 तरेपि ) आवाहनं स्वधाकारः पिंडाद्यौकरणादिकम् ॥ ब्रह्मचर्यादिनियमो विश्वेदेवास्तथैव च ॥ नित्यश्राद्धेत्यजेदेतात् भोज्यमन्नं प्रकल्पयेत्  
 इति ॥ भोज्यमन्नं नाप्यस्वयं यजमानो भुंक्ते इत्यर्थः ( हेमाद्रौ प्रचेताः ) नावाहनशौकराणां पिंडानविमर्जनम् ॥ अनुब्रह्मदक्षिणाश्चात्रिय  
 श्रुतिथिकल्पनम् ॥ अनुब्रह्मप्रतिब्राह्मणं दक्षिणाश्च दद्यादित्यर्थः ॥ एतावत्यशौचोऽपि त्र्यंबकलिङ्गैर्वनित्यश्राद्धसिद्धिः ॥ तथाच ( छंदोगपरिशिष्टे )  
 श्राद्धं वापि तृह्नाऽस्यापि त्र्यंबकलिङ्गप्रयोगः ॥ अथ तीर्थश्राद्धप्रयोगः ॥ ( तावद्ब्राह्मणानुज्ञानमुक्तं हेमाद्रौ प्रभास  
 खंडे ) तीर्थे विप्रवचो ब्राह्मणं स्नानश्राद्धार्चनादिषु ॥ ( पद्मपुराणेपि ) तीर्थेषु ब्राह्मणैर्नवपरिक्षितकथंचन ॥ अत्रार्थिनमनुभ्रातृभोजयेन्मनुशास  
 नात् इति ॥ तीर्थश्राद्धे कुतपादिकालं प्रतीक्षेत ॥ ( तथाच हरितः ) तीर्थद्रव्योपपत्तौ च न कालमवधारयेत् ॥ पात्रं च ब्राह्मणं प्राप्य सद्धः  
 श्राद्धं विधीयते इति ॥ तीर्थगयादि द्रव्यम् अस्नादिश्राद्धत्रयत्वादिविशेषणविशिष्टं च ब्राह्मणं प्राप्य न कालान्तरं प्रतीक्षेत ॥ किन्तु तस्मिन्नेव का  
 ले श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र च सद्य इति च न दावश्यकत्वं प्रतीयते इत्यर्थः ॥ ( ग्रामसखंडे ) यात्रागतैर्नरैर्देवितत्रक्षेत्रनिवासिनः ॥ ब्राह्मणाः प्रथमं  
 पूज्या देवोऽप्येव च कर्मणि ॥ येषु तीर्थेषु येषु विप्राय देवायाश्च भ्रातृकाः ॥ तेषु तान्नावमन्येत यदीच्छेन्नोचितं चिरम् ॥ इति ॥ तीर्थे श्राद्धं पित्रादि  
 नवैवैवत्यर्थम् ॥ तथाच ( विष्णुधर्मोत्तरे ) महालये गयाश्राद्धे बृद्धौ चान्वष्टकामुच्यते इति शतातपोक्तेः ॥ मात्रादीनामप्युद्देश्यता तेन न वैवत्यमिति ॥  
 बृद्धौ च गयायां च मृताहनि ॥ पितामह्यादिभिः सार्द्धं मातुः श्राद्धं समाचरेत् इति शतातपोक्तेः ॥ मात्रादीनामप्युद्देश्यता तेन न वैवत्यमिति ॥  
 ( हैतनिर्णये ) निगमे तु द्वादशैव न्यस्तम् ॥ महालये गयाश्राद्धे बृद्धौ चान्वष्टकामुच्यते ॥ इयं द्वादशैव न्यतीर्थे प्राप्ते मवाचमुच्यते इति ॥ अत्र तीर्थे

इतिविशेषवक्यात् तार्थश्राद्धदशदेवत्यंगम्यते ॥ ( अग्निपुराणेतु ) पित्रादिनवदेवात्तथाद्वादशदेवतामिति ॥ अत्र वाश्रवणात् विक  
लरूपवाम्यते सचदेशभेदादिनाव्यवस्थितः ॥ पितृव्यादीनिवृत्तादिष्टमेव ॥ तदशक्तौपिददानमात्रंकार्यम् ॥ तत्पत्नीनामपिपृथगेवै  
कोद्दिष्टादिकार्यमिति ॥ ( तार्थश्राद्धवर्जनीयानि हेमाद्रौपद्मपुराणे ) श्राद्धतत्रकुतर्तव्यमध्यवाहनवर्जितम् ॥ श्वध्वंक्षुग्रकाकाद्याश्च  
तिदृष्ट्वान्तक्रिया इति ॥ क्रियाःश्राद्धपिददानादिरूपाः श्वादयः सर्वेण्यशस्ताःनश्नतिनदूषयतीत्यर्थः ॥ ( तत्रैव ) अर्घ्यमावाहनचैवद्विजा  
ङ्गयानवेशनम् ॥ विकिरंटातिश्रश्चतार्थश्राद्धेर्विवर्जयेत् ॥ ( पितृभक्तौ स्मृत्यन्तरे ) आसनापिददानचंपुनःप्रत्यवनेजनम् ॥ अर्चनदक्षिणां  
चाभ्रंदद्यात्तार्थेधयविधिः ॥ ( वायुपुराणोपि ) नवाहनेनदिग्बंधोदपोढाद्विसंभवः ॥ सकारुण्येनकर्तव्यतीर्थश्राद्धविवक्षणेः ॥ पिंडासनं  
पिंडदानं पुनः प्रत्यवनेजनम् ॥ दक्षिणाचारसंस्कारस्तार्थश्राद्धेधयविधिः ॥ ( तत्रैव ) अन्यत्रावाहिताःकाले पितरोयान्यभ्युप्राति ॥ अत्रा  
गतमुत्तुहृद्वास्वयमायातिसर्वथा इति ॥ ( पिंडद्रव्याण्युक्तानि देवीपुराणे ) सक्तुभिःपिंडदानंस्यात् संयवैःपायसेनवा ॥ पिण्याकेनतिला  
नांवाभक्तिमाद्भिनैःसदा ॥ ( अग्निपुराणोपि ) पायसेनाज्ययुक्तेनसक्तुनाचरुणातथा ॥ पिंडदानंतुलैश्चामोधूमैस्तिलमिश्रितैः ॥ ( विष्णुय  
मोत्तरे ) तार्थश्राद्धेसदापिंडानक्षिपेत्तार्थसमाहितः ॥ दक्षिणाभिमुखोभूत्वापित्र्यादिगयाप्रकीर्त्तिता इति ॥ ( अथगयामधिकृत्यहेमाद्रौब्रह्म  
वैवर्ते ) उद्यतस्तुथांगंतुश्राद्धंरुत्वावियानतः ॥ विधायकर्पटोवेषंग्रामस्यापिप्रदक्षिणम् ॥ ततोग्रामान्तरंगत्वाश्राद्धेषस्यभोजनम् ॥  
कुत्वाप्रतिदिनंगच्छेत्प्रातिग्रहवर्जित इति ॥ श्राद्धमातृपूजनवदेवतं कर्पटोवेषंकाषादिवस्त्रपरिधानरूपमित्यर्थः ॥ ( श्राद्धतत्त्वे गौतमोपि )  
तीर्थयात्रासमारंभेतार्थात्प्रात्यागमोपिच ॥ वृद्धिश्राद्धंश्रुर्वीतबहुसर्पिसमन्वितम् ॥ वृद्धिश्राद्धं नंदीश्राद्धमित्यर्थः ॥ ( महाभारते ) केशश्मश्रुनवा

दीनवपनचनशस्यते ॥ अतो न काय्यपनंगयाश्राद्धार्थिनसदा ॥ (वायुपुराणेपि) मुंडनचोपवासश्चसर्वतथिष्वयविधिः ॥ वर्जयित्वाकुरक्षेत्रं  
 विशालविरजांगयाम् ॥ (तत्रैव) पाथसेनाथचरुणासक्तुनापिष्टकेनवा ॥ तंडुलैःफलमूलैर्वाग्यापिंडपातनम् इति ॥ सक्तुय  
 वपिष्टपिष्टकंतंडुलपिष्टतंडुलाखंडाखणायसर्दीनांपूर्वपूर्वाभावउत्तरोत्तराह्वामित्यर्थः ॥ अन्यदपितत्रैव ॥ तिलकलेकेनखंडेन गुडेनसघृ  
 तेनवा ॥ कत्रलैरनघदध्नावा उर्षेणमधुनापिवा ॥ पिण्याकंसघृतखंडपितृभ्योऽक्षय्यमित्युत ॥ पितामाताचभार्याचभगिनीदुहितुभ्यतिः ॥ पितृष्वसामातृष्वसा  
 पत्रप्रमाणेनपिंडदद्याद्वाशिरं ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतम् ॥ पितामाताचभार्याचभगिनीदुहितुभ्यतिः ॥ अथ गयाश्राद्धाधिकारिणः ॥ तत्र  
 सप्तगोत्रांश्चतारयेत् ॥ चतुर्विंशश्चविंशश्चषोडशद्वैवहि ॥ रुद्रदशवसुश्चैवकुलमेकोत्तरंशतमिति ॥ अथ गयाश्राद्धाधिकारिणः ॥ तत्र  
 पुत्रपौत्रपौत्राण्यप्रधानाधिकारिणः तद्विद्वाः सर्वेपिगौणाधिकारिणः ॥ (तथाच वायुपुराणे) आत्मजोवाग्न्यजोवापिगयाकूपेयदातदा ॥ यन्ना  
 न्नापातयत्येतिपंडतंनयेद्ब्रह्मशाश्वतम् ॥ (स्मृतिरन्नावल्याम्) सवर्णाज्ञातयोमित्रबांधवाःसुहृदस्तथा ॥ तोपभूयोगयंगत्वापिण्डंदद्युर्विधानतः ॥  
 (वह्निपुराणेपि) पुत्रोवाबन्धुपुत्रोवामित्रोवामित्रबांधवाःसुहृदस्तथा ॥ त्रैदिव्य अन्यष्टकाश्राद्धमिवमातृश्राद्धमेवकुर्यात् ॥ (तदुक्तंत्रित्य  
 सर्वथानाधिकारिः ॥ जीवन्पितृकोमृतमातृकस्तुयद्विप्रसंगेनगयांप्राप्तोतितदा त्रिदिव्य अन्यष्टकाश्राद्धमिवमातृश्राद्धमेवकुर्यात् ॥ (तदुक्तंत्रित्य  
 लीसेतौ) गयांप्रसंगतो गत्वा मातृश्राद्धंसमाचरेदिति ॥ तेन जीवन्पितृकस्तुयमातृश्राद्धकणम् ॥ आन्वष्टक्यंगयाप्राप्तौमित्यर्थश्च  
 श्रयाऽहनि ॥ मातृश्राद्धंस्तुःकुर्यान्पितर्यपिचजन्तौतै भ्रात्राण्यप्यपिशृण्वक्यात् ॥ अत्रप्रातावित्युक्त्याप्रासङ्गिकमनंसूचितम् ॥ (गया  
 श्राद्धकालोवायुपुराणे) मोनेमेषस्थितेसूरै कन्यायांकाष्ठैकेघटे ॥ दुर्लभंत्रिषुलोकेषुगयापिंडपातनम् ॥ मकरेवर्तमानेच ग्रहणेचंद्रमूर्य

योः ॥ दुर्लभं त्रिलोकेषु गययापि पातनम् ॥ गययाप्तं कालेषु पिंडं द्वाद्विचक्षणः ॥ अधिमासे जन्मदिने अस्ते चतुस्तुक्रयोः ॥  
नन्यक्तव्यंगयाश्रद्धं सिंहस्थे च बृहस्पते ॥ (विहितपुराणे) गयाश्रद्धं प्रकुर्यात् सक्रान्त्या द्वाविंशतिशतः ॥ कालेनऽपरशेषाचतुर्थ्यादिति थिष्यति ॥  
अपरपक्षे कृष्णपक्षे इत्यर्थः ॥ (गयामहिमा ब्रह्मवर्ते) फल्युतिर्थेनः स्तत्त्वा देवं दृष्ट्वा दधाम् ॥ गयाशिरः परिक्रम्य मुच्यते ब्रह्महत्याया ॥  
(वायुपुराणे) गययापि पिंडदानेन यत्फलं लभते नरः ॥ नतच्छ्रमं यमावक्तुं कल्पकोटिशतैरेपि ॥ (आदित्यपुराणे) प्रत्यागतश्चाथ दृष्टुं नस्तु  
देवान् पितॄन् ब्राह्मणान् पूजयेत् ॥ एवं कुर्वन्तस्तर्थाद्यदुक्तं फलं तत्स्यान्न त्रसद्देहस्ति ॥ इति श्रीगौडियश्रद्धप्रकाशे पूर्वसंडे मुख्यश्रद्ध  
कल्पे पावर्णिकादिप्रयोगनिर्णयः ॥ ॥ अथानुकल्पिकाः पावर्णिकादिश्रद्धप्रयोगाः ॥ तत्र तावन्मुख्यं कल्पशक्तौ चतुर्कल्याणुष्टाने मुख्यफला  
वाप्तिमाह— (शतातपः) यथा कथंचिन्नित्यानि कुर्यादिन्द्रक्षयादिषु ॥ पात्रद्रव्याद्यसंपत्तौ सोतिमुख्यफलं लभेदिति ॥ अस्यार्थः ॥ यथाक  
थंचित् ॥ कियद्द्रव्यानि नित्यानि यावज्जीवमनुष्ठेयतया विहितानि दर्शपूर्णमासपिंडपितृयज्ञश्रद्धादीनि ॥ इन्द्रक्षयादिषु अमावास्या  
दिकालेषु पात्राणि पूर्वोक्तलक्षणाब्राह्मणाः द्रव्यमधुपायसोदनापमपूषाकादि इत्यर्थः ॥ (भविष्योत्तरे) श्रद्धानुकरलयः  
कुर्यात् जात्यवस्थाद्यपेक्षया ॥ श्रद्धावान्सोऽप्यवाप्नोति मुख्यश्रद्धफलं नर इति ॥ जात्यपेक्षया यथाशुद्धः स्वकीयां शुद्धतामपेक्ष्य  
मंत्ररूपाद्ब्रह्मं पक्वाब्रह्मं चानुकरलयं पात्राद्धं करोति यथावा स्त्रीमंत्रह्रीं अस्वथोपेक्षया यथाऽनुपनीतो मंत्रहीनमपनीकः प्रवासी वाऽऽ  
महंमश्राद्धयोरन्यतरत् ॥ आदिशब्देन पात्रद्रव्याद्यसंपत्त्यपेक्षादि संग्रहते इत्यर्थः ॥ मुख्यानुष्ठानशक्तिमास्त्वनुकरलयमनुतिष्ठ  
कर्मफलं नवाप्नोतीत्याह (हेमाद्रौ व्यासः) शक्तः श्रमकल्पस्य योऽनुकरलेपेन वर्तते ॥ स नवाप्नोति फलं तस्य परत्रेति नुनिश्चितम् ॥ इति ॥



अत्रानेकब्राह्मणसंपत्त्यभावे अनेकब्राह्मणभोजनपर्याप्तास्रांसंभवेचकेनब्राह्मणेनषड्देव्यषट्पिंडात्मकंश्राद्धंकुर्यात् ॥ ( तथाच प्रभास  
 खंडे ) ॥ द्रव्याभावेद्विजालाभे विधिर्विश्यामितत्त्वतः ॥ एकेनापिहिविप्रेण षट्पिंडंश्राद्धमाचरेत् ॥ षड्देर्भान् दापयेत्तस्मै षड्भूयोदद्यात्त  
 थासनम् ॥ षडयावाहयेत्तत्र षड्भूयोदद्यात्तथाहविरिति ॥ द्विजालाभे इत्यनेकद्विजालाभे यदाचषड्देव्यमेकेनैवविप्रेण कुर्यात्तदा सर्वगुणसं  
 पन्नंविप्रनिमंत्रयेदित्यर्थः ॥ एकविप्रपक्षवैश्वदेविकानुष्ठानप्रकारं कथंकार्यं तदाह ( वसिष्ठः ) यद्येकंभोजयेच्छ्राद्धे दैवंतत्रकथंभवेत् ॥ अन्न  
 पात्रेसमुद्धृत्य सर्वस्यप्रकृतस्यच ॥ देवतायतनेकृत्वा ततःश्राद्धंप्रर्त्तयेत् ॥ ग्रस्येदन्नंतदग्नौ दद्याद्ब्राह्मचारिणे इति ॥  
 अस्यार्थोहिमाद्रिणाकृतः ॥ प्रकृतश्राद्धार्थं संपादितस्य तत्तज्जातीयस्यान्नस्य प्रत्येकमेकदेशं समुद्धृत्य देवतायतने वैश्वदेविकद्विजोपवेशने  
 चित्तेस्थाने पात्रमासाद्य तत्रपरिवेष्य तत्रत्यासनेच विशान्देवानावाह्य तान् पुरोवर्त्तिन इवाधुयाय पृथिवीतेपात्रमित्यादिकंजपित्वा  
 पुरुरवार्ष्वसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्योदेवेभ्यइदमन्नंस्वाहा अतस्तसदित्युक्त्वाश्राद्धं पितृकर्म प्रवर्त्तयेदित्यर्थः ॥ ( ब्रह्माण्डपुराणे ) वैश्वदेवि  
 कस्थाने अग्निस्थायनमुक्तम् ॥ एकएवयदाविप्रो द्वितीयोनेपयते ॥ पितॄणांब्राह्मणो यज्यो दैवत्वान्नियोजयेत् ॥ अत्रैकस्मिन्  
 ब्राह्मणे अनेकधापितॄणां तृप्तिप्रकारमाह ( शातातपः ) ॥ एकस्तुब्राह्मणःश्राद्धे स्वरूपंचप्रकृतंभवेत् ॥ त्रयश्चापितरःश्रेष्ठाः कथंतृप्यंतुते  
 त्रयः ॥ उरस्यश्नोतिपितरो वामपाश्वरिपितामहाः ॥ प्रपितामहादक्षिणतः पृष्ठतस्तनुयायिनः ॥ अनुयायिनः पितृपत्नीप्रभृतय इत्यर्थः ॥  
 ( देवलस्तौतु ) पिताभुक्तोद्विजकरे मुखेभुक्तोपितामहः ॥ प्रपितामहस्तुलुस्थः कंठेमातामहःस्मृतः ॥ प्रमातामहस्तुहृदये बृद्धो



नाभौ संस्थित इति ॥ बृद्धः बृद्धप्रमाता मह इत्यर्थः ॥ (अत्रैकस्यापि ब्राह्मणस्यालामेनुरुत्तरपत्तारमुक्तं हेमाद्रौ प्रभासखंडे) अलामे ब्राह्मणस्यैव कौशः कायार्थे बटुः प्रिये ॥ एवमप्याचरेच्छ्राद्धं षड्वैतस्य समाहितः ॥ विभक्तिकारयेद्यस्तु पितृहासप्रजायते इति ॥ कौशः कुशमयः बटुः लघुमुण्ड्यप्रतिहृतिः ॥ तत्र बटुं ब्राह्मणत्वेन परिहरण्य सर्वं श्राद्धमाचरेत् ॥ विभक्तिः कर्मणश्छेदो लोप इति यावत् तन्मुख्यद्वित्यर्थः ॥ दर्शबटुश्राद्धप्रकारमाह ( श्राद्धतत्त्वे देवलः ) ॥ निधाय वा दर्शबटूनामनेषु समाहितः ॥ प्रैषादु प्रैषयुक्तं विधानं प्रतिपादयेत् इति ॥ आसनेषु ब्राह्मणपवेशनोचितेषु स्वागतं भवताम् श्राद्धं कार्ष्ये श्राद्धे क्षणः क्रियताम् देवान् पितृनावाहयिष्ये अग्नौ करणं करिष्ये इत्यादयः प्रश्नाः प्रैषाः ॥ एषामुत्तराणि अनुप्रैषाः ॥ तदुभयसंयुक्ता विधानं श्राद्धतिकर्तव्यताकांडं स्वयमेव कुर्यात् इत्यर्थः ॥ तत्र संकल्पितस्यान्नस्य यत् कर्तव्यं तदपि स एव आह ॥ पात्राभावे पंडुत्वा पितृयज्ञविधिनिर्ः ॥ निर्दिश्यायन्नमुद्धृत्य यत्र पात्रंततो गतिः ॥ पात्राभावे विधिपेदशौ गेद्व्यान्तथाप्नुवा ॥ ननु प्रातस्तस्य लोकोस्ति पैतृकस्य विशेषत इति ॥ ब्राह्मणनामसंपत्तौ कृत्वादभयान्दिजान् श्राद्धकृत्वा विधानेन पश्चाद्विप्रेषुदपयदिति श्राद्धतत्त्वे समुद्धृत्य वचनात् ॥ मुख्यद्रव्यासंभवे चान्येषु नुरुत्तराः तत्राभिश्राद्धाख्याः ॥ ( पराशरस्मृतिविष्णुपुराणयोः ) असमर्थोऽन्नदानस्य धान्यमाशंस्वशक्तिः ॥ ऋद्धात्तु द्विजातिभ्यः स्वरूपमपि च दक्षिणाम् ॥ अस्यार्थः पक्वान्नाभावे श्राद्धयोग्यन्नप्रकृतिभूतं यवगोधूमतंडुलादि धान्यमेव विशान्नदेवान् पितृंश्चोद्दिश्य पक्वान्नचययत्वा निर्मात्रतद्विज्ञेभ्यः समर्पयेदित्यर्थः ॥ अत्र प्रदेय धान्यपरिमाणमितिकर्तव्यतांचाह ( हेमाद्रौ व्यासः ) आमं दद्यात्तु कौतेय दद्यान्न च तर्गुणम् ॥ सिद्धे ब्रह्मविधेयः स्यादाभिश्राद्धेयसौविधिः ॥ आवाहनादिस्त्वस्यान्यिददानं च भारत ॥ दद्याद्वचद्विजातिभ्यः शृंगवाऽशृतमेव वा ॥ तेनाग्नौ करणं कुर्यात्

पिंडास्तेनैवनिर्वपेत् इति ॥ चतुर्गुणशक्त्यैशान्तरमपिदैनैवोक्तम् ॥ आमं दद्याद्विक्रैतय तदानंदिगुणंभवेत् ॥ त्रिगुणंचतुर्गुणंवापि नृ  
 त्वेकगुणमप्येत् इति षडंगश्रवनेपिंडदानेपक्षान्तरमुक्तम् ॥ आमश्राद्धयदुक्रुयेत् पिंडदानंकरथेभवेत् ॥ गृहपाकात्समुद्धृत्य सखिभ्या  
 यसेनवा॥पिंडानदद्याद्यथालभं तिलैःसहविभन्तर इति ॥ विकिरादिकमध्यामद्वयेणैवकृतव्यम् ॥ ( तथाच प्रचेताः ) आमश्राद्धप्रदःपिंडां  
 स्तथाशौकरणंचयत् ॥ तदद्यात्तत्रनैव यत्किंचिच्छूद्रादिकंभवेत् ॥ यत्किंचिद्यदन्यदपि विकिरादितदपितेनवामनैवकृतव्यमित्यर्थः ॥  
 शूद्रस्तु आमग्नैनैवश्राद्धंकुर्यान्नतुपक्षाग्नेन ॥ ( तथाच सुभतुः ) सदाचैवतुशूद्राणामामश्राद्धंविधीयते ॥ ( मात्स्यपि )  
 एवंशूद्रोपिसामान्यं वृद्धिश्राद्धंचसर्वदा ॥ नमस्कारेणमंत्रेण कुर्यादामग्नवत्सदा ॥ ( परशरोपि ) आमग्नैनतुशूद्रस्य तूष्णींतुद्विज  
 पूजनम् ॥ आमंशूद्रस्यपक्षाग्नं पक्वमुच्छिष्टमुच्यते ॥ ( कर्मपुराणेपि ) आमश्राद्धंद्विजःकुर्याद्वृषलस्तुसदैवहि ॥ ( सुमंतप्रचेतसौ )  
 स्त्रीशूद्रः श्वपचश्चैव जातकर्मणिचाप्यथ ॥ आमश्राद्धंसदकुर्वाद्दिधिनापर्वणेनतु ॥ श्वपचः स्त्रीरहित इत्यर्थः ॥ ( विष्णुशानसौ )  
 नपक्वभोजयेद्विद्वान्सच्छूद्रोपिकदाचन ॥ भोजयन्प्रात्यवायीस्यान्नचतस्यफलंभवेत् ॥ ( मनुस्मृतौ ) नद्याच्छूद्रस्यपक्षाग्नंविद्धा  
 नश्राद्धिनोद्विज इति ॥ सच्छूद्रा याज्ञवल्क्येनाक्ताः ॥ शूद्रेषुदासगोपालकुलमित्रादिसीरिणः ॥ भोज्यान्नानापितथैवयश्चात्मानंनिवेदयेत् ॥  
 ( देवलस्तु ) स्वदासोनापितोगोणः कुंभकारःकृषीवलः ॥ ब्राह्मणैरपिभोज्यान्नाः पंचैतेशूद्रयोनय इति ॥ अत्रान्नशब्द आमान्नपरः नतुपक्षा  
 ग्नपर इत्यर्थः ॥ आमंशूद्रस्यपक्षाग्नंपक्वमुच्छिष्टमुच्यते इतिशातातपीयात् ॥ ( तदनुष्ठानप्रकारस्तु भविष्योत्तरदर्शितः ) धर्मैवसवश्चर्मज्ञा  
 यद्विशूद्राःप्रकुर्वते ॥ अग्नौकरणमंत्रश्चनमस्कारोविधीयते ॥ आवाहनादिकर्तव्यं यथाशूद्रेणतच्छृणु ॥ देवानांदेवनाम्नातुपितुंगानामगो

त्रतः ॥ पिंडादीन्निषेद्धारं नामतो गोत्रतस्तथा इति ॥ नमस्कारः नमइति शब्दः ॥ अग्नयेकव्यवाहनाय नमः सोमाय पितृभ्यो नमः ॥ अग्नौ क  
रणमित्युपलक्षणम् इत्यर्थः ॥ (श्रद्धस्य मंत्रांतरा निवृत्तिर्भस्मपुराणेऽभिहिता सर्वश्राद्धचर्तव्यं श्रद्धेणाप्येवमेव ॥ मंत्रवर्जहिश्रद्धस्य  
सर्वमेव विधीयते ॥ एवमेव यवर्षणश्राद्धविधिनैव इत्यर्थः ॥ (ब्रह्मपुराणेपि) अयमेव विधीयते श्रद्धां मंत्रवर्जितः ॥ अमंत्रस्य तु श्रद्धस्य विप्रैर्म  
त्रेण गृह्यते इति ॥ श्रद्धाणां गोत्रस्याऽपि द्यमानत्वात् काश्यपा गोत्रम् ॥ (तथाच श्रुतिः) ॥ तस्मादहः सर्वाः प्रजाः काश्यप्य इति ॥ (हेमाद्रौ  
व्याघ्रपदादिपि) गोत्रनाशे तु काश्यप इति ॥ स्त्रीश्रद्धकृतकेऽस्मिन् श्राद्धे स्वस्थाने नमः पदप्रयोगः कर्तव्यः ॥ (तथाच व्यासः) श्रद्धावर्ण  
श्चतुर्थापि वर्णत्वाद्धर्ममर्हति ॥ वेदमंत्रस्वधास्वाहावषट्कारादिभिर्विना इति ॥ अयं सर्वोपि श्राद्धविधिः श्रद्धाणामामात्रेनाऽमंत्रकः कार्य इति  
विवेकः ॥ आमश्राद्धं श्रद्धैर्परालोक्य कर्तव्यम् ॥ तेषां माध्यादिनीयशाखया कर्म ॥ (तथाच श्राद्धतत्त्ववेत्ताः) श्रद्धावाजसनेयिन इति ॥ आमात्र  
स्याप्यसंभवे हेमश्राद्धं कर्तव्यम् ॥ (तथाच मरीचिः) आमात्रस्याप्यभावे तु श्राद्धं कुर्वीत बुद्धिमान् ॥ धान्याच्चतुर्गुणैर्नैव हरिण्येन सुरोचिषा  
इति ॥ (हेमाद्रौ धर्मः) आमंतु द्विगुणं प्रोक्तं हेमतद्भक्तगुणम् ॥ अन्नाभावे द्विजतीनां ब्राह्मणस्य विशेषत इति ॥ एकैकब्राह्मणतृतिपर्यं ता  
व्रसमर्थं धान्यं यावतालभ्यते तावत्तत्तुर्गुणैर्हेमैकैकस्मै ब्राह्मणाय इत्यर्थः ॥ (तत्रैव व्यासः) द्रव्याभावे द्विजभावे प्रवासे पुत्रजन्मनि ॥ हेम  
श्राद्धं प्रकुर्वीत यस्य भार्या राजस्वला इति ॥ हेमश्राद्धस्य क्वाचिदपवादः (षट्त्रिंशन्मते) अन्नाभावे द्विजभावे प्रवासे पुत्रजन्मनि ॥ हेम  
श्राद्धं प्रकुर्वीत वर्जयित्वा क्षयेऽहनि ॥ (हेमाद्रौ संवत्) पुत्रजन्मनि कुर्वीत श्राद्धं नैव बुद्धिमान् ॥ न भवेन्नच मेन कल्याणान्यभिकाम  
यन् ॥ पिंडदानप्रकारोऽप्यत्र हेमादिभिरप्युक्तोऽवदर्शितः ॥ गृहपाकात्समुद्धृत्य सकृत्तुभिः पायसेन वा ॥ पिंडदानं प्रकुर्वीत हेमश्राद्धे कृते सदा ॥

शुद्धस्तुहपाकेन तत्पिडाशिवपतेथा ॥ सकुमूलफलतस्य पायसंवाभवेत्स्मृतम् ॥ पिंडनिर्वपणार्थमिति शेषः ॥ ( तत्रैवषट्त्रिंशन्मते )  
 नामत्रणाग्नौकरणं विकिरोनैवदीयते ॥ वृत्तिप्रश्नाऽपिनैवात्र कर्तव्यः केनचिद्वेत् इति ॥ इति हेमः श्राद्धप्रकारः ॥ यस्तु पिंडप्रदानादिवहुविधान  
 युक्तं श्राद्धमनुष्ठानशक्तः स सांकर्यं श्राद्धकुर्यात् ॥ ( तथाच हेमाद्रौ संवर्तः ) समग्रयस्तु शक्रोति कर्तुं नैव हर्षवर्षणम् ॥ अपि स  
 कल्पविधिना कालतस्य विधीयते ॥ पात्रभोज्यस्य चात्रस्य त्यागः संकल्प उच्यते ॥ तत्र यत्नो विधियंस्तु स तेन व्यपदिश्यते ॥  
 तावन्मात्रेण संबद्धं श्राद्धं सांकर्यमुच्यते ॥ ( अत्र विशेषमाह व्यासः ) सांकर्यं तु यदा कुर्यान्न कुर्यात्पात्रपूर्णम् ॥ नावाहनं  
 नाग्नौकरणं पिंडांश्चैव न दापयेदिति ॥ ( हेमाद्रौ षट्त्रिंशन्मते ) अनग्निको यदा विप्र उत्सन्नाग्निस्तथैव च ॥ तदा वृद्धिमुखसर्वास्तु संक  
 ल्य श्राद्धमाचरेत् इति ॥ साग्निकस्तु संकल्पविधिना बहूनादिभिः श्राद्धप्रदानयुक्तं वा वृद्धिश्राद्धं कुर्यादित्यर्थादिह गम्यते  
 इति ॥ ( श्राद्धयोग्यद्विजद्रव्यालोभे चानुकल्पमाह देवलः ) पिंडमात्रं प्रदातव्यमलाभे द्रव्यविप्रयोः ॥ श्राद्धेऽहनि तु संप्राप्ते भवेन्निर  
 शनोऽपि वा ॥ ( अत्राप्यसामर्थ्यं कर्तव्यतामाह वृद्धवसिष्ठः ) किंचिद्दद्यादशक्तस्तु उदङ्कुमादिं कद्रिजे ॥ तृणानि वागवेदद्यात्पिडान्वाप्यथ निर्व  
 पेत् ॥ तिलदुर्भः पितृनृवापि तर्पयेत्स्नानपूर्वकम् ॥ ( हेमाद्रौ देवलः ) यदेव तर्पयन्त्याद्रिश्रिताग्निर्दिने ॥ पित्र्यं तेनैव प्राप्नोति वार्षिका  
 दिक्रियाफलम् ॥ ( वाराहे ) यतः कुतश्चित्संप्राप्याग्नौभ्योवापि गवाहिकम् ॥ पितृनुद्दिश्य विप्रभ्यो दद्याच्छूद्रासमन्वितः ॥ ( हेमाद्रौ पुरा  
 णान्तरे ) परार्थिनः श्रवासीच निर्धनो वापि मानवः ॥ मनसा भावयुक्तेन श्राद्धं कुर्यात्तिलोदकम् इति ॥ इत्यनुकल्पपार्षणादश्राद्धप्रयोग  
 निर्णयः ॥ अथ द्रोहित्रप्रतिपच्छ्राद्धप्रयोगः ॥ तच्चाश्विनशुक्लप्रतिपद्येव कर्तव्यम् ॥ ( तथाच हेमाद्रौ संग्रहेच ) जातमात्रोऽपि द्रोहित्रो विद्यमानोऽपि मातु

लो। कुर्यान्मातामहश्राद्धं प्रतिपद्यांश्चिनेसिते इति॥ ननु दर्शश्राद्धगंगयाश्राद्धश्राद्धं चापरपक्षिकम् ॥ नजीविपितृकः कुर्यात्तिलस्तर्पणमेव च ॥  
इतिजीविपितृकस्यापरपक्षश्राद्धनिषेधात्तथमितिचेत् ॥ शिष्टाचारदितिचेद्भूमः ॥ यद्यपरपक्षनिमित्तकं दौहित्रस्यश्राद्धनिषिद्धतर्हि  
प्रतिपद्यापिक्रियमाणं तन्निषिद्धमितिउच्यते ॥ कन्यागतेसवितरपितरोयातिवैमुतात् ॥ जूनामेतपुरीसर्वावाद्दृक्क्षिप्रदर्शनमिति ॥ अत्र  
कन्यागतस्यापिश्राद्धनिमित्तत्वाद्दौहित्रैस्तनिमित्तमेवश्राद्धकर्तव्यंनपरपक्षनिमित्तमिति ॥ एतच्चत्रिद्वैव्यपावर्णविधानेनकर्तव्यम् ॥  
तथाच ॥ प्रतिपद्यांश्चिनेशुक्ले दौहित्रस्त्वैकपावर्णम् ॥ श्राद्धमातामहकुप्यात्सपितासंगवेसदा ॥ संगवे संगकाले इत्यर्थः ॥  
जातमात्रोपिदौहित्रजीवित्यपिचमातुलोप्रातःसंगवयोर्मध्ये आर्यस्यप्रतिपद्वैत् इति॥ इदंचसापिडकंकार्यमितिकेचित्॥ पिंडरहितजीविपितृ  
कस्यइत्यपरे॥ तत्र मुंडनपिंडदानंचप्रतर्कमचमवशः ॥ नजीविपितृकः कुर्याद्गुणविर्णपतिरेवच॥ इतिदक्षेणपिंडनिषेधात् पिंडरहितजीविपितृक  
स्ययुक्तंइति॥ अथ अष्टकान्वष्टकाश्राद्धम् ॥ अष्टकाशब्देनपौषमाघफालुनकृष्णाष्टयः ॥ अमावास्यास्तिस्रोऽष्टकास्तिस्रोऽवष्टका इतिविष्णु  
स्मरणत्वात्॥ अष्टकानामनुपश्रद्धवर्तनित्यवष्टकाः अष्टकानामुपरितननवम्बइत्यर्थः॥ (पारस्करगृह्येपि) ऋद्धमाग्रहाण्यास्तिस्रोऽष्टका इति॥ अ  
स्यार्थः-ऋद्धमुपरि आग्रहाण्याः मार्गशीर्ष्याः पूर्णिमायास्तिस्रः अष्टकाः त्रीण्यष्टकानिकर्माणिभवन्तीत्यर्थः॥ (हेमाद्रौकूर्मपुराणेपि) अमावास्य  
ष्टकास्तिस्रः पाषमासा दिषुत्रिषु॥ तिस्रश्चान्वष्टकाः पुण्या माघीपंचदशीतथा इति॥ (विष्णुधर्मोत्तरेपि) आग्रहाण्यात्यक्तितौकृष्णास्तिस्रोष्टका  
स्तथा ॥ इति केषांचिन्मते चतस्रएवअष्टकाः ॥ हेमंतशिशिराश्चतुर्णामपरपक्षाणामष्टमष्टकाएकस्यावांइतिशौनकाधलायनस्मरणात् ॥  
पौषमासकृष्णाष्टमीमारभ्यतिस्रोऽष्टकाइत्येतन्मतपरिग्रहेचतुर्थीभाद्रपदाऽपरपक्षाष्टमीसन्निहितदर्शिता ॥ प्रौष्ठपद्यष्टकाभूयः पितृलोकेम

विष्यति ॥ आयुरारोग्यदानित्यं सर्वकामफलप्रदा ॥ इत्यादि हेमाद्रौ पद्मपुराणीयेतिहासात् ॥ एतासुचापूपमांशशका  
निक्रमेणश्राद्धद्रव्याणि ॥ तत्रापूपस्याश्राद्धरूपतयातस्यैवतत्तिक्षमतायामुल्लेख्यम् ॥ मांशशकयोस्तु उपकरणत्वेनान्वयोयथासंख्यमष्टकाद्वये  
मुख्यद्रव्यमोदनादिकमेव ॥ अत्रपापस्करदृष्टमन्त्रम् ॥ ऊर्ध्वमाग्रहायण्यास्तिस्रोऽष्टकाण्ड्रिवैश्वदेवीप्रजापत्यापित्र्याप्यपूमां  
१७ सशकैर्यथासंख्यमिति ॥ अस्यार्थो हरिहरभाष्ये ॥ एवमष्टकाकर्माणिकर्तव्यत्वेनविधाय तत्र द्रव्यदेवतापेक्षयाद्रव्याणिदे  
वताश्चाभिधत्ते ॥ तत्रप्रथमा ऐंद्री इंद्रदेवतायस्याइतिऐंद्री इंद्रदेवत्येत्यर्थः ॥ द्वितीयावैश्वदेवी विश्वेदेवादेवतायस्या इतिवैश्वदेवी विश्वे  
देवदेवत्येत्यर्थः ॥ तृतीयाप्रजापत्या प्रजापतिदेवता यस्याइतिप्रजापत्या प्रजापतिदेवत्येतिभावत् ॥ चतुर्थी पित्र्या पितरोदेवताय  
स्याइति पित्र्यापितृदेवत्येत्यर्थः ॥ अपूपंचमांशचशकश्चअपूपमांशशकास्तः अपूपमांशशकैः यथासंख्यया यस्याः यथासंख्या ॥ तामन  
तिक्रम्ययथासंख्ययेतेत्यध्याहारः ॥ तदुक्तंभवतिप्रथमायामपूपेनइंद्रयेजेत् ॥ द्वितीयायामांसिनविधानदेवान् ॥ तृतीयायांशकेनप्रजा  
पतिमा ॥ अत्रतिमुष्यथासंख्यंपित्र्यापीत्यनेनचतुर्थीअष्टकाविधीयतेतत्रापिशकमुपकरणम् ॥ (तथाच ब्रह्मपुराणे) ॥ वर्षासुमध्येशकैश्चचतुर्थ्यमि  
वसव्वदा इति ॥ वर्षासुमध्येशपक्षस्यमाद्रुकृष्णपक्षत्वादष्टम्यंतवर्षमध्यत्वम् ॥ शकैरेतितस्याब्रह्मपुराणेनशकोपकरणविधानात् ॥ अत्र  
चतसृष्वपिशकमांशपणशब्दाः श्राद्धेविहितस्यसर्वस्यापिमोज्यस्यततद्रव्यप्रधानत्वप्रतिपादनपराः ॥ नतुद्रव्यानन्तरेवितिपरा इति  
हेमाद्रिप्रभृतयः ॥ एतच्चमाद्रुपदापरपक्षमहालयाख्ये सप्तम्यादिषु त्रिष्वहसु अष्टकावत्सर्वकुयादितिघृत्तिकृत् ॥ अशक्तश्चेदकस्यामष्ट  
म्यावैकार्यमिति हरदत्तः ॥ अत्रसप्तमीश्राद्धमाश्वलायनशारिनाम् अष्टमीसाग्निकानांकालः अष्टकाश्राद्धविधानेसाग्निककर्तृकत्वलिङ्गदर्श

नादिति ॥ नवमीतुसाग्निनिग्निसाधारणाऽवश्यकश्राद्धकालज्ञातव्यइति ॥ अत्रश्राद्धनवदेवत्यकार्यम् ॥ (तथाच कात्यायनः)  
 अन्वष्टकामुनवभिः पिडैःश्राद्धमुदाहृतम् ॥ पित्रादिमातृमध्यं च ततोमातामहंतकम् ॥ (हेमाद्रौ ब्रह्मादिपि) पितृणांप्रथमंद्वान्मातृणांतद-  
 नंतरम् ॥ ततोमातामहानांच आन्वष्टक्यक्रमः स्मृतः ॥ (तत्रैव छागलेयः) केवलास्तुक्षेयकार्यावृद्धवादाप्रकीर्तिताः॥अन्वष्टकामुमध्यस्था-  
 नांत्याःकार्यास्तुमातर इति ॥ कारिकायांतुद्वादशदेवत्यमुक्तम् ॥ ॥ (तत्रैव बुराणसमुच्चये)॥ तामिस्रपक्षेनवमी याणुष्यतुनभस्यकोऽचत्वारः  
 पार्वणाःकार्याः पितृपूर्वमानीषिभिःपितृणांतुत्रयःपिंडा मातृपूर्वस्तथात्रयः ॥ मातामहानामप्येवं त्रयोमातामहेषुच ॥ एवमुक्त्वस्ततःश्राद्धं  
 मातृणांचनदोषभाक् ॥ भवत्येवनरोविप्रा इतिब्रह्मानुशासनमिति ॥ इदं तु प्रेतपक्षनवमीपरंज्ञेयमिति ॥ केचिन्मातृश्राद्धमादौकार्यमिति  
 पठंतितनुशाखान्तरविषयम् ॥ इदंचजीविपितृकेणापिकार्यम्॥(तदुक्तं निर्णयामृते) आन्वष्टक्यंगयाप्राप्तौसत्यायञ्चमृतेऽहनि॥मातुःश्राद्धंमुतः  
 कुर्यात्पितर्यपिजीवति इति॥यद्यपिजीविपितृकस्यचतुष्टयान्वष्टकाआवश्यकतव्या तथाप्यशक्त्येयमावश्यक ॥ सर्वासामेवमातृणांश्राद्धंक-  
 न्यागतेरवौ ॥ नवम्यांहिप्रदातव्यं ब्रह्मलज्जनवरयतः॥पितृमातृकुलेनायोयाःकाश्चिन्मृताः स्त्रियः॥ श्राद्धहार्मातरोद्भयास्तासांश्राद्धप्रदापयेत्  
 वृद्धौतुमातृपूर्वहिश्राद्धंवौतुद्दिमान् ॥ अन्वष्टकामुसर्वसुपितृपूर्वसमाचरेत् इतिमुतेनावश्यकत्वोक्तेः ॥ अत्रसर्वासामिभ्युक्तेः स्वमातारे-  
 जीव्ययामपिसप्तनमातृभ्योद्वाादिति ॥ केचित्तर्भृत्भरणोत्तर्भृत्मातृश्राद्धंनकार्यमिति वदंति तदुक्तम् ॥ श्राद्धंनवम्यांकुर्यात्तन्मृतेभ्योमातारे-  
 लुप्यते ॥ इतिस्मृत्यनरोक्तत्वात् ॥ अन्वष्टकामुद्धौचगयायांचमृतेऽहनि ॥ अत्रमातुःपृथक्श्राद्धम् न्यत्रपतिनासह इति ॥ हेमाद्रवशि-  
 पुराणोक्तत्वाच्च ॥ इदंचजीविपितृकेणापिसापिंडादिदेव्यपार्षणकार्यम् ॥ (तथाचहेमाद्रौ विष्णुधर्मोत्तरे) अन्वष्टकामुचस्त्रीणांश्राद्धं



कार्यतैवच ॥ इत्युपक्रम्य ॥ पिंडनिर्वपणं कार्यतस्यामिनुसत्तम इति ॥ अत्र सुवासिन्यापिभोजनायाः ॥ ( तथाच मार्कण्डेयपुराणे )  
भर्तुः प्रेमृतानारीसहवातेनयामृता ॥ तस्याः स्थानेनियुजितं विप्रैः सहसुवासिनी इति इदंचनित्यम् ॥ अष्टकान्वष्टास्तिस्मत्तथैवचतुषोत्तम ॥  
एतानि श्राद्धकालानिनित्यान्याहप्रजपतिः ॥ श्राद्धमेतच्छ्रुवाणेनरक्षप्रतिपद्यत इति हेमाद्रौ विष्णुधर्मोत्तरात् ॥ ( क्रूरपुराणेपि ) यस्य  
तेप्रतिगच्छेयुरष्टकारिभूपूजिताः ॥ मोवास्तस्य भवंत्याशाः परैवचसर्वश इति ॥ एतदकरणे प्रायाश्चर्तम् ऋग्विधाने ॥ एभिर्द्विभिर्जपेन्यंत्रशत  
वारंतुद्दिने ॥ अन्वष्टक्यं यदज्ञान्यं संपूर्णयाति सर्वदा इति ॥ इदं द्वादशुपेताभ्यामपि कार्यामिति श्राद्धमथूवे ॥ अत्राष्टम्यपराह व्यापिनीयाह्वा ॥  
श्राद्धपार्वणवद्भवेत् इत्याश्रलायनोक्तेपराह्णकालत्वाच्चपार्वणस्य ॥ अत्रकामकालौविश्वेदेवौ ॥ इष्टिश्राद्धेऽक्रतुदक्षवष्ट्यां कामकालकौ इति  
सायणीये शंखोक्तेः ॥ इत्यष्टकाऽन्वष्टकाश्राद्धम् ॥ ॥ अथग्रहणनिमित्तकश्राद्धम् ॥ ( तत्र ऋष्यशृङ्गः ) चंद्रमूर्यग्रहेयस्तु श्राद्धं विधिवदाचरेत् ॥  
तेनैव सकलपृथ्वीदत्ताविप्रस्यवैवकरे ॥ ( महाभारतेपि ) सर्वस्वेनापि कर्तव्यं श्राद्धं वैराहुदर्शने ॥ अक्षुर्वाणस्तु नास्तिक्याप्यङ्कुरैर्विषमै  
दति ॥ ( विष्णुः ) राहुदर्शनं दत्तं हि श्राद्धमाचंद्रतारकम् इति ॥ एतच्च श्राद्धं स्पर्शकाले आमात्रेनेहमावाकार्यं न त्वन्नेन ॥ ( तथाच पारिजाते  
बृहवसिष्ठः ) त्रिदशाः स्पर्शसमयेतुल्यन्ति पितरस्तथा ॥ मनुष्यामध्यकालेतुभेताक्षकालेतुराक्षसाः इत्युक्तवात्स्पर्शकाले करणीयम् ॥  
( हेमाद्रौ शतातपः ) आपन्नमग्नौ तीर्थे च चंद्रमूर्यग्रहे तथा ॥ आमश्राद्धं प्रकुर्वीत हेमश्राद्धमथापि वा इति ॥ अस्यार्थः ॥ आपदाति आत्म  
नो देशकालादीनां चोपश्रवावथाकथिता तेन स्वाशक्तौ देशकालोपलब्धपाकक्रियया श्राद्धासंभवनयाऽऽमश्राद्धं कर्तव्यम् ॥ अनन्नाविति पाक  
योग्याऽग्निरहितः न त्वन्मग्नौ तस्मात्ताग्निरहितः ॥ तीर्थे इति पाकाऽसामर्थ्ये सति चंद्रमूर्यग्रहे भोक्तुरभावे इत्यर्थः ॥ आशौचमध्यपेक्षान्



श्राद्धादि कार्यम् ॥ ( तथाच वृद्धवसिष्ठः ) सूतकमृतकचैव नदोषोरादुदर्शनं ॥ तावदेवमेच्छुद्धिर्यन्मुक्तिर्नदृश्यते इति ॥ ग्रहणदिने  
 वार्षिकश्राद्धप्राप्तावपि आमन्त्रेणवकुर्यात् ॥ ( तथाच निर्णयसिधायिप्रयोगपारिजाते गोभिलः ) दर्शविग्रहोपत्रोः प्रत्याब्दिस्फुपास्थितम् ॥  
 अन्नानसंभवेऽप्युदामेनवासुत इति ॥ ननु आमश्राद्धं प्रकुर्वीतमासं वत्सराहते इति ॥ अन्नैवाब्दिकं कुर्याद्वैवासेन न काचिदिति  
 मरीचिलौगाक्षिर्यानिषेधात् ॥ कथमासात्रेनश्राद्धमिति चेन्मरीचिलौगाक्ष्यादिवचनानि ग्रहणदिनतिरिक्ताविषयाणीति हेमाद्रिप्रभृतिनि  
 बंधेषूक्तत्वादिति चेद्ब्रूमः ॥ आमहेमश्राद्धे पिंडादिविचारः पूर्ववोक्तः ॥ एतच्चासमश्राद्धहोमं चार्पणविधिर्यार्पणार्पणवदेवकर्तव्यमि  
 ति मदनपारिजातः ॥ अत्रकेषुचिन्मंत्रेषुहाभवति ॥ ( अतएवतत्रैव मरीचिः ) आवाहनेस्वधाकारे मंत्राज्ज्वाविमर्जने ॥ अन्यकर्मण्यवह्वाः  
 स्युरामश्राद्धविधिः स्मृत इति ॥ अस्यार्थः ॥ आवाहने आवाहनमंत्रे उशब्रुशत आश्वपितृन्हाविषे अत्तवे इति पदस्थानेनैकैकैव्ये इति  
 पदस्योहः कर्तव्यः ॥ स्वधाकारेणोमवः पितरइषे इत्यादिमंत्रे इषे इति पदस्थाने आमद्रव्ययेति पदस्योहः ॥ विसर्जने वाजवाजे इति मंत्रे तृता  
 यातपार्थिभैस्त्वयनौरीत्यत्रतृताइति पदस्थाने तृत्यत इत्यहः कार्य इत्यर्थः ॥ अथपिंडदानेनिषिद्धकालाः ॥ ( तत्राह हेमाद्रिपुलस्त्यः )  
 अयनद्वितयेऽप्येव विषुवद्वितये तथा ॥ युगादिषु च समासु पिंडनिष्कर्षणहाते इति ॥ एतेषु कालेषु श्राद्धं पिंडनिर्वपणहाते पिंडदानं विनाकर्त्त  
 व्यमित्यर्थः ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) सम्यं स्वपिंसंक्रांतिषु ण्डनिष्कर्षणं विनाश्राद्धमुक्तम् ॥ अयनद्वितयेऽप्येव विषुवद्वितये तथा ॥ संक्रातिषु च स  
 र्व्यासु पिंडनिर्वपणहाते इति ॥ एतत्कालनिमित्तकएवश्राद्धे पिंडनिष्कर्षणप्रतिषेधोऽयं नमृताहादिनिमित्तकप्रसंगादयनादिषु पतिते इत्यर्थः ॥  
 ( बृहत्पाराशरः ) युगादिषु मघायां च विषुवत्ययने तथा ॥ भरणीषु च कुर्व्वत पिंडनिर्वपणं नहि इति ॥ इति श्रीबीकनेराज्यान्तर्गत

श्रीरत्नगढनगरनिवासिनाश्रीविशिष्टकुलोद्भवेनश्रीरामकृष्णऽमरचंद्रपौत्रेणश्रीकस्तूरीचंद्रमुनाश्रीमहादेवभक्तवाजसनेयिना । पण्डितगौड  
 श्रीचतुर्थीलालशर्मणाप्रणितेगौडियश्राद्धप्रकाशपर्वसंदेमुख्यकरणानुकरूपपावणादिप्रयोगनिर्णयकथननामप्रथमप्रकरणम् ॥ १ ॥  
 श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथप्रतर्तुमिकश्राद्धनिर्णयविधायकं द्वितीयप्रकरणम् ॥ तत्रतावद्व्येष्टिफलमाह ( गारुडे विष्णुः ) किंदत्तेर्बहुभि  
 दानैः पित्रोर्त्येष्टिमाचरेत् ॥ तेनाग्निष्टोमसदृशं पुत्रःफलमवाप्नुयात् ॥ ( तत्रैव ) आत्मावैपुत्रनामास्तिपुत्रस्त्रातायमालयातलायेत्यितरघो  
 रात्तेनपुत्रःप्रचक्षते ॥ अतोदयंचपुत्रेणश्राद्धमाजावितावधि ॥ अतिवाहस्तदाप्रेतोभोगान्वलभतेसदा ॥ तत्रैव ॥ धृत्वास्कंधेस्वपितरं यः  
 भक्षानायगच्छति ॥ सोश्चमेधफलंपुत्रो लभतेचपदेगदे ॥ ( दिवोदासीये ) दृष्ट्वास्थानस्थमासन्नमर्धेन्मीलितलोचनम् ॥ भूमिस्थंपितरंपुत्रो  
 यद्धिदानंप्रदापयेत् ॥ तद्विशिष्टगयाश्राद्धदधेमधशतदुपाति ॥ दानं मोक्षयेत्तुक्लृणधेनुपापधेन्वादि इत्यर्थः ॥ ( तथाच व्यासः ) आसन्नमु  
 ल्युनोदेयागौःसर्वस्सतुपूर्ववत् ॥ तदभावेतुगैर्वनरकोत्ताराणायवै ॥ तदायदिनशक्रोतिदत्तुर्वैतरणंतिगाम् ॥ शक्नोऽन्योऽरुभक्तदादत्वाद्दद्या  
 च्छेयोमृतस्यच ॥ ( मदनरत्नेजातूकर्ण्यः ) उत्क्रान्त्यादीनिदानानिदशदद्यान्मृतस्यतु ॥ गोभूतिलहिण्यज्यवासोधान्यगुडानिच ॥ राय्यं  
 लवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात् ॥ एतानिदशदानानिनरणांमृत्युजन्मनोः ॥ कुर्याद्भ्युदयार्थमुपेतोपिहपरत्रवै इति ॥ ( अष्टौदानानि  
 गारुडे ) तिललोहंहिरण्यंच कार्पासंलवणंतथा ॥ सप्तधान्यक्षितिर्गावै एकैकपावनंस्मृतम् ॥ एतान्यष्टौमहादानान्युत्तमानिद्विजातये ॥  
 आतुरेणतुदयानि शय्यादानंतथैवच ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) उत्क्रान्तैरितरैर्यैश्चदशदानानिचैवहि ॥ प्रेतोपिक्लृत्वातंप्रतश्वयमेषमदहयेत् ॥  
 ( अथदाहादिकर्म ॥ तत्र तावन्मित्रयमाणस्य कृत्यं ( बृहद्गारुडे ) ॥ आसन्नमरणज्ञात्वा पुरुषंनपयेत्ततः ॥ गोमूत्रगोमयसुमृत्तीथैदिक

कुशोदकैः ॥ वाससीपरिधायार्थयेतदुचिनीशुभे ॥ दर्भानादौ समास्तीर्थं दक्षिणाश्राविकीर्य च ॥ तिलान्गोमयलतायाभूमौ तत्र  
निवेशयेत् ॥ प्रागुदकशिरसं वापि मुखे स्वर्णविनिक्षिपेत् ॥ शालग्रामशिलातत्र तुलसीचखगेश्वर ॥ विधेयं सन्निधौ सार्पिर्दीपस्य ज्वलनपुनः ॥  
नमो भगवते वासुदेवायेति जपस्तथा ॥ समभ्यर्च्य हृषीकेशं पुष्पधूपादिभिस्ततः ॥ प्रणिपातैः स्तवैः ण्यैः ध्यानयोगेन पूजयेत् ॥ दत्त्वाद्वा  
नंच विधेयो दीनानाथेभ्य एव च ॥ पुत्रो भित्तकले च क्षेत्रध्यान्यधनादिषु ॥ निवर्तयेन्मम त्वंच विष्णोः पादौ हृदि स्मरन् ॥ उच्चैर्गुरुभूक्तचय  
दिश्रेष्ठापदस्तथा ॥ पुत्राद्याः प्रपठेयुस्ते प्रियमाणे निजेने ॥ (छंदोगपरिशिष्टे) दुर्बलं स्नायिष्वत्तु दुर्बलं चैलाभिसंवृतम् ॥ दक्षिणाशिरसं पू  
मौर्वाहिभक्त्या निवेशयेत् ॥ घृतेनाभ्यक्तमाश्राव्य सक्त्रमुपवीतिनम् ॥ चंदनोक्षितसर्वांगं मुमनोर्भिविघ्नपतिम् ॥ हिरण्यशकलान्यस्य क्षिप्वाच्छि  
द्रेषु सप्तसु ॥ मुखे वस्त्रांपि धयानि न ह्यथुः सुतदयः ॥ इति ॥ अत्र दक्षिणाशिरसं सामगपरं सामग्र्यं धेषु तत्र शिरस्त्वभिनिश्चा  
द्वत्तत्त्वोक्तेश्च ॥ चितायां दाहकाले तु दक्षिणाशिरसमुत्तानत्वं च कार्यम् ॥ (तथा च कात्यायनस्मृतौ) अथ पुत्रादिराहृत्य कुयद्वा रुचयं महत् ॥  
भूपद्रेक्षु चोद्रेषश्चाक्षित्या दिलक्षणे ॥ तत्रोत्तानं निपात्यै नंदक्षिणाशिरसं मुखे इति ॥ (तत्रैव) अद्धमादहनं कार्यमासीने दक्षिणा मुखः ॥  
सव्यजान्वाच्यशनकैः सतिलं, पददानवत् ॥ इत्यन्यत्रोक्तम् ॥ केचित् उत्तानत्वं साग्निपरमितिवदन्ति तत्रा ॥ सदग्धव्यउपेतश्चेद्वाहिताग्निार्थ  
वदति ॥ स्मृतिकौमुद्रां मदनपालेन निगम्येयाहिताग्निवद्वाहोक्तेस्तस्य च कात्यायनेन तत्रोत्तानं निपात्यै नंदक्षिणाशिरसं मुखे इत्युत्तानत्वोक्ते  
निगम्येयमिति वदति ॥ श्राद्धतत्त्वे तु दक्षिणाशिरसं सामग्र्यमुत्तानं संप्रत्येत नार्यास्तूतानंदेहत्वं सामगरेषां दक्षिणाशिरसमुत्तानत्वं च इत्यु  
क्तं सामगरेषां यजुर्वेदिनामित्यर्थः ॥ तत्राऽऽस्माकं यजुर्वेदीयगोदानंतु दक्षिणाशिरसमुत्तानत्वं च पूर्वोक्तकात्यायनवाक्यात् परंपरासिद्धत्वात्

लोकरहाभयाच्चेतिसिद्धांतः॥ (मरणसमयसंन्यासमुक्तांगारुडे विष्णुना) आसन्नमरणेकुर्यात्संन्यासंचद्विधानतः॥ आवर्तेतपुनर्नसौब्रह्मभूयाय  
 कल्पते ॥ आसन्नमरणमन्यश्चेतीर्थप्रतिनीयते ॥ तीर्थप्राप्तौभवेन्मुक्तिम्रियेत्यदिमार्गः॥ पदेपदेकृतुसंभवेतस्यनसंशयः ॥ अथमरणोत्तर  
 कर्म्मोत्पत्तिप्रतीतिव्युत्पादनावपनमाह (मदनरत्ने गालवः) प्रथमेहनिकत्तव्यवपनंचातुभाविनाम् ॥ प्रेतस्यकेशश्मश्रादिवापयिवाथदहयेत् इति॥  
 अनुभाविनःपुत्राःकनिष्ठप्रातरश्च इत्यर्थः॥देवलोपि॥क्रियांचकुरुतेयस्तुतद्दिनेतस्यमुंडनमिति॥ (तदनंतरं बृहद्गारुडे) गतप्राणंततोज्ञात्वास्ना  
 त्वापुत्रादिगश्रुतम्॥ शवंजलेनशुद्धेनक्षालयदविचारयन् ॥ परिधाप्याऽहतेवस्त्रेचंदनैः प्रोक्षयेत्तनुम् ॥ ततोमृतस्यस्थानेवैष्णोकोद्दिष्टसमाचरेत् ॥  
 एकोद्दिष्टपिंडदानमात्रमित्यर्थः॥ ( तत्रैव ) मृतस्योक्तातिसमयेषट्पिंडांशक्रमशोददेत् ॥ मृतस्थानेतथाद्धारिचत्वेतादर्थ्यकारणात् ॥ विश्रामे  
 काष्ठचयनेतथासंचयनेचषट् ॥ काष्ठचयने चितायाम् संचयने अस्थिसंचयने इत्यर्थः ॥ मृतिस्थानेश्वानाभूमिस्तुष्यतिदेवता ॥ पांथो  
 द्धारिभवेनेनप्रीतास्याद्भ्रातृदुवता ॥ चत्वरसेचरस्तेनतुष्यद्भ्रातृदुवता ॥ विश्रामभूतसंज्ञायतुष्टास्तेनदिशोदश ॥ चितायांसाधक  
 इतिसंचितौप्रीतउच्यते इति ॥ अत्रदाल्भ्येनतुचत्वरपिंडनोक्ततस्थानेकुकुक्षिपिंडमुक्तं अत्रविकरूपेषुद्वाचारतः परिहार्यः ॥ ( अनंतरमपि  
 गारुडे ) तिलदर्भघृतैांसिगृहीत्वातुमुतादयः ॥ गार्थायमस्यसूक्तंवाप्यधीयानाव्रजंतिहि ॥ अहर्हनीयमानोगामश्चरुषंषम् ॥ वैवस्व  
 तोनतृप्येतसुरयाइदुर्भूतिः ॥ इमांगाथामुपेतैतिसूक्तंत्रापथिसंपठेत् ॥ दक्षिणस्यादिश्वरण्यव्रजेषुःसर्व्वबांधवाः ॥ ततःशनैर्भूतलवै  
 दक्षिणाशिरसंशवम् ॥ स्थापयित्वाचिताभूमौ पूर्वोक्तंश्राद्धमाचरेत् ॥ तुणकाष्टतिलाज्यादि स्वयंनिन्युःसुतादयः ॥ शुद्धानीतैःकृतकर्म  
 सर्व्वभवतिनिष्फलम् ॥ प्राचीनावीतिनाभाव्यं दक्षिणाभिमुखेनच ॥ वेदीतत्रप्रकर्तव्या यथाशस्त्रमथांडज ॥ संसृज्यचोपलिप्यथ उ

छिद्योद्धृतवेदिकाम् ॥ अभ्युदयोपसमाधायवह्नित्रविधानतः ॥ पुण्याक्षतैश्चसंयुज्यदेवंकव्यादसंज्ञकम् ॥ लोभभयस्त्वनुवाकेनहोमं  
 दुर्यधिविधि ॥ त्वंभूतकृजगद्योनिस्त्वंलोकपरिपालकः ॥ उपसंहृतस्मान्चमनंस्वर्नयामृतम् ॥ इतिकव्यादम्यच्यं चित्तैः  
 कारयेत् ॥ श्रीखंडुलसीकौष्ठैः पलाशाऽथत्यदाशुभिः ॥ चितामारोप्यतप्तं पिंडतत्रप्रदायेत् इति ॥ अग्निदानमंत्रो वागहुराणे )  
 त्वातुदुष्करंमजानतवाध्यजानता ॥ मृत्युकालवशंप्राप्यनरपंचत्वमागतम् ॥ यमार्धमसमाशुक्तं लोभमोहसमावृतम् ॥ दहेयंस्वर्गाभा  
 णिदिव्यालोकानुसगच्छतु ॥ जलमानंमहावाह्निशिरस्थानप्रदायेत् ॥ चतुर्वर्णेषुसंस्थानमेवंभवतिपुत्रिके ॥ ( गारुडे ) अद्वेदो  
 तथादेहेदयादाज्यहुतितः ॥ अस्मात्त्वमधिजातोसि त्वदयंजायतांघुनः ॥ असौस्वर्गायलोकाय स्वाहाज्यलतुपावकः ॥ एवमाज्याहुति  
 दत्त्वातिलमिश्रांसमत्रकाम् ॥ रोदितव्यंतोगाढमंत्रस्तस्यमुखंभवेत् इति ॥ ( द्वाहानंतरंकरव्यतापि तत्रैव ) ततःप्रदक्षिणंमुखस्वाचित  
 प्रस्थानंवेक्षकाः ॥ कनिष्ठपूर्वाःस्नानार्थं गच्छथुःसूक्तजापकाः ॥ ततोऽजलसमीपेणु गत्वाप्रक्षाल्यचांशुकम् ॥ प्राचीनवीतिनः सर्वेविशे  
 र्मानिनेजलम् ॥ अपनःशिशुचक्षुमनेनपितृदिङ्मुखः ॥ जलवधटनचैवनकुशुःस्नानकारकाः ॥ ततस्तटेसमागत्य शिखांबद्धाङ्ग  
 कुशान् ॥ दक्षिणायानवहस्तयास्तु कृत्वाथसतिलजलम् ॥ आदायांजलिनायाम्यां दुःखपितृकतीर्थतः ॥ एकवारंत्रिवारंवादशवारप्रयागि  
 वा ॥ भूमावश्मनिवासर्वे क्षिपेयुर्गयताःस्वगा ॥ तृयंतुत्यतांवापि तर्पयात्पुनरितिष्ठताम् ॥ प्रेतैतदमुक्यांत्रिभुक्तेष्वेकरस  
 जरेत् ॥ ( कात्यायनोपि ) ॥ अथानवेक्षमत्यापः सर्वेएव शवस्पृशः ॥ स्नात्वा सूचलमाचम्य द्वापरस्योदंकरस्थले ॥ गोत्र  
 नामपदीतिच तर्पयामीत्यनंसारम् ॥ दक्षिणप्रागनुशानुकृत्वा सतिलमुत्थकरुहत् इति ॥ ( पठानसिरपि ) प्रेतमनसाध्यायन्दक्षिणागुः

स्त्रीदुदकांजलीविनयेत् इति ॥ एतत्तलेदुकदानंचाद्युग्मादिनेषुकार्यम् ॥ प्रथमतृतीयपंचमसप्तमनवपेदुदक्रिया इतिगौतमस्मरणात् ॥  
 प्रतोपकारविशेषापश्यातुयाम्याशौचदिनानि तावदुदकदानवृत्तिः कार्या ॥ ( तथाच प्रचेताः ) दिनेदिनेजलिपूर्णद्रव्यात्येतेकार  
 णात् ॥ तावदृद्धिश्चकर्त्तव्यावन्पिडसमाप्यते ॥ इति यावद्दशमः पिंडः समाप्यते तावज्जलिद्विद्धिः कार्येत्यर्थः ॥ अज्ञातिभरपि  
 क्वचिदुदकदानकर्त्तव्यम् ॥ ( तदह याज्ञवल्क्यः ) एवंमातामहाचार्यप्रतानादुदक्रिया ॥ कामोदकंस्वप्रतास्वस्त्रियश्चुर  
 त्विजाम् ॥ इति ॥ प्रप्ता परिणीतादुहितृभगिन्यादिः स्तस्त्रीयो भगिनेयः ॥ अप्रप्रतानमातामहादीनामपिडवदुदकदानं नित्यं  
 कार्यम् ॥ सव्यादीनांतुकासतः ननित्यतया अकरणेप्रत्यवायाभावादित्यर्थः ॥ क्विबभर्तुर्गर्भदुहृच्छीपतितैरुदकंनकार्यम् ॥ ( तथाच मनुः ) क्ली  
 बान्धानेदंकंकुर्युःस्तेनप्राप्त्याविधर्मिणः ॥ गर्भभर्तुर्दुहृश्चैवसुराप्यथैवयोषितः ॥ उदकदानानतरपिडदानमपिकर्त्तव्यम् ॥ ( तथा विष्णुः )  
 प्रेतस्योदकंनिवपणंक्त्वा एकीपिंडंकुरेशुदुहुरिति ॥ ( अनंतरं गारुडे ) ततउत्तीर्योदकद्वैवद्वान्निपरियायच ॥ स्नानवस्त्रसंस्कृत्य  
 ड्यवविशेयुःशुचिभूतले ॥ अश्रुप्रतनंकुर्यात्तदन्वाद्दहजलंजलिम् ॥ श्लेष्माशुर्बध्वैर्मुक्तप्रतोभुक्तेयतावशः ॥ अतोनरोदितव्यं  
 द्विक्रियाःकार्याःस्मरशक्ति इति ॥ पिंडोदकदानानंतरंबध्वैरातुराशमनकार्यम् ॥ ( तथाच याज्ञवल्क्यः ) कृतोदकान्सपुर्तोर्णिन्मृदुशाद्वलं  
 स्थितान् ॥ स्नानानपयदेवस्तानिनिहासेःशुरातनैः इति ॥ इतिहासस्तुतैर्नवदर्शितः ॥ मानुष्येकदलीस्तेभेनिःसारेसारभागणम् ॥  
 करोतियःसंसंभूजालुदुदसन्निभे ॥ पंचधासंभृतःक्रयेयदिपंचत्वमागतः ॥ कर्मभिःस्वशरीरेत्यस्तत्रकापारदेवता ॥ गंत्रीवसुमतीना  
 शमुदधिदैवतानिच ॥ श्रेतमख्यःकथंनशंभयेलोकोनयात्यति इति ॥ ( कात्यायनोपि ) माशाकेंकुरानिनयेत्तस्मिन्प्राणधर्मेणि ॥

धर्मकुरुतयेत्तेनयोः सहगमिष्यति ॥ (याज्ञवल्क्यगरुडपुराणयोः) एवंसंश्रययेत्तत्रमृदुशालद्रुमसंस्थितात् ॥ तेऽपिसंश्रुत्यगच्छेयुर्हंबाल  
पुरःसराः ॥ विदुश्चार्जुनपत्राणिनियताद्वाविश्वमनः ॥ आचम्यवाहसलिलगोमयगैरिस्पणत् ॥ दूर्वाप्रवालवृषभमन्यदप्ययमंगलम् ॥ प्रवि  
शेयुः समालभ्यकृत्वाश्मनिपदर्शनैः ॥ तेष्विदृशहंसवैमुताद्याश्चर्षिपङ्का इति ॥ अयाशौचनियमाः ॥ (तथाच गरुडे) क्रीतलब्ध्या  
शनाःसर्वे स्वपयस्तेष्वप्यवृक्थ ॥ अक्षारलवणात्राःस्युर्निमज्जेयुश्चेत्नहम् ॥ अमांसभोजनाश्चाधःशयिरन्वन्नचारिणः ॥ परस्परनंसंष्ट  
ष्टादानाध्ययनवर्जिताः ॥ मलिनाधोमुखादीनाः सर्वभोगविवर्जिताः ॥ अंगसंवाहनकेशमार्जनवर्ज्ययतिते ॥ मृनयपत्रजवाभिर्मुंजीरिंतेच  
भाजने ॥ उपवासंतुतेकुयुरकाहमथवाग्न्यहम् ॥ (मरीचिः) प्रथमेद्वितीयेचसप्तमदशमेतथा ॥ ज्ञातिभिःसहभोक्तव्यमेतत्प्रतेषुदुल  
भम् ॥ भोजनचद्वैव ॥ क्रीत्वालब्ध्यावादिवात्रमश्रुगिरितिपारस्करोक्तः ॥ (शंखः) दानंप्रतिग्रहाहोमः स्वाध्यायःपितृकर्मच ॥ प्रेत  
पिंडक्रियावर्ज्यमाशौचविनिवर्तते ॥ इतिदाहप्रयोगः ॥ प्रथमेहनिष्काहंअहंप्रेतमुद्दिश्यजलंक्षीरंचाशेरिक्षयादौमृनमयेपत्रेस्थापनी  
यम् ॥ (तदाह याज्ञवल्क्यः) जलमेकाहमाकाशेस्थायंक्षीरचमनये इति ॥ (गरुडपुराणपि) मृयैस्तमागतेतादृश्यभशानेवाचतुष्षथे ॥  
दुग्धंचमृमयेपात्रेतोयंद्व्यादिनत्रयम् ॥ अपक्कंमृण्यपत्रंक्षीरनीरप्रयुतम् ॥ काष्ठत्रयंशुण्वद्धृत्वाभमंत्रपठेद्विमम् ॥ भमशानाऽनलदग्धोसि  
परित्यक्तोसिर्बाधैवः ॥ इदंनीरमिदंक्षीरमत्रस्नाहिमिदंषिष इति ॥ अथास्थिसंचयनम् ॥ तच्चप्रथमतृतीयसप्तमनवमदिवसानामन्यतमेस्मि  
न्कार्यम् ॥ (तथाचपराशरमाधवे संवत्तः) प्रथमेऽद्वितीयेवाप्तमेनवमपिवा ॥ अस्थिसंचयनकार्यदिनेतद्वाज्रैःसह ॥ तदूधमंगसंस्पर्शः  
सर्पिण्डानांविधीयते ॥इति॥ तत्रविप्राणांविशेषतश्चतुर्द्विह ॥ राज्ञांपंचमे ॥ विशानवमे शुद्धाणांदशमदिनेकार्यम् ॥ (तथाचब्रह्मपुराणे) चतुर्थे



ब्राह्मणानंतुपंचमेहनिभूभुजाम् ॥ नवमैश्वर्यजातीनां द्वाणां दशमात्परम् ॥ कर्तव्यंतुनैः श्राद्धशकालाद्विरोधतः ॥ इति ॥ ( माधवे  
 विष्णुरपि ) चतुर्थेदिवसेऽस्थिसंचयनंकुर्युः तेषांगान्भिसिप्रक्षेपः ॥ इति ॥ ब्राह्मणादीनांचतुर्थादिदिनेष्वसंभवेनैवतौक्तप्रथमादिदिवसेष्व  
 स्थिसंचयःकर्तव्यः ॥ अहशौचेतृतीयेहिसंघासद्यःशौचेदाहानंतरमेवकर्तव्यः ॥ ( तथाच ब्रह्मपुराणमदनरत्नाऽपराक्येषु ) सद्यःशौचेतथै  
 काहेसद्यःसंचयनंभवेत् ॥ अहशौचेतृतीयेहिकर्तव्यस्वस्थिसंचय इति ॥ ( अस्थिसंचयनेतिथिवारनक्षत्रनिषेधोयमेनोक्तः ) भौ  
 मार्कभेदवारेषुतिथियुग्मेविवर्जयेत् ॥ वज्रयेदकपादक्षेद्विपादक्षेऽस्थिसंचयम् ॥ प्रदातृजनमनक्षेत्रादक्षैविशेषतः ॥ ( माधवाये बृद्धम  
 नुः ) वसंताद्वादितः पंचनक्षत्रेषुत्रिजन्मसु ॥ द्वित्रिपादक्षयोश्चैवंनंदायांचविशेषतः इति ॥ ( तत्प्रकारस्तु ब्रह्मपुराणे ) श्मशा  
 नदेवतायागं चतुर्थेदिवसेचरेत् ॥ मृन्मयेषुचभण्डेषु कुम्भेषुचकण्डेषुवा ॥ सपक्वैर्भक्ष्यभाज्यैश्चपायसैःगानकैस्तथा ॥ फलैर्मूलैर्वनोत्थै  
 श्वपूज्याःक्रव्याददेवताः ॥ धूपोदीपस्तथामाल्यमध्यद्वयंगान्वितैः ॥ तत्रपात्राणिपूर्णानिश्मशानाग्नेःसमंततः ॥ निवेदयद्र्वैतत्त्व्यंतैःसर्वैरनहं  
 कृतैः ॥ नमःक्रव्यादमुख्येभ्योदेवेभ्यइतिसर्वदा ॥ येश्मशानेदेवाःस्युर्भागवतःसनातनाः ॥ तेऽस्मत्सकाशाद्ब्रह्मनुबलिमष्टांगमक्षयम् ॥ प्रेतस्या  
 स्यशुभल्लोकान्प्रयच्छतुचशश्वतान् ॥ अस्माकमायुरारोग्यसुखंवददतांचिरम् ॥ एवंकृत्वाबलिनसर्वान् क्षीरेणाभ्युक्ष्यवाग्यतः ॥ एवंदत्त्वा  
 बलिंचैवदद्यात्पिण्डत्रयबुधः ॥ एकंश्मशानवासिभ्यःप्रेतयैवतुमध्यमम् ॥ तृतीयंतसस्विभ्यश्चदक्षिणांस्यमादरात् ॥ ततोयक्षिबहूक्षार्थां  
 शाखाभादायवाग्यतः ॥ प्रेतस्यास्थीनिगृह्णातिप्रधानाद्भ्रातृनानिच ॥ शिरसोवक्षसःपाण्योः पार्श्वभ्यां वैषपादनः ॥ पंचगव्यं न संनयः ॥ क्षौ  
 मवस्त्रेणैवैष्टय ॥ प्रक्षिप्य मृन्मयेभण्डेन वसाच्छादयन्बुधे ॥ अरण्ये बृहत्तुल्यशुद्धे संस्थापयत्यपि ॥ गृहीत्वास्थीनि तद्भस्म नात्वा तोयं वि



निक्षिपेत् ॥ तथै गंगादिके ततःसंभाजनंभूषः कर्तव्यगामयाबुभिः ॥ पूजाचतुष्पुष्पधूपद्विवर्लिभिःपूवतकमात् इति ॥ ( अथतीर्थेऽ  
स्थिक्षेपविधिरपि ब्राह्मे ) तत्स्थानाच्छनकैर्नत्वा कदाचिज्जाह्नवीजले ॥ कश्चित्क्षिपतिसत्पुत्रादोहित्रो वासहोदरः ॥ मातृकुलपितृकुलं  
जयित्वानराधमः ॥ अस्थीन्यन्यकुलोत्थानिनीत्वाचद्रायणंचरेत् इति ॥ एतच्च द्रव्यादिलोभेन नयतः न श्रेयोर्थेन इति हारीश्वरः ॥  
( गंगादिप्रक्षेपप्रकारो ब्रह्माण्डपुराणे ) स्नात्वाततः पंचगव्येनसिक्काहिरण्यमध्वज्यतिलैश्चयोज्य “ ततस्तुष्टीत्पिण्डोटेनिवायपथ्यन्दिशं  
तगणेपरुहाम् ॥ नमोस्तुभयमार्यवदेत्प्रविध्यजलसंप्रोतइतिक्षिपेच्च ॥ उत्थायभास्वतमेवसूयं सदक्षिणाविप्रमुवायदद्यात् ॥ एवंकृते  
प्रेतपुरस्थितस्य स्वर्गगतिः स्यात्तु महेंद्रतुल्या ॥ क्षीणेपुण्येषुपतान्दिवस्थो नैवविदोस्यच्यवनद्युलोकात् ॥ ( यमस्मृतौ ) गंगतोयेषुयस्या  
स्थि क्षिप्यतेऽनुभक्तमर्णः ॥ नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्सनातनात् ॥ ( गारुडपि ) यावदस्थिमनुष्यस्य गंगतोये निमज्जति ॥ तावद्वै  
सहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते इति ॥ इदमधिमासशुक्रास्तदैनकार्यं दशाहमध्येतुनदोषः ॥ ( तथाच मदनरान्नेवृद्धमनुः दशाहस्यान्तरेयस्य  
गंगतोयेऽस्थिमज्जति ॥ गंगायामरणयादृक्पादफलमवाशुयात् इति ॥ अथप्रेतोऽपिण्डप्रयोगः ॥ पिण्डोदकदानंच यावदशौचकार्यम् ॥ तथाच  
( विष्णुः ) यावदशौचंतवत्प्रतस्यादृक्पादंचददुः ॥ ( पारस्करोपि ) प्रेतभ्यःसर्ववर्णभ्यःपिण्डान्दद्याद्दशैश्वर्य ॥ ( हेमाद्रौ ब्रह्माण्डे ) प्रेतीभूतस्यसतंत  
भुविपिण्डजलंतथा ॥ सतिलसकुशं दद्याद्ब्राह्मिर्जलसमीपतः ॥ इति ॥ उदकदानवात्पिण्डदानंनसर्वैः कर्तव्यमपितुपुत्रेणैव तदभावेसन्निहितेन  
सर्पिडेन तदभावेमातृसर्पिडादिना ॥ ( तथाह गौतमः ) पुत्राभावेसर्पिडाः मातृसर्पिडाः शिष्याश्चक्षुःतदभावेऽक्षिविगाचार्यौ इति ॥ पुत्रे  
ष्वपिज्येष्ठेष्वपिण्डं दद्यात् ॥ ( तथाच मरीचिः ) सर्वेनुमतिंकृत्वाज्येष्ठैरेवतुयस्कृतम् ॥ द्रव्येणवाऽविभक्तेनसर्वैर्वकृतमभवेत् इति ॥ यदा

पुत्राऽसन्निधानादिनाऽन्यः पिण्डदानं करोति तदा दशाहमध्यपुत्रसन्निध्यपिसप्तदशाहं पिण्डदद्यात् ( तदुक्तं गृह्यपरिशिष्टे ) असगोत्रः सगोत्रो  
 वा यदि द्वायदिव्यापुमान् ॥ प्रथमेऽह्नियो दद्यात्सदशाहं समापयेत् ॥ ( शुद्धितत्वे वायुपुराणेपि ) असगोत्रः सगोत्रो वा यदि द्वायदिव्यापुमान् ॥  
 यश्चाभिदाता प्रेतस्य पिण्डं दद्यात्स एव हि ॥ ( श्राद्धदेशः भविष्योत्तरे ) गृहद्वारे शराने च तोयं देवहते तथा ॥ यत्राद्यो दीयते पिण्डस्तत्र  
 सर्वसमापयेत् ॥ ( आदित्यपुराणे ) शुचौ देशे तु नद्यां वा जनातोये प्रवाहयेत् ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) ग्रामाद्बहिः श्वत्तं जलशयसमापतः ॥  
 पिण्डदानं दशाहानि प्रतारण्य समाश्रितः ॥ अरण्ये पिण्डदानं तु मोहान्नक्रियते यदि ॥ तदगरे वमायाति प्रमीतः प्रथमेऽह्नि ॥ द्रव्य  
 नियमो गरुडपुराणे ) शालिनासक्तुभिर्वा पिशाकैर्व्याथनं विन्यसेत् ॥ प्रथमेऽह्नियद्रव्यं तदेव स्याद्दशाहं क्रमम् ॥ ( भविष्योत्तरे ) ओदना  
 भिषसक्तूनां शाकमूलफलादिषु ॥ प्रथमेऽह्नियदद्यात्तद्दद्यादुत्तरेऽह्नि ॥ ( तद्विधिरादित्यपुराणे ) पितृशब्दं सर्वार्थं चैव न ग्रंथं जतिकं हि चित् ॥  
 उपतिष्ठतामर्थं पिण्डः प्रेतायेति समुच्चरेत् ॥ तूष्णीं धूपं प्रसेकं च दीपं पुष्पं तथैव च ॥ अशुद्धस्त्रिपुवणेषु इदं दद्यान्न संशयः ॥ ( ब्रह्मपुराणेपि )  
 मृन्मयं भांडमादाय नवं स्नातः सुसंयतः ॥ लगुडं सर्वदुष्टघ्नं गृहीत्वा तोयमानयेत् ॥ ततश्चोत्तरपूर्वस्याग्निप्रज्वालयेद्दिशि ॥  
 तंडुलप्रभृति तत्र त्रिप्रक्षाल्य पंचेत्स्वयम् ॥ सपवित्रैस्तिलैर्मिश्रं कृमिकेशविवाजितम् ॥ द्वारापतेततः क्षिप्वा सुशुद्धांगं गरुत्मत्तकाम् ॥ तत्पु  
 ष्पे प्रस्तरं दर्भान्याम्याग्रान्देशं संभवान् ॥ ततोऽवने जनं दद्यात्संस्मरन् गोत्रनामनी ॥ तिलसर्पिर्मधुक्षरैः संसिक्तं तमेव हि ॥ दद्या  
 त्प्रेतार्थं पिण्डं दक्षिणाभिमुखः स्थितः ॥ फलमूलगुडक्षरितिलैर्मिश्रं तु कुत्रचित् ॥ अर्घ्यैः पुष्पैस्तथा धूपैर्दद्यात्प्रेतायैश्च शीतलैः ॥  
 अर्णांतं तु मयैः शुद्धैर्वासोभिः पिण्डमर्चयेत् ॥ प्रयाति यावदाकाशं पिण्डाक्षपमयी शिला ॥ तावत्तत्संमुखं तिष्ठेत्पिण्डतो येन क्षेपेत्ततः ॥ एकतोया

अलक्षैवपात्रमकंचदीयते ॥ द्वितीयद्वतृतीयत्रयैश्चतुश्चतुरस्तथा ॥ पंचमेवंचषष्ठसप्तमसप्तएवच ॥ अष्टमष्टौचनवमेवदशमेदश ॥  
 येनस्युःपंचरशाशतोयस्यांजलयःक्रमात् ॥ तोयप्राणितवतिसंयुक्तानितिलादिभिः इति ॥ ( तत्रदशार्पिडानिषाद्यववाःहेमाद्रि  
 ब्रह्मगारुडेषु ) शिरस्स्वद्योनेपिडेन प्रेतस्याक्रियतेसदा ॥ द्वितीयेनतुकार्शिनसिक्काश्चसमासतः ॥ गलांसमुजवशांसि तृतीयेनयथाक्र  
 मम् ॥ चतुर्थेनतुपिडेन नाभिंलगुदाजिच ॥ जानुजंघे तथापादौ पंचमेनतुसर्वदा ॥ सर्वमार्णिषष्ठेन सप्तमेनचान्डयः ॥ दंतलोभाज्य  
 धुमेन वीर्यतुनवेमनच ॥ दशमेनतुपूर्णत्वं तृताक्षुर्द्विपश्यः इति ॥ ( अष्टमशचे दर्शपिंडदानप्रकारमाह पारस्करः ) प्रथमेदिवसेदया  
 यःपिंडाःसमाहितः ॥ द्वितीयेचतुरोदद्यादस्थसंचयनंतथा ॥ त्रैस्तुदद्यात्तृतीयेद्विष्वन्नादिक्षालनंतथा इति ॥ सव्याशौचविषयेतुग्रुपदर्श  
 पिंडदानमितिहेमाद्रौ ॥ ( अष्टमशौचे अंजलीनाह गारुडेविष्णुः ) यथाहिअष्टमशौचंतदांजलयोदश ॥ त्रयोऽंजलयश्चतुर्ग्रुपमेद्वान्वे  
 तदा ॥ चतुरस्तुद्वितीयेद्विद्वतीयेस्युक्षयस्तथा ॥ यदशतंजलिपक्षिन्नाद्योत्रशतदहनि ॥ चत्वारिंशद्वितीयेद्वि त्रिशद्वितीयेके  
 इति ॥ अथनवश्राद्धं तच्चविषमदिनेषुग्रथमतृतीयपंचमसप्तमनवमैकादशेषुकार्यम् ॥ ( तथाच गरुडपुराणे ) प्रथमेद्विद्वितीयेच पंचमसप्तमे  
 तथा ॥ नवमैकादशेचैव नवश्राद्धप्रकीर्तितम् ॥ ( बोधायनोपि ) मरणाद्विषमेषुदिनेष्वैकैकंनवश्राद्धंकुर्यात् इति ॥ एवमवश्राद्धं केचित्तुवति  
 तत्राप्रविषफलंभवति ॥ अकरणप्रत्यवायेनास्ति ॥ इच्छाचेकतेव्यभिचितिवृहद्व्येष्टिपद्धतौ ॥ अथप्रेतश्राद्धेषुकांचित्पदार्थानामनुग्रहम् ॥  
 प्रेतश्राद्धंतुयावत्सर्पिडनंतवत् ॥ सर्पिडकरणान्तातुज्ञयाप्रेतक्रियाबुधैरितिशातातपमरणत्वं तत्रतावत्प्रेतक्रियाऋजुदमेवकार्या ॥  
 ( तथाच हेमाद्रौ विष्णुपुराणे ) सर्पिडकरणयावद्दुर्भःपितृक्रियाः ॥ सर्पिडकरणदूर्ध्वद्विगुणवीधिवद्भवत् ॥ द्विगुणमैकहपरि

ल्यर्थः ॥ हेमाद्रिकारिका गारुडेषु ॥ आशिषोद्भिद्गुणदर्भो जपाशीःस्वस्तिवाचनम् ॥ पितृशब्दःस्वसम्बन्धः शर्मशब्दस्तथैवच ॥  
 पात्रालंभावाहश्च उल्मुकोल्लेखनादिकम् ॥ तृतिप्रश्नश्चविकिरःशेष प्रश्नस्तथैवच ॥ प्रदक्षिणविमर्गश्च सीमांतगमनतथा ॥ अष्टादशपदा  
 र्थाश्चप्रेतश्राद्धेविवर्जयेत् इति ॥ अस्यार्थः ॥ आशिषः गोत्रनोक्तवर्द्धतामित्यादिकाभिप्रेताः ॥ द्विगुणदर्भो द्विगुणभुङ्कताःमोटकरूपाः ॥ ज  
 पः पैंतृकःपुरुषसूक्तम् उदरीतामवइत्यादि ॥ नपैंतृकोजपःकार्य इतिप्रचेतःस्मरणात्॥स्वस्तिवाचनं स्वस्तिभवंतेब्रुवंतिवाचनम् ॥ पितृ  
 शब्दः स्वसंबंधश्चिती।अस्मत्पितःअस्मन्मातरित्यादि ॥ पितृशब्दंनकुर्वीतपितृहाचोपजायते इतिहेमाद्रावुक्तत्वात् ॥ प्रतायइत्यनेनप्रेतशब्दो  
 ऽत्रप्रयोज्यो नतु पितृशब्दइत्युक्तंभवति ॥ शर्मशब्दः अस्मत्पितरसुकशर्मज्ञित्यादि ॥ पात्रालंभः न्युञ्जाम्यव्यस्ताभ्यांपाणिभ्यांपृथिवी  
 तेपात्रमित्यादिनाकृतंकर्म ॥ अवागाहः विष्णोर्कव्यंरक्ष इत्यादि ॥ अंगुष्ठुआमर्णनिवेशनंच ॥ उल्मुकोल्लेखनादिकम् उल्मुकं येरूपाणीति  
 ज्वलदुल्मुकमंगारआमणम् ॥ उल्लेखनं अपहताअसुरइति सङ्कदेखाकरणम्॥आदिशब्देन सङ्कदाच्छिन्नकुशास्तरणंज्ञेयम् ॥नसङ्कदाच्छिन्न  
 कुशाः किंतुसमूलाःकुशाइतिहेमाद्रौभृगुस्मरणात् ॥ तृतिप्रश्नः स्वादितं सुस्वदितमितिकर्म ॥ स्वादितंचनोदाहरोदितिहेमाद्रौप्रचेतस्मर  
 णात् ॥ विकिरः अग्निदग्धाइतिमंत्रेण।स्रोतसर्जनम् ॥ विकिरंनस्वधाकारमितिवायुपुराणात् ॥ प्रेतश्राद्धेनविकिर इतिस्मृतिरनावल्युक्त  
 त्वाच्च ॥ शेषप्रश्नः शेषमन्त्राकिक्रियतामिष्टैःसहमुज्यतामित्यादि ॥ ( तथाचाद्भिः) नवश्राद्धेषुयच्छिष्टहरेषुपितंचयत् ॥ दंपत्योभुक्त  
 मुच्छिष्टंतन्नुजितकहींचित् ॥ ( हेमाद्रौ देवलोपि) एकोदिष्टेषुशेषंनुब्राह्मणेभ्यः समर्पयेत् ॥ ततःकामतुमुंजीत स्वयंमंगलभोजने इति ॥  
 प्रेतश्राद्धसंज्ञकैर्वेदोदिष्टेषुशेषश्राद्धमोक्तभ्यांब्राह्मणेभ्यः समर्पयेत्॥तदनुज्ञयाजलादौवाप्रक्षिपेत्॥नतुस्वयंभुंजीतनचान्यंकमपिभोजयेत् ॥

ततः तदन्तरं क्रियमाणं मंगलभोजने सावित्सारिकादशेषं ज्ञात्यादीन् भोजयेत् ॥ स्वयंचयजमानो भुंजतां श्राद्धशेषादन्येनान्ननेतुञ्जातिदीना  
नाथादयो भोजनीया इत्यर्थः ॥ ( अज्ञातिना तु शुकोऽस्मिन्नश्रेयायाश्च त्र्युक्तं ब्रह्मपुराणे ) द्वाभ्यां तु तद्वृक्षाभ्यां शुद्धिः स्यादुपवेक्षणा  
मिति ॥ प्रदक्षिणविसर्गः प्रदक्षिणं विसर्जनान्तरं ब्राह्मणानां प्रदक्षिणकरणम् विसर्गः अभिरम्यतामिति विप्रविसर्जनम् ॥ सीमांतगमनं वि  
सर्जनान्तरं ब्राह्मणानुगमनम् ॥ एतान् अष्टादशपदार्थान् प्रेतश्राद्धेषु व्रजयेदित्यर्थः ॥ अथाशौचान्नादिनकर्म ॥ (तत्र ब्रह्मपुराणम्) यस्य यस्य  
तुवर्णस्य यद्यत्स्यात्पाश्चिन्मन्त्रहः ॥ सतत्रवस्त्रशुद्धिं च गृहशुद्धिकरोत्यापि ॥ समाप्य दशमपिण्डं प्रेतस्मृष्टुवांसि ॥ अन्यानामाश्रितानां च त्य  
क्त्वा स्नानं करोति च ॥ श्मश्रुलोमनखानां च यत्पाज्यं तज्जहात्यपि ॥ गौरसर्पकल्केन तिलकल्केन संयुतम् ॥ शिरःस्नानंततः कृत्वा तोयेन च मय्य  
वाग्यतः ॥ वृषभंगं सुवर्णं च स्पृष्ट्वा शुद्धाभे वस्त्रैः ॥ (देवलोपि) दशमेऽहनि संप्राप्ते स्नानं प्राप्ताद्विश्चरेत् ॥ तत्र न्याज्यानि वासांसि केशश्मश्रुनखा  
नि च इति ॥ ( दशमेऽहनि वपनमाह अपराकंव्यासः ) आशौचात्त्यदिनक्षरं जनन्यां च गुरौ मृतं इति ॥ वापनं च प्रेताल्पवयसाम् ॥ तथा च माघ  
वीये आपस्तंबः ) अनुभाविनां परिवापनमिति ॥ अनु पश्चाद्व्रति जायते इति पुत्राः कनिष्ठप्रातरश्व अथवा अनुभाविनाम् इति पुत्राणां  
र्द्धिश्यन्ते ॥ गंगायां भारुक्कक्षेत्रे मातापित्रोर्गुरौ मृतौ ॥ आधानकाले सोमे च वपनं समुत्सृज्य ॥ इत्यत्र मातापित्रोर्मृतौ इति विशेषणोपादानात् ॥  
अत्र गुरुभनोपदेशविद्योपदेश च इति ॥ अनुभाविनः कनिष्ठा इति मिताक्षराणां कारदयः ॥ आशौचमनुभवतां संवर्षा वपनमिति शुद्धि  
त्वादयः ॥ अत्र देशाचारतो व्यवस्था ॥ अथैकादशाहः ॥ (तत्र मनुः) विप्रशुध्यत्यपः स्पृष्ट्वा क्षत्रियो बह्वहनाशुधैः ॥ वैश्यप्रतोदरभूम्या

१ श्राद्धविके रद्वयेण प्रेतश्राद्धेषु एतदष्टादशपदार्थलिखनम् अस्मिन्संचयने समं तत्र श्राद्धमयोगेलिखनं च प्रमाणशून्यम् ।

यष्टिशूद्रऋतत्रियः ॥ (हेमाद्रौ कौर्मै) एकादशेति कुर्वीत प्रेतमुद्दिश्य भावतः ॥ एकंपवित्रमकोर्ध्वः पिंडयात्रतथैव च ॥ एवमृतांतिहिकर्त्तव्यं  
 प्रतिमासंतु वत्सरम् ॥ (तत्रैव पादौ) ततस्त्वेकादशो हेतु द्विजनेकादशैव तु ॥ गोत्रादिमृतकान्ते च भोजयेद्युजाद्विजान् ॥ आवाहना  
 ग्नौ करणं देवहीनं विधानतः ॥ एकंपवित्रमकोर्ध्वं एकपिंडाविधीयते ॥ उपतिष्ठत इति देयं श्वात्तिलोदकम् ॥ स्वदितं द्विकर्त्तव्यं  
 द्विसर्गं चाभिरम्यताम् ॥ शेषं पूर्ववदत्रापि कार्यवेदविदो विदुः ॥ (गरुडपुराणे) अमंत्रं कार्ये च्यूद्धं दशाहना प्रपात्रतः ॥ एकदशेति प्रेतस्य  
 दद्यात्पिंडसमंत्रकम् ॥ (माधवे भरीचिः) ॥ आशाचान्ते ततः सम्यक् पिंडदानं समाप्यते ॥ ततः श्राद्धं प्रदातव्यं सर्ववर्णेष्वयं विधिरिति श्राद्ध  
 मेकोद्दिष्टम् ॥ श्रुतं एकोद्दिष्टं कुर्यादिति हारि तरुमरणात् ॥ एतच्छ्राद्धं न केवलं ब्राह्मणस्यैकादशेति अपितु क्षत्रियादप्यस्याद्यश्राद्धस्यायमे  
 व कालः ॥ (तथा चेहमाद्रिमाधवयोः पैठीनसिः) एकादशेति यच्छ्राद्धं तत्सामान्यमुदाहृतम् ॥ चतुर्णामपि वर्णानां सूतकंतु पृथक् पृथक् इति ॥  
 न च क्षत्रियादशुचि त्वेन तत्र श्राद्धाऽनधिकार इत्याशङ्कनीयम् ॥ अशुद्धस्याऽप्ययं वाचनिकोऽधिकारः ॥ (तथा च तत्रैव शंखः) आद्यश्राद्धमशुद्धो  
 पि कुर्यादकादशेऽहनि ॥ कर्तुं स्तान्कालिकीं शुद्धिरशुद्धिः पुनरेव सा इति ॥ आद्यामिति सर्वकोद्दिष्टप्रकृतिभूतमेकादशाहास्यामित्यर्थः ॥ एत  
 च्यूद्धानंतरं स्नानाभुञ्जीतेति ॥ (भविष्योत्तरे) एकादशो हेतु यच्छ्राद्धं तत्सामान्यमुदाहृतम् ॥ एकादशभ्यो विप्रभ्यो दद्यादेकादशेऽहनि ॥  
 भोजनंतत्रैकस्मै ब्राह्मणाय महामनो ॥ वस्त्रालंकारशय्याढ्यं पितुर्पद्मद्विहनादिकम् ॥ गोमूत्रं हसनदासींश्च दद्यात्संपूज्य भक्तिः इति ॥ क्रिया  
 निबंधेऽसूक्त्यंतरे) मृतके मृतके च द्वितीयमृतकं यदि ॥ पिंडदानं प्रकुर्वीत वृषोत्सर्गं तथैव च ॥ न हन्यात्सूतके कर्म द्वादशैकादशादिकम् ॥  
 शुद्धे वा यदिव शुद्धः कुर्यादेवा विचारग्न इति ॥ अथ वृषोत्सर्गः ॥ तत्र तावदस्या विधिका लदेशः ॥ इहैकादशेऽहनि प्रमीतमनु

प्योद्देशनवृषोत्सर्गः काय्यइत्युक्तम् ॥ ( हेमाद्रौषधित्रिशन्भन्तेगारुडेच ) एकादशाहप्रतस्य यस्यनोत्सृज्यतेवृषः ॥ पिशाचव्यंस्थितस्य दत्तैः श्रद्धैरपि ॥ ( बृहन्नारुडेऽपि ) एकादशह्रिंसंप्राते वृषाभावोभवेदादि ॥ दमैः पिष्टुस्तुसंपाद्य तंवृषमोचयेद्बुधः इति ॥ भविष्योत्तरेनुद्गादेशोस्त्रिभूषोत्सर्गोविहितः ॥ कार्तिकेययवामास्यामयनवोषधिष्टिर ॥ चैत्र्याषाढपितृतीयायां वैशाख्याद्वादेशोहिवा इति ॥ एतेकादशाहोदसंभवेद्वेद्यम् ॥ ( विष्णुधर्मोत्तरे ) यस्मिन्कास्मिन्श्चिन्मृताहेऽपि वृषोत्सर्गोविहितः ॥ अश्वयुक्कृष्णक्षय पंचदश्यांनराधिप ॥ कार्तिकेऽथयवामासि वृषोत्सर्गतुकारयेत् ॥ ग्रहणेद्ब्रह्मसुख्ये तथाचैवायनद्वये ॥ विषुवद्वितयेचैव मृताहोत्रांयवस्य च ॥ उत्सृजेन्नो लकंठवै कौमुदीसमुपागता इति ॥ नीलकंठः नीलवृषः ॥ कौमुदी आश्विनकार्तिकयोः पूर्णमासी इत्यर्थः ॥ ( पित्राद्युद्देशेनवृषोत्सर्गमकुर्वानस्य निंदा हेमाद्रौमात्स्ये ) न करोति वृषोत्सर्गं सुतीर्थं वाजलंजलिम् ॥ न ददाति सुतोयस्तु पितुरुच्चारणवसः ॥ उच्चारः पुरीषोत्सर्गः ॥ वृषोत्सर्गप्रदेशाः ॥ ( तत्रदेवीपुराणम् ) सत्वरण्येभवेत्तीर्थे उत्सर्गोऽङ्गुलीपिवा ॥ ब्रह्मपुराणे प्राणुदद्वयवर्णोद्देशे मनोद्वेजेन निजनिवने ॥ वृषोत्सर्गः काय्यइति शेषः ॥ ( कालिकापुराणे ) अरण्ये च वयोवापि गोष्ठे वामोचयेदृषम् ॥ नगहोमोचयेद्दिद्राङ्कामयन्पुष्कलं प्रलम् ॥ ( अथोत्सर्जनीयवृषलक्षणं हेमाद्रौ ब्रह्मपुराणे ) वृषभः कृष्णसारस्तु प्रायशस्तुत्रिहायनः ॥ मनोद्वेजोद्देशनीयश्च सर्वलक्षणसंयुतः ॥ ( हरिहरभाष्ये ) पृथुकर्णो महात्सकं धनुर्मरामाचयोभवेत् ॥ रक्षाक्षः कपिलोयश्च रक्तशृङ्गगलोभवेत् ॥ श्वेतोदरः कृष्णपृष्ठो ब्राह्मणस्य प्रशस्यते ॥ स्निग्धवर्णेन रक्तेन क्षत्रियस्य प्रचक्षते ॥ कांचनोभनवथस्य कृष्णः शुद्रस्य शस्यते ॥ यस्य प्रागायते शृंगो स्वमुवाभिमुखसदा ॥ सर्वपापवर्णानां सवसवार्थसाधकः ॥ ( अथ सर्वोत्तमनीलवृषस्य लक्षणं प्रशसाच ब्रह्माण्डे ) लोहितोयस्तु वर्णेन मुखे पुच्छे च पादुरः ॥ श्वेतः खुरविषाणाभ्यां सनीलो वृष उच्यते ॥ ( हेमाद्रौ मात्स्येपि )



चरणाश्चमुखंपुच्छं यस्यश्चेतानिगोपतेः ॥ लक्षारससवर्णस्य तन्नीलमितिनिर्दिशेत् ॥ वृषण्वसमोक्तव्योनसधाव्यागृहेभवेत् ॥ तदर्थमेषाचर  
 ति लोकेगाथापुरातनी ॥ एष्टव्याबहवःपुत्रा यद्येकोपिगयां ब्रजेत् ॥ गौरीवायुद्वेद्राथ्या नीलंवावृषमुत्सृजेत् इति ॥ गौरीमष्टवर्षिकांकन्याम् ॥  
 अष्टवर्षाभवेद्वैरिति गर्गस्मरणात् ॥ इति ॥ (गारुडे) पितापितामहश्चैव तथैवप्रपितामहः ॥ आशासेतुतंजातं वृषोत्सर्गकरिष्यति इति ॥  
 (वर्जनीयावृषा हरिहरभाण्ये) कृष्णताल्वाष्टदशना हृक्षशृंगफाश्चये ॥ अशक्तदंताह्रस्वाश्च व्याघ्रभस्मनिभाश्चये ॥ ध्वाक्षदृग्रसवर्णा  
 श्च तथासूषकसन्निभाः ॥ कुब्जाःकाणाश्चखञ्जाश्चकेरुशस्तेथैवच ॥ अत्यंतश्चेतपादाश्च उद्भ्रान्तनयनस्तथा ॥ नैतेवृषाःप्रमोक्तव्या गृहे  
 धार्याःकथंचन इति ॥ (अथवृषोत्सर्गविधिप्रवक्तकानि कात्यायनपारस्करसूत्राणि) कार्त्तिकयापौर्णमास्या २ खत्यावाश्चयुजस्यमध्ये  
 गवाठं मुसमिद्धमग्निंक्रुत्वाज्यठं संस्कृत्येहरतिरितिषड्जुहोतिप्रतिमन्त्रं पूषागाऽअन्वेतुनःपूषारक्षस्त्वर्चतः ॥ पूषावांजसनातुनःस्वाहेतिपौ  
 णस्यजुहोतिरुद्रांजपेत्कवणवायोवायूथछादयतिवायूथछादयेद्रौहितौववस्यात्सवर्गैरुपेतोजीववत्सायाः ॥ पयस्विन्याःपुत्रेयूथे  
 चरूपस्वित्तमः स्यात्तमलंकृत्यूथेमुल्याश्चतस्रोवत्सतय्यस्ताश्चालंकृत्यैर्युवानं पतिवोदामि तेनक्रीडंतीश्चरथप्रियेणमानः सातजनुषा  
 सुभगारायस्योषेण समिषामदेमेत्येतैवोत्सृजेन्नस्यस्यमभिमन्त्रयतमयोभूरित्यनुवाकशेषेणसर्वासांपयसिपायसठं श्रपयित्वाब्राह्मणान्भो  
 जयेदिति ॥ (हेमाद्रौभविष्योत्तरे विशेषः) षांडनीलंशंखपादं सपौंड्रंश्वेतपुच्छकम् ॥ गोभिश्चतुर्भिःसहितमुत्सृजेत्तांविधंशृणु ॥ मातरः  
 स्थापयित्वाच पूजयेत्कुसुमाक्षतैः ॥ मातृश्राद्धंततःकुर्यात्सिद्धाभ्युदयकारकम् ॥ अर्कमूलेतुकलशमश्वत्थदलशोभितम् ॥ तत्र  
 रुद्राक्षपित्वातु स्थापयेदुद्रद्वैवतम् ॥ रुद्रान्रुद्राध्यायंजत्वारुद्रदवंतंकलशस्थापयेदित्यर्थः ॥ सुसामिद्धंततःकृत्वा वाह्नमंत्रपुरःसरम् ॥



आलोचनञ्जुह्यात्पद्भिः पृथगाहुतिसंस्कृतैः ॥ पौष्पयमैस्ततः पश्चादुत्पावह्निष्यथिविधि ॥ एकवर्णाद्विवर्णवा लोहितं धेतमे  
 ववा ॥ जीवद्वत्सपथस्त्रिन्याः पुत्रसर्वाङ्गमुदरम् ॥ चतस्रो वेस्तत्पर्यश्च तामिः सार्द्धमलंकृतम् ॥ तामां कर्णेनोद्विप्रः पतिं वा  
 लिनं शुभम् ॥ दशभिर्न स हिताः क्रीडयं हृष्टमानसाः ॥ ततो वा मे त्रिशूलं च दक्षिणे च क्रममालिखेत् ॥ अङ्कितं शूलचक्राभ्यां चर्चितं  
 कुंकुमादिना ॥ पुष्पमालावतश्रीवं श्वेतवस्त्रैश्चच्छादितम् ॥ विमुच्येद्वत्सिकाभिश्च तिसृभिर्बलिनवृषम् ॥ देवालये गोकुले वा नदीनां संगमे  
 तथा ॥ इत्युत्तरगन्धर्विना विधानवृषभेक्षणो इति ॥ अत्र मातृश्राद्धं मातृपूजापूर्वकाभ्युदयिकं श्राद्धं कर्तव्यमिति गम्यते ॥ एतच्छ्राद्धं सवत्स  
 रानन्तरं कार्त्तिके मासवृत्ते सप्तमिषयकं सापेदनं विना काम्याभ्युदयिकयोर्निषेधात् ॥ ( तथा च स्मृतिः ) वत्सराभ्यन्तरे पित्रोर्वृषभ्यो  
 त्सार्कर्मणि ॥ वृद्धिश्राद्धं न कुर्वीत तदन्यत्र समाचरेत् इति ॥ वत्सतरी चतुष्टया भावे द्व्यभ्यामेकया वा सह विवाहयेत् ॥ ( तथा च बृहद्भारुडे ) वत्स  
 र्भिर्बोत्सकाभिर्द्व्यभ्यामैवैकया वाग ॥ विवाह्यमंगलद्रव्यैर्भवत्तत्समुत्तजेत् ॥ इह रतीति षडङ्कगमिहान्कुर्याद्विभावसाविति ॥ ( कलशे  
 रुद्रजपान्तरं पुरुषमुक्तादिजपोगुक्तो हेमाद्रौ विष्णुमन्त्रे ) तत्र रुद्रजपि त्रातु स्थापयेत् रुद्रवतम् ॥ तथैव पौरुषमूकं कृष्णाङ्गानि तथैव च ॥  
 इति ॥ रुद्रं नमस्ते रुद्रमन्यव इत्यादिस्त्रिध्या योजयेद्वेदप्रसिद्धः ॥ पुरुषमूकं सहस्रशीर्षं स्याद्विषोडशचः ॥ यदेवादेव हेडनमित्याद्या ऋचः कृष्णा  
 डसंज्ञक इत्यर्थः ॥ ( जपान्तरं होमः कार्यः विष्णुमन्त्रे ) सुसभिर्द्वगंमध्ये सुविस्तीर्य्य हुताशनम् ॥ पयसाश्रयेत् पित्राङ्गश्रूयैर्गोणं  
 समाहित इति ॥ अस्याथो हेमाद्रिणा कृतः ॥ अत्रायं क्रमेण होमोऽभिधीयते ॥ गवामध्ये रुद्रकलशस्य पश्चाद्गोपरिसमूहनादिं च भूमस्काराच्च  
 विधायाग्निमुपसमाधाय दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्य उत्तरेकमप्युत्तरं समासाद्य आज्यमग्निं श्रित्य पयसा सह तं ढुलान् प्रक्षिप्य पयसं श्रप

थित्वा सोदकतंडुलपिष्टं स्थाल्यां प्रक्षिप्य पौष्णं चरुं श्रपयित्वा आज्याद्वा सनादिकर्म समाप्य दक्षिणं जान्वाच्य प्रथममन्वारब्धे इह रतिरिति ष  
 डाल्याहुतये होतव्याः ॥ तत आधारावाज्यभागौ घृतेन हुत्वा तदनंतरं मन्वारब्धे पाथसेन गेयज्ञोक्तदेवताभ्यो होमः ॥ ततः पौष्णचरोः पृषाणा  
 अन्वेतु न इत्येकहृतिः ॥ ततः पौष्णपायसाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः ॥ आज्येन महाव्याहृतिहोमं त्वन्नोऽग्ने इत्यादि सर्वप्रायश्चित्तहोमप्राजाप  
 त्यं च जुहुयात् ॥ ततः संस्रवप्रशानं मार्जनं पवित्रप्रतिपत्तिः दक्षिणादानमित्यर्थः ॥ एवहोमपरिसमाप्य वृषस्याङ्कनादिकं कुर्यात् ॥ ( तथाच  
 विष्णुः ) गवां मध्यमुत्समिद्धमग्निं परिस्तीर्य पौष्णं चरुं श्रपयित्वा पृष्णाभिगंधेन इहरतिचहुत्वा वृषभमानीयायस्करमाह्वयेत् ॥ अयस्करः  
 लोहकारः ॥ ( हेमाद्रौ सौरपुराणे ) कुंकुमनां कथित्वा दौ ब्रह्मणः सुसमाहितः ॥ ततेन घातुना पश्चादयस्कारोद्भूयेद्द्रवम् इति ॥ अत्र वृषांकने  
 विचारः ॥ तत्र तावत् ( हेमाद्रौ सौरपुराणे ) ततो वृषभमानीय अग्ररुततः स्थितम् ॥ सव्यस्मिन् चिलेखं शूलं बाहौ तु दक्षिणे इति ॥ सव्य  
 स्मिन् चिवा मकटिभागे इत्यर्थः ॥ ( बृहदारुण्ये ) दक्षिणं सिन्धूलङ्कं वामोरौ च चिह्नितम् ॥ ( देवीपुराणे ) ततेन वामतश्चक्रं पार्श्वे शूलं समा  
 लिलिखेत् ॥ घातुना होमतरेण आयसेनाथवां कयेत् इति ॥ हेम सुवर्णं तारं रूप्यम् आयसं लोहमित्यर्थः इत्येकं मतम् ॥ ( द्वितीयप्रकरणमाह  
 हेमाद्रौ विष्णुः ) एकस्मिन् पार्श्वे चक्रेण परस्मिन् शूलेनाङ्कितं च हिरण्यवर्णे चित्तं शुभिः शन्नो देवीरिति च रूपापयेत् इति ॥ एकस्मिन् पार्श्वे द  
 क्षिणपार्श्वे चक्रेणाङ्कयेत् ॥ परस्मिन् वामपार्श्वे त्रिशूलेनेत्यर्थः ॥ ( तथाच विष्णुधर्मोत्तरे ) ततो वामे त्रिशूलं च दक्षिणे च क्रमालिखेत् इति ॥  
 एवमेव हारिद्वं प्रभृतयः ॥ ( विधनाथीयान्येष्टिपद्धतिगारुडयोस्तु ) त्रिशूलं दक्षिणे पार्श्वे वामे च क्रतुविन्यसेत् इत्युक्तम् ॥ अत्र विकल्पो देश  
 कुलाचारतः परिहार्य इति ॥ ( विष्णुधर्मोत्तरे ) अंकिं स्नापयेत् पश्चात् स्नानेन तस्य तथा गठेत् ॥ हिरण्यवर्णे तिस्रश्च श्वत्सो मनुजेश्वर ॥ आपो हि

धति तिस्रश्च शत्रोर्वीति चाप्यथ इति ॥ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका इत्याद्याश्च तस्माभिरेचनीयाः क्वचरन्ती तुरीये प्रसिद्धाः (तत्रैव) मत्सतये श्वतसश्च  
 तं वृषं वनराधिप ॥ अलंकुर्यन्ति तपश्चाद्गन्धमालयैश्च शक्तिः ॥ किं किणीभिश्च रम्याभिस्तथा चीनां शुक्रैः शुभैः ॥ (आदित्यपुत्राणो) घंटा लोहकृता दद्यात्  
 च्छृणोच पटलशुभम् ॥ पटलं सुवर्णादिनिमित्तकोशः ॥ हेमाद्रौ विष्णुः स्नातालंकृतं स्नाताभिश्च तमृभिवत्सरीभिः सार्द्धमानीय रुद्रान्पुरुष  
 मूक्तं क्लृप्माडी श्रजपेत् ॥ पिता वत्सति च भत्रवृषभस्य दक्षिणकर्णे जपेदिति ॥ पिता वत्सति मंत्रोऽथैव देप्रसिद्धः ॥ (तत्रैव पारस्करोपि) अथा  
 लंकृत्य तान्सर्वान्बुध्नाध्यायं समाहितः ॥ श्रावयेत्पारुषमूक्तं तथाऽप्रतिस्थानि च ॥ (विष्णुवर्मोत्तरे) ततोऽकिंते जपेन्मंत्रमिमं प्र  
 यतमानसः ॥ वृषोऽसि भगवान्धर्मश्चतुष्पादः प्रकीर्तितः ॥ वृणोमि तमहं भक्त्या समांश्चतुसर्वतः ॥ इति प्रार्थ्य वृषेन्द्रं गृहीतकुसुमांजलिः ॥  
 त्रिप्रदक्षिणमावृत्य नमस्कुर्याद्यथा विधिः ॥ प्रत्यङ्मुखवान्तु गवामेतावन्विधि रित्यते ॥ अथैशान्यमिमुसवतः कुर्याद्वावैवृषंतथा ॥  
 गवो वृषस्योभयतो वृषमध्यनिवेश्य च ॥ सर्वेषां कठवस्त्राणि श्लेष्यन्तु परस्परम् ॥ अयं हि वैभयादत्तः सर्वासां पतिरुत्तमः ॥ तुभ्यै चैता  
 मया दत्ताः पत्न्यः सर्वा भनोरमाः ॥ संयोज्यैति वृषं ताभिः पितृभ्यस्तानि वेदयेत् ॥ सव्येन पाणिना पुच्छं समालभ्य वृषस्य तु ॥ दक्षिणेना  
 प आदाय सतिलाः सकुशास्ततः ॥ ततो गोत्रं मुच्चाय ॥ अमुकस्मादिति बुक्त्वा ॥ एष एव मया दत्तः तं तारयतु सर्वदा ॥ सह मे सतिलं प्रभूमा वि  
 नुच्चाय विनिक्षिपेत् इति ॥ इदं गुणस्करेण कप्रमीतो देशेन वृषोत्सर्गवाक्यमुक्तम् ॥ अनेकप्रमीतो देशेन तु नीलोत्सर्गे मंत्र उक्तः ॥ (वाराह  
 पुत्राणो) नराये चात्र तिष्ठन्ति पतिताः पितृग्रां ववाः ॥ तेषां भजन्यत्राता नीलोत्सर्गो यथा विधिः ॥ गृहीत्वा दुर्गपात्रं कृत्वा कृष्णतिलोदकम् ॥  
 केरेण पुच्छमादाय पितृणां नुच्यते वृषम् ॥ उदुंबरं ताप्रम् ॥ (ब्रह्मपुत्राणोपि) स्वपितृभ्यो यमातृभ्यो बन्धुभ्यश्चापि तस्ये ॥ मातृपशश्च येके

स्यात्प्राद्वकारिशूद्रविषयमिति हेमाद्रिः ॥ ( अपरार्ककल्पतरुप्रभृतयः ) वचनबलादौचमध्यव्यवश्राद्धकरणम् इति ॥ यदा संवत्सरपूर्तेः  
 प्रागैवैकादशाहदिषुषोडशश्राद्धानिकृत्वासर्पिडीकरणं क्रियते तदा पुनरपिस्वस्वकालमासिकदीन्यावर्तनीयानि ॥ ( तदाह माधवेगोभिलः )  
 यस्यसंवत्सरद्वर्गोभिविहिततुसर्पिडता ॥ विधिवत्तानिकुर्यात् पुनःश्राद्धनिषोडश इति ॥ विधिवदेकोद्विष्टविधना इत्यर्थः ॥ ( गारुडेपि )  
 सर्पिडीकरणदूर्ध्वं यानि श्राद्धानिषोडश ॥ एकोद्विष्टविधानेन चरेद्वर्षावर्षाहते इति ॥ ( माधवविद्यागालवः ) अर्वाकंसंवत्सराग्रस्य सर्पिडीकरणं  
 कृतम् ॥ षोडशानाद्विरावृत्तिं कुर्यादित्याहगौतमः ॥ ( मदनरत्ने आगिराः ) यस्यसंवत्सराद्वर्षासर्पिडीकरणंकृतम् ॥ मासिकंचोदकुंभच देयं  
 तस्यापि वत्सरमिति ॥ ( अनषाण्मासिकदीनांकालमाह माधवेगालवः ) अनषाण्मासिकंषष्ठे मासाद्धूनमासिरुम् ॥ त्रैपक्षिकंत्रिप  
 क्षेस्यादूनाब्दंद्वादशेतथा ॥ ( तत्रैवगौतमोपि ) एकद्वित्रिदिनैरुने त्रिभागेनोत्तरा ॥ श्राद्धान्यूनान्दिकदीनि कुर्यादित्याहगौतम इति ॥  
 अनर्मासिकोनषाण्मासिकोनान्दिकानामेकदिनेनपक्षेपंचम्यामृतस्यतृतीयायां द्वाभ्यामूनत्पक्षोद्वितीयायां त्रिभ्यूनप्रतिपदायामनुष्ठान  
 मित्यर्थः ॥ ( अनानां वज्र्यकालमाह हेमाद्रिमाधवयोगार्थः ) नंदायां भागवदिने चतुर्दश्यां त्रिपुष्करे ॥ अतःश्राद्धंनकुर्वीत गृहीपुत्रधनक्षयात्  
 इति ॥ प्रतिपत्पष्ठयेकादशीच नंदा । भागवदिनंशुक्रवारः । त्रिपुष्करं तिथिवाचनक्षत्रविशेषाणां मेलनं द्वयोर्मेलनद्विपुष्करमित्यर्थः ॥ ( तत्रै  
 वमरीचिरपि ) द्विपुष्करेचनंदासुसिनीवाल्याभृगोदिने ॥ चतुर्दश्यांचनानि कृतिकामुत्रिपुष्करे इति ॥ सिनीवाली चतुर्दश्यात्ता अमात्रा  
 स्या इत्यर्थः ॥ ( त्रिपुष्करयोगमाह वसिष्ठः ) राविरविजभागवारो भद्रायां विषमपादमृशंचेत ॥ त्रैपुष्कराख्ययोगास्त्रिगुणफलोयमलभै  
 र्द्विगुण इति ॥ भद्रा द्वितीयासप्तमीद्विदश्या भद्रातथयः ॥ भातुभौमशनश्चाराः पुनर्वसूरफाल्गुनीविशाखात्तरापाद, पूर्वाभाद्रपदानक्ष

त्राणि विषमपादश्रृङ्गाणित्यर्थः ॥ ( वाराहपुराणे विशेषः ) चतुर्थाष्टमगेचद्रे द्वादशेचविवर्जयेत् ॥ प्रेतकृत्यं व्यतीपाते वैधृतापरघेतथा ॥  
 करणेविष्टिमज्ञेच शनैश्चरदिनेषुच ॥ त्रयोदश्यां विशेषण जन्मतारात्रयेतथा इति ॥ सार्द्धीकरणादूर्ध्वमावर्त्तनीयानाम्नासिकादीनामृद्धिद्वारा  
 तौ पुनरपकर्षः ॥ ( तदाह माधवीयेसंख्यायनिः ) सार्द्धीकरणादूर्वाणपकृष्यकृतान्यपि ॥ पुनरप्यपकर्ष्यन्ते वृद्ध्युत्तरानपेधनात् इति ॥  
 ( निषेधश्चतत्रैवकात्यायनेनोक्तः ) निर्वत्यवृद्धितत्रतु मासिकानितनत्रयेदिति ॥ एवं वृद्धिनिमित्तेनासिकापकर्षेऽदकुंभश्राद्धानामप्यप  
 कर्षः प्रेतश्राद्धत्वात् ॥ प्रतिमासं श्लोकं भद्रानां शक्तेनाऽप्येकस्मिन् दिने तावद्दिनामात्रेऽदकुंभैश्च तावदामात्रोऽदकुंभनिष्कयेण  
 वाऽपकृष्योऽदकुंभश्राद्धनिकार्याणि ॥ ( तथाच गारुडे ) द्वादशाहचषणमासे त्रिपक्षेवाथ वत्सरे ॥ उदकुंभाः प्रदातव्या मार्गेतस्य  
 सुखायै इति ॥ ( वृद्धिदिनामासिकापकर्षेऽदकुंभमाह उशनाः ) वृद्धिश्राद्धविहीनस्तु प्रेतश्राद्धानियस्त्यजेत् ॥ सश्राद्धीनरकेधारे पितृभिः  
 सह मज्जति इति ॥ चतुःपुरुषसिपिष्टस्वाधानादिप्राप्तिनिमित्तोप्यपकर्ष इति ॥ ( अथसार्द्धीकरणप्रकारमाह याज्ञवल्क्यः ) गंधोदकतिलै  
 र्भुक्तं कुर्यात्पात्रचतुष्टयम् ॥ अर्घ्यार्थापितृपात्रेषु प्रेतपात्राप्रसिचयेत् ॥ येसमाना इति द्वाभ्यां शेषपूर्ववदाचरेत् ॥ एतत्सार्द्धीकरणमेका  
 द्विषंस्त्रिय अपि इति ॥ ( अस्यार्थो हेमाद्रिणा कृतः ) ॥ गंधश्चंदनादिभिरुदकेन तिलैश्च युक्तं पात्रचतुष्टयं प्रेतादिभ्योऽर्घ्यपात्रं कुर्यात् ॥ तत्र  
 प्रेतायाऽर्घ्यदत्त्वांशेषतपात्रस्थं जलपितामहादिपात्रेषु येसमाना इति द्वाभ्यां मन्त्राभ्यां यथाक्रमं पितृदेवत्याभ्यां प्राप्तिसेत् ॥ शेषं तु कर्मब्रह्मण  
 निमंत्रणादिपार्षणवदाचरेत् ॥ एतदुक्तप्रकारं पितामहैवत्यं पार्षणं प्रेतैवत्यं च कादृष्टश्राद्धं सार्द्धीकरणसंज्ञकं वैदितव्यम् ॥ स्त्रियाऽपि चैतत्का  
 र्यं ननु नः पुरुषस्यैव इत्यर्थः ॥ ( कात्याय मन्त्रेपि ) ततः संवत्सरे पूर्णे च वारिपात्राणि सतिलगंधौदकानि पूरयित्वा त्रीणि पितृणामेकं प्रे

तस्यपत्रपितृपात्रेष्वसिंचति येसमाना इति द्वाभ्यामतेन पिंडोव्याख्यात इति॥ अत्रपात्रमेलने विचारः॥ अर्घ्यदानात्पाक् पात्रमेलनकार्यं  
पश्चाद्वा इति संदेहचिन्त्यते ॥ ( तत्रतावत्प्राग्विधायकं हेमाद्रैब्रह्मपुराणम् ) चतुर्भ्यश्चार्घ्यपात्रेभ्य एकांवामेनपाणिना ॥ गृहीत्वादक्षिणेनैव  
पाणिनाचितिलोदकम्॥प्रेतस्यविग्रहस्तेतु चतुर्भांगजलंक्षिपेत् ॥ततःपितामहादिभ्यस्तन्मंत्रश्चपृथक्पृथक् ॥ येसमाना इति द्वाभ्यां तज्जलंतु  
समर्पयेत् ॥ अर्घ्येनैवविधिना प्रेतपात्राञ्चपूर्ववत् ॥ तेभ्यश्चाव्यनिवेद्यैव पश्चाच्चस्वयमाचमेत्॥अथनैवविधिना दर्भमूलेऽवेनजनम्॥ पितुर्द  
त्त्वातुपिंडंतु दद्याद्भस्मयातुपूर्ववत् ॥ सुवर्णरूप्यदमैस्तु तस्मिन्पिंडतस्त्रिधां ॥ कृत्वापितामहादिभ्यः पितृभ्यःप्रेतमर्पयेत् ॥ येसमाना इति  
द्वाभ्यां पितृभ्यःप्रेतमर्पयेत् ॥ सुवर्णरूप्यदमैस्तु तस्मिन्पिंडतस्त्रिधां ॥ अर्घ्येषुणैस्तथायूषैर्दोषमाल्यानुलेपनैरिति ॥ एवमेव  
हेमाद्रिविज्ञानेश्वरनीलकण्ठकमलाकरिविश्वनाथप्रभृतयोवदन्ति ॥ इत्येकमतम् ॥ पश्चाद्विधायिका पितृभक्तौव्यवस्था ॥ मेलकस्तुदा  
नानन्तरंकर्त्तव्यो न प्रथमं दानबाधापत्तेः॥ ( उक्तंच वृद्धशतातेपेन )निरूप्यचतुरःपिंडाञ्चद्वदःप्रीतिनामतः ॥ येसमाना इतिद्वाभ्यामा  
द्यंतुविभजेत्रिधा ॥ एषएवविधिःपूर्वमर्घपात्रचतुष्टये इति ॥ निरूप्यदत्त्वा आद्यप्रथमदत्तेप्रीतिपिंडतेनप्रेतपूर्वमनुष्ठानम् इति सिध्यति ॥ एष  
एवविधीस्त्यतिदेशात् ॥ अर्घेऽपिदानानंतरमवशिष्टजलमेलक इति ॥ एवमेवाधुनिकारुद्रधरप्रभृतयोमैथिलाः इत्यपरम् ॥ अत्रपक्षद्वय  
स्यापिस्मृतिसदाचारमूलकत्वात् प्राचीनमहानिबंधकारैर्द्रीकृतत्वाच्चवृद्धाचारतो व्यवस्थाज्ञेया ॥ अस्माकंतुप्रथमःपक्षएवपद्धतिस्तुद्वय  
मेव पुरातोवक्ष्यामि इति ॥ ( अत्रद्वादशघटदानं बृहदारुढे ) ॥ द्वादशाहविशेषणघटान् द्वादशसंख्यकान् ॥ एकापिवर्द्धनीतत्र पक्वान्नजल  
पुरिता ॥ विष्णुमुद्दिश्यदत्तव्या संकल्प्यब्राह्मणायवै इति ॥ अथव्युत्कममृतौसर्पिडनविचारः ॥ यदापितामित्रयोपितामहास्तिष्ठति तदाप्र

पितामहादिभिः सहपितुः सार्पिण्डचमः ॥ (तदुक्तं भाववीये ब्रह्मांडपुराणे) मृतेपितरस्यथा विद्यतेचपितामहः ॥ तेनदेयान्नयःपिंडाः  
 प्रपितामहपूर्वकाः ॥ तेभ्यश्चपितृकःपिंडो नियोक्तव्यश्चपूर्वव इति ॥ (तत्रैव) मातृव्यथमृतायान्तु विद्यतेचपितामही ॥ प्रपितामहीतः  
 सर्वः कार्यस्तत्राध्ययविधिगति ॥ एवंप्रपितामहजीवने ॥ तत्पित्रादिभिः कार्यः ॥ यदातु पितुःसार्पिण्डनाम्नाक् पितामहोमस्तदा  
 पितामहसर्पिण्डकृत्वापितामहादिभिः सहपितृसर्पिण्डनंकार्यमिति ॥ (अथ स्त्रीसर्पिण्डिकरणे केनसहसर्पिण्डनंकर्तव्यमितिप्रशङ्गा  
 कस्मादहर्होमादिमाधवयोः शातातणशंखौ) मातुःसर्पिण्डिकरणं कथंकार्यमवेत्सुतैः ॥ पितामह्यादिभिःसाद्र सार्पिण्डिकरणं  
 स्मृतमिति ॥ पितामहीप्रपितामहीषुद्धप्रपितामहाभिः सहेत्यर्थः ॥ (गारुडेपि) पितामह्यासमंमातुः पितामहैःसमंपितुः ॥  
 सार्पिण्डिकरणंकुर्यादितितात्पर्यमतम ॥ भर्त्रादिभिराभिःकार्यं सार्पिण्डिकरणंस्त्रियाः ॥ नैतन्मममंतताक्ष्यं पत्यासार्पिण्डय  
 मर्हतीति ॥ (प्रमीतपितृकस्यविकल्पमाह पराशरमाधवे यमः) जीवन्पितापितामह्या मातुःकुर्यात्सार्पिण्डताम् ॥ प्रमी  
 तपितृकः पित्रापितामह्याथवासुतः-इति ॥ (हेमाद्रौ ब्रह्माण्डेपि) मातुःसार्पिण्डिकरणं कार्ययसक्तमस्मृतैः ॥ पितामह्यासहे  
 वास्याः पितायदितुर्जीवति इति ॥ तद्वैकुण्ठचद्वेनेषुमातुः पितामह्यादिभिःसहसर्पिण्डिकरणंकर्तव्यमुक्तम् ॥ केषुचिच्चपत्यासहेति ॥  
 तत्रपत्यासहसर्पिण्डनंभर्त्रासहान्वारूढमावृषियम् ॥ (तथाच हेमाद्रौ शातातपः) मृतायानुगतनाथं सातेनसह पिण्डताम् ॥ अहस्तिव  
 र्गवासंच यावदभूतसंभ्रमिति ॥ एवंचसतिपितरिजीवति पितामह्यादिभिरसहसर्पिण्डिकरणं कार्यम् ॥ प्रमीतेतुपितृव्यन्वारूढायां मातारि  
 पित्रैवसहसर्पिण्डिकरणम् ॥ अनन्वारूढायामपिपितामह्यादिभिः सहतिव्यवस्थाप्रतिपादिताभवति ॥ यद्विनन्वारूढायामपि मातारि



पित्रैवसह सपिंडनस्यापि तदन्वाह्वाविषयवचनमनर्थकं भवेत् तस्मादन्वाह्वाभैत्रवसहसपिंडनीया नतु अनन्वाह्वा इति स्थितम् ॥  
 पुत्रिकासुतस्तुमातृसपिंडनमातामहादिभिः सह कुर्यात् ॥ ( तथाच माधवेबोधायनः ) आदिशेत्यथमपिंडे मातरं पुत्रिकासुतः ॥ द्वितीये  
 पितरस्तस्य रतृतीयेच पितामहम् इति ॥ ( पुत्राद्यभवेत्पुत्रपित्रीसपिंडीकरणाधिकारः प्रतिपादितो व्यासेन ) अपुत्रायां मृतायां तुप  
 तिः कुर्यात्सपिंडनम् ॥ अथ श्रूभिस्तस्मिन्भिः साद्धमेवंधमण्युज्यते इति ॥ पातिः सपिंडनक्रांतितदामात्रादिभिः सहैव स्त्रियाः सपिंडनं कुर्यादित्यर्थः ॥  
 ( गारुडेपि ) पुत्रो नास्ति न भर्ता च स्त्रीणां तादृश्यं सपिंडने ॥ कारयेद्ब्रह्मसमये भ्रातृजायाथ देवरा इति ॥ ( पत्युः सपिंडचमाह पराशरमा  
 धवे सुमंतुः ) अपुत्रेऽपि स्थिते कर्ता नास्ति चेच्छ्राद्धकर्मणि ॥ तत्र पत्न्यपि कुर्वीत सपिंडच पार्वणं तथा इति ॥ प्रस्थिते मृते इत्यर्थः ॥ ( तत्रैव लौ  
 गाक्षिरपि ) सर्वाभावे स्वयंपत्न्यः स्वभर्तृणामभ्रमंत्रकम् ॥ सपिंडीकरणं कुर्युस्ततः पार्वणमेव च इति ॥ ( विधवायाः पार्वणप्रकारः स्मृतिरन्ता  
 वर्याम् ) स्वभर्तृप्रभृतिभिः रत्रपितृभ्यस्तथैव च ॥ विधवाकारयेच्छ्राद्धं यथाकालमर्तद्रिता इति ॥ विधवा स्वयंसंकरपंकृत्वाऽन्यत्सर्व  
 ब्राह्मणद्वारा कारयेदित्युक्तं प्रयोगपारिजाते ॥ ( यतीनां सपिंडचानिषेधतिमाधवे उशनाः ) सपिंडीकरणं तेषां न कर्तव्यं सुतादिभिः ॥ त्रिदंड  
 ग्रहणादेव प्रेतत्वनैव जघते इति ॥ ( त्रिदंडमापितत्रैव ) वाग्दंडोऽथ मनोदंडः कायदंडस्तथैव च ॥ यस्यैषानियता बुद्धिर्विद्वितीति स उच्यते  
 इति ॥ ( तत्रैव ) एकदिष्टं न कुर्वीत यतीनां चैव सर्वदा ॥ अह्नयेकादशे तेषां पार्वणं तु विधीयते इति ॥ पौगंडमृतस्यापि सपिंडनं न कार्यम् ॥  
 ( तथाच देवलः ) द्वादशाह्नसरादवर्कपौगंडमरणे सति ॥ सपिंडीकरणं न स्यादकोद्दिष्टानि कारयेत् इति ॥ पौगंडो न वहायन इति देव्या  
 जिकः ॥ एतदनुपनीतं परमिति विज्ञानेश्वरः ॥ अकृतविवाहपरमिति वृद्धाः ॥ इत्युभयात्मकं सपिंडीकरणं निरूपितम् ॥ अथैताः सपिंडी



करणांताः प्रेतक्रियाः केषांचिदुर्मणमृतानाम् एकादशोद्दिनराणबलिमदृत्वाचनकार्थ्याः ॥ (तत्राह हेमाद्रौबृद्धयाज्ञवल्क्यः) सर्पप्रिवहता  
 नांच शृंगिदंष्ट्रिसरसिपैः ॥ श्राद्धमेषानकन्तव्यं ब्रह्मदंडहताश्च ये ॥ (संवत्तोपि) महापातकिनांचैव तथाचैवात्मघातिनाम् ॥ उदकपिंड  
 दानंच श्राद्धचवतुयकृतम् ॥ नोपतिष्ठतितत्सर्व राक्षसविश्रुयते ॥ (बृहद्गारुडपि) शृणुताक्ष्यपंगोयं जातेदुर्मरणेसति ॥ लघनैः  
 मृताजीवा दंष्ट्रीभिश्चाभिधातिताः ॥ कंठग्रहे विलयानां क्षीणानांतुंघातिनाम् ॥ विषाग्रिवृषविश्रेभ्यो विषूच्याचात्मघातकाः ॥ पतनो  
 द्बंधनजलैर्मृतानां शृणुसंस्थितम् ॥ सर्पव्याघ्रशृंगभिश्च उपसर्गोपलोकैः ॥ ब्राह्मणैः क्षापदैश्चैव पतनवृक्षवधुतैः ॥ नखैर्लहंगरः पाताभितैः  
 पातैर्मृगोस्तथा ॥ सृङ्गायामंतरीक्षे च चौरांचांडालतस्तथा ॥ उदकयाशुनकीद्राजकादिविदूषिकाः ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छिष्टेभयोच्छि  
 ष्टास्तुयमृताः ॥ शस्त्रघातैर्मृतायेचास्पृशस्पृष्टास्तथैव च ॥ तत्तुदुर्मरणज्ञं यच्चजातंविधिनिना ॥ तेनपापेननरकान्भुक्त्वाप्रेतत्वमागिनः ॥  
 नतेषांकारयेद्दहं सूतकंनोदकाक्रियाम् ॥ निविधानंमृताद्यांच नकुयैर्दोष्यदेहिकम् ॥ नापडानंकन्तव्यं प्रमादक्षेकगोतिहि ॥ नोपतिष्ठतितत्सर्वम  
 तरीक्षेविनश्यति ॥ अतस्तरस्यसुतैः पात्रैः सर्पिडैः शुभमिच्छुभिः ॥ नारायणबलिः कार्यो लोकगर्हाभियाखगातथातेषांभवेच्छांच नान्यथेय्यध्व  
 द्यमः ॥ कृतेनारायणबलवौर्ध्वदेहिकयोभ्यता ॥ तस्यशुद्धिकारं कर्म तद्वेदव्रतदन्धथा-इति ॥ (हेमाद्रौपट्टत्रिशन्मते) कृत्वाचांद्रायणपूर्वक्रियाः  
 काय्यथाविधि ॥ नारायणबलिः कार्यो लोकगर्हाभयाज्ञरैः ॥ अन्नमिष्टांप्रियंचैव विप्रदद्यात्सदाक्षिणम् ॥ पिंडोदकाक्रियापश्चाद्वाप्यत्सर्गा  
 दिक्चयत् ॥ एकोद्दिष्टानि कुर्वीत सर्पिंडीकरणं तथा इति ॥ योऽयमशुदुकादिमृतानां नारायणबलिरुक्तः स तुक्रोधमदशोकादियोगेन  
 यैरात्मावातितस्तेषामेव ननु प्रमादतोविदितो वा ॥ (तदुक्तं तत्रैव बोधायनेन) बुद्धिपूर्वाद्ब्रह्महंतां क्रियालोपोविधीयते ॥ तेषामेव च संस्कर्तुं दोषा

स्तुश्रुयुदाहृतः इति ॥ ( गोब्राह्मणहतानंतुविशेषः षट्त्रिंशन्मते ) गोब्राह्मणहतानांच पतितानंतैवच ॥ ऊर्ध्वसंवत्सरात्कुर्यात्सर्वमवौ  
 र्ध्वदेहिकमिति ॥ ( नारायणबलिकालउक्तो भविष्योत्तरे ) पूर्णसंवत्सरेतेषामथकार्यद्वयालुभिः ॥ एकदशीसमासाद्य शुक्लपक्षस्यैवति  
 थिम् ॥ ( बोधायनमूत्रेपि ) अथानारायणबलिव्याख्यास्यामः दक्षिणयने वोत्तरायणेवा अपरपक्षस्य द्वादश्यांक्रियेतपूर्वदुः पडद्वाद  
 शवा ब्राह्मणान्निमंत्रयेत इति ॥ एतत्पूर्णसंवत्सरिकसर्पिणीविषयज्ञेयम् ॥ ( द्वादशेहिङ्गुतेत्यवस्था गारुडे ) निमित्तदुर्गतिकृत्वा यदि  
 नारायणेबलिः ॥ एकदशाहेकर्तव्यो वृषात्सर्गापितत्रैव इति ॥ ( अथनारायणबलिप्रकारो बृहद्रुद्रपुराणे ) नारायणबलौसम्यक्ती  
 र्थेसर्वप्रकरयेत् ॥ गंगायांमुनानां च नैमिषेषुष्करेपिच ॥ तडागेजलपूर्णवा ह्रदे वा विमलोदके ॥ वापीकूपगवांगोष्ठे गृहवाप्रतिमालये ॥  
 कृष्णाग्रेकारयेद्विप्र बलिनारायणाह्वयम् ॥ विष्णुःस्वर्णमयःकार्यो रुद्रस्ताम्रमयस्तथा ॥ ब्रह्मारौप्यमयस्तद्ब्रह्ममोलोहमयोभवेत् ॥  
 सीसकंतुभवेत्प्रेतो ह्यथवादभंकतथा इति ॥ ( प्रतिमाप्रमाणमपितत्रैव ) सुवर्णकर्षकोविष्णुब्रह्मारौप्यपलेनतु ॥ रुद्रस्ताम्रैर्दशपलैर्यमो  
 लोहमयस्तथा ॥ चतुःषष्टिप्रमाणंतु पलंपुरुषसीसकः ॥ अर्द्धवास्वर्णमानेनप्रतिमाकार्यमनोरमा ॥ सुवर्णसर्वदेवन्यं सर्वदेवात्मको  
 नलः ॥ सर्वदेवमयोविप्रः सर्वदेवमयोहारः ॥ ( शौनकापि ) पलमानेनवद्देन तदद्देनचशक्तितः ॥ देवतानांहिप्रतिमावित्ताशयविव  
 र्जिता इति ॥ ( गारुडे ) शन्नोदेवीतिमंत्रेण गोविंदपश्चिमेन्यसेत् ॥ अग्नआयहीतिरुद्रमुत्तरएवविन्यसेत् ॥ अग्निमीलेतिमंत्रेण पूर्वेणवप्रजा  
 पतिम् ॥ इषेवोर्जेतिमंत्रेण दक्षिणेस्थापयेद्वमम् ॥ मध्येमंडलकंकृत्वा स्थाप्योदभमयोनरः ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रो यमःप्रतश्चपंचमः ॥  
 पृथक्कुरुंभेततःस्थाप्याः पंचरत्नसमन्विताः ॥ विष्णुर्विधिंशिवंधर्म वेदमंत्रैश्चतर्पयेत् ॥ प्रेतायतर्पणकार्यं मंत्रैःपौराणवैदिकैः ॥

सवौषध्यक्षतौर्भैरविष्णुमुद्दिश्यतपयेत् ॥ कार्यपुरुषमुत्तेन मंत्रवैविष्णवैरपि ॥ दक्षिणाभिमुखोभूत्वा प्रेतंविष्णुमिति  
 स्मरन् ॥ अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षयःपुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ तर्पणस्यावसानेच वीतरागोविमत्तरः ॥  
 जितौद्रियमनाभूत्वा शुचिष्मान्धर्मतत्परः ॥ होमंक्रुवाचरेत्पञ्चद्व्याह्वान्विष्णवादिदेवकान् ॥ प्रथमंविष्णोवदद्या  
 द्वितीयंश्रीशिवायच ॥ याम्यायसपरिवाराय तृतीयंपिंडमुत्सृजेत् ॥ चतुर्थं सोमराजाय हव्यवाहायपंचमम् ॥ कव्यवाहा  
 यषष्ठं च दद्यात्कलायसप्तमम् ॥ रुद्रायचाष्टमंदद्यान्नभंपुरुषायच ॥ प्रेतायदशमंदत्त्वा चैकादशंविष्णवे ॥ द्वादशंब्रह्मणेदद्या  
 द्विष्णवेचत्रयोदशम् ॥ चतुर्दशंशिवायैव यमायदशंपंचकम् ॥ दद्यात्तत्पुरुषायैव पिंडंषोडशंखग ॥ ऋचावैदाण्येदध्वमे  
 कोद्दिष्टेष्टपृथक्पृथक् ॥ आपोदेवामधुमती आदिपिंडप्रकल्पिता ॥ उपयाभग्रहीतासि द्वितीयेध्वनिवेदयेत् ॥ येनापाचक्रचक्षुषा  
 तृतीयेचप्रकल्पिता ॥ येदेवासश्चतुर्थेत्तु समुद्रंगच्छंपंचमे ॥ अग्निर्ज्योतिस्तथाषष्ठे हरिण्यगभश्चसप्तमे ॥ यज्जगतेतिनवमे दशमेयाःफल्यति  
 च ॥ दद्याच्चविश्वतश्चक्षुःपिंडैचैकादशेततः ॥ भद्रंकर्णेभिरितिच कुर्यात्पिंडविसर्जनम् ॥ पंचश्राद्धानिर्कुर्वीत देवतानयथाविधि ॥ शंखेवाताम्र  
 पात्रेवाभ्येभनमृग्येपिवा ॥ तिलोदकंसमादायसवौषधिसमन्वितम् ॥ जलयारांततोदद्यात्पीठेपीठमृथक् इति ॥ (अत्रविशेषस्तुथंनरात)  
 इतिनारायणबलिप्रकारः ॥ (अथसर्पदष्टहतेनागपूजाउक्ता भविष्योत्तरे ) प्रमादादिच्छयावापि नागाद्रासर्पतोमृतः ॥ पक्ष्योरुभयोनगान्य  
 चमीषुप्रजयेत् ॥ कुर्यात्पिष्टमयंलेखां नागप्रतिकृतिंभुवि ॥ अचयतांसितैःपुणैःसुगंधैश्चदेनतु ॥ प्रदद्याद्भूपदीपन्तु तंडुलश्चसितान्  
 क्षिपेत् ॥ आमपिष्टंथवान्न शीरंचविनिवेदयेत् ॥ उपस्थायदेवं मुखमुंचासुकृत्तिति ॥ मधुरंतिदिनंदद्यादेवमब्दसमाचरेत् ॥ सौवर्णशक्ति

तोनागं ततोदद्याद्विजोत्तमः॥ गांसवत्संततोदद्यात्प्रीयतांनगराडिति॥ यथाविभागंकुर्वीत कर्माणिप्राक्तनान्यपि॥ नागाद्रिमोक्षणार्थं प्रो  
 क्तमप्यधिकंत्विदम्॥ द्विजन्विमोक्षयित्वातु संप्रीताःसन्तुपन्नगाः॥ इतिनागपूजा॥ (अथदुर्मरणनिमित्तप्रायश्चित्तानि दिवोदसीये) चांडाला  
 दिमृतेविप्रे त्वंतरिक्षमृतेष्विवा ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रचंद्रस्तु शुद्धिस्तत्रप्रकीर्त्तिता ॥ (तत्रैव जाबालिः) शुद्धेणदधेयोविप्रो नलभेच्छाभ्यर्तना  
 तिम् ॥ प्रायश्चित्तप्रकुर्वीत ब्राह्मणःपापशुद्धये ॥ चांद्रायणंपराकंच प्राजापत्यंविशोधनम् ॥ (मदननाले) ऊर्ध्वेच्छिष्टाधरोच्छिष्टोभयोच्छि  
 ष्टेतथैवच ॥ अस्पृश्यस्पर्शनैचैव सट्वादिमरणेपिच ॥ श्वानक्रव्यादसंस्पर्शं कृमिकीटोद्भवेऽपिच॥ एतद्दोषानुसारेण प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥  
 कृच्छ्रांस्त्रिषट्पंचदशांश्चाद्रायणमथापिवा ॥ कुद्ध्यैतदानीं संपाद्य शवधर्मेण दाहयेत् ॥ (स्मृतिरत्नावल्याम्) शवं रात्र्युषितं वेत्त्री न्कृच्छ्रान्कृ  
 त्वा देहेस्तुतः इति ॥ प्राजापत्यादिप्रत्याम्नाया उक्ताः ॥ (स्मृत्यर्थसारे) प्राजापत्येष्वशक्तस्तु धेनुदद्यात्पयस्विनीम् ॥ धेनोरभावेनिष्कं  
 स्यात्तदद्वैपादमेववा इति ॥ निष्कश्चत्वारंश्चन्माषकइत्यर्थः ॥ ( पारिजातेषट्त्रिंशन्मते ) कृच्छ्रयुतंचगायत्र्या द्वादशब्राह्मणभो  
 जनम् ॥ तिलहोमसहस्रं तु सममेतच्चतुष्टयम् ॥ धेनुनिष्कस्तदाद्धर्द्धं प्राणायामशतद्वयमिति॥ प्रायश्चित्तं सूतकान्तेकार्यम्॥ अथदुर्मरणनिमि  
 त्तदानानि ॥ (शतातपस्मृतौ) व्याघ्रेणनिहतेप्रेते विप्रकन्याविवाहयेत्॥ सर्पहृष्टेनगबलिर्देयः सर्पश्चकांचनः ॥ चतुर्निष्कमितहं गजंदद्या  
 द्रुजैर्हते ॥ राज्ञाविनिहतेदद्यात्सुषुप्तं तु हिरण्यम् ॥ चौरैर्णनिहतेधेनुं वैरिणानिहतेवृषम् ॥ वृषेणनिहतेदद्याद्यथास्त्यातुकाश्नम् ॥  
 शय्यामृतेप्रदातव्या शय्यातूलीसमन्विता ॥ निष्कमात्रमुवर्णस्य विष्णुनासमर्धिष्ठिता ॥ शौचहीनेमृतेचैव द्विनिष्कस्वर्णजंहरिम् ॥ संस्का  
 रहीनेचमृते कुमारमुपनायेत् ॥ निष्कत्रयंस्वर्णमिति दद्यादश्वहते ॥ शुनाहोर्देवपालं स्थापयेत्त्रिंशशक्तिः ॥ सूकरेणहतेदद्यान्म

हिषदक्षिणान्वितम् ॥ कृमिभिश्चमृतेदद्याद्द्रोधूमाव्रज्वारिका ॥ वृक्षवृक्षहेतुदद्यात्सौवर्णवस्त्रसंयुतम् ॥ शृङ्गानिहेतुदद्याद्दृषमवस्त्रसंयु-  
 तम् ॥ शकटेनहेतुदद्याद्दंशं सोपस्कारान्वितम् ॥ भृगुपातहेतवेव प्रदद्याद्धान्यपर्वितम् ॥ अग्निना निहेतुकार्यमुददानं स्वशक्तिः ॥ दारुणानि  
 हेतवेव कर्तव्यासदनसभा ॥ शस्त्रेण निहेतुदद्यान्महर्षिदक्षिणान्विताम् ॥ अश्वना निहेतुदद्यात्सवसांगां पयस्विनीम् ॥ विषेण चमृतेदद्या-  
 न्मर्दिनीक्षेत्रसंयुताम् ॥ उद्धधेनेन चमृते कर्पिकनकनिर्मिताम् ॥ मृतेजलेन वरुणं हेतुं दद्याद्विनिष्कजम् ॥ विषूचिकामृतेस्वादु भोजयेच्च शतं  
 द्विजम् ॥ घृतधेनुः प्रदातव्या कंठप्रकवलमृते ॥ कासरोगेण चमृते अष्टकृच्छ्रं व्रतं चरेत् ॥ अतीसारमृते लक्षं गायत्र्याः प्रयतो जपेत् ॥ शा-  
 क्त्यादिग्रहमस्ते जपेद्दुग्धयादितम् ॥ विधुत्यतेन निहेतुं विद्यादानं समाचरेत् ॥ अंतरिक्षमृते कार्यं वेदपारायणं तथा ॥ सच्छ-  
 द्मपुस्तकदद्यादस्त्रस्य शतो मृते ॥ पतिते चमृते कुन्यान्प्राजापत्यांस्तुषेडश ॥ मृते चापत्यरहिते कृच्छ्रणानवर्तिचरेत् ॥ एवमुक्तं  
 विधाने तु विदध्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥ ततः प्रेतत्वनिर्मुक्ताः पितरस्तापितास्तथा ॥ दद्यात्पुत्राश्चपौत्राश्च आशुरारोग्यसंपदः इति ॥ अथपंचकादि-  
 मृतविधानम् ॥ (गलुडुगणे) मृतस्य पंचकं दहा विधिविचित्रशृणुष्व मे ॥ अदौ कृत्वा धनिष्ठार्द्धमेतन्नक्षत्रपंचकम् ॥ रेवत्यंतसदादूष्यमशुभं  
 सर्वदा भवेत् ॥ दाहस्तत्र न कर्तव्यो विषादः सर्वजंतुषु ॥ न जलदीप्यते तेषु बहूभं स कर्त्तव्यं भवेत् ॥ पंचकानंतरं सव्यं कार्यं कर्तव्यमन्यथा ॥ पुत्राणां गो-  
 त्रिणां तस्य संतापोऽप्युपजायते ॥ गृहेहानिर्भवत्येव ऋक्षेष्वपुमृतस्य च ॥ अथवा ऋक्षमध्ये च दाहस्तु विधिपूर्वकः ॥ शवस्य तु समापे च क्षेतव्य-  
 पुत्तलास्ततः ॥ दर्भकृतास्तु च त्वार ऋक्षमंत्राभिमांत्रिताः ॥ ततो दाहः प्रकर्तव्यस्तैश्च पुत्तलैः सह ॥ सूतकान्ते ततः पुत्रैः काव्यशांतिक-  
 पोषिकम् ॥ तिलानां च सुवर्णं च तदुद्देशं घृतं देहत् ॥ भोजनोपानहौ च ग्रहं हेतुमुद्रां च वाससी ॥ दक्षिणा दीयते विप्रे पातकस्य प्रभाचनी इति ॥

(ताद्विधिः ब्रह्मगुणे) कुंभमीनस्थिते चंद्रे मरणथस्य जायते ॥ नतस्यौध्वगतिर्दृष्टा संततौ न शुभं भवेत् ॥ नतस्य दाहः कर्तव्यो विनाशास्त्रे  
 पुजंतु ॥ अथ वातदिने कार्यो दाहस्तु विधिपूर्वकम् ॥ धनिष्ठापंचके जीवो मृतो यदि कथंचन ॥ त्रिपुष्करेयाम्यभेवा कुलजनमारयेद्बुधम् ॥  
 तत्रानिष्टविनाशार्थं विधानं समुदीर्यते ॥ दशमोऽप्रतिमाः कायाः पंचोर्णा सूत्रवेष्टिताः ॥ यवपिष्टेन जुलितास्ताभिः सहशवंदहेत् ॥ प्रेतवाहः  
 प्रेतसखः प्रेतपः प्रेतभूमिपः ॥ प्रेतहतापंचमस्तु नामान्येता निचक्रमात् ॥ (अथ प्रतिमां यपुष्पैः पूजयित्वा) ॥ शिरसि दक्षिणे कुक्षौ वामेनाभौ  
 चतुर्थकम् ॥ पंचमं पादयोर्मध्ये तेषु दद्याद्दधृताहुतीः ॥ सूतकान्तेततः कुर्याद्विधानपंचकं तथा ॥ अन्यथानगतिस्तस्य प्रेतपुत्रसुशोभनम् ॥  
 स्वयद्बोक्तो विधानेन कृत्वाग्निस्थापनंततः ॥ अभिध्यानं विवर्णतु देवतानं तथा शृणु ॥ वसवो वरुणश्चैव अजैकगान्तीयकम् ॥ अहिर्बुध्न्यश्चतुर्थं  
 च पूषणं पंचमं तथा ॥ यमाय यमराजाय मृत्युवे चान्तकाय च ॥ वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च ॥ औदुम्बराय दध्राय नीलाय परमे  
 ष्ठिने ॥ वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वैनमः ॥ अघोररुद्रमैत्रश्च निर्वपयेत्कमेणतु ॥ विधिनाश्रपणं कृत्वा एकैकमाहुतिं देहेत् ॥ कुंडादीशान  
 दिग्भागो स्थंडिलहस्तमात्रकम् ॥ तत्र वस्त्रं समास्तीर्य स्थापयेद्दस्वादिपंचकात् ॥ चतुर्दशयमाश्चैव अघोरं स्थापयेत्पुनः ॥ अघ्राणाः कलशाः  
 स्थाप्या दिक्षु चत्वारि विन्यसेत् ॥ कलशः पंचमो मध्ये स्थापयेद्दिधिपूर्वकम् ॥ उच्चार्य वरुणं त्रं पूरयेत्तीर्थवारिणा ॥ मध्ये सर्वेष्वधीः क्षित्वा  
 मृद्व्वापल्लवस्तथा ॥ हिरण्यफलसंयुक्तं वस्त्रेण वेष्टयेत्ततः ॥ कलशोपरि न्यसेन्मूर्तिं पंचस्वर्णमयीं भवेत् ॥ प्रतिष्ठा पूजनं कार्यं पंचमूर्तं जपेत्ततः ॥  
 श्रपयित्वा चरुं विद्वान्दद्यादग्निमुक्ततः ॥ आघारावाज्यभागौ च ततो वह्निं समचयेत् ॥ समित्तैलैश्च चरुभिर्हेमकुंभान् पृथक् पृथक् ॥ अघोरैरे  
 वमंत्रेण ततो होमं चरेत्कमात् ॥ पूर्णाहुतिं विधिवन्पूजयेद्देवतांततः ॥ इत्थं समाप्य हवनं धेनुं दद्यात्पयस्विनीम् ॥ सहिर्णयं तिलां दत्त्वा

महिर्षिसाधन्यकम् ॥ साहिरयंघृतं दद्यात् कृष्णवस्त्रंचदक्षिणम् ॥ अभिषेकततः कुयान्कलशो देनयन्तः ॥ कलशैः स्वनपतस्य कुयो  
 दाज्यावलोकनम् ॥ वस्त्रैर्वपगित्यज्य रुद्रभक्तियोगतः ॥ ब्रह्मणानभोजयेत्पश्चात् पायसंमधुसर्पिषा ॥ एवंयः कुरुते पुनः शुभतस्यप्र  
 जायते ॥ विधान्येन कुर्वीत विघ्नस्तस्य भवेत्सदा ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शान्तिकुर्यादथ विधि ॥ कृतवातुगोत्रजाः सर्वे सुखिनः स्युरिणमयाः ॥  
 भवंति नान्नसंहो नात्रकार्या विचारणा ॥ इति ब्रह्मपुराणे तं पंचकविधानम् ॥ ( मदनतले गार्ग्यः ) यदि भद्रातिथिनां स्याद्बालुभौमशनैश्चराः ॥  
 त्रिपादक्षश्च संयोगे द्वयोर्गोद्विपुष्करः ॥ द्वित्रिपुष्करयोगे तु वृत्तिमृत्यन्तरावहा ॥ दूनेमरणे चैव त्रिगुणस्यात्रिपुष्करे ॥ खनयेयेवमेव स्या  
 देतदोषोपशान्तये ॥ तिलपिष्टं दहयेत्पि शरीरं कारयेत्ततः ॥ द्रूपैर्निधायालोक्य दहयेत्पतृकोपारि ॥ ( तदा हेममंत्रमाह बोधायनः ) अस्मात्त्व  
 भित्तिमत्रेण तिलपिष्टं दहयेत् ॥ द्वित्रिपुष्करया दोषैस्त्रिभिः कृच्छ्रैर्यथेति ॥ इति दुर्भरणप्रायश्चित्तादीनि ॥ अथ सांवत्सरिकं श्राद्धं निहप्य  
 तोतात्रतवत्क्षयाहनिष्यः ॥ ( ब्रह्मपुराणे ) प्रतिसंवत्सरं कार्यं मातापित्रोर्मतेऽहनि ॥ पितृव्यस्याप्यपुत्रस्य श्रातुर्व्यष्टस्यैव हि—इति ॥ अत्रमृ  
 तहशब्देन मरणहर्षतिनीतिर्यथा विवक्षिता ॥ संवत्सरान्ते मुख्यमृतहस्यासंभवात् ॥ अहर्ग्रहणं त्रेषूपलक्षणार्थं तेन रात्रिमृतस्यापिमातिथि  
 र्लभ्यते ॥ अतः संवत्सरान्ते मृतहसंबन्धिर्न्यातिर्यथा सांवत्सरिकं कर्तव्यमित्यर्थः ॥ ( तथाच हेमाद्रौ वासिष्ठः ) पारणे मरणे नृणां तिथिस्तात्कालिकी स्मृ  
 ता ॥ पित्र्येऽस्तमयवेलायां स्पृष्टा पूर्णानि गद्यते—इति ॥ तात्कालिकी यस्मिन्काले उपवासदिनतपारणं मरणं वा तत्कालत्रयैवेत्यवयवोऽस्ति यः ॥  
 न पुनस्तत्कालवर्तिनी इत्यर्थः ॥ अथवा त्रमृतहशब्देनापलक्षणत्रयविशिष्टमहोत्रमात्रमात्रमेतत् ॥ ( तदाह तत्रैव व्यासः ) मासपक्षान्तिर्यस्य  
 द्वे यो यस्मिन् त्रयतेऽहनि ॥ प्रात्यब्दस्तत्तथाभूतं क्षयाहस्य तं विदुरिति ॥ तथाभूतमित्युपलक्षणत्रयोपेतमित्यर्थः ॥ एकोदिष्टादिश्राद्धेषु



मध्यह्नादिव्यापिनीग्राह्या ॥ ( तथाच हेमाद्रौषुद्धगतमः ) मध्याह्नव्यापिनीयास्यात्सैकोद्दिष्टेतिथिर्भवेत् ॥ अपराह्णव्यापिनीया पार्वणेषा  
तिथिर्भवेत् ॥ मध्याह्नव्यापिनीयातु तिथिः पृथ्वीपरापिवा ॥ तस्यापितृभ्योदातव्यं ह्नासबृद्धीनकारणम्-इति ॥ ( क्षयाहप्रशंसामाह हेमाद्रौ  
जबालिः ) उपरागसहस्राणि अमावास्यायुतानिच ॥ अक्षयंतुभवेच्छूद्रं यस्तुदद्यान्मृतैहनि ॥ ( अकरणेदोषमाह तत्रैवकाष्ठाजिनिः )  
ऊषेतुथाक्षितं बीजनप्रतिरोहति ॥ तथाचतद्भवेत्तेषां यन्नदत्तंमृतैहनि-इति ॥ तेनमृताहे अवश्यंदातव्याभित्यभिप्रायः ॥ अत्रैकोद्दिष्टपा  
र्वण्यार्विचारः ॥ ( तथाचहेमाद्रौब्रह्माण्डपुराणे ) वसरेकोचिदेकस्मै दानंत्रिभ्यः परेजगुः ॥ अतःस्मृतिविरोधेन निणयंश्रुतमहय-इति ॥  
एकस्मैद नमित्यनेन एकोद्दिष्टवत् संवत्सरिकथाद्भ्ययोगउक्तः ॥ त्रिभ्य इत्यनेनपार्वणवदित्यर्थः ॥ तावदेकोद्दिष्टविधायकानिवाक्यानि  
लिरुच्येते ॥ ( तत्राह यमः ) सर्पिडीकरणाद्धूर्ध्वं प्रतिसंवत्सरंस्तुतः ॥ एकोद्दिष्टंश्रुर्वीत पित्रोरन्यत्रपार्वणम् ॥ ( हेमाद्रौव्यासोपि ) प्रतिस्व  
त्सरंयत्र मातापित्रोःप्रदीयते ॥ अहैवमोजयेच्छूद्रं पिंडमेकंचनिर्वपेत्-इति ॥ यमेनत्वेकोद्दिष्टं सांत्सरिकं विधायतस्याकरणेदोषउक्तो  
हेमाद्रौ ॥ एकोद्दिष्टपरित्यज्य पाब्बणंकुरुतेयदि ॥ अकृतंतद्विजानीयात्समातृपितृवाकः-इति ॥ अधुनापार्वणविधायकानिचनानि  
लिरुच्येते ॥ ( तत्र हेमाद्रिमाधवयोजितूकण्यः ) पितुः पितृगणस्थस्य कुर्यात्पार्वणवत्स्तुतः ॥ प्रत्यब्दंप्रतिमासंच विधिज्ञेयः सनातनः-इति ॥  
पितृगणस्थः कृतसर्पिडीकरणः सनातनः अवश्यकइत्यर्थः ॥ ( तत्रैवपुलस्त्योपि ) एकोद्दिष्टुकर्तव्यं यावत्पित्रोः सर्पिडनम् ॥ ततः सर्पिडनाद्  
ध्वैमेकोद्दिष्टंनिवर्तते ॥ ( भविष्यपुराणेपि ) सर्पिडीकरणकृत्वा कुर्यात्पार्वणवत्सदा ॥ प्रतिस्वत्सरंविद्वानिन्येवंविष्णुरब्रवीत्-इति ॥ अत्र  
कोचिन्त्यावैणकोद्दिष्टयोरन्यव्यवस्थामाहुः ॥ ( तत्र हेमाद्रिमाधवयोजेमदग्निः ) आपाद्यः सहपिंडत्वमौसोर्विधिवत्स्तुतः ॥ कुर्वीतदर्शवच्छूद्रं



मातापित्रोःक्षयेऽहनि ॥ पुत्राणामौरसःपुत्रः पुत्रमात्रास्तथाऽपरे ॥ पितुःपितृगणस्थस्य नित्यकुल्यास्तर्पणमिति ॥ ननुदर्शतिदेशात्  
 मातामहानामपिश्राद्धप्रसज्येत ॥ नायंदेशः ॥ प्रत्यादिक्षट्पिंडानापथुदत्तत्वात् ॥ ( तथाच कात्यायनः ) कर्षूसमन्वितंमुखत्वा तथाद्यश्रा  
 द्धपेडाश्चाप्रत्यादिक्चरणेषु पिंडाःस्युःषडितिस्थितिः-इति ॥ कर्षूसमन्वितं सपिंडीकरणम् अनेन अर्थात् कर्षूसमन्वितादिषुमातामहश्रा  
 द्धंनविधय इति चोक्तं भवति ॥ ( हेमाद्रौजबालिः ) औरससंज्ञैपुत्रौ विधिनापार्ष्णनतु ॥ प्रत्यब्दमित्तैकुशुरैकोदिष्टमुतादश-इतितादयु  
 क्तम् ॥ एकोदिष्टमुक्तव्यमौरसमनेऽहनि-इति माधवीयपेठिनसिचनविरोधात् ॥ जमदश्यादिवाक्यंतु क्षयाव्यतिरिक्तप्रत्यब्दकृते  
 व्यक्षय्यतृतीयादिविषयत्वेनाप्युपपद्यते-इति ॥ केचित् अन्यथाव्यवस्थामाहुः ॥ ( तत्र हेमाद्रिसुमंतुस्मृतिमविष्यपुराणेषु ) ॥ कुर्या  
 द्जीविधिवच्छ्राद्धं पार्ष्णयाग्निमान्द्रिजः ॥ पित्रोरनग्निमान्द्रिजः ॥ तदयुक्तम् ॥ बह्वग्नयस्तुयेविप्रा येचैकाग्रयएवच ॥  
 तेषामपिंडानादूर्ध्वमेकोदिष्टंनपार्ष्णमिति-माधवीयमनुनासिकस्यापि एकोदिष्टमृतेऽहनि-इति ॥ तदयुक्तम् ॥ तत्रैकोदिष्टपार्ष्णयोर्विकल्पस्तथापियेषां पं  
 पर्यापार्ष्णमेवक्रियतेतस्तेदेवकर्तव्यंयेषामेकोदिष्टमवक्रियतेतत्रैकोदिष्टमेवेति ॥ येनस्यपितरोयाला येनयाताःपितामहाः ॥ तेनयायास्त  
 तांमार्गं तत्रगच्छद्गुप्यति-इतिमनुवचनात् ॥ तेननिरागिरससंज्ञपुत्रिकापुत्रैर्मृतेऽहनि एकोदिष्टकर्तव्यम् ॥ साग्निकैस्तुपार्ष्णमेव अन्ये  
 स्तुदत्तकीदिभिर्देशपुत्रैरेकोदिष्टमेवेतिस्थितम् ॥ ( उक्तच हेमाद्रौभविष्यपराणे ) निग्नोरौरसस्योक्तमेकोदिष्टमृतेऽहनि ॥ प्रत्यब्दपार्ष्णं  
 सामान्येषानुनपार्ष्णमिति ॥ अमावास्यायांप्रतिपक्षमृतानासवर्षापार्ष्णमवानयतम् ॥ ( तदाह हेमाद्रिमाधवीयोःशंखः ) ॥ अमायांतुश्च  
 योग्यस्य प्रेतपक्षेयवापुनः ॥ पार्ष्णंतस्त्यकर्तव्यं नैकोदिष्टकदाचनइति ॥ प्रेतपक्षेऽश्वयुक्कुण्डपक्ष इत्यर्थः ॥ ( तत्रैव ) प्रेतपक्षेप्रमातस्यापि

तुःकुर्वीतपार्वणम् ॥ पितृव्यभ्रातृमातणामेकोद्दिष्टंनपार्वणम्-इति ॥ इत्थंपार्वणैकोद्दिष्टेअभिहितेयतेरुतुनकाप्येकोद्दिष्टम् ॥ किंतुसर्वत्र  
पार्वणमेव (तथाच माधवेप्रचेताः) दण्डग्रहणमात्रेणैवप्रतोभवेद्वतिः॥ अतःसुतेनकर्तव्यं पार्वणंतस्यसर्वदा॥(?) (हेमाद्रौशातातपः) एको  
द्दिष्टंलपिंपंडमारौचप्रेतसत्तिकयाम् ॥ नकुर्यात्पार्वणादन्यद्ब्रह्मीभूतायभिक्षवे इति ॥ (मातृश्राद्धेविशेषमाह कात्यायनः) प्रत्यब्दंययथा  
कुर्यात्पुत्रःपित्रेसदाद्विजः ॥ तथैवमातुःकर्तव्यं पार्वणमन्यदेववा इति ॥ अन्यदेकोद्दिष्टंयुतुतेनैवाकम् ॥ पितृव्यभ्रातृमातणामेकोद्दिष्ट  
सदैवहीति ॥ एतत्पितृव्यादिसमभिव्यवहारान्मातृसपत्नीपरामितिवेदितव्यम् ॥ (अपुत्राणांसांवत्सरिकश्राद्धमाहऽपस्तंबः) अपुत्राये  
मृताःकेचित्त्रियोवापुरुषाश्च ॥ तेषामपिचैदंयस्यैकोद्दिष्टं नपार्वणम् ॥ मित्रबंधुसर्पिंडेभ्यःस्त्रीकुमारीभ्यएवच ॥ दद्याद्रामासिकंश्राद्धंसां  
वत्सरमतोन्यथा ॥ (प्रचेताः) सर्पिंडिकरणधूषणेकोद्दिष्टंविधीयते ॥ अपुत्राणांचसर्वेषामपत्नीनंतैथेवच-इति ॥ अपत्नीनां अकृतविवाहा  
नाम् ॥ (हेमाद्रवत्रिः) भ्रात्रेभगिन्यैपुत्राय स्वामिनेमातुलायच ॥ पितृव्यगुरवेश्राद्धमेकोद्दिष्टंनपार्वणम् ॥ (तत्रैव जातृकर्ण्यः) पितृव्य  
भ्रातृमातृणामपुत्राणांतैथेवच ॥ मातामहस्यापुत्रस्य श्राद्धादिपितृवद्रवेदिति ॥ (एकोद्दिष्टलक्षणमाह कात्यायनः) अथैकोद्दिष्ट  
मेकंपवित्रमेकोऽप्येकपिंपंडनावाहनंनौकरणंनान्नविश्वेदेवाः स्वदितमितिर्वृत्तिप्रशःसुस्वदितमित्यनुज्ञानमुपतिष्ठतामित्यक्षय्यस्थाने  
अभिरम्यतामिति विसर्गेअभिरताःस्मृत्यपरे इति ॥ तथैकोद्दिष्टंविधिवंनवनमिश्रगुणंचेति ॥ अत्रप्रथमाहाद्वेकादशाहंतविषयनत्रश्राद्ध  
म् ॥ नवश्राद्धानामुपरिकर्तव्यमासिकंनवमिश्रम् ॥ मासिकानामुपरिकर्तव्यंप्रत्यादिंकादिचपुराणम् इति माधवप्रभृतयः ॥ एतच्छ्रद्धं  
सुतिकादिनामुख्यकालातिक्रमेत्त्वशौचागमनानन्तरकालप्रकार्यम् ॥ (तथाच ऋष्यशृङ्गः) देयेपितृणांश्राद्धे तु आशौचंजायेतदा ॥

अशौचेतुव्यातिक्रान्ते तेभ्यःश्राद्धं प्रदीयते इति ॥ यत्वात्रिवचनम् ॥ तदहश्चेद्रुदुष्येतेकेनचित्सूतकादिना ॥ सूतकानन्तं कुप्यान्तु नस्तदह-  
 वच इति ॥ सूतकानन्तरकाले वा अन्ये वा मासितरपक्षेति धर्तव्यं पक्षद्वयमुपन्यस्तम् ॥ तत्राद्ये पक्षे विरोधोऽप्यन्य-  
 पक्षः सूतकव्यतिरिक्तानि तान्तराजविघ्नसमुत्पन्नं प्रति मासं श्राद्धं विप्रश्नं हिताहितैः कृष्यशृगवचनाविरोधाद्यवस्था-  
 प्यते ॥ (अतएव देवलः) एकोदिष्टदुसंप्राप्ते यदि विघ्नः प्रजायते ॥ अन्यस्मिन्स्ततिर्यौ तस्मिन् श्राद्धकुर्यात्प्रयत्नतः इति ॥ अन्यस्मिन्नन्तरे  
 मासिततिर्यौ मृततिर्यौ स्मिन् शुक्ले कृष्णे वा मृतस्ति स्मिन् श्राद्धं विघ्नवशात्कुर्यादित्यर्थः ॥ अशौचनिमित्तकविघ्ने तु मासि श्राद्धमपि मृत-  
 कानन्तरमेव कृष्यशृङ्गवचनवलादनुष्ठेयम् ॥ एतत् ऋष्यशृगवचनं मृतकशौचविषयम् ॥ निमित्तान्तरतस्तदहविवाते ॥ एकोदिष्टदुसंप्राप्ते  
 यदि विघ्नः प्रजायते ॥ इत्यादि स्मृत्यन्तरवचनमिति ॥ यत्तु व्यासेनोक्तम् ॥ श्राद्धविघ्नसमुत्पन्ने अन्तामृतमुत्तरे ॥ अमायां तु प्रकुर्वीत  
 शुद्धवेकैर्भनीषिणः इति ॥ अन्तराप्रयोगस्यैषा कोपकमात्रा कुर्मृतके मृतके वा जाते अमावास्यायां शुद्धद्वयनन्तरं वा श्राद्धं प्रकुर्वीत इति ॥  
 एतदनुमासिकसांवत्सरिकश्राद्धविषयम् (अतएवोक्तं षड्विंशन्मते) ॥ मासिके द्वेदुसंप्राप्ते अन्तरामृतमुत्तरे ॥ वदन्ति शुद्धौ तत्कार्यं  
 दर्शे वापि वक्षणाः इति ॥ दर्शग्रहणं शुक्लकृष्णौ कादश्यां राक्षणाथम् ॥ (अतएव मरीचिः) श्राद्धविघ्नसमुत्पन्ने अविज्ञाते मृतोऽहनि ॥  
 एकादश्यान्तर्कृत्यं कृष्णपक्षे विशेषतः ॥ इति कृष्णपक्षे या एकादशी तस्यां विशेषतः कर्तव्यमिति योजना पितृकार्ये कृष्णपक्षस्येव विशेष-  
 षतोऽप्राधान्यात् कृष्णैकादशीतोपि अमावास्यासुख्यत्वं पितृकार्ये दंडापूर्णायासिद्धम् एतदुक्तं भवति आशौचसमन्तरकाले मुख्यकाल-  
 सान्निभृष्टत्वाच्च्युष्टतमः दर्शकालस्तु मुख्यकालप्रत्यासत्त्यभावात् ततो जघन्यः इति ॥ (अतएव ऋष्यशृङ्गः) शुचीभूतेन दातव्यं यातिथिः

प्रतिपद्यते ॥ सातिथिस्तस्यकर्तव्या नवान्यावैकदाचन ॥ इतिशुचिनातावच्छेदकत्वंतत्राशौचवशान्मुख्यकालेशुद्धयभावे शुद्धयनत्त  
 रंयातिथिः प्रतिपद्यते लभ्यते सातिथिस्तस्य कर्मणोऽङ्गत्वेनस्वीकर्तव्या आशौचाद्यनुपघाततुल्यमुख्यकालेनालस्यादिनाऽपिकर्मणीयः ॥  
 तदाह स एव-तिथिच्छेदो न कर्तव्यो विनाऽऽशौचं यदृच्छया ॥ पिंडंश्चाद्धं च दातव्यं विच्छिन्नैर्नैव कारयेत् ॥ इति ॥ श्राद्धशब्देन ब्राह्मण  
 तर्पणमात्रं विवाक्षितं पिंडदानस्य पृथगुपात्तत्वात् ॥ विच्छिन्नैर्नैव कारयेदिति ब्राह्मणकर्मकर्तुमसमर्थश्चेत्पिंडप्रदानमात्रमपिकुर्यात् ॥ सर्वथा  
 पित्रर्चनस्य विच्छेदं न कुर्यादित्यर्थः ॥ अतएव निगमः आहिताग्नेः पित्रर्चनं पिंडैरेव ब्राह्मणानां पिवाभोजयेत् इति ॥ अत्र व्यवस्थितो विकल्पः  
 सति सामर्थ्ये ब्राह्मणतर्पणं पिंडप्रदानं च कुर्यात् तत्राऽसामर्थ्ये पिंडप्रदानमात्रमिति ॥ (यत्तु हरीतेन) श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने अमावास्यादिष्व  
 मश्राद्धं विहितम् ॥ श्राद्धविघ्ने द्विजतीनामश्राद्धं प्रकीर्तितम् ॥ अमावास्यादिनियतं माससंवत्सरादहते इति ॥ मासं मासिकम् ॥ सांवत्सरं सां  
 त्सरिकम् ॥ तद्द्वार्यारजो दर्शनं कृतं विघ्नविषयम् (तथाऽऽहोशनाः) अपत्नीकः प्रवासी च यस्य भार्यारजस्वला ॥ सिद्धांतं न प्रकुर्वीत आ  
 मन्तस्य विधीयते इति ॥ यस्य यजमानस्य भार्या ऋतुमती तत्र पाककर्त्रभावेनित्यनैमित्तिकश्राद्धेषु मासिकसांवत्सरिकव्यतिरिक्तेषु यजमान आ  
 मश्राद्धाधिकारी भवतीत्यर्थः ॥ (कात्यायनोपि) आपण्यनश्रौतैश्च प्रवासेषु त्रजन्मनि ॥ आमश्राद्धं प्रकुर्वीत यस्य भार्यारजस्वला ॥ (व्या  
 घ्रपादोऽपि) आर्त्तवेदशकालानां विप्लवेषु समुपस्थिते ॥ आमश्राद्धं द्विजैः कार्यं शुद्धेण तु सदैव हि इति ॥ न च कात्यायनव्याघ्रपाद  
 वचनपर्यालोचनया मासिकप्रत्याब्दिकयोरप्यामश्राद्धं प्राप्नोतीति मन्तव्यम् ॥ 'माससंवत्सरादहते' इति हरीतवकनविशेषणमाश्राद्धस्य तस्य  
 तिरिक्तविषयत्वानमात् ॥ (अतएव मरीचिः) अनधिकप्रवारी च यस्य भार्यारजस्वला ॥ आमश्राद्धं द्विजैः कुर्यात्तु यान्द्वेऽ ॥

इति ॥ तदामश्राद्धमृतोद्दहनं कुर्यात् किन्तु पक्षाघातेन वक्तुयादित्यर्थः ॥ (लौगाक्षिरपि) पुण्यवत्त्वापि दास्युः विदेशस्थोऽप्यनश्रिकः ॥ अत्रैव वा  
 विदं कुर्यादश्राद्धमाभनवाक्कोचिद् इति (यत्तु स्मृत्यन्तरे) भार्यारजस्वलायामृतोद्दहननिषेधः ॥ मृतोद्दहनसंप्राप्ते यस्य भार्या रजस्व  
 ला ॥ श्राद्धतद्दानकर्तव्यं कर्तव्यपंचमेऽहनातिस्त्रयापि विषयः अपुत्रायाः पत्न्या एष पयुःमृताहश्राद्धेऽधिकाराद्यद्वा स्वयमेव रजस्वला स्या  
 त्तादामृतोद्दहनश्राद्धनकर्तव्यं किन्तु पंचमेऽहनीति ॥ (तथाच गौतमः) अपुत्रा तु यस्य भार्या संप्राप्ते भर्तुराब्दिके ॥ रजस्वला भवेत्सा तु कु  
 र्यात्तत्पंचमेऽहनि इति ॥ (प्रभासखंडेऽपि) शुद्धसातचतुर्थोद्दहने स्नानान्नारिरजस्वला ॥ वैकेर्मणिपित्र्येच पंचमेऽहनि शुध्यति इति ॥ अन्येतु-  
 श्राद्धयेऽहनि संप्राप्ते यस्य भार्या रजस्वला ॥ श्राद्धतत्रनकर्तव्यं कर्तव्यपंचमेऽहनि ॥ इति श्लोकगौतमवचनमन्यथा पठित्वा श्राद्धादौ केर्मणिभा  
 र्यायासहैवाधिकारश्रवणात्तस्यारजोदर्शनदूषितायामधिकारनिवृत्तेऽसुख्यकालमतिक्रम्य पंचमेऽहनि श्राद्धकर्तव्यमिति मन्यते नन्वास्मिन्पू  
 ठेऽमावास्यादिश्राद्धस्यापि पंचमेऽहनुत्कर्षः प्राप्नोति ॥ मैवंश्राद्धविधौ द्विजातीनामिति हारीतवचनेनामावास्यादिष्वामस्यान्नाकार्ये सोमकार्येषू  
 तिकर्माद्विहितत्वात् ॥ श्राद्धयेऽहनीत्यस्य वचनस्य मृताहव्यतिरिक्ता विषयत्वेन सार्थकत्वमस्त्विति चेत् भवेदेतदेवं यदि विषयान्तरं वक्तुं शक्ये  
 तनत्वेतदस्ति मृताहविषयन्तु 'मृतोद्दहनसंप्राप्ते' इति स्मृत्यन्तरवचनदेवागम्यते तस्मादेकभायेण मृताहश्राद्धरजोदर्शनरूपविघ्नोपरमकाल  
 एव कर्तव्यं भार्यान्तरयुक्तेनैवाधिकारानपगमानुसृत्य एव काले कर्तव्यमिति यदत्र युक्तं तद्ब्रह्ममिति पराशरमाधवाद्याद्वयस्था ॥ एवमेव  
 हेमाद्रिमदनपारिजातयोः ॥ अथ क्षयाहाऽपरिज्ञाने सांस्वत्सरिकश्राद्धकालाः ॥ (तत्र हेमाद्रौ बृहस्पतिः) न ज्ञायते मृताहश्चेन्न मृताहो विप्रै  
 रसति ॥ मांसश्चेन्न त्रिभिर्ज्ञातस्तद्दर्शस्यान्मृतोद्दहनि ॥ इति यस्य प्रोषितस्याऽप्रोषितस्य वामृतस्य तिथिर्ज्ञायते तस्य तन्मासामावास्यायां

सांवत्सरिकंकार्यामित्यर्थः ॥ ( अस्मिन्नेवविषये एकादश्यांश्राद्धमाहमरीचिः ) श्राद्धविधेसमुत्पन्ने अविज्ञातेमृतेऽहनि ॥ एकादश्यान्तुकर्तव्यं  
 कृष्णपक्षेविशेषत इति ॥ यस्य तुमृताहः परिज्ञायतेमासस्तुनज्ञायते तस्यमार्गशीर्षं माघेवातस्मिन्नहनिश्राद्धकर्तव्यम् ॥ ( तथाच बृहस्प  
 तिः ) यदा मासोनविज्ञातो विज्ञातदिनमेवतु । तदामार्गशिरमासि माघेवातदिनंभवेत्-इति ॥ यदातुग्राेषितमृतस्यदिनमासाबुभावयविज्ञातो  
 स्यात्तौ तदातत्प्रस्थानकालिकयोर्दिनमासयोस्तत्सांवत्सरिककार्यम् ॥ ( तदाह बृहस्पतिः ) दिनमासौनविज्ञातौमरणस्ययदपुनः ॥ प्रस्थान  
 दिनमासौतु ग्राह्यौपूर्वोक्त्यादिशा इति ॥ प्रस्थानतिथिमासयोर्भूयोरप्यज्ञानेतुतन्मरणश्रवणकालिकयोस्तिथिमासयोःकुर्यात् ॥ ( तदाह हे  
 माद्विप्रचेताः ) अविज्ञातमृते अमावास्यायांश्रवणदिवसेवा इतिश्रवणदिवसेमरणवात्तार्कणनतिथौ इत्यर्थः ॥ इति सांवत्सरिककाल  
 निरूपणम् ॥ ( अथसांघातमरणक्रममाह ऋष्यशृङ्गः ) भवेद्यदिसर्पिडानां युगपन्मरणं तथा ॥ संबंधासत्तिमालोच्य तत्क्रमाच्छ्राद्धमाचरेत् ॥  
 इति ॥ ( अत्र माघवाचार्यः ) पत्न्यादिसर्पिडेषुसंबंधासत्तिरेवंद्रष्टव्या ॥ पतिपत्न्योः संबंधः प्रत्यासन्नः एकप्रतियोगिकत्वादव्यवधाना  
 च पतिवंपत्नीमात्रनिरूप्यं पत्नीत्वमपिपतिमात्रनिरूप्यमित्येकप्रतियोगिकत्वमतएवाप्यवहितत्वश्चतत्संबंधस्य ॥ पुत्रस्यतु मातापितृ  
 द्वयनिरूप्यत्वेनविलम्बितप्रतिपत्तेर्विप्रकृष्टः संबंधः ॥ भ्रातृस्तुपितृजत्वव्यवधानेनततोऽपिविविक्कृष्टः एवमन्यत्रोहनीयम् इत्यर्थः ॥ ( पत्न्यादी  
 नांपित्रोश्चसांघातमरणे माधवीयेऋष्यशृङ्गः ) पत्न्याः पुत्रस्यतत्पुत्रभ्रातोस्तत्तनयस्यच ॥ सुषाश्चश्वेऽपित्रोश्च सांघातमरणंयदि ॥ अर्वांग  
 वदन्मातृपितृपूर्वसापिड्यमाचरेदिति ॥ तत्पुत्रः पुत्रपुत्रः ॥ तत्तनयो भ्रातृतनयः इत्यर्थः ॥ ( यत्तु देवलेनोक्तम् ) पितरौप्रमृतौयस्य देह  
 स्तस्याशुचिर्भवेत् ॥ नद्वैवंनापिपित्र्यंच यावत्पूर्णेनवसरः ॥ इतितत्पूर्वोक्तपत्न्यादिव्यतिरिक्तसर्पिडविषयम् ॥ ( अतएव लौगाक्षिः )

अन्येषांप्रतिकार्याणि महगुरुनिपातने ॥ कुर्यात्सत्सत्सरादवक्ष्वाद्भमेकवतुजयेत् ॥ इतिप्रतकार्याणिदहनदीन्याद्यश्राद्धान्नानिविवक्षितानि ॥ आद्यंश्राद्धमशुद्धोपि कुर्यादेकादशहनि ॥ इतिविशेषस्मरणत् ॥ अनेनपितृमातृमरणेवत्सराध्यपत्न्यादीनांदाहादिप्रतकार्यश्राद्धं च कर्तव्यमेव ॥ पत्न्यादिभिन्नसर्पिडानान्तु दाहाऽऽद्यश्राद्धपर्यन्तमेवकार्यतेषांप्रतश्राद्धमपि इतियवस्थानिष्कर्षः ॥ (पित्रोः संघातमरणे माधवे देवलः ) पित्रोरुपरमेषुत्राः क्रियांकुर्यादयोरपि ॥ अनुवृत्तौचनान्येषां संघातमरणेऽपिवा इति॥ अनुगमनेनपित्रोः संघातमरणे मातृनुगमनेदिनान्तःसरणेपितृत्वादाशहेक्रियांकुर्याः ॥ अन्येषांपित्रोश्चसंघातमरणे यथाकालंनकुप्युः किंतुत्रिपक्षेवा॥ (तदाह लोगाक्षिः) पत्नीपुत्रस्तथापौत्रो भ्रातातपुत्रका अपि ॥ पितरौचयदैकस्मिन् क्रियेन्वासरेतदा ॥ आद्यमेकादशेकुशोत्रिपक्षेतुसर्पिडनम् इति ॥ पित्रोरनुगमनं विना संघातमरणे मातृनुगमनं विना इति॥ अथश्राद्धसर्पिडनं कुर्यात् ॥ (तथा च देवलः ) एकाहमरणेपित्रोरन्यस्यान्यदिनेमृतौ ॥ सर्पिडनं त्रिपक्षेस्यादनुयानमृतिविना इति॥ अथश्राद्धसर्पिडनं निर्णयः ॥ तत्रमातृपितृश्राद्धद्वयस्यैवत्कालस्येपिपितृश्राद्धैर्वकुर्यात् ॥ (तदाह माधवीयकाण्वाजिनिः) पित्रोःश्राद्धममप्राप्ते नवेषुर्पितोपेवा ॥ पितृपूर्वसुतःकुप्यादन्यत्रासर्तियोगतः इति ॥ पशुर्पितोचिरन्तने अन्यत्रमातृपितृव्यतिरिक्तविषयसंबंधासर्तियोगतः कुर्यादित्यर्थः ॥ ( गृहदाहादिनागुपनमरणे भृगुः ) एककालेगताहनां बहूनामथवाद्भयोः ॥ तंत्रेणश्रपणंकृत्वा कुर्याच्च्छ्राद्धंथकथृक् ॥ पूर्वकस्यमृतस्यादौ द्वितीयस्यजघन्यतः ॥ तृतीयस्यततःकुप्यात्सन्निपितोऽप्ययंक्रमः ॥ इति पूर्वकस्यमुल्यस्यपितुः द्वितीयस्यततोऽपिजघन्यायाःसापत्नमातुसित्यर्थः ॥ ( गरुडेपि ) एकनैवेतुयाकेन श्राद्धानिकुरुतेऽत्रिहा ॥ विक्रान्तेकतःकुप्यात्पिंडान्द्वान्थकथृक् ॥ (पुलस्त्योपि) महालयेगयाश्राद्धे गतामृतां



क्षयेऽहनि ॥ तत्रेणश्रपणंकृत्वा आङ्कुर्यन्तपृथक्पृथक् इति ॥ इदंचपृथक्पाकाशक्ताविति कमलाकरः ॥ ( पृथ्वीचंद्रोदये आश्वलायन  
स्मृतिः ) एकत्रैवदिनेश्राद्धं द्व्यंशंप्राप्तयदातदा ॥ चरंदेवपुरावर्षात्पितृभृतुश्चयत्सुतः ॥ एकस्मिन्यःकरोत्यह्नि द्वयोःश्राद्धयदाद्विजः ॥  
तदापूर्वमृतस्यादौ कृत्वामान्वायथाविधि ॥ पश्चात्पश्चान्मृतस्यैव पृथक्पाकैःसमाचरेत् ॥ नैकस्मिन्दिनवसेश्राद्धं त्रयाणांकुत्रचिह्नजः  
एकःकुर्यात्तथाप्राप्ते अन्योभ्रातासमाचरेत् ॥ भ्रातर्यविधमानेतु तत्परेहिसमाचरेत् ॥ अन्यथाश्राद्धहतास्याच्छ्राद्धसंस्कारद्वेदेविति ॥  
( माधवीये कान्यायनः ) द्वेबहूनिनिमित्तानि जायेन्नैकवासरे ॥ नैमित्तिकानिकर्षाणि निमित्तोत्पत्त्यनुकमात् इति ॥ यद्यप्येकदेवताक  
श्राद्धद्रव्यमेकस्मिन्नहनिनयुक्तम् एकानुष्ठानेनैतत्प्रयोजनस्यापिप्रसंगात्सिद्धः॥तथापिनैमित्तिकानिचनबलादनेकान्यप्यनुष्ठेयानि॥(तथा  
चतत्रैवजाबलिः ) श्राद्धकृत्वातुतस्यैव पुनःश्राद्धंनतद्दिने ॥ नैमित्तिकन्तुक्तत्वं नैमित्तिकानुक्रमोदयमिति ॥ नित्यकाम्ययोरैकदेवताकयाः  
सन्निपाते काम्यैर्नैवनित्यसिद्धिः ॥ ( तदुक्तं स्मृतिसंग्रहे ) काम्यंतत्रेण नित्यस्य तंत्रश्राद्धस्यसिध्यति इति॥ ( पार्ष्णीकोद्दिष्टयोरैकदिनस  
न्निपाते माधवीये जाबलिः ) यद्येकत्रभवेतांवा एकोद्दिष्टंचपार्षणम् ॥ पार्षणंत्वभिनिर्वृत्य एकोद्दिष्टसमाचरेत् इति ॥ यद्यप्येकोद्दिष्टकाला  
त्पार्षणकालः परः तथाप्येतद्नचनबलौद्दिष्टंपरकार्यमित्यर्थः॥इतिसंघातभरणेश्राद्धनिर्णयः समाप्तः ॥ अथश्राद्धदिनेतिलतर्पणनिर्ण  
यः ॥ ( तत्र श्राद्धमयूखे गर्गः ) पूर्वतिलोदंकृत्वा अमाश्राद्धंकरयेत् ॥प्रायश्चदेनभवेत्पूर्वं परेहानितिलोदकम् ॥ पक्षश्राद्धेहिरण्येच अनु  
ब्रज्यतिलोदकम् इति॥ अमाश्राद्धं दर्शश्राद्धम् ॥ तत्रविप्रनिर्मज्जणोत्तरंपाकारंभोक्तंवातिलतर्पणकार्यम् श्राद्धप्रयोगस्यागवधत्वात् प्रात्यद्वे  
पित्रोर्वावर्षिकेतिलतर्पणं न किंतु परेद्यौरव ॥ नैवश्राद्धदिनेकुर्वात्तिलैस्तुपितृतर्पणम् इति॥स्मृत्यंतवचनात्॥सप्तम्यांभानुवारंच मातापित्रोः



क्षयेऽहनि ॥ तिलैर्यस्तर्पणं कुर्वात्समवेति तदुदात्तकः ॥ इति स्मृतिरन्तावस्थां बृद्धमनुनानिषेधाच्च ॥ अतो वार्षिकश्राद्धदिने नित्यतर्पणे  
तिलमात्रस्य निषेधः न तु तर्पणस्य ॥ तिलैरित्यस्यैव ध्यापतेः ॥ अत्र नित्यतर्पणं ब्रह्मज्ञातोऽंकार्यम् ॥ पक्षश्राद्धे महालयश्रा  
द्धे हिरण्ये आमश्राद्धे च अनुव्रज्य ब्राह्मणविसर्जनोत्तरं तर्पणं कार्यामित्यर्थः ॥ ( महालये तर्पणं श्राद्धोत्तरं कार्यं तथाच  
मयूखे कपिलः ) अद्भौदये गजच्छाये षष्ठ्या चैव महालये ॥ भरण्यां च मघाश्राद्धे पिंडांते तर्पणं भवेत् ॥ ( तत्रैव गार्ग्योपि )  
कृष्णभाद्रपदे मासि श्राद्धं प्रति दिनं भवेत् ॥ पितृणां प्रत्यहं कार्यं निषिद्धाहं पितृपणम् इति ॥ सकृन्महालयेतु वार्षिकवत् परे  
दुरोव ॥ सकृन्महालये श्वः स्यादष्टकास्तं त्वहि ॥ इति स्मृत्यंतरस्मरणात् ॥ अंते विसर्जनान्ते इत्यर्थः ॥ मन्वादिषु श्राद्ध  
वत् ॥ ( तथाच कपिलः ) मन्वादिषु गाद्यासु दशसंक्रमणेषु च ॥ पौर्णमास्यां व्यतीपाते दद्यात्पूर्वतिलोदकम् इति ॥ ( तिलत  
र्पणनिषेधकालानाह गार्ग्यः ) भानौ भौमे त्रयोदश्यां नंदाभ्युपवासु च ॥ पिंडदानं मृदास्नानं न कुर्वात्तिलतर्पणम् ॥ ( हेमाद्रौ मरीचिः ) सप्त  
म्यारं विवारे च ग्रहे जन्मदिने तथा ॥ निशिसंध्यासु षुत्रार्थी न कुर्वात्तिलतर्पणम् ॥ ( बृहन्नारदीये ) बृद्धश्राद्धे सपिंड्यां च प्रेतश्राद्धेऽनुमासिके ॥  
संवत्सरविमोके च न कुर्वात्तिलतर्पणमिति ॥ एतत्सर्वं नित्यतर्पणविषयकम् ॥ ( अस्यापवादः षुष्यचंद्रोदये ) तीर्थेति थि विशेषे च गयायां  
प्रेतपक्षके ॥ निषिद्धे पिदिने कुर्वात्तर्पणं तिलमि श्रतम् ॥ ( गोभिलः ) तिलाभावे निषिद्धाहं सुवर्णं रजतान्ति तम् ॥ तदभावे निषिंचेतु दुर्भे त्रण  
वापुनरीति ॥ श्राद्धाऽशौश्राद्धनिमित्तकपतर्पणं कृते तिलयुक्तमेव ॥ ( यतु कर्ता यम् ) उपरागे पितृश्राद्धे पातेऽभायां च संक्रमे ॥ निषिद्धे  
पिहिसंवत् तिलैस्तर्पणमाचरोदिति ॥ इति श्रीबीकानेरस्य विषयान्तर्गत गण्डनागरनिवासिना श्रीवासिष्ठकुलदेवेन श्रीरामकृष्णपौत्रेण

श्रीकस्तूरीचंद्रमुनुना श्रीमहादेवभक्तवाजसनेयिना पण्डितगौडश्रीचतुर्थलालशर्मणा विरचिते गौडीयश्राद्धप्रकाशे प्रथमखंडे प्रेतकल्प  
 निर्णयकथनं नाम द्वितीयं प्रकरणम् ॥ अथमिश्रप्रकरणं तृतीयम् ॥ तत्रतावन्नित्यपितृयज्ञमाधिक्षृत्यतर्पणमुच्यते ॥ ( तस्यकालदेशो  
 हेमाद्रौशातातपः ) तर्पणंतुतःकुर्यात्प्रत्यहंस्नातक्रोद्विजः ॥ देवभ्यश्चऋषिभ्यश्च पितृभ्यश्चयथाक्रमम् ॥ ( यज्ञवल्क्योपि ) स्नात्वा  
 देवान्पितृंश्चैव तर्पयेदचयेत्तथा ॥ ( व्यासः ) तर्पणद्विविधंप्राहुर्मनयःशंसितव्रताः ॥ एकंजलेस्थितःकुर्यादपंतुस्यलेस्थितः इति ॥ (अनयोव्य  
 वस्थामाह विष्णुः ) स्नातश्चाद्र्द्रवासादेवपितृतर्पणमभ्यःस्थएवकुर्यात् ॥ परिवर्तितवासाश्चतीर्थीरमुनीर्य ॥ ( हारीतोपि ) आद्र्द्रवासाज  
 लेकुर्यात्तर्पणाचमनंजपम् ॥ शुष्कवासाःस्थलेकुर्यात्तर्पणाचमनंजपमिति ॥ ( उक्तव्यवस्थयातिक्रमेदोषमाह लिखितः ) शुष्केणान्तजले  
 चैव बहिरप्याद्र्द्रवाससा ॥ स्नानंदानंजपोहोमो निष्फलं पितृतर्पणम् इति ॥ ( स्नानं ब्रह्मो ) यदातुस्यलेस्थितस्तर्पणंकुर्यात्तदातर्पणेदक  
 मुदक्रमेव न निक्षिपेत् ॥ ( तदाह विष्णुः ) स्थलेस्थित्वाजलेयस्तु प्रयच्छेदुदकंनरः ॥ नोपतिष्ठतितद्वारं पितृणांतिव्रिथकमिति ॥ ( स्थलत  
 र्पणमेववश्वकृत्याह गोभिलः ) नोदकेषुनपात्रेषु नकुधानैकपाणिना ॥ नोपतिष्ठतिततोयं यन्नभूमौप्रदीयते इति ॥ अतः स्थलस्थेनभूमवेव  
 देयमित्यभिप्रायः ॥ ( अत्रविशेषमाह हारीतः ) वसित्वावसनंशुक्लं स्थलेविस्तीर्णबर्हिषि ॥ विविधस्तर्पणंकुर्यान्नपात्रेतुदकाचन ॥  
 पात्राद्राजलमादाय शुभेपात्रान्तरेक्षिपेत् ॥ जलपूर्णंऽथवागर्ते नस्थलेषुविबर्हिषि इति ॥ पात्रंचात्रपितामहेनोक्तम् ॥ हेमरूपमयंकय्य  
 ताग्रकांस्यसमुद्रवम् ॥ पितृणांतर्पणेपात्रं मृन्मयंतुपरित्यजेदिति ॥ यत्रप्रातिषिद्धमशुचिवास्थलं तत्रजलेद्वात् ॥ ( तदाह विष्णुः ) यत्रशु  
 चिस्थलंतुस्यादुदकेदेवताःपतित्वं ॥ तर्पयेत्तुयथाकाममभ्युसवंप्रतिष्ठितम् ॥ यदातुदकमभ्यस्थितस्तर्पणंकुर्यात्तदातर्पणेदकंस्थलेननिक्षि

पेत् ॥ ( तदुक्तहेमाद्रौ षट्त्रिंशन्मते ) नतपयिपितृन्वञ्जलसंस्थः स्थलेकाचित् ॥ स्थलस्थस्तुक्त्रिचिकुर्याज्जलेयशुचिचेत्स्थलमिति ॥  
 ( असंस्कृतप्रमीतं जलितुसर्वदास्थलवक्षेपणीयइत्याह काष्णाजिनः ) देवतानांपितृणांच जलेद्व्यज्जलाञ्जलिम् ॥ असंस्कृतप्रमी  
 तानां स्थलेद्व्यज्जलपुनरिति ॥ इतितर्पणकालइशानिरूपणम् ॥ अथतर्पणसाधनानि ॥ ( तत्राह लौगाक्षिः ) खड्गमौक्तिकहस्तेन कर्तव्यं  
 पितृतर्पणम् ॥ मणिकांचनयुक्तेन नखुद्धेनकदाचन इति ॥ शुद्धेनकेवलेन ॥ ( योगियाज्ञवल्क्यः ) अनामिकाधृतहं तर्जन्याह्वयमेवच ॥  
 कनिष्ठिकाधृतखड्गं तेनपूताभवेन्नरः ॥ ( कात्यायनोपि ) अशुभ्युक्तं कृत्वा सुवर्णरजतैः कुशैः ॥ ग्रथतस्तर्पणंकुर्यान्मणिखड्गतिलरपि  
 ( हेमाद्रौ शंखोपि ) विनारूप्यसुवर्णेन विनाताम्रतिलैस्तथा ॥ विनादभश्चमश्च पितृणां नोपपद्यते ॥ सेवर्णरजताब्जभ्यां खड्गेनोद्वेणवा ॥ दत्त  
 मक्षयतां याति पितृणां तिलोदकम् ॥ हिमेन सहयहत् क्षीरेण मधुनाथवा ॥ तदप्यक्षयतां याति पितृणान्तु तिलोदकम् इति ॥ उद्वेरेण ताम्रपत्रे  
 ण हिमं चंदनादि इत्यर्थः ॥ ( तत्रैव मरीचिः ) रजतमेन सायायास्तुवर्णे हस्तनिर्गतम् ॥ तिलेषु च क्षणाद्बुद्धुर्ततः ॥ इभंसममुहूर्तेन मंत्रयु  
 क्तैतदक्षयम् ॥ यत्रयत्र हियोयस्य तस्य तत्रोपतिष्ठते इति ॥ नैतानि सुवर्णादिसमुच्चयार्थानिवचनानि ॥ ( यदाह मरीचिः ) षषामन्यतमेनापि युक्तपा  
 णिः समाचरेत् ॥ द्वाभ्यां वाथ त्रिभिर्वपि सर्ववर्तपणबुधः ॥ ( याज्ञवल्क्योपि ) तिलानामप्यलाभे तु सुवर्णरजतान्वितमातद्भगवनिर्षेचेत्तु  
 दभं भवेन्नैवपुनः ॥ ( गौतमः ) कुशानामप्यलाभे तु काशान्द्वार्यामपिवा ॥ संयोज्य तर्पणंकुर्यान्नतुल्यकारकाचित् ॥ ( अत्र विशेषमाह  
 प्रजापतिः ) तर्पणादीनिकार्याणि पितृणां यानि कानिचित् ॥ तानि स्युद्भिर्गुणैर्देभः सपवित्रैर्विशेषतः ॥ ( हेमाद्रौ भृगुः ) प्रागग्रैस्तर्पणैर्देवतु  
 दगग्रैस्तुमानुषान् ॥ तानेवद्विगुणीकृत्य तर्पयत्ययतः पितृन् इति ॥ तानेवैतिदेवतर्पणविनियुक्तानामपि तेषां पितृतर्पणयोग्यतेत्युक्तं गृह्य

रिशिष्टे ॥ दर्भाः कृष्णाजिनमन्त्रा ब्रह्मणाहविरग्नयः ॥ अयातयामान्येतानि नियोज्यानिपुनः पुनः ॥ ( छागलेयः ) लघुपात्रं करोत्कृत्वा सौवर्ण  
 खड्गमेव च ॥ राजतं तां ब्रजं वापि तेन संतप्येति पितृन् ॥ ( मात्स्यपुराणे ) यवैस्तु तप्येद्देवान्मनुष्यान्सन्कादिकांश्च ॥ तिलैर्विशिषतः  
 कृष्णैरग्निध्वात्तादिकांस्तपितृन् ॥ आत्मनश्च पितृन्सर्वान्सुहृत्संबन्धिभिः सह ॥ ( योगियाज्ञवल्क्यः ) नामगोत्रस्वधाकारैस्तपयद्दनु  
 पूर्वशः ॥ मंत्रैश्च देयमुदकं पितृणां प्रीतिवर्द्धनम् इति ॥ ( तत्र जलस्थस्य विशेषमाह शालकायनः ) बाहुपूर्णातिलैः कृत्वा जलस्थस्त  
 प्येति पितृन् ॥ स्थलस्थेन नक्तव्यं पितृणां तृप्तिमिच्छता ॥ ( कालिकापुराणे ) रविशुक्रत्रयोदश्यां सप्तम्यां निशिसंध्ययोः ॥ तिलतप  
 णसंयोगात्तज्जलं शर्धिरं भवेदिति ॥ ( अधिकारविशेषेण तिलतर्पणनिषेधमाह कौण्डिन्यः ) दशश्राद्धंगयाश्राद्धं श्राद्धं चापरपा  
 क्षिकम् ॥ नजीवात्पितृकः कुर्यात्तिलैस्तर्पणमेव च इति ॥ अथाञ्जलिस्तस्या ( तत्र हेमाद्रौ व्यासः ) एकैकमञ्जलिदेवा द्वौ द्वौ तु सनका  
 दयः ॥ अर्हति पितरस्त्रीन्स्त्रियस्त्वेकैकमञ्जलिम् ॥ ( कूर्मपुराणेपि ) देवतानां तु सर्वासामेकैकं जलिरिष्यते ॥ ऋषीणामेकष्वस्यान्मनु  
 ध्याणां द्वयं तथा ॥ त्रयस्त्रयः पितृणां तु स्त्रीणामेकैकष्वह ॥ ( वृद्धशातातपः ) मातृमुख्याश्च यास्तिस्त्रस्तासां दद्याज्जलं जलीन् ॥ त्रीन्निवेव  
 तथा न्यासान्दद्यादेकैकमञ्जलिम् इति ॥ अथ दस्ततीर्थं पवीतजानुदिव्दैनियमः ( तत्र यमः ) द्वौ हस्तौ युग्मतः कृत्वा पूरयेदुदकाञ्जलिम् ॥  
 गोशृङ्गमात्रमुद्धृत्य जलमध्ये जलक्षिपेत् ॥ ( मात्स्येपि ) उभयोर्हस्तयोः कृत्वा सलिलैः क्षणमञ्जलिम् ॥ देवानां च पितॄणां च शुचितर्पणमाच  
 रेत् ॥ ( कूर्मपुराणे ) अन्वारब्धेन सव्येन पाणिना दक्षिणेन तु ॥ देवार्थं तप्येद्द्विभानुदकां जलिभिः पितृन् ॥ ( आग्निपुराणे ) देवेन वहतिर्थे  
 न देवानां तर्पणं स्मृतम् ॥ प्राजापत्येन तीर्थेन तर्पयेद्ब्रह्मणः सुतां ॥ पितॄणामपि तीर्थेन तेषामेव वहितर्पणम् इति ॥ ( तार्थलक्षणमुक्तं योगि

याज्ञवल्क्येन ) अणुष्टुप्सूत्राहन्तु देवंश्रुलिमुद्गनि॥ प्राजात्यन्तुमूलेषु मध्येसाम्यंप्रातिष्ठितम्॥ अणुष्टुस्यप्रदेशिन्या मध्येऽप्यङ्गप्रकीर्तितम्॥  
 एवंज्ञात्वानमुद्गति सर्वकर्मसुवैद्विजाः॥ (जमदग्निः) यज्ञोपवीतिदेवेभ्यः प्रहृदात्सतिलाञ्जलीन् ॥ निवीतितुमनुष्याणां कुर्यात्तर्पणमादतः ॥  
 प्राचीनवीतिसंयुक्तः पितृभ्यानिषेपेक्षलम्॥ (हेमाद्रौ) सुमंतुः न्युञ्जानुनिवेश्याधो दक्षिणतर्पयसुराद् ॥ तथैवमव्यंविन्यस्य पितृणांतर्पणं  
 चरेत् ॥ (ब्रह्मवैवर्ते) पूर्वाशाभिमुखोभ्रया पूर्वोत्प्रेक्षुरेषुच ॥ अपोनिषेचेन्यथो देवानुद्दिश्यधर्मवित्॥ सौम्याशाभिमुखोऽनित्यमुद्गयेच  
 बर्हिषि॥ मनुष्याणांचतुस्यर्थं निर्वीणुजलीना॥ याम्याशासम्मुखः स्थित्वा दक्षिणग्रक्षुरेषुच॥ पितृभ्यः सलिलदंष्ट्रात्तुस्यार्थंप्रातिमानसः ॥  
 अथतर्पणीयक्रमः ॥ (तत्र हेमाद्रौ) शातातपः ) देवेभ्यश्चऋषिभ्यश्च पितृभ्यश्च यथाक्रमम् ॥ (तत्रैव भविष्यपुराणे) प्रथमतर्पयेद्देवानुपवी  
 तीविनायकान् ॥ मोदश्चैवमोदश्च सुमुखोदुर्मुखस्तथा ॥ अविवोविघ्नकर्त्ताच इत्येतषद्विनायकाः ॥ (योगियाज्ञवल्क्यः) ब्रह्माण्तर्पये  
 तूर्ध्वं विष्णुरुद्रं प्रजापतिम् ॥ देवाञ्छुद्धांसिवदंश्च ऋषींश्च तपोयनान् ॥ आचार्यश्चैव गधवानाचार्यानि तरान्तथा ॥ संवत्सरं सावयवं देवी  
 रप्सरसस्तथा ॥ तथा देवानुगान्नागान्सागरान्पर्वतानपि ॥ सरीतोऽथ मनुष्यांश्च यज्ञाद्रक्षांसि चैवहि ॥ पिशाचांश्च सुपर्णांश्च भूतान्यथ  
 गुंस्तथा ॥ वनस्पतीनोषधींश्च भूतग्राभंचतुर्विधम् ॥ सनकश्च सनंदश्च तृतीयश्च सनातनः ॥ कपिलश्च सुरिश्चैव वोढुः पंचशिखस्तथा ॥  
 एते ब्रह्मसुताः सत मनुष्याः परिकीर्त्तिताः ॥ कव्यवाङ्मलं सोमं यममयमणतथा ॥ अग्निष्वात्तान् सोमपांश्च तथा बर्हिषदः पितृन् ॥ यदि  
 स्याज्जीविन्यितृक एतान् दिव्यान्पितृन्स्तथा ॥ येभ्योवापिपितादद्यात्तेभ्योवापिप्रदापयेत् ॥ एतांश्चैव क्षयमाणानांश्च प्रमीतं पितृकोद्विजः ॥  
 वमूर्च्छांस्तथादिद्यान्नमस्कारस्वधान्तितान् ॥ एते सर्वस्य पितर एष्वायत्ताश्च मानुषाः ॥ आचार्याश्च पितृन्स्वांश्च पितृप्रभृतिनामतः ॥

इति ॥ यदिजीवन्तितृप्तस्तर्पणं कुर्यात्तदा देवक्रषिभुज्यतर्पणानन्तरं कव्यवाद्प्रभृतीनां दैवपितृभ्यस्तर्प्य तर्पणं समापयेत् ॥ ये  
 भ्यः पिता दद्यात् तेभ्यो वापि तर्पणं कुर्यात् ॥ प्रमीतपितृकृत्स्वेतात् कव्यवाद्प्रभृतीन् वक्ष्यमाणान् वसून् रुद्रादित्यान् स्वान् पितृ-  
 पितामहंश्च तर्पयेत् ॥ ( कात्यायनपरिशिष्टमुद्रपि ) ब्रह्माण्तर्पितृत्वं विष्णुरुद्रप्रजापतिम् ॥ देवाञ्छन्दांसिवेदादृषीन् गणाचार्या-  
 न् गंधर्वानितराचार्यान् सप्तर्षीन् देवीन् सप्तर्षीन् देवानुगान् सगरान् पर्वतान् सरोतोभुज्यान्यक्षान् रक्षां११सिपिशिचानुसुपर्णान्  
 भूतानि पशून् च नृपतीन् गोपधीभूतश्रमश्चतुर्विधस्तृप्यतामियोङ्कारपूर्वतानि वीती मनुष्यान् सत्तमन्तं सन्तं कपिलमासुरीयम्  
 मय्यमणमग्निष्वात्तान्सोमपोर्विषदोयमांश्चैके यमायधर्मराजाय मृत्यवे चान्तकायचा वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयायचा औदुम्बराय दध्याय  
 नीलाय परमेष्ठिने वृकोदराय चित्राय चित्रशूनायै नमः ॥ इत्येकैकस्य तिलमिश्रास्त्रिन्द्वाज्जलीन् ॥ यावजीवकृत्यापं तत्क्षणादेव न  
 श्यतीति ॥ जीवन्तितृप्त्येतानन्यांश्चेत्तरउदरताङ्गिरस आयन्तु न ऊर्जवहन्ती पितृभ्यो ये चेहमधुवाता इति न्यृचं जपन् प्राप्सिचेतृष्यध्वमिति  
 त्रिनमो वैदृत्युक्तामातामहानां वैवशुरशिष्यान् विज्ञातिर्बाधवानतर्पिता देहद्रुधिरपिबन्ति वासोनिष्पीड्याचस्य अदृश्रमस्य ह१२स इत्युपस्था-  
 यप्रदक्षिणिकृत्यदिशश्च देवताश्च नमस्कृत्योपाविश्य ब्रह्माग्निपृथिव्याष्यवाग्वारुपतिर्विष्णुमहद्द्रव्योऽप्यपतये वरुणाय नम इति सत्त्वचसेति  
 मुखं विमष्टुं दवागुर्विद इति विसर्जयेदिति ( हेमाद्रौ ब्रह्मपुराणविशेषः ) प्रथमतर्पयेद्देवान् ब्रह्मादीन् सुसमाहितः ॥ ततः सप्तर्षेर्द्विद्वन्  
 मरीचिप्रमुखा नृपिन ॥ वसून् रुद्रांस्तथादित्यान् सप्तमस्तदन्तरम् ॥ यक्षान् पशून् सुपर्णान्श्च भूतग्राभं चतुर्विधम् ॥ आचार्यानि तरांश्चैव का-  
 लस्यावयवानपि ॥ सनकप्रमुखांश्चैव मनुष्यान् सत्तदन्तरम् ॥ कव्यवाडनल्लादींश्च ततः पितृगणानपि ॥ स्वपितृभ्यस्ततो दद्यान्मातृभ्यस्त-





मोन्पदने ॥ अँवुसुभ्योनमः ॐयमायनमः इत्याद्यष्टप्रयोगा विधेयाः ॥ ( तथाच हेमाद्रौकश्यपः ) ॥ वसून्नुद्रांस्तथा  
 दिव्यान्नामस्कारसमन्वितान् ॥ अद्रिः संतर्पयन्नित्यं नामभिः प्रणवादिभिः ॥ तर्पण्यमराजं च नमस्कारं प्रकीर्तयेत् ॥ कात्यायनपरिशिष्टम्  
 त्रेपियमाथ धर्मराजाय इत्यादि ॥ अत्र पितृ तर्पण्यमतर्पणचक्रेकस्य पुरुषस्य त्रींस्त्रीज्जलीजलीन्दद्यात् ॥ ( तथाच पैठीनसिः ) सनामगोत्र  
 ग्रहणं पुरुषं पुरुषं प्रति ॥ तिलोदकां जलींस्त्रींस्त्रीनुक्ते रौचिर्विनिक्षिपेत् ॥ इति ॥ नामादिग्रहणविशेषमाह बोधायनः श्रमांतत्राह्वणस्योक्तवर्मांतं  
 क्षत्रियस्य च ॥ गुमांतं च वैश्यस्य दासांतं शूद्रजन्यनः ॥ चतुर्णामपि वर्णानां पितृणां पितृगोत्रता ॥ पितृगोत्रं कुमारीणां मूढानां भर्तृगोत्रता ॥  
 इति ॥ अत्र संबंधानुकीर्तनमपि कर्तव्यम् ॥ गोत्रसंबंधनामानि पितृकर्मणि कीर्तयेदिति भृगुस्मरणात् ॥ ( योगियाज्ञवल्क्यः ) मंत्रश्च देयमुदकं  
 पितृणां प्रीतिवद्भनैरिति ॥ ते च मंत्रास्तनैव दर्शिताः ॥ उदीरतामङ्गिरस आयन्विन्युर्जमित्यपि ॥ पितृभ्य इति ये चेह मधुव्रता इति नृचम् ॥  
 पितृनृच्ययनप्रसिंचेद्दे जपमंत्रानि मानुक्रमत् ॥ तृप्यध्वमिति तु त्रिवै ततः प्रांजलिरानतः ॥ इति ॥ अस्यार्थः उदीरतामिति मंत्रांतं अमुकगो  
 त्रं अस्मभ्यं तामुक्तां श्रमांतं पितृनां मिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा इति ॥ अमुकगोत्रपितरमुक्तां भवेत्तत्तै तिलोदकम् ॥ स्वधा इति वा प्रथमं तिलज  
 लं दद्यात् ॥ ततश्चाङ्गिरसो न इति मंत्रांतं त्रैव वाक्यमुच्चाय्यद्वितीयम् ॥ ततः अयंतु न इति मंत्रेण तथैव तृतीयमित्येवंपित्रेऽजं जलत्रयं दद्यात् ॥ तत  
 ऊर्जवहंतीरिति मंत्रांतं अमुकगोत्रास्मत्पितामहामुक्तां श्रमांतं पितृनां मिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा इति प्रथमम् ॐ पितृभ्यः स्वधा इति तथैव द्वितीयम् ॥  
 ये चेह पितर इति तथैव तृतीयं च पितामहायां जलत्रयं दद्यात् ॥ ततो मधुव्रता इति मंत्रांतं अमुकगोत्रास्मत्पितामहाऽमुक्तां श्रमांतं पितृनां मिति  
 तिलोदकं तस्मै स्वधा इति प्रथमम् मधुनक्तमिति तथैव द्वितीयम् मधुमात्र इति तथैव तृतीयं च प्रापितामहायां जलत्रयं दद्यात् इत्यर्थः ॥ अत्रावसरे



प्रथममात्रादीनां तर्पणं ततो मातामहादीनाम् ॥ पूर्वपित्राद्यस्तथास्ततो मात्रादयोऽपि च ॥ ततो मातामहाश्चैव मातामहस्ततः परमिति हेमाद्रौ व्यासस्मरणात् ॥ अमुकगोत्रास्मन्माताऽमुकीद्वीत्यतामिदितिलोदकं तस्यैव धा इति मात्रे एवमेव पितामहौ प्रपितामहौ च एकैकं मजलिं स्वधाकारवतानामनेत्रेण दद्यात् इति ॥ तदनन्तरं गोत्रेऽभ्युक्तगोत्रास्मन्मातामहाऽमुकशर्मापुत्र्यातामिदितिलोदकं तस्मै स्वधा इति प्रथमं तथैव द्वितीयतृतीयावित्येवं मातामहायजलित्रयं दद्यात् ॥ एवमेव मातामहद्वयमातामहयज्ज्ञानं जलीन्दद्यात् ॥ मंत्रस्तुनमो वदत्येकएव पुनः पुनरवर्त्तेत् ॥ (तथा च यो गियाज्ञवल्क्यः) नमो वदति त्रधा वै ततो मातामहानपि ॥ तप्येदं नृशस्यार्थं धर्मपरममाश्रितः ॥ इति ॥ अथ मातृशत्रुयोगमुच्चार्य मातामहादीनामैकैकजलिर्देयः ॥ अत्र अंतर्मातामहान्कृत्वा मातृभ्योऽञ्जलिदानम् आचारादर्शं श्रीदत्तलिखनं प्रमाणशून्यम् ॥ (तथा च मरीचिः) अन्तर्मातामहान्कृत्वा मातृणां यः प्रयच्छति ॥ इदं कर्त्तुं पिददानं च नरकं स तु गच्छति ॥ (हेमाद्रौ उशनापि) अन्तर्मातामहान्कृत्वा मातृणां यः प्रयच्छति ॥ उदं कर्त्तुं पिददानं च पितृगणोपतिष्ठते इति ॥ एवमेव हेमाद्रिर्महोदधः प्रभृतयः ॥ ततो ज्येष्ठतापितृव्यपुत्रपौत्रदौ हि त्रैश्रुतपुत्रजामातृमातुलभागिन्यापितृस्वस्तीयमातृभगिनीमातुलीनीपत्नीभगिनीप्रातृपत्नीभगिनेयीदुहिताश्च शूश्रुष्वंधुबंधुवादिनामप्ये पुरुषाणां जलांजलित्रयं पत्नीभगिनीभैकैकजलिर्दद्यात् ॥ (तथा च हेमाद्रौ ब्रह्मपुराणे) ततो मातामहानां च पितृव्याणां ततः परम् ॥ पत्नीनां वसुतानां च पितृमातृस्वसुतत इत्यादिपूर्वोक्तम् ॥ कामोदकाख्यमन्यमयं जलिर्दद्यात् ॥ (तदुक्तं विष्णुपुराणे) इदं चापि ज्येष्ठेऽपि दत्तुं देवानामेच्छयानुप ॥ उपकाराय दूतानां सद्गुदेवादि तर्पणः ॥ देवसुरास्तथा यक्षा गंधर्वैरगराक्षसाः ॥ पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्मांडास्तरवः खगाः ॥ जले च राप्ता निलया वायवाधाराश्च जन्तवः ॥ तृतिभेतेन यान्त्वानु मदत्तेनाम्बुना खिलाः ॥ नरैकेषु समस्तेषु यातनासु च ये

गताः ॥ तेषामाप्यायनायै दीयतेसलिलमया ॥ येषांधवाऽर्वाधवावा येऽन्यजन्मनिर्बाधवाः ॥ तेतृतिमाखिलायांतु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छती  
 ति ॥ इदंचकाम्यतर्पणदेवविधिनाकर्तव्यमितिमथिलश्रीदत्तः ॥ शिष्टास्तुपितृकर्मार्हन्वापेतुकाविधिनाएवइतिवदतिस्माद्यथाचारं  
 कार्यम् ॥ अत्रावसरेस्नानवस्नानिर्णीडनकर्तव्यम् ॥ ( तहाह वसिष्ठः ) तीरेजलाशयस्यैवं निर्वय्यपितृतर्पणम् ॥ निष्पीडयेस्नानवस्नानं  
 दक्षिणाभिमुखस्थले इति ॥ ( अत्रमंत्रउक्तो गोभिलीये ) यैकेचास्मात्कुलेजाता अपुत्रागोत्रिणोमृताः ॥ तेगृह्णन्तुमयादत्तं वस्त्रनिष्पीड  
 नोदकमिति ॥ ( अनंतरमाह योगियाज्ञवल्क्यः ) निष्पीडयस्नानवस्नान्तु आचम्यप्रयतःशुचिः ॥ देवानामर्चनंक्षुयाद्रुद्रादीनामम  
 त्सरः ॥ इति ॥ ( एवंकुर्वतः फलमाहुर्मनुशातातपयोगियावल्क्याः ) यदेवतर्पयत्यद्भिः पितृन्स्नात्वाद्विजोत्तमः ॥ तेनैवसर्वमाप्नोति  
 पितृयज्ञक्रियाफलम् ॥ ( कौर्मपि ) एवंयःसर्वभूतानि तर्पयेदन्वहंद्भिजः ॥ सगच्छेत्परमंस्थानं तेजोमूर्तिरनामयः इति ॥ ( तर्पणाऽऽरुणे  
 दोषउक्तो ब्रह्मवैवर्ते ) देवताश्चमुनीश्च पितृन्वैश्वेनतर्पयेत् ॥ देवादीनामृणीभूत्वा नरकंस्रजयधः ॥ इति तर्पणप्रयोगनिर्णयः ॥ ॥  
 ( अथसंन्यासाङ्गश्राद्धप्रयोगः ) हेमाद्रौ बोधायनः ) अथातः संन्यासविधिं व्याख्यास्यामः ॥ तत्रसंन्याससंक्षेपकमष्टया आरभ्य  
 श्राद्धादिकंकुर्यात् ॥ अग्निमान्पावर्णविधिनाष्टौश्राद्धानि अतश्चिमानेकोद्विष्टविधिनाच कुर्यात् ॥ पौर्णमास्याममावास्यायांवा देवश्राद्धं  
 ऋषिश्राद्धं दिव्यश्राद्धं मानुष्यश्राद्धं भूतश्राद्धं पितृश्राद्धं मातृश्राद्धं आत्मनः श्राद्धंचेति ॥ देवश्राद्धे देवतात्रयं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥  
 ऋषिश्राद्धे देवतात्रयं देवर्षिब्रह्मर्षिःत्रयः ॥ दिव्यश्राद्धे देवतात्रयं वसुरुद्रादित्याः ॥ मानुष्यश्राद्धे सनकसनन्दनसनातनाः ॥ भूतश्राद्धे दृष्टी  
 यादीनि भूतानि चक्षुरादीनिकरणानि चतुर्विधाभूतग्रामः ॥ पितृश्राद्धे पितृपितामहप्रपितामहाः मातामहश्मातामहबृद्धप्रमातामहाश्च ॥

मातृश्राद्धे देवतात्रयं मातृपितामहीयपितासह्यः ॥ आत्मनः श्राद्धे देवतात्रयं आत्मापितृपितामहा इति ॥ (विशेषमाह तत्रैव शौनकः) पूर्वधुनादीमुखश्राद्धं कुर्यात् देवादिदिव्यमनुष्यभूतपितृमातृआत्मनश्च पृथक् पिंडदानैर्युग्मप्राज्ञैः पिंडोदकं कुर्यात् ॥ तत्र पूर्ववत् नामोत्सवंबंधात् पिंडोदकं दत्त्वाऽन्तरं पुण्याहं वाचयेत् ॥ इति संन्यासाज्ञाश्राद्धप्रयोगः ॥ अथजीवच्छ्राद्धप्रयोगः ॥ (हेमाद्रौ आदित्यपुराणे) देशकालधनश्रद्धाल्यवसायसमुच्छ्रये ॥ जीवतेवाथजीवाय दद्याच्छ्राद्धंस्वयंनरः ॥ इति ॥ वशाद्वाच्छ्राद्धकत्रंतराभावे स्वयमेवस्वस्यश्राद्धंकर्तव्यमिति हेमाद्रिः ( बोधायनीयेपि ) अथाधुदाहरति ॥ जीवन्नवान्नःश्राद्धं कुर्यादन्येषुसस्त्वपि ॥ यथाविधिप्रवृत्त्याशु सर्पेदीकरणहते ॥ ( आदित्यपुराणे ) कृतोपवासःसुस्नातस्त्रयोदश्यांसमाहितः ॥ कर्त्तारमथभोक्तारं विष्णुसर्वश्रयजेत ॥ जलेस्थलैर्बभूवुर्त्तो कलशपुष्करैर्वौ ॥ त्रयोदश्यां कृष्णपक्षत्रयोदश्याम् ॥ स्रौ रविप्रतिमाया मित्यर्थः ॥ चंद्राकरुहगोविप्रमातापितृभुसर्वागम् ॥ दक्षिणास्तुसतिलास्तिस्त्रस्तुजलधेनवः ॥ निवेदयेत्पितृभ्यश्च तदग्रेषुसमाहितः ॥ एवंसंज्यापितुरेदृशेनतिस्रोजलधेनूदद्यात् ॥ ( तत्र मंत्रानाह ) सोमाथत्वापितृमतेस्वयतमइतिस्मरन् ॥ अप्रेथकव्यवाहनार्थस्वयतमइति स्मरन् ॥ दक्षिणेतुनिदध्याच्च तृतीयांदक्षिणायुतास्रायमायगिरिसेचय स्वयतमइतिस्मरद् ॥ तयोर्मध्येतुनिक्षिपय विप्रान्नपचोपवेशयेत् ॥ प्रथमामुत्तरतःद्वितीयांदक्षिणतःतृतीयांमध्येनिक्षिपदित्यर्थः ॥ आवाहनादिमापूर्वं विश्वान्देवान्प्रज्ज्यव ॥ अहंस्वभ्यस्त्वाविप्ररुद्रेभ्यस्त्वा महत्ततः सूर्येभ्यस्त्वामहेविप्र भोजयामीतिताम्रवदेत् ॥ आवाहनादिकंसर्वं कुर्यान्नपितृकर्मवत् ॥ वसुभ्यस्त्वामहेविप्र भोजयामि ॥ एवरुद्रेभ्यःसूर्येभ्यइत्युक्त्वाऽऽवाहनादिश्राद्धविधिना भोजयित्वावस्वादित्यन्निर्घटान् दद्यादित्यर्थः ॥ सौम्यधेनुस्ततोदेया वासवाद्यज्यातु ॥

आग्नेयीचा रात्रौद्राय याम्यासूयद्विजायतु ॥ विश्वेभ्यश्चाथ देवभ्यस्तिलपात्रनिवेदयेत् ॥ तिलपात्रं कांस्यस्य ॥ स्वस्त्युदकमथाक्षयं जलदत्त्वा  
 क्षतानुद्विजान् ॥ विसर्जयेत्स्मरन्गव्यं देवमथाक्षरं विमुमु ॥ ॐ नमोनारायणायेत्यष्टाक्षरः ॥ ततः कामकुलेशानं निशिनारायणं स्मरेत् ॥  
 कामकुलेशानविशेषणक नारायणमित्यर्थः ॥ (अत्रोक्तजलधेनुविधिधर्मोत्तरं) जलधेनुं प्रवक्ष्यामि प्रीयतेदत्तयायया ॥ देवं देवोद्वेषीकेशः  
 सर्वेशः सर्वभावनः ॥ जलकुंभं नरव्याघ्रं सुवर्णरजतान्वितम् ॥ रत्नगर्भं शेषस्तु याम्यैर्धान्यैः समन्वितम् ॥ सितवस्त्रपुगच्छत्रं दूरं पल्लवशो  
 भितम् ॥ कुशमंसीमुराशीरवालकामलकैर्धुतम् ॥ प्रियंगुपत्रसहितं सितवस्त्रोपवीतनम् ॥ सच्छत्रं सदुपानत्कं दर्भैर्विभूरसंस्थितम् ॥  
 चतुर्भिः संवृतं पूष तिलपात्रैश्चतुर्दिशम् ॥ स्थगितं दधिपात्रेण घृतशैर्द्रवतामुखे ॥ उपोषितः समभ्यव्यं वासुदेवं जलेशयम् ॥ पुष्पघण्टापरै  
 र्वा यथाविभवमाहृतः ॥ संकल्प्य जलधेनुं च कुंभं तं माभिपूज्य च ॥ पूजयेद्भक्तकृतद्वन्द्वतं जलमयं बुधः ॥ एवं संपूज्य गोविंदं जलधेनुं स त्रसकम् ॥  
 दद्याद्द्विजाय राजेंद्रं प्रीत्यर्थं जलशांयिनः ॥ जलशायिजगद्गोनिः प्रीयतां मम केशवः ॥ इत्युच्चार्य च भूनाथं विप्राय प्रतिपाद्यात् ॥ अपक्वात्राशि  
 नांस्थेयमहारात्रमृतपरम् ॥ अनेन विधिना दत्त्वा जलधेनुं नराधिप ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति ये दिव्याये च मानुषाः ॥ शरीरारोग्यमावाधाप्रश  
 मः सार्वकामिकः ॥ नृणां भवति दत्तायां जलधेन्वां समाहितः ॥ इति जलधेनुविधिः ॥ एवं कृष्णत्रयोदश्यामेतत्सर्वं विधाय द्वितीयेऽनियत्कृत्ते  
 व्यंतदाह ॥ चतुर्दश्यातोगच्छेद्यथाप्रातः सार्वद्वाम् ॥ पूर्वेण विप्रसौम्येन राजा वैश्वेदेऽपरेण च ॥ दक्षिणेन तथा द्यूद्रो मार्गेण विप्रस्यवान् ॥  
 सौम्येन उत्तरेण अपरेण पश्चिमेन यदन्विदं शिखरं प्रक्षिपन् गच्छेदित्यर्थः ॥ वज्राणि लोहं खंडानि जितंत इति स्मरन् ॥ जितंतं पुंडरीकक्ष  
 जितंतं विश्वभावन ॥ नमस्तेस्तु हर्षिकेश महापुरुष पूज ॥ इति ॥ तत्र गन्वायत्कर्तव्यं तदाह ॥ दक्षिणाभिमुखोवाहं ज्वालयेत तत्र च स्वयम् ॥

पंचशतकुशैर्ब्रह्मं कृत्वाप्रतिकृतदहत् ॥ अस्यार्थः ॥ ततोनेदीर्घेक्षिणामुखस्मात्तलौक्रिकवाग्निपंचभूस्स्कारकृतदेशस्वयंप्रज्वा-  
 ल्यचिन्त्यथगतसैननभिमप्राथनादिप्रत्यक्षमरणवत्सर्वकुर्यात् ॥ जीवच्छास्त्रेयत्रप्रतशब्देनप्रयोज्यः ॥ ततःस्वशास्त्रोक्तपूणह्रिन्यतेहोमं  
 कृत्वाप्रधानहोमस्थाने अण्वृथिव्यैस्वाहा अयमायस्वाहा अरुद्रायस्वाहा ॥ इतिसंस्कृताज्येनाहुतित्रयहुत्वापंचाशक्तुशरत्माप्रतिकृतिमन्येन  
 क्रव्यादभूमिभिर्मित्रेणदाहयेत् ॥ ततोमुद्गाभिश्चितलमिश्रतिलमिश्रचतुलचरुद्वयमन्यस्मिन्नभ्यासपवित्रकंश्रयेत् इत्यर्थः ॥ तथा ॥ श्रपयेच्चापेवहौ मुद्गा  
 मिश्रचरुतः ॥ तिलतंडुलमिश्रं दुर्द्वितीयं सपवित्रकमिति ॥ अपरग्रहण्यत्रप्रतिकृतिदाहकृतस्ततोऽन्यस्मिन्नित्यर्थः ॥ चरुश्रपणानन्तरकृतव्य  
 माह ) मधुक्षारघृताभोभिः पूरयेत्कर्षुकात्रयम् ॥ तदुपान्तेतुसमुद्गात्राग्नित्रिणिपूयेत् इति ॥ तदक्षिसमीपेकर्षुवृत्त्वाप्रत्येकमधुक्षारिघृतो  
 दकैः पूरयेत् ॥ तथातेमुद्गपूरितानि त्रीणिशरावाणीत्यर्थः ॥ ततः ॥ अण्वृथिव्येनमस्तुभ्यमितिकंनियदेत् ॥ अयमायनमश्नति द्वितीयं तद  
 नन्तरम् ॥ अनमश्नश्चरुद्राय श्मशानपतयेत्तथा ॥ ततोदीप्तसमिद्धाग्निं भूमौप्रकृतिदाहकम् ॥ क्रव्यादभूमिप्रतताये भूम्येनमइतिस्मरच्चाक्षिराक्तंज  
 लकुंभंतु विकीर्ततप्रशान्तये ॥ नाभिमात्रंततस्तोयं प्रविश्ययमदिडुसुखः ॥ सतभ्योयमसंज्ञेभ्यो दद्यात्सतजलजलीन् ॥ यमायधर्मजाय मृ  
 त्यवेवान्तकायचौवैक्स्वायकालाय सर्वप्राणहराय च ॥ स्वधाकारनस्कारप्रणवैः सहस्रपया ॥ अनमश्नश्चरुद्राय श्मशानपतयेत्स्मरन् ॥  
 लाजोदकाभ्यापूर्णंतु कुंभंचविकीर्दुवि ॥ याम्योन्मुखेषुदुर्भेषु प्रदद्याच्चावनेजनम् ॥ स्वधायैवस्वधाहारिपरुद्रायनमइतिस्मरन् ॥ असुकासुकागो  
 त्रैतत्तुभ्यमस्तुतिलोदकम् ॥ सूक्ष्मदेहपतोपिडस्त्वर्घ्येषुपुण्यसुगंधिमान् ॥ धूपदीपाबलिवाथ स्वर्गयातुभ्यमक्षया ॥ दर्शपिंडस्ततोदत्त्वा विष्णोः  
 सौम्यसुखान्स्मरेत् ॥ निरुष्मणस्तुततोयं नाभिमात्रं प्रविश्य च ॥ प्रक्षिपेत्पूणकुंभंतु जलमध्येपृथक्पृथक् ॥ प्रदद्यात्पंचपंचाशक्तुभ्यां

श्वाथजलजलीन्द्र ॥ द्वारोपान्तोऽहोवाथ क्षीरतोयेचनिक्षिपत् ॥ जीवात्रस्नाहिदुग्धं च पिवेदं चाप्यनुस्मरन् ॥ ग्राम्योन्मुखेषु द्वारेषु स्वपत्यश्चादु  
 दङ्मुखाः ॥ अमावास्यायां कुर्याच्च जीवच्छाद्धमतः परम् ॥ घृताव्रमासं दधिभिः पूरयेत्कर्षुकत्रयम् ॥ कुर्याच्च मासिकं मासि सपिंडीकरणतः ॥ आ  
 शौचान्तेतत् सर्वमात्मनो वा परस्वया ॥ कुर्यादस्थितां ज्ञात्वा भक्त्यारोग्यधनयुषाम् इति ॥ (हेमाद्रौ लिंगपुराणविशेषः) जीवच्छाद्धविधिवं  
 क्ष्ये सभासाच्छ्रुतिसम्मतम् ॥ मुनये देवदेवेन कथितं ब्रह्मणः पुरा ॥ विशिष्टाय वसिष्ठाय भार्गवाय च सांप्रतम् ॥ शृण्वंतु सर्वभावेन सर्वसिद्धिर्क  
 रं रम् ॥ श्राद्धमार्गक्रमं साक्षाच्छ्राद्धार्हाणामपि क्रमम् ॥ विशेषमपि वक्ष्यामि जीवच्छाद्धेषु यः स्मृतः ॥ पर्वते वानदीतिरे वने देवा लयेपि वा ॥  
 जीवच्छाद्धं प्रकर्तव्यं मृत्युकाले प्रयत्नतः ॥ जीवच्छाद्धे कृते जीवो जीवन्नेव विमुच्यते ॥ कर्मकुर्वन्न कर्त्तव्या अज्ञाने ज्ञानवानपि ॥ श्रोत्रियोऽथो  
 त्रियो वापि ब्रह्मणः क्षत्रियोऽपि वा ॥ वैश्यावानां सदेहो योगमार्गतोऽथ वा ॥ परीक्ष्य भूमिं विधिना गंधवर्णरसादिभिः ॥ स्वरूपमुद्धृत्य यत्नेन  
 स्थण्डिलैः संकतं भुवि ॥ मध्यतो हस्तमात्रेण कुण्डं चैवाग्रतः शुभम् ॥ स्थण्डिलं वा प्रकर्त्तव्यं द्रुमाग्रं पुनः पुनः ॥ उपलिप्य विधानेन चोच्छ्रित्या  
 ग्निनिधाय च ॥ अन्वाधानं यथाशक्त्वं परि समुद्भवतः ॥ परिस्तीर्य स्वशाखोक्तं पारम्पर्यक्रममागतम् ॥ समाध्यायि मुनिं सर्वं मंत्रैरेतथाक्रमम् ॥  
 संपूज्य स्थण्डिले वह्निं होमयेत्समिदादिभिः ॥ आदौ कृत्वा समिद्धोमं चरुणा च पृथक् पृथक् ॥ घृतेन च पृथक् पत्रात्रे शोभितेन पृथक् पृथक् ॥ जुहु  
 यादात्मनोऽदृत्य तच्च भूतानि सर्वतः ॥ अंभूः ब्रह्मणे स्वाहा ॥ अंभुवः विष्णवे स्वाहा ॥ अंस्वः रुद्राय स्वाहा ॥ अं महर्इक्ष्वायु स्वाहा ॥ अं जनः  
 प्रकृतये स्वाहा ॥ अंतपः मरुताय ॥ अं भूतं पुरुषाय ॥ अं सत्यं शिवाय ॥ एवं सर्वत्र प्रणवादि स्वाहान्तेन ज्ञेयः ॥ अं सर्वधर्मो गोपाय घ्राणे गंधं  
 सर्वस्य देवाय भूः स्वाहा ॥ अं सर्वधर्मो गोपाय घ्राणे गंधं सर्वस्य देवस्य पन्न्यै भूः स्वाहा ॥ अं भवजलं भोगोपाय जिह्वायां रसं भवाय देवाय भुवः

स्वाहा ॥ भवजलमे० रसंभवस्यपत्न्यैर्भुवःस्वाहा ॥ रुद्राग्निमे० रुद्रस्यदेवस्यपत्न्यैस्वः  
 स्वाहा ॥ उग्रवायुमे० पाथन्वाचिस्यशम् उग्रायदेवायमहःस्वाहा ॥ उग्रवायुं० उग्रस्य देवस्य पत्न्यैर्महःस्वाहा ॥ भीमसुषि० भोगोपाय  
 श्रोत्रशब्दभीमायदेवायजनःस्वाहा ॥ भीमसुषि० भीमस्यदेवस्यपत्न्यैर्जनःस्वाहा ॥ ईशरजोमे० गोपायद्रव्ये तुष्णाम् ईशायदेवायतपः  
 स्वाहा ॥ ईशरजोमे० गोपायद्रव्येतुष्णाम् ईशस्यदेवस्यपत्न्यैतपःस्वाहा ॥ महादेवस्यमे० गोपाय श्रद्धांधर्ममहादेवाय ऋतं स्वाहा ॥ महादेव०  
 महादेवस्य पत्न्यै ऋतं स्वाहा ॥ अण्डशुपत पारमेगोपाय भोक्तृत्वं भोग्येणुपतयेदेवाय सत्यं स्वाहा ॥ अण्डशुपते० पशुपतेदेवस्य  
 पत्न्यै सत्यं स्वाहा ॥ अंशिवायसत्यं स्वाहा ॥ इति ॥ एवशिवादिहोतव्यं विरिञ्चान्तंचपूर्ववत् ॥ विरिञ्चान्तंपुराप्रोक्तं सृष्टिमागेण  
 सुव्रताः ॥ पुनःपशुपतेःपत्नीं तथापशुपतिंक्रमात् ॥ संपुज्यपूर्ववत्सम्व्रह्मेतद्व्यैक्रमेणच ॥ सर्वान्तमाज्यपूर्वच समिदन्तंसमाहितः ॥  
 अंमूर्ध्वरामेछिधिप्राणागंधांछिधिमैऽजहिम्नः स्वाहा भूर्भुवःस्वःस्वाहा ॥ एवंपृथक्पृथग्गुह्वा केवलेनघृतेनच ॥ सहस्रवातदद्ववा शतमष्टौ  
 तान्तुवा ॥ विधायैवंघृतैर्नैव शतमष्टौत्तरं पृथक् ॥ प्राणादिभ्यश्च जुहुयाद् घृतैर्नैवकुक्कुलम् ॥ अं प्राणेनिविष्टेऽमृतं जुहोमिशिवोमाविशामिप्रदाहा  
 यप्राणाय स्वाहा ॥ प्राणाधिपतयैरुद्राय पृषातकाय स्वाहा ॥ भूःस्वाहा ॥ भुवःस्वाहा ॥ भूर्भुवःस्वःस्वाहा ॥ एवक्रमेण जुहुया  
 द्यथोक्तंचथाक्रमम् ॥ सप्तमेऽद्विनिषेद्राज्यद्वहर्विप्रभोजयेत् ॥ सर्वेषांचैव विप्राणां वस्त्राभरणसंयुतम् ॥ वाहनं शयनं कांस्यमासनादिच  
 भाजनम् ॥ हेमं वाराजतंधेनुं तिलक्षेत्रंचवैष्टहम् ॥ दासीदासगणश्चैव दातव्योदक्षिणा अपि ॥ पिंडंच पूर्ववद्भयं पृथगुक्तप्रकारतः ॥ ब्राह्मणानां  
 सहस्रं च भोजयेत्सदक्षिणम् ॥ एकं वा योगिनितं ब्रह्मनिष्ठजितेन्द्रियम् ॥ अद्वंच वैतु रुद्रस्य महाचरुनिवेदनम् ॥ विशेषमेतत्कथितम्



शेषं श्राद्धचोदितम् ॥ मृतकुव्यान्ब्रह्मकुव्यां जायन्मुक्तो यतः स्वयम् ॥ नित्यनैमित्तिकदीनि कुव्याद्वासं त्यजेत वा ॥ बांधवेषु मृते  
 तस्य नैवाशौचं न विद्यते ॥ मृतकंचनसंदेहः स्नानमात्रेण शुध्यति ॥ पश्चाज्जाते कुमारच स्वक्षेत्रात्मनो यदि ॥ तस्य सर्वप्रकर्तव्यं  
 पुत्राणि ब्रह्मविद्भवेत् ॥ कन्यकायं दिसंजाता पश्चात्तस्य महात्मनः ॥ एकवर्णाथ वाप्यन्या सवर्णासाचमुव्रता ॥ भवत्येव न संदेहः  
 तस्य स्वान्वयजा अपि ॥ मुच्यन्ते नात्र संदेहः पितरो नरकादपि ॥ मुच्यते सर्वकर्मणा मातुतः पितृ तस्तथा ॥ कालद्रुतो द्विजभूमौ खने  
 द्वापि दहेतवा ॥ पुत्रकृत्यमशेषं वा कृत्वा दोषो न विद्यते ॥ कर्मणा चोत्तरेणैव गतिरस्य महात्मनः ॥ ब्रह्मणा कथितं सर्वं मुनीनां भावितात्म  
 नाम् ॥ पुरा स न कुमाराप्राच्छुतं चैव नियोगतः ॥ एतद्भक्त्यति संव दृणयाते न धीमता ॥ कृष्णद्वैपायनायैव कथितं ब्रह्ममूनुना ॥ प्रसादात्त  
 स्य देवस्य वेदव्यासस्य धीमतः ॥ ज्ञातं मया कृतं चैव नियोगादेव तस्य तु ॥ एतद्भक्त्यति संव रहस्यं सर्वसिद्धिदम् ॥ नैव दुष्टाय दातव्यं  
 न च भक्ताय मुव्रत इति ॥ अस्य लिङ्गपुराणोक्तप्रयोगस्य व्याख्या हेमाद्रिणा क्ता वक्ष्यते ॥ मृतः श्रोतृन् प्रत्याह ॥ श्राद्धमार्गे जीवद्वाद्वाधिकार  
 क्रमप्रकारं विशेषशकालादिरूपं न्युक्तकालमरणकाले ॥ समासब्रजे जीवेषु तत्तत्त्वशुद्धिद्वारेण तत्त्वज्ञानलभान्मुच्यत एव इत्यर्थः ॥ अग्रत  
 इति मध्ये स्थंडिलादिभ्योऽर्चार्चनात्प्राग्दिशि ॥ मध्यस्थंडिलो देवार्चनात्प्राग्दिशीत्यर्थः ॥ कुंडस्थंडिलमंतरं वा होमार्थं कार्यम् ॥ एतवै  
 क्ष्यमाणैर्ब्रह्मादिमंत्रैः स्थंडिले ब्रह्मादि न संपूज्य ॥ तैर्वैष्णवैर्मिदं निजुह्यात् ॥ आत्मनोऽन्येति आत्मस्थानितत्त्वा निभूतानि च तत्त  
 नमंत्रप्रकाशितान्यनेकशः ॥ समुद्रतः पृथक् कृतानीव भावयित्वा ॥ ततो देवतामुद्दिश्य जुह्यात् ॥ ततस्तत्तत्संगुहं भावयेत् ॥ अत्र नमोतः  
 पूजायां स्वाहांतो होममंत्रः ॥ तत्र ब्रह्मादित्रिप्रथमाष्टके तत्तदेवानां पूजाहोमौ तथा सवार्दिपुण्यतानां सपत्नीकानां थारादित्युक्तानां च



पूजाहोमौ एवमष्टिक्रमे द्विचतुर्विंशतिमंत्रानुक्ताः संहारे तद्वैपरित्यप्रदर्शनाथप्रथमाष्टकग्रान्तमंत्रमाद्यावेनोदाहरति ॐ शिवायसत्यमित्यादि एवमिति सृष्टिक्रमप्रागुक्तविर्च्यादिशिवान्तदेवताष्टकमंत्रेषु पुनः संहारक्रमेणाग्निशिवायसत्यस्वाहा इत्यादि ब्रह्मणस्वाहेत्यततथा पशुपतिपन्न्यादिसर्वान्तमुक्तक्रमेण संपूज्य घृतचरसमिक्रमात् प्रत्येकं होतव्यम् ॐ सर्वेत्यादिकेवलाज्यहोममंत्रस्तत्र सर्वधराभितवा क्यत्रयान्तोभुवः स्वाहेति तृतीयः ॐ भूर्भुवः स्वाहेति चतुर्थो मंत्रः ॥ एवं पृथक् पृथगिति तथा शिवस्य प्रतीत्येते च त्वारोमंत्राऽऽह्वाः एवं भवजलमेघाधिजाह्नवांसंभवमध्वंजहि भूः स्वाहेत्यादिभिः स्वाहेत्युद्गीर्भमंत्रहोमः ॥ तथा विजमंत्रैश्च तथा प्राणनिविष्ट इत्यादि षण्मेत्रैश्च श्राद्धोक्तः स्वयुद्धोक्तः पित्रापितामहप्रपितामहछुदये नहोमश्च ॥ एवं सप्तार्हं प्रत्यहं हुत्वा सप्तमे दिने भुवादिततदेवतोद्देशात् विप्रानभ्यर्च्य सर्वादिभ्योऽष्टौ पिंडादेयाः ॥ एवं कृते जीवच्छ्रद्धेः स्वर्गध्वमेते न शौचं न भूतकर्म ॥ एवं तस्मादनुपन्नः पुत्रोऽपि पित्रादिजातकमादिना संस्कार्यः स च ज्ञानी भवेत् एवं दुहिता च तथा चैतस्मिन् तत्तौ योगिनो जायन्ते इति ॥ इति जीवच्छ्रद्धप्रयोगः समाप्तः ॥ अथ कुष्ठिमरणविधानं तत्रयमः ॥ मृतस्य कुष्ठिनो देहं निखनेन हृष्टमभिषु ॥ वासरत्रितयं पश्चादुद्धृत्या न्यत्र दंदेहो ॥ नगं गृहं वनं कार्यं निक्षेपे विधिरुच्यते ॥ षडब्दव्रतपूर्णेन विधानान्यं ऋतुचरेत् ॥ ततो स्थिसंचयंतस्य गंगायां प्राक्षिपेत् सुधीः ॥ मांसिमांसिततः कुर्यान्मांसिश्चाद्रानिपार्षणात् ॥ इत्येतत्कुष्ठिमरणे कथितं शास्त्रकोविदैः इति ॥ अस्यादाहरणप्रायश्चित्तमुक्तं ( भविष्ये ) शृणुकुष्ठगणं विप्र उत्तरोत्तरोगुरुम् ॥ विचर्चि च कटुदुश्कर्मा चर्वरी यस्तृतीयकः ॥ विकचूत्रेण ताम्रौ च कृष्णश्चेत् तथाष्टकम् ॥ इत्युक्त्वा ॥ मृतं तप्रापयेत्तीर्थं पथं वा तस्मूलकम् ॥ नर्पिंडोदकं कार्यं न च दानं क्रियां चरेत् ॥ षण्मासीयात्रिमासी यमृतः कुश्टी कदाचन ॥ यदि ते हस्ते हस्ते दाहं यतिश्चांघ्रायणं चरेत् ॥ (कौर्मै) क्रियाहीनस्य मूर्खस्य महारोगिण एव च ॥ यथेष्टाचरणस्याहुमरणं ॥

तमशौचकम् ॥ महारोगास्तु ॥ वातव्याध्यश्वर्याकुष्ठमेहोदरभगदाः ॥ अर्शोमिश्रहृणीत्यष्टौ महारोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥ इति कुष्ठिमरणविधानम् ॥  
( अथ रजस्वला मृतौ मदनरत्ने स्मृत्यन्तरे ॥ अपोहिष्ठेति तिसृभिर्हिरण्यवर्णैः स्मृत्यः ॥ पवमाननुवाकेन यदन्तीति च सप्तभिः ॥ ततो यज्ञपवित्रे  
न तु तोयेन स्नापयित्वा तु मंत्रतः ॥ आपोहिष्ठेति तिसृभिर्हिरण्यवर्णैः स्मृत्यः ॥ पवमाननुवाकेन यदन्तीति च सप्तभिः ॥ ततो यज्ञपवित्रे  
ण गोमूत्रेणाथ ते द्विजाः ॥ स्नापयित्वा न्यवसेनाच्छाद्य श्वर्याः ॥ दाह्यद्विकृतं कुर्यात्प्रजापतिवचो यथा ॥ इति ॥ यज्ञपवित्रं  
आपोऽस्मानिति ॥ गृह्यकारिकायां ॥ अन्तरीक्षे दत्तं च दत्तं पुरुषं दत्तः ॥ उदक्यासूतिका नारी चरेच्चान्द्रायणत्रयम् इति ॥  
( अथ गर्भिणी मृतौ मदनरत्ने शौनकेः ) गर्भिण्युदक्यां कर्करं निमुदक्यं श्रेष्ठम् ॥ प्रवक्ष्यामि समासेन शौनको ह द्विजन्मनाम् ॥  
गर्भिणी मरणे प्राप्ते गोमूत्रेण जलैः सह ॥ आपोहिष्ठेति तिसृभिः स्मृत्यः ॥ अन्तरीक्षे दत्तं च दत्तं पुरुषं दत्तः ॥ प्रेतं भशानेनीत्वाऽथोच्छ्रित्य सम्योदरततः ॥  
पुत्रमादाय जीवंश्चेत्स्तनदं त्वानुतायतु ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ उदङ्चाऽब्रणं कुर्यात्पृषदाज्येन पूर्य च ॥ मुद्गरमकुण्डो  
मूत्रशयोहिष्ठेति तिसृभिः ॥ स्नाप्य चाच्छाद्य वासोभिः श्वर्याः ॥ तत्रैव षडशीतिमते ) गर्भिण्यां मृतायां दक्षिणां शिर  
सं निधाय तस्यानाभिं श्चात्सव्यमुदरं चतुर्गुलं हिरण्यगर्भेति मंत्राद्विष्टम् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ उदङ्चाऽब्रणं कुर्यात्पृषदाज्येन पूर्य च ॥ जीवत्वमपुत्रक  
इत्युक्त्वा क्षेत्रयेत्वेति पंचभिर्मन्त्रैः स्नापयित्वा हिरण्यमन्तर्वायमूत्रेण निक्षिपेत् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥  
शिशुं श्रामं प्रापयेत् ॥ गर्भच्छेदस्थले शतसुधायां पंचद्विगुलं ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥  
भिन्नमुदरं मूत्रेण संश्रयधृतेनानुलिप्य ब्राह्मणाय तिलान्गं क्षिप्त्व पुनर्दधाद् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥ यस्तेस्तनः शश्वदपुत्रं भवेत् ॥

नारी सशल्यासंस्थिता भवेत् ॥ कुक्षिभित्वा ततः शल्यं निहरवादिजिवति ॥ प्रमीतानि सनेत्तु प्रायश्चित्तमतः परम् ॥ सात्रयस्त्रिंशताकुच्छैः  
 शुद्धयते शल्यदोषतः ॥ सगर्भे दहने तस्या वर्णजं वधपातकम् ॥ प्रायश्चित्तं चरित्वा तु शुद्धयन्ति पापकारिणः ॥ दग्ध्या तु गभसंयुक्तौ  
 त्रिदंष्ट्रच्छमाचरेत् इति ॥ गर्भिणी प्रतु विधानम् ॥ ॥ ( चतुर्दश्यां शस्त्रहतानामेकादिष्टमेव कर्तव्यामित्यत्र कारणमुक्तं हेमाद्रौ  
 नागररत्नदे ) ॥ आनर्त उवाच ॥ कस्माच्छस्त्रहतानां प्रेक्षा श्राद्धं चतुर्दशी ॥ एकादिष्टकुतः श्राद्धं कारणं प्रब्रवीहि मे ॥ भर्तृयज्ञ उवाच ॥  
 बृहत्करेण पुरारजिन्निग्न्याक्षो महासुरः ॥ बभूव बलवाञ्छूरः सर्वदेवभयंकरः ॥ ब्रह्माप्रतापितस्तेन विधायिविवंधतः ॥ कृष्णपक्षे  
 चतुर्दश्यां नभस्येमासि संस्थिते ॥ ब्रह्मोवाच ॥ परितुष्टोऽस्मितेव तस्य प्रार्थयस्व यथेप्सितम् ॥ अदेयमापि दास्यामि दुर्लभं यत्सुरासुरैः ॥ हि  
 रण्याक्ष उवाच ॥ भूतः प्रेताः पिशाचाश्च राक्षसा इत्येकानवाः ॥ वुभुक्षिताः प्रधावन्ति मानिन्यपेक्षसंभव ॥ पितृपक्षे कृते श्राद्धे कन्यासंस्थे दिवा  
 करे ॥ एतस्मिन्नहनि प्रायस्तृप्तिः स्याद्वर्षसंभवा ॥ तदेवामत्र दिवसे तृधुपायं कुरु प्रभो ॥ ब्रह्मोवाच ॥ यः कश्चिन्मानवः श्राद्धं स्वपितृभ्यः  
 प्रदास्यति ॥ पितृपक्षे चतुर्दश्यां नभस्येमासि संस्थिते ॥ प्रेतानां राक्षसानां भूतानां तद्भविष्यति ॥ एवमुक्त्वा ततो ब्रह्मा गतश्च दर्शनं  
 नृप ॥ हिरण्याक्षोऽपि संहृष्टः स्वीयमेवाहृदययौ ॥ यश्च शस्त्रहतानां च तस्मिन्नहनि दीयते ॥ एकादिष्टनैः श्राद्धं तत्तेष्वक्ष्यामि कारणम् ॥  
 संस्थे शस्त्रहता ये च निर्विकल्पेन चेतसा ॥ युध्यमानान्ते मार्यै जायन्ते भुजाः पुनः ॥ प्राड्मुखवायेन हन्यन्ते पलायनपरायणाः ॥ तेभ्य  
 वंति नराः प्रेता एतदाह पितामहः ॥ सम्मुखवा अपि यदेन्यं हन्यमाना वदंति च ॥ पश्चात्तापं च वा कुर्व्युः प्रहारैर्जरीकृताः ॥ तेऽपि प्रेता भवं  
 तीह मनुः स्वाशं भुजो ब्रवीत् ॥ कदाचित्चित्तचलनं झूरणां संप्रजायते ॥ तेषामपि दिने तत्र देयं प्रेतत्वशंकया ॥ अपमृत्तुगतानां च सर्वे

षमवेदेहिताम् ॥ प्रेतत्वं जायेत यस्मात्तस्मात्तपोपाहितादिनम् ॥ श्राद्धार्हपाथ्यश्रष्ट विशेषणप्रकाशितम् ॥ एकोद्दिष्टप्रकर्तव्यं तस्मात्तत्र  
 दिनेनैः ॥ सपिंडीकरणदूर्ध्वं तत्तद्व्यामिकारणम् ॥ यदि प्रेतत्वमाप्नोति कदाचित् तत्पिता भवेत् ॥ तृप्त्यतस्तत्कर्तव्यं श्राद्धतस्य दिनेन पृ ॥  
 पिता महाद्यास्ताद्धि श्राद्धं नार्हति कुत्रचित् ॥ अथ चेद्भ्रातृन्तोदद्याद्विद्यते राक्षसस्तु तत् ॥ ब्रह्मणो वचनाद्वा जन्मभूतप्रतैश्च दानैः ॥  
 तेनैकोद्दिष्टमेवात्र कर्तव्यं न तु पार्षणम् ॥ पितृपक्षे चतुर्दश्यां कन्यासंस्थो दिवाकरे ॥ एतस्मात्कारणाच्छ्राद्धं पार्षणं निर्विधायते ॥ तस्मिन् ब्रह्म  
 निसंप्राप्ते व्यर्थं श्राद्धं भवेद्वतः ॥ इति चतुर्दशी श्राद्धनिरूपणीयहतिहसः ॥ ॥ अथ जीवन्पितृकश्राद्धकालाः ( तत्र कात्यायनः )  
 सपितुः पितृकृत्येषु अधिकारो न विद्यते ॥ न जीवन्तमतिक्रम्य किंचिद्वादिदतिश्रुतिरिति ॥ ( अत्रापवादो मैत्रायणीयपरिशिष्टे ) उद्धा  
 हे पुत्रजनने पित्र्येष्ट्यां सौमिकमखे ॥ तीर्थे ब्राह्मण आयाते षडेते जीवतः पितुः इति ॥ जीवन्पितृकस्य षडेते श्राद्धकाला इत्यर्थः ॥ पित्र्येष्ट्यां  
 चातुर्मास्येषु तथा पिंडपितृयज्ञे च सौमिकमखे सोमाद्गुरोराशात्पिंडदानेन च ॥ इति ( अन्योपविशेषस्तत्रैव ) आन्वष्टययोग्याप्रप्तौ सत्यां  
 यच्च मृतैर्हनि ॥ मातुः श्राद्धसुतः कुर्यात्पितृवर्षपितृवर्षाविति ॥ यत्तु दर्शश्राद्धं गायत्र्या श्राद्धं चापराणां शिक्षम् ॥ न जीवन्पितृककुः याचितैः कृणौ  
 स्तुतर्पणमिति गायत्र्या श्राद्धनिषेधकं वचनम् ॥ तत्तु गायत्र्या श्राद्धोद्देशेन गायत्र्या श्राद्धं न कर्तव्यमित्येतत्परम् ॥ पूर्वोक्तवाक्यं तु देवाद्व्याप्रप्तौ  
 सत्यां श्राद्धविधायकम् इति ॥ अथ जीवन्पितृककर्तृकश्राद्धविचारः ॥ ( तत्र पारिजातनिर्णयामृतयोर्मतुः ) श्रियमाणे तु पितरि पूर्वेषां  
 मेव निर्वपेत् ॥ विप्रवद्वापि तं श्राद्धं स्वकंपितरमाशयेत् ॥ इति पूर्वेषां पिता महादीनामित्यर्थः ॥ पिता महादीनामिदं पितृप्रपितामहयोर्मृतयो  
 स्तत्रैव स एवाह ॥ पिता यस्य दुतुक्तः स्यात्तत्रैव पितामहः ॥ पितुः सनमसंकीर्त्य कीर्तयेत्प्रपितामहम् ॥ पितामहो वातच्छ्राद्धं भुञ्जीतेत्यब्र

वीन्मनुः॥ इति ॥ दूतः मृतः ॥ पितुः स नामसंकीर्त्येति अस्मत्पितुः प्रपितामहः पितुर्बुद्धप्रपितामह इति स्वप्रपितामह  
 इति नाम पितुः कृत्यादित्यर्थः ॥ अत्र मनुना जीवतः पितामहस्य भोजनमुक्तं तथापि प्रत्यक्षार्चनस्य निषिद्धत्वात् पितामहं नित्यं  
 पितृप्रपितामहस्य पितुः स्मरणेनो देयमिति ॥ पितरि पितामहे च जीवति प्रपितामहादीनां त्रयाणां श्राद्धं कुर्यात् ॥ (तदुक्तं हेमाद्रिपारिजते  
 निर्णयान्तरे पितुः ॥ पितरि जीवति यः श्राद्धं कुर्यात् ॥ येषां पितृकुलं तेषां कुर्यात् पितरि पितामहे च जीवति येषां पितामहः पितुः  
 प्रपितामहस्य भोजनमुक्तं तस्यैव पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ यस्य पितुः प्रेतः स्यात् स तस्मै पिण्डं निधाय प्रपितामहात्  
 पाभ्यां दद्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥  
 कुर्याद्विचक्षणः ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥  
 रेषां पितृप्रपितामहस्य पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥  
 श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥  
 इत्याहुर्देशः ॥ एवं पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥ अत्र पिण्डं निधाय पितुः श्राद्धं कुर्यात् ॥  
 प्रपितामह इत्याहुर्देशः कार्यः ॥ मृतपितृकमाणवकसमावर्तने पितृव्यभ्रात्रादिरस्य माणवकस्य मातृपितामहीप्रपितामह

इयादि उच्चारयेत् ॥ भ्रात्रादेरश्वेस्वयमेवस्वपितृभ्यादद्यात् ॥ एवंजीवत्पितृक्रोपि पितुरसन्निधाने भ्रात्रादेरभावेपितुः पि  
 तृभ्यःस्वयमेवदद्यात् ॥ एवंविवाहादिष्वपिज्ञेयम् ॥ मृतपितृकस्यापेनयनादिसंस्कारपितृव्यमातुलादिकुर्वन्नस्यसंस्कार्यस्यपितृ  
 पितामहेत्याद्युच्चार्यश्राद्धंकुर्यात् ॥ जीवतः पितुरसन्निधानेन कुर्वन्मातुलादिरस्यसंस्कार्यस्यपितृजनकादीनुद्दिश्यकुर्वन्नसंस्कार्यस्य  
 मृतानपिमात्रादीनि ॥ इति जीवत्पितृकर्तृकाम्भुदयिकश्राद्धनिर्णयः ॥ अथमलमासेश्राद्धनिर्णयः ॥ मलमासेनामसकान्तिविर  
 हितोमासः संक्रांतिद्वययुगोवा ॥ ( तथाच हेमाद्रौकाठकशृङ्गे ) यस्मिन्मासेनसंक्रांतिः संक्रांतिद्वयमेववा ॥ मलमासःसाविज्ञेयो मासेत्र  
 शतमेभवेदिति ॥ अत्राद्विविधोपमलमासे महालयादिश्राद्धंनकुर्यात् ॥ ( तथाचहेमाद्रिपारिजातयोः काठकशृङ्गपरिशिष्टम् ) तथाभलेऽ  
 नन्यगतिं नित्यानैमित्तिकीक्रियाम् ॥ सोमयागादिकर्म्मणि नित्यान्यपिमालिख्ये ॥ पुष्टीष्टयाग्रहणाधानचातुर्मास्यादिकान्यपि ॥ महाल  
 याष्टकाश्राद्धोपाकर्मोत्सर्गकर्मयत् ॥ स्पष्टमासाविशेषाख्यं विहितवर्ज्येनमले इति ॥ ( तत्रैव भृगुरपि ) वृद्धिश्राद्धं तथासोममश्याधेयमहा  
 लयम् ॥ राज्याभिषेककाम्यच नकुर्याद्धानुलोचते इति ॥ अथमलमासेश्राद्धकर्मणप्रतिप्रसवाः ॥ ( तत्र हेमाद्रौयमः ) गर्भेवाङ्कुषिकृत्ये श्रा  
 द्धकर्मणिमासिके ॥ सपिंडीकरणेनित्ये नाधिमासोविधीयते ॥ तीर्थस्नानंजपोहोमो यवब्राह्मिलिदिभिः ॥ जातकमान्यकर्मणि नवश्राद्धं  
 तथैवच ॥ मघात्रयोदशीश्राद्धं श्राद्धान्यपिचपोडश ॥ चंद्रमूर्त्यग्रहेस्नानं श्राद्धदानजपादिकम् ॥ कार्याणिमलमासेपि नित्यनैमित्तिकं  
 तथा इति ॥ अत्रतीर्थस्नानश्राद्धादिश्रासंगिकं नत्वपूवतस्यमलमासेस्मृत्यन्तरेनिषधात् ॥ ( हेमाद्रौ मास्ये ) चंद्रमूर्त्यग्रहेचैव मरणेपुत्रज  
 न्मानि ॥ मलमासेपिद्वयस्यादत्तमशय्यकारकम् ॥ ( सौरपुराणे ) एकोद्दिष्टुयन्श्राद्धं तत्रैमित्तिकमुच्यते ॥ तत्कायमलमासेपि काल

धिव्येपिधर्मतः ॥ (हेमाद्रौ व्यासः) जातकर्मणिपञ्चादं दशश्राद्धं तथैवच ॥ मलमासेपिक्तत्वं व्यासस्यवचनं यथा ॥ (शतातपः)  
 प्रतिसंत्सरश्राद्धे नाधिमासं विजयेत् ॥ मलमासेपिक्तत्वं श्राद्धयत्यतिवत्सरम् ॥ इति ॥ एतदाद्यसांवत्सरिकविषयमलमासेसांवत्सरिकं  
 कृत्वा तदुत्तरमासेषु नस्तदहर्त्वेनीयमित्येवंविधमतानुसारि चेद्वचनमत्रवचनानि ॥ ( तत्र हेमाद्रौ वृद्धवसिष्ठः ) असकृतेपिक्तत्वं  
 माब्दिकं प्रथमं द्विजैः ॥ तथैवमासिकं श्राद्धं सपिंडीकरणं तथा ॥ (पैठनसिः) मलमासमृतां च श्राद्धयत्यतिवत्सरम् ॥ मलमासेपिक्तं  
 व्यं नान्येषां तु कदाचन ॥ (यमः) आब्दिकं प्रथमं यस्यात्तत्तुर्वीतमलिस्तुच ॥ त्रयोदशसंप्राप्ते कुर्वीत पुनराब्दिकम् ॥ ( वसिष्ठोपि ) आब्दि-  
 काहानि संप्राप्ते अधिमासे भवेद्वदि ॥ श्राद्धद्वयं प्रकुर्वीत एवं कुर्वन्मुह्यति इति ॥ तदेवं सपिंडीकरणान्ता निप्रतश्राद्धानि ॥ पुत्रजन्मनिमित्तं  
 कुमुपुरगनिमित्तकमाद्वंसावंत्सरिकमनाद्यपि मलमासमृतां निवत्सरिकं गजच्छायाश्राद्धममावास्याश्राद्धं प्रत्यहमनुष्ठीयमानं च नित्यश्राद्धं  
 वज्रयित्वाऽन्यच्छ्राद्धं मलमासेनानुष्ठेयमिति स्थितम् ॥ इति मलमासश्राद्धनिर्णयः ॥ अथ पिंडशब्दपुन्रपुंसकयोर्विचारः ॥ अत्रयद्यपि  
 सूत्रमृतिपुराणेषु सर्वत्र पिंडशब्दस्य पुल्लिङ्गता एव दृश्यते ॥ तथापि पिंडपितृयज्ञे कान्यायनेन असावेतत्ते इति नपुंसकदर्शनात् यजुर्वेदि  
 नां दर्शनं महालयप्रभृतिश्राद्धेषु एतत्तेऽत्र पिंडवा इति गम्यते ॥ प्रविश्य पिंडीकुड्यस्यापिंडपतति इति महाभाष्यादौ पिंडशब्दस्य द्वानपुंस-  
 कयोरेपि प्रयोगदर्शनात् ॥ विरूपा आमगभाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुलेभ्यः ॥ तेभ्यः पिंडमया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतामिति हेमाद्रौ लौगाक्षिणा विशेषोपा-  
 दानात् हेमाद्रियजुर्वेदीयश्राद्धतत्त्वप्रभृतिमहाविंशेषूक्ता वाचनं पुंसकेन निर्देशो न विरुध्यते ॥ ( उपाध्यायकर्मन्तु ) एतत्तेऽत्रम् इत्यध्याहारः  
 काव्यं इत्युक्तवान् ॥ तत्तु पिंडपितृयज्ञाय दशश्राद्धविषयकम् ॥ दर्शन्यतिरेकेषु एतत्तेऽपिंडमिति अध्याहारः काव्यः ॥ ( अनयोश्चयवस्था

माह हेमाद्रौ लौगाक्षिः) महालयगयायांच प्रेतश्राद्धेदशाहिके ॥ पिंडशब्दप्रयोगःस्यादन्नमन्यत्रकीर्तयेत् इति ॥ महालये भाद्रपदापरपक्षतो  
 र्थविशेषेवाप्रतश्राद्धे इति सपिंडीकरणान्तेषुश्राद्धेषु दशाहिकेश्राद्धव्यतिरेकेणापिदशाहनिर्व्यापिददाने अन्नशब्दस्यचानन्तरस्वधारा  
 षडःप्रयोज्यइत्यर्थः ॥ तत्रेदंप्रयोगवाक्यम् ॥ अमुकगोत्रास्मत्पितृसुक्रमन्त्रतेतंत्रापिंडवास्वधानमः ॥ इति ॥ प्रेतश्राद्धेतुसर्वत्र  
 एषपिंडइतिपुल्लिगत्वेनएवउच्चारःकार्यः ॥ सर्वनिबंधेषुपुल्लिगत्वेनैवापदेशात् इति विवेकः ॥ इतिपिंडशब्देपुन्रपुंसकयोर्विचारः ॥ अथरु  
 चिस्तवः ॥ (हेमाद्रौ मार्कण्डेयपुराणे) रुचिरुवाच ॥ नमस्येदंहंपितृञ्छ्रद्धे येवसन्याधिदेवताः॥देवैरपिहितव्यन्ते येचश्राद्धेस्वधोत्तरैः॥  
 ॥ १ ॥ नमस्येदंहंपितृन्स्वर्गे येतर्प्यन्तेमहर्षिभिः ॥ श्राद्धैर्मनोमयैर्मत्तया भुक्तिमुक्तिमभाप्सुभिः ॥२॥ नमस्येदंहंपितृन्स्वर्गे सिद्धाःसंतर्पय  
 न्तियान् ॥ श्राद्धेषुदिव्यैःसकलरुपहारैरनुत्तमैः ॥ ३ ॥ नमस्येदंहंपितृन्भक्त्या येऽर्चयन्तेशुभैरपि ॥ तन्मयत्वेनवाञ्छाद्रिंक्राद्धिमार्त्यांति  
 कीर्णाम् ॥ ४ ॥ नमस्येदंहंपितृन्मर्त्यैरर्चयन्तेभुवियेसदा ॥ श्राद्धेषुश्रद्धयाभीष्टलोकप्राप्तिप्रदायिनः ॥ ५ ॥ नमस्येदंहंपितृन्विप्रैरर्चयन्ते  
 भुवियेसदा ॥ वाञ्छिताभीष्टलाभाय प्राजपत्यप्रदायिनः ॥ ६ ॥ नमस्येदंहंपितृन्त्येवै तर्प्यन्तेऽरण्यवासिभिः ॥ वन्यैःश्राद्धयैताहारैस्तपो  
 निर्धूताकिंस्वपैः ॥ ७ ॥ नमस्येदंहंपितृन्विप्रैर्नष्टिक्वन्नचारीभिः ॥ येसंयतात्मभिर्नित्यं संतर्प्यन्तेसमाधिभिः ॥ ८ ॥ नमस्येदंहंपितृञ्छ्रद्धे  
 राजन्यास्तर्पयन्तियान् ॥ कव्यैरशेषैर्विधिवल्लोकत्रयफलप्रदान् ॥ ९ ॥ नमस्येदंहंपितृन्वैश्वैरर्चयन्तेभुवियेसदा ॥ स्वकर्माभितै  
 र्निंत्यपुष्पयूपान्नवारीभिः ॥ १० ॥ नमस्येदंहंपितृञ्छ्रद्धयैःशुद्धैरपिभक्तितः ॥ संतर्प्यन्तेजगत्पत्र नाम्नाज्ञाताः सुकालिनः ॥ ११ ॥ नमस्येद  
 हंपितृञ्छ्रद्धैः पातालयेमहसुरैः ॥ संतर्प्यन्तेस्वधाहास्यात्यक्तदंभमदैःसदा ॥ १२ ॥ नमस्येदंहंपितृञ्छ्रद्धैरर्चयन्तेयेसतालैः ॥ भोगैरशेषै



विधिवन्नगैः कामानभीप्सुभिः ॥ १३ ॥ नमस्येहंपितृब्धैः सपैः सन्तपितान्सदा ॥ तत्रैविधिवन्मन्त्रभोगसंपत्समन्वितैः ॥ १४ ॥  
 पितृव्रमस्येनिवसन्ति साक्षाद्देवलोके च तथा न्तरीक्षे ॥ महीतले ये च सुरादिपूज्यास्तैमे प्रयच्छन्तु योपनीतम् ॥ १५ ॥ पितृव्रमस्येपरमा  
 त्मभूता ये विधानेन वसन्ति मूर्त्ताः ॥ यजन्ति यानस्तमलैर्मनोभिर्योगीश्वराः कुशविमुक्तिहेतून् ॥ १६ ॥ पितृव्रमस्येदिविधे च मूर्त्ताः स्वधा  
 भुजः क्राम्यफलाभिसंवै ॥ प्रदानशक्तः सकलेऽपि सानां विमुक्तिदायेऽनभिंसंहितेषु ॥ १७ ॥ तृप्यन्तेऽस्मिन् पितरः समस्ता इच्छवन्तान्ये  
 प्रदंशं तिकामान् ॥ सुराचारमिदं त्वमतोऽधिकं वा सुतान् पशून् स्वानि वलंगृहाणि ॥ १८ ॥ सोमस्य ये रश्मिषु येऽकविम्बे शुक्ले विमाने च सदा व  
 सन्ति ॥ तृप्यन्तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैर्गन्धादिना पुष्टि मितो व्रजन्तु ॥ १९ ॥ येषां हुतेऽग्राहविषा च तृप्तिमुभुञ्जते विप्रशरीरभाजः ॥ येषां ह  
 दानेन मुदं प्रयाति तृप्यन्तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैः ॥ २० ॥ येषां द्विमांसेन सुरभीष्टैः कृष्णैः स्तिलैर्दिव्यमनोहरैश्च ॥ कालेन शाकेन महर्षिष्व  
 यैः संप्रीणितास्ते मुदमत्रयान्तु ॥ २१ ॥ कव्यान्यशेषाणि च यान्यभीष्टान्यतीव तेषां मम रार्चितानाम् ॥ तेषां तु सा त्रिध्यभिहास्तु पुष्पगन्धान्  
 भोज्येषु मया कृतेषु ॥ २२ ॥ दिने दिने ये प्रतिगृह्णते च मासान् तपूज्यास्तु विषेऽष्टकामु ॥ येषां सरान्तेऽप्युदये च पूज्याः प्रयान्ते ते मापितरो व्रत  
 तिम् ॥ २३ ॥ पूज्याद्विजानं कुमुदं भासो येषां त्रियाणं च न वार्कवर्णाः ॥ तथा विशां ये कनकावदाता नीलीनिभाः शूद्रजनस्येव च ॥ २४ ॥ तैऽ  
 स्मिन् समस्ता मम पुष्पगन्धपुष्पाव्रताद्यादिनिवदनेन ॥ तथा विशां भोजनचया तु व्रतिं सदा पितृभ्यः प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥ २५ ॥ ये देवपूज्यं पण्यतिव्रति  
 हेतोरश्रंति कव्यानि शुभाहुतानि ॥ तृप्ताश्च ये भूतिमृजो भवन्ति तृप्यन्तेऽस्मिन् प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥ २६ ॥ रक्षांसि भूतान्यसुरास्तथा प्राव्रिणां  
 शयनस्तन्निशिवं प्रजानाम् ॥ आद्याः सुराणां मम रशपूज्यास्तु तृप्यन्तेऽस्मिन् प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥ २७ ॥ अग्निघ्नानां विषद आज्यपाः सोमपाः

स्तथा ॥ ब्रजन्तु तृप्तिश्राद्धेऽरिमन्त्रस्तर्पितामया ॥ २८ ॥ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीरक्षन्तु मे दिशम् ॥ तथा बर्हिषदः पान्तु याम्याये पितर  
 स्तथा ॥ २९ ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपि सोमपाः ॥ रक्षोभूता पिशाचेभ्यस्तथैवाभुः शोषतः ॥ ३० ॥ सर्वतश्चाधिपस्तथा यमोरक्षां करो  
 तु मे ॥ विश्वे विश्वमुगाराध्यो धर्म्यो धन्यः शुभाननः ॥ ३१ ॥ भूतिदोभूतिः कृतः पितृण्येगणानव ॥ कल्याणः कल्पतां कर्ता कल्पः  
 कल्पतराश्रयः ॥ ३२ ॥ कल्पताहेतुरनघः पडिमेतगणाः स्मृताः ॥ वरोरेण्येवारदः पुष्टिदस्तुष्टिदस्तथा ॥ ३३ ॥ विश्वपाता तथा घाता  
 सैवेततथागणाः ॥ महान्महात्मा महितो महिमावान्महाबलः ॥ ३४ ॥ गणाः पंचतथैवैते पितृणां पापनाशनाः ॥ सुखदोधनदश्चान्यो धर्म  
 दोऽन्यश्च भूतिदः ॥ ३५ ॥ पितृणां कथ्यते चैतत्तथागणचतुष्टयम् ॥ एकत्रिंशत्पितृगणा यैव्याप्तमखिलं जगत् ॥ ३६ ॥ ते मेऽनुतास्तुष्यं  
 तु यच्छंतु च सदा हितम् ॥ इति श्रीमार्कंडेयपुराणे रुचिकृते पितृस्तवं ॥ अथ सप्तार्चिस्तोत्रम् ( तत्रैव ) ॥ रुचिकवाच ॥ अमूर्त्तानां च मूर्त्तानां  
 पितृणां दीप्ततेजसाम् ॥ नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम् ॥ १ ॥ इंद्रादीनां च नेतारो दक्षमारीचयोस्तथा ॥ सप्तर्षीणां तथान्येषां  
 तावमस्यामि कामदान् ॥ २ ॥ मन्वादीनां मुनीन्द्राणां सूर्याचंद्रमसोस्तथा ॥ तान्नमस्याभ्यहंसवर्चान् पितरश्चार्णवेषु ये ॥ ३ ॥ नक्षत्राणां  
 ग्रहाणां च वायव्यो नभसस्तथा ॥ द्वावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृतांजलिः ॥ ४ ॥ देवर्षीणां ग्रहाणां च सर्वलोकनमस्कृतान् ॥ अक्ष  
 व्यस्य सदा दातृन्मस्येदं कृतांजलिः ॥ ५ ॥ नमोगणेभ्यः सप्तमस्तथा लोकेषु सप्तसु ॥ स्वधंभुवेनमस्यामि ब्रह्मणे योगक्षुपे ॥  
 ॥ ६ ॥ सोमाधारान् पितृगणान्योगमूर्त्तिधरस्तथा ॥ नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम् ॥ ७ ॥ अग्निरूपस्तथैवान्यान्मस्यामि पितृ  
 नहम् ॥ अक्षीषोममयं विश्वं यत्तत्तदशेषतः ॥ ८ ॥ येतु ते जमिये चैते सोमपुण्याग्निमूर्त्तयः ॥ जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः ॥ ९ ॥

नेभ्योऽविलेभ्यायोगिभ्यः पितृभ्यायतमानसाः॥नमोनमोनमस्तेमे प्रसीदन्तुस्वधामुन्नः॥१०॥ पितरञ्जुः॥स्तोत्रेणानेनवनरो योऽस्मांस्ता  
 ध्यातिभक्तिः॥ तस्यतुष्टव्यभोगानात्मज्ञानं योत्तमम् ॥११॥ शरीरोग्यमर्थं च पुत्रपौत्रादिकं तथा ॥ प्रदास्यामोनमसंदेहो यच्चान्यदभिधा  
 ञ्छितम् ॥ १२ ॥ तस्मात्पुण्यफलं लोकं वाञ्छद्भिः सततैः ॥ पितृणां चाक्षयं तु मे स्तव्याः स्तोत्रेण मानवैः ॥ १३ ॥ वाञ्छद्भिः सततं स्तो  
 त्रं ॥ स्तोत्रेणानेनैव तथा ॥ अस्मात्प्रीतिकंस्तवम् ॥१४॥ पठिष्यन्ति द्विजग्राणां भुंजतां पुरतः स्थिताः ॥ स्तोत्रत्रयश्रवणं  
 व्याः स्तोत्रेणानेनैव तथा ॥ अस्मात्प्रीतिकंस्तवम् ॥ यद्यप्यश्रात्रियं श्राद्धं यद्यप्युपहृतं भवेत् ॥१५॥ अन्यायोपा  
 प्रीत्या सन्निधानेनैव तथा ॥ अस्माकमक्षयं श्राद्धं तद्विषयसंशयम् ॥ यद्यप्यश्रात्रियं श्राद्धं यद्यप्युपहृतं भवेत् ॥१६॥ अन्यायोपा  
 त्तवितेन यदिव कृतमन्यथा ॥ अश्राद्धैर्हरुपहृतैरुपहारैस्तथा कृतम् ॥ १७ ॥ अकलेश्यथवाऽंशे विधिर्हानमयापि ॥ अश्रद्धया वा पु  
 रुषैर्दुर्भसाश्च न्यवाकृतम् ॥ १८ ॥ अस्माकं तृतेयश्राद्धं तथाप्येव दुर्हरीणात् ॥ यत्रैतत्पठयते श्राद्धे स्तोत्रमस्मत्सुखवहम् ॥ १९ ॥  
 अस्माकं जायते तु त्विस्तत्र द्वादशावर्षिकी ॥ हेमं ते द्वादशाब्दानि त्वत्तिमस्तत्र चच्छति ॥ २० ॥ शिशिरे द्विगुणं द्वादशं त्वत्तिमस्तत्रैव भुंजुम  
 वसेत षोडशमास्तृतेयश्राद्धकर्मणि ॥ २१ ॥ ग्रीष्मर्षे च षोडशं त्वत्तिमस्तत्र चच्छति ॥ २२ ॥ शिशिरे द्विगुणं द्वादशं त्वत्तिमस्तत्रैव भुंजुम  
 वसेत षोडशमास्तृतेयश्राद्धकर्मणि ॥ २३ ॥ अस्माकमेतत्पुण्यं त्वत्तिमस्तत्रैव भुंजुम  
 वसेत षोडशमास्तृतेयश्राद्धकर्मणि ॥ २४ ॥ सन्निधानं कृतश्राद्धे तत्रास्माकं भविष्यति ॥ तस्मादेतत्स्वश्राद्धे विप्रणां भुंजतां पुनः ॥२५॥  
 यस्मिन्हृदये च लिखितमन्त्रं तत्तिमस्तत्रैव भुंजुम ॥ इत्युक्तं चापि तस्मत्स्य स्वागतामुनिस्तत्र ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे कर्त्तव्यं स्तोत्रम् ॥ इति  
 श्रावणपुण्यमहाभाग अस्माकं पुष्टिद्वेष्टकम् ॥ यस्मिन्हृदये च लिखितमन्त्रं तत्तिमस्तत्रैव भुंजुम ॥ इत्युक्तं चापि तस्मत्स्य स्वागतामुनिस्तत्र ॥ इति  
 श्रीबीकानेरस्य विषयान्तर्गतश्रीब्रह्मगण्डनगरानिवासिना श्रीचमिष्ठकुले द्वादशैव श्रीरामकृष्णगौत्रेण श्रीकस्तुरिचन्द्रमुनुना श्रीमहादेवभक्त  
 वाजसनेयिना गौडगंडितश्रीचतुर्थलक्ष्मणाश्रिते गौडीयश्राद्धप्रकारेणैव देवि मिश्रप्रकरणम् ॥ ३ ॥ समाप्तं यं निरणयविधायकः भूषणः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मुख्यकरणा नुकरपपद्धतिखण्डोद्धृतीयः प्रारभ्यते ॥ तत्रतावदृशश्राद्धमाधिकृत्यपूर्वादिनकृत्यम् ॥ तत्रकर्त्तापूर्ववृद्धिनि  
 राभिषेमेऋवांभुक्त्वा तद्दिने रात्रौप्रदोषान्ते असंभवे श्राद्धदिनेप्रातर्वा श्राद्धारंभसमयेवा यथावकाशं विप्रग्रहं गत्वा ब्राह्मणनिमंत्रणं कुर्यात् ॥  
 ततः निमंत्रिताविप्रः श्राद्धकर्त्ता च द्विभोजनं वेदाध्ययनं दूरगमनं भारोद्धहनं मथुनं श्रमं हिंसां क्रोधं त्वरां प्रमादं कलहं शौरं च वर्जयेत् ॥  
 शुचिः सत्यवादी क्षमी ब्रह्मचारी च भवेत् ॥ पूर्वमद्वाकृतनिमंत्रणे नान्यन्निमंत्रणमिच्छेत् ॥ नान्यंप्रातिग्रहं गृहीयात् ॥ नान्यत्रगमनादि  
 नाङ्कुतपादिश्राद्धकालातिक्रमं कुर्यात् ॥ नचाऽस्नानः श्राद्धमुज्जीत ॥ अथश्राद्धदिनपूजाङ्कृत्यम् ॥ कर्त्ताब्रह्मेमुहूर्ते उत्थाय यथापदेशं शौचं  
 विधिवत्कृत्वाऽऽचम्य दंतधावनंतु न कुर्यात् ॥ ततो नद्यादौ स्नात्वा प्रक्षालिततृननश्चेतवाससीपरिधाय संध्यादिनित्यावश्यकंसमाप्य विविक्तां  
 पाकभूमिं गोमयादिना संस्क्रुर्यात् ॥ तत्रनूतनताम्रादिपात्रेषु यथाशक्त्युक्तमुमन्त्रंभक्ष्यभोज्यादिनानाप्रकारमनेकव्यंजनयुतं स्वयंयज  
 मानः पकुमारभेत् ॥ अशक्तश्चेददि बांधवैः स्त्रीद्वारा वापाचयेत् ॥ अमात्राणितृवंशजां पाखण्डां पुंश्चर्लीं पतितां वंध्यां विधवां अन्यगो  
 त्रजां व्यंगकर्णीं चतुर्थदिनेस्नानात्तपि गर्भणीं च पाकार्थं वर्जयेत् ॥ पाकस्थानं शुद्धस्नानादिनावेष्टयेत् ॥ एवं समासेचपा  
 के श्राद्धभूमिं गोमयोदकेनोपलिय ज्वलदंगारैः संशोध्य गौरमृत्तिकायाऽऽच्छाद्य तिलान्सर्षपंश्च विकिरेत् ॥ तत्रश्राद्धसाम्नासंपाद्य दिनस्य  
 षष्ठ्युद्भूतानंतरं द्विजानाहूय तेभ्योदंतधावनैतैलमुद्धर्तनं स्नानोपकरणं च नानाविधताम्रात्रस्यं यथाचारं स्वयमुपगम्य वैश्वैर्विक्रब्राह्मणपु  
 र्वकंदद्यात् ॥ ततः श्राद्धगृहाश्रतो गोमयेपलित्वाभूमौ गोमूत्रेण द्विहस्तमात्रदीर्घविस्तारमुक्त्युक्तं चतुरस्रमंडलं विधाय तदक्षिणतो  
 दुक्षिणपूर्वं चतुर्हस्तदीर्घविस्तारमपरं चतुरस्रं च कुर्यात् ॥ एतत्तु विप्रस्य क्षत्रियवैश्ययोस्तु त्रिकोणवर्तुले ज्ञेयौ ॥ अथ सव्येन उत्तरमडले सय

वकुमुमौप्रागश्रद्धाद्वैकुशौ विन्यस्यमण्डलप्रभ्यर्च्य तत्र ब्रह्मणार्थं षोडश्विन्शसेत् ॥ ततोदक्षिणमण्डले अपसव्येन सतिलकुमुमानिदक्षि  
 णाग्रैकैककुशानि विन्यस्य नेपालकंबलादीन्यासनानिस्थापयेत् ॥ ततोऽपराद्धे ब्रह्मणस्सनात् यजमानसवर्णेनहूतान् प्रांगणे सुपुः  
 शुक्लद्रवासाः कृतजलिर्दंभुतिष्ठन् स्वागतमितिहूयात् ॥ सुस्वागतमितिरेकते ॥ पूर्वकृतमण्डलद्वये आसनेषु प्राङ्मुखान् देवगणान्  
 णान् उदङ्मुखान्पितृब्रह्मणानुपवेशयेत् ॥ अथ श्राद्धारभसमयमधिष्ठत्यनिमग्नप्रणकरोलिखते ॥ तत्रादौ आचम्य सव्येन दक्षिणंज  
 न्वाच्य विप्रकरे पुष्पचंदनांबूलानिदत्त्वा ॥ दक्षिणकरणे ब्रह्मणदक्षिणजानुस्पृष्ट्वा ॥ देशकालौसकृत्य ॥ अद्यकरिष्यमाणपार्षणश्राद्धे  
 पित्रादित्रयसंबंधिविश्वेदेवश्राद्धार्थंयुवामहमामंत्रये ॥ इतिपित्रादित्रयसंबंधिविश्वेदेवश्राद्धार्थं द्वाविप्रानिमंत्र्य एवमेव मातामहादिदेवैर  
 बंध्यर्थमपिद्वाविप्रैनिमंत्रयेत् ॥ अथवा पित्रादित्रयसंबंधि मातामहादित्रयसंबंधि विश्वेदेवश्राद्धार्थं युवामहमामंत्रये इतिब्रह्मणद्वयनिम  
 त्रयेत् ॥ निमंत्रितास्मृतिप्रतिवचनम् ॥ ततः ॥ अक्रोधनैःशौचपरैः सततब्रह्मचारीभिः ॥ भवितव्यंभवद्भिश्च मयाचश्राद्धकारि  
 णा ॥ १ ॥ पूर्वदिननिमग्नपक्षे तु-सर्वायासविनिर्मुक्तैः कामक्रोधविवाजितैः ॥ भवितव्यंभवद्भिः श्रोभूतेश्राद्धकर्मणीति जपेच्छृणुयाद्वा ॥  
 भवितव्यमिति प्रतिवचनम् ॥ ततोऽपसव्येनवामंजान्वाच्य ब्रह्मणदक्षिणजानुस्पृष्ट्वा ॥ अथ अद्यकरिष्यमाणपार्षणश्राद्धे पितृश्राद्धार्थं  
 त्वामहमामंत्रयेइतिपितृब्रह्मणनिमंत्र्य एवंपितामहादिगणानपिपिश्राद्धार्थचनिमंत्रयेत् ॥ सर्वत्रनिमंत्रितोस्मृतिप्रतिवचनम् ॥ ततः अक्रोधनैः  
 शौचपरैः सततब्रह्मचारीभिः ॥ भवितव्यंभवद्भिर्ब्रह्मोद्वतनेश्राद्धकर्मणीत्यादिनियमाञ्छवेयेत् ॥ भवितव्यमितिप्रतिवचनम्  
 एवमस्मिन्पक्षे दशाऽष्टौवा ब्रह्मणभवति अत्राऽशतौ द्वे उभयत्रैकं पित्रादित्रिके एकं मातामहादित्रिकेचैकं निमंत्रयेत् ॥ अत्रपक्षे च

त्वारः ॥ एकौ देवते त्रेण पित्रादावैकौ मातामहादेवौ चैक इति त्रयोवा ॥ यद्वा षण्णामेकः देवैक इति द्वौवानि स त्रयेत् ॥ अथ पादप्रक्षाल  
 नादिप्रयोगः ॥ यज्ञोपवीती उदङ्मुखः ॥ अ० पुरुरवार्षद्विसंज्ञका विश्वेदेवा इदमर्घ्यं स्वाहानमः ॥ इति पादमुपनीय वारंवारमभिनम्य  
 विनीतः स्वयमेव ते चक्रमेण पादौ प्रक्षालयेत् ॥ ततोऽपसव्येन अ० अद्यामुकगोत्रं पितमुकशर्मन् वसुरूप इदं ते पादं स्वधानम इत्युच्चार्य  
 विनीतः सन्तुनः पुनरभिनम्य पितृब्राह्मणपादौ प्रक्षालयेत् ॥ एवं पितामहादिब्राह्मणपादावपि प्रक्षालयेत् ॥ ततः सव्येनाऽव्यपान्त्रं गृहीत्वा  
 अ० पुरुरवार्षद्विसंज्ञका विश्वेदेवा इदमर्घ्यं स्वाहानमः ॥ इत्युभयत्र ब्राह्मणहस्तयोर्वपुष्पगंधोदकमुत्तमर्घ्यं दद्यात् ॥ ततोऽपसव्येन  
 अ० अद्यामुकगोत्रं पितरमुकशर्मन् वसुरूप इदमर्घ्यं स्वाहानमः ॥ इत्युच्चार्य ब्राह्मणहस्तयोरर्घ्यं दद्यात् ॥ एवमेव पितामहादिपंचभ्यः ॥  
 ततः अ० पुरुरवार्षद्विसंज्ञका विश्वेदेवा इदमाचनीयं वः स्वाहानमः ॥ इत्याचमनार्थं जलं ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् ॥ ततोऽपसव्येन अ० अद्यामुकगो  
 त्रं पितरमुकशर्मन् वसुरूप इदमाचनीयं स्वाधानम इति पितृब्राह्मणायऽऽचमनार्थं जलं दत्वा पितामहादिपंचभ्योऽपि दद्यात् ॥ ततः सव्ये  
 न सव्यमयाचमेत् ॥ ततो ब्राह्मणैः सह श्राद्धभूमिमागत्य ॥ अन्नाभिप्रायेण सिद्धमित्युक्ता ब्राह्मणान् गृहीत्वा पूर्वकलिपान्यासनानि उप  
 स्पृश्य अत्रासध्वमिति देवान् श्राद्धमुखान् पितनुद्मुखान् पुशयेत् ॥ ततस्तेषां पादयोरधस्तादक्षिणप्रक्षुभ्रयप्रत्येकं दत्वा प्रत्यासन  
 समीपे तिलतैलेन श्राद्धऽपर्वगंध्यायिनीं दीपान् दद्यात् ॥ तेषां श्राद्धिर्जैवकाय्याः ॥ काककुट्टादीन् श्राद्धपहनं पसारयेत् ॥ श्राद्धेशावरणं च  
 कुर्यात् ॥ अथ श्राद्धयोगप्राक्कालीनश्राद्धदिनकृत्यम् ॥ तत्र कर्त्ता ब्राह्मणानां पुरतः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य पावित्रधारं कृत्वा सव्येनाऽऽ  
 चम्य कर्मपात्रद्वयं जलेनापयत् तत्र गंधपुष्पयवतिलकुशाग्निक्षिप्य अ० कर्मपात्रं संपन्नाभिं तिलीकुर्यात् ॥ सुसंपन्नाभिस्तनुज्ञातः ॥ अ० अपवित्रः पवित्रो वा स

वरिस्थार्गतेपिवा ॥ यः स्मरेण्डुरीकाक्षं सबाह्वाभ्यन्तःशुचिः ॥ अण्डुरीकाक्षः पुनान्वितिपठित्वाकुरात्रयेण श्राद्धदेयद्रव्याणिस्वा-  
 त्मानचरिषेत् ॥ ततः अण्वणव्यैनमः ॥ अक्षाक्षय्यैनमः ॥ अक्षय्यैनमः इति नवाश्राद्धदेशंगयात्मकत्वेन तदेकदे-  
 शस्थंगदाधरं च ध्यात्वा तयोः अणवत्ययै गयै नमः ॥ अणवत्ययै गयै नमः ॥ इति मनोवाक्कायै नमः स्मरं कुर्यात् ॥ ततः कुरात्र  
 यतिलजलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य अवाभुक्तगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाम् अबुक्तमुक्तशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रा-  
 दित्यस्वरूपणां तथाऽस्मन्मातामहवृद्धप्रमातामहानाममुक्तमुक्तशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपणां सर्वे  
 पार्वणश्राद्धं पितृवृत्तिकामोहकारिण्ये इति संकल्प्य अं कुरुष्व इति ब्रह्मणानुज्ञातः संप्रणव्याहृतिकांगयत्रां त्रिजपिवा ॥ अथैव  
 ताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यश्च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नम इति त्रिजपेत् ॥ ततः सव्याणसव्याभ्यां दैवपे-  
 तुक्तप्रदेशयोः यवावतिलगौ रसर्षपांश्च विचिरेत् ॥ ( तत्र मंत्रः ) अन्नमो नमस्तोगोर्विदं पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धदृष्टीं केश रक्ष  
 तां सर्वतोदिशः ॥ ततः अं तिलारक्षतु असुरदर्भारक्षतुराक्षमात् ॥ वह्निर्वैश्रात्रयश्च इति थिः सर्व्वक्षक इति मंत्रेण तिलकुशान  
 द्वारदेशक्षित्वा अं अग्निव्रजाताः पितृगणाः प्रार्च्यारक्षतु मेदिशम् ॥ तथा बर्हिषदपांतु याम्यायेपितरः स्थिताः ॥ प्रतीची  
 माज्यपास्तद्बुद्धुदीचीमपिमोमपाः ॥ अघोर्ध्वमपिकोणेषु विकोणेषु च सर्वशः ॥ रक्षोभूतपिशाचेष्वस्त्यैवास्मुरदोषतः ॥ सर्वतश्चाधि-  
 पस्तेषां यमो रक्षारक्षतु मे ॥ वायुभूतपितृणां च तृतिर्भवतु राश्वती ॥ इत्येतेनाऽवस्ताद्धूर्ध्वकोणेषु च सर्व्वत्रतिलान्गौरसर्षपांश्च विकी-  
 र्यदक्षिणेवामेवार्काटिभां यथाचारं नीविषं कुर्यात् ॥ ततः सव्येन कार्त्तिकेन श्रित्यात्रेजलं गृह्णात्वा दुर्भारोदय ॥ अथैव देवदेवं देवं देवसंश्रु-



मावयम् ॥ अग्निमातस्मादेनसोविश्वन्मुञ्चत्वर्हसः ॥३॥ यदिदिवायदिनक्तमेनोऽसिचकृमावयम् ॥ वायुमातस्मादेनसोविश्वन्मुञ्चत्वर्हसः ॥२॥ यदिजाग्रदस्वप्नोऽसिचकृमावयम् ॥ सूर्यमातस्मादेनसोविश्वन्मुञ्चत्वर्हसः ॥३॥ इतिकूष्माण्डमुक्तेनाऽभिर्मन्त्र्य ॥  
 अ० उदक्यादिदुष्टदृष्टिपातात् शुद्धादिर्मन्त्रकदोषाच्चपाकादीनापवित्रताऽत्प्रेक्षकालाप्रकृपात्रद्रव्योपहारश्रद्धासंपदस्तु इति पाकादीन  
 संश्लेषहरेयनिवेदयेत् ॥ अथासनादिदानम् ॥ तत्रावत् ॥ उदङ्मुखः सजघनदक्षिणं जान्वाच्ययज्ञोपवीत्यंतर्जुनकरोजलयवसमन्वितम्  
 कुशत्रयमुज्ज्वेवादाय ॥ अ० अद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्रद्धासंबन्धिनः पुहूरुवाद्रवसंज्ञकाः विश्वेदेवा इदमासनं वोनम इत्युच्चार्य द्विजहस्ते  
 जलमासिच्य कंबलाद्यासनदक्षिणभागस्योपरि देवतीर्थेन पूर्वोक्तशत्रयंप्रक्षिपेत् ॥ एवमातामहादिदेवभ्योपिदद्यात् ॥ ततोदक्षिणामुखः  
 प्राचीनवीती पातितवामजानुर्द्विगुणभुभ्रुकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अ० अद्यासुकुशत्रयपातितसुकशमेन् सपत्नीकवसुरूप इदं  
 मासनं स्वेवा इत्युच्चार्यविप्रहस्तेजलं दत्त्वा कंबलाद्यासनवामभागस्योपरि पितृतीर्थेन माटकं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेवपिता  
 महादिपंचभ्योपिदमासनानिदद्यात् ॥ ततः सव्यादिना अ० पुहूरुवाद्रवसंज्ञकान् विश्वानदेवानहमावाहयिष्ये ॥ इति देवब्राह्मणानुपृष्ट्वा  
 अ० आवाहयेत्यनुज्ञातः सयवकरो देवब्राह्मणाङ्गुष्ठौ गृहीत्वा ॥ अ० विश्वेदेवासऽअगतशृणुतामऽमर्हवम् ॥ एतुबहिर्द्विषिदताइत्यनेनवाह्य  
 अ० यवोसियवयास्मद्वेषयथारातीः इत्यनेनयवान्विकीर्य ॥ अ० विश्वेदेवाः शृणुतेमर्हवमेयेऽअन्तरिक्षेयऽउपवाविष्ट ॥ येऽअग्निजिह्वाऽउ  
 त्वायजत्राऽआसद्यास्मिन्बहिर्धमादयद्धम् ॥ इतिजपेत् ॥ विश्वेदेवात्यंतिनाम्नाज्ञाने ॥ अ० आगच्छंतुमहाभागा विश्वेदेवामहाबलाः ॥ येय

? दशमप्राप्तौ दुहितरिविधायां यमांश्चिदेवाः समुत्पन्ना इति विश्वेदेविकीमुत्पत्तिमुत्तरम् ॥



त्रयो जिवाः श्रद्धेः सवधाना भवन्तुते ॥ इति लोकोऽपुञ्चारणीयः ॥ ततोऽपसव्यादिना ॥ अ० पितृनहमावाहयिष्ये अ० मातामहानावाहयिष्ये  
 इति पृष्ट्वा अ० आवाहयेत्यनुज्ञातः ॥ सतिलकरो ब्राह्मण इत्युक्तं भ्रमेण गृहीत्वा अ० उशंतेस्मानि धीमन् भुशन्तः ६ सभिधीमहि ॥ उशन्नेशतऽप्य  
 वहपितृनहविषेऽन्तर्धे इत्यावाह्य ॥ अ० अपहताऽअसुरारक्षोऽसिज्वेदिपदः ॥ इति तिलाग्रश्रद्धदेशो विधीयते अ० आयन्तु नः पितॄन्तो  
 भ्यामोऽग्निष्वात्ता नः पृथिवीर्भूयानो अस्मिन् यज्ञे स्वध्यामदन्तो विह्वलुतेऽन्वस्मान् ॥ इति जपेत् ॥ ततः सव्याऽपसव्याभ्यां अर्धपात्रेष्वष्ट  
 मुपवित्रमैकैकमुपरिधृत्वा ॥ अ० शन्नो देवीराभिधृथ्यऽआपो भवतु पीतये ॥ शयोरभिध्वनन्तु नः ॥ इति प्रत्येकं जलं प्रक्षिप्य ॥ देवपात्रेषु अ० य  
 वऽसि युव्यास्मद्वेषो युवयारतीः ॥ इति यवान्विकीर्य ॥ पित्रादि पात्रपदके अ० तिलोऽसि स मे देवयो गोसवो देविर्निमितः ॥ प्रत्नमग्निः  
 प्रक्तः स्वध्यापितृलोकान् प्रीणाद्भिः स्वधानमः ॥ इति तिलाग्रक्षिपेत् ॥ ततोऽष्टमुपात्रेषु तूष्णीमेव गंधपुष्पतुलसीदलानि निक्षिपेत् ॥  
 ततः सुगन्धेनैवैव पात्रपंक्तिरस्तु इति कृतांजलिं देवब्राह्मणान् पृच्छेत् अ० अस्तु देवार्धपात्रपंक्तिरित्यनुज्ञातः पात्रं वामहस्ते कृत्वा  
 तत्र स्पृणवित्रेऽविविप्रदक्षिण करेऽन्वाकिंचिदुदकं च दत्त्वा ॥ अ० योऽद्विष्या आपः पयसा संभूयुऽअन्तरिक्षा उत्तपार्थिवीर्यः ॥ हिरण्यवर्णा  
 यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः सठस्योनाः सुहवा भवतु ॥ इति मंत्रं पठित्वा ॥ कुशत्रययवजलान्यादाय अ० अद्यास्मात् पित्रादि त्रयसं बधि  
 नः पुष्कराद्भूतसंज्ञका विश्वे देवा एषो हस्ताऽवः स्वाहानमः ॥ इति दक्षिणहस्तेन देवतांश्चन पवित्रापरि अर्धदत्त्वा पवित्रसहितमर्धपात्रं  
 पुरतः स्थापयेत् ॥ एवमेव मातामहादि देवभ्यो यवदद्यात् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितृपात्रपंक्तिरित्यनुज्ञातः कृतांजलिः पितृब्राह्मणान् पृच्छे

त् ॥ अस्तुपैत्र्यार्घ्यपात्रसंपत्तिरितिप्रतिवचनानन्तरंपात्रं गृहीत्वाविप्रदक्षिणकरेपवित्रं दद्यात् ॥ अय्यादिव्याऽआपइतिपठित्वा द्विगुणमु  
 प्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अंअद्यामुकगोत्र अस्मत्पितृमुकशर्मनसपत्नीक वसुहृषणतेहस्तार्घ्यःस्वधाइतिदक्षिणहस्तपितृती  
 र्थेन यथाजल्पततितथा ब्राह्मणहस्तस्थयवित्रोपरि अर्घदद्यात् ॥ साऽऽशेषमर्घपात्रंचपुरतः स्थापयेत् ॥ एवमेवपितामहादिपंचभ्यो  
 पिदद्यात् ॥ ततः स्वयंकृत्वा अंविश्वेभ्योदेवेभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वापवित्रजलयुतंदेवार्घपात्रद्वयं ब्राह्मणदक्षिणपार्श्वेऽसंचरदेशेऽतानमे  
 वस्थापयेत् ॥ ततोऽप्रसव्यादिनापितामहप्रपितामहार्घपात्रस्थानजलतिलगंधपुष्पादीनिपितृपात्रकृत्वाएवमेव प्रमातामहादिपात्रस्थ  
 जलादीनि मातामहपात्रेकुर्यात् ॥ ततः स्वयंकृत्वा प्राड्मुखः पुत्रकामः पितृपात्रस्थजलेन मुखमार्जनम् ॥ आयुष्कामो दक्षिणपाणिनाने  
 त्रांजनंचकुर्यात् ॥ अथवा यजमानः स्वयमन्योवा अं आपःशिवाः शिवतमाःशांताः शांतमास्ते कृण्वंतुमेषजम् ॥ १ ॥ इत्यनेनाभिषि  
 चेत् ॥ ततोऽप्रसव्यंकृत्वा अं पितृभ्यः स्थानमसीति प्रथमंपितृयात्रं पितृब्राह्मणवामप्रदेशभूमावधोमुखं स्थापयेत् तदुपरि पितामह  
 पात्रं तदुपरिप्रपितामहपात्रंचदद्यात् ॥ एवम् अं मातामेभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वामातामहपात्रंन्युज्यंकृत्य प्रमातामहवृद्धप्रमातामहपात्रा  
 भ्यामाच्छादयेत् ॥ एतानिचषट्कपात्राणि दक्षिणादानपर्यंतंनोद्धरेचालयेत् ॥ अथांगार्घ्यादिदानम् ॥ सव्यादिंकृत्वा विप्रकेषुजलमा  
 सिच्य गंधपुष्पघृषूपदपवन्नादिप्रात्येकंधृत्वा ॥ कुशत्रययवजलान्यादाय अं अद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनःपुह्रवाद्रसंज्ञका विश्वे  
 देवा एतानिगंधपुष्पघृषूपदपितृबूलवासींसिवेनम इत्युच्चाय्ययथाविभवदद्यात् ॥ एवमेवमातामहादिदेवेभ्योपिसंकरयदद्यात् ॥ ततः अयं  
 वांगंध इत्याभिधाय ब्राह्मणहस्तेषु प्रात्येकमर्पयेत् ॥ अंसुगंध इतितैरुक्ते ॥ अंइमानिवःपुष्पाणि इतिपुष्पाणिनिवेदयेत् ॥ अंसुपुष्पाणीति

तैरुक्ते ॥ अ०अयंवोधूपः ॥ अ०सुधूपः ॥ अ०अयंवेदीपः ॥ अ०सुदीपः ॥ अ०एतानिवोवासांसि ॥ अ०सुवासांसि इति तैरुक्ते ॥ इत्यादिक्रमेण प्रत्येकं ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपादयेत् ॥ तैश्चपुष्पशिरसातिरिक्तदेशेनाधार्यम् ॥ अत्रावसरे अन्यदपि तांबूलयज्ञोपवीताभरणकमंडलुप्रभृतानि फलार्थितयादद्यात् ॥ ततः कृतोजलिः कर्त्ता विश्वेषां देवान् मर्चनं संपूर्णमस्त्विति द्विजान्प्रीतिद्विजाः ॥ ततोऽपसव्यादिनापितृद्विजकेषु जलमासिच्य गंधपुष्पादि प्रत्येकं सन्निधाय ॥ द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय अ०अद्यासुकं गोज्ञे अस्मत्पितरमुकरार्शनं सपत्नीकं वसुरूप एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासांसितुभ्यस्वधा इति पित्रंगंधाद्युत्तुज्य एव मेव पितामहादिपंचभ्योपिदद्यात् ॥ ततः अ०एषवेगंध इति ब्राह्मणहस्तेषु गंधनिवेदयेत् ॥ अ०सुगंध इति तैरुक्ते ॥ अ०एतानिवःपुष्पाणि ॥ अ०सुपुष्पाणि ॥ अ०एषवेधूपः ॥ अ०सुधूपः ॥ अ०सुदीपः ॥ अ०इमे यज्ञोपवीते ॥ अ०सुयज्ञोपवीते ॥ अ०एतानिवोवासांसि ॥ अ०सुवासांसि इति तैरुक्ते ॥ इत्यादिक्रमेण पित्रादिषट्कब्राह्मणेभ्यः प्रत्येकं गंधादिप्रतिपाद्यकृतांजलिभूत्वा अ०पितृणामर्चनं संपूर्णमस्त्विति द्विजान्प्रीतिब्रूयात् अ०अस्त्वर्चनं संपूर्णमिति विप्राः वेद्युः ॥ एवंगंधावर्चनं विधाय सव्याऽपसव्याभ्यां भोजनपात्रस्थापनदेशंसमाज्यं ॥ नीवारचूर्णेन गौरमृत्तकयावाप्रणिताग्निभस्मनावारणावा ब्राह्मणादिषु चतुस्त्रिकोणवर्तुलमंडलानि विप्रान्वेष्टयित्वा कुर्यात् ॥ ततो भोजनपात्राणि द्विचहस्तप्रक्षालनार्थं प्रत्येकं जलं दद्यात् ॥ अथाग्नीकरणम् ॥ ( तत्र साग्निनाऽग्निनिग्निना स्वाहादिदैविकयमयुक्तेन यज्ञोपवीतिना देवविप्रकरे ॥ अथ वा स्वधादिषु पितृकथमयुक्तेन प्राचीनापि पितृविप्रकोरोमः कार्यः ॥ तत्र यजुर्वेदं तानुनियमेन एव प्राचीनविति नास्वाहाकारोणे होमः ) ॥ अथ यजंनक्षारवर्जितधृताकमुष्णं श्राद्धान्नाग्रभागं कांस्यपात्रे समुद्रृत्य पातित्वामजानुदक्षिण

मुखः ॥ अथौकरणकारये इति पितृब्राह्मणपृष्ठा अ० कुरुष्व इत्यनुज्ञातोभयक्रोधस्वरारहितः स्वदक्षिणकरणेन पितृविप्रकरे ॥ अ० अग्रयेकव्य  
 वार्हनायस्वाहा इदमग्रयेकव्यवाहनाय ॥ अ० सोमाय पितृमते स्वाहा इदं सोमाय पितृमते इत्याहुतिद्वयं जुह्यात् ॥ ततोऽथौकरणाथोद्धृत  
 हुतशेषमन्त्रां पितामहादिपंचमुपात्रेषु दुदत्वापि षड्वाचशेषयेत् ॥ ततः सव्येन देवपात्रेषु ॥ अपसव्येन पितृपात्रेषु च उष्णमन्त्रं सप्ततम् अनेक  
 व्यञ्जनयुतं थावत् परिष्वस्य शीतलजलसहितं पात्रं च संस्थाप्या च्छ्रमधुनऽभिघाय्य अ० मधुव्याताऽक्रतायेत मधुक्षरन्ति सिधवः ॥ माद्वी  
 न्नैस्सन्त्वोषधीः ॥ १॥ अ० मधुन तं हुतोषसो मधुमन्यार्थिर्वठरजः ॥ मधुद्वारस्तु नः ॥ २॥ अ० मधुमात्रो ब्रह्मन्स्यति मधुमांऽस्तु मूर्त्यः ॥ मा  
 क्ष्मीरिगोविभवंतु नः ॥ ३॥ अ० मधुमधुमा ध्विन्याभिभवयेत् ॥ ततः सव्येन उत्तानपाणिभ्यां पित्रा देवपात्रमालभ्य ॥ अ० पृथिवीते पात्रद्वारपिधानं  
 ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा इति जप्त्वा ॥ अ० इदं विष्णुर्विचक्रमन्त्रे घोषानि दधेय दम् ॥ समृद्धमस्य पा० १० सुरस्वाहा इत्येतं विष्णवी  
 मृचमुच्चार्य्याऽधोमुखेन स्वदक्षिणकरण अधोमुखमेवाद्विजाडुष्टमनखं गृहीत्वा ॥ अ० विष्णोर्द्व्यष्टरक्ष इति यजुषाऽन्नेन विश्व ॥ इदमन्त्रं  
 इमा आपः इदमाज्यम् इदं हविर्युक्ता अ० अपहताऽअमुराक्ष १० सिर्वेदिषदः इति यवान् अन्नपात्रपरितो विकीर्य वामेन करेण पात्रं स्थान  
 दक्षिणकरणेन कुशत्रयवज्रालयादाय अ० अद्यास्मान्पित्रादित्रयश्चाद्रसंघिनः पुरुषावाद्रवसंज्ञका विश्वदेवाः इदमन्त्रं हव्यं सोपस्करं परि  
 विष्टं परिरक्ष्यमाणं च ब्राह्मणत्वापि त्यक्तम् अमृतं रूपं वः स्वाहानमः इत्युदकं देवतीर्थेन विप्रदक्षिणभागे भूमौ निक्षिपेत् एवमेव मातामहादिदं  
 केभ्योऽप्युत्तुजेत् ॥ ततोऽप्यसव्यादिना पितृपात्रं न्युब्जपाणिभ्यां व्यस्ताभ्यां स्पृष्ट्वा अ० पृथिवीते पात्रद्वारपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहो

मिस्वधा इतिपठित्वा ॐ इदम्विष्णुर्विचक्रमेत्राधेनानिदधेपदम् समूढमस्यापांशुरे इत्येतामृचं वजसा ब्राह्मणादुष्टमनसमथोमुखं ॐ विष्णोः  
 कथ्यं रक्ष इति यजुषाऽन्नेनिवेश्य ॥ इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् इदं हवि रित्युक्त्वा ॥ ॐ अर्पहताऽऽसुरारक्ष १७ सिधेदिषद इति तिलान्  
 अन्नपात्रपरितोऽप्रदक्षिणेन विचार्य ॥ वामकरेण पात्रं स्पृशन् ॥ ॐ अद्यामुक्तोऽन्न अस्मत् पितृमुक्तशर्मन् सपत्नीक यसरूप इदमन्नं कथ्यं सोप  
 स्करं परि विष्ट परित्येयमाणं ब्राह्मणान्तिपथ्यतममृतरूपंतुभ्यं स्वधा इत्युदकं पितृतीर्थेन विप्रवामभागे भूमौ क्षिपेत् ॥ एवमेव पिता महादिपं च  
 भ्योऽप्युत्सृजेत् ॥ ततः ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्देवेत ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य ॥ जुषध्वमिच्छातः ॥ इति चोक्त्वा ॥ भवतः प्राश  
 यन्तु इति ब्राह्मणेभ्यः सकृत्सकृदपोशानं दद्यात् ॥ ते च वाग्यमादिनियमवतः ॐ कारपूषं सुजीरन् ॥ श्राद्धकर्त्ता तु तेष्वश्रासु व्याहृतियपूर्वासप्र  
 णवांगायत्राभिः सकृद्वाजपेत् ॥ तथापि विप्रपाणिर्द्विभंष्यासीनः ॐ मधुवाताऽऽक्रतायेते मधुशरन्ति संधवः श्माद्धेन्नोऽसन्त्वा षधी ॥ १ ॥ ॐ मधुनक्तं  
 मुतो षसो मधुमनपार्थिवऽं रजः मधुद्वारं स्तनः पिता ॥ २ ॥ ॐ मधुमात्रोऽवनस्पतिर्मधुमा २ ॥ ॐ अस्तु मृग्यं माध्वी गोवो भवन्तु ॥ ३ ॥ इति  
 त्र्यचम् ॐ मधुमधुमाध्विचितजपेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा दाक्षिण्यमुखः ॥ ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नपृथग्यग्राहिराजो वासोऽइमेन ॥ तृष्ठीमनु  
 ष्यसि त्तिन्द्रानोऽस्तासि विवध्यक्षमस्तीपिष्ठैः ॥ १ ॥ ॐ तव प्रभ्रमसंऽयाज्यातं न्यूनं स्पृशधृषताशोऽचानः ॥ तपूऽप्यग्ने जुहोतुऽज्ञान  
 सन्दिनोऽग्निमृजव्यष्षण्डगुल्काः ॥ २ ॥ ग्रतिस्पृशोऽग्निमृजवृणितमो भवपायुर्विशोऽस्याऽऽदग्धः ॥ योनौ दुऽअघशोऽस्योऽन्य

ग्रेमाकिष्ट्व्यथिराधर्षात् ॥ ३ ॥ उदयेतिष्ठप्रत्यातनुष्वन्यमित्रा २ऽअषताचिगमहेतोः। येनोऽअरतिठः। समिधानचक्रेनीचातंधक्यतसत्र  
 शुक्रया॥४॥ अद्धोर्भवप्रतिविद्धयाद्वयस्मदधिषट्कुणष्वद्वयान्यग्रे॥ अर्वास्थिरातनुहियातुजनाआमिमजामिममृणीहिराज्ञा॥५॥ अग्रे  
 द्युतेजसासादयामिदितिक्षाघ्नीः पञ्चक्रवः। गठित्वा भूमितिलैरास्तीर्यपित्रादिकरूपतया ब्राह्मणान्ध्यायेत् ॥ ततःॐ उदीरतामवऽउत्तरांसऽ  
 उन्मद्वयमाऽपितरः॥ सोम्यासः॥ असुरयऽइधुरवृकाऽकृतज्ञास्तेनोवन्तु। पितरहवेषु ॥ १ ॥ अङ्गिरसो नः पितरा न ववाऽअथवाज्याणां  
 भुगवः॥ सोम्यासः॥ तेषां विद्युतं सुमतेयं। ज्ञिर्यानामापि भद्रं सोमनसे स्याम ॥ २ ॥ येनः पूवंपितरः॥ सोम्यासो बृहिरः सोमपिथं। ब्वसिष्टु। लेभि  
 र्यमः॥ सऽः। राणेहवी७ष्व्युशन्नुशद्धिः॥ प्रतिकामभतु ॥ ३ ॥ त्वठः सोमप्रचिक्रितो मनीषा त्वठः राजिष्ठमनुनेपिन्याम् ॥ तवप्रणी  
 ती। पितरा नऽइन्दो देवैरुत्तनमभजन्त धीराः ॥ ४ ॥ त्वया हिनेऽपितरः सोमपूर्वै रुभाणि चक्रुः पत्रमान धीराः ॥ क्वन्वन्नवत। ह्यरिधी७ऽ  
 पेणु। वीरिभिरश्शर्मववा भवानः ॥ ५ ॥ त्वठः सामपितृभिः॥ सव्विदानोनु। बा। षुथिवाऽआततन्या। तस्मै तऽइन्दुहविषा। ब्विधेम। ब्वयठः स्या  
 मपतयोरथीणाम् ॥ ६ ॥ बर्हिषदः। पितरऽउत्त्या। ब्व। गिमावैहव्याचक्रुमाजुषद्धम् ॥ तऽआगतवांसा शन्ते। मनाथानः शंयोरः। पदेध्यात ॥ ७ ॥  
 आहमि। तून्सु। वित्रा २ऽअवि। त्सि। न। पतः। अवि। ब्व। क्रमणश्च। ब्वि। णोः॥ बर्हिषदोये। क्वथा। सुतस्यभजन्त। पितृत्वस्तऽइहागमिष्टाः ॥ ८ ॥ उपहूताः  
 पितरः॥ सोम्यासो बर्हिषपुनिधिषु। प्रियेषु ॥ तऽआगमन्तु। तऽइहश्श्रुवन्वधिब्रुवन्तु। तवन्वस्मान् ॥ ९ ॥ आयन्तु नः पितरः॥

सोम्यासौग्निष्वात्ताः पृथिभिर्देवानैः ॥ अग्निमन्यद्वास्वधयामदन्तो धिब्रुवन्तुतेवन्स्वमान् ॥ १० ॥ अग्निष्वात्ताः नपि  
 तस्य हराच्छतसदः सदः सदन्तमुप्राणीतयः ॥ अन्ताहवींषिप्रयतानिर्वाहण्यथारयिठः सव्वीरन्दधान ॥ ११ ॥ येऽअग्निष्वात्तायेऽ  
 अनाग्निष्वात्तामद्भ्योदिवस्वधयामादयन्तो तेभ्यः स्वरादनुनामितामैतांयथावशान्तन्वङ्कल्पयति ॥ १२ ॥ अग्निष्वात्तावृत्तुततोहामहे  
 नाराशठः सेसोमपीथयऽआनुः ॥ तेनोच्चिप्रासः सुहवाभवन्तुव्ययः स्यामपतयोरयाणाम् ॥ १३ ॥ इति पितृमन्त्रः ॥ ॐ  
 सहस्रशीर्षिपुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपादः ॥ सधामठस्यैतस्पृत्वात्यतिष्ठदराहुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽएवेदस्यैव्यद्वृतयच्चभाव्य  
 म् ॥ उतामृतत्वर्यशनोयद्वेनातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्यमहिमतोज्जयायाश्चपूरुषः ॥ पादोऽस्यन्विश्वभूतानि  
 त्रिपादस्यामृतदिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादुद्धुऽद्वैरुषः पादोऽस्येहामवपुनः ॥ ततोऽव्यङ्म्यक्रामत्सशनशनेऽभि ॥ ४ ॥ ततो  
 विराडाजयत्विराजोऽधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिभयोपुः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ॥  
 पृषदात्तैश्चैवायव्यानारण्या ग्राम्याश्चये ॥ ६ ॥ तास्मादयज्ञात्सर्वहुतऽऽक्रचः सामानि जज्ञोऽछदः ॥ ७ ॥ सिजज्ञिरे तस्माद्यज्ञात्सर्वमादजा  
 यत ॥ ७ ॥ तस्माद्व्यवाऽअजायन्तयेकेचो भयादतः ॥ गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥ ८ ॥ तंयज्ञांभुविप्राक्ष  
 न्युरुषजातमग्रतः ॥ तेनेदवाऽअयजन्तसाद्वयाऽऽक्रषयश्चये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं व्यदः ॥ कतिवाव्यैकल्पयन् ॥ सुवङ्किभस्यासोऽन्तिक

स्वाहूकिसूरुपादोऽउच्यते ॥ १० ॥ ब्राह्मणोऽस्यसुखमासीद्ब्रह्मरजःप्रयःकृतः ॥ चरुतदस्यद्वैश्यः पद्भ्यां शुश्रूक्षोऽअजायत ॥ ११ ॥  
 चंद्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ॥ १२ ॥ नाभ्यांऽआसीदन्तरिक्षोऽशीष्णोऽग्नीः समं  
 वर्तत ॥ पद्भ्यांमिर्दिशः श्रोत्रोत्तयालोकाऽअकरुण्यन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमतेन्वत ॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्य  
 दुग्ध्रीष्मदध्मः शरद्विः ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्नपरिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ॥ देवायज्ञन्तन्वनाऽअश्वनपुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥  
 यज्ञेनयज्ञमथजन्तदेवास्तानिधमभाणिप्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकमहिमानः सचन्तयत्र पूर्वसाद्व्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥ इतिपुरुष  
 सूक्तं ॥ ॐ आहुः शिशोऽनोव्युषभोनभीमोवनाघन ६ क्षोभेणश्वर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिषएकवीरः शतठसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः-  
 ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दनानिभिषेणजिष्णुनायुत्कारेण दुश्च्यवननेधुष्णना ॥ तदिन्द्रेणजयततसहध्वंयुधोनरऽरुषइस्तेनवृष्णा ॥ २ ॥ सऽ  
 इषुहस्तैः सनिषाङ्गिभिर्व्वसिप्तऽक्षष्टृसपुण्ड्रऽद्वौ गणेन ॥ सठसृष्टजिप्तसोमपाबहुशद्व्युग्रधन्वाप्रातिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ बृहस्पते  
 परिदीयारथेनक्षोहामित्राऽअपबाधमान ६ ॥ प्रमजन्सेनाहप्रमृणयुधाजयन्नस्माकमेद्व्यवितारथनाम् ॥ ४ ॥ वलविज्ञायस्थवा  
 ररुप्रवीरः सहस्वाव्वाजीसहमानऽउग्रः ॥ अभिर्वीरोऽअभिसन्वाहोजिज्ञैर्मिन्द्रः प्रथमानिष्ठगोवित् ॥ ५ ॥ गात्रभिर्दङ्गाविद्व  
 ज्वाहुज्येनतमज्जम्प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमठसंजातोऽनुवीर्यध्वामिन्द्रोऽसवायोऽअनुसठरभध्वम् ॥ ६ ॥ अभिगोत्राणिसहसागहमानाद



योगीरशतमधुरिन्द्रं ॥ दुश्चवनधृतनाषाड्युद्धयोस्माकठसेनऽअवतुप्रथुम् ॥ ७ ॥ इन्द्रऽआसात्रताबृहस्पतिर्दक्षिणयज्ञोपरऽ  
 तुसोमः ॥ देवसेनानामभिभजतीनास्यन्तीनाम्भरतोयन्वश्रम् ॥ ८ ॥ इन्द्रस्यवृणोर्वकृणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्भरताऽशङ्कऽअग्रम् ॥  
 महासेनासुबनच्यवानाड्याषादेवानाश्रयतामुदस्थात् ॥ उद्धर्ममघवन्नायुधादुस्तत्त्वानाम्भामकानाम्भानाऽसि ॥ उद्धव्रजिनां  
 व्याजिनान्युद्धर्यानाश्रयताञ्जनुघोषान् ॥ १० ॥ अस्माकमिन्द्रसमृतेषुद्धजेष्वरभाकंय्याऽडषवस्ताजयन्तु ॥ अस्माकंव्वीराऽउत्तरेभवनव  
 स्मा २ ऽउदेवाऽवताहैवेषु ॥ ११ ॥ असीषाश्चित्तप्रतिलोभयन्तीगृह्णाद्वाप्यपरहि ॥ अभिप्रेदिनिर्दहदुशोर्कैरन्धेनामित्रास्तमसास  
 चन्ताम् ॥ १२ ॥ अवसृष्टपरापनशरव्यव्रह्मसठिशिते ॥ गच्छामित्रान्नप्रपद्यस्वामीषाङ्कुञ्चनोच्छिषः ॥ १३ ॥ प्रताजयतानरऽइन्द्रैवऽशर्मय  
 च्छतु ॥ अग्रवन्सन्तुबाह्वेनाधृष्यायथासथ ॥ १४ ॥ असौय नमस्तदुपेषामभ्यतनऽअसस्पद्धमाना ॥ ताङ्गूहृततमसापञ्चतनयामी  
 ऽअभ्यऽअर्यश्रजानन् ॥ १५ ॥ यत्रावणासंपतन्तिकुमाराव्विशिवाड्यातत्रऽइन्द्रोबृहस्पतिरादिति ॥ शर्मयच्छतु विश्वाहाशर्म  
 यच्छतु ॥ १६ ॥ मर्षमाणित्वमभ्रणाच्छादयामिसोमस्तवारजामृतेननुवस्ताम् ॥ उरोर्वरी योव्वरुणस्तेकृणेतुजयन्तन्त्वहदुवामदन्तु ॥  
 ॥ १७ ॥ इत्यप्रतिरथम् ॥ अँससव्याधादशोषेषु मृगाःकालंरोगिरौ चक्रमाकाशऽद्वीपे हंसाःसरसिमानसे ॥ तेऽभिजताःकुक्षेत्रे ब्राह्म  
 णावेदागराः ॥ प्रस्थितादूरमध्वानं यूयनेभ्योऽवसीदित ॥ इतिहविस्तोत्रम् ॥ अँयोगीश्वर्याज्ञवल्क्यमित्याद्याज्ञवल्कीयगाथात्रापठि

त्वासताचित्तवादिंकपठेत् ॥ अथस्ताचित्तवम् ॥ मूर्तितानाममूर्तानां पितृणामितौजसम् ॥ नमस्यामिसदृतेषां ध्यायिनादिव्यचक्षु  
 षम् ॥ १ ॥ इन्द्रदीनजनेतारो दक्षमारीचयोस्तथा ॥ सप्तर्षिर्णतथाऽन्येषा तान्नमस्यामिकामदान् ॥ २ ॥ मन्वादीनजनेतृश्च सूर्याचंद्र  
 मसोस्तथा ॥ तान्नमस्याम्यंहसवान्निपतरश्चर्णवेषुच ॥ ३ ॥ नक्षत्राणां ग्रहाणांच वाय्वग्निनभसान्तथा ॥ द्वावाष्टथिव्योश्च तथा नमस्या  
 मिद्धतांजलिः ॥ ४ ॥ दिवर्षीणां जनेतृश्च सर्वदेवनमस्कृतान् ॥ अभयस्य सदादतृन्नमस्येहं कृतांजलिः ॥ ५ ॥ राजापतेः कथपस्य सोमायवर  
 णायच ॥ योगेश्वरेश्च तथा नमस्यामिद्धतांजलिः ॥ ६ ॥ नमो गणेश्यः सतभ्यस्तथालोकैषु सप्ततु ॥ स्वयमुवेनमस्यामि ब्रह्मणो योगचक्षु  
 षे ॥ ७ ॥ यदाधाराः पितृगणा योगसूदिधराहिते ॥ नमस्यामिततः सोमं पितरं जगतामहम् ॥ ८ ॥ अग्निरूपास्तथैवान्यान्नमस्यामि पितृन  
 हम् ॥ अग्नीषोममयविश्वं यत्पतदशतः ॥ ९ ॥ येतुतेजोमयाश्चैते सोममूर्याग्निमूर्तयः ॥ जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः ॥ १० ॥  
 तेभ्योऽखिलेभ्यो गिभ्यः पितृभ्यो यत्प्राप्तमसः ॥ नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदतु स्वधाभुजः ॥ ११ ॥ इत्यादीनि पवित्राणि अन्यान्यपि रुचिस्तव  
 ब्राह्मादिस्तोत्राणि च यथारूपेण च यथाशक्ति ब्राह्मणान् श्रावयेत् ॥ वेषु ग्रीणां प्रभृतिभिर्ब्राह्मणान् हर्षयन्माधुर्यादीन् व्यंजनगुणानुकीर्तयन्त्ययत्रे  
 न्छापलभ्यते तस्य तदुपनयन् मंदमंदं भोजयेत् ॥ अथ तृताञ्जान्वा अपसव्येन लच्छिष्टसन्निधौ विप्राणां प्रतामूभिर्प्राश्न्य तद्रक्षिणां प्रकुश  
 त्रयभास्तीर्य सर्वप्रकारमंशसव्यजनसुहृत्स्यसितलभेकीकृत्य ॥ ॐ अग्निर्वाधाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुलेभम ॥ भूमादत्तेन तृप्यन्तु तृतायां  
 तृपरांगतिम् ॥ १ ॥ इति मंत्रगुरुशोपास्तद्वन्विकरेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा आचम्य हारं स्मृत्वा ततोऽपसव्येन विप्रेभ्यः प्रत्येकं  
 पितृब्राह्मणपूर्वकं सकृत्सुकृदुपाहवागायत्रीम् ॐ भुव्वाताऽक्रताय ते हितिन्युचं मधुपुष्पध्वनिचजत्वा ॥ ॐ तृताः स्थ इति पृष्ट्वा

१ जनयितार इत्यर्थः ।

अ० वृताः स्मः इति तैत्तिरीयशेषमन्त्रां क्रियतामिति पृष्ट्वा ॥ इष्टैः सह भुज्यतामित्युक्ते ॥ पिंडानं हं करिष्ये इति पृच्छेत् ॥ अ० कुलवे  
 त्यनुज्ञातः ॥ पित्रादिब्रह्मणोच्छिष्टमन्त्रिणौ चतुरस्रदक्षिणपुर्वं रमणीयं हस्तेन मानं चतुर्द्वलौच्छितं पित्रादित्रयपिंडपातनार्थं स्थानं  
 निर्माय ॥ तथा मातामहादिब्रह्मणोच्छिष्टमन्त्रिणौ मातामहादिपिंडपातनार्थं तादृशमेव स्थानं कुर्यात् ॥ ततः उभयत्र मध्यदेशे  
 दर्भपिंडुलीमूलेन ॥ अ० अर्धहताऽअधुराक्षौ संविदेषदः ॥ इति मंत्रेण सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन दक्षिणागारे वा सद्गुहिल्लित्यदर्भापज्ज  
 लीमुत्तरस्यादिशिनिक्षिप्य ॥ अ० ये हूपाणि प्राप्तिमुश्मन्नाऽअभुगः सन्तः स्वधया चरति ॥ पुरापुरौ निपुणौ ये भरन्त्युग्रिष्ठल्लोका  
 त्रयणदात्यस्मात् ॥ इति मंत्रेण ज्वलदुलमुकं ग्रयं केशोपरित्रामयित्वा दक्षिणतो निदध्यात् ॥ ततः उपमूलसङ्क्रदाच्छिन्नद  
 क्षिणाग्रकुशत्रयं रेवोपरि ग्रयं केशीत्वा सव्येन देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽप सव्यं कृत्वा पुटकषट्के जलतिलगंधपुष्पाणि कृ  
 त्वा एकंपात्रं वा महस्ते कृत्वा ॥ द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलन्यादाय ॥ अ० अद्यामुकगोत्रास्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीकव  
 सुरुपात्रवने निश्चेतस्वधा इति कुशमूले पित्रपितृतीर्थेन अवेजने किंचिदवशिष्यदध्यात् ॥ एवं पितामहाय कुशत्रयमध्ये प्रपितामहाय  
 कुशाग्रे अवेजनं दध्यात् ॥ एवमेव मातामहादिभ्योपि दध्यात् ॥ ततः सर्वस्याच्छादशेषान्नादुर्णां किंचित्किंचिदन्नमुद्रुत्य मध्याज्यतिलसर्व  
 व्यंजनहृतशेषान्नयुतं जतादिपात्रे कृत्वा बिल्वोपमानषट्पिंडाग्निर्माय मधुघृताभ्यामाभिघार्य पित्रादिभ्यो दध्यात् ॥ तत्र प्रथमं पिंडं कुशादीनि चा  
 दाय अ० अद्यामुकगोत्रास्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीक वसुरुप एततोऽपिंडस्वधा इति प्रथमावेजनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन

पितृतीर्थेन दद्यात् ॥ एवमेव पितामहादिभ्यः पंचभ्यः प्रत्येकं तत्तद्वने जनस्थानोर्पिंडं दद्यात् ॥ ततः प्रपितामहादूर्ध्वत्रयाणालेपमुज्ज्वलितु  
 दिश्य पित्रादिकर्पिंडाद्याः कुशमूले अलेपभागभुजः पितस्तृप्यंतु इति पठित्वा दक्षिणहस्तप्रोच्छ्रजजलेन हस्तौ प्रक्षालयेत् ॥ ततः सव्यं कृ  
 त्वा त्रिराचम्य हस्तिस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्येन अत्र पितरो मादयध्वं तथा भुगमावृषायध्वम् ॥ इति पिद्मदृश्येन पठित्वा वामावर्त्तेनोदंडमुखी  
 भूयः प्रीतमनाः ॥ मनाक् श्वासं नियम्य तेनैव यथापरावृत्त्य अर्धमादत्तपितरौ यथाभागमावृषायित इति जपेत् ॥ एवमेव मातामहपक्षे ॥  
 ततः पूर्वदत्तावने जनजलेन अर्धमासुक्रगोत्रं अस्मात्पितरमुक्रशमर्द्धं सपत्नीकं वसुरुह्य अत्र प्रत्यवने निश्चतस्वधा इति प्रथमपिंडोपरि प्रत्यवने  
 जनं दत्त्वा एवमेव पितामहादिपंचपिंडोपरि तत्तद्वने जनपात्रेण प्रत्येकं प्रत्यवने जनं दद्यात् ॥ ततो नीर्वीक्षितस्य सव्येन आचम्य ॥ अप  
 सव्यं कृत्वा अनमोवः पितरो रसाय नमावः पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोः वः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो वोराय नमोवः  
 पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमोवो गृहात्रः पितरो दत्तसत्तोवः पितरो देष्म इति कृताञ्जलिः पठेत् ॥ ततः अष्टतद्वः पितरो वास  
 इति पठित्वा षट्सु पिंडेषु सूत्राणि प्रतिपिंडमूर्णदशावा पंचशदूर्ध्ववयस्क्यजमानहृदयलोमानिवा दत्त्वा ॥ ततः कुशतिलजलान्यादय  
 अर्धमासुक्रगोत्रं अस्मात्पितरमुक्रशमर्द्धं सपत्नीकं वसुरुह्य एतत्तेवासः स्वधा इति मंत्रमुत्तरेज्जेत् ॥ एवमेव पितामहादिपंचभ्यः पिंडेषु  
 सूत्राणि दत्त्वा तत्तन्नाम्नोत्तरेज्जेत् ॥ ततः पित्रा नुदिश्यतदीयपिंडेषु तूष्णीं गंधपुष्पपद्मपद्मपद्मबुलदक्षिणादीनि दद्यात् ॥ पिंडशेषान् च पिंडस  
 मीपो विक्रेत् ॥ ततः पितृब्राह्मणानां च मय्य देवद्विजानां च मयेत् ॥ ततः सर्वेषां ब्राह्मणानां दक्षिणकरे अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमभ्युप्रातिष्ठत

मां ब्राह्मणस्य करेन्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु मे इति सङ्कृतसङ्कलदद्यात् ॥ अलक्ष्मीर्विसतिपुष्करे ॥ लक्ष्मीर्विसतिगोष्ठे  
 सोमनस्यसदास्तु मे इति पुष्पाणि ॥ अक्षतं चास्तु मे पुण्यं शान्तिः पुष्टिर्दृतिश्च मे ॥ यद्यच्छेयस्करं लोके तत्तदस्तु मे दामम इति वाश्वद  
 द्यात् ॥ ततः अद्यामुक्ताग्रेत्यास्मान्पितृमुकशर्मणः सपत्नीकस्य वसुरुपस्य दत्तैतदप्राणादिकमभ्यमस्तु इति सतिलप्रक्षय्यो  
 दकं पितृविप्रकरदद्यात् एवमेव पितामहदीनां नामगोत्राभ्यां तदीयविप्रक्रेषु अक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सव्यंकृत्वा प्राङ्मुखस्तन्मनाः  
 सुमनाः कृतांजलिर्दक्षिणां दिशं प्रथयन् पितृविप्रेभ्यः आशिषो गृह्णीयात् ॥ अघोराः पितरः सन्तु इति वदत् सन्निवर्तितैरुक्ते समाचारात्  
 पिंडोपरि पूर्वां जलधारां दद्यात्ततः अंगोत्रं नोर्वर्द्धताम् इत्युक्तौ अवर्द्धतां वोगोत्रम् इति प्रयुक्तिः ॥ अदातारो नोऽभिर्वर्द्धताम् ॥ अमि  
 वर्द्धतां वोदातरः ॥ अवर्द्धाश्च नोऽभिर्वर्द्धताम् ॥ अमि वर्द्धतां वोवेदाः ॥ अस्तंति नोऽभिर्वर्द्धताम् ॥ अमि वर्द्धतां च नो मा  
 व्यगमत् ॥ अमाव्यगमद्गः श्रद्धा ॥ अबुद्धेयं च नोऽस्तु ॥ अस्तु वो बहु देयम् ॥ अंगोत्रं च नो बहु भवेत् ॥ अभवत्तद्वो बहु ॥ अतिथी  
 श्रलभेमहि ॥ अलभध्वं चातिथीन् ॥ अयाचितारश्च नः संतु ॥ अस्तु वो याचितारः ॥ माचयाचिभकंचन ॥ अमायाचध्वं कंचन ॥  
 अस्ताः सत्याः आशिषः संतु ॥ असंवेताः सत्याः आशिषः ॥ इत्येवं प्रार्थनं प्रतिवचनभ्योऽनन्तरं द्विजैर्दत्तमक्षतपुष्पं गृहीत्वा शिरसि  
 धारयेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा पिंडोपरि सपवित्रान्कुशानां स्तीर्य स्वधावाचिष्ये इति ब्रूयात् अवाच्यतामिति विप्रानुज्ञातः ॥ पितृभ्यः पितामहे  
 भ्यः प्रापितामहेभ्यो मातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यः मातामहेभ्यश्च स्वधोच्यतामिति वदत् ॥ अस्तु स्वधोचितैरुक्ते ॥ अर्जुनैर्वर्द्धनैर्भृतैर्दृतं तं यः  
 कीलालं परिस्सृतम् ॥ स्वधास्थतर्प्य तमोपेतुं नोति सपवित्रकुशोपरि दक्षिणां जलधारां दद्यात् ॥ ततः स्वयं यजमानोऽर्घ्यं पात्राण्युत्तानीकृ

त्य सव्येन देवदक्षिणां दद्यात् ॥ ॐ अद्य कृतं तत्पर्यावर्णश्राद्धं गन्तां स्मत्पित्रा दिव्यसर्वाधिनां पुङ्खरवाद्रवसङ्गकविश्वेदेवानां श्राद्धप्रतिष्ठायाभिर्दे  
 हिरण्यमिदं देवतथानामगोत्राब्राह्मणाय दक्षिणा त्वेन तुभ्यमहं संप्रदेदं ॥ ॐ स्वस्तीति इति प्रतिवचनम् ॥ एवं मातामहादिदेवश्राद्धार्थमपि  
 हिरण्यं दद्यात् ॥ ततोऽप सव्यादि कृत्वा ॐ अद्या मुकुगोत्रस्यास्मात्पितुः सुकशमणः सपत्नीकस्य वसुरुपस्य कृतैतत्पर्यावर्णश्राद्धप्रतिष्ठायाभिर्दे  
 रजतंचंद्रदेवतम् अमुकुगोत्रायामुकुशमणब्राह्मणाय दक्षिणा त्वेन तुभ्यमहं संप्रदेदं इति पितृब्राह्मणहस्ते रजतदक्षिणां च दद्यात् ॥ एवं पितामहादिपंच  
 श्राद्धप्रतिष्ठायाभिर्मासं रजतं दद्यात् ॥ सर्वत्र स्वस्तीति वाचयेत् ॥ देवै रजतनिषेधः ॥ असंभवे फलमूलादिकं दद्यात् ॥ ततः पिंडानुत्थापयामाऽनुत्थापय  
 इत्यनुज्ञातः पिंडानुत्थाप्यस्थाल्यानि धायाऽवघ्राणं कृत्वा पिंडाधारसकृदाच्छिन्नान् दर्भान् उल्मुकचवह्नौ निक्षिपेत् ॥ ततः ॐ विश्वेदे  
 वाः प्रीयन्तामिति भवन्तोऽधिब्रुवन्तु इति देवद्विजान् प्रार्थयेत् ॥ तेषु ॐ प्रायतं गोविश्वेदेवा इति प्रतिब्रूयुः ॥ ततोऽप सव्यं कृत्वा ॐ वाजैर्वाजवत  
 व्वाजिनो नो धेनेषु विप्राऽअमृताऽऽकृतज्ञाः ॥ अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्तायां तर्पथिभिर्देवयानः ॥ इति मंत्रेण पितृब्राह्मणानुत्थाप्य पिङ्गु  
 मूर्द्धन्यमङ्गुष्ठेन गृहीत्वा गृहीतो देवकपात्रो वि सजयेत् ॥ ततस्तथैव देवब्राह्मणानपि वि सजयेत् ॥ ततस्तान्कृतपादांशौ चानुभयान् बहिः स्थितान्  
 प्रदक्षिणीं कुर्वन् ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्या देभे दद्यावापृथिवीं विश्वरूपे ॥ आमां गतां पितरामातरां चामासो भोऽअमृतं त्वेन गम्यात् १॥ १९  
 इति मंत्रेण सीमांतमष्टौ पादानि बंधुभार्यासहितोऽनुब्रज्य उदकधारया प्रदक्षिणीकृत्य गृहं प्रविशेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥  
 ततोऽप सव्येन शरीरं निर्वप्य सव्येन हस्तापादौ च प्रक्षाल्याचम्य ॐ प्रमादात्कुवतां क्रमे प्रन्यवेताध्वरेषु यतः स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्ण  
 स्यादिति श्रुतिरिति पठित्वा कर्मपूतिकां गोविष्णुं स्मरेत् ॥ ततः पिंडान् गमजं विप्रादिवायसान् वा दयेत् ॥ अग्राजले वाक्षिपेत् विप्रातिके वा वि

किंत् जलस्थोदक्षिणासुखोऽम्भसिवाक्षिपत् ॥ पुत्रकामःपितामहर्षिः ॥ अ० अपात्वापधीनां संप्राशयामि भूतकृतंगमयस्त्व इति मे प्रग  
 ऋतुस्नातायै पितृभक्त्यै साध्यै धर्मपत्न्यै दद्यात् ॥ सा शुचिर्वाप्यता पुत्रकामा अ० अधातपितरो गभकुमारं पुण्ड्रं स्रजम् ॥  
 यथैह पुरुषोऽसत् इति मे त्रिणाऽश्रीयात् ॥ ततो वैश्वदेव बलि कर्मणी कुर्यात् ॥ तत्र प्रयोगः ॥ तत्रादावग्नेः पश्चात्पादसुख उदङ्मु  
 खो वा उपविश्य आचम्य दक्षिणजान्वाच्यमणिकोदकेनाऽग्निपशुहस्तेनाद्रिमलकमात्रमोदनमादाय सुसमिद्धेऽग्नौ ॥ अ० ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे ॥  
 अ० प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ अ० शृङ्गाभ्यः स्वाहा इदं शृङ्गाभ्यः ॥ अ० कश्यपाय स्वाहा इदं कश्यपाय ॥ अ० अनुमतये स्वाहा  
 इदमनुमतये ॥ इति देवयज्ञः ॥ इति पंचाहुतिर्हुत्वा मणिकर्मसमीपे प्राक्संस्थमुदकसंस्थं बलित्रयं दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ अ० पञ्चन्यायनमः  
 इदं पञ्चन्याय ॥ अ० अश्वानमः इदमश्वः ॥ अ० पृथिव्यै नमः इदं पृथिव्यै ॥ इति दद्यात् ॥ ततो द्वाशशाखयोर्दक्षिणोत्तारयोर्थथाक्रमम् ॥ अ०  
 धात्रे नमः इदं धात्रे ॥ अ० विधात्रे नमः इदं विधात्रे ॥ इति द्वौ बलिदत्त्वा ॥ प्रतिदिशम् ॥ अ० वायवे नमः ॥ इत्यनेनैव चतसृषु दिक्षु चतुरो बलिन्  
 दद्यात् ॥ इदं वायेव इति त्यागः ॥ ततो दिशां च अ० प्राच्याँ दिशे नमः इदं प्राच्याँ दिशे ॥ अ० दक्षिणायै दिशे नमः इदं दक्षिणायै दिशे ॥ अ० प्र  
 तीच्याँ दिशे नमः इदं प्रतीच्याँ दिशे ॥ अ० उदीच्याँ दिशे नमः इदमुदीच्याँ दिशे ॥ इति दिग्भ्या बलिं न दद्यात् ॥ दत्तानां बलिनामताराले अ०  
 ब्रह्मणे नमः इदं ब्रह्मणे ॥ अ० अतारिक्षाय नमः इदमतारिक्षाय ॥ अ० भूयैव नमः इदं भूयैव ॥ इति प्राक्संस्थं बलित्रयं दद्यात् ॥ ततो ब्रह्मादीनां  
 बलित्रयाणामुत्तरप्रदेशे अ० विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ अ० विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः ॥ इति द्वौ बलिदत्त्वा  
 त् ॥ तयो रुरतरः अ० उपसे नमः इदमुपसे ॥ अ० भूतानां पतये नमः इदं भूतानां पतये ॥ इति द्वौ बलिदद्यात् ॥ इति भूतयज्ञः ॥ ततो ब्रह्मादीनां

नांबलीनां दक्षिणप्रदेशे ॥ अपसव्येन अ० पितृभ्यः स्वयंनमः इदं पितृभ्यः ॥ इति पितृतीर्थेन दक्षिणासुसः एकं बलिं दद्यात् ॥ इति पितृयज्ञः ॥  
 ततः सव्येन तत्पात्रं प्रक्षाल्य निर्णेजनजलम् ब्रह्मादीनांबलीनां वायव्ये अ० यस्मै तत्ते निर्णेजनं नमः इदं यस्मिणे इति क्षिपेत् ॥ ततो देवादिबलीन्  
 बहिर्दद्यात् ॥ अ० देवानुभ्याः पशवो दयांसि सिद्धाः सयक्षोरगद्वयसंघाः ॥ प्रताः पिशाचास्तस्वः समस्ता ये चात्र मिच्छंति मया प्रदत्तम् ॥  
 ॥ १ ॥ इदमन्नं देवादिभ्यः अ० पिपीलिकाः कीटपतंगकाढ्याः बुभुक्षिताः कर्मनिबंधवद्धाः ॥ तृमर्थमन्नं हि मया प्रदत्तं तेषां भिदं मुदितम  
 वंतु ॥ २ ॥ इदं पिपीलिकादिभ्यः ॥ अ० ऐंद्रवारुणवायव्याः साम्यावैनक्षतास्तथा ॥ वायसाः प्रतिगृह्णंतु भूमावन्नमयापितम् ॥ ३ ॥ इदं वा  
 यसेभ्यः ॥ अ० सौरमेयाः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ॥ प्रतिगृह्णन्तु मग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ ४ ॥ इदं गोभ्यः ॥ अ० श्वानैर्द्वैश्यामश  
 वलैर्वैवस्वतकुलोद्भवैः ॥ ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥ ५ ॥ इदं श्वभ्याम् ॥ इति वैश्वदेवबलिं कर्म ॥ ततो वैश्वदेवति सुत  
 भृत्यबांधवातिथिसंयुक्तः पितृशेषितमन्नमश्रीयात् ॥ तदिने श्राद्धभुक्षदानप्रतिग्रहहोमस्वाध्यायभारान् वर्जयेत् ॥ कर्तुं भोक्तारौ द्यूता  
 ध्वगमनमैश्वर्यासस्वाध्यायकलहंच पुनर्भोजनहिंसादीनि न कुर्यात् ॥ एष एव विधिरुपरागसंक्रांतित्रयोदश्यादिनिमित्तकश्राद्धशुद्धयेयः ॥  
 महालयेतुमातृपक्षो मध्ये पृथक् कार्यः ॥ विधिरनु एष एव ॥ इति गौडियश्राद्धप्रकाशे मध्यमवंदे (मुख्यकल्पे) दर्शपर्वणश्राद्धपद्धतिः समा  
 प्ता ॥ १ ॥ अथ सपात्रकौदिष्टश्राद्धपद्धतिः ॥ तत्र पूर्वदिने एकभक्तादिनियमं विधाय श्राद्धदिने प्रातः स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य मध्याह्ने ब्राह्मण  
 स्नातं यजमानसवर्णेन हूतं शुचिः शुक्लद्विवासाः कृतं जलदं भेष्यासीनः अ० भ्वागतमिति पृच्छेत् ॥ अ० मुखागतमिति प्रातिपतिवचनम् ॥ ततो गोमय  
 मंडलेपीठवासाने उदङ्मुखमुपवेश्य अपसव्यादिर्धर्मयुक्तो विप्रजानु दक्षिणकोणस्पृष्ट्वा देशकालोत्सर्कृत्य अ० अद्यामुक्तगोत्रस्य पितर



मुकशर्मणः सांवत्सरिकैर्कोटिदृष्टश्राद्धार्थं त्वामहमामंत्रये इति निमंत्रणं कुर्यात् ॥ ततः ॐ अक्रोधेन शौचं परेण सततं ब्रह्मचारिणा ॥ भवितव्यं भवतानोऽद्यतने श्राद्धकर्मणि ॥ इति नियमान् श्रावयेत् ॥ सर्वायासविनिमुक्तेन कामक्राधो विवाजिते न भवितव्यं भवता च मया च श्राद्धकारिणा ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ भवितव्यमिति प्रतिवचनम् ॥ [ पूर्वदिननिमंत्रणपक्षे अद्यतनपदस्थाने शोभे तपदंदातव्यम् ] ॥ तत इदं तपाद्यं स्वधा ॥ इति पाद्यमुपनीय विनीतः स्वयं विप्रपादौ प्रक्षालयेत् ॥ ततः ॐ अद्यामुकगोत्र पितृमुकशर्मन् एष ते षडार्धः स्वधानम् इति जलतिलगंधपुष्पैः विप्रपादयार्धदद्यात् ॥ ततः ॐ इदं ते आचमनीयम् इति विप्राय आचमनार्थं जलं दत्त्वा सव्येन स्वयमग्न्या चामेत् ॥ ततः पूर्वकल्पितं दक्षिणाप्रवणं मुसमावृतं गोमया तुलितं श्राद्धदेशमागत्य यथाविहितेन पालं कंबलाद्यासनं स्पृशन् ॐ अत्रास्यताम् इति ब्रह्मणमासने उपवेशयेत् ॥ ततस्तत्पादयो रधः कुशत्रयं दक्षिणाग्रं दत्त्वा आसनं समापेतिलैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत् ॥ श्राद्धसमार्पित्यावद्विजेन रक्षणार्थः ॥ काककुक्कुटादीन् श्राद्धहंतृन् पसारयेत् ॥ ततः कर्त्ता ब्रह्मणः स्य पुरतः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य विप्रधारणं कृत्वा ॥ सव्येन आचम्य ॥ कर्मपात्रं जलेन पूर्य गंधपुष्पतिलादिभिः संपूज्य ॥ ॐ अप्यवित्रः पवित्रोऽहं सर्वव्यांगतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स ब्रह्माभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु इति पठित्वा कुशत्रयानीतजलेन श्राद्धद्रव्याणि स्वात्मानं च सिंचेत् ॥ ततः ॐ अभूम्यनमः ॥ अभयानमः ॥ अभयानमः इति नत्वा ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्या मुकगोत्रस्य अस्मान् पितृमुकशर्मणः सांवत्सरिकैर्कोटिदृष्टश्राद्धमहं करिष्ये इति संकल्प्य ॐ कुरुष्व इति ब्रह्मणानुज्ञातो गायत्रीं त्रिजपित्वा ॥ ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽपि सव्यं कृत्वा ॥ ॐ नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धहृत्पक्षे रक्षतं सर्वतो

दिश इति सर्वत्र गौरसर्षपानुविकीर्य ॥ अ० अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीरक्षतुर्भेदिशम् ॥ तथाबहिषदः पातु याम्यथेपितरः स्थिताः ॥  
 प्रतीचीमाज्यपास्तद्बुद्धीचामीपिसोपमाः ॥ अधरध्वमपिकोणेषु विकोणेषु च सर्वशः ॥ रक्षोभूतपिशाचोभ्यस्तथैवासुरदोषतः ॥ सर्वतश्चा  
 धिपस्तेषां यमोरक्षां करोतु मे ॥ वायुभूतपितृणां च तृतिर्भवतु शाश्वती ॥ इत्यनेनाऽधस्तादूर्ध्वकोणेषु च सर्वत्र तिलानुगौरसर्षपाश्च विकीर्यद्  
 क्षिणेवामेवाक्राटिभागेनीविषंधं कुर्यात् ॥ ततः सव्येन कार्मिश्चपात्रे जलं गृहीत्वा देभारो डय ॥ अ० यद्देवादेवे देहं देवांसश्च कृमावयम् ॥  
 अग्निर्मातस्मादेनसो विधानुमुञ्चत्व ठहसः ॥ १ ॥ यदि दिवा यद्दिनं तमेनां सिचकुमावयम् ॥ वायुर्मातस्मादेनसो विधानुमुञ्चत्व ठहसः ॥  
 ॥ २ ॥ यदि जगद्वादिस्वप्न एनां सिचकुमावयम् ॥ मूर्ध्ना मातस्मादेनसो विधानुमुञ्चत्व ठहसः ॥ ३ ॥ इति कूष्माण्डमंत्रो भिमं यदुष्टदष्टि  
 निपातदृष्टिपाकादिपूतं भवतु इत्युक्त्वा तेन पाकादीनां प्रक्षेपेत् ॥ ततोऽप सव्यादिना द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय अ० अद्यामुक  
 गोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन् इदमासनं ते स्वधा इत्युक्त्वा विप्रहस्ते जलं दत्त्वा कंबलाद्यासनवामभागस्योपरि पितृतीर्थेन मोदकं दक्षिणाग्र  
 मुस्तुजेन् ॥ ततः अ० अपहताऽअंगुराक्षाऽसिर्वेदिषदः इति तिलानुविकीर्य ॥ अर्घपात्रोपरि पवित्रं धृत्वा ॥ अ० शत्रो देवीरभिष्टुय आपो भ  
 वन्तु पीतये ॥ शंयोरभिष्टवन्तुः इति तत्र जलं प्रक्षिप्य अ० तिलोसिसोमदैवत्यो गौसवो देवनिर्मितः ॥ प्रत्नमाद्रिः पृक्तः स्वधया पितृहो कान  
 प्रीणाहिनः स्वधा ॥ इति तिलानु तूष्णीमेव गंधपुष्पे प्रक्षिपेत् ॥ ततोऽर्घपात्रं संप्रभ्रुमिष्यनुज्ञातो वासकरे अर्घपात्रमादाय विप्रदक्षिणकरे  
 पावित्रं दत्त्वा अ० यद्दिव्याऽआप इति मंत्रं पठित्वा अ० अद्याऽमुकगोत्रास्मान्पितरमुकशर्मन् वसुरूप एषते हस्ता र्घः स्वधा इति दक्षिणहस्तेन

पितृतीर्थेन यथाजलं पतति तथा ब्राह्मणकरे सपवित्रेऽर्घ्यदद्यात् ॥ ततः ॥ अपित्रे स्थानमसीतिमत्रेणवपान्न्युञ्जपितृवामपाथे  
 त् ॥ एवास्थितमर्घ्यपात्रं दक्षिणदानपयतनंचालयेत् ॥ ततो गंधादि दद्यात् ॥ तत्र विप्रकरे जलमासिच्य गंधपुष्पधूपदिपक्वादिभिः  
 धयाद्दिगुणमुद्युक्तुशत्रयतिलजलान्यादाय अ० अद्याऽमुक्तागोत्र अस्मान्पितरमुक्तामर्तु वसुरूप एतानिगंधपुष्पधूपदिपतंबुलयज्ञोपनिषि-  
 च्छादनातिभुज्यस्वधाइत्युच्चार्यदद्यात् ॥ अ० अयतेगंधइतिनिवेदयेत् ॥ अ० सुगंध इति तेनोक्ते ॥ अ० एतानिते पुष्पाणि ॥ अ० सुपुष्पाणि ॥  
 अ० एतेधूपः ॥ अ० सुधूपः ॥ अ० एतेदीपः ॥ अ० सुदीपः ॥ अ० इमेयज्ञोपवीते ॥ अ० मुयज्ञोपवीते ॥ अ० एतानितवासामि ॥ अ० मुवासामि इत्यादि-  
 क्रमेण ब्राह्मणायप्रत्येकप्रतिपाद्य कृतंजलिभूत्वा अ० अर्चनं संपुणमस्मिन्निब्रूयात् ॥ अ० अस्वर्चनं संपुणमिति विप्रः ततो भोजनपात्रस्थापन-  
 देशं समाज्यं ब्राह्मणं वेष्टयित्वा गौरमृत्तिकादिनामंडलं कुर्यात् ॥ [ परकीर्धभूमौ श्राद्धकरणपक्षे ] अ० इदमन्नं भूस्वामि पितृभ्यो नमः इति वृत्ता-  
 दिद्युक्तमन्नं देभ्यः स्तुजेत् ॥ ततः उष्णमन्नं सघृतं यथावत् कराभ्यामादाय पितरं ध्यायन् मंदं मंदं परिविश्वसुरीतलजलमन्  
 कव्यजनं वृतं चापात्रं तस्थं तत्रोपनीय अन्नं मधुनाभिचार्य अ० मधुवातेऽक्रतायते इति ऋचेनाभिमन्यन्त्युञ्जकराभ्यापात्रमालभेत् ॥  
 ततः अ० गृथिवीतेपात्रद्वोरिपधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतंऽअमृतं जुहोमि स्वधा इति पठित्वा अ० इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदेधेपदम् ॥ समूहं स्य  
 पा० ॥ अ० इत्येतां प्रंचंजत्वा ब्राह्मणाऽद्युष्टमनसमधोमुखम् आत्महस्तं धृत अ० विष्णोर्कव्यं ऋगक्षइतियजुषाऽत्रेनिवेश्य अ० इदं सघृतं  
 इमा आपः इदमाज्यम् इदं हविर्त्युक्ता अ० अपहताऽअमुराक्षाऽ० सिवेदिपदं इति तिलान् विकीर्य ॥ वामकरेण पात्रं स्पृशन् द्विगुणमुत्तुङ्कर-  
 त्रयं तिलजलान्यादाय अ० अद्यामुक्तागोत्र अस्मान्पितरमुक्तामर्तु वसुरूप इदमन्नं कव्यं तोपस्करं परिगंधपुर्विवेद्यमाणं ब्राह्मणतृतिपत्यतम

मृतरूपतुभ्यस्वया इत्युदकापितृतीर्थेनविप्रवामभोगेभूमौक्षिपत् ॥ ततः ॐअग्रहीनक्रियाहीनं विधिहीनचयद्रवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु  
इतिप्राथ्यंजुषस्वइत्युक्त्वा ॥ भवान् प्राशयतु इत्यापाशानविप्रायदद्यात् ॥ स यथाविधिभुंजीत ॥ श्राद्धकृतोतुप्तव्याहृतिकासप्रणवांगयत्रो  
त्रिःसकृद्वाजपत् कृतांजलिर्द्वैष्णवीनः ॥ ॐमधुवातेऽकृतयतेमधुशरतिसिधवत्माध्वनिर्लसन्त्वौषधीः ॥ १ ॥ ॐमधुनक्तमुतोषसो  
मधुमत्पाथर्वठजन्मधुधौरस्तुनःपिता ॥२॥ ॐ मधुमाश्रोवन्नस्पतिमधुमा २ ॥ ॐस्तुसूर्यःमाध्वर्गागोर्वाभवन्तुनः ॥३॥ इतित्र्यचम् ॥  
ॐ मधुमधुमाध्वितिचजपेत् ॥ ततःसव्येन ॐकृणुष्वपजःप्रसितिन्नपृथ्वीय्याहिराजेवामवोऽइभन ॥ तृष्वाभनुप्रसितिन्द्रणानोस्तासि  
विद्वचरक्षस्सर्तिषिष्ठः ॥ १ ॥ तवंप्रमार्सऽआश्रुयापतन्यनुस्युराधृषताशोचानः ॥ तपूँष्यग्रजुहोपतङ्गनसन्दिनोविमृजविष्वशु  
ल्काः ॥ २ ॥ प्रतिस्यशोर्व्विमृजतृणितमोभवापद्युर्व्विशोऽअस्याऽअर्देवः ॥ योनोदूरऽअघरठिसोयोऽअन्यग्रमाकिष्टव्यथिरादधर्षति  
॥ ३ ॥ उदग्रेतिष्ठप्रत्यान्तनुष्वन्यमित्रौ २ ॥ ॐपतान्तिग्महेतोःयोनोऽअरातिठिसिधानचक्रनीचार्थंक्षयतसन्ननुष्वम् ॥४॥ ऊर्द्धोर्भव  
प्रतिविद्वद्याद्वयस्मदोविद्वकृणुष्वद्वैद्व्यान्यग्र ॥ अवस्थिरातनुहियातुजूनोऽमिमजामिम्यमृणीहिराहून् ॥ अग्रेश्वतेजसासदयामि  
॥ ५ ॥ इतिरक्षाघ्नीः ऋचःपठित्वाभूमौतिलान् विकीर्षपितृरूपतयाब्राह्मणंध्यायेत् ॥ ततः ॐ उदीरतामवोऽउत्तरासऽउत्तमद्वयमाः पितरः  
सोम्यासः ॥ अमुंय्यर्द्धयुरव्वकाऽकृतज्ञास्तेनोवन्तुपितरहवेषु ॥१॥ अङ्गिरसोनः पितरोनववाऽअथव्योणोभृगवःसोम्यासः ॥ तेषांवयठ  
मुमतैयज्ञियानामर्षिभद्रसौमनसेस्यामि ॥ २ ॥ येन-पूर्वपितरःसोम्यासोनहिरसोमर्षिथवासिष्टाः ॥ तेभिर्न्यमःसठराणोहवीँष्युश

नृशर्द्धिः प्रतिकाममनु ॥ ३ ॥ त्वठसोमप्राचिकितोमनीपात्ठः जिष्टमनुनेपिपंथाम् ॥ तवप्रणीतापितरानडन्देदेवपुरत्नमजन्त  
 धीराः ॥ ४ ॥ त्वयाहिनः पितरः सोमपूर्व्वकर्मणिचक्रुः पवमानधीराः ॥ ब्रन्वन्नवातपरिधीऽपणुवोरेभरध्वमघवाभवानः ॥ ५ ॥  
 त्वठसोमपट्वर्भिः सविदानुद्यावापृथिवीआततन्तथ ॥ तस्मत्तडन्दोहविषाज्विधेमव्यऽभ्यामपतयोर्यणाम् ॥ ६ ॥ बाहवदः पितऽ  
 ज्यव्वागिमावोहव्याचक्रुमाजुर्द्धम् ॥ तआगतावशान्तमेनार्थानः शय्योरपोदधात ॥ ७ ॥ आहम्पितन्सुविद्वज् ३ अविन्सि  
 नपतञ्चविक्रमणञ्जिविणोः ॥ वहिपदोयस्वधयासुतस्यभजन्तापित्वस्तडहागमिष्टाः ॥ ८ ॥ उपहूताहपितरः सोम्यासोबाह्वेयुनिवि  
 षुप्यिषे ॥ तआगमन्तुतडहधुवन्त्वधिष्णुवन्तुतेवन्वस्मान् ॥ ९ ॥ आर्यन्तुनहपितरः सोम्यासोऽग्न्यज्वाताधियाभिदेवयानैः ॥ अस्मि  
 श्र्यज्ञस्वधयामदन्तोधिष्णुवन्तुतेवन्वस्मान् ॥ १० ॥ अग्न्यज्वाताहपितरऽहर्गच्छतसदः सदः सदतसुप्रणीतयः ॥ अत्ताहवाऽपिप्रय  
 तानिबाह्वेयथारियऽसर्व्वारदधातन ॥ ११ ॥ येऽअग्न्यज्वातायेऽअग्न्यज्वातामद्वयेदिवः स्वधयामादयन्ते ॥ तेभ्यः स्वराडसु  
 नीतिमोऽयथावशान्तवड्ढूल्ययाति ॥ १२ ॥ अग्न्यज्वातार्हनुमतोहवामहे नाराशठः सोमपथथयऽआशुः ॥ तेनोव्विष्यस्तसु  
 द्वाभमवन्व्यऽभ्यामपतयोर्यणाम् ॥ १३ ॥ इतिपितृमंत्रान् ॥ अ० सहस्रीषपुरुषइत्यादिषोडशचान्सकंपुरुषसूक्तं ॥  
 अ० आशुः शिशानोविषभोनेभीमोघनान्वनः शोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनानिभिषडपकवाः शतठसेनाऽअजयत्सकामिदः ॥ १ ॥

इत्यादि सप्तदशमंत्रात्मकमप्रतिरथंचपठेत् ॥ ततःॐ सप्तव्याधादराणेषु मृगाः कालांजरे गिरौ ॥ चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरिसमानसे ॥  
 तेऽभिजाताः कुत्रक्षेत्रे ब्राह्मणो वेदपारगाः ॥ प्रस्थितादूरमध्वानं द्यूतभ्योऽवसीदत ॥ इति पौराणीयं हविःस्तोत्रम् ॥ ॐ योगेश्वर  
 याज्ञवल्क्याभित्यादियाज्ञवल्काय गाथांच पठेत् ॥ ॐ मूर्तितानाममूर्त्तानां पितृणामभितौजसाम् ॥ नमस्त्यामिसदाक्षेपां ध्यायिनां  
 दिव्यचक्षुषाम् ॥ १ ॥ इंद्रादीनां जनेतारो दक्षमारीचयोस्तथा ॥ सप्तर्षिणां तथाऽन्येषां तान्नमस्त्यामिकामदात् ॥ २ ॥ मन्वादीनां जनेतृश्च  
 सूर्याचंद्रमसोस्तथा ॥ तान्नमस्त्याभ्यहंसवान्पितरश्चाणवेषु च ॥ ३ ॥ नक्षत्राणां ग्रहाणांच वायव्यश्विनभसांतथा ॥ द्यावापृथिव्यश्च तथा  
 नमस्त्यामिहृतांजलिः ॥ ४ ॥ देवर्षिणां जनेतृश्च सर्वदेवनमस्कृतात् ॥ अभयस्य सदादत्तुं ब्रह्मस्येहं कृतांजलिः ॥ ५ ॥ प्रजापतेः कश्यपस्य  
 सोमायवरुणाय च ॥ योगेश्वरस्यश्च तथा नमस्त्यामिहृतांजलिः ॥ ६ ॥ नमोगणेश्यः सप्तम्यस्तथा लोकेषु सप्तसु ॥ स्वयंभुवेनमस्त्यामि  
 ब्रह्मणे योगचक्षुषे ॥ ७ ॥ यदाधाराः पितृगणा योगमूर्तिधराहिते ॥ नमस्त्यामिततः सोमं पितरं जगतामहम् ॥ ८ ॥ अग्निरूपस्तैथैवान्या  
 ब्रह्मस्यामिपितृनहम् ॥ अग्नीषोमयं विधुं यत एतदशेषतः ॥ ९ ॥ येतुतेजोमयाश्चैते सोमसूर्याग्निमूर्तयः ॥ जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरू  
 पिणः ॥ १० ॥ तेभ्योऽखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसः ॥ नमोनमोनमस्तेमे प्रसीदंतु स्वधाभुजः ॥ ११ ॥ इति सप्तार्चिस्तोत्रं पठेत् ॥  
 अन्यान्यापि रचिस्तविष्ण्वादिस्तोत्राणि ब्राह्मणं श्रावयेत् ॥ ततः तु संज्ञात्वा अपसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ आस्तुतदक्षिणाग्रकुशत्रयां  
 भूमिं प्राक्ष्य तत्र ॐ अग्निर्गन्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुलेममाभूमौ दत्तेन तृणं तु तृसायां तु परांगतिम् ॥ १ ॥ इति मंत्रेण अन्नं प्रकीर्य सव्येनाचम्य ह  
 रिसंभरेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना ब्रह्मणाय जलगंडूषं दत्त्वा पूर्ववत् गावत्रांजथा ॐ मधुवाताऽऽकृतायते इति त्र्यृचं मधुमधुमध्विति च जपेत् ॥

ततः ॐ स्वदितम् इति पृष्ट्वा ॐ सुस्वदितम् इति तेनोक्तं ॥ शेषमश्रौं क्रियतामिति पृष्ट्वाऽहं स ह योक्तव्यमिति विप्रो वेदत् ॥ ततः पितृमहर्षीये  
इति पृष्टे कुरुष्व इत्यनुज्ञातः ॥ उच्छिद्य स त्रिधा पितृस्थानं सैकतं चतुरस्रं दक्षिणाष्टवर्गं निमग्नं तन्मध्ये दर्भपिञ्जलीमूलेन ॐ अपहतुऽअमु  
रक्षऽं स विदुषः इति वान्वारव्यदक्षिणहस्तेन प्रादेशमितां रेवां दक्षिणां सङ्कुड्डिल्य दर्भपिञ्जलीमुत्तरस्यां दिशि निक्षिपेत् ॥  
ततो ये ह्युपाणिप्रतिमुचमानाऽअसुराः सन्तः स्वध्याचरन्ति ॥ पराधुरो निपुणैर्ये भरन्त्याग्निष्ठाः कोष्ठान् प्रादुश्यात् इति मन्त्रेणोल्लुक्ं रेवायां  
भ्रामयित्वा दक्षिणतो निदध्यात् ॥ ततः उपमूलसङ्कुड्डनकुशत्रयं रेवापरिस्तुष्यात् ॥ ततः सव्येन ॐ देवताभ्यः प्रितृभ्यश्च महा  
योगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वध्यायै नित्यं भव नमो नम इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽपसत्यं कृत्वा तिलजलगंधपुष्पाणि पात्रे कृत्वा  
तत्पात्रं वामहस्तेन दत्त्वा दक्षिणहस्ते द्विगुणभुशकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रास्मान्पितरमुकशमन्त्रवेने निश्चेत्स्वया  
इति कुशोपय्यवेने जनं दद्यात् ॥ ततः सर्वस्मादत्रात्किंचिदन्नमुदृत्य मध्याज्यतिलसहितमेकत्रयोक्त्वा विस्त्रोपमोपडा निमाय  
मधुघृताभिधार्तं सतिलसव्योपग्रहीतदक्षिणहस्तेनऽवेने जनस्थाने ॐ अद्यामुकगोत्रास्मान्पितरमुकशमन्त्रेत्तोपिदं स्वया इति दद्यात् ॥  
ततोल्लेपभागमुजस्तृप्यतु इति दर्भमूलैरग्रोच्छ्रय सव्येन हस्तौ प्रक्षाल्य आचम्य हरिं स्मरेत्ततोऽपसव्यादिकृत्वा ॐ अत्र पितामादयस्व यथा  
भुगमावृषाणिष्ट इति पठित्वा वामावर्तेन उड्डमुखाभूय प्रीतमनाः श्वासं निमग्न्य तेनैव यथापरावृत्य ॐ अमीमदन्तोऽपुनर्यथा भुगमावृषाणिष्ट  
इति जपेत् ॥ ततोऽवेनेन वशिष्टजलयुतपात्रमादाय ॐ अद्यामुकगोत्रास्मान्पितरमुकशमन्त्रप्रत्यवेने निश्चेत्स्वया इति पिण्डोपरि प्रत्यवेने  
जनं दद्यात् ॥ ततो नीर्विनिर्दस्य सव्येनाचम्य अपसव्यादिकृत्वा कृतांजलिः ॐ नमस्ते पितारसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितृजाय

नमस्तेपितः स्वधायै नमस्तेपितर्विधाय नमस्तेपितर्भन्यवे नमस्ते पितः पितर्नमस्ते गृहभ्रातृपितृदत्तसत्सत्पितृद्वय इति प्रार्थ्य ततः अंशु  
तेपितर्वासः इति मंत्रं पठित्वा अं अद्यामुक्तगोत्रपितरमुक्तशर्मभ्रातृतोवासः स्वधा इति श्रुतवस्त्रशं उर्णामुन्नाणिवा पंचशद्वर्षोपरियजमान  
द्वद्वयलोमानिवा पिंडोपरि दद्यात् ॥ ततस्तूष्णीमेवापितरमुद्दिश्य गंधपुष्पधूपदीपतांबूलदक्षिणादिकं दद्यात् ॥ ततो ब्राह्मणमाचमय्य  
तदीयहस्ते अं अपांमध्यस्थितो देवाः सर्वमभ्युप्रातिष्ठतम् ॥ ब्राह्मणस्य क्रमस्तः शिवा आपो भवंतु मे इति सकृज्जलं दद्यात् अल  
क्ष्मीवसतिपुष्पेषु लक्ष्मीवसतिपुष्करे ॥ लक्ष्मीवसतिगोष्ठेषु सौमनस्यसदास्तु मे इति पुष्पाणि ॥ अं अक्षंतचारुमुष्पुण्यं शांतिः पुष्टि  
धृतिश्च मे ॥ यद्यच्छ्रेयस्करलोके तत्तदस्तु सदा मम इति यवान् तिलांश्च दत्त्वा अं अद्यामुक्तगोत्रस्य स्मृतिपुत्रमुक्तशर्मणो दत्तैतदन्नपा  
नादिकमक्षय्यमुप्रातिष्ठताम् ॥ इति तिलयुक्तमक्षय्योदकं विप्रकरे दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्रादुमुखः कृतांजलिः शिषो गृहीयात् ॥  
अं अघोरः पिताऽस्तु ॥ अस्तु इति विप्रः ॥ गोत्रोन्नो वद्धतां मुहूर्तिकर्ता ॥ वद्धतामिति प्रतिवचनम् ॥ १ ॥ दातारो नोऽभि वद्धतां वेदाः संततिरेव च ॥  
श्रद्धाचनो माव्यगमद्वेदयंचनोऽस्तु ॥ अंगंचनो बहुभेदतिथीश्चलभेमहि ॥ याचितारश्च न संतु माचयाचिष्मकंचन ॥ एताः सत्या आशिष  
संतु इति वदेत् संतु इति तेनेके ॥ ततोऽप्यसव्येन पिंडोपरि सपवित्रदर्भान् स्तीर्य ॥ अं स्वधावाचयिष्ये ॥ इति पुष्ट्वा ॥ वाच्यतामित्य  
नुज्ञातः ॥ अं पित्रे स्वधोच्यतामिति वदेत् अस्तु स्वधा इत्युच्यमाने सपवित्रदर्भान्तरिति पिंडोपरि अं ऊर्जवर्धंती र्मुतं द्रुतंपयः की  
लालं परि द्रुतं स्वधास्य तर्पयंतमपितरम् ॥ इति मंत्रेण वारिधारां दद्यात् ॥ ततोर्घपात्रमुत्तानीकृत्य तथा शक्तिरजतदक्षिणां दद्यात् ॥  
अं अद्यामुक्तगोत्रस्य पितरमुक्तशर्मणः कृतैतत्संवत्सरिकैकोद्दिष्टाद्वप्रतिष्ठार्थमभिरजतदक्षिणां च द्रव्यमा मुक्तगोत्रायाऽमुक्तशर्मणे ब्रा



ह्यणयतुभ्यमहसंप्रददे इति दद्यात् ॐ स्वस्तीति विप्रो वेदेत् ॥ असंभवे फलमूलादिकं दद्यात् ॥ ततः पिंडमुत्थाप्य्मथान्यानि धाय अत्रायोपि पां  
 धां स्तुतदर्शचोत्सुकमग्नौ निक्षिपेत् ॥ ततो विप्रमुत्थाप्याऽङ्गुष्ठं हत्वा गृहीतोदकपात्रो अभिमन्यतामिति विमजयेत् अभितास्मीति  
 प्रतिवचनम् ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्य ॐ आमावाजेत्यप्रसवे जगम्यादुमेधावाधुर्वि स्विश्वरूपोऽआमागतां पितरगमातरा चामा सोमोऽमृतं  
 त्वेन गम्यतात् इति भेत्रेण सीमां तमष्टौ वापदानि अनुब्रवीत्यहं प्रविशेत् ॥ ततो रक्षादीर्निर्वाणं कृत्वा सव्येन हस्तोपादौ प्रक्षाल्य आचम्य  
 ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति त्रिः पठेत् ॥ ततः ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेतां ध्वषयुत ॥ स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णस्यादिति श्रुतिरिति पाठ  
 त्वा कर्मधूर्त्तकामो विष्णुं स्मरेत् ॥ ततः पिंडं गामजं वायसान्वाखादयेत् अग्नौ जलेष्वाक्षिपेत् ततो वैश्वदेव बलिकर्मणि कुर्यात् वैश्वदेवति सुतमु  
 त्वा बांधवातिथि संयुक्तः पितृशेषितमन्नमश्रीयात् एवमेव मातृश्राद्धं कुर्यात् ॥ ततः कर्तृभोक्ता रोगनाऽध्वगमनमथुनायासस्वाध्यायकलहं पुन  
 र्भोजनं हिंसादीनि न कुर्यात् ॥ एवमेव पितृव्यश्राद्धं भगिनीपुत्रपत्नी चक्षुरमातुल्युक्षशिष्यादीनामपुत्राणामपि कुर्यात् विषशस्त्रश्चापदं हि नित्यं  
 ग्राह्यण वातिनाम् अनशनाग्निश्वानोद्धवनादीनां च आश्विनकृष्णचतुर्दश्यामथैकोद्विष्टवेम कर्त्तव्यम् ॥ तत्र सवित्सरिकपदं न दातव्यम् ॥  
 इति श्रीगौडीयश्राद्धप्रकाशे प्रतिवर्षक्षयाहसप्तपन्नैकोद्विष्टपद्धतिः समाप्ता ॥ ४३ ॥ अथाभ्युदयिकश्राद्धम् ॥ एतच्च गर्भाधानपुंसवनसीमां  
 तोन्नयनजातकर्मभक्षणमग्निराशनचौलोपनयनविवाहादिसंस्कारेषु तुलादानव्रतनवाग्नभोजनग्रथमातृवत्कृपायामतडागद्युत्सर्गदेवप्रतिष्ठा  
 राज्याभिषेकश्रद्धास्तवपुत्रोत्सर्गतीर्थयात्रानि मित्रिकादिषु कर्त्तव्यम् ॥ तत्र श्राद्धदिने प्रातरेव निमंत्रणं नष्टुं द्युः ॥ प्राह्मुल उदङ्मुखेभ्यो दद्यात्  
 त् ॥ उदङ्मुखो वा प्राह्मुलभ्यः ॥ सर्वकर्म देवतीर्थेन ऋजुपाणिना पातितदक्षिणजालुना उपवीतिना प्रदक्षिणं देवकर्मवत्कार्यम् आसननादौ सर्वे

नऋजवोद्गर्भोः॥विकिरणद्वयैवः स्वधास्थानेस्वाहनमःशब्देवाप्रयोक्तव्यः॥नाऽत्रापसव्यकरणं नपितृतीर्थेन नवामजानुपातनं अन्येपि  
 दक्षिणापूर्वादयोऽसाधारणाः पित्र्याधर्मो निवर्तते किंतु देवेनधर्मेणाऽत्रापितृणामुपचारः॥इतरे विशेषाः प्रयोगेष्वव्यक्ताभिव्यज्यन्ति अत्रच ॥  
 प्रथमं मातृपूजनम् ततोमातृपितामहीप्रपितामहीनांश्राद्धम् ततः पितृपितामहप्रपितामहश्राद्धम् ततो मातामहप्रमातामहद्वन्द्वमातामहा  
 नांसपत्नीकानांश्राद्धं श्राद्धत्रयेऽप्यष्टौ ब्राह्मणाद् देवपूर्वकान्पूजयेत् ॥ अथपद्धतिः ॥ तत्रतावद्ब्रह्मेमुहूर्ते उत्थाय यथोपदेशान्नासंध्या  
 दिनित्यकर्मप्रातःसमाप्य ॥ वेद्यां गणपतिसहिता गौर्भ्यादिषोडशमातृकाः प्रतिमाक्षतपुंजलवान्यतेमेष्वधिष्ठानेषुस्थापयेत् तद्यथा ॥  
 कर्त्ताप्रक्षालितकरचरणःस्वाचांतःसकुशोपग्रहपाणिः शुद्धासने प्राङ्मुखउपविश्य ॥ कुशत्रययजलान्यादाय देशकालौसंकीर्त्य ॥ अमु  
 ककर्मार्हभूतगणपतिसहितषोडशमातृपूजनमहंकरिष्ये इतिसंकल्पयेत् ॥ ततःपुष्पक्षतानादाय अंगणानान्त्वागणपतिंठहवामहेप्रियाणां  
 न्त्वाप्रियपतिंठहवामहेनिधीनांत्वानिधिपतिंठह्वामहेव्यसोमम आहर्मजानि गर्भधमात्ममजसिगर्भवम्॥ अंभूसुवःस्वर्गणपतेइहागच्छ  
 इहतिष्ठ इतिगणपतिंस्थापयेत् ॥ ततःप्रदक्षिणक्रमेणाभ्यादिस्थापनम् ॥ अंभूसुवःस्वः गौरि इहागच्छइहतिष्ठ ॥ १ ॥ अंभूसुवःस्वः  
 पद्मेइहागच्छ इहतिष्ठ ॥ २ ॥ अंभूसुवःस्वःशिव इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ३ ॥ अंभूसुवःस्वमधेइहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ४ ॥ अंभूसुवःस्वःसावि  
 त्रिइहागच्छ इहतिष्ठा ॥ ५ ॥ अंभूसुवः स्वर्विजये इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ६ ॥ अंभूसुवःस्वजये इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ७ ॥ अंभूसुवःस्वदेवसेने  
 इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ८ ॥ अंभूसुवःस्वःस्वधे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ९ ॥ अंभूसुवःस्वःस्वाहे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ १० ॥ अंभूसुवःस्वर्मो

तर इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ ११ ॥ अ०भूसुवःस्वलोकमातर इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ १२ ॥ अ०भूसुवःस्वःहरे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ १३ ॥  
 अ०भूसुवःस्वःपुष्टे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ १४ ॥ अ०भूसुवःस्वस्तुष्टे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ १५ ॥ अ०भूसुवःस्वःआत्मकुलदेवते इहागच्छ इहतिष्ठ  
 ॥ १६ ॥ अ०भूसुवःस्वःश्रीरक्षागच्छ इहतिष्ठ इतिगणपतिमहिताएतामातः प्रत्येकमोकारव्याहतिवृक्कमानाह स्व्यापयित्वा अभनान्नेतिजुष  
 तामाज्यस्यवृहस्पतिर्यज्ञमिन्मननोत्वारिष्ठं यज्ञठसामिभंदयातु विश्वेदेवासइहमादयंतोमोप्रतिष्ठाइत्यक्षतान्विकीर्यप्रतिष्ठाकुर्यात् ॥ ततः  
 पावाघाचमनीयमधुपर्कपुनराचमनीयस्नानवस्त्रगंधपुष्पधूपदीपतंबूलदिभिर्नवेद्यैः पृथग्विवेक्ष्यप्रणवादिनमोतेनस्वस्वनाम्नापूजयेत् ॥  
 तद्वथा॥ अ०गणपतयेनमः पादयारिंदपाद्यम्॥ अ०गणपतयेनमः॥ इदमध्वयम्॥ इदमाचमनीयम् इदंस्नानार्थजलम्॥ अ०गणपतयेनमः इमं गंधम्  
 इमानिपुष्पाणि अ०गणपतयेनमः॥ गतानि धूपदीपनैवेद्यतंबूलानि दक्षिणां च समर्पयामि ॥ एवमेव अ०गौट्येनमः॥ १॥ अ०पद्मायैनमः ॥ २॥  
 अ०शच्यैनमः ॥ ३ ॥ अ०मेघायैनमः ॥ ४ ॥ अ०सावित्र्यैनमः ॥ ५ ॥ अ०विजयायैनमः ॥ ६ ॥ अ०जयायैनमः॥ ७॥ अ०द्वसेनायैनमः ॥  
 ८ ॥ अ०स्वधायैनमः ॥ ९ ॥ अ०स्वाहायैनमः ॥ १० ॥ अ०मातृभ्योनमः ॥ ११ ॥ अ०लोकमातृभ्योनमः ॥ १२ ॥ अ०हृष्टयैनमः ॥ १३॥  
 अ०पुष्टयैनमः ॥ १४ ॥ अ०तुष्टयैनमः ॥ १५ ॥ अ०आत्मकुलदेवतायैनमः ॥ १६ ॥ अ०श्रियैनमः ॥ १७ ॥ इति प्रत्येकमचयेत्॥ ततः  
 केनचित्पात्रेण विलीनघृतसगुडमादाय ॥ व्यासाःपवित्रमसिंशतभारं व्यासाःपवित्रमसिंशतभारं देवस्त्वांसवितानुनतुल्यभाः पवित्रेण  
 तथारेणसुभाः कामधुशः ॥ इति मंत्रेण मानृणामुपरीभितिलग्राः सप्त पंचतिशोवाधारुतारोत्तारक्रमेणपातयेत् ताश्चपूजयेत् ॥ ततोवृद्धि

मृतपठेत् ॥ अ० आयुष्यं वर्षस्य १० शयस्योषमोद्धिदम् ॥ इदं हि हिण्यं वर्षस्वज्ञैत्रायाविशतादुमम् ॥ १ ॥ नतद्रक्ष १० सिनापिशाचस्तरेनित  
 देवानामोजः प्रथमजठरेतत् ॥ गोविभौतदक्षायणठं हिण्यठं समवेष्टुं कुणते दीर्घमायुः समनुष्येष्टुं कुणते दीर्घमायुः ॥ २ ॥ यदा बध्नदक्षायणा  
 हिण्यठं शतानीकायमुमनस्यमानाः तन्मऽआबध्नामिशतशारदायुष्माञ्जद्विषयासम् ३ अथ सपात्रकाऽभ्युदयिकश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र कर्त्ता  
 पूर्वोक्तिसुस्नातः प्रक्षालितकरचरणः स्वाचांतः सपवित्रो प्रहकुशः सुस्नातान् स्वाचांतान् अष्टौ संव्यकान् ब्राह्मणानाहूय गोभयोपलमेमंडले  
 अस्वागतवः सुस्वागतमिति प्रश्नोत्तरपूर्वकं प्रागग्रकुशोत्तरेष्वासनेषु ग्राह्मुवान् ॥ दक्षिणोपक्रमानुदगपङ्कगानुपवेश्य स्वयमुदङ्मुख उपवि  
 श्य सजघनं दक्षिणजान्वाच्यतां ब्रूयादिकमादाय विप्रजानुनीस्पृशन् ॥ अ० अवकारेण्यमाणऽमुककर्मनिमित्तकाभ्युदयिकश्राद्धे अस्मन्मा  
 त्रादित्रयास्मन्मातामहादित्रयनांदीश्राद्धसंबन्धिसत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेवस्थाने भवतौ मया निमंत्रितौ ॥ इति तांबूलादिनादौ विप्रानि  
 मंत्रयेत् ॥ अनिमंत्रितौ स्वः इति प्रप्रतिवचनम् ॥ पुनस्तांबूलादिन्यादाय तदुत्तरयोर्विप्रयोर्जानुनीस्पृशन् ॥ अ० अद्यामुकगोत्राणामस्मन्मातृ  
 पितामहीप्रपितामहीनाममुकसुकुसुवीनां नंदीमुखीनाममुककर्मनिमित्ताभ्युदयिकश्राद्धभवतौ मयानिमंत्रितौ ॥ अनिमंत्रितौ स्वः इति ता  
 भ्यामुक्ते तद्धदेव पित्राद्यथमातामहाद्यर्थे च प्रप्रतिवर्गद्विजड्यं निमंत्रयेत् ॥ एवमष्टौ ब्राह्मणां निमंत्र्य ततः अ० अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचा  
 रिभिः ॥ भवितव्यं भविद्भ्य मया च श्राद्धकारिणा ॥ इति नियमान् सर्वानद्विजान् श्रावयेत् ॥ ततो देवद्विजपूर्वकं चरणप्रक्षालनविधाय  
 गंधधूपणादितुं पाण्डुहस्ता ॥ अ० अद्य नंदीमुखमात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयसंबन्धिनः सत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेव एतत्पादार्घवः

स्वाहानमः इति देवद्विजपाद्व्याघ्रं दद्यात् ॥ पुनः ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहोऽमुकामुकदेव्या नंदीमुख्यएतपदानेत्रे  
 याविभज्यवः स्वाहानम इति मातृवर्गब्राह्मणचरणयोर्देवापित्राद्वित्रये मातामहाद्वित्रयेऽप्येवमेव दद्यात् ॥ ततो ब्राह्मणानाचमय्यस्यमध्या  
 न्यमश्राद्धदेशद्विजान् प्रवेश्यस्यमपिप्रविश्य ॥ अत्रासध्वमिति प्रागग्रकुशासनेषु उदगपवर्गान् देववृक्षेषु पवेश्यस्वयमुदङ्मुख उपविश्य  
 प्रयासनसमपेदीपं प्रज्वाल्यकाककुक्कुटादीन् श्राद्धापहंतनपसारयेत् ॥ श्राद्धदेशवर्णचंकुर्यात् ॥ इति निमंत्रणप्रकारः ॥ अथोपवीती  
 आचम्य प्राणानाचम्य स्वपुनतः कर्मपात्रं जलेनापूर्य्य देवदधिवह्निरतकुशांस्तत्र निक्षिप्य ॐ कर्मपात्रं संपन्नमिति ब्रूयात् ॐ सुसंपन्नमि  
 त्यनुज्ञातः ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्ववस्थांगतोऽपि वा ॥ यस्मरेत्युदरीकालं सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ ॐ पुंडरीकाक्षः पुनान्विति पठित्वा कु  
 शानीतजलेन श्राद्धीयौ पक्ष्मणानि प्रोक्षयेत् ॥ ततः ॐ वैष्णव्ये नमः ॥ ॐ काश्यप्ये नमः ॥ इति भूमिं संपूज्य विष्णवे नमः इति  
 विष्णुमनेवाक्कायनेन स्कारं कुर्यात् ॥ ततो देवकुशयजलन्यादाय देशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्यामुकगोत्राणां भस्मन्मातृपितामहीप्रपितामही  
 नाममुकामुकदेवीनां नंदीमुखीनाम् अमुकगोत्राणां भस्मात्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणानंदीमुखानां तथा चासुकगो  
 त्राणां भस्मन्मातृपितामहप्रपितामहद्वृद्धप्रमातामहानाममुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां नंदीमुखानाम् अमुककर्मनिमित्तकं सत्यवसुसंज्ञक  
 विश्वेदेववृक्षसर्पिण्डकर्मभ्युदयिकश्राद्धं भवदनुज्ञाहंकारेण इति संकल्प्य ॐ कुरुष्व इति ब्राह्मणानुज्ञातः सप्रणवव्याहृतिकंगायत्रां  
 त्रिजपित्वा विष्णुस्मरेत् ॥ ततः ॐ नमो नमस्ते गोविंद पुराणपुरोत्तम ॥ इदं श्राद्धं हवीं केश रक्षतां सर्वतो दिशः ॥ इति सवत्रयवान् गौरसर्पांश्च वि  
 कीर्यवा मकाटिभागनीवां वंधुकुर्यात् ॥ ततः कस्मिंश्चित्रपात्रजलं दृष्ट्वा हविर्हारीः कुशैरालोडय ॐ यद्देवा देव हे देव नमः ॥ इत्यादि कूर्मामंडमुक्तेन ॐ

पुनस्तुमादेवजनाऽइति पावमानेनचाभिर्भ्यपपाकादीनापित्रताऽस्तुतिपाकादीन् संग्रक्षयेत् ॥ अथासनादिप्रयोगः ॥ तत्रतावत् कुशत्रय  
 यवजलान्यादायाऽअद्याऽस्मन्मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः सत्यवसुंज्ञकाविश्वेदेवा इदं कशमासनं वानमः ॥ इति  
 देवद्विजकरणोजलं दत्त्वा कुशत्रयरूपं सत्यवब्राह्मणान्नदक्षिणभागस्योपरि देवतीर्थनपूर्वाग्रमुत्सृजेत् ॥ न द्विजकरयोर्दद्यात् ॥ ततः अ० अद्यामुक्तो  
 त्राऽस्मन्मातृपितामहप्रपितामहान्दीमुख्यः इदमासनं त्रयाविभज्य वः स्वाहा ॥ इत्युच्चार्य मातृगर्वप्रकरणो जलं दत्त्वा कं वलाद्यासनद  
 क्षिणभागस्योपरि देवतीर्थनपूर्वाग्रं कुशत्रयमुत्सृजेत् ॥ एवमपित्रादिमातामहादिवर्गद्वयब्राह्मणान्नोपरि दद्यात् ॥ ततः अ० सत्यवसु  
 इकविश्वान् देवानावाहयिष्ये ॥ इति देवा द्विजौ पृष्ट्वा ॥ आवाहय इत्यनुज्ञातः सयवकरो द्विजां गुष्ठौ गृहीत्वा ॥ अ० विश्वेदेवा मुऽआगतं शृ  
 णुताम० इदमर्तुहवम् ॥ एदं बहिर्निषिदत ॥ इत्यावाह्य अ० यवोसियवयास्मद्वेषो यवयारतीत्यनेन यवान्विकीर्य ॥ अ० विश्वेदेवा ः शृणुते मर्तु  
 हवम् मेयेऽअन्तरिक्षेयऽऽपृष्ट्वा विष्टायेऽअग्निजिह्वाऽऽतवायजत्राऽआसद्यास्मिन् बहिर्निषिमादयध्वम् इति जपेत् ॥ विश्वेदेवोत्पत्तिनामो राजाने ॥  
 अ० आगच्छतु महाभागा विश्वेदेवामहाबलाः ॥ यियत्र योजिताः श्राद्धे सावयाना भवन्तु ॥ इति श्लोकं कठेत् ॥ ततः अ० नादीमुलीमानुषावाहयिष्ये  
 इति मातृवर्गब्राह्मणौ पृष्ट्वा आवाहयेत्यनुज्ञातः सयवकरो ब्राह्मणयोर्दक्षिणकारं गुष्ठौ गृहीत्वा अ० उरन्तस्त्वा निर्वर्धमिदं शन्तुः समाधिमाहि ॥ उश  
 नुशतऽआवहमातृहविषेऽअत्तवे ॥ इत्यावाह्य प्रदक्षिणकर्मणा यवान् विकीर्य ॥ एवमपित्रादिब्राह्मणयोश्च पूज्योक्तप्रयोगेन अ० पितॄन् हविषे  
 अत्तवे ॥ मातामहान्हविषेऽअत्तवे इति मंत्राहेन यथाक्रमं पित्रादीन् मातामहादींश्चावाह्य प्रदक्षिणं यवान्विकीर्य ॥ ततो देववृक्षं शसुस्वर्णा

द्यवर्षपात्रेषु प्रतिपात्रं पवित्रं निधाय अश्वत्थोदेवीरिमष्ट्य आपोऽभं वतुपीत्यै शय्येरोभिर्भवंतुनः इति प्रात्येकं पात्रेष्वपो निषिच्य अथवा  
 स्मिन्वयस्मद्धैषवयरातीरिति द्वे पात्रेषु यवात्रिक्षिप्य ॥ अथवा सिसामेदवत्यो गोसंवदेवर्तितः ॥ प्रत्नमाद्विः पृक्तः पृष्ठयानदीमुखौष्ठौ  
 कात् प्रीणाहिनः स्वाहा इति मंत्रेण मात्राद्यवर्षपात्रेषु यवान् क्षिपेत् ॥ ततः सर्वत्र तूष्णीं गंधपुष्पे च दत्त्वा द्वितीयब्राह्मणहस्ते प्रथमदेवविप्र  
 करं निधाय तत्र प्रागर्ध्वपात्रस्थपवित्रे विन्यस्य दक्षिणहस्ते नार्ध्वपात्रमादाय अथवा दिव्याऽआपः पयसा संबभूवुर्या अंतरिक्षाऽउत पाथश्रीषी  
 र्याः ॥ हिरण्यवर्णयज्ञियास्तानऽआपः शिवाः सठं स्योताः सुहवा भवतु इत्यभि मंत्र्य अस्मन्मात्रादि पित्रादिमातामहादि त्रयनदी  
 श्राद्धसंबंधिनः सत्यवसु संज्ञका विथदेवा एषवर्धे नमः ॥ इति देवतीर्ये न पवित्रापरि अर्चयित्वा ॥ एवमेव मातृवर्गद्वितीयब्राह्मणकरे  
 प्रथमब्राह्मणकरं निधाय तत्र प्रागर्थमात्रवर्षपात्रस्थपवित्रं न्यस्य ॥ अर्घ्यपात्रमादाय अथवा दिव्याऽआप इत्यभि मंत्र्य अथवा मुक्तोत्रैऽस्म  
 न्मातृमुक्ते विनादीमुखि एषतेऽर्घः स्वाहानम इति देवतीर्य नार्ध्वपात्रमादाय पितृमहीपात्रस्थपवित्रं प्रागर्थं निधाय ॥ अथवा दिव्या इत्यभि मंत्र्य गो  
 त्राद्युच्चारणपूर्वकं पितृमहौ प्राग्वद्वर्षपात्रे पितृमहायप्रतिमाद्वैतार्धपात्रमादाय तत्रैव पितृमहीपात्रस्थपवित्रं प्रागर्थं निधाय तत्रैव प्रथमप्राग  
 त्र्यपवित्रनिधानादि पूर्वोक्तप्रकारेण पित्रे पितृमहायप्रतिमाद्वैतार्धपात्रमादाय तत्रैव पितृमहीपात्रस्थपवित्रं प्रागर्थं निधाय तत्रैव प्रथमप्राग  
 दद्यात् ॥ ततः अथैवैश्वर्येभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वा पवित्रजल्युत देवार्धपात्रं प्रथमब्राह्मणदक्षिणपार्श्वे उत्तानं स्थापयेत् ॥ ततः पितृमही  
 प्रतिमा महीपात्रद्वयस्थितं पित्रादि मात्रार्धपात्रे कृत्वा अनादीमुखीभ्यामातृभ्यः स्थानमसीति मात्रात्रं विप्रदक्षिणपार्श्वे नृजं कुर्यात् एव

मेवपितृपात्रपितामहादिसंस्त्रवान् ॥ मातामहपात्रे प्रमातामहादिसंस्त्रवांश्चसमवनीय अ० नांदीमुखेभ्यः पितृभ्यः स्थानमसि अ० नांदीमुखे  
भ्योमातामहेभ्यः स्थानमसीतिचोक्त्वा स्वस्वविप्रदक्षिणपार्श्वेन्युजं कुर्यात् ॥ ततः स्वस्वपात्रद्वयेनाच्छादयेत् ॥ एतानिस्थापितान्यर्घ्यपात्रा  
णिदक्षिणादानपर्यंतनद्वेर्व्रचालयेत् ॥ ततोर्गंधादिदानम् ॥ तत्र अष्टब्राह्मणेषुगंधपुष्पधूपदीपवस्त्रादिप्रत्येकसन्निधायादयकरोषुप्रत्ये  
कंजलमासिच्यकुशत्रययजलान्यादाय अ० अद्यास्मन्मात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वदेवाः  
एतानिगंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासांसिवानमइत्युच्चायर्गंधादिदद्यात् ॥ ततः अयं वोर्गंधइत्यभिधाय ब्राह्मणहस्तेषुप्रत्येकंगंधमपयेत् अ०  
सुगंध इतितैरुक्ते ॥ अ० इमानिवः पुष्पाणि इति पुष्पाणि निवेदयेत् अ० सुपुष्पाणीतितैरुक्ते ॥ अ० अयंवोधूपः अ० सुधूपः ॥ अ० अयं  
वेदीपः अ० सुदीपः ॥ अ० एतानिवोवासांसि अ० सुवासांसि इतितैरुक्ते ॥ इत्यादिक्रमेणप्रत्येकंब्राह्मणेभ्यो गंधादिप्रतिपादयेत् ॥ तै  
श्चपुष्पं शिखातिरिक्तदेशे न धार्यम् ॥ अत्रावसरे अन्यदपितांबूलयज्ञोपवीताभरणकमंडलुप्रभृतीनिफलार्थितया दद्यात् ॥  
ततः कुशत्रययजलान्यादाय अ० अद्यासुकुशोत्राः मातृपितामहप्रपितामहः नांदीमुख्यः एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलसिद्ध  
वासांसित्रिधाविभज्य वः स्वाहा इत्यभिधाय गंधादिदत्त्वा एवमेव पित्रादिमातामहादिब्राह्मणेषु द्वयोर्द्वयोः क्रमेणगोत्राद्युच्चारण  
पूर्वकं सकुशत्रयजलेनगंधादीनिसंकल्प्यपूर्ववद्दद्यात् ॥ एवंगंधादि दत्त्वा कृतांजलिभूत्वा अर्चनसंपूर्णमस्त्वितिद्विजानप्रतिब्रूयात् अ  
स्त्वर्चनसंपूर्णमिति विप्रावदेयुः ॥ ततोभोजनपात्रस्थापनदेशंसमाज्यं तत्र गौस्मृत्तिकाभस्मतांबूलवृणादिभिर्मंडलं प्रत्येकं कृत्वा भोज  
नपात्राणि च दत्त्वा हस्तप्रक्षालनार्थं प्रत्येकं जलं दद्यात् ॥ ततोदृतप्लुतमन्नं पात्रे कृत्वा आद्रामलकभात्रं गृहीत्वा अ० अन्नौकारिभ्ये



इतिष्ठ ॥ कुरुष्वेत्यनुज्ञातोऽग्निमानशौ निरधिकस्तु पित्र्यपत्तिमूढन्यहस्ते प्राङ्मुखः अग्रे कञ्यवाहनपात्राहो इदमग्रेयकन्य  
 वाहनय ॥ सोमाथपितृमतेस्वाहा इदं सोमाथपितृमते इत्याहुतिद्वयं दत्तवाशेषं देवपात्रवर्जमात्रादिपात्रेषु किंचित् किंचिदद्यात् ॥ नहि  
 स्मृताः शेषभोजोविधेदेवाः पुराणगौरितिवयुपुराणवाक्यात् ॥ ततोऽष्टस्वपिपात्रेषु यथासंभ्रमं परिविष्य पात्रांतरस्थजलयुतव्यजनं  
 चोपनीय ॥ उत्तानभ्यां पाणिभ्यां पात्रमालभ्यजपति ॥ ॐ पृथिवीतेपात्रद्यौरपिधानब्राह्मणस्थसुलोऽमृतोऽमृतं जुहोमि स्वाहा इति ॐ  
 इदं विष्णुर्विक्रमत्रेधानिदं धेनुदमा समूढमस्य पात्रं सुरे स्वाहा ॥ इति च पठित्वा ॐ विष्णो हव्य ठरक्ष इत्यनया विप्रांशुष्टमन्त्रेऽगाह्य इदमन्नम् इमा  
 आपः इदमाल्यम् इदं हवित्युक्त्वा ॥ ॐ अपहताऽअसुराक्षः ॥ इति यवान् पात्रपरितो विकीर्य एवमेव द्वितीयपात्रस्थमन्नं संस्कृत्य  
 वामकरणेन भोजनपात्रद्वयमालभ्य कुरुत्रययवजलान्यादाय ॐ अद्यामुकात्रास्मन्मात्रादित्रयपित्रादित्रयमातामहादित्रयनादिशास्त्रसंबंवि  
 नः सत्यवसुनामानोविश्वेदेवाः इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं परिषिष्टं परिषिष्टमाणं च द्विजयोस्तृतिपयतम् अमृतरूपं वोनम इतिसकल्यविपदक्षि  
 णभागे जलसमुत्सृजेत् ॥ एवमेव मात्रादिपात्रद्वयं क्रमेण विप्रांशुष्टाऽगाहनयवविकरणैः संस्कृत्य भोजनपात्रद्वयमालभ्य ॐ अद्यामुकात्राऽस्म  
 न्मातृपितामहीप्रापितामहोऽमुकाऽमुकदेव्यो नदिमुल्य इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं परिषिष्टं परिषिष्टमाणं च द्विजयोस्तृतिपयतं तममृतरूपं  
 त्रेधा विभज्य वः स्वाहनमः ॥ इत्युत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादिपात्रद्वयमातामहादिपात्रद्वयं क्रमेण पात्रालंभनादिपूर्वकं संकल्य दद्यात् ॥  
 ततः ॐ अन्नहो न क्रियाहीनं विधिर्हीनं च यद्भव ॥ तत् सर्वमच्छिद्रमस्तु इति श्राथ्यं ॥ विप्रात्रादिं सुवान्मात्रादिरूपान्ध्यात्वा देवपूर्वकं ब्राह्मणा

नामापाशानंदत्वा यथासुखं शुषध्वमित्युक्ताभोजयेत् । ततः अश्रुत्सु विप्रेषु प्रागग्रकुरोत्तरासनोपविष्टः प्रणवव्याहृतित्पूविकासकृद्विगायत्री  
जप्त्वा ॐ मधुमधुमध्वितिचजपेत् न मधुवाता इति वृचं न पित्रनुमंत्रान् ततः ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नपृथ्वीय्याहिराजेषामवाँ इमेन ॥  
तृचीमनुप्रसितिन्द्रणानोस्तासि विवद्वयसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ ॐ तर्वभ्रमासऽआशुयापतन्यनुस्पृशधृषताशोचानः ॥ तपूऽप्यग्रे  
जुहोतुतद्भानसिन्दोर्विर्मृजविविष्वगुल्काः ॥ २ ॥ प्रतिस्पृशो विर्मृज तूर्णतमोभवोपधुर्विशोऽस्मयाऽअदब्धः ॥ योनोर्देऽअवशोऽ  
सोयोऽअन्यभ्रमाकिष्टव्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्नेतिष्ठप्रत्यातनुष्वन्यमित्राँरओषतात्तिग्मेतो । योनोऽअरातिठसमिधानचक्रे नीचातर्ध  
क्ष्यतसन्नशुर्षकम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वोभवेत्प्रतिविद्वद्याद्वयस्मदाविष्कृणुष्वदेव्यान्यगने ॥ अवीस्थिरातनुहियातुनूनामिमजामिर्मृणीहिशत्रून् ॥  
अग्रद्वृतेजसासादयामि ॥ ५ ॥ इतिरक्षात्रमूक्तम् ॥ ॐ पुनन्तुमादेवजनादित्यादिप्रवमानम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षापुरुषइत्यादिपुरुषमूक्तम् ॥  
अन्यानि शिवसंकल्पमास्त्वित्यादिपवित्राणिचजपेत् ॥ ततस्तृतान् ज्ञात्वा सर्वव्यञ्जोपेतमन्त्राद्यमादाय वारिणाशुव्यप्राग  
ग्रान्तुतकुशोपरि ॥ ॐ अग्निदग्गयश्च्येजीवायेप्यदग्धाः कुलमम ॥ भूमौ दत्तेन तप्यन्तु तृतायां तु परांगतिमिति विकीर्यथैन्द्राचम्य  
विष्णुमनुस्मृत्य विप्रभ्यः सकृत्सकृदगोदत्त्वापूर्वत् गायत्री मधुमधुमध्वितिजस्ता ॐ संपन्नम् इति ब्राह्मणानुष्टुप् ॥ सुसंपन्न  
मिति तैरुक्ते ॥ शेषमन्नं किंक्रियतामिति पृष्ट्वा ॥ इष्टैः सह भुज्यतामित्यनुज्ञातः पिंडानहं करिष्ये इति पृच्छेत् ॥ कुरुष्व इत्युक्ते  
भोजनशालायाबहिः चतुरस्रं प्राकृष्टवासिकताभिर्मंडलयकृत्वा तन्मध्ये ॐ अपहताऽअमुराक्षाँसि वेदिषदः ॥ इति प्रागग्रं रेवात्रयकृत्वा

प्रत्येकरोषोपारि अयैरुपाणिप्रतिमुञ्चमाना अमुताः संतः स्वाहयाचरति परापुरोनिपुरायभरन्त्यग्निष्टालोकां प्रणुदात्यस्मादित्यं  
 गांश्रामयेत् ॥ तत्रोवात्रयोपारि सकृदाच्छिन्नान् प्रागग्रान्कुशानास्तीर्थ ॥ ॐ देवताभ्यइतित्रिजस्वाप्रथममंडलस्थदर्म  
 मूले ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेविनांदीमुखि अत्राऽवनेनिश्चतेस्वाहा इतियसहितजलेन मात्रे अवनेजनंदत्वाएवमेव पितामहा  
 प्रपितामहीभ्यामप्याग्रयोःक्रमेण दद्यात् ॥ ततः ॐअद्यामुकगोत्रपितरमुकशर्मन् नदीमुखवात्रावनेनिश्चतेस्वाहा इतिद्वितीय  
 मंडलस्थितकुशत्रयमूलेऽवनेजनंदत्वा एवपितामहप्रपितामहयोस्तत्तत्कुशमध्याग्रयोरेवनेजनंदद्यात् ॥ एवमेव मातामहादिदर्ममूलम  
 ध्याग्रेषु दद्यात् ॥ ततःसर्वव्यजनोपेतं सर्वविधमन्नमुद्धृत्यदधिबदयैवः संमिथ्य नवापिंडान् बिल्वोपमात्रिमाय एकपिंडं कुशादीश्चा  
 दाय ॐअद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि नदीमुखि एतदधिबदराक्षतामिश्रः पिंडस्तेनमः ॥ इत्यवनेजनक्रमेणावनेजनस्थानेषु मात्रादिभ्यः  
 पिंडान्दद्यात् ॥ ततः ॐअद्यामुकगोत्र पितरमुकशर्मन् नदीमुख एतदधिबदराक्षतामिश्रः पिंडस्तेनमः ॥ इति पितृस्थानेदद्यात् ॥ एवमेव  
 पितामहादिभ्यः पंचभ्यस्तत्तदवनेजनस्थाने पिंडान् दद्यात् ॥ ततोदर्ममूलेषु पाणिस्थं पिंडलेपनिमृज्य ॥ हस्तौप्रक्षाल्याचम्य हारिश्म  
 रेत ॥ ततो मात्रादिपिंडाभिमुखोजलिबद्धा ॥ ॐअत्रमातरोमादयध्वंयथाभागमावृषायध्वमितिजपित्वा उदङ्मुखीभूयश्वासनियम्यप्र  
 दक्षिणंपरावृत्त्या ॐअर्भमंदमातरैर्यथाभागमावृषायिषतेजपते एवं पित्रादिपिंडाभिमुखः ॐअत्रपितरोमादयध्वमित्यादिजपित्वा ॥  
 मातामहादिपिंडाभिमुखोभूत्वा ॐअत्रमातामहादयोमादयध्वमित्यादिचजपित्वा प्रदक्षिणंपरावृत्त्योदङ्मुखोऽस्मिन्नियम्य तथैवपरावृत्त्य

नामापाशानंदत्वा यथासुखं शुषध्वमित्युक्ताभोजयेत् । ततः अश्रुत्सु विप्रेषु प्रागग्रकुरोत्तरासनोपविष्टः प्रणवव्याहृतित्पूविकांसकृद्भिर्गायत्री  
जप्त्वा ॐ मधुमधुमध्वित्च जपेत् न मधुवाता इति वृचं न पित्रनुमंत्रान् ततः ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नपृथ्वीय्याहिराजेषामवाँ इमेन ॥  
तृतीमनुप्रसितिन्द्रणानोस्तासि विवद्वयस्सस्तापिष्टैः ॥ १ ॥ ॐ तव ब्रह्मासऽआशुयापतन्यनुस्पृशधृषताशोचानः ॥ तपूऽप्यग्रे  
जुहोतु ब्रह्मनसि नो विवद्वयस्सस्तापिष्टैः ॥ २ ॥ प्रतिस्पृशो विवद्वज तूष्णतमो भवो पृथिव्यशोऽअस्याऽअदब्धः ॥ योनो देरेऽअवशोऽ  
सो योऽअन्यग्रे माकिष्टव्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्नेतिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यमित्राँ २ ओषतात्तिग्मेतो योनोऽअरातिठसमिधानचक्रे नीचातर्धं  
क्ष्यतसन्नक्षुर्धम् ॥ ४ ॥ उध्वो भव प्रप्रति विद्वद्याद्वयस्मदा विष्कृणुष्वद्वयान्यग्रे ॥ अवास्थिरातनुहियातु नूनं आमिमजाभिर्मयमृणीहि शत्रून् ॥  
अग्रद्वृतेजसासादयामि ॥ ५ ॥ इति रक्षात्रमूक्तम् ॥ ॐ पुनन्तु मा देव जना इत्यादि प्रवमानम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुष इत्यादि पुरुषमूक्तम् ॥  
अन्यानि शिवसंकल्पमास्त्वित्यादिपवित्राणि च जपेत् ॥ ततस्तृतान् ज्ञात्वा सर्वव्यञ्जोपेतो मन्त्राद्यमादाय वारिणाशुव्यप्राग  
ग्रास्तुतकुशोपरि ॥ ॐ अग्निदग्गयश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूमौ दत्तेन तप्यन्तु तृतायां तु परांगतिमिति विवकीर्यथैन्द्राचम्य  
विष्णुमनुस्मृत्य विप्रभ्यः सकृत्सकृदगोदत्त्वा पूर्ववत् गायत्रीं मधुमधुमध्वित्जप्त्वा ॐ संपन्नम् इति ब्राह्मणान्पृष्ट्वा ॥ सुसंपन्न  
मिति तैरुक्ते ॥ शेषमन्नं किंक्रियतामिति पृष्ट्वा ॥ इष्टैः सह भुज्यतामित्यनुज्ञातः पिंडानहं करिष्ये इति पृच्छेत् ॥ कुरुष्व इत्युक्ते  
भोजनशालायाबहिः चतुरस्रं प्राकृष्टवासिकताभिर्मण्डलत्रयं कृत्वा तन्मध्ये ॐ अपहताऽअमुराक्षोऽसि वेदिपदः ॥ इति प्रागग्रं रखात्रयं कृत्वा

ततोयत्पापं तत्रतिहतमस्त्विति भूमौनिषिच्यद्विपदचतुष्टयेभ्यः शान्तिर्भवत्वित्युक्त्वा ॥ मात्रादि प्रथमब्राह्मणकरं द्वितीय ब्राह्मणकरे कृत्वा ॥ नंदीमुख्योमातरः पितामहः प्रपितामहः प्रीयतामितीशरीरयवोदकमक्षयस्थाने दत्तैवमेवपितरः पितामहाः प्रपितामहाः प्रीयतामिहि पित्रादिद्विजद्वयकरे दत्त्वा ॥ मातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः प्रीयतामितिमातामहाद्वित्रयद्विजद्वयकरेच प्रत्येकं दद्यात् ॥ ततःकृतांजलिः प्रार्थयेत् ॥ अ०अवोरापमातरः संतु ॥ संत्विति ब्राह्मणाब्रूयुः ॥ अ०अवोराः पितरः संतु ॥ अ०अवोरापमातामहाः संत्वितिचेक्त्वा ॥ संत्वित्यनुज्ञातः अ०गोत्रेनोवद्वतामितिप्रार्थयेत् ॥ वद्वतामितिप्रब्रूयुः ॥ दाता रेनोभिषद्वताम् ॥ वेदाःसंततिरेवच ॥ श्रद्धाचनोमव्यगमत् ॥ बहुदेयवचोऽस्तु ॥ अन्नचनोबहुमेव ॥ अतिथीश्चलभेमहि ॥ याचिता रश्चनःसंतु॥ माचयाचिष्मकंचन ॥ एताःसत्याआशिषःसंतु इतिब्रूयात् ॥ सत्त्वितिरुक्ते ॥ सपवित्रान्कुशान् प्रत्येकमात्राद्वित्रयपिंडेपित्राद्वित्रयपिंडे मातामहाद्वित्रयपिंडेच धृत्वनंदीमुखीमातृपितामहीप्रपितामहीः नंदीमुखान् पितृपितामहप्रपितामहान् नंदीमुखान् मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहान् सपत्नीकान्स्वाहा वाचयिष्य इतिपृष्ट्वाच्यतामित्यनुज्ञातः ॥ अ०नंदीमुख्योमातृपितामहीप्रपितामहोनंदीमुखाः पितृपितामहप्रपितामहाःनंदीमुखामातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहसपत्नीकाश्चप्रीयतामितिप्रार्थयेत् ॥ प्रीयतामितिद्विजैरुच्यमानोपिंडेषु जलनिर्षेचेत ॥ ततःसंस्त्रवपात्राण्युत्तानीकृत्यदेवदक्षिणां दद्यात् ॥ कुशत्रयवजलान्यदाय अ० अद्यास्मन्मात्राद्वित्रयपित्राद्वित्रयमातामहाद्वित्रयभ्युदधिकश्राद्धसंवाधिवैश्वदेविकश्राद्धप्रातिष्ठार्थमिमांदाक्षामलकाद्रकमूलकादिरूपदक्षिणाविष्णुदेवत्यामसुकुंगोत्राभ्यामसुकामुक शर्मभ्यांभवद्वादिंतुमहस्तुजे इत्युच्चार्य देवविप्रद्वयकरयोर्दद्यात् ॥ ततः अ०अद्यासुकुंगोत्राणामातृपितामहप्रपितामहीनां नंदीमुखीनां कृतै

नामापाशानंदत्वा यथासुखं शुषध्वमित्युक्ताभोजयेत् । ततः अश्रुत्सु विप्रेषु प्रागग्रकुरोत्तरासनोपविष्टः प्रणवव्याहृतित्पूविकांसकृद्भिर्गायत्री  
जप्त्वा ॐ मधुमधुमध्वित्च जपेत् न मधुवाता इति वृचं न पित्रनुमंत्रान् ततः ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नपृथ्वीय्याहिराजेषामवाँ इमेन ॥  
तृतीमनुप्रसितिन्द्रणानोस्तासि विवद्वयसस्तपिष्ठः ॥ १ ॥ ॐ तव ब्रह्मासऽआशुयापतन्यनुस्पृशधृषताशोचानः ॥ तपूष्यग्रे  
जुहोतु ब्रह्मनसि नो विवद्वयसस्तपिष्ठः ॥ २ ॥ प्रतिस्पृशो विवद्वयसस्तपिष्ठः ॥ ३ ॥ यो नो देवऽअवशो  
सो योऽअन्यभ्रमाकिष्टव्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्नेतिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यमित्राँ २ ओषतात्तिग्मेतो यो नोऽअरातिठसमिधानचक्रे नीचातर्ध  
क्ष्यतसन्नक्षुर्धम् ॥ ४ ॥ उध्वो भव प्रप्रति विद्वद्याद्वयस्मदा विष्कृणुष्वदेव्यान्यगने ॥ अवास्थिरातनुहियातु नूनं आमिमजाभिर्मयमृणीहि शत्रून् ॥  
अग्रद्वृतेजसासादयापि ॥ ५ ॥ इति रक्षात्रमूक्तम् ॥ ॐ पुनन्तु मा देव जना इत्यादि प्रवमानम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुष इत्यादि पुरुषमूक्तम् ॥  
अन्यानि शिवसंकल्पमास्त्वित्यादि पवित्राणि च जपेत् ॥ ततस्तृतान् ज्ञात्वा सर्वव्यञ्जोपेतो मन्त्राद्यमादाय वारिणां हव्यप्राग  
ग्रान्तुतकुशोपरि ॥ ॐ अग्निदग्धयश्च्येजीवा येऽप्यदग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूमौ देतेन तप्यन्तु तृतायां तु परांगतिमिति विवकीर्यथैन्द्राचव्य  
विष्णुमनुस्मृत्य विप्रभ्यः सकृत्सकृदगोदत्त्वापूर्वत् गायत्री मधुमधुमध्वित्जप्त्वा ॐ संपन्नम् इति ब्राह्मणान्पृष्ट्वा ॥ सुसंपन्न  
मितितैरुक्ते ॥ शेषमन्नं किंक्रियतामिति पृष्ट्वा ॥ इष्टैः सह भुज्यतामित्यनुज्ञातः पिंडानहं करिष्ये इति पृच्छेत् ॥ कुरुष्व इत्युक्ते  
भोजनशालायाबहिः चतुरस्रं प्राकृष्टवासिकताभिर्मण्डलत्रयं कृत्वा तन्मध्ये ॐ अपहताऽअमुराक्षोऽसि वेदिषदः ॥ इति प्रागग्रं रखात्रयं कृत्वा

दत्त्वा अपराद्धे ब्राह्मणान्स्नतान् शुचिः शुक्लद्विवासाः कृतांजलिः स्वागतं भवतामिति ब्रूयात् सुस्वागतमिति तैरुक्ते पूर्वकृतगोमयमंडलद्वये  
 आसनेषु प्राङ्मुखान् देवब्राह्मणान् उदङ्मुखान् पितृब्राह्मणानुपवेशयेत् ॥ ततः सव्येनऽऽचम्य सजवनं दक्षिणं जान्वाच्य विप्रकरं पुष्पचं  
 दन्तां बूला निदत्त्वा दक्षिण करेण ब्राह्मणदक्षिणजनुस्पृष्ट्वा ॥ देशकालौ संकीर्त्य अवधकारिष्यमाणऽन्वष्टकाश्राद्धेऽस्मत्पित्रादित्रयसंबन्धि  
 विश्वेदेवशाद्व्यर्थं त्वामहमामत्रये इति ब्राह्मणमंक्रान्तिमंत्र्य एवमेवमात्रादित्रयमातामहादित्रयसंबन्धि विश्वेदेवशाद्व्यर्थं च विप्रद्वयनिमंत्रयेत् ॥  
 निर्मात्रितोऽस्मीति प्रातिवचनम् ॥ ततः अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः ॥ भवितव्यं भवद्भिश्च भयाचश्राद्धकारिणा ॥ इति प्रार्थयेत् ॥  
 ततोऽप्यसव्येन वामजान्वाच्य पितृब्राह्मणकरे पुष्पचंदन्तां बूला निदत्त्वा दक्षिण करेण विप्रदक्षिणजानुस्पृष्ट्वा अं अवधकारिष्यमाणान्वष्ट  
 काश्राद्धेऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धार्थं त्वामहमामत्रये निर्मात्रितोऽस्मीति प्रातिवचनम् ॥ एवमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धद्व्यर्थं च द्वौ  
 विप्रौ निमंत्र्य ततः अक्रोधनैः शौचपरैरिति नियमान् श्रावयेत् ॥ एवमस्मिन् पक्षे पद्मब्राह्मण भवन्ति ॥ मुख्यं कल्पशक्तस्तु पंचदशश्राद्धां  
 एकादशवाविप्राप्तिमंत्रयेत् ॥ ततः सव्येन अं विश्वेदेवाः इदं देवः पादं स्वाहानम इति देवि विप्रपादौ क्रमेण प्रक्षाल्य पादयोर्ग्रथं दत्त्वा तभ्य आच  
 मनां जलं दद्यात् ॥ ततोऽप्यसव्येन अं अमुकगोत्राऽस्मत्पितृपितामहाऽमुकसुकुशर्मणोऽसुरद्रादित्यरूपाः इदं देवः पादं स्वच  
 नमः इत्युच्चार्य पितृब्राह्मणपादौ प्रक्षाल्य एवमेव मात्रादित्रयमातामहादित्रयब्राह्मणद्वयस्य क्रमेण पादौ प्रक्षालयेत् ॥ ततोऽपि गोत्राभ्यामर्घ्य  
 माचमनीयं च पूर्वोक्तपावणं बद्ध्वा सव्येन स्वयमाचम्य ब्राह्मणैः सह श्राद्धस्थानमागत्याऽऽसनेषु अत्रासध्वमिति देवान् प्राङ्मुखान् पितृनुद  
 ङ्मुखानुपवेशयेत् ॥ ततः प्रत्यासनसमीपे तिलतलेन दीपं प्रज्वाल्य काक्कुट्टदीपं न सारयेत् ॥ श्राद्धे देशवरणं च कुर्यात् ॥ इति निमंत्रणप्र

कारः ॥ ततः श्राद्धकर्त्तास्वाप्तनेप्राङ्मुखउपविश्य सव्येनाचम्य अ० अपवित्रः पवित्र इति अ० पुंडरीकाक्षः पुनात्विचिच पठित्वाश्राद्धीय  
द्रव्याणिस्वात्मानंचर्षित्व ॥ ततः अ० वैष्णव्यैनमः अ० काश्यप्यैनमः अ० अक्षययैनमः अ० भूयैनमः इतिनत्वा अ० भगवत्यैगयायै  
नमः ॥ अ० भगवतेगदाधरायनमः इतितयोनमस्कारंकुर्यात् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौसकीर्ये अ०  
अद्यामुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रापितामहानाममुकशर्मणाममुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रापितामहीनाममुककुब्जैनाममुक  
गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुकसुकशर्मणां सपत्नीकानां विश्वेदेवपूर्वकं सपिंडकमन्वष्टकाश्राद्धं पिंड  
पितृयज्ञव्यतिरिक्तपार्षणविधानेनपितृवृत्तिकामोहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य अ० कुरुष्व इतिब्राह्मणानुज्ञातो गायत्रीत्रिजपित्वा अ०  
देवताभ्यहतित्रिजपेत् ॥ ततः अ० नमोनमस्तेगोविंद पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदंश्राद्धंहृषीकेश रक्षतसर्वतोदिशः इति ॥  
देवकप्रदेशयगौरसर्षपांस्विकीर्य अपसव्येन अ० तिलारक्षतु असुरादभरिक्षंतुरक्षसात् ॥ वह्निवैश्रोत्रियंसदतिथिः सर्व्वक्षक इति  
तिलकुशान्नद्वारादेशोक्षिवा अ० अग्निष्वात्ताः पितृगणा इत्यादिमंत्रैः सर्वत्रपैतृकप्रदेशेतिलान् गौरसर्षपांश्चविकीर्य्यदक्षिणवामवाकटि  
भागेनीवीबंधंकुर्यात् ॥ ततःसव्यंकृत्वा अ० यदेवा देवेहृदनामित्यादिकूष्माण्डमंत्रैर्जलमभिमन्त्रयेतेनदभैःपाकादीनप्राक्ष्य हरयेनिवे  
दयेत् ॥ अथासनादिदानम् ॥ तत्रतावत् उद्धृमुखेदक्षिणंजान्वाच्यज्ज्ञोपवीतंजलयवसमन्वितमृजुकुशत्रयमादाय अ० अद्यापित्रादित्रय  
श्राद्धसंबंधिनाविष्वदेवाद्दमासंवीनमइत्युच्चार्य्यद्विजहस्तेजलमासिच्य आसनदक्षिणभागस्योपरिदेवतीर्थेनपूर्वाग्रकुशत्रयप्रक्षिपेत् ॥  
एवंमात्रादित्रयमातामहादित्रयसंबंधिदेवेभ्योपिदद्यात् ॥ ततोदक्षिणामुखः प्राचीनवीती यातितवामजानुः द्धिगुणमुग्रकुशत्रय



तिलजलान्यादाय ॐ अथासुकगोत्राऽस्मात्पितृपितामह्यपितामहाऽसुकशुक्रशर्मणोऽसुरद्रादित्यरूपा इदमासनत्रेधाविभज्युष्मभ्यं स्वधा ॥ इत्युच्चार्य विप्रहस्तेजलं दत्वा कंबलाद्यासनवामभागस्थोपरि पितृतीर्थेन मोटकं दक्षिणग्रमुत्तरेजेत् ॥ एवमेव मात्रादिमातामहादिवर्गद्वयब्राह्मणसतोपरि दद्यात् ॥ ततः सव्यादिना ॐ विश्वेदेवानवाहयिष्ये इति देवब्राह्मणं पृष्ट्वा ॐ आवाहय इत्यनुज्ञातः सयक्करोद्विजहृष्टुर्हान्वा ॐ विश्वेदेवासऽआगतशृणुतामऽमर्तह्वम् ॥ एवं बर्हिर्विषिदत् ॥ इत्यावाह्य ॐ यवोऽसियवयास्मद्भयोऽयवयारातीरित्येनयनवान् विकीर्य ॐ विश्वेदेवाः शृणुत मर्तह्वम् मेऽन्तरिक्षेऽप्यविद्यायेऽअग्निजिह्वाऽउतवायजत्राऽआसद्यास्मिन् न बर्हिषिमादयध्वम् इति जपेत् ॥ ॐ आगच्छतु महाभागा विश्वेदेवामहाबलाः ॥ येयत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवतु इति श्लोकं च पठेत् ॥ ततोऽप सव्यादिना ॐ पितृनावाहयिष्ये इति पितृवर्गब्राह्मणं पृष्ट्वा ॐ आवाहयेत्यनुज्ञातः सतिलकरो ब्राह्मणदक्षिणां गुष्टुर्हान्वा ॐ उशनस्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि ॥ उशह्युशतऽआवहपितृन् हविषेऽन्तेत्रे ॥ इत्यावाह्य ॐ अपहताऽअमुराक्षाः ॐ सिव्येदिषदः ॥ इति तिलान् विकीर्य ष्वमेव मात्रादिमातामहादिवर्गब्राह्मणयाश्च त्रैलोक्ययोगेण ॐ मातृहविषेऽन्तेत्रे ॥ मातामहाहविषेऽन्तेत्रे इति मंत्रो हेनयथाक्रमं मात्रादीन्मातामहादंश्चावाह्य ॥ तिलान् विकीर्य ॐ आयन्ननुतः पितरः सोम्यासोऽग्निज्वालाः पथिभिर्देवयानैः ॥ आस्मिन् द्यूज्ञे स्वधयापदन्ताधिष्ठुवन्तु देवं त्वस्मान् ॥ इति जपेत् ॥ ततः सव्यापसव्याभ्यां देवधूतं कष्टमुपात्रेषु प्रातिपात्रपवित्रमेकं निधाय ॐ शत्रुदेवीरिभ्यश्च आपो भवन्तु पीतये शय्योरिभिसवन्तु नः ॥ इति प्रत्येकं पात्रेष्वपो निषिष्य ॐ यवोऽसियवयास्मद्भयोऽयवयारातीरिति देवपात्रेषु याब्रिक्षिप्य पित्रादिपात्रत्रये ॐ तिलोऽसिमा देवतयो गोसवो देवनिर्मितः ॥ प्रान्तमाद्भिः शुक्तः स्वधयापितृल्लोकान्प्रीणाहिनः स्वयानमः इति तिलान्प्रक्षेपेत् ॥ ततः सर्वत्र तूष्णीं गंधपुष्पाणि दत्त्वा सर्वेन अर्घ्यपात्रं

संपन्नमिति ब्रूयात् सुसंपन्नमित्यनुज्ञातोदेवार्घपात्रांमहस्तेकृत्वा तत्रस्थपवित्रं देवविषयकंप्रागप्रधृत्वा पात्रंदक्षिणहस्तेनच्छाद्य अय्यादिव्या  
ऽआपःपयसासंबभूवुर्य्यऽअन्तरिक्षालतपार्थिवीर्य्यः॥हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआपःशिवःसठस्योनाः सुहवाभवन्तु ॥ इत्यग्निमय्य कुश  
त्रययवजलान्यादाय अस्मात्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनोविश्वदेवाएवहस्ताघ्नोन्नमः इति देवतीर्थेनपवित्रोपरिअर्घदद्यात् ॥ एवमेव मातृ  
वर्गमातामहवर्गदेवभ्योऽर्घदद्यात् ॥ अर्घपात्राणिसपवित्राणिपुरतः स्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना अर्घपात्रसंपन्नसुसंपन्नमित्यनंतरंपि  
तुपात्रं गृहीत्वाविप्रदक्षिणकरे पवित्रमुत्तराग्रंदत्त्वापात्रंदक्षिणहस्तेनच्छाद्य अय्यादिव्याऽआप इतिपठित्वाद्दिगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्या  
दाय अमुकगोत्रास्मत्पितृपितामहत्रापितामहमुकशर्माणोवसुरुद्रादित्यरूपाएवहस्ताघ्नोन्नमः इति पितृतीर्थे  
नपवित्रोपरि अर्घदद्यात् ॥ अर्घपात्रंचपुरतःस्थापयेत् ॥ एवमेव मात्रादिभ्यो मातामहेभ्यश्चदद्यात् ॥ ततःसव्येनपित्राद्यर्घपात्रजलेनशिरः  
संमृज्य अं विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्थानमसीत्युक्त्वापवित्रजलयुतंदेवार्घपात्रत्रयक्रमेणब्रह्मणःदक्षिणपार्श्वेऽन्तानमेवस्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्येन  
अं पितृभ्यः स्थानमसीतिपितृपात्रं विप्रवामप्रदेशभूमवधेमुत्संस्थापयेत् ॥ एवम् अमातृभ्यः स्थानमसि ॥ अमातामहेभ्यःस्थानमसीति  
चोक्त्वास्वस्वविप्रवामपार्श्वं न्युज्जुयात् ॥ एतानिस्थापितान्यर्घपात्राणिदक्षिणादानपर्यंतनोद्धरेन्नचालयेत् ॥ अथगंधादिदानम् ॥ तत्र  
सव्यादिकृत्वा देवविषयकेषुजलमासिच्य गंधपुष्पधूपदीपवस्त्रादिप्रत्येकंधृत्वा कुशत्रययवजलान्यादाय अं अद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्ध  
संबंधिनोविश्वदेवानांगंधपुष्पधूपदीपतद्बूलयज्ञोपवीतवासाम्निवोन्नमः इत्युच्चार्यथाविभवंदद्यात् ॥ एवमेवमात्रादिमातामहादिदेवे  
भ्योऽपिसंकल्प्यदद्यात् ॥ ततः अयंवो गंधः इत्यभिघायब्रह्मणहस्तेषुप्रत्येकंगंधमर्पयेत् ॥ अं सुगंध इतितैरुक्ते ॥ अं इमानिवः पुष्पाणि

इतिपुष्पाणिनिवेद्येत् ॥ अमुपुष्पाणीतिरुक्ते ॥ अयवोधूपः ॥ अमुधूपः ॥ अयवोदीपः ॥ अमुदीपः ॥ अमुतानिवोवासा  
 सि ॥ अमुसुवासि इतिरुक्ते ॥ इत्यादिक्रमेणप्रत्येकं ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपादयेत् ॥ तैश्चपुष्पशिखातिरुक्ते न धार्यम् ॥ ततः कृता  
 जलिः कर्ता विधेयादेवानमर्चनसंपूर्णमस्त्वितिद्विजान् प्रतिब्रूयात् ॥ अस्तवर्चनसंपूर्णमितिद्विजान्ब्रूयुः ॥ ततोऽपसव्यादिना पित्रादि  
 विषयैर्गुजलमासिच्यगंधपुष्पादिप्रत्येकं सविधाय द्विगुणं शुश्रूषयतिलजलान्यादाय ॥ अमुकगोत्रास्मत्पितृपितामहप्रपितामहसु  
 कामुकर्गोत्राणिवसुरुद्रादित्यरूपएतानिगंधपुष्पवपुदीपतंबूलयज्ञोपवीतवासोसिन्धेवासिभज्ययुग्मभ्यंस्वधा ॥ इति पित्रादिन्योगंधाद्यु  
 त्तुज्य एवमेव मात्रादिभ्योमातामहादित्यः सपत्नीकैभ्यश्चदद्यात् ॥ ततः ॥ एषवेगंधः ॥ अमुतानिवःपुष्पाणीत्यादिपूर्वात्क्रमेणपित्रा  
 दिब्राह्मणेभ्यःप्रत्येकं गंधादिप्रतिपाद्यप्रतिवचनानन्तरं कृताजलिर्भूत्वा ॥ अमुपितृणामर्चनसंपूर्णमस्त्वितिद्विजान्प्रतिब्रूयात् ॥ अस्तवर्चनसं  
 पूर्णमिति विप्रवद्वयुः ॥ एवंगंधाद्यर्चनविधायसव्याऽपसव्याभ्यां भोजनपात्रस्थापनदेशंसमाज्यं गौरमृत्तिकयाजलेनवाभस्मनीवारचूणा  
 दिभिर्वाभंडलप्रत्येकं कृत्वा भोजनपात्राणि च दत्त्वा हस्तप्रक्षालनार्थं प्रत्येकं जलं दद्यात् ॥ ततोऽष्टुनक्षुनमंत्रं कोस्यपात्रे कृत्वा आद्रमलकमात्र  
 गृहीत्वा ॥ अग्नौऋणं करिष्य इति पितृब्राह्मणं पृष्ट्वा कुरुध्वेत्यनुज्ञातः पितृणां विप्रकरे अपात्रकजलेऽपसव्येन दक्षिणां भिभुवः ॥  
 अमुप्रयेकव्यवाहनाय स्वाहा इदमप्रयेकव्यवाहनाय ॥ अमुसोमायपितृमते स्वाहा इदं सोमायपितृमते इत्याहुतिद्वयं जुहुयात् ॥ ततोऽदुतश  
 पितृमन्त्रं देवपात्रवर्जमात्रादिपात्रेषु किंचित्कापि दत्त्वा पिडां पिडां च वशयेयत् ॥ नहिरमृताः शेषभाजो विश्वेवाः पुराणैरिति वायुपुराणात् ॥  
 ततः सव्येन देवपात्रेषु अपसव्येन पितृपात्रेषु चाऽपुष्पाद्युष्मन्त्रं सधृतम् अनेकव्यञ्जनयुतं यथावत्परिविष्य सजलपात्रं च मस्यायमनुमतिमि

धार्य्य ॐ मधुवाताऽकृतयते इत्यादिमन्त्रयेण ॥ ॐ मधुमधुमाध्वितिचाभिंमन्त्रयेत् ॥ ततः सव्येनउत्तानपाणिभ्यापित्रादिदेवपात्रामल  
 भ्य ॐ पृथिवीतेपात्रद्वारपिधानं ब्राह्मणस्यमुखेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमिस्वाहा इति ॥ ॐ इदं विष्णुर्व्विक्रमत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपात्रं  
 सुरस्वाहा ॥ इतिचपठित्वा ॥ ॐ विष्णोहव्यठस्व इत्यनयाविप्रांशुमृगेश्वराह्य इदमन्नम् इमा आपः इदमज्यम् इदं हविर्विरत्युक्त्वा ॐ अप  
 हताऽअसुराश्चासिर्विदध ॥ इति यवान् अन्नपात्रपरितोविकीर्य्य वामेन करेण पात्रं स्पृशन् दक्षिण करेण कुशत्रययजलान्यादाय ॐ अब्बाऽ  
 स्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबोधनो विधेवः इदमन्नं हव्यं सोपस्करं परिविष्टपरिविध्यमाणं च ब्राह्मणतृतिपठ्यतम् अमृतरूपं वः स्वाहानमः ॥  
 इत्युदकं विप्रदक्षिणभोगेभूमावेवोत्सृजेत् ॥ एवमेव मात्रादिमातामहादिभ्योऽप्युत्सृजेत् ॥ ततोऽप्यसव्यादिना पितृपात्रं न्यबुज्या  
 णिभ्यांव्यस्ताभ्यां स्पृष्ट्वा ॐ पृथिवीतेपात्रद्वारपिधानं ब्राह्मणस्यमुखेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमिस्वधा इति पठित्वा ॐ इदं विष्णुर्व्विक्रम  
 त्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपात्रं सुरे ॥ इत्येतामृचंचजत्वा ब्राह्मणादुष्टमनसमघेमुखम् ॐ विष्णोऽकव्यठस्व इति यजुषाऽ  
 ब्रूनेवेश्य ॥ इदमन्नम् इमा आपः इदमज्यं इदं हविर्विरत्युक्त्वा ॥ ॐ अपहताऽसुराश्चासिर्विदधः ॥ इति तिलान् अन्नपात्रपरितो  
 वामावर्त्तेन विकीर्य्य वाम करेण पात्रं स्पृशन् ॥ ॐ अमुकगोत्रास्मत्पितृणितामहप्रपितामहाऽअमुकमुकशर्माणेवसुरह्रादित्यरूपाः इदं  
 मन्त्रं कव्यं सोपस्करं परिविष्टपरिविध्यमाणं ब्राह्मणतृतिपठ्यतम् अमृतरूपं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा ॥ इत्युदकं पितृतीर्थेन विप्रवामभोगेभूमौ क्षिपे  
 त् ॥ एवमेव मात्रादिभ्योमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यश्चाप्युत्सृजेत् ॥ ततः ॐ अन्नहानं क्रीयाहीनं विधिहीनं वयं देवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इति  
 प्रार्थ्य विप्रान् पितृरूपान् ध्यात्वा ब्राह्मणनामोपशानंदत्वा ॥ यथासुखं जुषध्वमित्युक्त्वा भोजयेत् ॥ ततः अश्वत्थुविश्वेप्रणवव्याहृतिपूर्व्व

शंसकृत्रिर्वागयत्राजित्वा अ० भधुवाताऽऽकृतायते॥ इति त्र्यचम् अ० भधुमधुमध्विचिचजपेदो॥ ततः सव्येन दक्षिणामुखः ॥ अ० कृणुष्वपजप्राप्तिम् इत्यादि रक्षोघ्नीः पंचक्रचपाठित्वा भूमितिलगास्तीर्थं अ० उदीरतामवरइत्यादि त्रयोदशपितृमंत्रान् अ० सहस्रशीर्षा इत्यादि पुरुषसूक्तं च अ० आहुः शिशानो इत्यादि सप्तदशमंत्रात्मकमप्रतिरथम् अ० सप्तव्याधा इत्यादिस्तोत्रं च पाठित्वा पूर्वोक्तसप्तार्चिस्तवपठेत्॥ अन्यान्यपि वैष्णवादिस्तोत्राणि यथाशी क्त्वा ह्येनान् श्रावयेत् ॥ ततस्तृप्तान् ज्ञात्वा अपसव्येन उच्छिष्टसन्निधौ विप्राणामग्रतो भूमिप्रदेशतत्र दक्षिणाग्र कुशत्रयमास्त्यै सर्वं प्रकारमंत्रसव्यं जनमुद्धृत्य सतिलमेकीकृत्य अ० अग्निदध्याश्च ये जीवा येऽयदध्याः कुले मम ॥ भूमौ तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परांगतिम् ॥ इति मंत्रेण कुशोपरितदग्निं विंशति ॥ ततः सव्यं कृत्वा आचम्य हस्ते स्मृत्वा आपसव्येनाविप्रैः प्रत्येकं पितृभूकं सकृत् सकृदपोदत्वा गायत्रीम् अ० भधुव्याताऽऽकृतायते इति त्र्यचं भधुमधुमध्विचिचजत्वा उभयान् विप्रान् अ० तृप्ताः स्थ इति पृष्ट्वा ॥ अ० तृप्ताः स्मः इति तैरुक्ते शेषमन्त्रां क्रियतामिति पृष्ट्वा ॥ इष्टैः सह भुज्यतामित्यनुज्ञातः पिंडानहं करिष्ये इति पृच्छेत् ॥ अ० कुरुष्व इत्युक्ते पित्रादिभोजनपात्रसन्निधौ चतुरस्रदक्षिणं पुंवरथानत्रयनिर्माय तेषु मध्यमे र्षिं पिंजलीमूलेन अ० अपहताऽऽसुरा रक्षाऽसिर्विषदः इति दक्षिणां प्रैत्वा त्र्यचं कृत्वा प्रत्येकं रेखोपरि अ० ये रूपाणि प्रतिमुंचमानाऽऽसुराः संतः स्वधया चरति ॥ परापुरो निषुग्ये भन्यग्निं ह्योक्तान् श्रुत्वा त्वस्मादित्यंगां प्राप्नुयेत् ॥ तत्र रेखोपरि स कृद्दक्षिणं दक्षिणं कुशत्रयं प्रत्येकं स्तार्त्वा सव्येन अ० देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽपसव्येन पुटकनवसुजलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा एकं पात्रं वा भरते कृत्वा द्विगुणमुभयं कुशत्रयं तिलजलान्यादाय अ० असुक्तां त्रस्मान् पितरमुक्ते शर्मन् वसु रूपाऽऽवनो निक्ष्वेत स्वधा इति कुशमूले पितृतीर्थेन पित्रे अवने जनजलं किंचिदवाशिष्य कृत्वा ॥ एवं पितामहाय कुशत्रयमभ्ये प्रपितामहाय कुशाग्रे अवने

जन्दद्यात् ॥ एवमेवमात्रादिभ्योमातामहेभ्यश्चदद्यात् ॥ ततः सर्वप्रकारमन्त्रमुच्यते पात्रे कृत्वा मध्याज्यतिलसर्वव्यंजनैः दत्तशेषात्रेन च संमिश्र्य नव  
पिण्डान् बिल्वोपमान्निर्मायमधुघृताभ्यामभिचार्य एकपिण्डं कुशादिश्चादाय ॐ असुकगोत्रास्मत्पितरमुकशर्मन्वसुरुपएततोपिण्डं स्वधा  
इति प्रथमावनेजनस्थाने पितृतीर्थं नदद्यात् ॥ एवमेव पितृमहायनप्रपितामहाय च दद्यात् ॥ ततः ॐ असुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवि णत्ते  
पिण्डं स्वधा इति मातृस्थाने दद्यात् ॥ एवमेव पितृमह्यादिभ्यः पंचभ्यस्तत्तद्वनेजनस्थाने पिण्डान् दद्यात् ॥ ततोऽर्भुमूलेषु पाणिस्थं  
पिण्डलेपम् ॐ लेपभागभुजः पितरस्तृण्यन्तु इति निमृज्य जलेन हस्तौ प्रक्षाल्य सव्येन त्रिराचम्य हारस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना  
त्रिपादिपिण्डाभिमुखं जल्लिखद्वा ॥ ॐ अत्र पितरोऽभ्यादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमिति पठित्वा वामावर्त्तेनोदङ्मुखीभूय प्रीतमनाः मना  
ऋक्षांसं नियम्य तथैव परावृत्य ॥ ॐ अमीमदन्ति पितरो यथाभागमावृषायिषत इति जपेत् एवं मात्रादिपिण्डेषु ॥ अत्र मातरमोदयध्वं यथा  
भागमावृषायध्वमिति जपित्वा मातामहादिपिण्डाभिमुखो भूत्वा ॥ ॐ अन्नमातामहादयोमादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमित्यादिपिण्डसमीपे  
जपेत् ॥ ततोऽवनेजनपात्रजलेन ॐ असुकगोत्रास्मत्पितरमुकशर्मन्वसुरुप अत्र प्रान्य वनेनिक्ष्वते स्वधा ॥ इति पितृपिण्डोपरि प्रान्य वनेजनं  
दत्त्वा एव पितृमहप्रपितामहाभ्यां ० ॥ ततः ॐ असुकगोत्रेऽस्मत् मातरमुकदेवि अत्र प्रान्य वनेनिक्ष्वते स्वधा इति मातृपिण्डोपरि दद्यात् ॥ एवमे  
व पितृमह्यादिभ्यः पंचभ्यस्तत्तपिण्डोपरि दद्यात् ॥ ततोऽनीर्वीक्षितस्य सव्येन आचम्य अपसव्यं कृत्वा ॐ नमोऽवः पितरो रसायनमोऽवः  
पितरः शोपायनमोऽवः पितरो जीवायनमोऽवः पितरः स्वययै नमोऽवः पितरो घोराय नमोऽवः पितरो मन्यवे नमोऽवः पितरः पितरो नमो वोगृहान्नः  
पितरो दत्तसतोऽवः पितरो देष्म इति पितृवर्गं नमस्कृत्य ॐ नमोऽवो मातरोरसाय इति मातृवर्गम् ॐ नमोऽवः पितरो रसाय इति पूर्वोक्तं नमाता

महर्गचनमस्कुयत् ॥ तत ॐ एतद्वः पितरोवास इति पितृपिंडेषु सूत्राणिदत्त्वा ॐ एतद्गोमातामहद्वयोवास  
इतिच मात्रादिषट्पिंडेषुप्रतिपिंडं सूत्रयं दद्यात् ॥ ततः कुशतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अमुकगोत्रास्मत्पितृपितामहप्रपितामहसुकासु  
कशर्माणवसुसुद्धादित्यरूपाएतानिवासिसिन्धेयविभज्यष्मभ्यं स्वधा इतिमृत्युस्तजेत् ॥ एवमेवमात्रादिभ्यः मातामहादिभ्यः सप्तविक्रै  
भ्यश्चोस्तजेत्॥ततः पित्रादीनुदिश्य तदीयापिंडेषु तूष्णींगंधपुष्पघृदपतंतूळदक्षिणादीनिदद्यात् ॥ पिंडशेषान्नचपिंडसमीपविक्रेत् ॥  
ततः पितृब्राह्मणपूर्वकं सर्वानाचमय्यवाचंविमृज्याद्विजक्रेषु ॐ शिवाआयःसंतु इतिसकृत्सकृजलंदत्वा ॐसौमनस्यमस्त्वितिपुष्पा  
णि ॥ अक्षतंचारिष्ट्वास्तु इतिव्यंश्चदद्यात् ॥ ततः ॐ अमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहनामसुकासुकरशर्माणंदत्तैतद्वयपानादि  
क्रमश्चय्यमस्तु॥इतिसतिलमक्षय्योदकंपितृविक्रयेदद्यात् ॥ एवमेव मात्रादीनामातामहादीनांसपत्नीकानांचनामगोत्राभ्यांदीयविप्रकरयोग  
क्षय्योदकंदद्यात् ॥ ततःसुव्यादनकृतांजलिःप्रार्थयेत्॥ॐ अघोराःपितरःसंतु इति॥ ॐअघोरामातरः संतु ॥ ॐअघोरागमातामहाःसपत्नी  
काश्चसंतु इतिचोक्ता संत्वित्राब्राह्मणनुज्ञातःप्राड्मुखः॥ॐगोत्रंनोवर्द्धतामितिवदेत्॥वर्द्धतामित्राब्राह्मणद्व्युः॥दातारोनेभिर्वर्द्धन्ताम् वेदांसं  
ततितरेच॥श्रद्धाचनोमाव्यगमतं बहुदयंचनोऽस्तु॥अन्नंचनोबहुभवेत् अतिथिश्चलभेमहा॥याचितारश्चनःसन्तु । माचयाचिष्मकंचन॥एतां  
सत्या आशिषः संतु इतिवदेत्॥सन्वितिरैरुक्ते॥अपसव्यंक्ष्वा॥पिंडोपासपवित्रान्कुशान्तीर्थस्वधावचियिष्ये इतिब्रूयात्॥ॐवाच्यतामि  
ति विप्रानुज्ञातः पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्योमातृभ्यः प्रमातृभ्योबृहद्रथमातृभ्योमातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्योबृहद्रथमातृमहेभ्यःसपत्नी  
कैभ्यश्चस्वधोच्यतामितिवदेत् ॥ अस्तुस्वधा इतिरैरुक्ते ॥ ॐउज्ज्वहरीरमृतधृतपयःकीलालपरिभुतम् ॥ स्वधास्थतर्पयतमपितृनितिसप



वित्रकुशोपरिदक्षिणाग्रांजलधारंदद्यात् ॥ ततः स्वयंयजमानोऽध्यपत्राण्पुनर्नाकृत्यसव्येन देवदक्षिणांदद्यात् ॥ कुशत्रययवजलांनिहिरण्यं  
 चादाय अ० अद्यास्मान्पित्रादित्रयसंबधिविश्वेदेवानां श्राद्धप्रतिष्ठाभिदं हिरण्यमाग्निद्वैत्यममुकगोत्राय मुकशर्मणं ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यम्  
 हंसप्रदं दे इत्युच्चार्य देवविप्रकरोदद्यात् ॥ एवमेव मात्रादिमातामहादिदेवश्राद्धार्थमपि दद्यात् ॥ ततोऽपसव्यादिकृत्वा अ० अद्या मुकगोत्राणामस्म  
 न्पितृपितामहश्रपितामहानाममुकगुः कुशर्मणं विसुरुद्रादित्यरूपाणां कृतैतद्वन्धकानि मित्तकर्णवर्णश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठाभ्यामिंदरजतंचंद्रवत्ये  
 ममुकगोत्राय मुकशर्मणं ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यम्हंसं प्रदेद॥ इति पितृवाहणकरोदद्यात् ॥ एवमुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामही  
 नममुकामुकदेवीनांकृतैतत् ० ॥ अमुकगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुकामुकशर्मणं सपत्नीकानंकृतैतत् ० इति ॥ मात्रादि  
 मातामहादिवर्गद्वयब्राह्मणकुर्योरपि दक्षिणांदद्यात् ॥ सर्वत्रस्वस्तीति वाचयेत् ॥ देवैरजतनिषेधः ॥ असंभवे फलमूलादिकंदद्यात् ॥ पिंडानुत्था  
 पयामि रथापय इत्यनुज्ञातः पिंडानुत्थाप्यस्थाल्यां निधाय वघ्राणंकृत्वा सकृदाच्छिन्नान्दर्भानुत्सुकंचवह्नौक्षिपेत् ॥ ततः सव्येन जलदानपूर्वकं  
 अ० विश्वेदेवाः प्रीयतामिति देवद्विजान् प्रार्थयेत् ॥ ते च अ० प्रायतां वा विश्वेदेवा इति ब्रूयुः ॥ ततोऽपसव्यादिना अ० अजो वा जेवत वा जिनो नो धनं पुंस्वि  
 प्राऽअमृतोऽऋतज्ञाः ॥ अस्वमध्वः पितृबतमादयध्वंतृप्तायातपथिभिर्देवयानैः ॥ १ ॥ इति मंत्रेण पितृब्राह्मणानुत्थाप्यतथैव देवद्विजान्विमृजेत् ॥  
 ततः कृतपादादिशौचानुभयान् ॥ अ० आमावाजस्य प्रसवे जगम्यादेर्मेघावाण्पृथिवींस्विक्षरूपे ॥ आमागंतां पितरां मातरां चामासोमोऽमृत  
 त्वेन गम्यादिति मंत्रेण विप्रान् प्रदक्षिणीकृत्याऽब्रज्यगृहंप्रविशेत् ॥ ततः सव्येन अ० देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति त्रिजपित्वा अपसव्येन श्लादी  
 पनिर्वापणंकृत्वा सव्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य पिंडान् गवादिभ्यादत्त्वाच्छिष्टमार्जनादिकारयेत् ॥ ततो वैश्वदेवबलिकर्मणीकृत्वा



प्रमादात्तुर्वर्तकर्म इति पठित्वाकर्मर्पितकामोविष्णुस्मरेत् ॥ ततोवैश्वदेवतिसुतभृत्यबाधवातिथिसंयुक्तः पितृशेषितमन्त्रमश्रीयत् ॥  
 तद्दिनेश्राद्धकर्तृभोक्तारौदृताध्वगमनमैथुनायासस्वाध्यायकलहनुभोजनहिंसादीनिचनकुर्यात् ॥ एषवविधिः तीर्थश्राद्धेषुज्ञेयः ॥  
 तत्र केषांचित्पदार्थानामननुष्ठानम् । तेचयथा अध्यदानमावाहनं विसर्जनं द्विजगुह्यनिवेशनम् तृतिप्रश्नः विकिरं दिग्बंधं पाकप्रक्षेपणं  
 वज्रयेत् ॥ अन्यस्तत्र पूर्ववदिति [ मृतमातृकोजिवित्तृकस्तु महालयेऽन्वष्टकायांच मात्रादिजिवैक्यं पार्वणकुर्यात् तच्चाऽपात्रप्रकरणे  
 वक्ष्यामि ] ॥ इत्यन्वष्टकाश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ इति श्रीबीकानेरस्यविषयान्तर्गतलगढनगरनिवासिनाश्रीवासिष्ठकुलोद्भवेनश्रीरामकृष्ण  
 पात्रेणश्रीकस्तूरीचन्द्रद्वन्द्वेनश्रीमहादेवभक्तवाजसेनयेनगौडपांडितश्रीचतुर्थलालशर्मणाविरचिते  
 खंडे पार्वणादिसंपात्त्रकपद्धतिकथनं नामचतुर्थप्रकरणम् ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

अथापात्रकपार्वणादिश्राद्धप्रकरणम् ॥ तत्रादौमहालयनिमित्तनवैक्यपात्रकपार्वणपद्धतिः ॥ कर्त्तापूव्वेदुर्निरामिपंसकृतमुच्चातिदिनेरात्रौ  
 प्रदोषेति विप्रहृष्टपुगत्वाब्राह्मणभ्यानिमंजणं दद्यात् ॥ ततः श्राद्धदिनेप्रातीन्यावश्यकंसमाय पाकभूमिमुद्गोमयादेकेनसंकृत्य तत्रस्वयं  
 यजमानः पाककुर्यात् ॥ अशक्तश्चेदसुस्नातैर्बाधवैः स्त्रीद्वारावापाचयेत् ॥ ततोदिनस्यषण्मुहूर्तानन्तरं श्राद्धभूमिगोमयादेकेनोपलिय  
 ज्वलद्द्वारैः संशोध्यगौरमृत्तिकायाऽऽच्छाद्यातिलगारसर्षपश्चिकीर्य तत्रश्राद्धसामग्रीसंपाद्यातिललेनश्राद्धापवर्गस्थायिनिर्दोषप्रज्वाल्य  
 संस्थाप्यश्राद्धश्रावणंचकुर्यात् ॥ ततोऽपराह्णेषुनःस्नात्वा गौरमृत्तिकायाश्राद्धदेशे पश्चिमतपक्रमदुरुपुवंचतुरस्रं अपरंदिक्षिणतोदक्षि  
 णप्रब्रणंच मंडलंविधाय गोमयादेकेनोपलिय तत्रसव्येनपश्चिममण्डले सयवकुमुमौ प्रागग्रौ द्वाक्षुरांविन्यस्य तत्रकुशमयाद्वा दुर्भेददू

स्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्येन दक्षिणमण्डले सतिलकुसुमानि दक्षिणैकैकशत्रयाणिविन्यस्य तत्रदर्भबुत्रयदक्षिणं स्थापयेत् ॥  
 अथनिमन्त्रणप्रकारः ॥ तत्रादौ सव्येनाचम्यप्रणानायम्य उदङ्मुखो दक्षिणं जानाच्य दक्षिणकरे पूर्णफलतांबूलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य  
 ॐ अद्याऽस्मत्पित्रादित्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनो धुरिलोचनसंज्ञकावा पुरुषार्द्रवसंज्ञका विश्वेदेवाः पार्वणश्राद्धे अनेन  
 संपूर्णफलनतांबूलेन कुशबटुरुपाभवन्तो मयानिमंत्रिताः ॥ आमंत्रिताः स्मः ॥ इति पठित्वा तांबूलं मण्डले क्षिपेत् ॥ ततः अक्रोधनैः शौचपरैः सततं  
 ब्रह्मचारिभिः ॥ भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकारिणा ॥ इति प्रार्थन्य गतं भवताम् ॥ सुस्वागतमिति ब्रूयात् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणामु  
 खो वा मजानुनिपात्य पूर्णफलतांबूलं गृहीत्वा ॐ असुक्रगोत्राऽस्मत्पितृपितामहप्रपितामहासुक्रशर्माणः पार्वणश्राद्धे अनेन संपूर्णफले  
 नतांबूलेन कुशत्रयबटुरुपाभवन्तो मयानिमंत्रिताः ॥ आमंत्रिताः स्मः ॥ अक्रोधनैरिति प्रार्थ्य स्वागतं भवतां सुस्वागतमिति ब्रूयात् ॥ ततः ॐ  
 असुक्रगोत्राऽस्मन्मातृपितामहाप्रपितामहोसुक्रदेव्यः पार्वणश्राद्धे अनेन संपूर्णफलनतांबूलेन कुशत्रयबटुरुपाभवतो मयानिमंत्रिताः  
 ॐ आमंत्रिताः स्मः ॥ अक्रोधनैरिति प्रार्थ्य स्वागतं भवतां सुस्वागतमिति ब्रूयात् ॥ ततः ॐ असुक्रगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहद्व  
 षप्रमातामहासुक्रशर्माणः सपत्नीकाः पार्वणश्राद्धे अनेन संपूर्णफलनतांबूलेन कुशत्रयबटुरुपा भवतो मयानिमंत्रिताः  
 ॥ आमंत्रिताः स्मः ॥ ॐ अक्रोधनैरिति प्रार्थ्य स्वागतं भवतां सुस्वागतमिति पठेत् ॥ ततः सव्यादिना ॐ अद्याऽस्मत्पित्रादि  
 त्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनो धुरिलोचनसंज्ञकावा पुरुषार्द्रवसंज्ञका विश्वेदेवाः एषपादाधो वोनमः ॥ इति दद्यात् ॥  
 असुक्रगोत्राऽस्मत्पितृपितामहप्रपितामहासुक्रशर्माणः एषपादाधो वेषा विभज्य शुभं भव्यं स्वधा इति ॥ ॐ ततोऽपसव्यादिना ॥

असुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामहप्रपितामहोसुकामुकद्वयः एषपादावस्त्रेयाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधा इति ॥ ॐ असुकगोत्राऽस्मन्मा  
 तामहप्रमातामहद्वप्रमातामहाऽमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः एषपादावस्त्रेयाविभज्य युष्मभ्यंस्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ ततः सव्येन  
 ॐ अस्मात्पित्रादित्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयथाद्वसवधिनः धुरिलोचनसंज्ञकाः वा पुरुषाद्वसंज्ञकाविश्वेदेवाः इदमाचमनं वानमः  
 इत्युत्सृजेत् ॥ ततोऽपसव्येन ॐ अवाऽसुकगोत्राऽस्मात्पितामहप्रपितामहाः इदमाचमनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा ॥ ॐ  
 असुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामहप्रपितामहाः असुकामुकद्वयइदमाचमनं युष्मभ्यंस्वधा ॥ ॐ अवाऽसुकगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहद्व  
 प्रमातामहामुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः इदमाचमनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यंस्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ ततः सव्येन ॐ अवाऽस्मात्पित्रादित्रयमात्रादित्रय  
 मातामहादित्रयथाद्वसवधिनः धुरिलोचनसंज्ञकाः वा पुरुषाद्वसंज्ञकाविश्वेदेवाः इदं कौशमासनं वानमः ॥ इत्यासनं दद्यात् ॥ ततोऽपसव्येन ॐ अ  
 वाऽसुकगोत्राऽस्मात्पितामहप्रपितामहाऽसुकामुकशर्माणः इदं कौशमासनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यंस्वधा इति ॥ ॐ असुकगोत्राऽस्मन्मातृपिता  
 महीप्रपितामहोऽसुकामुकद्वयइदं कौशमासनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यंस्वधा ॥ ॐ अवाऽसुकगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहद्वप्रमातामहाऽ  
 मुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः इदं कौशमासनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यंस्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ इति निमंत्रणप्रकारः ॥ ततः सव्यापस  
 व्याभ्यां कर्मपात्रद्वयजलेनाङ्घ्र्यं तत्र दर्भपत्रौ यवतिलचंदनपुष्पाणि च यथाक्रमं निक्षिप्य ॥ कर्मपात्रं संपन्नम् ॥ सुसंपन्नमिति ब्रूयात् ॥  
 ततः श्राद्धकृतौ स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सव्येनाचम्य ॐ अपवित्रः पवित्रो वा इति ॐ पुंडरीकाक्षपुनानां वितचिपठित्वा श्राद्धो  
 यद्रव्याणि स्वात्मानं त्रिसृचेत् ॥ ततः ॐ वैष्णव्यैनमः ॥ ॐ काश्यप्यैनमः ॥ ॐ अक्षय्यैनमः ॥ ॐ भृगुयैनमः ॥ इति तत्त्वा ॐ भावत्यै गययैनमः

ॐ भगवते गदाधराय नमः इति तयो नमस्कारं कुर्यात् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालोत्सर्गं ॥ ॐ अद्यामुक्तगोत्राणामस्म  
 त्पितृपितामहप्रपितामहानाममुक्तमुक्तशर्मणां विभुद्रादित्यरूपाणां तथा चारुभन्नात्पितामहप्रपितामहानाममुक्तमुक्तदेवीनां गायमुनास  
 रस्वतीरूपाणाम् असुक्तगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुक्तमुक्तशर्मणां सपत्नीकानां विभुद्रादित्यरूपाणां विश्वदेवपूर्व  
 कंसर्पिण्डं महालयनिमित्तकं पार्वणश्राद्धं पितृवृत्तिकामोहं कारय्य इति संकल्प्य कुरुक्षेत्रे नृजातो गायत्रात्रिजपित्वा ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च  
 महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽपसंयंकृत्वा ॥ ॐ नमो नमस्ते गोविंदा ॥ पुराणपुरुषोत्तम ॥  
 इन्द्रश्राद्धहृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः ॥ १ ॥ तिलारक्षतं असुराहर्मारक्षन्तु रक्षसात् ॥ वह्निर्वैश्रोत्रियं रक्षेदतिथिः सर्वरक्षकः ॥ २ ॥ इति तिलकुशान्  
 द्धारदेशं क्षित्वा ॥ ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्रार्चय रक्षतु मे दिशम् ॥ तथा बर्हिषदः पातु याम्याये पितरः स्थिताः ॥ १ ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्वुदी  
 चीमपि सोमपाः ॥ अधोर्ध्वमपिकोणेषु विकोणेषु च सर्वशः ॥ २ ॥ रक्षोभूतपिशोचोभ्यस्तथैवासुरदेवतः ॥ सर्वतश्चाधिपस्ते पायमोरक्षां करोतु ॥ वा  
 युमृतपितृणां च तृप्तिर्भवतु राश्वती ॥ ३ ॥ इति मंत्रैः सर्वत्र तिलानुरौ रसर्पांश्च विकीर्य दक्षिणे वामे वा कटिभागे न विविधं प्रीयात् ॥ ततः सव्येन अथेह  
 वादेव हेतुन देवासश्च कृमावयम् ॥ अग्रिमा तस्मादेव सोविश्वानुमुंचत् ॥ १ ॥ यदि दिवा यद्विनक्त मेना ॥ २ ॥ सिचकृमावयम् ॥ वायुमा तस्मादेन सोवि  
 श्वानुमुञ्चत् ॥ ३ ॥ यदि जाग्रद्विषमप्रणानां सिचकृमावयम् ॥ मूर्ध्नामा तस्मादेन सोविश्वानुमुञ्चत् ॥ ४ ॥ इति कृष्णान्दमुत्तेन जलमभि  
 न्यतेन देभैः उदक्यादिदुष्टदृष्टिपातात् जुह्वादि संपर्कदोषाच्च पाकदीनां पवित्रतात् ॥ १ ॥ तदुत्प्रेष्य पहाथ द्रव्योपहारश्राद्धां संपदस्तु इति पाकदीन्  
 प्रोक्षयेत् ॥ ततः उदङ्मुखं उपविश्य सज्जनं दक्षिणं जन्वाच्य सव्येन जलयवसमन्वितामृदुं कुशत्रयमादाय ॥ ॐ अद्यास्मत्पित्रादित्रयमात्रा

द्वित्रयमातामहाद्वित्रयश्राद्धसंबन्धिनः धुरिलोचनसङ्गकाः वापुरुर्वाद्रिवसङ्गकाः विश्वेदेवाद्दमासनयो नमः ॥ इत्यासनाथे देवतीथेन पूवायं कुशत्रये  
 दद्यात् ॥ ततोदक्षिणामुखः पातितवामजानुः अपसव्येन द्विगुणमुश्रुकुशत्रयतिलजलन्यादय ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मिन्पितृपितामहाप्रतिमहा  
 मुकमुश्रुर्माणो वसुहृद्वादिरूपः ॥ इदमासनं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा ॥ इत्युच्चार्य पितृतीर्थेन मोदकं दक्षिणश्रमुत्तुजेत् एवमेव मात्रादिभ्यो  
 मातामहादिभ्यः सपत्नीकभ्यश्चापि दद्यात् ॥ ततः सव्येन ॐ विश्वान्देवानावाहयिष्ये ॥ आवाहय इत्यनुज्ञातः सयवकरः ॥ ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम  
 ठं हवम एदं बर्हस्पतिं दत् ॥ इत्यावाह्य ॐ यवोमियवयस्मद्द्वेषयवयरातीरित्यनेन यवान् विकीर्य ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ठं हवमभ्येऽनन्तरी  
 क्षेयऽउपग्राविष्ट ॥ येऽअग्निजिह्वाऽउत्तवायजत्राऽआसद्यास्मिन् बर्हिषिमादयध्वमिति जपेत् ॥ ॐ आगच्छंतु महाभागा विश्वेदेवा महबलाः ॥  
 येयत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ॥ १ ॥ इति श्लोकमपि पठेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना ॐ पितृनावाहयिष्ये ॥ आवाहय इत्यनुज्ञातः ॥ सतिलक  
 रोञ्जलिना ॐ उशनस्तत्त्वानि धाम्नुशन्तः सामधीमहि ॥ उशनश्नुतऽआवाहपितृनुहविषेऽअन्ते ॥ इत्यावाह्य ॐ अपहताऽअसुराश्चाऽसिमे  
 दिपदः ॥ इतितिलान् विकीर्य ॥ एवं मातृहविषेऽअन्ते वा ॥ मातामहान् हविषेऽअन्ते इति मंत्रो हेनमात्रादीन् मातामहांश्चावाह्य तिलान् विकीर्य  
 ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्यासोऽअग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञे स्वययामदन्तोधिब्रुवन्तुऽदं वस्मान् इति जपेत् ॥ ततः सव्या  
 पसव्याभ्यां दिवपूषकपात्रचतुष्टये प्रप्रतिपात्रपवित्रमैकं कनधाय ॥ तत्र ॐ श्रोत्रोदेरीभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शंध्योर्भिसवन्तुः ॥ इति  
 प्रत्येकपात्रेष्वपानिषिच्य ॥ ॐ यवोमियवयस्मद्द्वेषयवयरातीरिति देवपात्रेयवाग्निक्षिप्य ॥ पित्रादिपात्रेषु ॐ तिलोसिसोमदेव न्यो गोसवो  
 देवनिर्मितः ॥ प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वययापितैल्लोका नृपाणिनः स्वधा ॥ इतितिलान् प्रक्षिपेत् ॥ ततः सर्वत्र तूष्णीं गन्धपुष्पाणि दत्त्वा सव्येन

अ० अर्घपात्रसंपन्नम् ॥ सुसंपन्नमित्यनुज्ञातो देवार्घपात्रवामहस्तेकृत्वा तत्रस्थं पवित्रं पलशादिपत्रेपुरतः पूर्वार्थं धृत्वा ऽर्घपात्रं दक्षिणहस्तेन च्छा-  
 द्य ॥ अ० यादिव्या आपः पयसा संवभृथ्युऽअन्तरिक्षा उत्तपार्थविर्याः ॥ हिरण्यवर्णं यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः सर्गस्योनाः सुहवा भवन्तु ॥  
 इत्यभिमन्त्र्य कुशत्रयं वज्रालान्यादाय अ० अद्यास्मत्पित्रादित्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः धुरिलोचनसंज्ञका वा पुरुषाद्रव-  
 संज्ञका विश्वेदेवा एषा रत्नाघो नमः ॥ इति देवतीर्थेन पवित्रोपय्यर्घ्यं दद्यात् ॥ अर्घपात्रसंपवित्रपुरतः स्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना अ० अर्घ-  
 पात्रसंपन्नम् ॥ सुसंपन्नमिति पठित्वा पितृपात्रवामहस्तेकृत्वा ॥ पवित्रं पलशादिपत्रे उत्तरार्धं दत्त्वा पात्रं दक्षिणकरणे च्छादय ॥ अ० यादिव्याऽआ-  
 पइत्यभिमन्त्र्य द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अ० अमुक्कगोत्राऽस्मत्पितृपितामहपितामहा मुकाऽमुकशर्मणः वसुरुद्रादित्यरूप एष ह-  
 स्तार्घस्त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा इति पितृतीर्थेन पवित्रोपरि अर्घ्यं दद्यात् ॥ एवमेव मात्रादिभ्यो मातामहादिभ्यः सपत्नीकैभ्यश्च ऽपि दद्यात् ॥ अर्घ-  
 पात्रत्रयंचसावशेषं पुरतः स्थापयेत् ॥ ततः सव्येन अ० विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वा पवित्रजलश्रुतं देवार्घपात्रमासनं दक्षिणपार्श्वे उत्तानमे-  
 व स्थापयेत् ॥ ततः पित्राद्यर्घपात्रजलेन अ० आपः शिवाः शिवतमाः शांताः शांतमास्ते कृण्वन्तु मे भजम् १ इति मंत्रेण शिरः संमृज्य अपसव्येन  
 अ० पितृभ्यः स्थानमसीति पितृपात्रम् आसनं वामपार्श्वे भूमावधौमुखं स्थापयेत् ॥ एवमात्रादिभ्यः ॥ अ० मातामहेभ्यश्च स्थानमसीति चोक्त्वा न्यु-  
 वंजं कुर्यात् ॥ एतानि स्थापितानि पात्राणि दक्षिणादानपत्तनोद्धरेन्न चालयेत् ॥ अथ गंधादिदानम् ॥ तत्र सव्यादि कृत्वा गंधपुष्पपूपादीपवस्त्रा-  
 दिदेवासने धृत्वा ॥ कुशत्रयं वज्रालान्यादाय ॥ अ० अद्यास्मत्पित्रादित्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः धुरिलोचनसंज्ञकाः वा पुरु-  
 षाद्रवसंज्ञका विश्वेदेवाः एतानि गंधपुष्पपूपादीपतंबूलयज्ञोपवता च्छादना निवेदनमः इत्युच्चायथा विभवं दद्यात् ॥ ततः कृतांजलिः कर्त्ता विधे-

षोडशानामर्चनसंपूर्णमस्त्विति अस्त्वर्चनसंपूर्णमिति च ब्रूयात् ॥ ततोऽपसव्यादिना पित्राद्यासनत्रयगंधपुष्पधूपदीपादिप्रत्येकसन्निधायान्नि-  
 गुणसुमनकुशत्रयादीनिचादय ॐ अमुकगोत्राऽऽरभ्यतिष्ठपितामहऽमुकमुकशर्माणः वसुरुद्रादित्यरूपाः ॥ एतानि गंधपुष्पधूपदीपानां  
 ब्रूलयज्ञोपवीताच्छादनानित्रेधाविभज्यधुमभ्यंस्वधा इति पित्रादिभ्योगंधाद्युत्सृज्यश्मेवमात्रादिभ्यो मातामहादिभ्यः सप्तवीकभ्यः श्रोतृसृजे-  
 तां ततः कृतः श्रिलः ॐ पितृणामर्चनसंपूर्णमस्त्विति ॥ अस्त्वर्चनसंपूर्णमिति च ब्रूयात् ॥ एवं गंधाद्यर्चनविधाय भोजनपात्रस्थापनदेशं समा-  
 ड्ययपात्राणि द्वारगौरमृत्तिकया जलादिना वा मंडलं प्रत्येकं कुर्यात् ॥ ततो गौं करणम् ॥ तावत् सव्यादिना घृतहृतमन्त्रव्यंजनक्षारवर्ज-  
 तं कंस्यपात्रे कृत्वा ॐ अग्नौ करणं करिष्य इति श्राद्धकर्ता ब्राह्मणं पृष्ठकृरुष्वेत्यनुज्ञातः आर्द्रमलकमात्रमग्नौ हीत्वा रजतादिपात्रस्थ-  
 जले प्राङ्मुखः ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा इदमग्नये कव्यवाहनाय ॥ २० सोमाय पितृभ्यो नमः स्वाहा इदं सोमाय पितृभ्यो नमः इत्याहुतिद्वयं जुहो-  
 यात् ॥ ततो हृतशोपितमन्त्रं देवपात्रेऽपसव्येन पित्रादिपात्रत्रये च किंचित्किंचिदत्वा पिंडाथ चावशेषयेत् ॥ [ अत्र परकीयमसौ श्राद्धकरण-  
 पक्षे (अपसव्येन) ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामि पितृभ्यां नमः इति दमेध्वन्नसृजेत् ॥ ] ततः सव्येन देवपात्रे अपसव्येन पित्रादिपात्रत्रये च लव्ण-  
 मन्त्रं सधृतम् अनेकव्यंजनयुतं पुरषैकतृतिजनकं यथावत् प्रतिपात्रपरिविध्यसजलपात्रंच संस्थाप्याऽन्नमधुदत्वा ॐ मधुध्वत्ताऽन्नताय ते इत्या-  
 दिमंत्रत्रयेण ॐ मधुमधुमन्त्रिचित्वाभिर्मंत्रयेत् ॥ ततः सव्येन उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रमालभ्य ॐ पृथिवीति पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे  
 ऽऽमृतोऽमृतं जुहोमि स्वाहा इति ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेधेधा निधेपदम् ॥ समूढमस्य पात्रं सुरस्वाहा इति च पठित्वा ॐ विष्णो हव्यं ठंगं शस्य  
 नया स्वाङ्गुमुधो मुखमनसमन्नेजगाह्य ॐ इदमन्नम् ॐ इमा आपः ॐ इदमाल्यम् ॐ इदं हविरीत्युभवा ॐ अपहताऽऽसुरारक्षा ॐ सर्वे दिपदः ॥

इतियवान् अन्नपात्रपरितोविकीर्य्यं वामनकरणपात्रं स्पृशन् दक्षिणकरणकुशत्रयवज्रलान्यादाय ॐ अवाऽस्मात्पित्रादित्रयमात्रादित्रयमाता  
महादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनः धुरिलोचनसंज्ञकाः वा पुंरुहर्वाद्रवसंज्ञका विश्वेदेवाः इदमन्नहव्यः सोपस्करं परिविष्टम् अमृतरूपं स्वहाहनमइत्यु  
दकंदक्षिणभागेभूमाववाप्तुजेत्। ततोऽपसव्यादिं कृत्वा पितृपात्रान्युज्याणि स्याव्यास्ताभ्यां स्पृष्ट्वा ॐ पृथिवीति पात्रं द्वाविधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽ  
अमृतेऽअमृतं जुहोमि स्वधा इति पाठित्वा ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रे धानिदधेयदम्। समूढमस्य पात्रं सुरे इत्येतामृचं च जप्त्वा स्वाङ्गुष्ठमनसमधामुख  
म् ॐ विष्णो कव्यं ठरस इति यजुषाऽन्नेन वैश्याम्। ॐ इदमन्नम् ॐ इदमाज्यम् ॐ इदं हविरित्युक्त्वा ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ७ सिंवे  
दिषदः इति तिलान्नपात्रपरितोवामावर्त्तनं विकीर्य्य। वामकरणपात्रमत्यजनदक्षिणकरणे द्विगुणमुग्रकुशत्रयादीन्यादाय ॐ अवाऽमुकगोत्राऽस्म  
न्पितृपितामहप्रपितामहाऽमुकसुक्रशर्मणः। इत्यरूपाः इदमन्नं कव्यं सोपस्करं परिविष्टममृतरूपं त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा इत्युदकं पि  
तृतीर्थेन वामभागेभूमाववाप्तुजेत्। एवमेव मात्रादिभ्यो मातामहेभ्यः सप्तकीकेभ्यश्चाप्युत्तुजेत् ॥ ततः ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्रवेत्। त  
त्सर्वमाच्छिद्रमस्त्विति प्रार्थ्य। प्रणवव्याहतिपूर्विकां सक्तां त्रिगायत्रीं जप्त्वा ॐ भवतु वाताऽऽकृताय ते इति त्र्युचम् ॐ मधुमधुमाध्वतिच जपेत्। ततः  
सव्येन दक्षिणामुखः। ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिन्नपृथ्वीर्याहिराजवामवाँ इमेना। तृष्णीमनुप्रसितिन्दूनास्तासि विवद्वचरससस्तामिष्टैः। १॥ तव  
ब्रह्मासऽआशुया पतन्त्यनुस्पृशधृषतशोऽनुचानः। तपू ७ प्यग्रे जुह्वपतङ्गानसंदितो विमृजविष्वक्लुकाः॥ २॥ प्रतिस्पृशोऽव्विजतूणि तमो भवा  
पाथुर्विशोऽस्याऽअदब्धः। योनोदूरेऽअघशठसोयाऽअन्यग्रेमाकिष्टे व्यथिरादधर्षात् ॥ ३॥ उदग्रेतिष्ठ प्रस्थातनुष्वन्यभिर्त्रा २ऽओषता  
तितमहेते। योनोऽअशतिष्ठसमिधानचक्रेनीचातंधयतसन्नष्कम्। ४॥ उद्धो भवप्रतिविद्वच्चरसमदा विष्कृणुष्वद्व्यात्र्यग्रे। अवस्थिरा



तनुहियतुजनाआमिजामिप्रमृणीहिशत्रून् ॥ अयेद्वृतेजसासादयामि ॥६॥ इतिशोभार्द्रचःपठित्वा ॥ भूमौतिलान्विकीर्य ॥ ॐ उदी  
रतामवर इत्यादित्रयोदशपितृमंत्रान् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा इत्यादिपुरुषसूक्तं च ॥ ॐ आहुः शिशानो इत्यादिमत्तदंशमंत्रान्मन्त्रमप्रतिरथं च ॥ ॐ सुत  
व्याधादशाणेषु इत्यादिस्तोत्रं च पठित्वा ॥ सपात्रकृपद्व्युक्तं समाचिंस्तोत्रं पठेत् ॥ ततः ॐ नमस्यहंपितृभ्यो नमः ॥ येवस्यन्यधिदेवताः ॥ देवै  
रपि हि तर्प्यन्ते येचश्राद्धस्वयंतरेः ॥ १ ॥ नमस्यहंपितृभ्यो नमः ॥ येतर्प्यन्तेमहर्षिभिः ॥ श्राद्धैर्मनोमयेभ्यस्तथा भुक्तिमुक्तिमभीप्नुमिः ॥ २ ॥ नमः  
स्येहंपितृभ्यो सिद्धाः संतर्पयन्ति तान् ॥ श्राद्धेषु दिव्यैः सकलैरुपहारैरनुत्तमैः ॥ ३ ॥ इत्यादिश्चिस्तं पठित्वा अन्यान्यपिवैष्णवादिस्तो  
त्राणि यथाशक्ति पठेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना उच्छिष्टपात्रमस्त्रिवैभूमिप्रादय तत्र दक्षिणां श्रुत्वा त्रयमास्तनीर्य दक्षिणहस्ते सर्वप्रकारमंत्रसंख्यं जनमु  
द्धृत्य सतिलमेककृत्य ॐ अग्निदद्याश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूमौ देतेन तृप्यन्तु तृतायान्तु रांगतिमा ॥ १ ॥ इति मन्त्रकुशोपरि पितृती  
र्थेन तद्वं विकीर्य ॥ ततः सव्यं कृत्वा हस्तौ प्रक्षाल्य आचम्य हस्मृत्या अपसव्येन ॐ मधुव्यताऽऽकृतायेत इति नृचं मधुमधुमध्वित्तिचजेपत्  
ॐ नृताः स्थ ॐ नृताः स्मः इति पठित्वा पिंडानहं करिष्ये इति पृच्छेत् ॥ कुरुध्व इत्यनुज्ञातः पित्रादिभोजनपात्रसन्निधावुत्तरतो हस्तांतरे वलुका  
भिश्चतुस्तं दक्षिणपुंरं मणीयं स्थानत्रयं निमाय तन्मध्ये दर्भांजुलीमूलं ॥ ॐ अपहताऽअमुराक्षाऽ ॥ १ ॥ सिंवेदिपदः इति दक्षिणाग्रं स्वात्रयं कृत्वा  
प्रत्येकं खोपरी ॐ यूरूपाणि प्रतिमुचमानाऽअमुराः संतः स्वधया चरन्ति ॥ परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निं शिष्टल्लोकां नृप्रणुदायस्मादित्यंगारं त्राम  
यित्वा दक्षिणतोनदिध्यात ॥ ततः उभयमूलसकृदाच्छिन्नदक्षिणां प्रकुशत्रयं प्रत्येकं खोपरीं स्तीर्त्वा सव्येन देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽस्म  
व्येन पुट्यन्नवकं जलतिलागंधपुष्पाणि कृत्वा एकपात्रं नाम हस्ते कृत्वा द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अब्राह्मणो ब्राह्मण्यमित्यतः

मुकशर्मन्वसुरूपपात्रावनेनिश्चेतस्वधा इति कुशमूले पित्रेऽपितृतीर्थेन सावशेषमवनेजनं दद्यात् ॥ एवंपितामहाय कुशत्रयमध्ये प्रपिताम  
 हाय कुशश्रे अवेनेजनं दद्यात् ॥ एवमेवमात्रादिभ्योमातामहादिभ्यश्चापि दद्यात् ॥ ततः सर्वस्माच्छादशेषान्नाहुर्णां किञ्चिद्विद्वन्नमुद्धृत्य हुतशे  
 षान्नं मध्याज्यतिलसर्वव्यञ्जनयुतं रजतादिपात्रे कृत्वा बिलोपमान् नवपिण्डाब्रिभार्य मधुघृताभ्यामभिघार्य पित्रादिभ्यो दद्यात् ॥ तत्र प्रथम  
 पिण्डमादाय ॐ अद्यामुकगोत्रास्मत्पितरमुकशर्मन् वसुरूप एतत्ते पिण्डं स्वधा इति प्रथमवनेजनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन  
 पितृतीर्थेन दद्यात् ॥ एवमेव पितामहादिभ्योऽष्टभ्यः प्रत्येकं तत्तदवनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात् ॥ ततः प्रपितामहाद्व्यत्रयाणां लेपभाग  
 भुजां वृत्तिमुदिश्य पित्रादिकपिण्डाधारकुशमूले ॐ लेपभागभुजः पितरस्तु व्यन्तु इति पठित्वा हस्तं प्रोञ्छय ॥ जलेन हस्तौ  
 प्रक्षालयेत् ॥ ततः सर्व्यं कृत्वा त्रिराचम्य हस्तिस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्येन ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् इति  
 पितृदेशेन पठित्वा वामावर्त्तेनादङ्मुखीभूय श्रुतिमनाः मनाक् श्वासं नियम्य तेनैव यथापरावृत्य ॐ अमीमदन्तः पितरो यथाभागमावृषा  
 यिषत् इति जपेत् ॥ एवमेवमातृमातामहपक्षे ॐ अत्रमातरो मादयध्वमिति मंत्रो हेनश्वासधारणं कुर्यात् ॥ ततः पूर्वदत्ता वनेजनजलेन ॐ अद्या  
 मुकगोत्राऽस्मत्पितरमुकशर्मन् वसुरूप अत्र प्रत्यवनेनिश्च ते स्वधा इति प्रथमपिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दत्त्वा एव मेव पितामहादिअष्टपिण्डो  
 परि तत्तदवनेजनपत्रेण प्रत्येकं प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततो नीर्धौ विमस्य सव्येन आचम्य अपसव्यं कृत्वा ॥ ॐ नमो वः पितरोऽसाय नमो  
 वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो  
 गृहहन्तः पितरो दत्तसतो वः पितरो देष्म ॥ इति कृताञ्जलिः पठेत् ॥ ततः ॐ इतद्द्रः पितरो वास इति पठित्वा नवसु पिण्डेषु मुत्राणि श्रुतिपिण्डं

जगदिशावा पञ्चशर्द्ध्ववयस्कथजमानहृदयलोमानि वा दत्त्वा ततः कुशातिलजलन्यादाय ॥ ॐ अद्यासुक्रगोत्राऽस्मत्पितृपितामहप्रपि-  
तामहामुक्रमुक्रशर्माणः वसुरुद्रादित्यरूपा एतानिवासिंसेत्राविभज्यधुषण्यं स्वधा इत्युत्तजेत् ॥ एवमेव मात्रादित्योमातामहादित्यश्चो-  
त्तजेत् ॥ ततः पित्रादीनुद्दिश्यतदीयापिडेषु यंघयुष्यधूपदीपताबृलदक्षिणादीनि दत्त्वा ॥ तच्छेषान्पिंडसमीपे विकीर्य ॐ पिंडार्चनं सर्वं परि-  
पूर्णं मस्तु इति ब्रूयात् ॥ ततः सव्यापसव्याभ्यां भोजनपात्रेषु ॐ शिवा आपः सन्तु इति सकृत् सकृत् मलदत्त्वा ॐ सौमनस्य मस्तु इति पुण्याणि ॐ  
अक्षतं चारिंश्चास्त्विति वा न् पितृपात्रेषु तिलश्चक्रमेण दद्यात् ॥ ततोऽपसव्येन ॐ अमुक्रगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाममुक्रामुक्र-  
शर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपाणां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्त्विन्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ एवमेव मात्रादिभ्योमातामहादित्योऽपत्नीभ्योऽपि दद्या-  
त् ॥ ततः सव्यं कृत्वा प्राहुर्भुखस्तन्मनाः सुमनाः कृतांजलिदक्षिणां दिशं पश्यन् आशिपे गृह्णीयात् ॥ ॐ अघोराः पितरः संतु ॐ अघोरा मातरः  
संतु ॐ अघोरा मातामहाः सपत्नीकाश्च संतु इति वदेत् ॥ सवित्यनुज्ञातः ॐ गोत्रं नो वर्द्धतामिति वदेत् ॥ वर्द्धतामित्यनुज्ञातः ॥ दातारो नो भि वर्द्धन्ता-  
वेदाः संततिरेव च ॥ श्रद्धाचनो माव्यगमत् ॥ बहुदंयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेत् ॥ अतिथिश्च लभे महि ॥ याचितारश्च नः संतु ॥ माचया चिष्मकं च  
न ॥ एताः सत्या आशिपः संचितिवेदेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा पिंडोपरि सपवित्रान्शानास्तीर्य स्वधवाचयिष्ये इति ब्रूयात् ॥ वाच्यतामि-  
त्युक्ते ॐ पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रतितामहेभ्यो मातृपितामहप्रपितामहोभ्योमातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्य-  
श्च स्वधोच्यतामिति वदेत् ॥ अस्तु स्वधा इत्यनुज्ञातः ॥ ॐ ऊर्जं हन्तीरं मृतं वृत्तं यः कीलालं परिस्मृतम् ॥ स्वधास्थतर्पण्यतमो पितृनितिसप-  
वित्रकुशोपरि दक्षिणां जलधारां दद्यात् ॥ ततः स्वयं यजमानोऽर्घ्यपात्रत्रयमुत्तानीकृत्य सव्येनेव दक्षिणां दद्यात् ॥ तत्र कुशत्रययजलानि

हिरण्यं चादाय ॥ ॐ अद्याऽस्मत्पित्रादित्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनाधुरिलोचनसंज्ञकानां वापुर्ब्रह्मवर्षसंज्ञकानां विश्वेदेवानां  
 श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमाग्निदेवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायदक्षिणान्वेन दातुमहमुत्सृजे ॥ इतिसंकल्प्य दद्यात् ॥ ततोऽपसव्यादिना  
 ॐ असुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपणकृतैतत्पार्ष्णश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं जतं चंद्रदेवतम  
 मुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायदक्षिणान्वेन दातुमहमुत्सृजे इति पितृदक्षिणां दद्यात् ॥ एवमेव मात्रादिमातामहादिश्राद्धप्रतिष्ठार्थमपिरजतद  
 क्षिणां दद्यात् ॥ देवैरजतनिषेधः असंभवे फलमूलादिकं दद्यात् ॥ ततः ॐ पिंडानुत्थापयामि ॥ उत्थापय इत्युक्ते पिंडानुत्थाप्यस्थाल्यानि  
 धायाऽवघ्राणं कृत्वा सधृदुच्छिन्नान्दर्भानुलुमकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥ ततः सव्येन ॐ विश्वेदेवाः प्रीयंतामिति प्रार्थय ॥ अपसव्येन  
 ॐ वाजेवाजेवतवाजिनोर्ध्वनेषु ब्रिण्वाऽअमृताऽऽरुतज्ञाः ॥ अस्य मध्वः पिबतमादध्वं तृताया तपथिभिर्देवानैरिति पितृन्विमुजेत् ॥  
 ततः ॐ आमावाजस्य प्रसवोजगम्यादेमेद्यावापृथिवी ब्रिष्वरूपे ॥ आमागंतां पितरामातराचामासोऽअमृतत्वेन गम्यतादिति मंत्रपठित्वा प्रद  
 क्षिणीकृत्य सव्येन ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्चेति त्रिजपेत् ॥ ततः अपसव्येन क्षादीपनिर्वाप्य सव्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याऽऽचम्य ॐ प्रमादात्कु  
 र्वतां कर्म ० इति पठित्वा कर्मणैकामो विष्णुं स्मरेत् ॥ ततः पिंडान् गमजं वायसान्वा खादयेत् ॥ अगाधे जले वा क्षिपेत् ॥ पुत्रकामः पितामह  
 पिंडसांध्यै धर्मपत्न्यै वा दद्यात् ॥ साचक्षुचिर्वाग्यता पुत्रकामा ॐ आधत्त पितरोगैर्भुक्तां पुष्करस्रजम् ॥ यथेह पुण्येऽसत् ॥ इति मंत्रपठित्तेऽ  
 श्रीयात् ॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्यामुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपणां तथा चा  
 स्मन्मातृपितामहीप्रपितामहानाममुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपणां वसुरुद्रादित्यरूपणां वसुरुद्रादित्यरूपणां वसुरुद्रादित्यरूपणां वसुरुद्रादित्यरूपणां

वसुद्रादित्यरूपाणांकृतैतन्महालयनिमित्तापवर्णश्राद्धप्रतिष्ठाथमसुखसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये इतिसंकल्प्यदशष्टौपट्चतुरो  
 वाब्राह्मणान् पायसाद्यन्नेन भोजयेत् ॥ ततोदशदेवलिकर्मणीकृत्वासुतभृत्यबाधवातिथिसंयुक्तः पितृशोपितमन्नमश्रीयत् ॥ तदिदं  
 श्राद्धकर्तृद्यूताध्यगमनमैथुनायासकलहपुनर्भोजनहिंसादीनिनकुर्यात् ॥ इत्यपात्रकनवदेवत्यपार्वणश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ ४४ ॥  
 अथापात्रकपट्टवत्यपार्वणश्राद्धपद्धतिः ॥ तत्रतावत्पूर्वदिनकृत्यम् ॥ कर्तापूर्वेष्टुनिरामिममकवांभुक्तातदिनेरात्राप्रदोषान्ते असंभवे प्रातर्व  
 श्राद्धारंभसमयेवा यथाऽवकाशं विप्रहं गत्वा ब्राह्मणनिमंत्रणं कुर्यात् । ततो निमांत्रिताविप्रः श्राद्धकर्ता च द्विर्भोजनं वेदुध्ययनं दूरगमनं  
 मैथुनं भोगदहनं श्रमं हिंसां क्रोधं त्वरां प्रमादं कलहं शौरं च वर्जयेत् शुचिः सत्यवादी क्षमी ब्रह्मचारी च स्यात् ॥ पूर्वमङ्गीकृतनिमंत्रणो  
 नान्यान्निमंत्रणमिच्छेत् नान्यदन्नं नान्यदन्नं प्रतिगृह्णीयात् ॥ नान्यत्रगमनादिनाकुतपादिश्राद्धकालातिभ्रंशकुर्यात् न चारुनातः श्राद्धेभुजीत ॥  
 अथश्राद्धदिनकृत्यम् ॥ कर्ताब्राह्मसुहृते उत्थाययथापदेशं शौचविधिं कृत्वा आचम्यदंतधावनं न कुर्यात् ॥ ततो नद्यादौ स्नात्वा प्रक्षालिततनुः  
 श्वेतवाससी परिधाय संध्यादि नित्यावश्यकं समाप्य पाकभूमिगोमयादिना संस्कुर्यात् ॥ तत्रतूतनात्रादिपात्रादिषु यथाशक्त्युद्धृष्टमन्त्रे  
 भक्ष्यभोज्यादिनानाप्रकारमनकव्यञ्जनयुतं स्वयं यजमानः पक्वमारभेत अशक्तश्चैवैवैः स्त्रीद्वारवापाचयेत् ॥ अमातृपितृवंशजां पाषंडां  
 पुंश्चर्लीं पतितां वंध्यां अन्यगोत्राजाम् व्यंगकर्णीं चतुर्थादिने स्नातामपि गोभर्णीं चपाकार्थं वर्जयेत् ॥ एवं समाते च पाके श्राद्धभूमिं गोमयो  
 दकेनोपालिष्य ज्वलदंगारैः संशोध्य गौरमृत्तिकायाच्छाद्य तिलैर्गौरसर्पैश्च विक्रिेत् ॥ तत्र श्राद्धसमाप्तीं संपाद्याऽपराह्णे स्नात्वा शुक्लवास  
 सीद्विपरिधाय ब्राह्मणैः सह श्राद्धभूमिमागत्य अब्राभिप्रायेण सिद्धमिदमुक्ता ॥ आसनानि उपस्पृश्य अत्राध्वमिति देवब्राह्मणान्ग्राह्यमुवा

निपटब्राह्मणनुदङ्मुखानुपवेशयेत् [ तदभावे कुशमयद्रिजान्वा स्थापयेत् ] ततस्तेषां पादयोरधस्तादक्षिणांशं कुशत्रयं प्रत्येकं दत्त्वा  
 प्रत्यासनसमीपे तिलैलेन श्राद्धपर्वारथायिनो दीपान्दद्यात् ॥ तेषांक्षा द्विजैवकार्या काककुक्षुटादीन् श्राद्धापह्ननपसारयेत् ॥ श्राद्धे  
 शावरणं चकुर्यात् ॥ ततः कर्तो स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सव्येनाचम्य ॥ अ० अपवित्रः पवित्रो वा स वास्वांगतोपि वा ॥ यः स्मरेत् पुंडरीका  
 क्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ अ० पुंडरीकाक्षः पुनाति विपठित्वा कुशत्रयानीतजलेन श्राद्धे देयद्रव्याणि स्वात्मानं च र्सिचेत् ॥ ततः अ० वैष्णव्यै नमः  
 अ० कारश्यै नमः अ० अक्षय्यायै नमः अ० भूम्यै नमः ॥ इति तत्त्वा ॥ श्राद्धदेशं गयामकावेन तदेकदेशस्थं गदाधरं च ध्यात्वा तयोः अ० भगव  
 त्यै गायै नमः अ० भगवते गदाधारय नमः ॥ इति मनोवाक्यायै नमस्कारं कुर्यात् ॥ ततः कुशत्रयवज्रलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य अ० अद्या  
 ऽमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहश्रुपितामहानाममुकमुकशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यरूपानां तथाऽस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्र  
 मातामहानाममुकमुकशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यरूपानां सदैवं पार्वणश्राद्धं पितृवृत्तिकामोऽहंकारं प्रोच्य ॥ इति संस्करणं ॥ गायत्रीं  
 त्रिजिपित्वा अ० देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यश्च व ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिजपेत् ततो यवतिलगौरसर्षपां  
 श्रगृहीत्वा अ० नमो नमस्तो गोविंदे गुराण पुरुषोत्तमे ॥ इदं श्राद्धदृष्टीकेशं रक्षतां सर्वतो दिशः ॥ १ ॥ इति पठित्वा अ० तिलारक्षंतवसुराहभारक्षतुरा  
 क्षसात् ॥ वह्निं श्रोत्रियक्षेदतिथिः सर्वक्षकः ॥ इति मंत्रेण तिलकुशान्द्रादेशं क्षित्वा अ० अग्निष्वात्पापिदुग्मणाः प्रार्च्यारक्षंतमो दिशम् ॥ इति  
 मंत्रेण प्राच्याम् ॥ अ० तथा बर्हिषदः पान्तु याभ्यां यो पितरः स्थिताः ॥ इति मंत्रेण गायाम्याम् ॥ अ० प्रतीचीमाज्यमापास्तद्वत् ॥ इत्यनेन प्रतीच्याम् ॥  
 अ० उदीचीमपि सोमपाः ॥ इत्यनेनोदीच्याम् ॥ अ० अधोर्ध्वमपि कोणेषु हविषं तश्च सर्वदा ॥ इति ॥ अ० शोभूतपिशाचैभ्यस्तथासुरादोषतः ॥

सर्वतश्चाधिपस्तोषायोभारक्षोक्रातुवै ॥ वायुभूतापितृणां च तृतिमवतुशाश्वती ॥ इत्यनेन अधस्तादूर्ध्वकोणेषु च सर्वत्र तिलान्गौरसर्षपाश्च  
 विकीर्य अपसव्येन वामे दक्षिण कटिभागे वा यथाचारं नीविं यो विधेयः । ततः सव्येन कस्मिंश्चिन्नात्रे जलं गृहीत्वा दुमरालोदय ॥ अ०  
 यदेवादेवोदं देवासश्च कृमावयम् ॥ अग्निमातस्मादनेन सोविधान्मुच्यते हसः ॥ १ ॥ यदि दिवा यद्दिनं कृतेनोसिचकृमावयम् ॥ वायुर्मा  
 तस्मादनेन सोविधान्मुच्यते हसः ॥ २ ॥ यदि जाग्रद्वदिस्त्रिप्रणोऽसिचकृमावयम् ॥ सूर्यो मातस्मादनेन सोविधान्मुच्यते हसः ॥ ३ ॥  
 इति कृष्णमांडसूक्तेनाभिर्मन्त्र्य ॥ अ० उदक्या विदुष्टदृष्टिपातात् शूद्रादि संपर्कदेशाच्च पाकादीनां पवित्रताऽस्तु ॥ इति पाकादीनां संप्राप्त्यहये निवेद  
 येत् ॥ अथ आसनादिदानम् ॥ तत्र तावत् उदङ्मुखः सजघनं दक्षिणं जान्वाच्य यज्ञोपवीत्यन्तर्जोदुक्रो जलयवसमन्वितं कुशत्रयमुज्ज्वेवा  
 दाय अ० अद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः पुरुरवारद्रवसंज्ञका विश्वेदेवा इदमासनं वोनमः ॥ इत्युच्चाय देवतीर्थेन पूर्वाग्रं कुशत्रयमुत्तुजेत् ॥  
 एवं मातामहादिदेवभ्योऽपि दद्यात् ॥ ततो दक्षिणामुखः प्राचीनोपवीतीः पातितवामजानुः दक्षिणभुजकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अ० अद्यामुक्त  
 गोत्रास्मत्पितृमुक्तशर्मन्सपत्नीक वसुरुप इदमासनं तुभ्यं स्वधा इत्युच्चाय पितृनीर्थेन मोदकं दक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पितामहा  
 दिपञ्चभ्योऽपि दर्भासनानि दद्यात् ॥ ततः सव्यादिना सयवकरः ॥ अ० पुरुरवारद्रवसंज्ञकान्विधान्देवानहमावाहयिष्ये इत्युच्चाय अ० विश्वेदेवा  
 सऽआगत शृणुताम इमं ठं हवम् ॥ एवं बर्हनिर्णीयते ॥ इत्यनेन वाह्यं अ० यथासि यवयास्मद्वेषे यवया रताः इत्यनेन ययान्विकीर्य अ० विश्वे  
 देवाः शृणुतेम ठं हवम् मेयेऽन्तरीक्षे यऽउपद्या विष्ट ॥ येऽअग्निजित्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्याऽस्मिन् बर्हिषिमादयध्वम् ॥ इति जपेत् ॥  
 विश्वेदेवा तृतिनाम्नो राजाने अ० आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ॥ ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ॥ १ ॥ इति श्लोको



पुत्रारणीयः ॥ ततोऽपसव्यादिना सतिलहस्तः ॥ ॐ पितृहमावाहयिष्ये ॥ इत्युच्चार्य्य ॥ अँ उशन्तस्त्वानिधीमहुरशन्तः समिधीमहि ॥  
 उशन्नुशन्तऽआवहपितृन्हविषेऽन्तवे ॥ इत्यावाह्य ॥ अँ अपहताऽअमुराक्षरिऽसिवेदिषदः ॥ इतितिलत् श्राद्धदेशेर्विकीर्य्या ॥ अँ आयन्तुनः  
 पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञोस्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तुतेवन्वस्मान् इति जपेत् ॥ ततः सव्यापसव्याभ्या  
 मध्यपात्रेष्वधुमुदर्भपवित्रमेकमुपरिधृत्वा ॥ अँ शन्नो देवगिरिभिष्टुऽआपो भवन्तु पतये ॥ शयोरभिस्रवन्तुनः ॥ इति प्रत्येकं जलं प्रक्षिप्य देवपात्रे  
 षु अँ यवोऽसियवयास्मद्वेषयवयाराताः ॥ इतियवान्विकीर्य पित्रादिपात्रषट्के अँ तिलासिसामैद्वत्यो गौसवो देवनिर्मितः ॥ प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्व  
 धयापितृद्वेष्टोऽन्यीणाहिनः स्वयानमः इतितिलान्प्रक्षिपेत् ॥ ततोऽष्टसुपात्रेषु तूष्णीमेव गंधपुष्पादि निक्षिपेत् ॥ ततः सव्येने देवार्घपात्रसंप  
 त्तिरस्तु इति पठित्वा प्रथमदेवार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा ॥ तत्रस्थं पवित्रं देवपात्रेषु वर्धदत्त्वा किंचिदुदकं च दत्त्वा अँ यादिव्या आपः पयसा संब  
 धुष्युऽअन्तरिक्षाऽउत पाथिवीर्य्याः हिरण्यवर्णयज्ञियास्तान् आपः शिवाः शठैः स्योनाः सुहवा भवन्तु ॥ इति मंत्रेणाभिमन्त्र्य कुशत्रययज्जला  
 न्यादाय ॥ अँ अद्याऽस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनः पुहूरवाद्भवसंज्ञका विश्वदेवा एषवो हस्ताधः स्वाहानमः ॥ इति दक्षिणहस्ते नेत्रवर्धनं पत्रि  
 त्रोपरि अर्घ्यदत्त्वा पवित्रसहितमर्घ्यपात्रं देवपुरतः स्थापयेत् ॥ एवमेव मातामहादिदेवैर्भ्योऽप्यर्घ्यदद्यात् ॥ ततोऽपसव्यादिना ॥ अँ पित्राद्यवर्षा  
 त्रसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा ॥ पितृपात्रं गृहीत्वा पवित्रं भोजनपात्रं दक्षिणां दत्त्वा अँ यादिव्याऽआप इत्यनेनाभिमन्त्र्य ॥ द्विगुणभुभ्रुकुशत्रयति  
 लज्जलान्यादाय अँ अद्याऽमुगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन् सपत्नीक वसुरूप एषते हस्ताधः स्वयानमः इति दक्षिणहस्ते स्थपितुर्धनं यथाज  
 लंपतति तथा पवित्रोपरि सावरोषमर्धदद्यात् अर्घपात्रं च पितृपुरतः स्थापयेत् एवमेव पितामहादिपञ्चभ्योऽपि दद्यात् । ततः सव्यंकृत्वा अँ विश्वे



भ्यादेवेभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वापवित्रजलयुतदेवा घंपात्रद्वयं मासनदक्षिणपार्श्वे उत्तानं क्रमेण स्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितामहप्रतिपत्तामहा  
घंपात्रस्थजलादीनि पितृपात्रेकृत्वा एवमेव वृद्धप्रमातामहप्रमातामहयोः पात्रस्थजलादीनि च मातामहपात्रेकुर्यात् ततः सव्यं कृत्वा प्राङ्मुखः  
पुत्रक्रामः पितृपात्रस्थजले नमुवमार्ज्जनम् आयुष्कामोदक्षिणपाणिना नेत्राञ्जनञ्चुर्यात् ॥ अथवा अँ आपः शिवाः शिवतामः शांताः शांतमा  
स्तेकृषन्तु भेषजमित्यनेनाभिषेकं कुर्यात् ततोऽपसव्यं कृत्वा अँ पितृभ्यः स्थानमसीति पाठित्वा प्रथमं पितृपात्रं पित्रासनवामप्रदेशभूमा  
वधमुखं संस्थाप्य तदुपरि पितामहपात्रं तदुपरि ग्रपितामहपात्रं च दद्यात् ॥ एवं मातामहेभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वा मातामहपात्रं न्युज्जीकृत्य  
प्रमातामहवृद्धप्रमातामहपात्राभ्यामाच्छादयेत् ॥ एतानि षट्कपात्राणि दक्षिणादानपथ्यं तनोद्वेज्ज्वालयेत ॥ अथ गंधादिदानम् ॥ सव्यादिकृत्वा  
गंधपुष्पगन्धादिकंधूना कुशत्रययवजलान्यादाय अँ अद्यास्मान् पितृप्रादित्रयश्राद्धसंविधिनः पुहुरवाद्वसंज्ञका विश्वे देवा एतानि गंधपुष्पघूपदीप  
तांबूलथज्ञोपवीतवासोसिवोनेमः इत्युच्चार्य गंधाद्युत्सृजेत् एवमेव मातामहादिदेवेभ्योऽपि दद्यात् ॥ ततः कृतांजलिः कर्ता विषयदेवानामर्चनं  
संपूर्णमस्ति तत्रियात् ॥ ततः अपसव्यादिना पितृपक्षे गंधादिकंधूना द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अँ अद्यामुक्तास्मात्पितर  
मुक्तामस्ति तत्रियात् ॥ ततः अपसव्यादिना पितृपक्षे गंधादिकंधूना द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ इति पित्रे गंधादिदत्त्वा एवमेव मातामहादिपंचभ्योपि  
दद्यात् ॥ ततः कृतांजलिर्भूत्वा अँ पितृणामर्चनं संपूर्णमस्ति तत्रियात् ॥ एवं गंधाद्यवर्चनं विधाय सव्यपसव्याभ्यां भोजनपात्रस्थापनदेशं समाज्यः  
पात्राणि दत्त्वा गौसृष्टिकया जलेन ब्राह्मणादिषु चतुरस्रत्रिकोणवर्तुलमंडलानि आसनानि वेष्टयित्वा कुर्यात् ॥ अथाग्नौ करणम् ॥ तत्र यंज  
नक्षारवाजितघृताक्तमुष्णं श्राद्धाग्नौ भागं कांस्यपात्रे समुद्धृत्य ॥ सव्येन (अपसव्येन वा) अँ अग्नौ करणं कारयेत् इति पाठित्वा कुरुष्वेति ब्राह्म

णानुज्ञातो भयक्रोधत्वरारहितः स्वदक्षिणकरणे रजतादिपात्रस्थजले ॐ अग्नयेकव्यवाहनाय स्वाहा इदमग्नयेकव्यवाहनाय ॥ ॐ सो  
 मायपितृमतेस्वाहा इदं सोमायपितृमते ॥ इत्याहुतिद्वयं जुह्यात् ततोऽहुतशेषमन्नं देवपात्रद्वये पित्रादिपात्रेषु च दत्त्वा पिंडार्थमवशेषयेत्  
 [ अत्र परकीयभूमौ श्राद्धणरणे ॐ इदमन्नमेतद्वस्वामि पितृभ्यो नमः इति घृताक्तमन्नदंभेषु दद्यात् ] ततः सव्येन देवपात्रयोः अपसव्येन पितृ  
 पात्रेषु च उष्णमन्नं सघृतमनेकव्यजनयुतं सुशीतलजलसहितं यथावत् परिविष्य मधुना भिघार्य ॐ मधुव्याताऽऽकृताय ते मधुक्षरं तिसिधवः ॥  
 माध्वीन्निः संत्वाषधीः ॥ १ ॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमन्पाथिवं ठग्जः मधुद्वारस्तुनः पिता ॥ २ ॥ ॐ मधुमान्नोऽब्जनस्पतिर्मधुमाऽअन्तुसूर्यः मा  
 ध्वीर्गवो भवन्तु नः ॥ ३ ॥ ॐ मधुमधुमध्विन्यभिमंत्रयेत् ॥ ततः सव्येन उत्तानपाणिभ्यां पित्रादिदेवपात्रमालभ्य ॥ ॐ पृथिवीतिपात्रं द्यौ  
 रपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतंऽअमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ इति जप्त्वा ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधेपदम् ॥ समूढमस्य पाठं सुरेस्वाहा इत्येतां  
 वीष्णवीमृचमुच्चार्याऽधोमुखं स्वांगं गृह्णमनलम् ॥ ॐ विष्णो हव्यं ठग्ज इतिय जुषाऽन्नो निवेश्य ॥ इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् एतत्सर्वं हवि  
 रित्युक्त्वा ॐ अपहताऽअसुराक्षाऽसिर्वेदिषद् इतियवान् अन्नपात्राणीतो विकीर्य वामनकरणे पात्रं स्पृन्दक्षिणकरणे कुशत्रययवजलान्या  
 दाय ॐ अद्याऽस्मात्पित्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः पुरुषरवार्द्रं वसंज्ञका विश्वेदेवा इदमन्नं हव्यं सोपस्करं परि विषममृतं रूपं वः स्वाहानमः इत्युदकं देव  
 तीर्थेन देवदक्षिणमागे भूमौ निक्षिपेत् । एवमेव मातामहादिदेवेभ्योऽप्युत्सृजेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितृपात्रं जुष पाणिभ्यां व्यस्ताभ्यां स्पृष्ट्वा  
 ॐ पृथिवीतिपात्रं गौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतंऽअमृतं जुहोमि स्वधा इति पाठित्वा ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधेपदम् ॥ समूढमस्य पाठं  
 सुरे ॥ इत्येतामृचं जप्त्वा स्वाङ्गुष्ठमधोमुखमनलम् ॐ विष्णो एकव्यं ठग्ज इतिय जुषाऽन्नो निवेश्य इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् एतत्सर्वं कव्यम्

इतिपठित्वा अँअप्राहताऽअसुरा रक्षार्थंस्विद्विषद इतितिलनन्नाप्रात्रपितोऽप्रदक्षिणेन विकीर्य वामकरेण पात्रंस्पृशन् दक्षिणकरेण द्विगुभुमद्वशत्रयतिलजलान्यादाय अँअद्यामुकगोत्रे अस्मन्यितरमुकशर्मन्सपत्नीकस्वरूप इदमन्नकव्यं सोपस्करं परिविष्टममृतहृतुभ्यं स्वधाइयुदकीपितृतीर्थेन पित्रासनवामागभूमौ निक्षिपेत् ॥ एवमेव पितामहादिपंचभ्योऽप्युत्सेजेत् ॥ ततः अँअन्नहानिक्रियाहीनं विधिहानं चयद्वेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तुइतिप्राथ्यं सव्येन व्याहृतित्रयपूर्वा सप्रणवां गायत्रीं त्रिः सकृद्वाजयेत् ॥ तथा पवित्रपाणिद्वैष्वासीनः ॥ अँमधुव्याताऽक्रतायतेमधुक्षरतिसिधवः॥ माध्वीनः संवोषधीः ॥१॥ अँ मधुनक्तमुतोषसमधुत्पाथिवठरजः ॥ मधुबौरस्तुनः पिता ॥ २ ॥ अँप्रधुमात्रोवनस्पतिर्मधुमाऽअस्तुमूर्यः माध्वीगविभक्तनुनः ॥३॥ इतित्र्यचम् ॥ अँमधुमधुमध्विति च जयेत् ॥ ततः अँकृष्णष्वपाजःप्रसितिन्नपृथ्वीय्याहि राजेवामवाऽइभेन तृष्वीमनुश्रामितिन्दूगानेस्तासिर्विध्यक्षसस्तापिष्टैः ॥१॥ तवभ्रमासऽआशुयाप तन्न्यनुसृष्टधृषताशोशुचानः ॥ तपूँष्यमेनुद्वापंतगानसंदितोविमृजविव्विशुल्काः ॥२॥ प्रतिस्फाविमृजृणितसोभवापायुर्विशोऽअस्याऽअदब्धः॥योनेद्रेऽअवशर्शसोयोऽअन्त्यग्नेमाकिष्टेव्यथिरादधर्षित् ॥३॥ उदग्नेतिष्ठप्रायतनुष्वन्यमित्राँऽआषतात्तमहेते योनोऽरातिर्तसमिधानचक्रे नीचातं धक्ष्यतसन्नशुष्कम् ॥४॥ ऊर्ध्वोभवाप्रतिविद्धयाद्वचस्मदाविकृष्णष्वदैव्यान्यनो अवस्थिरतनुहियातुजनाश्रामिमजामिभ्यमृणीहिशत्रून् अग्नेद्वतेजसा सादयामि॥५॥इतिक्षेत्रीःपंचकचःपठित्वा भूमौतिलास्तार्य्यपित्रादीन्ध्ययेत् ॥ ततःअँउदीरतामवाऽउत्तरासऽउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः॥अंसुय्यइयुवृकऽकृतज्ञास्तेनोऽवन्तुपितरोहवेषु॥१॥आद्रिसोनःपितरोनववाऽअथव्याणोभृगवःसोम्यासः ॥ तेषांवयर्धसुमतौयज्ञियानामपिभेदे सौमनसे स्याम ॥२॥ येनःवृषपितरः सोम्यासोन्निहरे सोमपथं वसिष्ठाः ॥ तेमर्ध्वमः

सठरराणेहवीठिच्छुशान्नुशान्द्रिःप्रतिकाममन्तु॥३॥त्वठसोमप्रचक्रितोमनीषात्वठरजिष्ठमनुनेषिपथाम् ॥ तवप्रणीतिपितरोनइंदोदेवेषुरन  
मभजन्तधीराः॥४॥त्वयाहिनः पितरः सोमपूर्वैकभाणिचक्रुः पवमानधीराः ॥ वक्त्रव्रातः परिधीठरपोणुवीरोभिरश्वैर्मघवाभवानः॥५॥ त्व  
ठिसोमपितुभिः संविदानोनुद्यावा पृथिवीऽआततंथा ॥ तस्मैतऽइन्दोहविषाविधेमावय०स्यामपतयोरयीणाम्॥६॥ बर्हिषदःपितरऽऊत्यव्वी  
गिमवोहव्याचक्रुमाजुषद्धम् ॥ तऽआगतवसा शन्तमेनाथानः शंयोरपोदधात॥७॥ आहंपितृन्नुविदत्रा ॥८॥अविस्तिनयातश्चविक्रमण  
चविष्णोः॥बर्हिषदोयस्वधया सुतस्यभजन्तपित्वस्तऽइहगमिष्ठाः॥८॥उपहूताःपितरःसोभ्यासोबर्हिष्येषुनिधिषुप्रियेषु ॥ तऽआगमन्तुतऽइह  
श्रुवन्त्वधिब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान् ॥ ९ ॥ आयन्तुनः पितरः सोभ्यासोग्निष्वाताः पथिभिदेवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तुते  
वन्त्वस्मान्॥१०॥अग्निष्वाताःपितरऽएहगच्छतसदःसदत्सुप्रणीतयः ॥ अत्ताहवि०षिप्रयतानिबर्हिष्यथारयिठिसव्वीरं दधातन॥११॥  
येऽअग्निष्वातायेऽअनाग्निष्वातामद्वयेदिवः स्वधयामादयन्तोतैभ्यः स्वराडसुनीतिमेतांथवावशन्तन्वङ्कूलयति॥१२॥अग्निष्वातानृतुमते  
हवामेहनारशठिससोमपीथंय्यऽआहुः॥तेनोविप्रासःसुहवाभक्तुव्वयठस्यामपतयोरयीणाम् ॥१३॥ इतिपितृमंत्राव् ॥ अंसहस्रशीर्षिपुरुषः  
सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सप्तमिठस्सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठदशांगुलम् ॥ इत्यादिपोदशक्रचात्मकं पुरुषमूक्तम् ॥ अँआहुः शिशानोवृषभेनभीमो  
घनाघनः क्षोभणश्चरषीनाम् ॥ संक्रंदनोनिमिषऽएकवीरःशत ठिसेनऽअजयत्सकामिन्द्रः इयादिसप्तदशमंत्रात्मकमप्रतिशं चपठेत् ॥ ततः  
अँसप्तव्याधादशणेषु मृगाःकालंजेरिगैरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्रूपे हंसाः सरसिमानसे ॥१४॥ तेभिजाताःकुरुक्षेत्रे ब्राह्मणवेदपारागाः ॥ प्रस्थि  
तादूरमध्वान द्यूतेभ्योऽवसीदिता॥ इतिहविःस्तोत्रम् अँयोगीश्वर्याज्ञवल्क्यं संपूज्यमुनयाब्रुवन् ॥ वर्णाश्रमेतराणानो ब्रूहिधर्मानशेषतः॥

मन्वात्रिणहरीतयाज्ञवल्क्यशर्नोद्गिराः ॥ यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यानवृहस्पती ॥ पराशरव्यासशंखलिकितादृशगौतमौ ॥ शतातपेव  
 सिष्ठश्च धर्मशान्नाप्रयोजकाः ॥ इतियाज्ञवल्कीयगार्थां चपठित्वा सप्ताचिस्तं च पठेत् ॥ ॐ अमूर्तानां चमूर्तानां पितृणां दीप्तिं तेजसाम् ॥  
 नमस्यामिसदातेषां ध्यायिनां दिव्यचक्षुषाम् ॥ १ ॥ इंद्रदीनांचनेतारो दृक्षमरीचयोस्तथा ॥ सप्तर्षीणां तथान्येषां तान्नमस्या  
 मिकामदान् ॥ २ ॥ मन्वादीनां सुनिद्राणां सूर्याचंद्रमसोस्तथा ॥ तान्नमस्याभ्यहसर्वोन्पितरश्चाणवेषु च ॥ ३ ॥ नक्षत्राणां ग्रहाणां च  
 वायव्यश्रोत्रेभ्योस्तथा ॥ द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृताञ्जलिः ॥ ४ ॥ देवर्षीणां ग्रहाणां च सर्वलोकनमस्कृतान् ॥ अभयस्य  
 सदादातृव्रतमस्य हं कृताञ्जलिः ॥ ५ ॥ प्रजापतयेकस्थपाय सोमाय वरुणाय च ॥ योगीश्वरेभ्यश्च सदा नमस्यामि कृताञ्जलिः ॥ ६ ॥  
 नमोगणेभ्यः सप्तभ्यस्तथालोकेषु सप्तसु ॥ स्वयंप्रेवेनमम्यामि ब्रह्मणे योगचक्षुषे ॥ ७ ॥ सोमाधारान् पितृगणान्योगमूर्तिधरांस्तथा ॥ नमस्या  
 मितथा सोमं पितरं जगतामहम् ॥ ८ ॥ अग्निरूपास्तथैवान्याब्रमस्यामि पितृनहम् ॥ अग्नीषोममयं विश्वं यत एतदशेषतः ॥ ९ ॥ येतु ते जसि  
 ये च ते सोममूर्यांश्चिमूर्तयः ॥ जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः ॥ १० ॥ तेऽप्योखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसः ॥ नमो नमो  
 नमस्तेभ्यः प्रसीदंतु स्वधामुजः ॥ ११ ॥ पितर ऊचुः ॥ स्तोत्रेण नेन च नरो योऽस्मान्स्तोष्यति मज्जितः ॥ तस्य तुष्टावयवभोगानामज्ञा  
 नंतथांतरम् ॥ १२ ॥ शरीरोगेभ्य मर्थं च पुत्रपौत्रादिकं तथा ॥ प्रदास्यामो न संदेहो यत्कान्यदपि वाञ्छितम् ॥ १३ ॥ तस्मान्पुण्यफललोक  
 वाञ्छद्भिः सततमैः ॥ पितृणां चाक्षयांति स्तव्यास्तोत्रेण मानवैः ॥ १४ ॥ पठिष्यति द्विज इत्याणां भुंजतां पुनतः स्थिताः ॥ अस्माक  
 मक्षयं श्राद्धं तद्विष्यत्यसंशयम् ॥ १५ ॥ इति ॥ ततो न्यान्यापि रुचिस्तोत्रब्रह्मविष्णुस्तव प्रभृतीनि यथारुचि यथाशक्ति पठेत् ॥ ततोऽप्यसव्या

दिनालच्छिष्टसन्निधौ भूमिप्रोक्ष्य तत्र दक्षिणश्रृङ्गकुशत्रयमास्तीर्य सर्वप्रकारमन्नसंख्यं जनमुदृत्य स तिलमेकीकृत्य ॐ अग्निदग्धश्च ये जीवा येऽप्य  
 दग्धाः कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्तायंतु परांगतिम् ॥ इति मंत्रेण कुशोपरि अन्नं विकीरेत् ॥ ततः सव्यकृत्वा आचम्य हारिस्मृत्या पूर्वं  
 वद्वायत्रीं मधुक्वात्ताऽकृतायते इत्यादिऋचं मधुमधुमध्विति च पठेत् ततोऽपसव्येन पित्राद्युच्छिष्टसन्निधौ चतुरस्रं दक्षिणपूर्वं रमणीयं हस्त  
 मात्रं चतुरगुलोच्छ्रितं पित्रादित्रयपिंडपातनार्थं सिकताभिः स्थानं निर्माय तथा मातामहबहुच्छिष्टसन्निधौ मातामहादिपिंडपातनार्थं तादृश  
 मेव स्थानं कुर्यात् तत्र न भयत्र मध्यदेशे दर्भपिंडजुलीमूलेन ॥ ॐ अपहताऽअसुरारक्षः सर्वे दिषद् इति मंत्रेण सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन  
 दक्षिणाग्रं रितां सङ्कृतसङ्कल्लिखित्वा दर्भपिंडजुलीमुत्तरस्यां दिशि निक्षिप्य ॥ ॐ यैरुपाणिप्रतिमुंचमानाऽअमुरास्तः स्वयथा चरन्ति ॥ परापुरो  
 निपुरो ये भर्तयग्निर्नष्टल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात् ॥ इति मंत्रेण ज्वलदुत्सुकं प्रत्येकं रेखोपरि भ्रातृमयित्वादक्षिणतो निदध्यात्त उपमूलसङ्कृदाच्छिन्न  
 दक्षिणाग्रकुशत्रयरेखोपरि स्तीत्वासव्येन देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽपसव्येन पुटकपट्टे जलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा एकपात्रं वामहस्ते  
 कृत्वा द्विगुणभुनक्तुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुक्तगोत्रास्मत्पितरमुक्तशर्मन्सपत्नीकवमुखरूप अत्राऽवने निदधेऽस्वधा इति कुश  
 मूले पित्रे पितृतीर्थेन अवनजं दद्यात् ॥ एवं पितामहाय कुशत्रयमध्ये प्रपितामहाय कुशत्रये अवनजं च दद्यात् ॥ एवमेव मातामहादिभ्योऽपि  
 दद्यात् ॥ ततः सर्वमाच्छृद्धशेषाद्गुणं किंचित्कचिदुद्भृदृत्य मध्वाज्यतिलमर्गव्यं जनयुतरं जातादिपात्रे कृत्वा बिल्वोपमान्स्पर्पिंडां ब्रिमाय  
 मधुघृताभ्यामाभिघार्य पित्रादिभ्यो दद्यात् ॥ तत्र प्रथमपिंडं द्विगुणमुक्तशत्रयादीनि चादाय ॐ अद्यामुक्तगोत्रा अस्मत्पितरमुक्तशर्मन्सपत्नीक  
 वसुरुपस्ततोऽपिंडं स्वधा इति प्रथमं अवनजं स्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन दद्यात् एवमेव पितामहादिभ्यः पंचभ्यः प्रत्येकं तत्त

दवनेजनस्थाने पिंडं दद्यात् ततः प्रपितामहद्वयत्रयाणलपिभुजतिमिष्टदिश्यान्नादिकपिडावारकुशमूले अल्लपभागभुजपितरस्तृप्यन्तु इतिपठित्वाहस्तप्रोञ्ज्य जलेनहस्तौप्रक्षालयेत् ततः सव्यंकृत्वा त्रिराचम्य हरिस्मरेत् ततोऽपसव्येन अत्रपितरो मादयन्ध्वं यथाभा नमावृषायध्वम् ॥ इतिपितृशेनपठित्वावामनेनोदमुखाभ्युपनीतमनाः मनक् श्वासं नियम्य तेनैव यथापरावृत्य अमीममंतपितरो यथा भागमावृषायिष्यत इति जपेत् एवंमातामहपक्षिपिभोजनेन कुर्यात् ततः पूर्वदत्तावनेजनपात्रस्थजलेन अद्यामुक्तगोत्र अस्म न्पितामुक्तशर्मन्सपत्नीक वरुणप अत्रप्रत्यवनेनिश्चतेस्वया इतिप्रथमपिंडोपरि प्रत्यवनेजनं दत्त्वा एवमेव पितामहादिपिंडोपरि तत्तद् वनेजनपात्रेणप्रत्येकं प्रत्यवनेजनं दद्यात् ततोर्नोर्वीक्सस्य सव्येनआचम्य अपसव्यंकृत्वा अनमोवः पितरो रसाय नमोवः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोवः पितरोमन्यवे नमोवः पितरः पितरोनमोवो गृहान्नः पितरो दत्तसतोवः पितरोदेष्व इति कृत्वाञ्जलिः पठेत् । ततः अ एतद्गः पितरोवास इति पठित्वा षट्सुपिंडुषुमुत्राणि प्रतिपिंडमुणदिशा वा पंचाश दूर्ध्ववयस्क्यजमानहृदयलोमानि वा दद्यात् । ततो द्विगुणभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय अद्यामुक्तगोत्र अस्मत्पितरमुक्तशर्मन् सपत्नी कवमरुहप एतत्तेवासः स्वया इति सूत्रमुत्सृजेत् एवमेव पितामहादिपंचस्वपिण्डेषु तत्तन्नामोत्सृजेत् ततः पित्रादीनुदिश्य तदीयपिण्डेषु तृ ण्णांगधगुण्यधृपदीपतंबूलदक्षिणादीनिदद्यात् पिंडशेषान्नचपिंडसमीपे विकीरेत् । ततः सव्यापसव्याभ्यां देवपितृभोजनपात्रेषु अ शिवाआ पः संतु इति सकृत्सकृजलं दद्यात् ॥ अ सौमनस्यमस्तु इतिगुणाणि ॥ अ अन्नचार्गिष्टमस्त्वितियवांश्चदद्यात् ( नंतुलान् ) ॥ ततः अअमुक्तगोत्रस्य अस्मान्पितुमुक्तशर्मणः सपत्नी कस्यवमरुहपस्यदत्तेतदन्नपानादिकमक्षयमस्त्वितिसतिलमक्षय्योदकं भोजनपात्रेदद्यात् ॥

एवमेवपितामहीनानामगोत्राभ्यातदीयभोजनपात्रेषु अक्षय्यादकं दद्यात् ॥ ततः सव्यंकृत्वा प्राङ्मुखस्तन्मनाः कृताञ्जलिदक्षिणां दिशंश्य  
 न् ॐ अघोराः पितरः संचितिपठित्वा समाचारात्पूर्वां जलधारां दत्त्वा आशिषोऽर्पयन्त्यात् ॥ ॐ गोत्रं नो वद्धताम् दातारो नो भिद्वताम् वेदाः  
 सततिरेव च श्रद्धाचनो माव्यगमत् बहुदेयं च नोऽस्तु अन्नं च नो बहु भवेत् अतिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः सन्तु माचयाचिष्यमकंचन ॥  
 एताः सत्या आशिषः संतु इति वेदेत् ॥ ततोऽप्यसव्यंकृत्वा पिंडोपरि सपित्रां च नृशानां स्तीर्य स्वर्धावाचिष्ये इति ब्रूयात् ॥ ॐ पितृभ्यः पिता  
 महेभ्यः प्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो मातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यो वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यश्च स्वधोच्यतामिन्युक्त्वा ॥ ॐ उर्ल  
 वहतीरि मृतं द्यूतं पयः कीलालं परिरुतम् ॥ स्वधास्थितं पर्ययत मे पितृनि तिसपित्रां कुशोपरि दक्षिणां जलधारां दद्यात् ॥ ततः स्वयं यजमानोऽर्घ्यं  
 पात्राण्युत्तानि कृत्य सव्येन देवदक्षिणां दद्यात् ॥ हिरण्यं कुशत्रयादीनि चादाय ॥ ॐ अग्राऽस्मत्पित्रां दित्रयश्चाद्ध संबंधिनां गृहं रवाद्रिव संज्ञकानां  
 विश्वेषां देवानां कृतं तत्पार्वणश्चाद्ध प्रतिष्ठार्थं मिदं हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्राय मुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां त्वेन दातुमहमुत्सृजे ॥ इति संकलय  
 दद्यात् ॥ एवमेव मातामहादि देवश्चाद्ध दक्षिणां पिदद्यात् ॥ ततोऽप्यसव्यंकृत्वा राजतदक्षिणां जलकुशादीनि चादाय ॥ ॐ अद्या मुकगोत्रस्य अस्म  
 त्पितुः मुकशर्मणः सपत्नीकस्य वसुहृत्पस्य कृतं तत्पार्वणश्चाद्ध प्रतिष्ठार्थं मिदं राजतं चंद्रदेवतममुकगोत्राय मुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां त्वेन दातु  
 महमुत्सृजे ॥ इति पितृदक्षिणां दद्यात् एवमेव पितामहादिपंचभ्योपि चाद्ध दक्षिणां पिदद्यात् ॥ देवराजतनिषेधरुद्राश्रुसंभवात् ॥ असंभवे फलमूला  
 दि कंदं दद्यात् ततः ब्राह्मणतुजातः पिंडानुत्थाप्य स्थाल्यां निधाय वज्रप्राणं कृत्वा पिंडाधः स्थानुसंक्रुदाच्छिन्नान् दर्भान् नुरुसुकद्वयं च वह्नाक्षिपेत् ॥  
 ततः सव्येन अविश्वेदेवाः प्रीयतामिति प्रार्थ्य ॥ अप्यसव्यंकृत्वा ॥ कुशत्रयेण ॐ वाजे वाजेऽतवाजिनो नोधनेषु विप्रामृताऽऽकृताः ॥



अस्यमद्धः पिबत मादयध्वंतृतायातपथिभिर्हवयानैः ॥ १ ॥ इतिमंत्रेणपितृन्विस्मृत्य ॥ ॐ आमावाजस्यप्रसवाजगम्यादेभृद्यावापृथिविविध  
 हूये ॥ आमागंतांपितरामातरासामोऽअमृतवेनागम्यतात् ॥ २ ॥ इतिप्रदक्षिणीकृत्यनमस्कृत्योपविशेत् ॥ ततः सव्येन ॐ देवताभ्यइतित्रिजं  
 पित्वा अपसव्येन रक्षादीर्पनिर्वाप्यहस्तौपादौप्रक्षाल्यसव्येनआचम्य ॥ ॐ प्रमादनुवृतां कर्म० इतिपठित्वाकर्मभूतिकामोविष्णुस्मरेत् ॥  
 ततः पिंडान् गां वायसान् अजंवासादयेत् अग्राजलेवासिप्ते ॥ पुत्रकामः पितामहोपिडम् ॐ अपांवाषधीनारं संप्राशयामि भूत  
 कुंतंगर्भधत्स्व ॥ इतिमंत्रेणऋतुस्नातायेपितृभक्षायसाध्यैयश्मपन्यदद्यात् ॥ साशुचिर्वाप्यता पुत्रकामा ॐ आधत्तपितरागर्भकुमारं  
 धरमजम् ॥ यथेष्टपुरुषेमेत ॥ इतिमंत्रेणपठितेऽश्रीयत् ॥ ततोवैश्वदेववलिकमणीकृत्वा ॥ दशाऽष्टौ संख्याकान् ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥  
 ततः ॥ यस्यस्मृत्याचनोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतांयति सद्योवर्देतमच्युतम् ॥ इतिपठित्वा अतिथिमुत्तभृत्यबंधवादिभिः  
 सहस्वयमपिभोजनंकुर्यात् ॥ तद्दिनेश्राद्धकर्तायुताध्वगमनं मैथुनायामस्त्वाध्यायकलहंभुनभोजनहंसदीनिचनकुर्यात् ॥ इतिगौडीय  
 श्राद्धप्रकाशे अपात्रकषट्कैवत्यपावर्षणश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ ६४ ॥ ६४ ॥  
 ॥ अथ महालय्यादिषु जीवित्यितृकर्तृकमातृपावर्षणश्राद्धप्रयोगः ॥ कर्त्तापूर्वधुनिरामिषमेकवारंमुक्त्वा तद्दिनेत्रौ प्रदोषति विप्रहृष्टेष्टगत्वाब्राह्म  
 णेभ्यानिमंत्रणंकुर्यात् ॥ ततःश्राद्धदिनेप्रातर्नित्यावश्यकं समाप्य पाकभूमिमुद्गामेयोदकेनसंकृत्य ॥ तत्रस्वयंमुस्मनातर्वाधैवैस्त्रिद्वारावा  
 पांकंकुर्यात् ॥ ततोदिनस्यषण्मुहूर्तानंतरं श्राद्धभोगोभयोदकेनोपलप्य ज्वलदंगारैः संशोध्यौगस्मृत्तिकयाच्छाद्य तिलैर्गोमसपेषैश्चविकी  
 र्यतत्रश्राद्धसामर्थीसंपाद्यतिलैर्नैलेनदीपंप्रज्वाल्य संस्थाप्यश्राद्धस्थानं वस्त्रेणवधयेत् ॥ ततोऽपराह्णमुस्मन्त्वा शुक्लधैतवाससोपरिधाय

श्राद्धदेशमागत्य स्वासेनप्राड्मुखपविश्य सव्येन आचम्य प्राणनायय्य अँअपवित्रः पवित्रोवा अँपुडरीकाक्षःपुनात्विति पठित्वाश्राद्धी  
 यद्रव्याणिस्वात्मानं च सिंचेत् ततः ॐ वैष्णव्यैनमः ॥ ॐ काश्यप्यैनमः ॥ ॐ अश्वय्यैनमः ॥ ॐ भूम्यैनमः ॥ इति नमः ॥ ॐ भगवत्य  
 गययैनमः ॥ ॐ भगवतेगदाधरायनमः ॥ इतितयोनैर्मस्कारंकुर्यात् ॥ ततः कुशत्रययजलान्यादाय देशकालौसंकीर्त्य अँ अद्यामुक  
 गोत्राणमस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनाममुकमुकदेवीनां गंगायमुनासरस्वतीरूपाणां विश्वेदेवपूर्वकं सपिंडकंपावर्णश्राद्धमहंकरिष्ये ॥  
 इतिसंकरय्य ॥ गायत्रीत्रिजिपित्वा ॐ देवताभ्यःपितृभ्यश्च महायोगिभ्यएवच ॥ नमःस्थाह्यैस्ववायै नित्यमेव नमोनमः ॥ इतित्रिजं  
 पेत् ॥ ततोयवांस्तिलगौरसर्षपंश्चगृहीत्वा ॥ ॐ तिलारक्षंस्वगुराहभारक्षंतु रक्षसात् ॥ वह्नैश्श्रोत्रियरक्षेदतिथिःसर्वक्षकः इतितिलकुशान्  
 द्वारदेशे क्षित्वा ॥ अँअग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीरक्षंतुमेदिशम् ॥ तथावर्हिदःपातुं याम्यायेपितः स्थिताः १ ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्भु  
 दीचीमपिसोमपाः ॥ अघोर्ध्वमपिकोणेषु हविष्मतश्चसर्वदा ॥ २ ॥ रक्षभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमोरक्षां  
 करोतुवै ॥ ३ ॥ वायुभूतपितृणांच तृप्तिर्भवतुशाश्वती ॥ इतिमंत्रैर्दिक्षुअधस्तादूर्ध्वकोणेषुचसर्वत्रतिलान्गौरसर्षपंश्चविकीर्य अपसव्ये  
 नवामेदक्षिणेवाकटिभागे नीवीबंधाविधेयः ॥ ततः सव्येनकर्म्मिभ्यश्चिपत्रे जल्यहृत्वा दुर्भालोदय ॐयदेवोदेवदेवेनदेवाश्चकृमावयम् ॥  
 अग्निष्मर्तस्मादेनसोर्विश्वान्सुञ्चवठहसः ॥ १ ॥ यदिदिवायदिनक्तमेनासिचकृमावयम् ॥ वायुष्मर्तस्मादेनसोर्विश्वान्सुञ्चवठहसः  
 ॥ २ ॥ यदिजाग्रद्वदि स्वप्नानांअसिचकृमावयम् ॥ सूर्योपतस्मादेनसोर्विश्वान्सुञ्चवठहसः ॥ ३ ॥ इतिकूर्भांडमूलैताभिर्मंत्र  
 अँशुक्क्यादिदुष्टदृष्टिनिपातात् शुद्धादिसंपर्कदोषाज्जपकादीनांपवित्रताऽस्तु इतिपाकदिनसंग्रहेष्वेत ॥ अथआसननिर्दिशन् ॥ तत्रादौ

उदङ्मुखः पातितदक्षिणजानुः सव्यं कृत्वा जलयवसमन्वितमुत्कुशत्रयमादाय ॥ अ० अद्यास्मान्नात्रादित्रयश्राद्धसंवर्धिनः पुहुरवाद्भुज-  
 सज्ञकाविश्वेदेवाद्दमासनवीनमः ॥ इति देवतीर्थेन पूर्वाशुक्रशत्रयमुत्सृजेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुखः पातितवामजानुः द्विगुणमुत्कुश-  
 त्रययतिलजलान्यादाय अ० अद्यामुक्तगोत्रेऽस्मन्मातरमुक्तदक्षिणारूपेऽद्दमासनतुभ्यं स्वधा इति सर्वतः पश्चिमगतं पितृतीर्थेन द्विगुण-  
 मुत्कुशत्रयदक्षिणग्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पितृमहीप्रतिपातमहीयादद्यात् ॥ ततः सव्यादिना सयवकरः ॥ अ० पुहुरवाद्भुजसंज्ञकान्विस्वा-  
 न्देवानहमावहयिष्ये ॥ इत्युच्चार्य ॥ अ० विश्वेदेवाऽऽगतश्रुतामद्दमठं हवम् ॥ एदं बर्हिर्निषादत ॥ इत्यनेन वाह्य ॥ अ० यवो-  
 सियवयास्मद्वेषयवयारातीः इत्यनेन यवान्विकीर्य ॥ अ० विश्वेदेवाः शृणुते मठं हवमेयेऽअन्तरिक्षेऽपद्यविष्ट ॥ येऽअग्निजिह्वाऽउतवाय-  
 जत्राऽआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम् ॥ इति जपेत् ॥ अ० आगच्छतु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ॥ येयत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवंतु ते-  
 इति श्लोकोऽप्युच्चारणायः ॥ ततोऽपसव्यादिना तिलहस्तः अ० मातरं वाहयिष्ये ॥ इत्युच्चार्य ॥ अ० अशन्तस्तनानि धीमह्यशन्तः समिवो माहि ॥  
 उशश्रुशतऽआवहमातृहविषेऽतवे ॥ इत्यावाह्य ॥ अ० अपहताऽआसुराश्चासि वेदिषद् ॥ इति तिलतन्नाद्वदेशे विकीर्य ॥ अ० आयन्तु नः-  
 पितरः सोम्यासोऽअग्निव्याताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तो धिमुत्तुते नन्वस्मान् ॥ इति जपेत् ॥ ततः सव्यादिना दे-  
 वार्धयात्रे पूर्वाग्रं विप्रधृत्वा ॥ अ० शत्रोर्देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शंखोर्भिसन्तुनः ॥ इति जलं प्रक्षिप्य ॥ अ० यवोऽसियवयास्मद्वेषयव-  
 यारातीः ॥ इति यवान् तूष्णीमेव गंधपुष्पाणि च निक्षिपेत् ॥ ततो देवार्धपात्रसंपत्तिरस्तु ॥ इति पठित्वा ॥ देवार्धपात्रं वामहस्ते कृत्वा तत्र  
 स्थपं विप्रलाशने प्रपुनतः पूर्वाग्रधृत्वा किंचिदुदकं च दत्त्वा ॥ अ० यादव्याऽआपः पयसा संभूयुर्ग्याऽअन्तरिक्षाऽउत पार्थिवीयाः ॥ हिरण्यवर्णा

यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः शठस्योनाः सुहवाभवंतु ॥ इत्यभिमन्य ॥ कुशत्रययवजलान्यादाय ॐ अद्यास्मन्मात्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः  
पुरूरवार्षद्रवस्रज्ञकाविश्वदेवाण्वोह स्तार्धः स्वाहानमः ॥ इतिदेवतीर्थेनपवित्रोपरिअर्घ्यदत्त्वापवित्रसहितमध्यपात्रदेवगुप्तः स्थापयेत् ॥ ततो  
ऽपसव्यादिना मात्रादिपात्रत्रयेषु प्रत्येकंदक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा ॥ ॐ शन्नो देवीरिति जलं क्षिप्वा ॐ तिलोसिसोमै देवत्यो गोसोमो देवनिर्मितः  
प्रत्नमग्निः प्रुक्तः स्वधयापि दृढो कान्त्रीणाहिनः स्वधा ॥ इति तिलात् तूष्णीमिव गंधपुष्पाणि च निक्षिपेत् ॥ ततो मात्राद्यर्घपात्रसम्यगितिस्तु  
इति पठित्वा मातृपात्रं गृहीत्वा तत्रस्थं पवित्रं दक्षिणाग्रं पलाशपत्रं धृत्वा किंचिदुदकं च दत्त्वा ॥ ॐ यादिव्याऽआप इत्यभिमन्य द्विगुणमु  
ग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवि गंगारूपे ण्यते हस्तार्धः स्वधानमः ॥ इति पितृतीर्थेन पवित्रोपरि  
सावशेषमर्घं दद्यात् ॥ अर्घपात्रं च पुनरुत्थापयेत् ॥ एवमेव पितामहीप्रपितामहीभ्यां दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसा  
न्युक्त्वा पवित्रजलयुतमासनं दक्षिणपार्श्वे उत्तानं पात्रं स्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना ॥ वृद्धप्रपितामहीप्रपितामह्योः पात्रस्थजलादिनिमातृ  
पात्रे कृत्वा [सव्येन प्राङ्मुखः पुत्रकामो मुखमार्जनमाणुष्कामो नान्त्राजं च कुर्यात्] ततोऽपसव्येन ॥ ॐ मातृभ्यः स्थानमसीति आसन  
वामपदेशभूमवधो मुखं स्थापयेत् ॥ एतत्पात्रत्रयंदक्षिणादानपर्यंतो नोद्धरं चालयेत् ॥ अथ गंधादिदानम् ॥ सव्यादिना गंधादिकं धृत्वा कुश  
त्रययवजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यास्मन्मात्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः पुरूरवार्षद्रवस्रज्ञकाविश्वदेवाणानि गंधपुष्पपूपादीपतांबूलयज्ञोपवीतवासोसि  
वोनमः ॥ इत्युच्चार्य गंधाधुत्सृजेत् ॥ ततः कृतजलिः कर्ता ॐ विश्वेभ्यो देवानां मर्वनं संपूर्णमास्ति वा तिब्रयात् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितृपक्षेभ्यो  
धादिकं धृत्वा द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवि गंगारूपे ण्यते निगंधपुष्पपूपादीपतांबूलसिंदूरवासो

सितुभ्यंस्वयानमः ॥ इत्युत्तुजेत् ॥ ततः ॐ मातृणामर्चनं संपूज्य मस्त्विति प्रार्थयेत् ॥ एवं गंधाद्यर्चनं विधाय सव्यापसव्याभ्यां भोजनपात्र  
स्थापनदेशं सम्मार्ज्यपात्राणि दत्त्वा जलादिनाविप्रादिषु चतुरश्रत्रिकोणवर्तुलमंडलमासनादिष्वथित्वा प्रत्येकं कुर्यात् ॥ अथाग्नौ करणम् ॥  
तत्र यंजनशार्वर्जितघृताक्तमुष्णं श्राद्धावागं कांस्यपात्रे समुद्रृत्य सव्यं कृत्वा प्राङ्मुखः ॐ अग्नौ करणं करिष्ये इति पठित्वा ॥ कुरुष्वेति ब्राह्म  
णानुज्ञातोऽस्वदक्षिणकरणे रजतादिपात्रस्थजले ॥ ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा ॥ इदमग्नये कव्यवाहनाय ॥ ॐ सोमाया पितृभ्यो नमः स्वाहा ॥  
इदं सोमाया पितृभ्यो नमः ॥ इत्याहुतिं द्रव्यं जुहुयात् ॥ ततो हुतशेषमन्नं देवपात्रे [ अपसव्यादिना ] मात्रादिपात्रत्रयेषु च पितृतीर्थेन किंचित्किंचिदवा  
पिडार्थमवशेषयेत् ॥ [ परकीयमूर्तं श्राद्धकरणे ॐ इदमन्नं भतेन्द्रस्वामि पितृभ्यो नमः ॥ इति घृताक्तमन्नं दंभेषु दद्यात् ] ततः सव्यं कृत्वा  
आचम्य उभाभ्यां कराभ्यां पात्रांतरणे देवपात्रे उष्णमन्नं सघृतमेकव्यं जनयुतं मुशीतलजलसहितं यथावत्परिविश्य मधुना भिवाय्य  
ॐ मधुव्वाताऽऽकृतायेते इति मंत्रं पठित्वा ॐ मधुमधुमाध्वन्यभि मंत्रयेत् ॥ ततः उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रमालभ्य ॐ पृथिवीते पात्रं द्वारं पि  
धानं ब्राह्मणस्य सुखेऽभ्युत्तरेऽभ्युत्तरे जहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समुद्रमस्य पात्रं सुरे स्वाहा इत्युच्चाय्य ॥ ॐ विष्णो  
हव्यं ठगक्ष ॥ इति यजुषाऽन्नं त्रैचांगुष्ठमधोमुखमनवनिवेश्य ॐ इदमन्नामित्यन्ने ॥ ॐ इमा आण्डतिजले ॥ ॐ इदमाज्यमिति घृते ॐ एतत्सर्वह  
विरिति नृनरं त्रैचांगुष्ठं निवेश्य ॥ ॐ अपहताऽऽसुरा रक्षाऽसि वेदिदं इत्यन्नपात्रपरितो यवान्विकीर्य वामकरणे पात्रं स्पृशन् ॥ दक्षिणकरणे  
कुशत्रयवज्रालन्यादाय ॥ ॐ अद्यास्मन्मात्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः पुरूरवाद्वैश्वंज्ञकाविधेदेवा इदमन्नं हव्यं सोपरस्करं परीविष्टममृतं रूपवः  
स्वाहानमः ॥ इत्युदकं देवतीर्थं नेदं दक्षिणभागे भूमौ निक्षिपेत् ॥ ततो पसव्यादिना मात्रादिपात्रत्रये प्रत्येकमुष्णमन्नं सघृतमेकव्यं जनयुतं ब्राह्मणतु

त्रिशंभुश्रीतलजल्युतंचयथावत्पारिविष्यमधुनाभिघार्य्य ॥ ॐ मधुव्वाताहितंमंत्रयेण ॐ मधुमधुमध्वित्तिचाभिंमंत्रयेत् ॥ ततोमातृपात्रं  
 न्युज्जाभ्यांव्यस्ताभ्याणांभ्यांस्पृष्ट्वा ॐपृथिवीतेपात्रद्वोरपिधानं ब्राह्मणस्यमुखेऽअमृतेऽअमृतंजुहोमित्स्वधा ॥ १ ॥ ॐइदंविष्णुर्विचक्रमेत्रे  
 धानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपात्रंसुरेस्वधा ॥ २ ॥ इतिजत्वा स्वांशुष्ठमधोमुखमनसम् ॥ ॐ विष्णोःकव्यठंगक्षइतियजुषात्रेनिवेश्य ॥ ॐ  
 इदमन्नम् ॐइमाआपः ॐइदमाज्यम् ॐएतत्सर्वकव्यमित्युक्त्वा ॥ ॐअपहताऽअसुराक्षाऽसिर्वेदिषदः ॥ इत्यन्नपात्रपरितस्तिलान्नविकी-  
 र्य्य ॥ वामकरेणपात्रमन्यजन् दक्षिणकरेण द्विगुणमुमकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ ॐअद्यामुक्रमोत्रेऽस्मन्मातृसुकेदंविंगारूपे इदमन्नं  
 कव्यसोपस्करंपारिविष्टममृतंरूपंतुभ्यंस्वधानमः ॥ इत्युदकंपितृतीर्थेनमातृवामभागेभूमौक्षिपेत् ॥ एवमेवपितामहीप्रपितामहीभ्यामुत्सृजेत् ॥  
 ततः ॥ ॐ अन्नहीनंक्रियाहीनं विधिहीनंचयद्भवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्त्वितिप्रार्थयन्नात्रात्रिजिपित्वा ॥ ॐ मधुव्वाताइतिन्यृचम् ॥ ॐ  
 मधुमधुमध्वित्तिचजपेत् ॥ ततः ॐकृणुष्वपाजइत्यादिरक्षोघ्नीः ॥ पंचरुचः पठित्वा भूमौतिलान्विकीर्य्य ॥ ॐ उदीरतामवर इतित्रयेद-  
 शपितृमंत्रान् ॥ ॐसहस्रशीर्षादितिपुरुषसूक्तम् ॥ ॐआशुःशिशानोइत्यादिसप्तदशमंत्रान्मन्त्रमप्रतिरथंच ॥ अन्यान्यपिपूर्वात्करचिस्त-  
 वप्रभृतीनियथाशक्तिपठेत् ॥ ततः उच्छिष्टपात्रसन्निधौ भूमौप्रोक्ष्य तत्रदक्षिणांशुकुशत्रयमास्तीर्य्य दक्षिणहस्तेसर्वप्रकारमन्नंस्वयंजंजल-  
 तिलसंहितंगृहीत्वा ॐअग्निदग्धाश्वयेजीवा येऽप्यदग्धाःकुलेमम ॥ भूमौदत्तेनतृणंतु तृसायांतुरंगतिम् ॥ इतिमंत्रेणपितृतीर्थेनकुशोप-  
 रितदन्नंविकीरेत् ॥ ततः संव्यंकृत्वा हस्तौप्रक्षाल्य आचम्य हारिर्मत्वा अपसव्येन मधुव्वाताइतिन्यृचं मधुमधुमध्वित्ति चजपेत् ॥ तत-  
 उच्छिष्टसन्निधौ हस्तांतोवाल्काभिश्चतुरस्रदक्षिणषष्ठस्थानमेकंनिर्मथतन्मध्यदभंपिजलीमूलं ॐ अपहताऽअसुराक्षाऽसिर्वेदिषदः

इतिदिशिणांमसकृद्देवां कृत्वातदुपरि ॐ येरूपानिप्रतिमुचमानाऽअसुराःसतः स्वधयाचरन्ति ॥ परापुराणिपुण्येभरन्त्यग्निनष्टाच्छोकान्  
 प्रणुदात्स्वस्मादिप्यंगारंभ्राभायिवादिक्षिणतोनिदध्यात् ॥ ततोऽपमूलसकृदाच्छिद्रदक्षिणाग्रकुशत्रयंरखोपरिस्तीर्त्वा सव्येनदेवाभ्यइतित्रि  
 जैपेत् ॥ ततोऽपसव्येनपुटकत्रये जलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा एकंपात्रंमहस्तेकृत्वादिगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अथद्यामुक  
 गोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेविऽअत्रावेननिक्ष्वतेस्वया ॥ इतिकुशमूलेमात्रेअवेनजनंदत्वा एवमेवकुशत्रयमध्यपितामहौ कुशाग्रे प्रपितामहौ चाव  
 नेजनंदद्यात् ॥ ततः सर्वस्माच्छादशेषाव्रादुण्णंकिंचित्किंचिदग्न्यदुहृतशेषाव्रमध्यतिलसर्वव्यंजनयुतं रजतादिपात्रेकृत्वाबिल्वो  
 पमान् त्रिपिंडान्निर्माय मधुघृताभ्यामभिधायप्रथमपिंडमादाय द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अथद्यामुकगोत्रेऽस्मन्मातरमु  
 कदेविंगंगारूपेणपतेपिंडः स्वयानमः ॥ इतिप्रथमावेनजनस्थानेनस्वयोपगृहीतदक्षिणहस्तेनापितृतीर्थेनपिंडं दद्यात् ॥ एवमेवापितामहौ  
 प्रपितामहोभ्यांक्रमेणततदवेनजनस्थानेनपिंडं दद्यात् ॥ ततः पिंडाधारकशमूले ॐ लेपभागमुजोमातरस्तृप्यंतु इतिपठित्वा हस्तप्राञ्छय  
 जलेनहस्तौप्रक्षालयेत् ॥ ततः सव्येनत्रिाचम्यहर्स्मरेत् ततोऽपसव्यंकृत्वा ॥ अथत्रमातरोमादयध्वमितिपठित्वावावर्तनेनदङ्गमुवी  
 भूय प्रीतमनाः मनाक्ष्वांसनियम्यतनवयथापरवृत्त्य ॥ अथमीमंदतमातरोयथाभागमावृषापिपदइतिपदश्वासमुत्सृजेत् ॥ ततः पूर्वे  
 दत्तावेनजनपात्रजलेन ॥ अथद्यामुकगोत्रेऽस्मन्मान्तमुकदेविंगंगारूपेऽप्रत्ययवेननिक्ष्वतेस्वया इतिप्रथमपिंडोपरिप्रत्ययवेनजनंदत्वाएवा  
 मेवापितामहौप्रपितामहौः पिंडोपरिप्रत्ययवेनजनक्रमेणदद्यात् ॥ ततोर्नीर्विक्स्यसव्येनऽऽचमेत् ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा अन्ममोवोमा  
 तरोरसायनमोवोमातः शोषायनमोवोमातरोजीवायनमोवोमातःस्वधायैनमोवोमातरोवायनमोवोमातरोभन्यवे नमोवोमातरोमातरो

नमोवोणहन्नोमातरादत्तसतावोमातरादेभ्यः ॥ १ ॥ इति कृतांजलिः पठेत् ॥ अण्टद्रोमातरावासः इति पठित्वा ॥ त्रिषु पिंडेषु मुत्राणि दत्त्वा  
 द्विषुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय अं अद्यामुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहोऽमुकमुकदेव्यो गंगायमुनासस्वतीरूपाणां निवासो  
 सिधुषभभ्यस्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ ततः पिंडेषु गंधेषु धूपदीपतांबूलदक्षिणादीनि दत्त्वा पिंडशेषान्नापिंडसमीपे विकीर्य अं पिंडार्चनसमय  
 रिपूणमस्तु इति प्रार्थयेत् ॥ ततः स्वयेनेदं पात्रे अपसव्येन मात्रादिभोजनपात्रेषु चक्रमेण ॥ अं शिवा अपः संतु इति जलम् ॥ अं सौमन  
 स्यमस्तु इति पुष्पाणि ॥ अं अक्षतं चारिषु चास्त्वितै देयवान् ॥ मात्रादिपात्रेषु चयवतिलांश्चक्रमेण दद्यात् ॥ ततोऽपसव्येन अं अद्यामुगोत्रा  
 या अस्मन्मातृमुकदेव्या गंगारूपायाः दत्तै तदन्नपानादिकमक्षय्यमस्त्विष्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ एवमेव पितामहीप्रपितामहोऽप्यक्षय्योदकं दद्या  
 त् ॥ ततः सव्यं कृत्वा ग्राह्यमुत्सन्नभनाः सुभनाः कृतांजलिर्दक्षिणां दिशं पश्यन् अं अघोरा मातरः संतु इति पठित्वा समाचारात्पिंडोपरिपूर्वा  
 ग्रांजलधारं दत्त्वाऽऽशिषो गृह्णीयात् ॥ अंगोत्रं नो वद्धतां दातारो नो भिंवद्धतां वेदाः संततिरेव च ॥ श्रद्धाचनो माव्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु ॥  
 अन्नं च नो बहुभेदं तृथांश्चलभेमहि ॥ याचितारश्च नः संतु माचयाचिष्कं च न ॥ एताः सत्या आशिषः संतु इति वदेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा  
 पिंडोपरि सपवित्रान् कुशानां स्तीर्य स्वधां वाचायिष्ये इति ब्रूयात् ॥ वाच्यतामिद्युक्ते अं मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यः स्वधोच्यतामिति वदे  
 त् ॥ अस्तु स्वधा इत्यनुज्ञातः ॥ अं उज्ज्वहंतीं रमृतं घृतमयः कीलालं परिस्नुतम् ॥ स्वधास्थितं पयतमेमातृरिति सपवित्रकुशोपरि दक्षिणां जल  
 धारं दद्यात् ॥ ततोऽर्घपात्राण्युत्तानां कृत्या ॥ सव्येन देवदक्षिणां दद्यात् ॥ कुशत्रययजलानि हरिण्यं चादाय ॥ देशकालौ संकीर्य ॥ अं अद्या  
 स्मन्मात्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनान् गृह्णुः स्वाद्रवसंज्ञकानां विषयेषां देवानां कृतै तत्तच्छ्राद्धक्रमेणः प्रतिष्ठार्थमिदं हि ण्यमाश्रित्व तमुकगोत्रायासु कशमेण



ब्राह्मणयदक्षिणात्वेन तुभ्यमहंसप्रदं इतिसंकल्प्य दद्यात् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा ॐ अद्याऽमुकोग्राया अस्मन्मातुरमुकदेव्या गंगाहृषिण्याः  
 ह्रुतैतत्पार्षणश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं च द्रवतममुकोग्राया मुकशर्मणि ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहंसप्रदं इतिसंकल्प्य मातुर्दक्षिणां  
 दद्यात् ॥ एवमेव पितमहीप्रपितामहीभ्यां षष्ठ्या विभक्त्या संकल्प्य क्रमेण रजतदक्षिणां दद्यात् ॥ द्वैरजतनिषेधः ॥ अंसमेव फलमूलादिकं दद्यात्  
 त्वा ॥ ततः पिंडानुत्थापयामि ॥ उत्थापय इत्युक्ते पिंडानुत्थाप्य स्थाल्यानि धायावघ्राणं कृत्वा सकृदाच्छिन्नान्दर्भान् उल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥  
 ततः सव्येन ॐ विश्वे देवाः प्रीयतामिति प्रार्थय अपसव्येन ॐ धाजे वाजे वतवाजिनो धेनुष्विष्वाऽअमृताऽऽकृतज्ञाः ॥ अस्य मन्त्रः पिबत मादय  
 ध्वं तृतायातपथिभिर्देव्यनैरिति मात्रादीन् विमृजेत् ततः ॐ आमावाजस्य प्रसवे जगम्या देमद्यावापृथिवीं विष्णुरूपे ॥ आमां गतां पितरामातरा  
 चामासोमोऽअमृतत्वेन गम्यादिति प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्यापविशेत् ॥ ततः सव्येन ॐ देवताभ्य इति त्रिजपित्वा ॥ अपसव्येन हस्ताभ्यां  
 रक्षादीर्पनिर्वाप्य हस्तौ पादौ प्रशाल्य सव्येनाचम्य ॥ ॐ प्रमादात्सुर्वतं कर्म प्रत्यवेताध्वेषु यत् ॥ स्मरणदेवताद्विष्णोः संपूर्णस्यादिति श्रुतिः १  
 इति पठित्वा कर्मभूतिकामां विष्णुं स्मरेत् ॥ ततः पिंडान् गवादिभ्यां दत्त्वा दशार्धौ चतुरेवाब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ ततो वैश्वदेव बलि कर्मणि कृत्वा  
 सुतभृत्यबांधवातिथिसंयुतः श्राद्धशेषितमन्नमश्नीयात् ॥ तद्दिने श्राद्धकर्तव्यतां धृत्या स्वगमनमथुना यासकलहपुनर्भोजनार्हसादीनि न कुर्यात् ॥  
 एवमेव प्रसंगतो गंगां त्वा अर्घ्यावाहनादिवर्ज्य सर्वत्र देवपार्षणं कुर्यात् ॥ तद्दिने श्राद्धकर्तव्यतां धृत्या श्विनशुक्रप्रतिपदिमातामहश्राद्धत्रि  
 देवतं कुर्यात् ॥ तत्र पूर्णोत्थानेन सर्वत्राचारः कार्यः ॥ ॥ इति गौडाय श्राद्धप्रकाशे जीवपितृकर्तव्यकर्मत्रिदेवपार्षणमातृपार्षणश्राद्धप्रयोगः ॥ ४३ ॥

॥ अथाऽपात्रकनंदिश्राद्धपद्धतिः ॥ तत्रतावद्ब्रह्ममुहूर्तेऽर्घ्यायथोपदेशंस्नानसंध्यादिनित्यकर्मसम्याप्रतर्षैचतुरोवाह्रणाग्निम्रियेत् ॥ ततोर्वेदांगणपतिसंहितागौर्यादिषोडशमातृकाः प्रतिमाक्षतपुंजेलखान्यतमेधविष्टनेषुस्थापयेत् ॥ तदथा ॥ कर्त्ताप्रक्षालितकरचरणः स्वाचान्तःसकुशोप्रहपाणिः शुद्धास्नेनप्राड्मुख उपविश्यकुशत्रयवज्रालान्यादाय देशकालौसंकीर्त्य ॥ ॐअद्यामुकर्मोद्भूतगणपतिसंहितषोडशमातृपूजनमहंकरिष्ये इतिसंकल्पयेत् ॥ ततःपुष्पाक्षतानादाय ॥ ॐगणानन्वागणपतिठहवामहेऽप्यियाणान्वाप्रियपतिठहवामहे निवीनान्वानिधिपतिठहवामहेऽसोमम ॥ आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासिगर्भधम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वर्गणपतेइहागच्छइहतिष्ठ इतिगणपतिस्थापयेत्॥ततःप्रदक्षिणक्रमेणगौर्यादिस्थापनम् ॥ ॐभूर्भुवःस्वर्गारिइहागच्छइहतिष्ठ॥ १॥ ॐभूर्भुवःस्वःस्वदेहागच्छइहतिष्ठ२॥ ॐभूर्भुवःस्वःश्चिइहागच्छइहतिष्ठ॥ ३॥ ॐभूर्भुवःस्वर्भवेइहा॥ ४॥ ॐभूर्भुवःस्वःसावित्रीहा॥ ५॥ ॐभूर्भुवःस्वविजयेइहा॥ ६॥ ॐभूर्भुवःस्वजयेइहा॥ ७॥ ॐभूर्भुवःस्वदेवमेने॥ ८॥ ॐभूर्भुवःस्वःस्वदेहा॥ ९॥ ॐभूर्भुवःस्वःस्वादेहा॥ १०॥ ॐभूर्भुवःस्वमार्तइहागच्छइहतिष्ठत॥ ११॥ ॐभूर्भुवःस्वलोकात्तरे इहागच्छतइहतिष्ठत॥ १२॥ ॐभूर्भुवःस्वःऋदेहा॥ १३॥ ॐभूर्भुवःस्वःपुष्टेइहा॥ १४॥ ॐभूर्भुवःस्वस्तुष्टेइहा॥ १५॥ ॐभूर्भुवःस्वरात्मकुलदेवतेइहागच्छइहतिष्ठ १६ ॐभूर्भुवःस्वःश्रीरिहागच्छइहतिष्ठ १७ इतिगणपतिसंहिताएतामातृग्रन्थकर्मकारव्याहृतिर्वैकृत्मावाह्यस्थापयित्वा ॥ ॐमनोजैतिर्जुषतामाज्यस्येतिप्रतिष्ठाकृत्वा ॥ प्रणवादिनमोतेनस्वस्वनाम्नापोदशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः केनचित्पात्रेणसगुण्डविलीनधृतमादाय ॐऽस्योऽयमिष्टमसिधत्तथाऽस्योः पवित्रमसिहस्रधारदेवस्त्वामवितानुतुऽस्योः पवित्रेणशतधारणऽस्योः कामधुसः ॥ १ ॥ इतिमंत्रेणमातृणामुपरिभित्तग्राः सप्तपंचवाधारुतरोत्तरेनक्रमेणपातयेत्

ताश्चब्रूयते ॥ ततः ॐ आयुष्यं चैत्यं श्रयस्पोषमाद्भिदम् ॥ इदं हि रह्यं वर्षस्वजैत्राया विशतादुमम् ॥ १ ॥ नतद्र  
 क्षां ॐ सिनपिशाचास्तर्गन्ति देवानामोजश्रथमजठह्वेतत् ॥ यो विभर्ति दक्षायणठं हिरण्यठः स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ २ ॥ य  
 दाबध्नन्दक्षायणा हिरण्यठः शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नाभि शतशदायायुष्माञ्जरदृश्यथासम् ॥ ३ ॥ इति वृद्धिमुक्तं पठेत् ॥  
 अथ नदींश्चाद्धप्रयोगः ॥ तत्रादौ गोमयोपलिप्तदेशेऽश्राद्धसामग्रीसंपाद्य प्राग्रक्षुशोत्तरे ध्वासनेषु प्राङ्मुखान् दक्षिणप  
 क्रमानुदगपवर्गान् षट्दम्बद्वित्रैश्च प्रत्यासनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वालयेत् ॥ ततः कर्ता प्रक्षालितकरचरणः स्वाम  
 ने उदङ्मुख उपविश्य सपवित्रोपकुशः सव्येन आचम्य प्राणानायम्य ॥ सजघनं दक्षिणं जान्वाच्य ॥ तांबूलादिकमादाय ॥ ॐ अद्य कार  
 प्यमाणा मुककर्मनिमित्तकाभ्युदयिकश्राद्धे अस्मन्मात्रादि त्रयश्राद्धसंबन्धिनः सत्यवसुमंजसा विश्वेदेवाः अनेन तांबूलादिद्रव्येण कुशब  
 दुरुपा भवन्तोभयानि मंत्रिताः ॥ ॐ आमंत्रिताः स्मः ॥ इति सर्वतो दक्षिणगतं मात्रादिदेवदम्बद्वित्रैर्निमन्त्र्य एवमेव तदुत्तरगां पित्रादिमाता  
 महादिदेवदम्बद्वच क्रमेण निमन्त्र्य ततः ॐ अक्रोधनैः शौचपरि रतिपठित्वा स्वागतं भवतां सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ ततः पुनस्तांबूलादिक  
 मादाय ॐ अद्या मुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामही प्रणिता महाऽमुकामुकद्वेयोनदीमुख्यः अनेन तांबूलादिद्रव्येण कुशबदुरुपा भवन्योभयानि  
 मंत्रिताः ॥ ॐ आमंत्रिताः स्मः इति निमन्त्र्य एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवदम्बद्वच क्रमेण निमन्त्रयेत् ॥ ततः ॐ अक्रोधनैः शौचपरि रतिप  
 ठित्वा ॥ स्वागतं भवतां सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ ततो गंधपुष्पाद्युत्तं पादगृहीत्वा ॐ अद्याऽस्मन्मात्रादि त्रयसंबन्धिनः सत्यवसुमंजसा  
 विश्वेदेवा एतया दाधे वः स्वाहनमः ॥ इति दत्त्वा एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवभ्योऽयं दद्यात् ॥ पुनः ॐ अमुकगोत्राऽस्मन्मातृपिता

महीप्रपितामहोऽमुकामुकदेव्यानांदिमुल्य एतत्पादावत्रेधाविभज्य वः स्वाहनमः इतिमातृवर्गोऽर्घदत्त्वा पित्रादिमातामहादिवर्गद्वयेष्य  
धर्ममेणदद्यात् ॥ ततः ॐ अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयसंबंधिनः सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः इदमाचमनंनःस्वाहनमः इतिमातृवर्गदेव्येभ्योआच  
मनार्थजलंदत्त्वा एवमेव पितृवर्गमातामहवर्गदेव्येभ्योआचमनंदद्यात् ॥ पुनः ॐ अमुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहोऽमुकामुकदे  
व्यानांदीमुल्य इदमाचमनंत्रेधाविभज्यवःस्वाहनमः इतिमात्रादिभ्योआचमनंदत्त्वा पित्रादिभ्योमातामहेभ्यश्चाचमनंदद्यात् ॥ ततः ॐ अत्रा  
सध्वमितिपठेत् ॥ इतिनिमंत्रणम् ॥ ततः कर्त्तास्वपुरतः कर्मपात्रंजलेनापूर्यगंधपुष्पद्व्यर्घ्यादधियक्त्वाहर्तिकुशान्तित्रनिक्षिप्य ॥ ॐ कर्मपात्रं संपन्न  
मितिब्रूयात् ॐ सुसंपन्नमित्यनुज्ञातः ॐ अपवित्रः पवित्रोवा० ॐ पुंडरीकाक्षः पुनात्वितिपठित्वाकुशानीतजलेन श्राद्धीयेपकरणांनिप्राक्ष्य  
ॐ वैष्णव्यैनमः ॥ ॐ काश्यप्यैनमः ॥ इति भूमिसंपूज्य ॐ विष्णवेनमः इति विष्णुमनोवाक्कार्यैर्नमस्कारंकुर्यात् ॥ ततो दुर्वा  
कुशयवजलान्यादायादेशकालौसंकीर्त्य ॐ अद्यामुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनाममुकामुकदेवीनांदीमुखीनां अमुकगोत्रा  
णामस्मन्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुकर्मणांनदीमुखानाम् तथाच अमुकगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहदृष्टप्रमातामहानाममु  
कामुकर्मणां सपत्नीकानाममुककर्मनिमित्तकं सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेषूपूर्वकं संपिंडकमाभ्युदयिकश्राद्धमहं करिष्ये इतिसंकरष्य ॥  
ॐ कुरुध्वति ब्राह्मणनुज्ञातः सप्रणवव्याहृतिकां गायत्रींत्रिजपित्वा विष्णुस्मरेत् ॥ ततः ॐ नमोनमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तमाइदंश्राद्धं  
हृषीकेश रक्षतंसर्वतोदिशः इतिसर्वत्रयवान्गौसर्षपांश्चविकीर्य ॥ वामकटिसंलग्नश्वस्त्रांचलेनविंबिधीयात् ॥ ततः कूष्माण्डसूतेनपवमानेनच  
जलमभिमन्त्र्यतेनहर्तैः कुशैः पाकंप्रक्षयेत् ॥ अथासनादिदानम् ॥ तत्रतावदुदङ्मुखः कुशत्रययवजलान्यादाया ॥ ॐ अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयश्रा

द्रुसंवाधिनाः सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः इदमासनं वानमः इति कुशत्रयरूपं सयवं सर्वतोदक्षिणगतमासनं पूर्वाग्र्यमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादि  
 मातामहादिदेवैर्भ्योऽयमासनमुत्तरेत्तरं दद्यात् ॥ ततः अथ ह्यसुकगोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपितामहो नदीमुख्य इदमासनं त्रेधा विभज्य वः स्वाहा  
 इत्युच्चाप्यमातृवो देवताथेन पूर्वाग्र्यकुशत्रयमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिवद्रूपेण पिदद्यात् ॥ ततः अथ सत्यवसुसंज्ञकविश्वानेद्वानावाह  
 यिष्ये इति ब्रूयात् आवाहय इत्यनुज्ञातः सयवकरः ॥ अथ विश्वेदेवासऽआगतशृणुतामहमठहवम् ॥ एवं बहिर्निषीदत इत्यावाह्य अथ गोसियवया  
 स्मद्वेषेयवयारतीरित्यनेन यवान्विकर्य अथ विश्वेदेवाः शृणुतमठहवमथऽअन्तरिक्षेऽपगच्छा विष्टयेऽग्निं जिह्वोऽउत वायजत्राऽआसद्याऽस्मिन  
 बहिर्निषीदामहमध्वम् इति जपेत् ॥ विश्वेदेवोऽप्यन्तान्मोऽस्नाने ॥ आगच्छतु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ॥ येयत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ॥  
 इति श्लोकं पठेत् ॥ ततः अं नदीमुखीमन्तरावाहयिष्ये इत्युच्चाप्य आवाहयेत्यनुज्ञातः सयवकरः अं उशनस्तस्त्वा निधीमह्यशन्तः समिधी  
 महिः ॥ अग्न्युशतऽआवह मानुर्हविषेऽअत्तव ॥ इत्यावाह्ययवान्विकरेत् ॥ एवमेव अं पितृगृहविषेऽअत्तवे अं मातामहान्हविषेऽअत्तवे  
 इति त्रैत्रेह न यथाक्रमं पित्रादीन्मातामहादींश्चावाह ॥ प्रदक्षिणं यवान्विकरेत् ॥ ततोऽदक्षं पूर्वकं षट्सुखणादिपात्रेषु प्रतिपात्रं पवित्रद्रव्यं पवित्रं  
 वानिधाय अं शत्रो देवीरग्निष्टयऽआपो भवन्तु पातये ॥ शय्यारि भस्वन्तु नः ॥ इति त्रय्येकपात्रेष्वपानिषिच्य ॥ अथ गोसियवया स्मद्वेषेयवयारा  
 तीरिति देवपात्रत्रयेषु यवान्विषिष्ये अथ गोसि सोमदेवत्यागोऽसो देवनिर्मितः ॥ प्रत्नमद्भिः पृतः पुष्टयानादीं सुखल्लोकान् प्रीणाद्भिः स्वाहा  
 इति त्रैत्रेण मात्राद्यर्घपात्रेषु यवान्विषेत् ॥ ततः सर्वत्र तृष्णीं गंधपुष्पाणि च दत्त्वा ॥ अं अर्घपात्रं संपातितस्त्विति ॥ अस्तवर्घपात्रं संपातितं  
 त्यनुज्ञातो देवाऽर्घपात्रं वा महस्तेऽकृत्वा पवित्रे पलाशादिपत्रे पूर्वाग्र्यविन्यस्य अथ दिव्याऽआगः पथसां संपृक्षुयाऽअन्तरिक्षोऽउत पार्थिवीर्य्याः ॥

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः सठः स्योनाः सुहवामंतु इत्यभिर्मंत्र्य कुशत्रययवजलान्यादाय ॥ अ० अद्यास्मन्मात्राद्वित्रयश्राद्ध  
 संबंधिनः सत्यवसुंज्ञकाविश्वेदेवा एषवोऽर्चो नमः इति देवतीर्थानां धर्मपवित्रापरिदत्त्वा ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवेभ्योऽपि दद्यात् ॥ ततो  
 मात्राद्यर्घ्यापात्रं वा महस्ते कृत्वा पवित्रं पलाशादिपत्रेषूनां धर्मपवित्रापरिदत्त्वा अ० अद्यास्मन्मात्राद्वित्रयश्राद्ध  
 तामहो नदीमुख्यणोऽर्घ्येधाविभज्यवः स्वाहानमः ॥ इति देवतीर्थानां धर्मपवित्रापरिदत्त्वा अ० अद्यास्मन्मात्राद्वित्रयश्राद्ध  
 श्रपवित्रदानपूर्वकं प्रत्येकमर्घ्यं दद्यात् ॥ ततः अ० विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीत्युक्त्वा पवित्रजलयुते देवार्घ्यापात्रत्रयप्रत्येकमासनदक्षिणपार्श्वे उत्तानं  
 स्थापयेत् ॥ ततः अ० नदीमुखीभ्यो मातृभ्यः स्थानमसीति मात्रादिपात्रम् अ० नदीमुखेभ्यः पितृभ्यः स्थानमसीति पित्राद्यर्घ्यापात्रम् अ० नदी  
 मुखेभ्यो मातामहेभ्यः स्थानमसीति चोका मातामहाद्यर्घ्यापात्रं च स्वस्वाऽऽसनदक्षिणपार्श्वे क्रमेण न्युब्जं कुर्यात् ॥ एतानि स्थापितान्यर्घ्यापात्रा  
 णि दक्षिणादानपयंतं नोद्धरेन्न चालयेत् ॥ ततो गंधादिदानम् ॥ ततः षट्स्त्रासेनेषु प्रत्येकं गंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवस्त्राणिसन्निधाय ॥ कुश  
 त्रयादीन्यादाय ॥ अ० अद्यास्मन्मात्राद्वित्रयश्राद्धसंबन्धिनः सत्यवसुं संज्ञकाविश्वेदेवा एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासोऽसिवा नमः  
 इत्युत्तुजेत् ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवेभ्योऽप्युत्तुजेत् ॥ ततः कुशत्रययवजलान्यादाय अ० अद्यास्मन्मात्राद्वित्रयश्राद्ध  
 नदीमुख्यणोऽर्घ्येधाविभज्यवः स्वाहानमः ॥ इत्युत्तुज्या ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवेभ्यः सपत्नीकेभ्यश्च  
 गोत्राद्युच्चारणपूर्वकं सकुशयवजलेन गंधाद्युत्तुजेत् ॥ एवं गंधाद्यर्चनं विधाय कृतांजलिर्भूत्वा अ० अर्चनं संपूर्णमस्ति त्र्यति ब्रूयात् ॥ अस्तत्र वनं स  
 पूर्णमिति विप्रावदेषुः ॥ ततो भोजनपात्रस्थपनदेशं संमाज्यपपात्राणि दत्त्वा गौरमृत्तिकया जलादिना वामं डलप्रत्येकं कुर्यात् ॥ अथ गौश्राकरणम्

तत्रादौ घृतक्षुभमंत्रपत्रोक्तत्वा अ० अग्नौकरणकारिष्येइतिपृष्ठा ॥ कुरुष्वेतिब्राह्मणनुज्ञातःआर्द्रमलकमात्रमंत्रगृहीत्वा ताम्रादिपात्रस्थितजले  
प्राङ्मुखदक्षिणजान्वाच्यअ०अग्नयेक्यववाहनयस्वाहा इदमग्नयेक्यववाहनया ॥ अ०सोमायापितृमते इत्याहुतिद्वयं  
हुवाशिषदैवपात्रत्रयेमात्रादिपात्रेषुचार्किकिचिद्व्यात् ॥ अत्र परकीयगृहश्राद्धकरणपक्षे सव्येनएव अ० इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो  
नमइतिघृतादित्युक्तमन्नदंभेपूस्मृजेत् ॥ ततः पदस्वपिपात्रेषु यथासंभवमन्नं परिविष्य पात्रांतरस्थजलघृतव्यंजनंचोपनीय ॥ उक्ता  
नपाणिभ्यां प्रथमात्रपात्रमालस्थजपति ॥ अ० पृथिवीतिपात्रद्वारपिधानब्राह्मणस्यमुखेऽअमृतोऽअमृतं जुहोमिस्वाहा इति ॥ अ० इदंविष्णु  
र्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदमा॥समूढमस्यपा॥सुरेस्वाहा इतिचपठित्वा ॥ अ०विष्णोहव्यठं रक्षइत्यनयास्वा जुष्टमधोमुखमनखमन्नेऽवगाढ्वा इदम  
न्नमइमाआपःइदमान्यम् इदंहाविरत्युक्त्वा ॥ अ०अपहताऽअसुररक्षा॥सिंवेदिषदः॥इतिथवान् विकीर्य वामकरेणपात्रंस्पृशन् कुरात्रययवज  
लान्यादाय अ०अद्यास्मन्मात्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनःसन्यवमुखसंज्ञकाविश्वेदेवा इदमन्नंघृताहुपस्करसहितंपरिविष्टहव्यममृतंरूपंवीनमः ॥ इति  
संकरथ्यासनदक्षिणभोगेजलमुत्सृजेत् ॥ एवमेवपित्रादिमातामहादिदैवेभ्योप्यन्नमुत्सृजेत् ॥ पुनःमात्रादिपात्रमालस्थअ०पृथिवीतिपात्रद्वारपि  
धानब्राह्मणस्यमुखेऽअमृतोऽअमृतंजुहोमिस्वाहा॥ अ०इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपा॥सुरेस्वाहा इतिपठित्वा अ०विष्णो  
हव्यठं रक्ष इत्यन्नेऽङ्गुष्ठानिवेश्य अ० अपहता इत्यन्नपात्रपातितोयवान्विकीर्य कुरात्रयजलान्यादाय अ०अमुक्कोगोत्राऽस्मन्मातृपितामहीप्रपिता  
महोऽमुक्कामुक्कदेव्योनांदिमुख्य इदमन्नंघृताहुपस्करसहितंपरिविष्टहव्यममृतंरूपत्रेधाविभज्यवस्वाहानमःइत्युत्सृजेत् ॥ एवमेवपित्रादिपा  
त्रं मातामहादिपात्रचक्रमेणपात्रालभनादियुक्तंसंकरथ्यदद्यात् ॥ ततः अ० अन्नहानांक्रियाहीनं विधिहीनचयद्रवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु

इतिप्रार्थ्य नदीमुखान्मात्रादिन्ध्यायन् देवपूर्वकं भोजनपात्रेषु किंचित्किंचिदपोदत्त्वा यथासुखंजुषध्वमितिब्रूयात् ॥ ततःप्रागग्रकुशो  
 तरासनेनोपविष्टः प्रणवव्याहतिपूर्विकांसकृत्रिवागायत्रांजत्वा ॐ मधुमधुमध्वितिचजपेत् ॥ नमधुवाताइतिच्यंचनपितृमंत्रान् ॥ ततः ॐ  
 कृणुष्वराजःप्रसिसिन्नपृथ्वीयहिराजैवामवाँइमेन ॥ तृध्वीमनुप्रसिसिन्दृणानेस्तासिबिद्वचक्षस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तवब्रह्मासऽआ  
 नुयापतन्यनुसृष्टपताशोऽनुचानः ॥ तपूँऽप्यनेजुह्वपतङ्गानसन्दितांस्विमृजविष्णुलब्धाः ॥ २ ॥ प्रतिस्पृशोऽस्मिजतृणितमोभवा  
 पाणुर्विशोऽस्योऽअद्वयः ॥ योनोदोऽअवशठोसोयोऽअन्यग्नमाकिष्टे व्यथिरादधपीत् ॥ ३ ॥ उदग्नेतिष्टप्र च्यातनुष्वन्यमित्रैरुऽओष  
 तात्तिग्महेते ॥ योनोऽअरातिठोसमिधानचक्रेनीचातंधश्यतसन्नशुष्कम् ॥ ४ ॥ इतिरक्षोऽस्मिजतृणितमोभवा  
 स्थिरातनुहि यातुज्जनाञ्जामिमममृगणीहिशत्रून् ॥ अग्नेष्टुतेजसासादयामि ॥ ५ ॥ इतिरक्षोऽस्मिजतृणितमोभवा  
 धियः ॥ पुनन्तुस्विधाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥ १ ॥ आप्यायस्वमेतुतैर्विधतः सोमवृण्यं भवावाजस्यसङ्गथे ॥ २ ॥ शिरोमेथ्रीयशो  
 मुखंत्विषिः केशाश्चमश्रूणि ॥ राजामेप्राणोऽअमृतठोसम्राट्चक्षुर्विराट्त्रयोत्रम् ॥ ३ ॥ जिह्वामेभद्रवाङ्महोमेनोमन्युः स्वाराङ्गमामःभोदाः  
 प्रमोदाऽअङ्गलीरंगानिमित्रमसहः ॥ ४ ॥ बाहूमेबलमिन्द्रियठोहस्तौमेकर्मवीर्यम् ॥ आत्माक्षत्रसुरोमेम ॥ ५ ॥ पृष्टमैर्गोष्ठमदुर्मठः  
 सौत्रीवाश्चश्रीणी ॥ ऊरूऽअनीजानुनीविशोमंगानिसर्वतः ॥ ६ ॥ नाभिर्मोचितंविज्ञानमप्युर्मोऽपचितिर्भसत् ॥ आनंदंनंदवाङ्मोभगः  
 सौभाग्यपसः जंवाभ्यापद्वाधमोऽस्मिगिराजप्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥ पयःपृथिव्याण्युऽओषधीषुपयोदिव्यन्तर्लक्षेणयोधाः ॥ पयःस्वतीःप्रदिशः  
 संतुमहम् ॥ ८ ॥ इतिपवमानसूक्तम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षापरुष इत्यादि षोडशचंपरुषसूक्तमन्यानि शिवसंकरूपप्रभृतानिपवित्राणिमङ्गलानिचजपेत्



ततः सर्वव्यंजनोपेतमन्त्राद्यस्यवमादाय वारिणाह्वय प्रागग्रास्तुतकुशोपरि ॥ ॐ अग्निर्गधाश्वयेजीवा येयद्गधाःकुलेमम ॥ भूमौदेतेनतु  
 प्यन्तु तृतयान्तुपरांगतिमिति विकीर्य ॥ आचम्यविष्णुं स्मृत्वा पुनः किंचित्किंचिदपोदत्वा गायत्र्यामधुमध्विति च जवा ॐ संपन्नमिति ब्रूयत्  
 सुसंपन्नमिदमुन्नातः पिंडानहं करिष्ये ॥ इति पृच्छेत् ॥ कुरुष्वेत्युन्नातो वालुकी भिक्षुर्दुस्त्राक्षवमुद्रुष्वामंडलत्रयंकृत्वा तन्मध्ये ॥  
 ॐ अपहताऽअसुरराशा ॥ सिवो दिषद् इति प्रागग्रैस्त्रयंकृत्वा प्रत्यक्षैरेवोपरि अर्थरूपाणि प्रतिमुचमानाऽअसुराः संतः स्वाहया चरन्ति ॥ परा  
 पुरो निगुरो भन्यग्निद्वैल्लोकान्यनुदात्यस्मादित्यंगारान् भ्रामयेत् ॥ तत्र रेखात्रयोपरि समूलान् प्रागग्रानुदगग्रान्वाकुशान् स्तीर्य ॐ दे  
 वताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततो नवपुटकेषु जलयवगंधपुष्पाणि कृत्वा एकपुटकं वामहस्ते कृत्वा कुशादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रेऽस्मन्मातर  
 मुकदेवि नां दीमुखि अत्रावनेन क्ष्वेतस्वाहा इति दर्भमूले मात्रे अवने जनदत्त्वा एवमेव पितामही प्रपितामहीभ्यां मध्याग्रयोः क्रमेण दद्यात् ॥ ततः  
 ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मान्पितरमुकशर्मन् नां दीमुखि वाऽत्रावनेन क्ष्वेतस्वाहा इति द्वितीयमंडलस्थितकुशत्रयमूले पित्रेऽवने जनदत्त्वा एवमेव  
 पितामहप्रपितामहयोस्तत्तत्कुशमध्याग्रयोरेवने जनदद्यात् ॥ एवमेव मातामहादिर्गदर्भमूलमध्याग्र्ये दद्यात् ॥ ततः सर्वव्यंजनेनोपेतं  
 सर्वविधमन्नमुद्धृत्य हुतशेषान्नांदीधिवदस्य वैसां मिथ्यनवपिंडान् विस्वोपमान्निर्मय एकपिंडं कुशादिश्चादाय ॐ अमुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुक  
 देवि नां दीमुखि एष दीधिवदराक्षतामिश्रः पिंडस्तेनमः ॥ इत्यवनेन क्रमेण वनेन स्थानेषु मात्रादिभ्यः पिंडान् दद्यात् ॥ ततः ॐ अमुकगो  
 त्राऽस्मान्पितरमुकशर्मन्नां दीमुखि एष दीधिवदराक्षतामिश्रः पिंडस्तेनमः ॥ इति पितृस्थाने दद्यात् एवमेव पितामहादिभ्यः पंचभ्य  
 स्तत्तदवनेन स्थानेषु पिंडान् दद्यात् ॥ ततो दर्भमूलेषु पाणिस्थं पिंडलेपनिमृज्य हस्तौ प्रशाल्या च भ्यर्हरि रभरेत् ॥ ततो मात्रादिपिंडाभि

मुखोजिबद्धा ॥ ॐ अत्रमातरोमादध्यंयथाभागमावृषायध्यमितिजपित्वा उदङ्मुखीभूयश्चासंनियय्यप्रदक्षिणंपरावृत्य ॐ अमीम  
 दन्तमातरोमथाभागमावृषायिषत इतिजपेत् ॥ एवंपित्रादिपिंडाभिमुखोभूत्वा ॐ अत्रपितरोमादध्यमित्यादिजपित्वा मातामहादि  
 पिंडाभिमुखोभूत्वा ॐ अत्रमातामहादयेमादध्यमित्यादिजपित्वाऽधुब्रियम्य ॐ अमीमदन्तपितरो यथाभागमावृषायिषत ॥ ॐ अमी  
 मंदंतमातामहायथाभागमावृषायिषतेतिजपेत् ॥ ततोऽनेनजनपात्रजलेन ॐ अमुकगोत्रेमातमुकदेविनादिमुखिअत्रन्यवनेनक्षतेस्वा  
 हा ॥ इतिमातृपिंडोपरिप्रत्यवनेजनंदत्वा ॥ एवमेवपितामहीप्रपितामहीभ्यां तथा ॐ अमुकगोत्रे पितरमुकशर्मनदिमुख अत्रप्रत्यवनेनि  
 क्ष्वतेस्वाहा इतिपितृपिंडोपरिदद्यात् ॥ एवमेव पितामहादिभ्यः पंचभ्यस्तत्तत्पिंडोपरिदद्यात् ॥ ततोर्नवीविंसस्य आचम्य ॐ नमो  
 वोमातरोरेसायनमोवोमातरः शोषायनमोवो मातरोर्जीवायनमोवोमातरः स्वाहायै नमोवोमातरोघोरायनमोवोमातरोमन्यवेनमोवोमातरो  
 मातरोर्नमो वोणहन्नो मातरोदत्तसतोवोमातरोदेष्टम ॥ इतिमात्रादिवर्गानमस्कृत्य ॥ ॐ नमोवः पितरोरेसायनमोवः पितरः २॥ पायनमेवः  
 पितरोर्जीवायनमोवः पितरः स्वाहायै नमोवः पितरोघोरायनमोवः पितरः पितरोमन्यवेनमोवः पितरः पितरोदत्तसतोवः पित  
 रोदेष्टम इतिपित्रादिमातामहादिवर्गद्वयनमस्कृत्य ॥ ततः ॐ एतद्देमातरोवास इतिमात्रादिपिंडेषुस्त्राणिदत्त्वा ॐ एतद्देः पितरोवास  
 इतिपित्रादिषट्पिंडेषुप्रतिपिंडं सूत्रयदद्यात् ॥ ततोर्गंधपुष्पधूपदीपद्राक्षामलकमूलयवतंबूलदक्षिणादिभिः प्रत्येकं पिंडानभ्यर्च्य ॥ ॐ  
 शिवाआपः संतु इति भोजनपात्रेषुकिंचित्कचिजलंदत्त्वा ॐ सोमस्यमास्तिचतिपुष्पाणि ॥ अक्षतंचारिष्टिचास्तु इतिवर्वाश्चदद्यात् ॥  
 ततः ॐ नादिमुख्योमातरः पितामहः प्रपितामहः प्रीयतामिशरिवोदेकप्रक्षय्यस्थानेदत्त्वा ॥ एवमेव पितरः पितामहाः प्रपितामहाः  
 प्रीयतामितिपित्रादिर्गोमातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाश्चप्रीयन्तामितिमातामहादिवर्गचप्रत्येकप्रक्षय्योदकंदद्यात् ॥ ततः

कृतांजलिः प्रार्थयेत् ॥ ॐ अंधारा मातरः संतु ॐ अंधोराः पितरः संतु ॥ ॐ अंधोरा मातामहाः सपत्नीकासंतितिचेका ॥ सन्तिननु  
 ज्ञातः ॥ ॐ गोत्रनोवद्धतां दातारोनोभिषद्धतां वेदाः संततिरेव ॥ श्रद्धाचनेमाव्यगमत् बहुदयचनोऽस्तु ॥ अन्नचनोबहुभवदेतिथ्यो  
 श्वलेमहि॥याचितारश्चनः संतुमाचयाचिषकंचना॥ एताः सत्याआशिपः संतिंतिन्नयात् संतिंतिरुक्ते सपवित्राङ्कुशान्प्रत्येकमंत्रादित्रय  
 पिंडे पित्रादित्रयपिंडेमातामहादित्रयपिंडेचधृत्वा ॥ नादीमुखीमातृपितामहीप्रपितामही॥नादीमुखान् पितृपितामहप्रपितामहान् नादीमुखा  
 न्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहान् सपत्नीकान् स्वाहावाचयिष्य इतिपृष्ठा वाच्यतामित्यनुज्ञातः ॐ नादीमुख्येमातृपितामहीप्रपिता  
 मही नदीमुखः॥पितृपितामहप्रपितामहाः॥नादीमुखामातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः॥सपत्नीकाश्चप्रीयन्तामितिप्रार्थ्य प्रीयतामितिद्विजै  
 रुच्यमाने पिंडेषुजलंनिर्षिचेत् ॥ ततः संस्वपत्राण्युतानिहृत्यदेवदक्षिणां दद्यात् कुशत्रययवजलान्यादाय ॐ अद्यास्मन्मात्रादित्रयश्राद्ध  
 संविधैवैश्वदेविकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमांशमलकाद्रकमूलकादिरूपांक्षिणांविष्णुदैवत्याममुकोगोत्रायामुकशरणेब्राह्मणायदातुमहमुत्तुजे ॥  
 इत्युच्चार्यदद्यात् एवमेवपित्रादिमातामहादिवर्गदेवदक्षिणां दद्यात् ॥ ततः ॐ अद्याममुकोगोत्राणांमातृपितामहीप्रपितामहीनांदीमुखीनांकृतै  
 तदाभ्युदयिकश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमांशमलकाद्रकमूलकादिरूपांक्षिणां विष्णुदैवत्याममुकोगोत्रायामुकशरणेब्राह्मणायदातुमहमुत्तुजे ॥ इति  
 मात्रादिवर्गदक्षिणां दद्यात् ॥ एवमेवपितृवर्गमातामहवर्गयोरपिदक्षिणांच दद्यात् ॥ ततः पिंडानुत्थापय इतिपृष्ठाउत्थापय इत्यनुज्ञातः पिंडानु  
 त्याग्यथात्रैकृत्वाऽऽघ्रायदर्भानुमुकंचवह्नौक्षिपेत् ॥ ततो जलदानपूर्वकम् ॐ विश्वेदेवाः प्रीयंतामिदमुक्त्वा प्रीयन्तामित्यनुज्ञातः स्वस्तिभवंतो  
 ब्रुवन्तु इतिब्रूयात् स्वस्त्युक्ते प्रणिपत्य ॐ वाजेवाजेतवाजिनोवाजेनुष्विप्राऽअमृताऽऽहन्ताः ॥ अस्यमध्वः पिबेतामादयध्वंतृतायात

पथिभिर्देवयानैः॥ इतिमात्रादीन्पित्रादीन् मातामहादींश्चविभुजेत् ॥ ततः ॥ ॐआमावाजस्य प्रसवोजगम्यादेमेद्वावापृथिवीविविधरूपे ॥  
 आमागंतपितरामातराचामासोमोऽअमृतत्वेनगम्यतात् ॥ इतिपठित्वाप्रदक्षिणीकृत्यरक्षादीपनिर्वापणंपाणिभ्यांकृत्वा हस्तौ  
 पादौप्रक्षाल्याचम्यपिंडान्गवादिभ्योदत्त्वाऽष्टौषड्वाविप्रान्प्रभूतद्यूतान्नभोजयेत् ॥ ततश्चिष्टमाजनादिकरणानन्तरं वैश्वेदेवबलिं कर्मणि कृत्वा  
 ॐअमदात्कुर्वतां कर्मदतिपठित्वा कर्मपूर्त्तिकामोर्विण्णस्मरेत् ॥ ततोवैश्वेदेवानेसुतमृत्युबाधवातिथिसंयुतोऽश्रियात् ॥ इत्यपात्रकाभ्युदयिक  
 श्राद्धपद्धतिः ॥ अथसंकल्पिकनदींश्चाद्धपद्धतिः ॥ तत्रतावत् गणपतिसहितषोडशमातृकापूजनघृतधारापूजनंचपूर्वाक्तवत् कृत्वा ॐआयुष्यं  
 वर्चस्यमितिमंत्रयणठेत् ॥ ततः उदङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौसंकीर्त्यअद्यकर्तव्यमुक्कर्मनिमित्तकसंकल्पिकं  
 दीमुखं श्राद्धं करीष्ये ॥ इति संकल्पयेत् ॥ ततः दक्षिणोत्तरक्रमेण ॐसत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवानादीमुखः ॐभूर्भुवःस्वः इदं पाद्यं पादावने  
 जनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ ततः ॐअमुकगोत्रामातृपितामहीप्रपितामहः नदीमुखः ॐभूर्भुवःस्वः इदं पाद्यं पादावने जनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः  
 ॐ अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नदीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं पाद्यं पादावने जनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ ॐ अमुकगोत्रामाता  
 महप्रमातामहद्वहप्रमातामहाः सपत्नीकाः नदीमुखाः ॐभूर्भुवःस्वः इदं पाद्यं पादावने जनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अथासनदानम् ॥  
 सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां दीमुखानाम् ॐभूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा इतिकुरात्रयं सर्वतोदक्षिणगतं पूर्वप्रसृतं जेतुं ॥  
 एवं सर्वत्र ॥ ॐ नदींश्चाद्धेक्षणैः क्रियेताम् तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्रवाव इति पठेत् ॥ ततः ॐअमुकगोत्राणामातृपितामहीप्रपितामहीनां  
 नदीमुखीनाम् ॐभूर्भुवःस्वः इदमासनम् सुखासनं स्वाहा ॐ नदींश्चाद्धेक्षणैः क्रियेतां तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्रवाव ॥ ॐअमुकगोत्राणां पितृ

पितामहप्रपितामहानान्दीमुखानाम् अंभूमुखःस्वः इदमासनंमुखासनंस्वाहा अन्नदीश्राद्धक्षणाक्रियेतं तथा प्राशुनां भवतौ प्राप्रवाव ॥  
 अंभूमुखःस्वः इदमासनंमुखासनंस्वाहा अंभूमुखःस्वः इदमासनंमुखासनंस्वाहा अन्नदीश्राद्ध  
 क्षणाक्रियेतं तथाप्राशुतांभवतौप्राप्रवाव ॥ अंभूमुखःस्वः इदमासनंमुखासनंस्वाहा अंभूमुखःस्वः इदं  
 गंधाद्यर्चनंस्वाहासंपद्यतांवृद्धिः ॥ अंभूमुखःस्वः इदमासनंमुखासनंस्वाहा अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 पद्यतांवृद्धिः ॥ अंभूमुखःस्वः इदमासनंमुखासनंस्वाहा अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 गोत्रेभ्योमातामहप्रमातामहद्विप्रमातामहभ्योनान्दीमुखेभ्यः अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 द्रव्यदानम् ॥ अंभूमुखःस्वः इदमासनंमुखासनंस्वाहा अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 किंचिद्विष्णुममृतंरूपेणस्वाहासंपद्यतांवृद्धिः ॥ अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 भोजनपर्याप्तंदास्यमानमन्नं वा तन्निष्करीषतांकिंचिद्विष्णुममृतंरूपेणस्वाहा संपद्यतांवृद्धिः ॥ अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 दीमुखाः अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहासंपद्यतांवृद्धिः ॥ अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 स्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहासंपद्यतांवृद्धिः ॥ अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास  
 पितामहान्दीमुखः पितामहप्रपितामहान्दीमुखाः द्वितीयोत्रा मातामहप्रमातामहद्विप्रमातामहः नान्दीमुखाः सपत्नीकाश्च  
 प्रीयताम् ॥ ततः अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहासंपद्यतांवृद्धिः ॥ अंभूमुखःस्वः इदं गंधाद्यर्चनंस्वाहास

नदीमुलेभ्यः कृतस्यनादीश्राद्धस्यफलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभूतांक्षिणांदातुमहमुत्सृजे ॥ अ०अमुकगोत्राभ्योमातृ  
 पितामहीप्रपितामहीभ्योनादीमुलीभ्यः कृतस्यनादीश्राद्धस्यफलप्रतिष्ठासिद्धयर्थंद्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभूतांक्षिणांदातुमहमुत्सृजे अ०  
 अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः नदीमुलेभ्यः कृतस्यनादीश्राद्धस्यफलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभूतांक्षि  
 णांदातुमहमुत्सृजे ॥ अ० अमुकगोत्रेभ्योमातामहप्रमातामहद्वहप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नदीमुलेभ्यः कृतस्यनादीश्राद्धस्यफल  
 प्रतिष्ठासिद्धयर्थंद्राक्षामलकयवमूलनिष्कयीभूतांक्षिणांदातुमहमुत्सृजे ॥ अ० मातापितामहीच तथैवप्रपितामही ॥ पितापितामहैव तथै  
 वप्रपितामहः ॥ १॥ मातामहस्तत्पिताच प्रमातामहकादयः ॥ एतेभवंतुमेप्रताः प्रयच्छंतुसुमंगलम् ॥ २॥ इतिप्रार्थयेत् ॥ अस्यनादीश्राद्ध  
 स्यकर्माङ्गेदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ अस्मिन्नादीश्राद्धेन्यूनातिरिक्तोयोविधिः सउपविष्टब्राह्मणानां वचनात् नदीमुखप्रसादात्सर्वः परिपूर्णोऽस्तु  
 अस्तुपरिपूर्ण इतिविप्राः ॥ इतिसांकल्पिकनादीश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ ॥ ७४ ॥

अथ नित्यश्राद्धपद्धतिः ॥ तत्रादौ आचम्य प्राणनायम्य कुशपवित्रादिधारणकृत्वा प्राङ्मुखः सव्येन अ० अपवित्र इतिमंत्रेण अ०पुण्डरी  
 काक्षःपुनातु इत्यनेनच कुशैः श्राद्धद्रव्याणिजलेन सिक्वा अ० भूम्येनमः अ०गदाधरायनमः इतिनमस्कारकुर्यात् ॥ ततः  
 कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य अ० अद्याऽमुकगोत्राणामस्मान्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकाऽमुकशर्मणां सपत्नीकानां  
 तथाच अमुकगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहद्वहप्रमातामहानां सपत्नीकानां तृतिकामो नित्यश्राद्धमहं करिष्ये इति संकल्प्य  
 गायत्रौत्रिजपित्वा देवताभ्य इतित्रिजपेत् ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा दक्षिणामुखः पातितवामजातुः द्विगुणभुक्कुशत्रयतिलजलान्यादाय अ० अद्या  
 मुकगोत्राऽस्मान्पितृपितामहप्रपितामहऽमुकशर्मणः सपत्नीकाः इदमासनत्रेधाविभज्यषुभ्यस्वधा इत्युच्चार्य पितृतीर्थेनजलति

लसमतं द्विगुणमुग्रकुशत्रयरूपं पित्रादिभ्य आसनं दद्यात् ॥ पुनः ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाऽमुकसुकशर्माणः  
 सपत्नीक इदमासनत्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा इति मातामहादिभ्यः पूर्ववदासनं दद्यात् ॥ ततः ॐ अपहताऽअमुराक्षाऽसिर्वेदिषदः ॥  
 इति तिलान् विकीर्य ॐ आयंतु न इति पठेन्नवा ॥ ततो गंधपुष्पधूपदीपवस्त्रादि आसनद्वयप्रत्येकं कृत्वा कुशतिलजलान्यादाय ॐ  
 अद्यामुकगोत्राऽस्मन्पितृपितामहप्रपितामहाऽमुकसुकशर्माणः सपत्नीकाः एतानि गंधपुष्पधूपदीपवासांसि त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा इति  
 संकल्प्यथासंभवं दद्यात् ॥ पुनः ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाऽमुकसुकशर्माणः सपत्नीकाः एतानि गंधपुष्पधूप  
 दीपवासांसि त्रेधा विभज्य युष्मभ्यं स्वधा इत्युच्चाप्य दद्यात् ॥ ततः ॐ अर्चनं संपूर्णमस्त्विति वाचयित्वा ॥ पात्रयोरत्र तदभावे द्विगुणमासां  
 वा प्रत्येकं संस्थाप्य जलपात्रं च धृत्वा प्राथम पात्रमालभ्य ॐ पृथिवीति पात्रं द्यौरपिधां ब्राह्मणस्य सुवेऽअमृतं जुहोमि स्वधा इति ॐ  
 इदं विष्णुर्विचक्रमन्त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पाऽसुरे इति च पाठित्वा ॐ विष्णो कव्यः रक्ष इत्येते स्वाहुष्टमनसमधोमुखं निवेश्य ॐ अप  
 हताऽअमुराक्षाऽसिर्वेदिषदः ॥ इत्यत्र पात्रपरितिस्तिलान् विकीर्य वामकेण पात्रं स्पृशन् ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मन्पितृपितामहाय पि  
 तामहाऽमुकसुकशर्माणः सपत्नीका इदं मंत्रं कव्यं सोपस्कम् अमृत रूपं युष्मभ्यं स्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ पुनः द्वितीय पात्रमालभ्य ॐ पृथिवी  
 ते० इदं विष्णु० इत्यभिर्मन्त्र्यां गुह्यानि वेश्य तिलान् विकीर्य ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाऽमुकसुकशर्माणः सु  
 पत्नीका इदं मंत्रं कव्यं सोपस्कम् अमृत रूपं युष्मभ्यं स्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ ततो गायत्रीं त्रिजिपित्वा यथाशक्ति मध्वता इत्यादिकं वा पठेत् ॥  
 ततस्तदन्नां चिदं शिषा इव्यं च ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् ॥ ब्राह्मणोपवेशनशेस्तु वागतप्रश्नाद्यधिकं कुर्यात् ॥ इति नित्यश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥ ६॥

अथतीर्थश्राद्धपद्धतिः ॥ तत्रतावतीर्थप्राप्तिदिने पादचारेणयावद्वंशुशक्यते तावतः स्थानान् यानोपानहौपरित्यज्यगच्छेत् ॥ ततस्तीर्थे  
 प्राप्ते पाणिपदौप्रक्षाल्याचम्य ॐ अमुकतीर्थायनमः इतिसाष्टाङ्गं प्रणम्यगंधपुष्पादिभिः संपूज्य देशकालौसंकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा  
 ममेहजन्मनि जन्मान्तरेवाकृतकार्यिकावाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषपरिहारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुकतीर्थप्राप्तिनिमित्तकंस्नानमहं  
 करिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ यथाविधिनामूर्याभिमुखः स्थित्वास्नानंकुर्यात् ॥ ततः स्नानानन्तरं धौतवासोपरिधाय ॥ चंदनभस्मादिना  
 तिलकंकट्वा॥संध्याब्रह्मयज्ञचविधायतत्रस्थोदभक्त्या भूमौस्वशाखोक्तं देवर्षिपितृतर्पणंकुर्यात् ॥ तत्रादिकुशत्रय  
 तिलजलान्यादाय ॥ देशकालौसंकीर्त्य अबसमस्तेपितृणां विष्णुलोकादिप्राप्तये आत्मनश्चमुक्तिप्राप्तये अमुकतीर्थप्राप्तिनिमित्तंनि  
 त्यं च देवक्रुषिपितृतर्पणं तंत्रेणाहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य उपवीतीप्राङ्मुख उदङ्मुखो वादेवतीर्थेनयवोदकेन ब्रह्मादीस्तथ्येयत् ॥ यथा ॐ  
 ब्रह्मातृप्यताम् १ ॐविष्णुस्तृप्यताम् १ ॐरुद्रस्तृप्यताम् १ ॐप्रजापतिस्तृप्यताम् १ ॐदेवास्तृप्यन्ताम् १ ॐछंदसितृप्यन्ताम् १ ॐवे  
 दास्तृप्यन्ताम् १ ॐऋषयस्तृप्यन्ताम् १ ॐपुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् १ ॐऋग्वर्वास्तृप्यन्ताम् १ ॐइतराचार्यास्तृप्यन्ताम् १ ॐ  
 संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम् १ ॐदेव्यस्तृप्यन्ताम् १ ॐअप्सरस्तृप्यन्ताम् १ ॐदेवानुगास्तृप्यन्ताम् १ ॐनागास्तृप्यन्ताम् १ ॐसाग  
 रास्तृप्यन्ताम् १ ॐपर्वतास्तृप्यन्ताम् १ ॐसारितस्तृप्यन्ताम् १ ॐभद्रुष्यास्तृप्यन्ताम् १ ॐअक्षस्तृप्यन्ताम् १ ॐक्षान्तृप्यन्ताम् १ ॐ  
 पिशाचास्तृप्यन्ताम् १ ॐसुपर्णास्तृप्यन्ताम् १ ॐभूतानितृप्यन्ताम् १ ॐअश्वस्तृप्यन्ताम् १ ॐवनस्पतयस्तृप्यन्ताम् १ ॐऔषधयस्तृप्य  
 तां १ ॐभूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् १ एवमेव ॐ मरीचिस्तृप्यताम् १ ॐअत्रिस्तृप्यताम् १ ॐअंगिरास्तृप्यताम् १ ॐपुलस्त्यस्तृ



प्यताम् १ अ०पुलहस्तुप्यताम् १ अ०श्रतुस्तुप्यताम् १ अ०प्रचेतास्तुप्यताम् १ अ०वसिष्ठस्तुप्यताम् १ अ०भृगुस्तुप्यताम् १ अ०नारदस्तुप्यताम्  
 १ ततोनिवीती उदङ्मुखउत्तराग्रेणकुशेनप्रजापतितीर्थेनयवोदकेनचसनकादीन् प्रत्येकद्विवारम् अ०सनकस्तुप्यताम् २ अ० सनंदस्तु ० २  
 अ०सनान्तनस्तुप्यताम् २ अ० कपिलस्तुप्यताम् २ अ०आसुरिस्तु २ अ०ओदुस्तु २ अ० पंचशिखस्तुप्यताम् २ ततः प्राचीनावतीद  
 क्षिणामुखः पितृतीर्थेनद्विगुणभुगुशत्रयेणतिलचंदनोदकेनकववाडादीन् प्रत्येकत्रिः अ०कववाडस्तुप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधानमः  
 ३ अ०अनलस्तुप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधानमः ३ अ०सोमस्तुप्यतामिदं ३ अ०अयमस्तुप्यतामिदं ३ अ०अर्यमास्तुप्यतामिदं ३ अ०अग्नि  
 ध्वान्तास्तुप्यतामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधानमः ३ अ०सोमपास्तुप्यतामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधानमः ३ अ० वहिषस्तुप्यतामिदं तिलोद  
 कं तेभ्यः स्वधानमः ३ ततः अ० यमायनमः ३ अ० धर्माजायनमः ३ अ० मृत्यवनमः ३ अ० अंतकायनमः ३ अ० वैवस्वतायनमः ३ अ०  
 कालायनमः ३ अ० सर्वभूतक्षयायनमः ३ अ० उदुंबरायनमः ३ अ० दध्रायनमः ३ अ० परमेषुनेनमः ३ अ० वृकोदरायनमः ३ अ० चित्रा  
 यनमः ३ अ० चित्रगुप्तायनमः ३ इतिचतुर्दशयर्मास्तपयेत् ॥ ततः अ० उदीरतामवऽउत्तरासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः॥  
 अमुंयद्व्युरं वृकाऽऽहतज्ञास्तेनोऽ वन्तु पितरो हवषु ॥ अ० अमुकगोत्रोस्मत्पितामुकशर्माविमुखरूपस्तुप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधानमः  
 ३ इतिमंत्रेणवाक्येन चप्रथमाक्षलिं पित्रेदधात् १ अ० अङ्गिन्सोमः पितरोनववाऽअथवाणोभृगवः सोम्यासः ॥ तेषां व्ययं  
 सुभतौयज्ञियानामर्षिभद्रैःसोमनसेस्याम ॥ इतिमंत्रेणवाक्येनचद्वितीयांजलिम् २ अ० आयंतुतः पितरः सोम्यासौशिष्याताः

पृथिभिर्द्वयानैः ॥ अस्मिन् यज्ञे स्वधामदन्तोऽधुवन्तु ते वन्त्स्मान् ॥ इति मंत्रेण वाक्येन च तृतीयांजलिं पित्रे दद्यात् ३ ॐ अर्जवहतीर  
 मृतधृतं पर्यन्-क्रीलालं परिरुद्धं ॥ स्वधास्तथ तर्पयंतमो पितॄन् ॐ अमुकगोत्राऽस्मत्पितामहोऽमुकशर्मा रुद्ररूपस्तप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्व  
 धानमः ॥ इति मंत्रेण वाक्येन च पितामहायः प्रथमांजलिं दद्यात् १ ॐ पितॄभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधा  
 यिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन् पितरोऽपि मदन्तापितरोऽति तृपन्तपितरः पितरः स्त्रुधं धम् इति पितामहाय  
 द्वितीयांजलिं दद्यात् २ ये चेह पितरो ये च न हयैः क्विद्वयैऽर्चनप्रसिद्धा ॥ त्वं व्यत्ययति ते जाते वेदस्वधाभिर्यज्ञैः सुहृत्तं जुषस्व इति पितामहा  
 यतृतीयांजलिं दद्यात् ३ ॐ मधुवाताऽक्रताय ते मधुशरं तिस्रधत्मा ध्वं ब्रह्मन्वोषधी ॥ ॐ अमुकगोत्राऽस्मत्प्रपितामहोऽमुकशर्मा आदि  
 त्यरूपस्तप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधानमः ॥ इति मंत्रेण वाक्येन च प्रपितामहाय प्रथमांजलिं दद्यात् १ ॐ मधुनर्तमुतोषसो मधुम  
 न्यार्थिवर्त्तस्जलमधुधोरस्तु नः पिता ॥ इति प्रपितामहाय द्वितीयांजलिं २ ॐ मधुमान्नो वनस्यति मधुमाऽस्तु मूर्ध्नि ॐ अस्तु मूर्ध्नि ॐ माध्वी गोवा भवतु नः ॥  
 इति प्रपितामहाय तृतीयांजलिं दद्यात् ३ ॐ तृप्यध्वं तृप्यध्वमिति पित्रादिभ्योऽजलित्रयं दद्यात् ॥ ततः ॐ अमुकगोत्रास्मन्माता  
 मुकदेवी गंगारूपा तृप्यतामिदं जलं सति तं तस्यै स्वधानमः इति मातरं १ ॐ अमुकगोत्रास्मात्पितामही अमुकदेवी यमुनारूपा तृप्यता  
 मिदं जलं सति तं तस्यै स्वधानमः इति पितामही १ ॐ अमुकगोत्रास्मात्प्रपितामही अमुकदेवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं जलं सति तं

स्यैस्वयानमः १ इतिप्रापितामहं चतुर्थेत् ॥ एवंसापत्नमातरम् ॥ ततः अन्मोवहपितरोरासय नमोवहपितरशेषाय नमोवहपितरोजीवाय  
 नमोवहपितरत्वधायै नमोवहपितरोघोराय नमोवहपितरोमन्यवे नमोवहपितरहपितरी नमोवोपमहाः पितरोदत्तमतेवं पितरोदम्भेतद्  
 पितरोवासः ॥ अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहोऽमुकशर्मावमुहस्तुयतामिदं जलंसतिलतस्मैस्वधानमः ॥ इति मातामहायजलित्रयं द-  
 द्यात् ३ अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहोऽमुकशर्मावमुहस्तुयतामिदं जलंसतिलतस्मैस्वधानमः ॥ इति प्रमातामहायजलित्रयं दद्यात् ॥ ३ ॥  
 अ० अमुकगोत्रोऽस्मद्बृद्धप्रमातामहोऽमुकशर्मा आदित्यरूपस्तुयतामिदं जलंसतिलतस्मैस्वधानमः ॥ इति वृद्धप्रमातामहायजलित्रयं  
 दद्यात् ३ अ० तृथ्यध्वमित्यजलित्रयमातामहादिभ्योपि दद्यात् ॥ ततः अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामही अमुकदेवीगंगारूपा तु यथा मिदं जलं सति  
 तस्यैस्वधानमः १ इति मातामहौ ० अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्प्रमातामही अमुकदेवीयमुनारूपा तु यथा मिदं जलं सति तस्यैस्वधानमः १  
 इति प्रमातामहौ ० ॥ अ० अमुकगोत्रोऽस्मद्बृद्धप्रमातामही अमुकदेवीसरस्वतीरूपा तु यथा मिदं जलं सति तस्यैस्वधानमः १  
 इति वृद्धप्रमातामहौ च दद्यात् ॥ अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्पत्नी अमुकदेवीलक्ष्मीरूपा तु यथा मिदं जलं सति तस्यैस्वधानमः इति १ स्वपत्नीतर्पये  
 त् ॥ अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्पितृव्योऽमुकशर्मावमुहस्तुयतामिदं जलं सति तस्यैस्वधानमः ३ अ० अमुकगोत्रोऽस्मद्  
 प्राता अमुकशर्मा वमुहस्तुयतामिदं जलं सति तस्यैस्वधानमः ३ अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्पितृव्योऽमुकशर्मावमुहस्तुयतामिदं जलं  
 सति तस्यैस्वधानमः १ अ० अमुकगोत्रोऽस्मन्मातुलोऽमुकशर्मावमुहस्तुयतामिदं जलं

सतिलंतस्मैस्वधा० ३ ॐ अमुकगोत्राऽस्मन्मातृष्वसाऽमुकदेवी सभर्तुका तृप्यतामिदंजलं सतिलंतस्यैस्वधा० १  
 ॐ अमुकगोत्रोऽस्मच्छ्रुगोऽमुकशर्मावसुहृत्पस्तृप्यतामिदंजलं सतिलंतस्मैस्वधा० ३ ॐ अमुकगोत्रोऽस्मच्छ्रुश्रुमुकदेवी  
 गंगारूपातृप्यतामिदंजलं सतिलंतस्यैस्वधा० १ ॐ अमुकगोत्रोऽस्मदाचार्योऽमुकशर्मावसुहृत् सपत्नीकस्तृप्यतामिदंजलं सतिलं  
 तस्मैस्वधा० ३ ॐ अमुकगोत्रोऽस्मदुत्रोऽमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदंजलं सतिलंतस्मैस्वधा० ३ ॐ अमुकगोत्राऽस्मदुत्रोऽमुक  
 देवीतृप्यतामिदंजलं सतिलंतस्यैस्वधा० १ ॐ अमुकगोत्राऽस्मदमृगिनी अमुकदेवीयमुनारूपा तृप्यतामिदंजलं सतिलंतस्यैस्वधा० १  
 ॐ अमुकगोत्रोऽस्मदुपाध्यायोऽमुकशर्मावसुहृत् सपत्नीकस्तृप्यतामिदंजलं सतिलंतस्मैस्वधानमः ३ ॥ इत्युपाध्यायंचतर्पयेत् ॥  
 एवंपितृव्ययुत्रं श्रुतपुत्रं मातुलपुत्रं श्यालकं गुरुपुत्रं जामातरं शौत्रं भागिनेयं दौहित्रं शिष्यं मित्रं तत्पत्नीपुत्रादीं  
 श्वमृतानपितर्पयेत् ॥ ततः [विष्णुपुराणोक्तकाम्यतर्पणयथाचारंकार्यम्] ॐ देवासुरास्तथायक्षा नागागंधर्वाक्षसाः ॥ पिशाचागुह्यकाः सिद्धाः  
 कूष्मांडास्तत्रास्त्रगाः ॥ १ ॥ जलेचराभूतिलया वाय्वाराश्वजंतवः ॥ ग्रीतिमेतथान्वान्नु मद्दत्तेनाभुताखिलाः ॥ २ ॥ नरकेशुसमस्तेषु  
 यातनासुचयेस्थिताः ॥ तेषामायानयनैतदीयतेसलिलंमया ॥ ३ ॥ येज्जंधवाबांधवाये यऽन्यजन्मनिबांधवाः ॥ तेतृप्तिमखिलायांतु यश्चा  
 स्मत्तोभिवाञ्छति ॥ ४ ॥ येभकुलेलुप्तपिंडाः पुत्रदाराविवर्जिताः ॥ तेषांहित्तमक्षय्यमिदमस्तुतिलोदकम् ॥ ५ ॥ आब्रह्मस्तंबपृथगतं देवर्षि  
 पितृमानवाः ॥ तृप्यन्तुपितरःसर्वे मातृमातामहादयः ॥ ६ ॥ अतीतकुलकोटीनां सतद्वीपनिवासिनाम् ॥ आब्रह्मभुवनालोकादिदमस्तुति  
 लोदकम् ॥ ७ ॥ एतैर्मत्रैःपृथक्पृथक्सतिलजलंदद्यात् ॥ ततः ॥ यैकेचास्मन्कुलेजता अपुत्रागोत्रिणोमृताः ॥ तेमृदंतुमयादत्ते वस्त्रानिष्पी

डनोदकम् ॥ इतिस्नानवल्लवहिस्यलोनिषीड्यसव्येनऽऽचम्यतर्पणोत्तरकर्मकुर्यात् ॥ तद्यथा अन्नमोविवस्वतब्रह्मन्भास्वतोविष्णुतेजसे ॥  
 जगत्सवित्रेऽनुचयेनमस्तेकर्मदायिने ॥ १ ॥ इतिमंत्रेणसूयायाध्यद्वाब्रह्मादीन्पुष्पांजलिभिरर्चयेत् ॥ अन्नब्रह्मजज्ञानं ॐ ब्रह्मज्ञानम् ॥ १ ॥  
 ॐ ईदं विष्णु ॐ विष्णवे नमः ॥ २ ॥ अन्नमस्ते रुद्र ॐ रुद्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ आकृणेन ॐ मूर्याय नमः ॥ ४ ॥ अमित्रस्य चर्पणा  
 ॐ मित्राय ॥ ५ ॥ ॐ इममे ॐ वरुणाय नमः ॥ ६ ॥ ततउत्थाय ॐ अहश्चमस्य ॥ १ ॥ हठसः शुचि ॥ २ ॥ इति सूर्यसुप्रस्थाय  
 ॐ आदित्याय नमः ॐ दिग्भ्यो नमः ॐ दिग्देवताभ्यो नमः ॐ ब्रह्मणे ॐ अपविधिभ्यो नमः ॐ वाचे नमः ॐ वाचस्पतये ॥  
 मरुद्भ्यो ॐ अश्विनो ॥ इति नमस्कृत्योदकचदत्त्वा ॐ सर्ववर्षा ॥ १ ॥ देवा गातु ॥ २ ॥ इति जपेत् ॥ एतत्तर्पणप्रयोगः ॥ एतत्तर्पणविधाय श्रीमहावि  
 ष्णुषोऽशोपचारैः संपूज्यमाध्याह्निककर्मसमाप्यतीर्थप्राप्तिनिमित्तं पित्रादीनान्देवतं द्वादशदैवतं वा पार्वणं पितृव्यादीनां चकोद्विंशति  
 मांत्रावा अन्नेन आमात्रेन हेम्ना वा ब्राह्मणे शुद्धैर्बहुषु वा यथासंभवं कुर्यात् ॥ तत्र ब्राह्मणपरिधानकार्यं ॥ तत्रत्यागिप्रदेवमातृकानां उभयतः ॥  
 श्राद्धं चापित्रादिपदैवत्यं न वैद्व्यं वा यथासंभवं कुलाचारानुसारेण पूर्वोक्तपार्वणविधिनोक्तव्यम् परंतु एतद्व्यम् ॥ अर्घ्यदानम् आवाहनं  
 द्विजान्द्विगुणनिवेशनं तृप्तिश्रं विक्रं दिग्बंधनं दृष्टिदोषकृताऽपवित्रताशोधनार्थं कूष्माण्डादिसूक्तजपं विसर्जनं च न कुर्यात् ॥ अत्रकृतपादिका  
 लावश्यकताऽपि न इति ॥ अथतीर्थनिमित्तनवद्व्यं श्राद्धप्रयोगः ॥ तत्रतत्कर्त्तारोऽस्वाप्तनेप्रादुर्मुखोऽपविश्यादभिमन्त्रित्वादिधारणकृत्वासव्ये  
 नाचम्यभ्राणानायय ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा इति ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनान्तिचित्पाठत्वाकुशत्रयानां जलेन श्राद्धद्रव्याणि स्वात्मानं च मन्त्रं चेत ॥  
 ततः ॐ भूभ्ये नमः ॐ भगवत्यै गायै नमः ॐ भगवतो दाधाय नमः ॐ अमुकतीर्थाय नमः ॐ तीर्थदेवताभ्यो नमः ॥ इति नत्वा ॥ कुशत्रयतिलज

लान्यादायदेशलौ संकीर्त्य ॐ असुकगोत्रोऽसुकशर्मा ममसमस्तपितृणां विष्णुलोकप्राप्तये असुकतीर्थप्राप्तिनामिनकमसुकगोत्राणामस्म  
 त्पितृयितामहप्रपितामहानामसुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपणाम् असुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनामसुकशर्मणां वसुरुद्रा  
 गायसुनासरस्वतीरूपिणीनां तथा असुकगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामसुकशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रा  
 दित्यरूपणां सदैवंपावर्णश्राद्धपितृवृत्तिकामोहकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ ॐ कुरुष्वइत्यनुज्ञातो गायत्रीत्रिजपित्वा ॥ ॐ  
 देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यश्च ॥ नमः स्वाहायैस्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिःपठेत् ॥ तत उद्बुधसुखो  
 दक्षिणं जान्वाच्य सव्येन जलयवसमन्वितमृदु कुशत्रयमादाय ॥ ॐ अद्यास्मत्पित्रादित्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनां विश्वेषा  
 देवानां भिदमासनमस्तु इति जलयवसहितं कुशत्रयरूपमासनं धृष्टमुत्तरे ॥ १ ॥ ततो दक्षिणमुखः प्रचीनवीती याति तवामजातुः द्विष्टु  
 णमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ असुकगोत्रास्मान्पितृपितामहप्रपितामहामसुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपाः इदमासनं युष्मभ्यंस्व  
 धादित्युच्चार्य पितृतीर्थेन मोटक रूपं दक्षिणमुत्तरे ॥ १ ॥ ततः ॐ असुकगोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपितामहः असुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपाः  
 सुनासरस्वतीरूपिण्यः इदमासनं युष्मभ्यंस्वधा इति मोटक रूपं सनं दद्यात् ॥ २ ॥ पुनः ॐ असुकगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामह  
 वृद्धप्रमातामहा असुकशर्मणाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यरूपाः इदमासनं युष्मभ्यंस्वधा इति तृतीयं मोटक रूपं सनं सर्वतः पूर्वगतमुत्तरे  
 त्वादिदशदैवत्यपक्षेमातामहादीनां तृणमासनदानम् ॥ ३ ॥ ततः स्वयादिदृक्त्रया गंधादि कथंवा कुशत्रयवजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यास्मत्पित्रा  
 दित्रयमात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धि विश्वेभ्यो देवेभ्यः एतानि गंधपुष्पघृणदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासोऽसिनमः ॥ इत्युच्चार्य गंधादी

न्युत्सृजेत् ॥ ततः कृताञ्जलिः कर्त्ता विश्वेदेवानामर्चनसंपूर्णमिति ब्रूयात् अस्त्वर्चनसंपूर्णमिति द्विजब्रूयुः ॥ ततोऽपसव्यादिना पित्रावासेनष्टुथादिधृत्वा ॥ द्विगुणमुहुरात्रयतिलजलान्यादाय अमुकगोत्राऽस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाअमुकमुकशर्मा णोवसुरुद्रादित्यरूपाः एतानि गंधपुष्पद्रूपदापतांबूलयज्ञोपवीतवाससि युग्मभ्यंस्वधा इति प्रत्रादित्यउत्सृज्य १ ॥ अमुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामहाप्रपितामहाऽमुकमुकदेव्य एतानि गंधपुष्पद्रूपदापतांबूलसिंदूरवाससि युग्मभ्यंस्वधा इति मात्रादिभ्यः ० ॥ २ ॥ अमुकगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाअमुकमुकशर्माणः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यरूपाः एतानि गंधपुष्पद्रूपदापतांबूलयज्ञोपवीतवाससि युग्मभ्यंस्वधा इति मातामहेश्वरभ्यंस्वधा ३ ॥ ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा अं पितृणामर्चनसंपूर्णमस्मिन्प्रति पठेत् अं अस्त्वर्चनसंपूर्णमिति प्रतिवचनम् ॥ ततो गौरमृत्तिकाजलेन वा प्रत्येकं मंडलं कृत्वा भोजनपात्राणि कदात् ॥ अथाग्नौ करणम् ॥ व्यंजनक्षारवर्जितं वृत्ताक्तमुष्णमन्नं श्राद्धयाज्ञाप्रभागं कांस्यपात्रे कृत्वा अं अग्नौ करणं इति पृष्ट्वा ॥ कुरुष्व इत्यनुज्ञातोऽपसव्यादिना एव सपात्रके पितृब्राह्मणहस्ते अपात्रके ताप्रपात्रादित्यजलेन अं अग्नयेक्यवाहनयस्वाहा ॥ इदमग्नयेक्यवाहनय ॥ अं सोमाय पितृभूतोऽहत्याहुतिद्वयं जुहुयात् ॥ ततोऽहशेषमन्नं पित्रादिपात्रेषु किंचिदन्वापिडार्थं चावशेषेयात्ततः सव्यादिना देवपात्रे अपसव्यादिना पित्रादिपात्रत्रयेषु उष्णमन्नं सघृतमनेक्यं जनयुतं सुरीतलजलसहितं यथावत् परीविष्य मयुभयं कृत्वा अं मधुव्यातांऽक्रतायते इति त्र्युचेन अं मधुमधुमध्विति चाभिर्मन्त्रयेत्ततः सव्यादिना उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रमालभ्य अं मृगृथिवीते पात्रं

द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्यमुत्सेऽअमृतऽअमृतंजुहोमिस्वाहा॥ ॐ इदुम्बिजुर्विचक्रमे त्रेधानिदंधपदम्॥समूढमस्यपां७सुरस्वाहा॥इतिपठित्वा॥  
 ॐ अपहताऽअमुररक्षां७सिर्व्वेदिषदं-इतियवान् पात्रपरितोविकार्यं ॥ दक्षिणकरेणकुशत्रयादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यास्मत्पित्रादित्रयमात्रा  
 दित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनाविश्वेदेवाः इदमन्नं सोपस्करं हव्यम् अमृतरूपं वः स्वाहानमः ॥ इत्युक्त्वेवतीर्थेनदक्षिणभागभूमौ  
 क्षिपेत् ॥ ततोऽपसव्यादिनापित्रादिपात्रंन्यजुपाणिभ्यां व्यस्ताभ्यांस्पृष्ट्वा ॥ ॐ पृथिवीतेपात्रं ॐ इदुम्बिजुर्विचक्रमे इतिजत्वा ॥  
 ॐ अपहताऽअमुररक्षां७सिर्व्वेदिषदं-इतितिलात् अन्नपात्रपरितोः विकीर्यं वामकरेणपात्रंस्पृशत् दक्षिणकरेण द्विगुणमुग्रकुशत्रयादी  
 न्यादाय॥ ॐ अद्यामुकगोत्राऽस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाअमुकमुकशर्माणेवसुरुद्रादित्यरूपाः इदमन्नंसोपस्करं कव्यम् अमृतरूपंयुष्म  
 भ्यं स्वधा॥इत्युक्त्वापितृतीर्थेन वामभागभूमौक्षिपेत् ॥ ततोमात्रादिपात्रमालभ्यपूष्वजन्वा ॐ अमुकगोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपितामहो  
 मुकामुकदेव्यः इदमन्नं सोपस्करं कव्यम् अमृतरूपंयुष्मभ्यंस्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ एवं मातामहादिपात्रमपिस्पृष्ट्वापूष्वजन्वा ॐ अद्यामुकगो  
 त्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहतृष्टप्रमातामहाअमुकामुकशर्माणःसपत्नीकावसुरुद्रादित्यरूपाः इदमन्नंसोपस्करं कव्यम् अमृतरूपं युष्मभ्यं  
 स्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ ततः ॐ अन्नहीनंक्रियाहीनं विधिहीनंचयद्वेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इतिप्राथम्यं प्रणवव्याहृतित्रयपूर्वागायत्रीञ्च  
 सकृद्वा जपेत्॥ततः ॐ मधुव्याताऽकृतायेतमधुसरन्ति सिधंवः मार्ध्वीनंस्त्वोपधीः ॥१॥ मधुनत्सेतुतोषसोमधुमत्पार्थिवंठरजं-मधुधारं



स्तुनः पिता ॥२॥ मधुमात्रो ज्वनस्पतिर्मधमाऽअस्तुमधुमाऽध्यागोवाभवन्तुनः ॥ इतित्यचम् ॥ ॐ मधुमधुमाध्वतितिवपठेत् ॥ ततः सव्ये  
न ॥ ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिशृङ्गमित्यादिपंचक्रचः पठित्वा ॐ उदीरतामवर इत्यादिपितृमंत्रान् पुरषमुक्तमप्रतिरथं रुचिस्तवादिकं  
चयथाशक्तिपठेत् ॥ ततः उच्छिष्टमग्निधौ अपसव्यादिना चतुरङ्गदक्षिणपुर्वं हस्तमात्रं चतुरङ्गलोच्चरणीयं पित्रादित्रयपिंडपातनार्थं स्था  
नं निर्माय तत्राङ्गमात्रादित्रयमात्रमाहादित्रयपिंडपातनार्थं तादृशमेवस्थानद्वयंकुर्यात् ॥ ततः सर्वत्र अनन्तर्गमसप्तप्रद्वय  
रूपदर्भोपजुलीमूलेन ॐ अपहता इतिमंत्रेण दक्षिणां रेखांसकृत्सकृदुल्लिख्यदर्भोपजुलीमुत्तरस्याद्विशिनिक्षिप्य ॥ ॐ येरूपाणिप्र  
तिमुंचमानाऽअसुराः सन्तः स्वधयाचरन्ति ॥ परापुरोनिपुरोयेभंत्यग्निद्वैल्लोकादणुदात्यस्मात् ॥ इतिमंत्रेण उल्मुकं प्रत्येकं रेखांपारित्रामयित्वा  
दक्षिणतो निदध्यात् ॥ ततः उपमूलसकृदाच्छिन्नं दक्षिणाप्रकुरावरेखांपारिस्तात्वा नवसुपात्रेषु जलतिलगंधपुष्पाणि क्षित्वा एकंपात्रं गृहीत्वा  
ॐ असुक्रगोत्र अस्मान्तिरमुकशर्मन् अत्रावने निरुतेस्वयादितिकुरामूले पितृतीर्थेन अवेनेजनं दद्यात् ॥ एवं पितामहाय कुशत्रयमध्ये  
प्रपितामहाय कुशाग्रे अवेनेजनं सवशेषं दद्यात् ॥ एवमेव मात्रादिभ्योमात्रामहेभ्यश्च दद्यात् ॥ ततः सर्वस्मात्पात्रासादि श्रद्धाशेषात्रात्किंचि  
त्किंचिदन्नमुद्रित्यजतादिपत्रैकैक्यहृत्तरोषत्रं मध्वाज्यतिलज्यं जनादिना संयोज्य ॥ अथवा चरुणा सक्तुना वा पिण्याकमुडतंडुलस्य  
वर्गोष्मपिष्टक्रानामन्यतेमेनवा नवपिंडान् बिल्वोपमात्रिमय मधुघृताभ्यामववाच्यं पित्रादिभ्योऽपिंडमोटादिचदा  
य ॐ अमुक्रगोत्र अस्मान्तिरमुकशर्मन् वसुरुप एतत् पिंडं स्ववा इतिप्रथमाऽवनेजनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन दद्यात्

त् ॥ एवंपितामहायप्रपितामहायचदद्यात् ॥ ततः ॐ असुक्रगोत्रेऽस्मन्मातरसुक्रदेवि एतत्ते पिंडस्वधा ॥ इतिद्वितीयवेदिकायाप्रथमाऽनने  
 जनस्थानेमात्रे पिंडंत्वा पितामहैरपितामहैचदद्यात् ॥ पुनः ॐ असुक्रगोत्रे अस्मन्मातामहसुक्रशर्मन् वसुरूप एतत्तेपिंडस्वधा इति  
 तृतीयवेदिकायांमातामहायर्पिंडंत्वा प्रमातामहायवृद्धप्रमातामहायचदद्यात् ॥ ततः सर्वत्रापिंडाधारकुशमूले ॐ लेपभागभुजः पितर  
 स्तृप्यन्तु इतिपठित्वा हस्तगोत्रेच्छयजलेनहस्तप्रक्षालयेत् ॥ ततः सव्येनत्रिराचम्यविष्णुस्मृत्वा अपसव्यादिना ॐ अत्रपितरोमादय  
 ध्वंयथाभुगमावृषायध्वम् ॥ इतिपित्राद्युद्देशं पठित्वावामावर्तेनोदङ्मुखोभूत्वाप्रीतमनाः ॥ मनाश्चासंनियम्य तेनैवयथापरावृत्य ॐ अमी  
 मंदंतापितरौयथाभुगमावृषायिषत इतिजपेत् ॥ एवंमात्राद्युद्देशेन ॐ अत्रमातरोमादयध्वंयथाभागमावृषायध्वं इतिपठित्वाश्वासंनियम्यपू  
 र्ववत् ॥ ॐ अमीमंदंतमुतरोयथाभुगमावृषायिषत इतिजपित्वाएवमेव ॥ ॐ अत्रमातामहादयो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमिति  
 ॐ अमीमंदंतमातामहाः यथाभागमावृषायिषत इतिजपेत् ॥ ततः पूर्वदत्तावनेजनपात्रस्थजलेन ॐ असुक्रगोत्रे अस्मत्पितरसुक्र  
 शर्मन् वसुरूप अत्रप्रत्यवनेनिश्चतस्वधा इतिप्रथमपिंडोपरिप्रत्यवनेजनंत्वा एवमेव पितामहायप्रपितामहायचदद्यात् ॥ ततः ॐ  
 असुक्रगोत्रेऽस्मन्मातरसुक्रदेवि अत्रप्रत्यवनेनिश्चतस्वधा इतिमातृपिंडोपरि प्रत्यवनेजनंत्वा पितामह्यादिपंचपिंडोपरि क्रमेणप्र  
 त्येकं दद्यात् ॥ ततो नीर्वीक्सित्य सव्येनाचम्य अपसव्यं कृत्वा ॥ ॐ नमोर्बलपत्नो रसयनमोर्बलपितरः शोणायनमोर्बलपितराजीशाय  
 नमोर्बलपितरः स्वययै नमोर्बलः पितरो घोरायनमोर्बलः पितरः लपितरो नमोर्बलः पितरो दत्तपुत्रोर्बलः पितरो

देष्मईति कृतांजलिः पठित्वा ॐ नमोवोमातरारसाय इत्यादिमंत्राहेन मात्रादीमातागृहादीश्वरप्रणमेत् ॥ ततः ॐ एतद्द्रव्यं पितरो  
 वासः ॥ ॐ एतद्द्रव्यमातरोवासः ॥ ॐ एतद्द्रव्यमातामहादयो वासः ॥ इति पठित्वा नवसुपिण्डुमूत्राणि दद्यात् ॥ ॐ अमुकगोत्र  
 अस्मान्पितरसुकशर्मन् वसुरूप एततोवासः स्वधा ॥ इति मूत्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पितामहादिपिण्डेषु तत्तन्नाम्नोत्सृजेत् ॥ ततः पितृनु  
 द्विष्य तदीयापिण्डेषु तूष्णीं गंधपुष्पतुलसीधूपदीपतांबूलपूगीफलदक्षिणादीनि दद्यात् ॥ पिंडशेषान्नापिंडसमीपे विक्रीरेत् ॥ ततः  
 सव्याऽपसव्याभ्यां देवपितृभोजनपात्रेषु ॐ शिवा आपः संतु इति जलम् ॐ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पाणि ॐ अक्षतंचारिष्टं वास्तु इति  
 यवांश्च दद्यात् नतंडुलान् ॐ अमुकगोत्रस्यास्मान्पितरसुकशर्मणो वसुरूपस्य द्रुतैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु इति सतिलमक्षय्योदकं पि  
 त्रे दत्त्वा एव पितामहाय प्रपितामहाय च दद्यात् ततः ॐ अमुकगोत्रायास्मन्मातुसुकदेव्या द्रुतैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु इति मात्रे  
 दत्त्वा पितामहादीनां मातामहादीनां च प्रत्येकमक्षय्योदकं दद्यात् ततः सव्यं कृत्वा प्रादुसुखस्तन्मनाः कृतांजलिदक्षिणादिशपथ्यन् ॐ अघोरा  
 पितरः संतु ॐ अघोरा मातरः संतु ॐ अघोरा मातामहादयश्च संतु इति वेदेत् ततः ॐ गोत्रं नो वेदताम् दाता नोऽभि वदताम् वेदाः संतरेत् च ॥  
 श्रद्धाचनो माव्यगमत् बहुदयंचनोऽस्तु अन्नंचनो बहुभवेत् अतिथींश्च लभे महि ॥ याचितारश्च नः संतु माचर्या चिष्मं च न ॥ ततः सत्या आशि  
 षः सन्तु इति प्रार्थयत् ततोऽपसव्यं कृत्वा पिण्डोपरि सपवित्राकुशानस्तीर्य स्वयं वा चरिष्ये इति ब्रूयात् ॐ पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपिता  
 महेभ्यो मातृभ्यः पितामहीभ्यः प्रपितामहीभ्यो मातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः

स्वधेच्यतामिति पठेत् ॥ ततः ॐ ऊर्जवहन्तारमुयं धृतं पयः-कलिलपरिच्छिन्तम् ॥ स्वधास्थतर्पयतमे पितॄन् इति सपवित्रकुशोपारं  
 दक्षिणायां जलधारां दद्यात् ॥ मात्रादिपिण्डेषु स्वधास्थतर्पयतमे मातृः ॥ स्वधास्थतर्पयत मे माता महर्षी इति मंत्रोद्देशेन दद्यात् ॥ ततो दक्षिणा  
 दानम् ॥ तत्र उदङ्मुखः सव्येन हिरण्यदक्षिणामादाय ॐ अद्यास्मत्पित्रादित्रयमात्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतै  
 तर्थाप्रार्थनातिनिमित्तकपार्षणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निद्वैत्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे इति देवे  
 भ्यो दद्यात् ॥ ततोऽपसव्यादिनारजतद्रव्यहवीना ॥ ॐ अद्यामुकगोत्राणामस्मन्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्य  
 रूपाणां कृतैतर्थाप्रार्थनातिनिमित्तकपार्षणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चद्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे ॥  
 इति पित्रादिभ्योरजतदक्षिणां दत्त्वा ॥ ॐ अमुकगोत्राणामस्मन्मातृपितामहप्रपितामहीनां गंगायामुनासरस्वतीरूपिणीनां कृतैतर्थाप्रार्थना  
 तिनिमित्तकपार्षणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चद्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे इति मातादिभ्यः ॥ ॐ अ  
 मुकगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहर्षीनां वसुरुद्रादित्यरूपाणां कृतैतर्थाप्रार्थनातिनिमित्तकपार्षणश्राद्धप्रतिष्ठार्थम्  
 इदं रजतं चद्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे ॥ इति मातामहादिभ्यश्च दक्षिणां दद्यात् ॥ देवरजतनिषेधः ॥  
 ततः पिण्डानुयाय्यस्थान्यानि धाय अवघ्राणं कृत्वा सकृदाच्छिन्नकुशानुसुकंचपद्मांक्षिपेत् ॥ ततः ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च इति त्रिजपि  
 त्वादीपां त्रिविध्यं सव्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य आचम्य ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ॥ स्मरणदेवताद्भिणोः संपूर्णस्यादिति श्रु  
 तिः ॥ इति पठित्वा कर्मपूर्वतिकां मोषिष्णुस्मरेत् ॥ ततः पिण्डान् तार्थजले दक्षिणाभिमुखः क्षित्वा उच्छिष्टमार्जनादिकं कुर्यात् ततो वैश्वदेव

बलिकर्मणश्चिन्वा यथाशीलतार्थब्राह्मणान्भोजयित्वातेस्येदक्षिणां दत्त्वा ॐ असुकरतार्थप्रातिनिभिलपावणश्रद्धपारपूर्णमस्तु इति तान्  
 प्राच्य ॥ अस्तुपरिपूर्णामित्यनुज्ञातः स्वयंभोजनं कुर्यात् ॥ द्वादशैद्वयश्रद्धकरणेतुमातामह्यादिपक्षः पृथक्कार्यः ॥ अन्यत्सर्वसमानम् ॥  
 एवमेव पितृव्यादिनामकोद्घटविधिना कुर्यात् ॥ पार्वणाद्यसंभवे सर्वेषां पिडदानमात्रमपितार्थश्रद्धं कर्तव्यम् ॥ इति श्रद्धप्रकाशेतीर्थनि  
 भितकनवैद्वयपार्वणश्रद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ ४॥ अथ पिडमात्रतार्थश्रद्धपद्धतिः ॥ तत्र तावत्स्वामिनाऽद्भुतमुत्तपविश्य दूमेपवित्रधारणं  
 कृत्वा सव्येन आचम्य प्राणानायम्य पुंडरीकाक्षस्मरणं द्रव्यप्राक्ष्णं च कुर्यात् ॥ ततः ॐ भूयै नमः ॥ ॐ तीर्थदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ भगव  
 त्यै गयार्यै नमः ॐ भगवते गदाधराय नमः ॥ इति नमस्कारः ॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्यामममस्तपितृणामसद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये  
 सद्गतीनां च विष्णुलोकवासये असुकरतार्थप्रातिनिभित्तकं पिडदानमात्रश्रद्धमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ गायत्रीं त्रिजपित्वा ॐ देव  
 ताभ्य इति त्रिः पठेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुलः पातितवामजनुः स्वपुरतः पिडद्वनार्थं चतुरस्रं दक्षिणां पुर्वं हस्तमात्रं  
 चतुरङ्गुलीच्छ्रितस्थानं निर्माय ॥ तन्मध्ये दूर्भापि जलीमूलेन ॐ अपहताऽअसुराश्चाऽसिर्वेदिद इति रेखाकरणम् ॐ येरूपाणि  
 प्रातिमुचमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया च गन्तुः ॥ परापुराणि पुरोयभन्त्याग्निदृष्टलोकान् पृथुद्वान्स्मादिति मंत्रेण उत्सुकं भ्रातृयिवाऽपमूल  
 सृष्ट्वाच्छ्रद्वाक्ष्णश्रद्धास्तारं कुर्यात् ॥ ततः पत्रपुटेकेषु जलतिलगंधपुष्पाणि क्षिप्त्वा एकं पुटं कृत्वा ॐ अद्यामुकगोत्रं अस्म  
 न्पितरं मकरार्मन्सु रूप अत्रावने निश्चिंतस्वधा इति कुशमूलपितृतीर्थनिपत्रे अवेनजनं दद्यात् ॥ १ ॥ पुनः द्वितीयपुटं कृत्वा ॐ  
 असुकगोत्रं अस्मत्पितामहमुकशर्मन्बहुरूप अत्रावने निश्चिंतस्वधा इति कुशमध्ये पितृमाहाय दद्यात् ॥ २ ॥ पुनः ॐ असुकगोत्रं अस्माय

पितामहासुशर्मन् आदित्यरूपअत्रनेनिश्चतस्वधादितिकुशाग्रप्रपितामहायदद्यात् ॥ ३ ॥ एवं द्वितीयादिकुशेषुमातृपितामहाप्रपितामहा  
 मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहमातामहावृद्धप्रमातामहान्येपिदद्यात् ॥ एवमेव-स्वपत्नी-पितृव्य-तत्पत्नी-भ्रातृ-भ्रातृपत्नी  
 पितृष्वसृ-तद्भर्तृ-मातुल-मातुलानी-मातृष्वसृ-तत्पति-धशुर-धश्व-ऽऽचार्य-ऽऽचार्या-पुत्र-स्तुषा-पुत्री-जामातृ-भ  
 गिनी-भाम-भागिनेय-पौत्र-दौहित्र-शिष्य-क्षालक-भित्र-तत्पत्नीप्रभृतीनां पृथक्पृथक्शेष्वनजनदद्यात् ॥ ततःपायसेन चरुणावा  
 सक्तुना तंडुलैस्तंडुलपिष्टेकनवा यवगोधूमचूर्णगुडतिलफलमूलपिण्याकानामन्यतेमनवा तिलघृतमधुदधिशर्करामिश्रितेन आर्द्रामलक  
 मात्रान्पिडाङ्कृत्वाक्रमेणदर्भेषुतत्तद्वनजनस्थानेदद्यात् ॥ तत्रएकपिंडवामहस्तेष्टुत्वा दक्षिणहस्तेनद्विगुणमुन्नकुशत्रयादीन्यादाय ॐ  
 अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन्वसुरूप एतत्तोपिंडस्वधानमः इति प्रथमकुशमूले पितृतीर्थेनपित्रेदद्यात् १ पुनः पिंडं कुशादी  
 श्चादाय ॐ अमुकगोत्रास्मात्पितामहासुशर्मन्वरुद्ररूपएतत्तोपिंडस्वधानमः इतिकुशमध्यपितामहायदद्यात् २ पुनः ॐ अमुकगोत्र  
 अस्मात्पितामहासुशर्मन्त्रादित्यरूपएतत्तोपिंडस्वधानमः इतिकुशाग्रप्रपितामहायदद्यात् ३ एवंद्वितीयादिकुशेषुक्रमेण ॐ अमुक  
 गोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेविगंगारूपे एतत्तोपिंडस्वधानमः इतिदद्यात् ४ एवंसापत्नमात्रेऽपिदद्यात् ॐ अमुकगोत्रेऽस्मत्पितामहि अमुकदेवि  
 यमुनारूपे एतत्तोपिंडस्वधानमः ५ ॐ अमुकगोत्रेऽस्मात्पितामहि अमुकदेविसरस्वतीरूपे एतत्तोपिंडस्वधानमः ६ ॐ अमुकगोत्र  
 अस्मन्मातामहासुशर्मन्वसुरूप एतत्तोपिंडस्वधानमः ७ ॐ अमुकगोत्रास्मत्प्रमातामहासुशर्मन्वरुद्ररूपएतत्तोपिंडस्वधानमः ८  
 ॐ अमुकगोत्रास्मन्वदप्रमातामहासुशर्मन् आदित्यरूपएतत्तोपिंडस्वधानमः ९ ॐ अमुकगोत्रेऽस्मन्मातामहि अमुकदेवि एतत्तोपिंडं

स्वधानमः १० अ० असुक्रगोत्रेऽस्मत्प्रमातामहि असुक्रदेवि एतत्पिंडं स्वधानमः ११ अ० असुक्रगोत्रेऽस्मद्दृढप्रमातामहि असुक्रदेवि एतत्पिंडं स्वधानमः १२ अ० असुक्रगोत्रेऽस्मान्पतिअसुक्रदेविश्रीहृषिणि एतत्ते पिंडं स्वधानमः १३ अ० असुक्र० पितृव्यामुकशर्मन् एतत्ते १४ अ० असुक्रगोत्रेऽस्मत्पितृव्यपति० एतत्ते १५ अ० असुक्र० भ्रातरामुकशर्मन् एतत्ते १६ अ० असुक्रगोत्रे० भ्रातुः पति असुक्रदेवि एतत्ते १७ अ० असुक्रगोत्रेऽस्मान्पितृव्यसप्तसुक्रदेवि एतत्ते १८ अ० असुक्र० पितृव्यभूतारामुकशर्मन् एतत्ते १९ अ० असुक्रगोत्रे अस्मन्मातुलामुकशर्मन् एतत्ते २० अ० असुक्रगोत्रेऽस्मन्मातुलानि० एतत्ते २१ अ० असुक्रगोत्रेऽस्मन्मातृव्यसप्तसुक्रदेवि एतत्ते २२ अ० असुक्र० मातुः सप्तभूतारामुकशर्मन् एतत्ते २३ अ० असुक्रगोत्रे अस्मद्भूर अस्मद्भूर असुक्रशर्मन् वसुरूप एतत्ते २४ अ० असुक्रगोत्रेऽस्मद्भूध्रोऽसुक्रदेवि एतत्ते २५ अ० असुक्र० आचार्यामुकशर्मन् वसुरूप एतत्ते २६ अ० असुक्रगोत्रे आचार्यानि असुक्रदे वि एतत्ते २७ असुक्र० उपाध्यायशरोऽसुक्रशर्मन् वसुरूप एतत्ते २८ अ० असुक्र० पुत्रात्मकशर्मन् एतत्ते २९ अ० असुक्रगोत्रेऽ स्मत्पुत्रेषु क्रुदेवि एतत्ते पिंडं स्वधा ३० अ० असुक्रगोत्रेऽस्मत्पुत्रि असुक्रदे वि एतत्ते ३१ अ० असुक्र० जामातारामुकशर्मन् एत ते ३२ असुक्रगोत्रेऽस्मद्गग्निअसुक्रदेवि एतत्ते ३३ अ० असुक्र० भाम असुक्रशर्मन् एतत्ते ३४ अ० असुक्र० भागिने यामुकशर्मन् एतत्ते ३५ अ० असुक्रगोत्रास्मत्यौत्रामुकशर्मन् एतत्ते ३६ अ० असुक्र० दौहित्र असुक्रशर्मन् एतत्ते ३७ अ० असुक्र० भागिन शिष्यामुकशर्मन् एतत्ते ३८ अ० असुक्र० श्यालकअसुक्रशर्मन् एतत्ते ३९ अ० असुक्रगोत्रास्मन्मात्रामुकशर्मन् एतत्ते पिंडं स्वधा ४० एवं मित्रादीनां भृतानामपि पिंडान् दद्यात् ॥ ततः पिंडाधारकुशले अल्पभागमुजत्प्यन्तु इति हस्तप्रेच्छजलमेव प्रक्षालयेत्

लयेत् ॥ ततः सव्येन आचमनविष्णुस्मरणचकृत्वा अपसव्यादिना ॐ अत्रपितरोमादयध्वयथाभागमावृषायध्वम् इतिपठित्वा वामा  
 वृत्तेनोदङ्मुखोवाधृत्वाप्रीतमनाः मनाकृश्यासंनियम्य तैन्नवयथापरावृत्य ॐअमीमदन्तपितरोयथाभागमावृषायिषतइतिजेत् ॥ एवंमा  
 त्रादिणक्षेत्रज्ञेयम् ततःश्राव्यवनेजनम् ॐअमुकगोत्रअस्मत्पितरमुकशर्मन् अत्रप्रत्यवनेनिक्ष्वेतस्वधा इतिप्रथमपिंडोपरिप्रत्यवनेजनदत्त्वा  
 एवमवपितामहादिपिंडेषुप्रत्यवनेजनक्रमेणपूर्ववदद्यात् ॥ ततोनीवीविस्सनम् ॥ ॐनमोवलपितरोरसायनमोवलपितरःशोषायनमोवलपितरोजी  
 वायनमोवलपितरःस्वधायैनमोवलपितरोवारायनमोवलपितरोमन्यवे नमोवलपितरःपितरोनमोवागृहब्रह्म-पितरोदत्तसतोव-पितरोदंष्ट्र इति  
 कृतांजलिः प्रार्थयेत् ॥ ततः ॐएतद्भ-पितरोवासः ॥ ॐएतद्भोमातरोवासः ॥ ॐएतद्भोमातामहादयोवासः ॥ ॐएतद्भोमातामह्यादयो  
 वासः ॥ ॐएतद्भःपितृव्यादयोवासः ॥ इतिप्रीतिपिंडमूत्रदानं कृत्वा ततःपिंडान् गंधपुष्पतुलसीधूपदीपतांबूलपूगीफलदक्षिणाभिः संपू  
 ज्य ॥ ॐउर्ज्वहन्तीरमृतं वृतेपय-कीलालं परिभुतम् ॥ स्वधास्त्यर्त्तपयतमेपितृन् ॥ इतिपिंडेष्वपोनिषिच्यदक्षिणां दद्यात् ॥ तत्रदक्षिणा  
 द्रव्यमोटकादीनिचादाय ॐअद्यामुकगोत्राणाममसमस्तापितृणामसद्गतीनांस्वर्गतये सद्गतीनांचविष्णुलोकप्राप्तये अमुकर्तार्थप्राप्तिनिमित्तक  
 पित्रादीनां पितृव्यादीनांच कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थम् इदं रजतं चद्रव्यममुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दत्तुमहमुत्सृजे  
 इतिसंकल्प्यथाशस्तिरजतद्रव्यब्राह्मणायदद्यात् ॥ ततः पिंडोद्धरणम् अवघ्राणंचकृत्वादक्षिणामुलः पिंडान्तीर्थजलपविनक्षिपेत् ॥ ततोदेश  
 कालौसंकीर्त्य ॐअमुकगोत्रोऽमुकशर्मोहमव्यकृततदमुकतीर्थनिमित्तकारमतसमस्तपित्रादीनांपितृव्यादीनांचश्राद्धकर्मणःसाद्रतांसिद्धयर्थ



भस्मकंसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। इतिसंकरयथाशक्तितीर्थब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ ततस्तेभ्योदक्षिणां दत्त्वा प्रणम्य अँ अमुकमतीर्थग्रा-  
 तिनिमित्तापि ददानं परिपूर्णमस्तु इति प्रार्थ्य ॥ अँ अस्तु परिपूर्णमित्यनुज्ञातः ॥ अँ देवताभ्य इति त्रिजपि नवा ॥ यस्य स्मृत्या च नामोत्तया तपो  
 यज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णं तायाति सद्यो वेदं तमच्युतमिति कर्मभूतिकां मां विष्णुं स्मरेत् ॥ इति पिण्डमात्रतीर्थश्राद्धपद्धतिः ॥ ७४ ॥  
 ॥ अथ गयया श्राद्धपद्धतिः ॥ तत्र तावत् गययात्राप्रयोगः ॥ यात्रादिना त्राक् तृतीयादिने एकभक्तहविष्यभोजनब्रह्मचर्यादि नियमविधाय तदु-  
 त्तरीदेवप्रातः कृतस्नानादिनित्यक्रियः ॥ देशकालौ संकीर्त्य ॥ अद्य करिष्यमाणगययात्राद्भूतयापवांसं करिष्ये इतिसंकरय उपवासं च  
 कृत्वा तत्परदिने चंद्रतारावुकुले श्राद्धनिषिद्धव्यतिरेककाले स्नानादिनित्यकर्मसमाप्य पूजोपकरणसंपाद्य आसने प्राङ्मुख उपविश्य  
 आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा अँ अद्य करिष्यमाणगययात्रां निर्विघ्नं परि समाप्त्यर्थं गणेशं नवग्रहं दृष्ट्वा देवतानं यथाशक्ति पूजन-  
 मंहं करिष्ये इतिसंकरय अँ सुमुखश्चैकदंतश्च इत्यादियथाविधिना गणेशं नवग्रहान् स्वेष्टदेवतां च पूजयेत् ॥ ततः कुशत्रययवज-  
 लान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य अँ अद्य मम समस्तापितृणां निष्कृतिकमोगययातीर्थयात्राद्भूतम् आभ्युदयिकं श्राद्धं करिष्ये इति संकरय  
 प्रभृतघृताग्नेन मातृपुत्रापूर्वकमाभ्युदयिकं नवैदं त्वं श्राद्धं विधाय ब्राह्मणान् निरुणयादिभिः संतोष्य यात्रासंकर्यं कुर्यात् ॥ तदथा अद्यो-  
 त्यादिदेशकालौ स्मृत्वा मम समस्तापितृणां सप्तसुगोत्रेषु चैकोत्तरशतपुरुषाणां दशपञ्चदशपरस्वर्गयानां च पदे देस्वर्गरोहणसिद्धये नर-  
 कोद्धारपूर्वकं शाश्वतब्रह्मभावात् प्राप्तये च गयया श्राद्धाधिकरणाय गययात्रामहं करिष्ये ॥ इतिसंकरय ॥ काषायादिवस्त्रपरिधानरूपं कार्यं  
 दीपं विधाय श्राद्धशेषं सघृतमन्नमादाय ज्योतिषोत्तयात्रासमये श्रामाग्निरित्यन्तर्ग्रामं प्रदक्षिणं कृत्य केशाभ्यन्तरस्थं ग्रामं तस्मात्साद्य श्राद्ध-

शेषवृत्ताङ्गेनपारणकुर्वात् ॥ ततोद्वितीयदिने तमपि ग्रामं प्रदक्षिणीकृत्य प्रातः स्नानसंध्यादिनित्यकर्मसमाप्य प्रतिग्रहनिवृत्त्यादि  
 नियमवान् तीर्थाभिमुखसामध्याह्नगच्छेत् ॥ ततोमध्याह्नसमयेनद्यादिकमवाह्यमाध्याह्निकसंध्यादिकंविधायपाकानुष्ठानपूर्वकंपं  
 चमहायज्ञभोजनादिकंकृत्वासायंसंध्यासुपास्य तत्रैवतिष्ठेत् ॥ ततस्तृतीयदिनेऽपितथवसव्वकुर्वात् ॥ एवंप्रतिदिनमतीर्थप्राप्ति  
 गच्छेत् मार्गेयदिप्रयागोवाराणसीपुनःपुनःशोणोवाप्राप्यते तदातस्नानतपणे विधायपूर्वात्तर्तीयश्राद्धवत् नवैवेत्यंश्राद्धंकुर्वात् ॥ अथगया  
 प्राप्तिदिनकृत्यम् ॥ यदियानारूढः सोपानत्कोवागच्छेत् तदगयाप्राप्तिदिनेपादचरेण यावद्वंशक्यते तावतः स्थानात् यानोपानहोपरि  
 त्यज्यगच्छेत् ॥ तीर्थद्विष्टगोचरतांगते साष्टाङ्गप्रणम्य शिरोऽवगुंठनश्छ्माल्यकंचुकादिकंपरित्यज्यतीर्थं गच्छेत् ॥ तत्रतावत् गयापूर्वतः  
 फल्युतीर्थेसंप्राप्ते उद्धृतोदकेनतीर्थदूरे पाणीपादौप्रक्षाल्याचम्य ॐ गयातीर्थोयनमः ॥ इतिगंधपुष्पादिभिर्भयर्च्य तत्रजलान्ततः पंचवा  
 लुकार्कपिडान्वहिर्निष्कास्यतीर्थजलंप्रणवेनलोडयसचैलस्नानंकुर्वात् ॥ ततोजलाद्वहिरागत्यपवित्रकुशांश्चधृत्वा आचम्य नारिकेलैःसमु  
 वर्णयृहीत्वा ॐदेवदेवजगन्नाथ शङ्खचक्रगदाधर ॥ देहिविष्णो अनुज्ञामि तवतीर्थविगाहने ॥१॥ फल्युतीर्थेनमस्तुभ्यं सर्वतीर्थोत्तमोत्तम ॥  
 गृहाणेदंनारिकेलं सुवर्णेनसमन्वितम् ॥ २ ॥ इतितीर्थनवांसस्पृश्य ब्राह्मणहस्तेदद्यात् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौ  
 संकीर्त्य अद्यसमस्तपितॄणां विष्णुलोकावाप्तये आत्मनश्चभुक्तिमुक्तिप्राप्तयेफल्युतीर्थेस्नानमहंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ ॐ फल्युतीर्थे  
 विष्णुजले करोमिस्नानमाहृतः ॥ पितॄणांविष्णुलोकाय भुक्तिमुक्तिप्रसिद्ध्ये ॥ १ ॥ इति पठित्वा यथाविधि स्नात्वा घौते वाससीपरिधाय  
 चंदनादिनातिलकंकृत्वा संध्याकुर्वात् ॥ ततोदेशकालौस्मृत्वा ॐ अद्यसमस्तपितॄणामसद्गतीनांसद्गतिप्राप्तये सद्गतीनांचशाश्वतब्रह्मलो

कादिप्राप्तयेगयातीर्थप्राप्तिनिमित्तं नित्यंचदेवक्रषिपितृतर्पणं तत्रेणहंकरिष्ये इतिवाक्यंकृत्वा ॥ पूर्वोक्तंकातीयतपंकृत्वा स्नानवस्त्रंजला  
द्वहिस्थलेनिष्पीडय आचम्य ब्रह्मादीन्प्रणमेत् ॥ ततः श्रीमहाविष्णुण्योऽशोपचारैः संपूज्य तत्रैव गयाप्राप्तिनिमित्तकपूर्वोक्ततीर्थे श्राद्धवत्  
द्वादशैश्वर्यनवदैवत्याणवणं तदसंभवेऽपिऽदानमात्रंवापूर्वोक्तस्यैव अर्घवाहनादिरहितं कुर्यात् ॥ इतिगयाप्राप्तिदिनकृत्यम् ॥ ॥ अथ  
द्वितीयादिनकृत्यम् ॥ तत्रादौफलशुतीर्थेप्रातः स्नानादिकृत्वा गयावायव्यदिशिस्थितं प्रेतपक्वतं गत्वातन्मूलसंलग्नं ईशानकोणस्थितं ब्रह्मकु  
डे ॐ पितृणांसमावितं प्रेतं त्वनाशपूर्वकशः श्वतब्रह्मलोकप्राप्तये स्नानमहंकरिष्ये इति संकल्प्य स्नानतर्पणविधाय पूर्वोक्ततीर्थश्राद्धं नवदै  
यत्वं पिंडमात्रं वाकार्यम् ॥ ततः श्राद्धार्थं जलादिकमादाय प्रेतपक्वतमवरुद्धमुष्णरेखाङ्कितशिलासन्निधौ गत्वा पादशौचादिविधाय उपविश्य  
तत्रशिलायां पंचगव्यैः श्राद्धपय्यातिस्थानं शोधयेत् ॥ ततः आचम्य अपसव्यंकृत्वा दक्षिणामुखो भूत्वा पितृन्ध्यायन् ॐ कव्यवाडोनलः  
सोमो यमश्चैवार्थमातथा ॥ अग्निष्वात्ता बर्हिषदः सोमयाः पितृदेवताः ॥ आगच्छतु महाभागा युष्माभिरक्षितास्त्विह ॥ मदीयाः पितरो ये च  
कुलेजज्ञातः सनाभयः ॥ तेषां पिंडप्रदानाय आगतोऽस्मि गयामिमाम् ॥ ते सव्ये तृप्तिमायान्तु श्राद्धेनानेन शश्वतीमा ॥ इति पठित्वा ॥ देशकालौ  
संकीर्त्य ॐ अद्यापि त्रिदीनां पुनरावृत्तिरहितब्रह्मलोकप्राप्तिकामः प्रेतपक्वतं श्राद्धमहंकरिष्ये ॥ इति संकल्प्य पूर्वोक्तं पर्वणं पिंडदानमात्रं वा  
कुर्यात् ॥ एवं पर्वणविधाय तद्देदं दक्षिणतः कुशानां स्तीर्य ॐ कव्यवाडोनलः सोम इत्यादि श्राद्धेनानेन शश्वतीमित्यंतं प्रार्थ्य ॐ पित्रादि  
भ्यो नम इति पंचोपचारैः संपूज्य ॥ अथाब्रह्मस्तं वपय्यंतं देवर्षिपितृमानवाः ॥ तृप्यंतु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ १ ॥ अतीतकुलको  
टीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ॥ आब्रह्मभुवानहोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥ २ ॥ इति द्वाभ्यां कुशेषु तिलोदकंदत्वा ॐ पितापितामहश्चैव

१ अत्र यदापि मैथिलवाचस्पतिना प्रतीक्षिला (रामक्षिला) श्राद्धपुस्तकं तथापि मूलभूतवायुपुराणेऽस्माभिरंगीकृत एवमेव ब्रह्मदेशीयतारानां यैरपि संस्कृतगयाश्राद्धाद्धृत्युक्तम्

तथैवप्रपितामहः ॥ मातापितामहौचैव तथैवप्रपितामही ॥ मातामहस्तात्पिताच प्रमातामहकादयः ॥ तेषांपिंडोभयादतो द्वाक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥  
इत्युच्चार्य तिलघृतदधिमधुतृष्टिभितसक्तुतोपिंडं मिलितेभ्योद्वादशभ्योदद्यात् ॥ ततः प्रेतत्वाविमुक्तिकामनयायास्मृतिबंधवर्गादी  
नां पिंडदानं कुर्यात् ॥ अथषोडशीकर्म ॥ तद्यथा ॥ अनविशतिदास्यमानपिंडस्थानानि निर्मायतेषुपंचगव्यं लिप्त्वाप्रत्येकं दक्षिणायं  
कुशत्रयंदद्यात् ॥ ततः ॐ अस्मत्कुलेमृतायेच गतिर्येषानविद्यते ॥ अवाहायिष्येतांस्वर्वान्दर्भपृष्ठेतिलोदकैः ॥ १ ॥ मातामहकुलेयेच  
गतिर्येषानविद्यते ॥ अवाहायिष्येतांस्वर्वान्दर्भपृष्ठेतिलोदकैः ॥ २ ॥ बंधुवर्गकुलेयेच गतिर्येषानविद्यते ॥ अवाहायिष्येतांस्वर्वांन्  
दर्भपृष्ठेतिलोदकैः ॥ ३ ॥ इतित्रिभिमतत्रावाह्यं गंधादिभिरभ्यर्च्य पिंडानदद्यात् ( तत्रमंत्रा ) ॐ अस्मत्कुलेमृतायेच गतिर्येषानविद्य  
ते ॥ तेषामुद्धरणार्थाय इमंपिंडं ददाम्यहम् ॥ १ ॥ मातामहकुलेयेच गतिर्येषानविद्यते ॥ तेषामुद्धरणार्थाय इमंपिंडं ददाम्यहम् ॥ २ ॥  
बंधुवर्गकुलेयेच गतिर्येषानविद्यते ॥ तेषामुद्धरणार्थाय इमंपिंडं ददाम्यहम् ॥ ३ ॥ अजातदन्तायेकोचिद्येचगर्भप्रपीडिताः ॥ तेषामुद्धरणार्  
थाय इमंपिंडं ददाम्यहम् ॥ ४ ॥ अग्निदग्धाश्चयेकोचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे ॥ विद्युच्चौरहतायेच तेभ्यः पिंडं ददाम्यहम् ॥ ५ ॥ दावदाहेमृताये  
च सिंहव्याघ्रहताश्चये ॥ दंष्ट्रिभिः शृङ्गाभिर्वापि तेभ्यः पिंडं ददाम्यहम् ॥ ६ ॥ उद्ध्वनमृतायेच विषशस्त्रहताश्चये ॥ आत्मापथातिनेयेच ते  
भ्यः पिंडं ददाम्यहम् ॥ ७ ॥ अरण्यवर्त्मनिवने क्षुधयातृणयाहताः ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्येस्तेभ्यः पिंडं ददाम्यहम् ॥ ८ ॥ रौरवेचाधताभित्ते  
कालमूत्रचेयेगताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय इमंपिंडं ददाम्यहम् ॥ ९ ॥ असिपत्रभेजोरे कुभीपाकेचयेगताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय इमंपिंडं ददा  
म्यहम् ॥ १० ॥ पशुयोनिगतायेच पक्षिकीटसरीसृपाः ॥ अथवावृक्षयोनिस्थास्तेभ्यः पिंडं ददाम्यहम् ॥ ११ ॥ अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलो

केचयेगताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय इमपिदंदाभ्यहम् ॥ १२ ॥ नरकेशुसमस्तेषु यातनामुचयेस्थिताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय इमपिदंदाभ्यहम् ॥ १३ ॥ जात्यन्तरसहस्रेषु भ्रमन्तःस्वनकर्मणा ॥ मानुष्यदुर्लभैर्षर्षां तेषापिदंदाभ्यहम् ॥ १४ ॥ दिव्यन्तरिक्षभूमिग्याः पितरोर्वा धवादायः ॥ मृताअसंस्कृतायेच तेभ्यःपिदंदाभ्यहम् ॥ १५ ॥ योकेचिद्विभ्रतरूपेण वर्ततेपितरोमम ॥ तेसव्वैतमिमायन्तु पिडेनानेनसव्वै दा ॥ यडेबांधवाबांधवावा यऽन्यनमनिर्बांधवाः ॥ तेषापिडेभयादत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ पितृश्रेस्तायेच मातृश्रेतथैवच ॥ गुरुशुभ्रगंधर्वा येचान्येधांधवामृताः ॥ येषुकुलेलुपिडाःपुत्रदागविज्जिताः ॥ क्रियालोपगताश्चैव जात्यधाःपद्मस्तथा ॥ विरूपाआमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताःकुलेमम ॥ तेषापिडेभयादत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ १७ ॥ आब्रह्मणेयेपितृवंशजाता मातृस्तथंशभवामदीयाः ॥ वंशद्वयेस्मिन्मदासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ १८ ॥ मित्राणिसव्वेशशश्वश्वश्वः स्पृष्टाब्धशश्वश्वकृतोपकाराः ॥ जन्मान्तरेयमसंगताश्च तेभ्यःस्वर्षापिडमहंददामि ॥ १९ ॥ इति अनविद्यानिर्भरूनवंशतिपिडाःपुत्रसुभेयोदत्त्वा तैरेवमत्रैः स्त्रीलिंगतयासमूहै तैश्चस्त्रीन्येद्वयादिति ॥ तद्यथा ॥ अस्मदकुलेमृतायाश्च गतिर्योसानंविद्यते ॥ तासामुद्धरणार्थाय इमपिदंदाभ्यहम् इत्यादि ॥ ये इत्यत्र या इतिविशेषः ॥ येषामित्यत्रयासांमिति ॥ तेभ्य इत्यत्रताभ्यः ॥ घातिन इत्यत्रघातिन्यः इतिविशेषः ॥ अन्यत्सर्वेषुपेडशीवता ॥ अथमातृपेडशीलित्यते ॥ अँआगर्भज्ञानपर्यंतं पालितोयत्स्वबाह्वहम् ॥ आवाहयाभितामातृदंभेषुटे तिलोदकैः ॥ इतिप्रार्थ्य ॥ गमोँ दगमनेदुःखं विषमेभूमिमर्मानि ॥ तत्पानिष्क्रमणार्थाय मातृपिदंदाभ्यहम् ॥ १ ॥ मासिमासिकृत्कष्टं वेदनाप्रसवेषुच ॥ तस्य निष्क्रमणार्थाय मातृपिदंदाभ्यहम् ॥ २ ॥ संपूर्णेदशमेमासि चात्यन्तमातृपिडनम् ॥ तस्य ० ॥ शेषाप्रज्ञांजायतेपुत्रो जनन्याः परिवेदनम् ॥

तस्य० ॥१॥ शैथिल्ये प्रसवे प्राप्ते माता विंदति दुष्कृतम् ॥ तस्य० ॥ ५ ॥ पिबेच्च कटुद्रव्याणि क्वाथानि विविधानि च ॥ तस्य० ॥ ६ ॥ अग्निना शोषयेद्देहं त्रिशत्रो पोषणेन च ॥ तस्य० ॥ ७ ॥ रात्रौ मूत्रपुरीषाभ्यां भिद्यन्ते मातृकपर्पदाः ॥ तस्य० ॥ ८ ॥ दिवा रात्रौ यदा माता तदाऽतिनिर्भस्तनम् ॥ तस्य० ॥ ९ ॥ मावेमासिनादौ घेच शिशोरेऽस्यन्तुः खिताः ॥ तस्य० ॥ १० ॥ क्षुधया विह्वलं पुत्रं ह्यमं माता प्रयच्छति ॥ तस्य० ॥ ११ ॥ पुत्रो व्याधिसमाश्रितो माता हास्रं दृष्ट्वा करिणी ॥ तस्य० ॥ १२ ॥ यमद्वारे महाघोरे पथि माता च शोचति ॥ तस्य० ॥ १३ ॥ पिंडो षोडशभिर्विद्वान्यः पुत्रश्चाद्वमाचरेत् ॥ तस्य० ॥ १४ ॥ अल्पाहारस्य करणी यावत्पुत्रश्च बालकः ॥ तस्य० ॥ १५ ॥ गात्रमद्भ्यो भवेन्माता मृत्युरेव न संशयः ॥ तस्य निष्क्रमणार्थाय मातुं पण्डद्वाम्यहम् ॥ १६ ॥ इति षोडशीं पिंडान्मात्रे दद्यात् तस्य पुत्रस्यैव प्रसूय माता चाशीः प्रयच्छति ॥ इति मातृ षोडशी समाप्ता ॥ पुत्रकामश्चेत्तदा ॐ यो मे प्रजानां शयति जीवो न शयति वा स्वयम् ॥ तस्य काश्यपगोत्रस्य वायुरुहस्यदेहिनः ॥ प्रेतस्योद्धारविधये तस्मै पिंडं ददाम्यहम् ॥ १ ॥ यो मे प्रजानां शयति जीवो न शयति वा स्वयम् ॥ तस्य प्रेतस्य दत्तोत्र पिंडोऽथ मुपतिष्ठताम् ॥ २ ॥ यो मे प्रजानां शयति जीवो न शयति वा स्वयम् ॥ विष्णुरूपः सलभतां यस्मै पिंडार्पणं कुरुते ॥ ३ ॥ ॐ तस्य काश्यपगोत्रस्य वसुरुहस्यदेहिनः ॥ अयं पिंडो मया दत्तो यः पीडां कुरुते मम ॥ ४ ॥ ॐ इमं तिलमयं पिंडं मधुसर्पिः समन्वितम् ॥ ददाति तस्मै प्रताप यः पीडां कुरुते मम ॥ ५ ॥ इति मंत्रश्चतुरः पिंडान् दद्यात् ॥ ततः सर्वेषु पिंडेषु तिलजलपूर्णपात्रेण प्रदक्षिण वारत्रयं परिषेचनं कृत्वा ॐ येष्वेवैवास्मांश्चान्यथास्व वाश्चाम्मांश्चाम्मांश्चास्मिंस्ते चावाहतां तांश्च वाहतां तृण्यनुभवंतस्त्वंतु भवन्यस्तृण्यत गोत्रानुत्रान भित्पयन्ती रागो मधुमती रिमाः स्वधा पितृभ्यो मातृभ्योऽस्ते

अमृतं दुहन्ना आपो देवीरभयास्तपत्यतृप्यत इति प्रणिपत्य ॐ पित्रादयः क्षमध्वम् इति क्षमाप्य विभृजेत् ॥ ततः सत्येनाचर्य  
 ॐ साक्षिणः संतु मे देवा ब्रह्मेशानदयस्तथा ॥ मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता ॥ आगतोऽस्मि गयं दिव पितृकथ्यैर्गदाधर ॥ त्वमेव  
 साक्षी भगवन्नृणोऽहं नृणञ्जयात् ॥ इति साक्षितया ब्रह्मादीन्कल्पयित्वा श्रावयेत् ॥ एवं प्रेतपर्वतेऽपि पिण्डदानमात्रं कृत्वा ॐ अद्यापि  
 त्रादीनां प्रितत्त्वविमुक्तिस्त्वेव प्रेतत्वाभावकामः प्रेतपर्वते तिलमिश्रसक्तुनिक्षेपं तिलमिश्रजलाजलिदानं च करिष्ये इति संकल्प्य ॐ यके  
 चित्रैर्नरूपेण वर्तते पितरो मम ॥ ते सर्वे तृप्तिमायां तु सक्तुभिस्तिलमिश्रैः ॥ इति दक्षिणामुखः तिलमिश्रसक्तुं क्षिप्वा ॐ आब्रह्मस्तवं  
 पर्यतं यात्काचित्सचराचरम् ॥ मया दत्तेन तोयेन तृप्तिमायां तु सर्वशः ॥ इति मंत्रेण तिलसंयुतजलं जलीन्द्रयात् ॥ ततो यथाशक्ति ब्राह्मणा  
 यदक्षिणां दद्यात् ॥ इति प्रेतपर्वतकृत्यम् ॥ ततः प्रेतपर्वताद्वरुद्धमहानदीं पश्चिमीरस्थां गयोत्तरस्थां प्रेतशिलां गत्वा पादशौचादिभूत्वा  
 ॐ अद्य मम स्तोत्रपितॄणां प्रितत्त्वविमुक्तिकामः प्रेतशिलायां श्रद्धमहं करिष्ये इति संकल्प्य पूर्वोक्तपार्षणं पिण्डदानमात्रं वा श्राद्धं कुर्यात् ॥ ततः  
 प्रेतशिलायां पंचागव्यशोधितायामुपविश्य अपसव्येन दक्षिणाभिमुखो भूत्वा ॐ कव्यवाडोनलः सोमो यमश्चैवाय्यमा तथा ॥ अग्निज्वात्ता  
 बर्हिषदः सोमपाः पितृदेवताः ॥ आगच्छंतु महाभागा युष्माभिरक्षितास्त्विह ॥ मदीयाः पितरो येद्य कुले जाताः सनाभयः ॥ तेषां पिण्डप्रद  
 नार्थमागतोऽस्मि गयामिमाम् ॥ ते सर्वे तृप्तिमायां तु श्राद्धेनानेन शाश्वतीम् ॥ इति पठित्वा प्रेतपर्वतप्रकरणदर्शितेन प्रयोगेण साक्षिश्रवणा  
 न्तं कृत्वा प्रेतशिलायां समाचारादेव बवभांडस्फोटनं कुर्यात् ॥ अथ प्रेतशिलाधः प्रमासाद्विसङ्गतायामहानद्यां रामतीर्थत्वेन प्रसिद्धराम  
 छंदः प्रभासद्वदे देशकालादिकीर्तनं ॐ जन्मान्तरकृतदुष्कृतविनाशकामो रामतीर्थं ज्ञानमहं करिष्ये इति संकल्प्य ॐ जन्मान्तर

शतं साग्रं यन्मयादुद्धृतं कृतम् ॥ तत्स्वविलययातु रामतीर्थाभिषचनादिति मंत्रेणस्नानविधाय पितृन्संतपयेत् ॥ ततोद्देशकालौ संकी-  
 र्त्य ॐ स्वस्यविष्णुलोकप्राप्तिकामः पितॄणांच प्रेतत्वंविमुक्तिपूर्वकपितृपदप्राप्तिकामो रामतीर्थं श्राद्धं पिंडदानमात्रंवाहंकारिष्ये इतिसं-  
 कल्प्यपूर्वोक्तं पावणं पिंडदानमात्रंवाश्राद्धंकुर्यात् ॥ ततः कव्यवाडनल इत्याद्यावाहनादिसाक्षिश्रवणान्तं कृत्वा ततः स्वगतपापनाश-  
 कामः ॐ रामराममहाबाहो देवानामभयंकर ॥ त्वानमाम्यत्रदेवेश ममनश्यतुपातकम् ॥ इतिमंत्रेणरामंनवा ॐ अद्यभासमानस्वकर्तृक-  
 शिवपुरागमनकामः प्रभासेशनमस्कारमहंकारिष्ये इतिवाक्यंकृत्वाप्रभासेशंप्रणमेत् ॥ ततः मानसवाचिककार्यिकर्मजपापनाशकामः  
 ॐ आपस्त्वमसिदेवेश ज्योतिर्पापतिरेवच ॥ पापनाशयदेवेश मनोवाक्कायकर्मजम् ॥ इतिमंत्रेण रामंप्रभासेशंचयुगपन्नवा तत्र  
 ॐ यमराजधर्मराजौ निश्चलार्थहिसंस्थितौ ॥ ताभ्यांबिलिप्रयच्छामि पितॄणांभुक्तिमुक्तये ॥ इतिमंत्रान्ते ॥ ॐ यमराजधर्मराजाभ्यामेषति-  
 लजलमिमिश्रितो बलिर्नमम इत्युक्त्वाभक्तादिरूपबलिंदद्यात् ॥ ततः प्रभासपर्वतदक्षिणदिगवस्थितप्रतशिलाजघनस्थलग्नतनग-  
 नाग्निपर्वते ॐ द्वौशानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ ॥ ताभ्यांबिलिप्रयच्छामि रक्षतांपथिसर्वदा इति ॥ ॐ एषबलियमराजधर्म-  
 राजानुचरभ्यांश्वभ्यांनममदतिबलिंदद्यात् ॥ इदंचबलिदानंनित्यंकार्यम् । अकरणेऽनिष्टश्रवणात् ॥ इतिद्वितीयदिनकृत्यम् ॥ अथतृतीयदि-  
 नेपंचतीर्थीकृत्यमुच्यते ॥ ततो गयाप्राप्तिर्तृतीयादिने फलुतीर्थप्रातःस्नानादिदेवार्चनान्तकर्मकृत्वाउत्तरमानसं गत्वादभ्यापिस्तीर्थो-  
 दकेनाचम्यशिरस्यभ्युक्ष्य ॐ आत्मशुद्धिसूर्य्यलोकदिश्राप्तिपितृमुक्तिकाम उत्तमानसेस्नानंकारिष्येइतिसंकल्प्यस्नानायमंत्रान्पठि-  
 त्वा ॐ उत्तरेमानसेस्नानं करोम्यात्मविशुद्ध्ये ॥ सूर्य्यलोकदिशंसिद्धिसिद्ध्येपितृमुक्तये ॥ १ ॥ इतिमंत्रेणस्नायात् ॥ ततस्तर्पणंकु-



त्वातर्पणंति ॥ आब्रह्मस्तबपर्ययत् देवर्षिपितृमानवाः ॥ तृप्यन्तुपितरःसर्वे मातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलोदनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ॥  
 आब्रह्मवुनल्लोकादिदमस्तुतिलोदकम् ॥ इत्यनेनैकोऽल्लिह्यैः ॥ ततः ॐ पितृणामक्षय्यतृप्तिकामउत्तरमानसेश्राद्धपिंडदानमात्राक  
 रिष्ये इतिसंकरय्यपूर्वांश्राद्धकृत्वा तदक्षिणदिशिउपविथसमूलान् दक्षिणग्रान्कुशानस्तीर्य्य ॐ कव्यवाडनलइत्यादिनावाहनादिसा  
 क्षिश्रवणांतद्वृत्त्वा ॐ पितृणामूर्त्यलोकनयनकाम उत्तराकैर्य्यपूजनश्रगामं च करिष्ये इतिसंकरय्य ॐ नमोभगवतेभद्रं सोममौमह्रूपिणे ॥  
 जीवभार्गवसौरयराहेकुत्स्वरूपिणे ॥ इतिभंत्रेण उत्तराकस्यनतिपूजनेकुर्यात् ॥ ततोमौनेनदक्षिणमानसंगत्वात्रादीच्याम् ॐ  
 आत्मविशुद्धिमुख्यलोकान्निब्रह्महत्यादिपापसमूहनाशकामः पितृमुक्तिकामश्च उदीचीतीर्थस्नानमहं करिष्ये इतिसंकरय्य ॐ  
 ब्रह्महत्यादिपापौघयातनायाविमुक्तये ॥ दिवाकरकरोमीह स्नानंदक्षिणमानसे ॥ नमामिसूर्य्यतृप्यर्थं पितृणां तारणाय च ॥ पुत्रपौत्र  
 धनैश्चर्यायागुरारोग्यवृद्धये ॥ इतिभंत्रेणदक्षिणमानसेस्नात्वा पितृन्संतर्प्य ॐ पितृमुक्तिकाम उदीचीतीर्थश्राद्धमहं करिष्ये इतिसंकरय्य  
 पार्वणं पिंडदानमात्रवाश्राद्धकृत्वा ॐ कव्यवाडनलइत्यादिसाक्षिश्रवणांतद्वृत्त्वा ॥ ततोमध्यमं कनसलतीर्थगत्वा तत्रापि ॐ अद्यपितृ  
 विमुक्तिकामः कनसलतीर्थस्नानमहं करिष्ये इतिसंकरय्य स्नातपणे कृत्वापितृमुक्तिकामनया तत्रश्राद्धपिंडमांत्रंकुर्यात् ॥ ततोदक्षिण  
 मानसे ॐ अद्यपितृमुक्तिकामोदक्षिणमानसेस्नानमहं करिष्ये इतिसंकरय्य स्नातपणे कृत्वापितृमुक्तिकामनया तत्राद्यपि ॐ अद्यपितृ  
 मुख्यलोकान्सिद्धिसिद्धयेपितृमुक्तये इतिभंत्रेणस्नात्वापूर्वतपणश्राद्धचकृत्वापितृमुक्त्यादिकामनया ॐ नमामिसूर्य्यतृप्यर्थं  
 पितृणां तारणाय च ॥ पुत्रपौत्रधनैश्चर्यायागुरारोग्यवृद्धये ॥ इतिभंत्रेणमौनेनदक्षिणार्कस्यनतिपूजनचकार्यम् ॥ [ मौनेनपूजनीयत्वादयमे



ततोमातङ्गव्यामोव उत्तरादिगवस्थितमतद्देशदृष्ट्या प्रणम्य ॐ प्रमाणदेवताः संतु लोकपालश्चसाक्षिणः ॥ मयागत्यमतद्देशस्मिन्नितृणानि  
 पृच्छतिः कृता ॥ इति पठित्वा ततो ब्रह्मतीर्थसंज्ञकब्रह्मरूपत्वापित्राद्युद्धारकामनया स्नानतर्पणश्राद्धानिपूर्ववत्कार्याणि ॥ कूपश्चायमेत  
 द्वाभ्या आग्नेयकोणेशेत्रमध्येऽहःकूपोऽस्ति तत्तरे श्राद्धपिण्डदानंवापतितस्यापि किंतु गर्भं हंतुं पुरुगतिनिर्देशात् ॥ ततो ब्रह्मकूपप्रयोजने  
 ध्येऽपितृतरणकामनया प्रतपञ्चतवच्छ्रद्धाकार्यम् ॥ ततो धर्मस्य धर्मैश्चरस्य च प्रणामः ॥ ततो महाबोधितोरगधः स्वस्य स्वर्गलोकप्रा  
 प्तिकामनया प्रतपञ्चतवच्छ्रद्धाः पिण्डदानमात्रं वा कृत्वा ॐ चलदललयवृक्षाय सर्वदाऽस्त्यतिहेतवे ॥ बोधितत्त्वाय यज्ञाय अश्वाय यमो नमः ॥  
 ॥ १ ॥ एकादशोऽसिरुद्राणां वसूनां पावकस्तथा ॥ नारायणोऽसिदेवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल ॥ २ ॥ अश्वाय यस्मात्त्वयिवृक्षराज नारायण  
 स्तिष्ठतिसर्वकालम् ॥ अतः शुभस्तव सततं तूहणां धन्योऽसि दुःस्वप्नविनाशनोऽसि ॥ ३ ॥ अश्वाय हू पिण्देवं शंस चक्रमादाधाम् ॥ नमा  
 मिण्डरीकांशं वृक्षरूपं वरहारीम् ॥ ४ ॥ बोधिहू पंमहावृक्षं नारायणमनःप्रियम् ॥ गयां समागत्य मया पितृभ्यानिष्कृतिं कुरु ॥ ५ ॥ येऽस्म  
 त्कुले मातृवंशे बाधवा दुर्गतिगताः ॥ त्वदर्शनात्स्पर्शनाच्च स्वर्गातिं यातुं तेऽक्षयम् ॥ ६ ॥ ऋणत्रयं मया दत्तं गयां मागत्य वृक्षराट् ॥ त्वत्प्रसादा  
 न्महापापादिमुक्तोऽहं भवाणवात् ॥ ७ ॥ इति मात्रैर्विष्णुप्रणमेत् ॥ इति चतुर्थदिनकृत्यम् ॥ अथ पंचमदिनकृत्यम् ॥ तत्र फलवाप्रातः स्ना  
 नादिनित्यं कर्मभूत्वा ब्रह्मसरो गत्वा ॐ ऋणत्रयविमुक्तिकामः करिष्यमाणं तर्पणश्राद्धपिण्डदानोपयोग्यात्मशुद्धिकामश्च ब्रह्मसरो सिन्ना  
 नमहं करिष्ये इति सकल्प्य ॐ स्नानं करोमितीर्थेऽस्मिन् नृगत्रयविमुक्तये ॥ श्रद्धायाऽपिण्डदानाय तर्पणयात्मशुद्धये ॥ इति मंत्रेण स्नानं कृत्वा  
 तर्पणं कारय्यम् ॥ ततः ॐ पितृणां ब्रह्मलोका नयनकामनया ब्रह्मकूपप्रयोजनेष्वे श्राद्धमहं करिष्ये इति सकल्प्य पार्वणिं पिण्डदानमात्रं वा श्राद्धं

कृत्वाऽऽय्यपिंडं दत्त्वा ॐ पितॄणां मोक्षप्राप्तिकामो ब्रह्मकलिपताम्रब्रह्मसेचनं करिष्ये इतिसंकरय्य ॐ आम्नं ब्रह्मसरोभूतं सर्वदेवमयं तरुम् ॥  
 विष्णुरुपंप्राप्तिं चामि पितॄणां च विमुक्तये ॥ इति मंत्रेण कुशयुतेन ब्रह्मसरोजलेन गोप्रचारसमीपस्थान् ब्रह्मकलिपतानाम्प्राप्तिं सचेत् ॥ ततः ॐ  
 वाजपेयजन्यफलप्राप्तिकामनया ब्रह्मपुत्रप्रदक्षिणां करिष्ये इतिसंकरय्य तत्प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ ततः ॐ अद्यपिनृणां ब्रह्मनुरनयनकामो  
 ब्रह्मनमस्कारमहं करिष्ये इतिसंकरय्य ॐ नमो ब्रह्मणेऽजाय जगज्जन्मादिकारिणे ॥ भक्तानां चित्तूणां च तारणाय नमो नमः ॥ इति ब्रह्मसरोवायव्य  
 कोणस्थं ब्रह्माणं प्रणमेत् ॥ ततः पितृमुक्तये यमबलिदानं करिष्ये इतिसंकरय्य ॐ यमराज यमराजौ निश्चलार्थं स्थिरकृतौ ॥ ताभ्यां बिलिप्रय  
 च्छामि पितॄणां मुक्तिं हेतवे ॥ इति पठित्वा एष बलियं मराज यमराज ॥ इति मंत्रेण सव्येन वादभोदकसहितभक्तादिनबलिद  
 द्यात् ॥ ततः द्वाैश्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ ॥ ताभ्यां बिलिप्रय च्छामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥ इति पठित्वा एष चालिः श्व  
 भ्यां नमः इति श्वभ्यां बलिदत्त्वा ॐ ऐंद्रवारुणवायव्या याम्यावैनैर्ऋतास्तथा ॥ वायसाः प्रतियुहंतु भूमौ पिंडमयोद्भितम् ॥  
 इति मंत्रेण काकेभ्यो बलिदानं कार्यम् ॥ काकवश्यनन्तरं स्नानं कर्त्तव्यमिति पंचमदिनकृत्यम् ॥ अथ पष्ठदिनकर्म ॥ तत्र ॐ  
 दशलक्षाधमेधजन्यफलकामः फल्गुतीर्थे स्नानमहं करिष्ये इतिसंकरय्य ॐ फल्गुतीर्थे इत्यादि मंत्रेण स्नानत्वा तर्पणं कृत्वा पदे  
 पुश्राद्धानि कुर्यात् ॥ तत्र यद्यपि ब्रह्मविष्णुरुद्रकश्यपपदानामन्यतमपदे आरंभसमाप्ती कार्ये मध्येषु च नियम एव तथापि वायुपुराणा  
 न्तर्गत आयमाहास्यपाठक्रममनुसृत्य क्रमेण श्राद्धान्युच्यते ॥ तत्रादौ विष्णुपदसमीपगतत्वा ॐ आत्मनः सर्वपापनाशकामो विष्णुपद  
 दर्शनं करिष्ये इतिसंकरय्य ॥ अत्र विष्णुपदं दिव्यं दर्शनात्पापनाशनम् ॥ स्पर्शनात्पूजनमैव पितॄणां मुक्तिहेतवे ॥ इति मंत्रेण विष्णुपद

स्यदर्शनकृत्वा ॐ पितृविमुक्तिकामो विष्णुपूजनकारिष्ये इतिसंकल्प्य विष्णुं पंचोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः आत्मसहितसहस्रकु  
 लोद्धारपूर्वकविष्णुलोकनयनकामो विष्णुपदश्राद्धकारिष्ये इतिसंकल्प्य पार्वणं पिंडदानमांत्रवाश्राद्धकृत्वा कवचवाडनल इत्यावाह  
 नादि साक्षिश्रवणतंकुर्यात् ॥ १ ॥ ततोरुद्रपदे ॐ आत्मसहितकुलशतस्य शिवपुरनयनकामोरुद्रपदश्राद्धकारिष्ये इतिसंकल्प्यपूर्ववदुद्र  
 श्राद्धंकुर्यात् ॥ २ ॥ एवं ब्रह्मपदे कुलशतसमुद्धारपूर्वकब्रह्मलोकनयनकामो ॥ ३ ॥ दक्षिणाग्निपदे स्वस्यवाजपेययागफलसमफल  
 प्राप्तिकामः ॥ ४ ॥ गार्हपत्यपदे स्वस्यअश्वमेधयज्ञसमफलप्राप्तिः ॥ ५ ॥ आहवनीयपदे स्वस्यराजसूययज्ञफलः ॥ ६ ॥ सभ्याग्निपदे  
 स्वस्यज्योतिष्टोमयज्ञसमफलः ॥ ७ ॥ आवसथ्याग्निपदे स्वस्य सोमलोकप्राप्तिः ॥ ८ ॥ सूर्यपदे पंचशतकुलानां सूर्यपुरनयनकामः ॥  
 ९ ॥ कार्तिकेयपदे पितृणां शिवलोकनयनः ॥ १० ॥ इंद्रपदे पितृणामिंद्रलोकप्राप्तिः ॥ ११ ॥ अगस्त्यपदे पितृणां ब्रह्मलोकनयनः ॥  
 १२ ॥ चंद्रगणेशक्रौंचमातंगपदेषु पितृणां ब्रह्मपुरनयनः ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ कश्यपपदे पितृणां ब्रह्मपुरनयनकामः कश्य  
 पपदश्राद्धकारिष्ये ॥ १७ ॥ इति संकल्प्य सप्तदशमुपदेशु तत्तत्प्रलोद्देशेन श्राद्धानि कार्याणि तत्तद्वतानां पूजाचार्याः ॥ ततः दक्षि  
 लायामवोत्तरभागस्थायी गजकर्णिकार्या पितृणां स्वर्गनयनकामनया शुद्धोदकेन पितृतर्पणं पूर्वोक्तविधानेन कार्यम् ॥ ततः पितृणां ता  
 रणार्थं पदशिलोत्तरभागस्थमार्गसमीपस्थानां कनकेश्वरकेश्वरेश्वरनरसिंहवामनानां पंचोपचारैः पूजाकार्याः ॥ संन्यासिभिस्तु गयी  
 गन्वा विष्णुपदे देवस्थानमात्रं कार्यम् ॥ इति षष्ठ्यदिनकर्म ॥ अथ सप्तमदिनकृत्यम् ॥ तत्र फल्गुतीर्थे स्नानानि प्रातःकृत्यानि वन्ये गदा  
 लोलातीर्थपात्वा ॐ आत्मनः शुद्धये अक्षय्यस्वर्गप्राप्तये च गदा लोले स्नानमंकरिष्ये इति संकल्प्य ॥ गदालोलमिति ख्यातं सर्वेषामुत्तमोत्त

मम् ॥ गदालेले महतीर्थे गदाप्रक्षालनाद्धरेः ॥ स्नानं करोमितीर्थेऽस्मिन्नक्षय्यपदमाशुयाम् ॥ इति पठित्वा स्नानतर्पणं कृत्वा अँपितृणां तृप्तिं  
 ब्रह्मलोकवातिकामो गदालेले श्राद्धमहं करिष्ये इति संकल्प्य पूर्ववत् श्राद्धं पिंडदानमांत्रवकुर्व्यात् ॥ ततोऽक्षयवदेगत्वा तन्मूलसन्नि-  
 हिते आचारादुत्तरदिभागे अँपि णां ब्रह्मलोकप्रातिकामोऽक्षयवदच्छायायां श्राद्धं करिष्ये इति संकल्प्य अन्नैवैषूष्यवच्छादं कृत्वा  
 अँपितृणां ब्रह्मलोकनयनकामोऽक्षयतृप्तिकामश्च ब्रह्मकरिष्यतान् ब्राह्मणान्भोजयिष्य इति संकल्प्य त्रीन्विप्रान्भोजयेत् ॥ तदलाभे  
 एकंब्राह्मणमपि भोजयेत् ॥ ततः अँ पितृब्रह्मलोकनयनकामो वदेशदर्शनं करिष्य इति संकल्प्य ॥ वदेशं प्रति माहूयं पश्यन् ॥ एकाग्रं विव-  
 स्यात्रे यः शते योगनिद्रया ॥ बालरूपधरस्तस्मै नमस्ते योगशायिने ॥ इति प्रणम्य संपूज्य अँ सैसाखक्षश्चाय सव्यं पापक्षयाय च ॥ अक्षयाय  
 ब्रह्मदात्रे नमोऽक्षयवदायते ॥ इति मैत्रेयाक्षयवटनमस्कुर्यात् ॥ ततः शक्तौ सत्यां तत्र षोडशदानानि गयतीर्थपुरोधसे दत्त्वा वस्त्रगंधादिभिः  
 सम्यक् संपूज्य अँ पितृबंधनमो चनकामः प्रपितामहनमस्करिष्ये इति संकल्प्य अँ कलौ माहेश्वरालोका येन तस्माद्दाधर ॥ लिंगरूपो  
 भव त्वंच वेदे श्रीप्रपितामहम् ॥ १ ॥ इति मैत्रेण तं नमस्कुर्यात् ॥ इति सप्तादिनात्मकाय कार्त्तिकृत्यम् ॥ ६४ ॥ ६४ ॥ ६४ ॥  
 अथ मासेसाद्धमासे वा वासेतु अनियतदिनकृत्यानि लिख्यन्ते ॥ तत्रादौ पूर्वदिने उपोष्य पराहे प्रातर्गयास्थगयत्रीसुमुखस्थं गायत्रीतीर्थं  
 गत्वा तत्कुले प्रातः स्नान्वा प्रातःसंध्योपासनं कृत्वा तर्पणविधाय अँ अद्य कुलब्राह्मण्यतानयनकामो गायत्रीतीर्थं श्राद्धमहं करिष्ये इति  
 संकल्प्य पूर्वोक्तप्रकारेण संपिंडकं श्राद्धं कुर्यात् ॥ ततः सावित्र्याः पुरतः समुद्यंत नमस्करतीर्थं मध्याह्ने यथाविधि स्नान्वा तत्रैव कुलशत  
 स्वर्गनयनकामनया मध्याह्ने संध्योपासनतर्पणश्राद्धानि कार्थ्याणि ॥ ततः एवमेव सरस्वत्याः पुरतः सायाह्ने प्राच्यारसरस्वत्यां स्नान्वा

कुलसहस्रसुत्तिकामनया सायसंध्योपासनतर्पणश्राद्धानि कार्याणि ॥ एवमेव धर्मशिलायां, लेलिहाने, भरताश्रमे, मुंडपुष्टे, गदाधरसमीपे, आकाशगंगायां, गिरिकर्णमुखेच क्रमेण कुलशतब्रह्मलोकनयनकामनया श्राद्धं पिंडदानमात्रंवा कार्यम् ॥ ततः ॐ त्रिसप्तकुलोद्धारकामो वैतरण्यां स्नानमहं करिष्ये इति संकल्प्य स्नानं तर्पणं च कृत्वा पूर्वोक्तं श्राद्धं कुर्यात् ॥ ततः यमद्वारे महाचारे यासावैतरणीनदी ॥ तामहं तर्चयिष्यामि कृष्णांगप्रदद्विभाम् ॥ इति मंत्रेण तत्र गोदानं कार्यम् ॥ तदथा ॥ यासावैतरणीनाम नदीत्रलोक्यविश्रुता ॥ सावतीर्णमहाभागा पितृणां तारणाय च ॥ १ ॥ इति तस्मिन्वांगपुरतः संस्थाप्य ॐ गवेनमः इति त्रिः संपूज्य ॐ ब्राह्मणाय नमः इति ब्राह्मणं त्रिः संपूज्य गां ग्रेह्य कुर्यात् तिलजलान्यादाय ॥ ॐ अद्य त्रिसप्तकुलोद्धारणकाम इमां गारुद्रदेव्याम् अमुकगोत्रायामुक्ताश्रमे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रदं इति दद्यात् ॥ ततो दाता ॐ अद्य कृतं तद्दानं प्रतिष्ठार्थं मिदं हिरण्यमग्निदेव्यममुकगोत्रायामुक्ताश्रमे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रदं इति दक्षिणां दद्यात् ॥ गृहीता च गृहीतसुवर्णो गोपुच्छगृहीता यथाशास्त्रम् ॐ कोदान्काम इत्यादिकामस्तुतिं पठेत् ॥ ततः ॐ अद्यापि तु स्वर्गलोकनयनकामो देवर्षिः पिंडदानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य पूर्वोक्तं तर्पणम् पिंडदानमात्रंवा श्राद्धं कुर्यात् ॥ एवमेव गोप्रचारे घृतकुल्यामधुकुल्यां गदालाले कोटितीर्थे रुक्मिणीकुंडे च पितृस्वर्गकामनया श्राद्धं पिंडदानमात्रं वा कार्यम् ॥ ततः ॐ अद्यापि तृतारणकामो माकड्ये धृक्कोटीधरयोर्नमस्कारं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य तयोर्नमस्कारं कुर्यात् ॥ ततः पितामहसन्निहितपारिजातवनस्थपांडुशिलायां पितृणामक्षय्यतृप्तिकामनया श्राद्धं पिंडदानमात्रंवा कार्यम् ॥ एवमेव घृतकुल्यामधुकुल्यादौ विक्रामहानदी सरस्वती चेतितत्सो यत्र पांडुशिलयामिलिताः सा मधुसूता तस्यां स्नानतर्पणे अश्वमेधफलके ॥

आद्रचकुलसहस्रस्यनरकाद्युद्धारपूर्वकविष्णुपुरनयनफलकम् ॥ एवं पितामहादक्षिणस्यामहानद्यां दशश्वेधहंसतीर्थे प्रणमेत् ॥ ततः  
 उद्यंतपर्वतसमीपस्थे मखकुंडेऽमुक्तिकामनयास्नानं पितृवृत्तिकामनयातर्पणश्राद्धेकार्यम् ॥ संगमे तारकेश्वरप्रणामे पितृस्वर्गः ॥ अश्वमेध  
 फलकामनया गयाकूपे श्राद्धम् ॥ अत्रपतितदुर्मरणादिमृतानामपिस्वर्गकामनया वर्षोत्तरश्राद्धंकार्यम् ॥ ततः पितृसंतारणकामनयाभस्म  
 कूपे भस्मनास्नानम् ॥ गयात्रायामध्येसुषुम्णायां महाकालीसमीपे ॐ त्रिः सप्तकुलसमुद्धारकामः सुषुम्णायांश्राद्धमहंकारिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य  
 श्राद्धंकार्यम् ॥ ततो गृध्रवदोत्तरभागस्थेविसिष्टाश्रमेवसिष्टतीर्थे स्नात्वा वसिष्ठेश्वरंनमस्कृत्य धेनुकारण्यजलाशयेस्नात्वाकामधेनुप्रणम्य  
 पितृब्रह्मलोकनयनकामनया कामधेनुपदे श्राद्धंकार्यम् ॥ एवं कर्दमाले गयानामौ मुंडप्रभुसमीपेचस्नानश्राद्धेकार्यम् ॥ ततः फल्गुचंडी  
 श्मशानक्षिर्मांगलादीनांपितृस्वर्गकामनयानतिपूजनेकार्यम् ॥ ततो गयागजे गयादित्ये गायत्र्यां गदाधरसमीपे गयायां गयाशिरसि  
 चेतिगकारवतिस्थानषट्के मुक्तिकामनया पूजापितृश्राद्धादिकंचकार्यम् ॥ ततो गयायां यत्रकापियदाकदाचित् ॥ ॐ एकविंशतिकुलो  
 द्धारकामनया वृषोत्सर्गमहंकारिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य वृषोत्सर्गःकार्यः ॥ ततो गयायामादिगदाधरध्यात्वापितृणां कुलशतस्यनरकाद्युद्धार  
 ब्रह्मलोकनयनकामनया श्राद्धपिंडदानमांत्राकार्यम् ॥ भस्मकूटस्थितं जनार्दननत्वातसमीपे वामजनुनिपात्यात्मनो विष्णुलोकका  
 मनयापितृणांश्राद्धकृत्वा तंचषोडशोपचारैः पंचोपचारोत्सर्गपूज्यदध्योदनं नैवेद्यंत्वातच्छेषणतिलविना ॐ विष्णुलोककामनया अपुत्र  
 स्यासंभावितपुत्रस्यमवाऽयस्यमरणोत्तराक्षय्यसुखप्राप्त्यर्थमेभिर्मन्त्रेजनार्दनहस्तेपिंडदानमहंकारिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ एषपिंडो मयादत्त  
 स्तवहस्ते जनार्दन ॥ गयाशीर्षेत्यादयो मर्ह्यपिंडोमृतेमयि ॥ १ ॥ यस्तुपिंडोमयादत्तो यमुद्दिश्यजनार्दनं देहिदेवगयाशीर्षे तस्मैतस्मैमृतवतु



तम् ॥ २ ॥ जनादननमस्तुभ्यं नमस्तोऽपितृहृदिणे ॥ पितृपित्रेनमस्तुभ्यं नमस्ते सुत्तिहेतवे ॥ ३ ॥ गयायापितृहरेण स्वयमेवजनादनः ॥  
तद्वृष्टपुंडरीकाक्षं मुच्यतेचऋणत्रयात् ॥ ४ ॥ एतैर्मंत्रजनादनंवा महस्ते पिंडदद्यात् ॥ (अग्निपुराणेतु पिंडत्रयदानमुक्तम्) तत्रत्योये  
मंत्रः ॥ त्रयःपिंडा मयादत्तास्तवहस्तेजनादनं ॥ पालोकगतेमह्यमक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ इत्येकमंत्रपठित्वापिंडत्रयं दद्यात् ॥ तत  
स्तदधोभागेपुंडरीकाक्षमर्चयेत् ॥ ॐ ऋणत्रयमुक्तिकामनयास्वर्गकामनयाच पुंडरीकाक्षस्यदर्शनपूजनकारिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॐ नम  
स्तेपुंडरीकाक्ष ऋणत्रयविमोचन ॥ लक्ष्मीकान्तनमस्तेऽस्तु नमस्तोऽपितृमोक्षद ॥ १ ॥ इतिमंत्रेणदर्शनकृत्वासंपूजनंतिष्ठति ॥  
तदधोभागेभीमगयास्थलमुपगत्यपितृमुक्तिकामः श्राद्धपिंडदानंवाकुर्यात् ॥ ततोमहानदीपरपागतभरताश्रमसन्निधौमहानद्यांस्नात्वा रामेश्वरं सीतासहितंरामं च ॐ रामराममहाबाहो दे  
वानामभयंकर ॥ त्वानमस्येऽवदेवंशं ममनश्यतुपातकम् ॥ इतिमंत्रेणनत्वातत्रस्थरामपदे ॐ पितृकुलशतसहितस्यात्मनोविष्णुर  
गमनकामोराशेशत्रिधनारामपदेऽश्राद्धमहंकरिष्येइतिसंकल्प्यश्राद्धपिंडदानमात्रंवाकुर्यात् ॥ ततोधर्मशिलादक्षिणहस्तस्थापितकुंड  
पर्वतेपितृणां ब्रह्मपुरनयनकामनयाश्राद्धंकार्यम् ॥ धर्मशिलावामहस्तस्थापितेऽव्यन्तपर्वतेपितृणां ब्रह्मलोकप्राप्तिकामनयाश्राद्धम् ॥  
तत्रैवाद्यन्तकुंडेमध्येस्नात्वाभध्याह्नसंध्यापासनं ततः स्वस्यकोटिजन्मवधिनदवचवेदेदङ्गपारगविप्रत्वकामनया तत्रत्यसामित्रीषु  
जाकार्यम् ॥ ततःअगस्त्यपदस्नान्वातत्रश्राद्धं कृत्वा ॐ जन्मनिवारणपूर्ववक्रह्णभावप्राप्तिकामो ब्रह्मयानिप्रवेशनिर्गमवहंकरिष्ये ॥ इति  
संकल्प्य ॥ ब्रह्मयानिप्रविश्यततोनिर्गमंकार्यम् ॥ ततो गंगायकुमारं नमस्कृत्य पितृणांचंद्रलोकप्राप्तिकामनया सोमकुंडेस्नानतपणश्राद्धानि

कार्याणि ॥ ततः ऋणमोक्षकामनया अभ्यस्योऽसि यमदूतोऽसि वायसोऽसि महाबल ॥ सप्तजन्मकृतपापं बलिभुक्त्वा विनाशय ॥ १ ॥ इति मंत्रेण काशिलायां काकबलिदानम् ॥ ततः स्वर्गप्राप्तिपूर्वकं ब्रह्मलोकगमनकामनया स्वर्गद्वारेशस्य प्रणामः ॥ पितृनिष्पापतार्थमाकाशगंगायां श्राद्धकार्यम् ॥ धर्मशिलादक्षिणहस्तगतो भस्मकूटद्रौ स्वर्गप्राप्तिकामनया तत्र तस्य भस्मना स्नानम् ॥ अक्षयवटसमीपे वटेश्वरः प्रपितामहश्च तदग्रे रुक्मिणीकुण्डं तस्य श्रिततः कपिलानदीं तत्पारिकपिलेश्वरं श्रैते पूज्याः ॥ कपिलायां सोमायागे स्वर्गकामनया स्नानश्राद्धकार्यं स्वर्गकामनया माहेश्वरीकुण्डसमीपे मंगलगौरीपूज्या ॥ धर्मशिलादक्षिणदक्षिणदक्षिणस्थानितप्रेतकूटद्रौ पितृमुक्तिकामनया श्राद्धकार्यम् ॥ तत्र तस्य एव प्रेतकुण्डे पितृणां प्रेतस्वमुक्तिकामनया श्राद्धादिकार्यम् ॥ पितृणां ब्रह्मपुराणैरिव पुराणैः शिवपुराणैः शिवकामनया गृध्रेऽश्वदर्शनम् ॥ स्वर्गकामनया तत्र तस्य गृध्रेऽश्वदर्शनम् ॥ धर्मशिलादक्षिणभागस्थ गृध्रकूटगिरौ शिवपुराणैः शिवकामनया गृध्रेऽश्वदर्शनम् ॥ स्वर्गकामनया तत्र तस्य गृध्रेऽश्वदर्शनम् ॥ पितृलोकप्राप्तिकामनया तत्र तस्यां गृध्रहारां श्राद्धम् ॥ तत्र तस्यां माहेश्वरीधारायां च पितृस्वर्गकामनया श्राद्धम् ॥ ब्रह्मलोकप्राप्तिकामनया मूलक्षेत्रसरसि स्नानम् ॥ स्वस्य शिवत्वं कामनया ऋणमोक्षेश्वरपापमोक्षेश्वरपापमोक्षेश्वरदर्शनकार्यम् ॥ धर्मशिलायामुत्तरस्थ दिक्पालस्थितस्य गजहूविधिश्चे शस्यनिजमुक्तिपितृशिवपुराणैः शिवकामनया दर्शनकार्यम् ॥ स्वर्गकामनया स्नानात्वा गायत्री गायत्र्या दित्यो दर्शनम् ॥ पितृतारणकामनया तत्पवनस्थ ब्रह्मदर्शनम् ॥ पितृणां ब्रह्मपुराणैः शिवकामनया गंगानामौ श्राद्धपापनाशकामनया सुदृष्टाद्रौ वारद्वारौ दर्शनम् ॥ कौचपादादिगतजलाशये पितृमातामहेश्वरकुलानां स्वर्गकामनया श्राद्धकार्यम् ॥ ततो गंगया प्रदक्षिणा कार्या ॥ ततो वितामुसारेण गदाधरं संपूज्य ॥ अङ्गदाधरकलिगतकल्मषापहं गंगया गतं विदितुं गुणातिगम् ॥ गुहागतं गिरिवरहे गोपितं सुरार्चितं वंदमं न मा भितम् ॥ १ ॥ शुभश्रियं त्रिदशगणादिभ्यः श्रियं

यशःश्रियंदिनिभयदारणश्रियम् ॥ कलागतंकलिकलमर्दनाश्रयं दृढादृढपरिवृढगदशक्तिभिः ॥ २ ॥ विदेहकंकणकलाविवर्जितं विय  
नमरुद्धिमकरवारिद्वेषितम् ॥ गदाधरंध्वनिमुखवर्जितपरं नमाम्यहंपरममनादिदेवम् ॥ ३ ॥ मनोगतंमतिगतिवर्जितंत्वजं शमाभक्तश्रुति  
शिरसिस्थितंबुधम् ॥ चिदात्मकंकलिगतकारणातिगं गदाधरंहृदयगतंनमाम्यहम् ॥ ४ ॥ इतिब्रह्मकृतंनस्तोत्रेण ॥ अ०अव्यक्तरूपोयेदेवो  
मुंडपृष्ठाद्रिरूपकृत ॥ फल्युतीर्थादिरूपेण तंनमामिगदाधरम् ॥ १ ॥ व्यक्तरूपोहियादेवो जनार्दनस्वरूपतः ॥ मुंडपृष्ठस्वयंहास्ति  
तंनमामिगदाधरम् ॥ २ ॥ शिलायांब्रह्मरूपिण्यां स्थितंब्रह्मादिभिःसुरैः ॥ पूजितंसत्कृतदेवस्तंनमामिगदाधरम् ॥ ३ ॥ महादेवंचजगतो  
व्यक्तस्यैकंहिकारणम् ॥ अव्यक्तज्ञानरूपतं नमाम्यादिगदाधरम् ॥ ४ ॥ यंचदृष्ट्वातथास्पृष्ट्वा पूजयित्वाप्रणम्यच ॥ श्राद्धदोब्रह्मलोकाति  
स्तंनमामिगदाधरम् ॥ ५ ॥ देहेन्द्रियमनोबुद्धिप्राणाहंकारवर्जितम् ॥ जाग्रत्स्वप्नविनिमुक्तं नमाम्यादिगदाधरम् ॥ ६ ॥ नित्यानित्यविनि  
मुक्तं सामान्यानंदवर्जितम् ॥ तुरीयंज्योतिरात्मानं तंनमामिगदाधरम् ॥ ७ ॥ इतिरुद्रकृतंनचस्तवेनस्तुवीत ॥ ततः अ०आगतोस्मिगया  
देवं पितृकाय्यगदाधर ॥ त्वमेवसाक्षी भगवन्नृणोऽहमृणत्रयात् ॥ इतिप्राथयेत् ॥ एवंगयात्रां कृत्वास्वाह्मगत्यकृतायगयायात्रायाःपरि  
पूर्णकामोगणेशस्वेष्टदेवतानांपूजनां विधायप्रभृतदृतात्रेनवृद्धिश्राद्धंकुर्यात् ॥ ततोब्रह्मणान्मोजयित्वादिशिणाभिस्तान्स्तोष्यदृष्टैःसहस्वयभो  
जनंकुर्यात् ॥ अतस्तच्छ्रीगदाधरायनमः ॥ इतिवाय्यश्रिप्राणवाचस्पतिमिश्रादिकृतपद्धत्युक्तगयाश्राद्धवर्जितःसमाप्त ॥ इतिश्रीबीकानेर  
विषयांतैतत्श्रीरत्नगढनगरनिवासिनाश्रीवसिष्ठकुलोद्देशश्रीरामकृष्णपौत्रेण श्रीकस्तूरिचंद्रमुननाश्रीमहादेवभक्तवाजसेयिनागौडपण्डित  
श्रीचतुर्थीलालशर्मणाविरचितेगौडीयश्राद्धप्रकाशेमहानिबंधेषुपद्धतिखंडस्यपूर्वधचतुर्थप्रकरणंसमाप्तम् ॥ ४ ॥ समाप्तोऽयंपद्धतिखंडस्यपूर्वार्द्धः ॥

अथ प्रेतवृत्तिकरः पद्धतिकल्पः ॥ ॥ अत्रमरणसमयादरभ्यसंवत्सरिकान्तकर्मउच्यते ॥ तत्रतावत्पुत्रादिरासन्नमृत्युं पित्रादिकंज्ञात्वा  
 पापानुसारेण षडब्दं वाच्यब्दं साद्विब्दंवा प्राजापत्यं वा तत्प्रत्याप्नायाश्चप्रतिप्राजापत्यंगायत्र्ययुतजपं वा सहस्रगायत्र्यातिलहोमं धेनुदानं  
 पादचरणे तीर्थयात्रा वाद्वादशब्राह्मणभोजनं सुवर्णहय्योनिष्कं तद्वद्वा गोवृषमूल्यं यथाशक्त्यनुरूपंप्रायश्चित्तं तद्वाराकारयेत् ॥ तद  
 शक्तौस्वयंवाकुर्यात् ॥ तत्रप्रयोगः ॥ गंगादितीर्थगत्वा यथाविधि स्नात्वाशुद्धेऽशुद्धवाससीपरिधायाबद्धशिरसःकृततिलकःसर्पवित्रकरःपूर्वाभिमुख  
 खरुपविश्या ॥ आचम्यप्राणानायम्यादेशकालौसंकीर्त्यसकलपातकनिवृत्तिकामःश्रीविष्णुपूजनपूर्वकंदेहदुःखद्वयार्थप्रायश्चित्तमहंकरिष्ये ॥ इति  
 संकल्प्य ॥ ॐ सहस्रशीर्षीपुरुष इतिपुरुषसूक्तेनदेदन्यासंकृत्वाषोडशोपचारैःश्रीमहाविष्णुसंपूज्याविप्रपूजाकुर्यात् ॥ ततःपुनर्देशकालौसंकी  
 र्त्य ॥ ॐ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहंमजन्मप्रभृतिअवदिनंयावत् ज्ञाताऽज्ञातकामाऽकामसकृदसकृत्कार्यिकर्वाचिकमानसिकसंसर्गिक  
 स्पृष्टाऽस्पृष्टभुक्ताऽभुक्तपीताऽपीतमहापातकोपपातकसंस्कारणमलिनीकरणऽप्राचीकरणजातिप्रशकरणप्रकरणानां सकलपातकानां  
 निरासार्थंश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंमुमुक्षुप्रायश्चित्तमुक्तप्रायश्चित्तमुक्तप्रायश्चित्तमुक्तप्रायश्चित्तमुक्तप्रायश्चित्तमुक्तप्रायश्चित्तमुक्तप्रायश्चित्तमुक्तप्रायश्चित्त  
 कुर्यात् ॥ अस्मिन्दिनेउपवासः ॥ अशक्तस्यहविष्यान्नेनक्तव्रतम् ॥ ततोदशदानानिकुर्यात् ॥ यथा ॥ गोभूतिलहिरण्याज्यवासावान्यगुडा  
 निचारौषध्वणमित्याहुःशदानान्यनुकृमात् ॥ १ ॥ एतानिदशदानानि विप्रेभ्योयथाशक्तिदद्यात् ॥ निर्द्धनश्चेत्तीर्थयात्रादिकुर्यात् ॥ ततो  
 वैतरणीधेनुदानम् ॥ तद्यथा ॥ देशकालौसंकीर्त्य ॥ ममयमद्वारस्थितैवैतरणीनद्याः सुखोत्तारणार्थं वैतरणीधेनुदानंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य

द्रोणप्रमाणकार्पासशिखरोपरिताम्रपात्रे हेमयमंथाप्य षोडशोपचारैः संपूज्य तत्रक्षुद्रुण्डमयीनां का पट्टमुत्रेण बद्धतत्रस्थंकृष्णधनुसवत्सप्तं  
 पूज्यब्राह्मणवृत्वा संपूज्यप्राङ्मुखोऽपुच्छंसितलजलधुपशुद्धीत्वा देशकालौ संकृत्य ॐ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं ममपरलोके वैतरणीतरणार्थमि  
 मां गं सवत्समुत्पन्नं शृङ्गारोऽयमुकशर्मापनीय पात्रपैतलदेहेन कृष्णवस्त्रधुपसमाधान्य च्छत्राणानुपमस्कृत्यात्म अमुकगोत्रायामुकशर्माणे ब्राह्म  
 णाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ इत्युक्त्वा विप्रहस्तजलक्षिचामत्रा पठेत् ॥ अयमद्वारे महाधारे कष्टवैतरणी नदिमि ॥ तत्कामोददाम्यतानुभ्यवैतरणी  
 च गाम् ॥ १ ॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठ भूदेवपाङ्क्तिपावन ॥ सदक्षिणमया तुभ्यं दत्तावैतरणी चणौः ॥ इति प्रार्थ्या ॐ अब्रह्मैतत्तद्रेनुद नप्रतिष्ठासि  
 द्यर्थमिदं हरण्यमग्निदैवव्यमुकगोत्रायामुकशर्माणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ इति सुवर्णदक्षिणां दत्त्वा नमस्कृत्य प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ ततः  
 ॐ धेनुकेतवं प्रतीक्षस्व यमद्वारे महाभये ॥ उत्तितीषुरदं वि वैतरण्ये नमोनमः ॥ इति नवा यमप्रतिमादि सर्वनिवघ्नं अनुगत्वा विमृजेत् ॥  
 स्वयमशक्तो पुत्रादिद्वारा वा कारयेत् ॥ इति वैतरणीधेनुदानम् ॥ अथ महाष्टोदानानि ॥ तिला लोहं हिरण्यं च कार्पासं लवणं तथा ॥ सप्तधान्यं  
 क्षितिर्गवो महादानानि चाष्टवै ॥ १ ॥ तत्र विधिः ॥ देशकालौ संकृत्य ॥ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं इमानि तिलादीन्यष्टमहादानानि सोमादि  
 देवतानि सदक्षिणां नि तत्तत्प्रदानं फलावाप्तये श्रीविष्णोः प्रीतिये नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽहं संप्रददे ॥ इति संकल्य यथाचारं दद्यात् ॥  
 ततः ॥ शक्तौ सत्यां तिलपूर्णताम्रपात्रं मोक्षधेनुम् ऋणधेनुम् पापधेनुम् उत्कान्तिधेनुं च दद्यात् दुर्मरणमृते प्रायश्चित्तं संकल्य कुर्यात् ॥  
 अथ दुर्मरणनिमित्तप्रायश्चित्तानि ॥ शृङ्गि, दंष्ट्रि, नखि, शस्त्रघात, सर्प, जलेमग्न, कंठग्राह, विषभक्षण, अग्निदग्ध, विप्रमारीत, आत्मघात,  
 चांडालहस्तभक्षण, चौरशत्रुस्तेछादिना मारीत, वृक्षारोहणादि, बंदिग्रहभरण, पाशभरण, विपूचिकाभूतशराकिनीक्षेत्रपालादियत्र

हेतुस्तः, गजशकटादिभिर्हतः, कुष्ठश्यापस्मारभंगदरजलोदराडमालापांडुरोगादिमहारोगैः पीडितमरण, मूत्रपुरीषस्थाशौचमरणाद्यनेकदुष्टमरणान्यतमरणे कृच्छ्रचंद्रायणद्वयम् ॥ अथवा पंचदशप्राजापत्यं शतौसत्यां प्रतिप्राजापत्यमेकैकांवा गाम् ॥ अथवा प्रतिप्राजापत्यमथुतगायत्रीजपं प्राणायामशतद्वयंवा तीर्थयात्रायाजनं ब्राह्मणभोजनादिद्वारावाञ्छुद्धिं संपाद्य दहादिकं कुर्यात् ॥ एवमेव ऊर्ध्वोच्छिष्टाधोच्छिष्टोभयोच्छिष्टास्पृष्टास्पृष्टे खट्वन्तरिक्षमरणे चांडालकन्यादस्पृशे चांडालकन्यादस्पृशे गत्यन्तरितेशवेकमिकीटाद्वे दोषशतस्य नुसारं त्रीन्पट् द्वादश पंचदश वाप्राजापत्यानि चांद्रायणत्रयं वा तत्प्रत्याग्रायभूतवेत्वादिकं प्रायश्चित्तं संकल्प्य ॥ सूतकान्ते कुर्यात् ॥ एवं कर्त्तव्यधिकाराभावव्यथाराक्तिकृच्छ्ररूपप्रायश्चित्तप्रत्याग्रायेन आत्मनः शुद्धिं संपाद्य दहनं कुर्यात् ॥ तत्रैवं प्रयोगः ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सर्पदष्टमृतस्य सर्पदष्टमरणजनितपापनिवृत्त्यर्थं दहाद्यौर्ध्वदहिकमभयोग्यताप्राप्त्यर्थं पंचदशप्राजापत्यानां प्रत्याग्रायेन प्रतिप्राजापत्यमथुतगायत्रीजपं ब्राह्मणभोजनादिद्वारावाप्रायश्चित्तं सूतकान्ते करिष्यामि इति मनस्युद्दिश्य सूतकान्ते कुर्यात् ॥ एवमेव पूर्वोक्तशृंग्यादिदुर्मरणेषु ज्ञेयम् ॥ एवं पुत्रादिमृतस्य दक्षिणपार्श्वे दक्षिणामुख उपविश्य देशकालौ संकीर्त्य ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य ऊर्ध्वोच्छिष्टाधोच्छिष्टोभयोच्छिष्टास्पृष्टास्पृष्टमरणखट्वन्तरिक्षमरणादिजनितदोषप्रत्यवायपरिहारार्थं पंचदश द्वादश पट्त्रात्र वा कृच्छ्रात्र यथाशक्ति प्रायश्चित्तमुकप्रत्याग्रायेन सूतकान्ते करिष्यामि ॥ इति संकल्प्य सूतकान्ते कुर्यात् ॥ इति दुर्मरणप्रायश्चित्तम् ॥ अथमरणसमय कृतम् ॥ तत्र तावत्स्वयं गोमये पलितायामौ तिलकुशंगंगादितीर्थज ऊर्णवर्षाद्वा द्रियतायाम् उपविष्टो दक्षिणशिरःशायितो वा गोपी चंदनादि कृततिलकः श्रीविष्णुस्मरन् ईशावास्यं पुरुषसूक्तं गीतं सहस्रनामादिस्तोत्राणि पठेत् शृणुयाद्वा ॥ तदथा ॥ देशकालौ संकीर्त्य

मम अमृतत्वप्राप्त्यर्थं पुरुषभूतस्तोत्रादीनां पाठं श्रवणं वा करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ श्रोतुं संकल्पः प्राप्तौ ॥ अस्यामुक्तशर्म  
 णोऽमृतत्वप्राप्तये अमुकं श्रावयिष्ये इति संकल्प्य पुरुषभूतम् ईशावास्यमुपनिषद्वाग्वतानि गीतासहस्रनामादीनि पुण्यस्तोत्राणि रामकृष्ण  
 माधवनाथणादिनामानि च श्रावयेत् ॥ ततः प्राणोत्क्रमणसमये पुत्रादिराधिकारी गंगादितीर्थसमीपे अथवा स्वगृहे तुलसीशालग्रामसमी  
 पे गोमथापलितायामूढौ गण्डिकादिशुद्धजलेन संस्नाप्य ॥ अहोरात्रैस्तुच्छ्वासासमीपपरिधाय नूतनशङ्खोपवीतपुष्पमालारुद्रक्षधात्रीतुलसीप  
 त्राद्यौलंकृत्य चंदनगंगाभृत्तिकादिनाऽजुलेपयेत् ततः पुत्रादिः स्वात्मस्थापिताशिरसः अपगतप्राणस्य मुखे नासिकादये चक्षुद्वये श्रोत्रद्व  
 ये च पंचचक्षुःशक्तिमुखा निवा तदभावे घृती बिंदून्वाक्षित्वा वस्त्रेणाच्छाद्य तद्वस्त्राभूमौ तिलान् विकीर्य तत्र उदक्षिरसं स्थापयेत् ॥ अथ  
 प्राणोत्क्रमणानन्तरं कर्त्ताऽन्ये च कनिष्ठपुत्रादयो दक्षिणमुखाः स्वनवक्त्रोपस्थवज्रजलेमानिवापयेयुः ॥ कर्तुं व्यतिरिक्तानां दशमेहनिवाप  
 नम् ॥ ततो वपनानन्तरं स्नात्वा ॥ अहोरात्रैस्तुच्छ्वासासमीपपरिधाय ( गतामुघृतेनाभ्यज्य ) नूतनजलशुक्लं कुंभे ॥ अंगयदीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः  
 शिलोच्चयाः ॥ कुरुक्षेत्रं च गंगां च यमुनां च सारिद्धराम ॥ कौशिकं च द्रुमागां च सर्वपापप्रणाशिनम् ॥ भद्रावकाशां सरयूं गंडकांतमसां तथा ॥ विणवं च  
 वाहं च तीर्थं पिंडारं कंतथा ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि चतुरः सागरांस्तथा ॥ एतानि मनसा ध्यायञ्जले सर्वतीर्थान्यवाहते न जलेन शवं स्ना  
 प्या ॥ अहतवस्त्रपरिधानं गंगोदकमिथितं चंदनादिना सर्वान्गप्रेक्षणं पुष्पैरलंकरणं च कृत्वा श्लुचिदेशे विहितकामुश्रिता चित्ता चित्तायामास्तीं कुशायामु  
 त्तानं शवं स्थापयेत् ॥ अथ पिंडप्रयोगः ॥ पुत्रादिपुत्रसंख्यादिकृत्वा मृतदक्षिणपार्श्वे दक्षिणाभिमुख उपविश्य देशकालौ संकीर्य ॥ अद्यामुक्तगो  
 त्रस्यामुक्तप्रेतस्य प्रेतत्वं निवृत्त्या उत्तमलोकाप्राप्त्यर्थमौध्वदिकं करिष्ये इत्युक्त्वा दक्षिणां प्रकुशत्रयमास्तीर्य ॥ अद्यामुक्तगोत्रामुक्तप्रेतमत्रावनेनि

क्ष्वेतमयादीयतेतवोपतिष्ठतामित्यवनेजनन्दत्वा॥यवादिचूर्णेनिमित्तं पिंडगृहीत्वाअद्यामुक्रोगोत्रअमुकप्रेतमृतिस्थानेशवनिमित्तब्रह्मदेवतोवा॥  
 एषोर्तोपिंडोमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् इत्येकपिंड प्रत्यवनेजनचदत्त्वा प्रेतवस्त्रोपिंडबद्धगृहद्वारानयेत्॥ तत्रपूर्ववत्कुशस्तरणमवनेजनचदत्त्वा  
 ॥ अद्यामुक्रोगोत्राऽमुकप्रेत द्वारदेशेपांथनिमित्तविष्णुदेवतोवा एषोर्तोपिंडोमयादीयतेतवोपतिष्ठतामितिपिंडदद्यात् ॥ अथानन्तरंपुत्राऽनुजाद  
 यश्च कृतापसव्यामुक्तेशाबालपुरःसराः मृन्मयादिस्थालिस्थं यथाचारं लौकिकाग्निवर्षिडादिकंचगृहीत्वा यमगाथांगायन्तः शर्वंप्रच्छा  
 दितमुसंग्रहशिरसमूर्धमुलम् अरण्येश्वरानदेशंप्रतिनयेयुः॥ अथचत्वरैवेचरनिमित्तपिंडदानमातत्रदक्षिणग्रंथकुशत्रयास्तरणमवनेजनच  
 कृत्वा ॥ अद्यामुक्रोगोत्राऽमुकप्रेत चत्वरैवेचरनिमित्तएषोर्तोपिंडोमयादीयतेतवोपतिष्ठतामितिपिंडप्रत्यवनेजनचदद्यात् ॥ एवमेवग्रामश्वमशा  
 नयोर्मध्येविश्रामे ॥ अद्यामुक्रोगोत्रासुकप्रेतविश्रान्तौ भूतनाम्ना रुद्रदेवतोवा एषोर्तोपिंडोमयादीयतेतवोपतिष्ठतामितिविश्रामपिंड  
 दद्यात् ॥ ततः सर्वेबांधवाः अप्रावरणा वृद्धादायः प्रेतमनुगच्छेयुः ॥ मृतद्विजसज्जतियेषुतिष्ठसुनशूद्रानयेयुः ॥ नमृतंशूद्रद्विजश्च ॥  
 अनाथविप्रप्रेतनिर्हरणपदपदेऽश्वमेधयज्ञसमफलम् ॥ द्विजसंस्कारोपयुक्ताग्निवृणकाष्टवृतादिशूद्रानयनंनिषिद्धम् ॥ द्विजशवंशूद्रानस्पृ  
 शेत् ॥ स्वगृहमृते ब्राह्मणोनगरपश्चिमद्वारेण क्षत्रियः उत्तरेण वैश्यः पूर्वेण शूद्रोदक्षिणनद्वारेणनयः ॥ अथश्वमशानदेशंप्राप्यशुचिदेशं शनै  
 र्दक्षिणशिरसंशवंस्थापयेत् ॥ ततश्चितास्थाने वायुनाम्ना पिंडदानम् ॥ तत्रादौकुशत्रयंधृत्वा ॥ अद्यामुक्रोगोत्र अमुकप्रेत अत्रावनेनिक्ष्वेतो

१ (यमस्मृतौ) यस्मान्नयति शूद्राग्निं तृणकाष्ठहवीषि च ॥ प्रेतत्वं च सदा तस्य स चावर्गेण लिप्यते ॥ (देवलः) चाण्डालाग्निरेमेध्याग्निः स्मृतिकाग्निश्च कर्हिचित् ॥  
 पतिताग्निश्चिताग्निश्च न शिष्टग्रहणोचितः ॥ (मनुः) असर्गो ह्यहनिः सा स्याच्छूद्रसंपकदूषिता ॥ इति ॥ अत्र प्रायश्चित्तं कृच्छ्रत्रयम् ॥



मयादीयेतवोपतिष्ठतामित्यवनेज्य ॥ अद्यामुक्रगोत्राऽमुक्रप्रतचित्तास्थानेवायुनिमित्तकयमद्वतोवा एषोपिंडमयादीयेतवोपतिष्ठता  
 मिर्तिपिंडं दत्वा प्रत्यवने जनं दद्यात् ॥ ततः खननसंश्रवनादिभिः शोधनोपायैर्भूमिं संशोध्य गोमयादकेन प्रोक्ष्य तत्र गंगादीनि तीर्थानि मनसा  
 ध्यात्वा तदुपरि कुशतिलानस्तीय तत्र चंदनादियज्ञिककण्डैः श्रीफलदिग्भिश्च दहनपयसिं दक्षिणोत्तरायतं दारुचयकारयेत् ॥ ततश्चिन्ताकाष्ठं  
 जलेन प्रोक्ष्य तत्र दक्षिणशिरसं सवस्त्रमुत्तानमुखं शोचितां निदध्यात् ॥ ततः शिरः प्रदेशं शुद्धमूर्ध्नि दत्त्वा पंच संस्कारान् संपाद्य तत्र क्र  
 व्यादं संज्ञकमग्निं प्रज्वाल्य ॥ क्रव्यादाय नम इति गंधमाल्यादिभिः संपूज्य ॥ लोमभ्यहत्याद्यनुवाक्रेन प्राचीनवीतिना एव आज्यहोमं कुर्यात् ॥  
 लोमभ्यः स्वाहा २ इदं लोमभ्यो नमम । त्वचे स्वाहा २ इदं त्वचे । लोहिताय ० २ इदं । मेदोभ्यः ० २ इदं । मसिभ्यः ० २ इदं । अस्थिभ्यः ० २ इदं । मज्जाभ्यः ० २ इदं । पायवे ० ३ आयासाय ० ३ प्रायासाय ० ३ संथ्यासाय ० ३  
 वियासाय ० ३ उद्यासाय ० ३ जुचे ० ३ शोचते ० ३ शोचमानाय ० ३ शोक्राय ० ३ तपसे ० ३ तप्यते ० ३ तप्यमानाय ० ३ त  
 प्राय ० ३ धर्माय ० ३ निष्कृत्यै ० ३ प्रायश्चित्त्यै ० ३ भेषजाय ० ३ यमाय ० ३ अन्तकाय ० ३ मृत्यवे ० ३ ब्रह्मणे ० ३  
 ब्रह्महत्यायै ० ३ विश्वेभ्यो देवेभ्यः ० ३ द्यावापृथिवीभ्यां ० ३ स्वाहा ३ इदं द्यावापृथिवीभ्यां नमम ३ इदं इत्याज्याहुतीं हुत्वा श्वहस्तेसाधकना  
 म्नापिंडदानम् ॥ अद्यामुक्रगोत्राऽमुक्रप्रतश्वहस्तेसाधकनिमित्तं प्रतदेवतोवा एषोपिंडमयादीयेतवोपतिष्ठतामिति दद्यात् ॥ ततः  
 पुत्राः पौत्राश्च यथाचारं बहुलतृणानि गृहीत्वा अग्नौ प्रज्वाल्य प्रदक्षिणं परिक्रम्य मंत्रद्वयेन शिरःस्थाने अग्निं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ कृत्वा तु दुः

१ अयं होमः कस्युचित्पद्वत्तु मोक्तस्तथाऽपि दाल्भ्यकृतपद्वत्तु तत्त्वान् चिच्छेत् । द्वाहीकृतत्वाच्चाऽस्माभिरिति ।

ष्कृतं कर्म जानता वाध्य जानता ॥ मृत्यु कालवशं प्राप्य नरं पंचत्वमागतम् ॥ १ ॥ धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम् ॥ देहयसवगात्राणि  
 दिव्यौष्ठो कान्मगच्छतु ॥ २ ॥ इति प्रज्वाल्य ॥ त्वं भूतकृजगद्योने त्वं लोकपरिपालकः ॥ उक्तः संहारकस्तस्मादेनं स्वर्गमृतं नय ॥  
 इति प्रार्थ्य गाढरं देनं कुर्यात् ॥ ततोऽर्धदग्धे काष्ठेन श्वमस्तकं भित्त्वा अस्मात्त्वमाधिजातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः ॥ असौ स्वर्गाय लोकाय  
 स्वाहा ज्वलतु पावके ॥ इति स तिलाज्याहुतिं दत्त्वा स जलं कुंभमादाय पादतोऽप्रदक्षिणं त्रिः परिक्रम्य तथा चारमभनान् कुंभं भित्त्वा ततः प्रेतदाहा  
 नन्तरं सर्वश्वस्पृशः श्वानुगमनकर्तारश्च चिन्तां वाभावर्तेन परावृत्य व्यावर्त्य प्रेतमनेवेत्यमाणाः कनिष्ठपूर्वाः स्नानार्थं नद्यादिके गच्छेयुः ॥  
 तत्रोदकसमीपंगत्वा परिहितवस्त्रं क्षालय्य तदेव परिधाय समीपस्थं श्यालक्रमन्यवा उदकं करिष्यामहे इत्युदकं यच्छेयुः ॥  
 पुत्रादयः सर्पिडाः सामानोदकाश्च यथा बृहद्मुदकं प्रविश्य एकत्र न्नाः प्रकीर्णकेशाः प्राचीना वीतिनः वामाना भिकया अपनः शोशुचदवमि  
 ति जलमालोडयदक्षिणमुखास्तूर्ण्य स कृत्रिमज्यैः अंगं च न विधर्षेयुः ॥ अपनः शोशुचदवमये शुशुब्धयारयिम् ॥ अपनः  
 शोशुचदवम् १ मुखत्रिया सुगताया वसूया च यजामहे ॥ अप० २ प्रयद्भन्ति दृष्ट्वां प्राप्तास्माकसच्चरयः ॥ अप० ३ प्रयत्ते अस्मसूरो जयिम्  
 हि प्रतेवयम् ॥ अप० ४ प्रयदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यांति भानवः ॥ अप० ५ त्वं हि विश्वतो मुखविश्वतः परिभूरसि ॥ अप० ६ द्वियोनो  
 विश्वतो मुखानि नावेव पराय ॥ अप० ७ सनः सिधुमिव नावयाति पर्षाः स्वस्तये ॥ अपनः शोशुचदवमिति ८ ऋग्वेदो  
 क्तम् ॥ ततो द्विवासस आचम्य ॥ जलेषा षण्णपुष्टान् शुचिनीरेदं दक्षिणाग्रं कृशत्रयोपरिः कृजुर्भूतलपूजालिना पितृतीर्थेन प्रेतम्

? भीषिलद्रवरेणान्न मोदकं लिखितं तच्चिर्मृत्यवादयत् ॥ प्रेतश्राद्धे तु श्रान्तापि मोदकं न श्राद्धम् ॥

द्विश्व ॥ अद्यामुक्त्वोत्रासुक्रप्रतपतिलतोयाजिस्तमयादीयतेतवोपतिष्ठतामितिसम्बन्धैककर्मजलित्रयोदशवायथाचारिर्निषेच्युः ॥  
 गोत्रस्त्रियोऽपिद्विदुः ॥ इयंजलदानक्रियादशमपुरुषपथत्कर्तव्या ॥ समानग्रामवासोयावद्वाससंबन्धमनुस्मरेयुस्तवतप्पययुः ॥ श्वशुरमातामह  
 मातुलचार्यशिष्यसहाध्यायिभिरनुद्विहृतमग्निभागिनयराजिजितोद्विहृतैषिभिः काम्यमुद्रकदानं कर्तव्यम् ॥ कृत्वाभर्तुर्गर्भहृत्स्त्रिपतिरुद्र  
 कनंकार्यम् ॥ ततः सयंकृत्वाऽऽचम्यशिशिर्वांबद्धाऽदकदुतीर्यस्ननं वस्त्रान्पीडयन् चोद्देशादुलवयुपविष्टान् सर्पदान् अन्यमुद्रहः ॥  
 इतिहासपुराणादिविविधकथाभिः संसाराऽनित्यतादर्शयन्तो वेदेषु ॥ माशोकंकुरुतानित्ये सर्वस्मिन्प्राणधर्माणि ॥ धर्मकुरुतयेत्नेन यावः सह  
 गमिष्यति ॥ १ ॥ मातुष्येकदलीस्तिर्भनिःसारेसारमार्गणम् ॥ यः कर्गेतिसंमूढो जलधुद्भुदसन्निभे ॥ २ ॥ गन्धर्वसुमतीनाशमुद्रविह्वता  
 निच ॥ फेनप्रलयः कथनं शं मत्स्यलोकोनयास्यति ॥ ३ ॥ पंचधासंभृतः कायो यदिपंचवर्षमागतः ॥ कर्मभिः स्वशरीरैस्त्यैस्तत्रकापरिदेव  
 ना ॥ ४ ॥ सर्वेक्षयान्तानिचयाः पतन्ताः समुच्छ्रयाः ॥ संयोगाविप्रयोगांता मरणंतिहिजिवितम् ॥ ५ ॥ ततः पश्चादनवलोकायतोऽधोमु  
 खाः कनिष्ठानशतः कृत्वा ॥ अहहर्नयमानो गामश्वंपुरुषं पञ्च ॥ वैवस्वतो न तृप्यति सुरापह्वदुर्मतिरिति यमगाथां गायन्तो यमसूक्तं च पठन्तः  
 पङ्क्तिभूताः श्रामप्रन्यायान्ति ॥ ( रात्रौ मृतानां रात्रौ वेदहः रात्र्यन्तारितेदोपश्रवणात् ) ॥ ततो गृहद्वारसमीपे स्थित्वा निष्पत्राणि दत्तौ विदश्या  
 चम्यगोमयसर्पपृष्ठान् बुध्वाऽग्निं स्पृष्ट्वा पादेन पाषाणमाक्रम्य दृष्टं प्रविशेत्पुः ॥ बुद्धाः शोकापनोदं न कुर्वन् ॥ अथ ज्ञातीनां यमनियमाः ॥ ब्रह्मचारिण  
 अवशाग्नयिनः अधोऽप्येव शिनः परस्परमसंस्पृष्टाः दानाध्ययनवर्जिताः मलिनाः दीनाः अयोमुखाः सर्वभोगवर्जिताः अंगसंवाहनं केशसमार्जनं

१. अतोऽध्यायो यमसूक्तम् ॥ २. रात्रौ दिवो देशाचाराऽविरोधेन कार्यः ।

चाकुर्वतः प्रतिक्रियावर्जमनवश्यकनकीचित्कुतुः ॥ शतयात्रात्रमेकरात्रवाउपवस्युः ॥ अशक्तौएकाग्रवीहियवाद्यक्षरलक्षण  
 मापात्राप्रपणायसवर्जितम् एकारं कृत्वालब्धवादिनात्ययोदिवाल्पमश्रीषुः नरात्रौ ॥ भोजनकालेभोज्यादनादुत्तमुच्छिष्टमादाय प्रेत  
 स्यनामगोत्रमुच्चार्य प्रेतोद्देशेनभूमौक्षिपेत् ॥ एतेनियमाः त्रिरात्रपर्यंतसर्पिडानांभवन्ति ॥ पुत्रादीनान्तु मातापिताऽऽचार्यनिपातनेदशरात्र  
 मेतेनियमाभवन्ति ॥ इच्छयाप्रथमादिदशाहपर्यंतकुटुंबैःसहभोजनं चतुष्पथभशानयेह्युदीपदानम् ॥ प्रथमदिनमारभ्यदशदिनपर्यंतग्रामा  
 द्बहिरण्यादिषु प्रेतस्यमूद्रादिनिष्पत्त्यर्थपिण्डदानं कुर्यात् ॥ अथमुर्यास्तमयादूर्ध्वरात्रावन्तारिक्षीरोदकदानम् ॥ तत्रत्रिकाष्टिकायामेक  
 स्मिन्नपक्षेमुन्यपात्रेउदकद्वितीयेचक्षीरकृत्वाप्राचीनावीतिदक्षिणामुखउपविश्य ॥ असुक्रगोत्रस्यामुक्रप्रतस्यआय्यायनार्थतापोपशमनार्थ  
 चाकाशेमुन्यपात्रेक्षीरोदकयोर्निधानमहंकारिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ श्मशानानलदग्धोसि परित्यक्तोसिर्बावैः ॥ इदंनरिपिदक्षीरमज्रस्नाहि  
 इदंपिब ॥ इतिपाठित्वा ॥ असुक्रगोत्र असुक्रप्रत अनेनजलेनस्नाहि ॥ असुक्रगोत्र असुक्रप्रत अत्रक्षीरपिब इतिनिवेदयेत् ॥ एतत्क्षीरो  
 दकंनिधानमेकाहंदिनत्रयवाद्दशाहंयथाचारंप्रत्यहंरात्रौकर्तव्यम् ॥ ततोऽगृहागमनम् ॥ इतिदशप्रकरणम् ॥ अथप्रथमदिनमारभ्यदशाह  
 पर्यंतक्रमोच्यते ॥ तत्रतावदुत्थिसंचयनम् ॥ तच्चप्रथमतृतीयचतुर्थसप्तमनवमेषु भौमार्कमदतिथिगुणैकपादद्विपादत्रिपादकृत  
 नक्षत्रादिनिष्ठादिपंचकवर्जदिनेषुकार्यम् ॥ तत्राविप्राणांविशेषतश्चतुर्थेऽह्ने राज्ञापंचमोविशानंनवमशूद्राणदशमदिनेकार्यम् ॥ असंभवेसर्वेषां  
 प्रथमादिदिवसेष्वप्यस्थिसंचयः कर्तव्यः ॥ (त्र्यहशौचोद्वितीयेद्विसर्वेषांसद्व्यःशौचदहाहानन्तरमेवकर्तव्यः) ॥ अथास्थिसंचयनिमित्तकै

कोद्विष्टश्रद्धम् ॥ तत्र श्रद्धादिनेसाग्रसंपाद्य भ्रमशानसमीपेगत्वा शुचिभूमौश्राद्धस्थानं प्रकलय गोमयादेकाभ्यामुपलिय गौरमुत्ति  
क्याऽऽच्छाद्यातिलरविकिरणं कुर्यात् ततो नद्यादिके स्नात्वा चरुश्रृणं कृत्वा सिद्धे त्रैलोक्ये तैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत् ॥ ततः प्रादुसुव  
उपविश्य आचम्य तूर्णप्राणानायम्य कुशोपग्रहः ॥ अपवित्रः पवित्रो वा पुंडरीकाक्षः पुनाति जलेन श्राद्धसामग्रीं स्वात्मानं च प्राक्ष  
येत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणमुखः पातित वामजातुः ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतवनिवृत्तिपूर्वक  
सद्गतिप्रार्थार्थं अस्थिसंचयननिमित्तकश्राद्धमहर्कारंष्ये इति सकलय ॥ कुशबटुनिधाय ॥ इहलोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम् ॥ मन  
सावयुहूपेण चेट्वाहनिमंत्रये ॥ इति नियोजयेत् ॥ ततः कुशत्रयादीन्यादाय ॥ अमुकगोत्र अमुकप्रेत इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठता  
मित्यासनार्थम् ऋजुकुशत्रयमुत्सृजेत् [ न मोटक रूपम् ] ततस्तिलान्विकीर्य एकस्मिन्पत्रपुटे पवित्रधृत्वा तत्र जलतिलगंधपुष्पाणि प्र  
क्षिप्य तदर्घपात्रवामहस्ते कृत्वा पवित्रम् आसनसमीपे पालशपत्रधृत्वा ॥ अमुकगोत्र अमुकप्रेत एषते हस्ताघोमया दीयते तवोपतिष्ठत  
भित्तिपवित्रोपरि अर्घ्यदत्त्वा अर्घपात्रं पवित्रयुतम् आसनवामपार्श्वे स्थापयेत् ( न न्युज्जम् ) ततो गंधादिकमासने धृत्वा ॥ अमुकगोत्रा अमुक  
प्रेत एतानि गंधपुष्पधूपदपतंबूलवासामिते मया दीयते तवोपतिष्ठता मित्युत्सृजेत् ॥ ततो घृताक्तमन्नमुद्रयपात्रपरिविध्य जलेनाभिषिच्य  
( नपात्रालंभाहौ ) नात्रपात्रालंभो नाशिषः प्रार्थयेदिति प्रचेतस्स्मरणात् ) तिलान्विकीर्य वामकरेण पात्रं स्पृशन् ॥ अमुकगोत्र अमुक  
प्रेत इदमन्नघृताद्युपस्करसाहितं ते मया दीयते तवोपतिष्ठता मित्युत्सृजेत् ( नात्रपदुकोजपः ॥ नपैतुकोजपः कार्यः इति प्रचेतस्स्मरणात् )

१ इदमेकोद्विष्ट मंत्रादित् कार्यम् ॥ मौथिलरुद्रधरेण श्राद्धविवेके समंत्रकमुक्तं तन्निर्मूलम् ( तथा च हेमाद्र्यादित्यपुराणयोः ) तिलमिश्रेषु दुग्धेषु कर्तौ वै दक्षिणामुलः ॥  
नामगोत्रप्रमाणेन दद्यात्पिंडं त्वमंत्रकम् ॥ अशुद्धक्षिपु वर्णेषु इदं दद्यान्न संशयः ॥

ततोऽन्नपत्रसमीपेऽपि दानार्थसिक्ताभिः वेदीनिर्माय गोमयादकेनोपलिय कुशत्रयास्तरणं कृत्वा पत्रपुटके जलतिलगंधपुष्पाणि क्षि  
 स्वा पुटकं गृहीत्वा ॥ अमुकगोत्र अमुकप्रेत अत्रावनेनिक्ष्वेतमयादीयते तवोपतिष्ठतामित्यवनेजनजलकुशत्रयोपरिकिंचिदद्यात् ॥ ततो  
 घृतमधुतिलयुक्तेनान्नैर्नपिंडं निर्माय वामहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्ते कुशत्रयादीन्यादाय अद्यामुकगोत्राऽमुकप्रेत आस्थिसंचयानिमित्तकश्चाद्रे एष  
 तेऽपिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशोपरिवामान्वारब्धदक्षिणहस्तेनपिंडं दद्यात् ॥ ततोहस्तौ प्रक्षाल्य ॥ अमुकगोत्रे अमुकप्रेत अत्र  
 प्रत्यवनेनिक्ष्वेतमयादीयते तवोपतिष्ठतामिति पूर्ववत्प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततः पिंडोपरिमूत्रं दत्त्वा ॥ अमुक० प्रेत अत्र पिंडे एतद्वासस्ते  
 मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ॥ ततः पिंडं गंधपुष्पधूपदीपतंबूलपूगीफलैर्नैवेद्यादिभिः संपूज्य ॥ अमुकगोत्राऽमुकप्रेत अत्र  
 पिंडे एतानि गंधपुष्पधूपदीपपूगीफलदीपानि ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ॥ ततः एकस्मिन्पत्रपुटे शिवायायः सन्तु इति जलं  
 सौमनस्यमस्त्विति पुष्पम् अक्षतंचारिघृंचास्तु इति तिलं श्रद्धत्वा ॥ कुशत्रयादीन्यादाय ॥ अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य यद्वत्तमन्नपानादिकं  
 तदुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सपवित्रकुशत्रयपिंडोपरिनिधाय ॥ सतिलदुग्धेन जलेन धारां दद्यात् ॥ अनादिनिधनो देवः  
 शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यः गुंडरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ १ ॥ अतस्मिन्पुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् ॥ येनमस्यति गोविंदं न तेषां  
 विद्यते भयम् ॥ २ ॥ कृष्णकृष्ण कुपलुस्त्वमगतीनां गतिर्भव ॥ संसारणर्वमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ नारायणसुरेश्वर लक्ष्मी  
 कान्तवत्प्रद ॥ अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ ४ ॥ हिरण्यगर्भे पुरुष व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणे ॥ अस्योप्रेतस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्व  
 दा ॥ ५ ॥ इति पठित्वा अमुकगोत्रे अमुकप्रेत अत्र पिंडे जलधारा ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति दक्षिणायां जलधारां दद्यात् ॥

ततो दक्षिणाद्रव्यकुशत्रयादीनिचादाय ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य कृतैतदस्थिसंचयनिमित्तकश्राद्धप्रतिष्ठाप्यम् इमां रजतदक्षिणान्तन्मूल्यापकलिपत्वा द्रव्यम् अमुकगोत्रायामुक्तशर्मणे ब्राह्मणायदातुमहमुत्तुजे इतिदद्यात् ॥ ततः पिंडोद्धरणंचदविसर्जनंचकृत्वा ॥ अनेनश्राद्धेन अमुकगोत्रस्यप्रेतस्यप्रेतस्त्वनिवृत्तिः सद्गतिप्राप्तिश्चभवतु इतिपठित्वापिंडगवादिभ्योदत्त्वा कर्मधूतिकाभोविणुंस्मेरत् ॥ ततः श्राद्धवस्त्वनिविप्रायदद्यात् ॥ जलेवाक्षिपेत् ॥ एवमस्थिसंचयनिमित्तकम् एकोद्दिष्टविधायगंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिकं सर्वगृहीत्वा श्मशानसमीपमागत्य चितायाउत्तरतश्चपविश्य ॥ क्रव्यादमुत्सेभ्योदेवेभ्योनमः ॥ इतिमंत्रेण श्मशानवासिदेवान् गंधपुष्पधूपदीपादिभिः श्मशानेपूजयेत् ॥ ततोबलिदानम् ॥ तत्रतावद्दृष्टपात्राणिनानाविधफलमूलभक्ष्यभोज्यपानादिभिः परयित्वाप्रत्येकं गंधपुष्पधूपदीपादिभिर्भक्ष्यच्यवलीन्दद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ येऽस्मिञ्श्मशानेदेवाः स्युर्भगवतः सनातनाः ॥ तेऽस्मत्सकाशाद्भून्तु बलिमद्याद्भूमक्षयम् ॥ प्रेतस्यास्यशुभौल्लोकान्प्रयच्छंतुचशाश्वतात् ॥ अस्माकमाधुरारोग्यं सुखंचददताक्षयम् ॥ इतिपठित्वा ॥ एषोऽष्टांगबलिः शंकरादिश्मशानवासिदेवताभ्योनमः ॥ इत्युत्तरस्यामेकंबलिदत्त्वा ॥ एवंप्रदक्षिणक्रमेण अपरबलित्रयंपूर्वादितु दिक्षुदद्यात् ॥ ततस्तान्बलीन्क्रमेण क्षीरेणाभ्युक्ष्य शंकरादिदेवताः स्वायंस्वायंस्यानांगच्छंतु इतिविमृज्यततोऽप्यसव्यंकृत्वावागयतः क्षीरादकेनचिर्त्तित्वा श्ममीपलाशशाखाभ्यांचितेभेस्मापोद्वांशुष्ठकनिष्ठाभ्यां शिरसो वक्षसोः पाण्याः पार्श्वयोः पादयोश्च अस्थीन्यादाय पंचगव्येनप्राक्ष्य गंगादेकेनमुगंधवारिणाचप्रक्षाल्यगंधाद्यार्चितानि ॥ पलाशपुटेनिक्षिप्यपीतक्षौभमस्त्रेणावेष्ट्यमनुमेयतनकुभेनिधायशरावेण

१ कथं ब्रह्मपुराणे पिंडत्रयदानमुक्तम् ॥ एकंभस्मानवासिभ्यः प्रेतायमध्यमं द्वतीयं तत्सालिभ्यश्च इतित्रयथावारं ज्ञेयम् ॥

पिधायतद्रांडमरण्ये वृक्षमूलवशैवाल्युतगर्त्तधारयेत् ॥ ततश्चिताभस्मादिसर्व्वनद्यादितोयेनिक्षिप्यचिताभूमिगामयेनविलिय तत्र पूर्वा  
 क्तप्रकारेणगंधाद्रूजकृत्वा बलिमंत्रेण बलिचतुष्टयदद्यात् ॥ तान्वलीन्क्षरिणाम्युक्ष्य देवताविमृजेत् ॥ ततश्चिताभूमेराच्छादनार्थं  
 लोकाचारान्कुटीं विश्रामार्थं वृक्षवाषाणकाष्ठादिभिः स्थानं कारयेत् ॥ ततोऽगृहमागत्य सचैलंबंधुभिः सह स्ननायात् ॥ अथ गंगायामस्थिक्षे  
 पणविधिः ॥ तत्र कदाचित्तादिनेवा पुत्रपुत्रसहोदरादिः अस्थिकुम्भमुत्पाट्यादाय गंगां गत्वा स्नात्वा तान्यस्थीनि पंचगव्येन प्रोक्ष्य हिरण्यमु  
 क्ताह्वयमुगचमप्रवालमध्वाज्यातैलैः संयोज्य घृतिपटपुटे निधाय दक्षिणां दिशं पश्यन् ॥ ॐ नमोस्तु धर्मराजाय पितुः प्रेतत्वमुक्तये ॥ समे प्रीतः  
 शुभं दद्यादस्मिच्छौकैः परत्र च ॥ इति वदन् जलं प्रविश्य समे प्रीतोऽस्तु इत्युक्त्वा गंगाभसि निक्षिपेत् ॥ ततः स्नात्वा जलावृष्क्रम्य ॥ मूर्याय न  
 म इति मूर्यपश्यन् आचम्य विप्रमुख्याय यथाशक्ति हिरण्यदक्षिणां दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य स्वर्गलोकप्राप्त्यर्थं  
 कृतैतदस्थिप्रक्षेपप्रतिष्ठार्थम् इदं हिरण्यमग्निदेवतमुकगोत्राय मुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ततो  
 गृहमागत्य यथाचारं श्राद्धतर्पणब्राह्मणभोजनादिकुर्यात् ॥ एवं कृते प्रेतक्रिया कर्त्रोः स्वर्गः स्यात् ॥ एवं च मातु कुलपितु कुलवर्जन्य कुलोत्थ  
 स्यात् स्थिनयने धर्मबुद्ध्या दोषाभावः द्रव्यादिलोभेन नयतश्चाद्रायाणाच्छुद्धिः इत्यस्थिसंचयनविधिः समाप्तः ॥ ७४ ॥ अथ दशगन्धश्राद्धानि ॥  
 तत्र प्रयोगः ॥ पुत्रादिभ्यो माद्विदेवतायतने नदीतीरे अन्यतार्थे वा तडागादितीरे वाऽण्ये गृहद्वारा वा शुचिदेशे यथाचारं यत्रैच्छाभव  
 तितत्र प्रेतस्य मूर्द्धादिनिष्पत्त्यर्थं पिंडदानं कुर्यात् ॥ तत्रादौ नूतनमृन्मयभांडेन नद्यादिकं जलमानीय स्नात्वा शुद्धवस्त्रे परिधाय कुशो  
 पग्रहः शुचिभूमौ पिंडदानस्थानादशान्यां दिशि अग्निप्रज्वाल्य तत्र तंडुलप्रसृतिद्वयं प्रक्षाल्य सुशुतं पंचेत् ॥ ततः आचम्य ॥



अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य अपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखजगविश्य पातितसजघनवामजानुः ॥ अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य  
 प्रथमेहनि शिरानिष्पत्त्यर्थम् अवयवश्राद्धमहंकारिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ गौरमृत्तिकयापिडार्थं दक्षिणपुर्वस्थाननिर्माय गोमयादके  
 नोपालिष्य तत्रदक्षिणाग्रं कुशत्रयास्तरणंकुर्यात् ॥ ततः पत्रपुटके जलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा तनुटकं वामहस्ते कृत्वा द  
 क्षिणहस्ते ऋजु कुशत्रयतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्र अमुकप्रेतशिरः पूरकप्रथमपिंडस्थाने अत्रावनेनिल्वते मयादीयते  
 त्वोपतिष्ठतामिति कुशत्रयोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ ततस्तिलघृतमधुदुग्धसिक्ततप्तमवपिंडं कुशत्रयादीनिचादाय ॥  
 अमुकगोत्र, अमुकप्रेत शिरः पूरकप्रथमपिंडस्ते मयादीयते त्वोपतिष्ठतामिति कुशोपरि पिंडं दद्यात् ॥ ततः प्रयवने जनदानम् ॥  
 अमुकगोत्रमुकप्रेत शिरः पूरकप्रथमपिंडे अत्रप्रयवने निक्षेपे मयादीयते त्वोपतिष्ठतामिति पिंडोपरि पूर्ववद् दद्यात् ॥ ततः प्रेतमुद्दिश्य  
 तूष्णीमेवोणामूत्रं गंधपुष्पघृदपनैवेद्यतांबूलपुष्पाणि फलानि पिंडदत्त्वा अमुकं प्रेत शिरः पूरकप्रथमपिंडे एतानि कर्णासूत्रगंध  
 पुष्पघृदपनैवेद्यातांबूलानि मयादीयते त्वोपतिष्ठतामिच्छुस्तेज ॥ ततः पिंडार्चनविधेः परिपूर्णतास्तु इति पठित्वा ततस्तान्नादिवात्रजल  
 दुग्धतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा अमुकगोत्रप्रेतदहजनि तत्तृषोपशमनार्थम् एष तिलतोयं जलित्से मयादीयते त्वोपतिष्ठतामिन्त्येकं त्रयं वा द  
 शं किं पिंडोपरि अंजलीं दद्यात् ॥ ततस्तिलतोयपात्रं पिंडसमपिधृत्वा अमुकगोत्रप्रेत एतत्ते तिलतोयपात्रं ते मयादीयते त्वोपतिष्ठतामि  
 त्येकं तिलतोयपूर्णपात्रं दद्यात् ॥ ततः शेषजलेन पिंडोपरि जलधारं दद्यात् ॥ अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यां पुंडरीकाक्ष  
 प्रेतमक्षप्रदो भव ॥ १ ॥ अतसीपुष्पसंकाशं पतिवाससमन्युतम् ॥ कृष्णकृष्णकृपालुस्त्वमगती

नांगतिर्भव ॥ संसारणर्वमन्त्रानां प्रसीदपरमेश्वर ॥ ३ ॥ नारायणसुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्तनवरप्रद ॥ अनेनतर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ ४ ॥  
 हिरण्यगर्भपुरुष व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणे ॥ अस्यप्रेतस्यमोक्षार्थं सुप्रीतोभवसर्वदा ॥ ५ ॥ इतिप्रार्थ्य काकेभ्योर्बलिदद्यात् ॥ काकोसिय  
 मद्भूतोसि गृहाणबलिमुत्तमम् ॥ इति । यमद्वारगतप्रेते तमाध्यायितुमर्हसि ॥ १ ॥ बलिदत्त्वापिण्डमुत्कृच्छेत् ॥ गवादिभ्योवादद्यात् ॥ ततः  
 पुनः सात्वागृहमागत्यगोश्रासंदत्त्वा ब्राह्मणमेकंभोजयेत् ॥ इतिप्रथमादिनकृत्यम् ॥ एवमेवाद्वितीयादिदिवसेषु द्वितीयादिपिण्डदानम् ॥  
 ( तत्र विशेषः ) ॥ द्वितीयादिने अमुकगोत्र अमुकप्रेत कर्णाक्षिनासिकपूरकःकोद्वितीयः पिण्डस्ते मयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ अमुकगोत्र  
 अमुकप्रेत द्वितीयादिनेद्वेतिलतोयांजली द्वेतिलतोयपात्रेचतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतामिति ० २ ॥ तृतीयादिने गलांसमुजवक्षःपूरकस्तु  
 तीयः पिण्डस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ अमुकः प्रेततृतीयादिनेत्रयस्तिलतोयांजलयस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् ॥ अमुकः प्रेत त्री  
 णिं तिलतोयपात्राणि ते मयादीयन्ते ० ३ ॥ चतुर्थीदिने ० अमुकः प्रेत नाभिलिंगगुदपूरकश्चतुर्थः पिण्डस्तेमयादीयते ॥ अमुकः प्रेत  
 चत्वारस्तिलतोयांजलयस्तेमयादीयन्ते ॥ अमुकः प्रेतचत्वारितिलतोयपात्राणितेमयादीयन्ते ० ४ ॥ पंचमादिने ॥ अमुकः प्रेत पं  
 चमादिने जानुजंघापादपूरकः पंचमः पिण्डस्तेमया ॥ अमुकः प्रेतपंचतिलतोयांजलयस्तेमया ॥ अमुकः प्रेत पंचतिलतोयपात्राणिते  
 मयादीयते ० ५ ॥ षष्ठीदिने ॥ अमुकः प्रेत सर्वमर्मपूरकः षष्ठः पिण्डस्तेमयादीयते ॥ अमुकः प्रेत षट्तिलतोयांजलयस्ते ॥ अमुकः  
 प्रेत ० षट्तिलतोयपात्राणितेमयादीयते ० ६ ॥ सप्तमादिने ० अमुकः प्रेत सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डस्तेमया ॥ अमुकः प्रेत सप्त तिलतोयां  
 जलयस्तेमयादीयन्ते ॥ अमुकः प्रेतसप्ततिलतोयपात्राणितेमयादीयते ० ७ ॥ अष्टमादिने ० अमुकः प्रेत दंतलोमादिपूरकोऽष्टमः पिण्डस्ते

मयादीयते ॥ अमुकप्रेतः अष्टौ तिलतोयपात्राणि ते मया दीयते ॥ अमुकः प्रेतः अष्टौ तिलतोयपात्राणि ते मया दीयते ॥ ८ ॥  
नवमदिने ॥ अमुकः प्रेतः वीर्यधूरको नवमः पिंडस्ते मया दीयते ॥ अमुकः प्रेतः नवतिलतोयांजलयस्ते मया दीयते ॥  
अमुकः प्रेतः नवतिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तेषां पिंडतामः ९ ॥ दशमदिने ॥ अमुकः प्रेतः क्षुत्पिपासापूरको दशमः  
पिंडस्ते मया दीयते ॥ अमुकः प्रेतः दशतिलतोयांजलयस्ते मया दीयन्ते ॥ अमुकः प्रेतः दशतिलतोयपात्राणि ते मया दीयते तेषां पिंडतामः  
मिति दद्यात् ॥ १० ॥ अन्यत्सर्वसमानम् ॥ त्र्यहशौ चतुःप्रथमदिवसे त्रीन् पिंडान् दत्वा दीने चतुरः तृतीयदिनेऽपि त्रीन् पिंडान् दत्वा  
द्यात् ॥ सद्यः शौचपक्षे एकस्मिन्नेव दिने दश पिंडान् दद्यात् ॥ याका भवे फलमूलशकण्डगुग्गुधसक्त्युवपिधानामन्यतमेन पिंडादेयाः ॥ येन द्रव्ये  
ण प्रथमः पिंडो दत्तस्तस्मात्जातीयेनैव पिंडान्तं दद्यात् ॥ येन पुत्रादिना प्रथमः पिंडो दत्तः स एव पिंडान्तरमापि दद्यात् ॥ अत्र कोचिन्नवश्राद्धं वि  
षमदिवसे दशह मध्ये कुर्वति तत्राधिकफलं भवति ॥ अक्षरेणैव प्रत्यवयवो नास्ति इच्छा चेत्कर्तव्यम् ॥ विधितुं पुष्पवत् ॥ इति दशगात्रश्राद्धानि ॥  
अथाशौचान्तिदिनकृत्यम् ॥ आशौचान्तिदिने दशमपिंडं समाप्य प्रेतं स्पृश्यासीत् अनन्यानामाश्रितानां च दत्वा मृतमयपाकादिभण्डानि च तस्य  
क्वाग्रहशुद्धिं विधाय स्नात्वा कोशले भनत्वा न्यथाचारं वापयित्वा तिलगोरोसपक्षकलेन शिरश्चोन्मृज्य शुद्धस्नानं च कृत्वा वासोगुणरिधाय आच  
म्यवागयतो वृषभं गां सुवर्णं गोरोचनं दधि दुर्वा च स्पृष्ट्वा ब्राह्मणेऽग्निं क्षत्रिये वाहनयुधं वैश्यः प्रतोदं शर्भान्वा शुद्धयाष्टिच संस्पृश्य शु  
द्धो भवेत् ॥ अथैकादशहदिनकर्म ॥ तत्राहद्वयोत्सर्गः ॥ तस्य प्रयोगः ॥ तत्रादौ प्रागुदग्रप्रणे विविक्ते निर्जने वनगोमध्वे वत्सतरी चतुष्ट  
येन द्वाभ्यामेकनवासहितं त्रिहायनं मनोज्ञं दीनं यस्तु पुनि शिष्टं वृषभं वज्रमाल्या किं करोति घटहमपट्टिकादिभिर्वेषांचित्तुषूपैर्भूषयित्वा

तत्रानयेत् ॥ ततः आचम्य प्राणानाम्य पूर्वाभिमुखः कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वं  
 विमुक्तिपूर्वकाक्ष्यस्वर्गकामोमरणदिनादेकादशे द्विदृषोत्सर्गकरिष्ये ॥ (कार्त्तिकेयपौर्णमास्यामाश्वज्यौ चैत्र्यां वा रेवत्यां वृषोत्सर्गकरणे  
 तु मातृपूजापूर्वकमाभ्युदयिकं कृत्वा ॐ अद्य कार्त्तिकेयाममुकगोत्रस्यास्मान्पितुरमुकशर्मणः स्वर्गलोकाप्रतिकामो वृषोत्सर्गकरिष्ये इत्येवं सं  
 कल्पः कर्तव्यः ॥ सर्पिडनात्राकृष्णकादशहो वृषोत्सर्गकरणे वृद्धिश्राद्धं न कुर्यात् ॥ सर्पिडनं विना काम्याभ्युदयिकयोर्नपेधात् ) इति संकल्प्य ॥  
 गणेशं संपूज्य ॥ इशान्यां कलशं स्थापयेत् ॥ तथा ॥ ॐ भूरसिंभूरसीति भूमिस्पृष्ट्वा ॥ ॐ धान्यमसिंघिनुरि इति धान्यं शिवा तस्यापरि  
 ॐ आर्जिष कलशं भित्तिमंत्रेण ताम्रमयं सप्त्यं वा कलशं स्थापयेत् ॥ ततः ॐ वरुणं स्यात्ते भनमसीति जलेनापूर्य ॥ ॐ याऽऔषधीः पूर्वजा  
 ता इति सवर्षधीः ॥ ॐ काण्डात् काण्डादिति दूर्वाः ॥ ॐ अथैवो निषंदनमिति पंचपल्लवान् ॥ ॐ स्योनापृथिवीनो इति सप्तमृदः ॥ ॐ याः फलिनी  
 रिति पूर्णा फलम् ॥ ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानि दाक्षुर्पे इति पंचरत्नानि ॥ ॐ हिरण्यगर्भ इति हिरण्यं च क्षिपेत् ॥ ततः  
 ॐ वज्रोऽपवित्रमसीति वस्त्रं रक्तमूत्रं वा श्रेयेत् ॥ ॐ पूर्णदूर्वा विपरपत इति तंडुलपूरितपात्रं न्यस्या ॥ ॐ मनोज्ञं तिजुषतामिति प्रातिष्ठा कृत्वा तत्र ॐ  
 तत्त्वाभिः ब्रह्मणं वंदमानस्तदाशं स्तेयजना नो हविर्भिः ॥ अहं दमानो वरुण हवो ब्रह्म हवो इति समानऽआयुः प्रमोषीः ॥ १ ॥ ॐ भुवः  
 स्वः वरुण इहा गच्छ इति वरुणं सांगमावाहयामि इत्यावाह्यं ॐ वरुणाय नमः इति पोटशोपचारैः संपूज्य ॐ कलशस्य मुखे विष्णुरित्या  
 दिप्राथयेत् ॥ ततस्तदुपरिताम्रमर्थी रुद्रमूर्तिम् अशुयुतां पूर्वं कुरुद्राध्यायं जपन् स्थापयेत् ॥ अथावाहनम् ॥ ॐ नमस्ते रुद्रमुग्रवदं उत तऽ

इष्वेवमन्वाहुष्युतेनमः १ ॐ भूर्भुवःस्वःरुद्र इहागच्छइहतिष्ठ रुद्रमावाहयामि ॥ इत्यावाह ॥ ॐ मनोजितुषतामितिप्र  
 तिष्ठाप्य ॐ रुद्रायनमः ॥ इतिषोडशपचारैः पूजयेत् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ तत्रादौ हस्तेषुण्चंदनतांबूलवासांस्यादाय देशकालौसंकीर्त्य  
 अद्यकर्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तुमकुशमसुशमाणब्राह्मणोभिः पुष्पचंदनतांबूलवासांभिर्ब्रह्म  
 स्वेनत्वामंहृदइतिब्रह्माणवृणुयात् ॥ ॐ वृतोस्मातिप्रतिवचनम् ॥ यथाविहितकर्मभूरुद्रइतियजमानोवेदेत् ॥ ॐ करवाणीतिप्रतिवच  
 नम् ॥ पुनः पुष्पचंदनतांबूलवासांस्यादाय ॐ अद्यकर्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्मकर्तुमकुशमसुशमाणब्राह्मणोभिः पुष्पचंदनतांबू  
 लवासांभिर्होतृत्वेनत्वामंहृणुते इतिहोतारंवृणुयात् ॥ ॐ वृतोस्मातिप्रतिवचनम् ॥ अथयाविहितकर्मभूरुद्रइतिवेदेत् ॥ ॐ करवाणीतिप्रतिवच  
 नम् ॥ ततोहोतारुद्रकलशात्पाश्वमेवालुकाभिर्हस्तमात्रचतुर्दशस्थंडिलकुल्वदेशकालौसंकीर्त्य ॥ ॐ अद्यकर्तव्यवृषोत्सर्गकर्मणिपंचभूसंस्का  
 रपूर्वकमग्निप्रतिष्ठापनंकरिष्ये ॥ इतिसंकरस्यस्थंडिलंकुरौःपरिसमुह ॥ तानैशान्यपरित्यज्यगोमयादेकेनपलित्यधुमूलेनप्रदेशमात्रमुत्त  
 रोत्तरक्रमेणप्राग्रं त्रिशल्लिर्य उल्लेखनक्रमेण अनामिकादुष्टाभ्यामृदंसमुदृत्य उदकेनाभ्युक्ष्य कांस्यपात्रेणाग्निमुपसमाधाय ॐ अग्निदूत  
 पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रूवे ॥ देवाँऽऽआसादयादिह इतिमंत्रेणस्यंडिलेस्थापयेत् ॥ ततः अथानीतपात्रेसप्ततोदकंनिषिच्यार्घिंघ्रायेत् ॥ ॐ  
 चत्वारिंशद्व्योऽस्यपादद्वेर्षींसप्तहस्तांसोऽस्य ॥ त्रिषोद्वेद्वेषुषोरारवातिमहोदेवामन्या २३आविवेश ॥ १ ॥ अग्नैश्चानर शंदि  
 ल्यगोत्रभूमिमातावरुणःपितामेषच्चजप्राङ्मुखममसम्मुखोभव ॥ इति रुद्रनामाग्निप्रतिष्ठाप्य प्रोक्षितंघनानिनिक्षिपेत् ॥ ततोऽग्नेर्दक्षिणतः

शुद्धमासंविधाय ॥ तदुपरिप्रागग्राहकशानास्तोयं ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीयतत्रउदङ्मुखं ब्राह्मणं तदभावे पंचाशत्कुशनिर्मितंवा ॥  
 अ० अस्मिन्वृषोत्सर्गकर्मणि त्वंमब्रह्माभव इत्यभिधाय उपवेशयेत् ॥ भवानीतिप्रतिवचनम् ॥ ततः प्रणीतापात्रपुरतः कृत्वा जलेनापूर्य्यं कुशैरा  
 च्छाद्यब्रह्मणमुत्सवमवलोक्याग्रैरुत्तरतः कुशोपरिनिध्यात् ॥ ततः परिस्तरणम् ॥ बहिष (६४) श्रुतयभागमादाय उत्तराग्रैश्चतुर्भिर्देभः आग्ने  
 यादीशानांतिमितिप्रच्यम् पूर्ववाग्रैर्ऋत्यादाग्रयोर्दक्षिणस्याम् उत्तराग्रैर्ऋत्यादाग्रव्यंतप्रतीच्याम् ॥ पुनः पूर्वार्थवैयव्यादीशानांतमुदी  
 च्यां च परिस्तरणं कृत्वा ॥ ततोऽग्रैरुत्तरतः पश्चिमदिशिपवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम् उपयमनार्थं कुशत्रयम् पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गभकुशपत्रद्वयम् प्रोक्षणीपात्रम्  
 आज्यस्थाली चरुस्थालीसंमार्जनार्थं कुशत्रयम् यथाशक्तिहिरण्यादिद्रव्यम् ॥ ततः पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशिक्रमेणासादनीयम् ॥ ततोवाग्यतः  
 दग्धं तंडुलपिष्टम् तंडुलाद्यत्रपूर्णपात्रम् ॥ अग्रतः प्रादेशमात्रं प्रमाप्य पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा तानपास्य पवित्राभ्यां प्रणीतोदक्रमुप्य सप  
 आसादितकुशपत्रद्वयमादाय ॥ प्रोक्षण्युदकं भूमौ त्रिः शिखापवित्रे प्रोक्षण्यभिधाय प्रणीतोदकेन प्रोक्षणं प्रोक्षणी  
 वित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षण्यभिधाय ॥ अग्निप्रणितयामध्यप्रोक्षणीपात्रं निधाय आज्यं पायसं चरुं श्रपणार्थं युगपदग्नौ निधाय तृणप्रज्वल्यप्रद  
 जलेनासादितवस्तुसेचनम् ॥ अग्निप्रणितयामध्यप्रोक्षणीपात्रं निधाय आज्यं पायसं चरुं श्रपणार्थं युगपदग्नौ निधाय तृणप्रज्वल्यप्रद  
 प्रणीतोदकेन तान्निः प्रक्षाल्य तत्र प्रणीतोदकं दग्धं च प्रक्षिप्य आज्यं पायसं चरुं श्रपणार्थं युगपदग्नौ निधाय तृणप्रज्वल्यप्रद  
 क्षिणमाज्यचर्व्याः संमंताद्भूमिचवह्नौ तत्र क्षिप्य दक्षिणहस्तेन सुभ्रादायाधोमुखमनोतापयित्वा सव्ये पाणौ कृत्वा दक्षिणहस्ते  
 न संमार्जनं कुशानामग्रैर्मध्यैर्मूलैर्मूलं स्रवं समृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युप्युनः प्रत्य ध्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् ॥ ततः स्वयमाज्यच

रुच उद्रास्य स्वपुरत आज्यंतदुत्तरतश्चरनिधाय आज्यप्रोक्षणीवदुन्यय अवक्ष्यसत्यपद्रव्येतन्निसनं पुनःप्रोक्षण्युनयनम् ॥ तत  
 उत्थाय उपयमनकुशान्वामहस्तेकृत्वाप्रजापतिमनसाध्यात्वा तूष्णीमग्नौवाताताः समिधास्तिस्रोऽग्नौप्रक्षिपेत् ॥ ततः उपविश्य ॥ सप  
 विप्रोक्षण्युदकेनाग्निपर्युष्यप्रणीतापात्रेपवित्रेनिधाय सजघनंदक्षिणजानु निपात्य कुशोणेणब्रह्मणान्वारब्धः सुसमिद्धतमेऽग्नौ आज्येनजु  
 ह्वयात् ॥ तत्रहोमः ॥ अँइहुरतिःस्वाहा ॥ इदमग्नयेनमम ॥१॥ अँइहर्ममध्वठस्वाहा॥इदमग्नये ॥२॥ अँइहृदितिःस्वाहा॥ इदमग्नये ॥  
 ॥ ३ ॥ अँइहस्वधृतिःस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ४ ॥ उपसृजंयरुणमात्रेधरुणोमातरंधयर्नस्वाहा॥इदमग्नये ॥५॥ अँरायस्योषेमस्मासुदीवर  
 त्स्वाहा॥इदमग्नयेनमम॥६॥ततःअग्रावुत्तरतःअँप्रजापतयेस्वाहा॥इदंप्रजापतयेनमम॥१॥अग्नौदक्षिणतःअँइंद्रायस्वाहा इदमिन्द्रा ॥२॥उत्त  
 रपूवाद्धे अँअग्नयेस्वाहा इदमग्नये ॥३॥ दक्षिणपूवाद्धे अँसोमायस्वाहा इदंसोमाय ॥४॥ इत्याधारावाज्यभागोदुत्वाऽग्निंसंपूज्य पायसमा  
 दाय अनन्वारब्धेन संसर्वाविनैवजुह्यात्॥अँअग्नयेस्वाहा इदमग्नये ॥१॥अँरुद्रायस्वाहा इदंरुद्राय ॥२॥अँशर्वायस्वाहा इदंशर्वाय ॥३॥  
 अँ पशुपतयेस्वाहा इदंपशुपतये ॥४॥ अँअग्रायस्वाहा इदं ॥५॥ अँअशनेयस्वाहा इदं ॥६॥ अँभवायस्वाहाः इदं ॥७॥ अँमहादेवा  
 यस्वाहा इदं ॥८॥ अँ ईशानायस्वाहा इदमीशानायनमम ॥ ९ ॥ इतिहुत्वा ॥ पिष्टकेन अँ पूषागा अन्वेतुनः पूषाक्षत्रवैतः ॥ पूषावाजं  
 सनोतुनः स्वाहा ॥ इदंपूष्णेनमम ॥ १ ॥ ततोब्रह्मणान्वारब्धपायसपिष्टकाभ्याम् अँ अग्नये स्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृतेनमम  
 इतिजुह्यात् ॥ ततःआज्येन अँभूःस्वाहा इदंभूःअग्नये ॥१॥ अँभुवःस्वाहा इदंभुवः वायवे ॥२॥ अँस्वः स्वाहा इदंस्वः सूर्याय ॥३॥

अन्तर्नाऽअग्नेवरुणस्यज्विद्वान् देवस्यदेहोऽअवयासिसिद्धाः ॥ यजिष्ठेज्वह्नितमःशोचुनो विश्वद्वेषः७७सिप्रसमुप्यस्मत्स्वाहा ॥  
 इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ ४ ॥ अ०सत्त्वन्नोऽअग्नेज्वभोभवातेनेदिष्ठोऽअस्याऽउपसोव्युद्यौ ॥ अवयक्ष्वनोव्वरुणठे रराणोव्वोहिमुडीकठे  
 सुहवैनऽअधिस्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥ ५ ॥ अ०अयथाग्रस्यनभिर्शस्तिपाश्चस्यमिच्चमयाऽअसि ॥ अयानो यज्ञेवहास्यानाधे  
 हिभेपजठेऽस्वाहा इदमग्नये ॥ ६ ॥ अ०येतेशतवरुणयसहस्रयज्ञियाः पाशा क्वितामहान्तः ॥ तेभिन्नाऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेश्वेभुवतु  
 मरुतस्वर्काःस्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विणवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः ॥ ७ ॥ अ० उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्मदवधिम  
 विमद्वच्यमठे श्रथाय ॥ अथाव्यमादित्यव्रतेतवानांगसोऽअदितयेस्यामस्वाहा ॥ इदंवरुणाय ॥ ८ ॥ अ० प्रजायतयेस्वाहा इदंप्रजाप  
 तये नमम ॥ ९ ॥ इतिहुत्वा स्थंडिलपरितोदिकपालेभ्योमाषभक्तबलीन्दद्यात् ॥ ततः संस्रवप्राशनम् आचमनंचकृत्वा ॥ अ०अद्यकृतैतदृ  
 षोत्सर्गहोमकर्मणिक्कृताकृतावशेषरूपाग्रहकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदेवतमसुकगोत्रायामुक्शर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्र  
 ददे ॥ इतिब्रह्मणैर्पूर्णपात्रंदद्यात् अ० स्वस्तीतिप्रतिवचनानन्तंब्रह्मग्रंथिविमोक्तः॥ततो होत्रेभुवर्णदक्षिणांदत्त्वा अ० सुमित्रियानऽआपऽओष  
 धयः सन्तु इतिपवित्राभ्यां जलमानीय तेनशिरः संमृज्य ॥ अ०दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तुयेऽस्मान्द्रेष्टियंचवयद्विष्मः इत्यैशान्यांप्राणीतान्युञ्जी  
 करणम् ॥ पवित्रेअग्नौ प्रतिपत्तिः॥ततस्तरुणक्रमेणबर्हिस्तथाप्यवह्नौक्षिपत् ॥ ततः अ०नमस्तेरुद्रमरुदयवद्वयारभ्यासमाप्तेः रुद्राध्यायंजपित्वा

? अत्र पूर्णहुविहोमो बर्हिहोमश्च कृताकृतः॥ केचिन्मैथिल्यश्रुत्तत्वात्कात्यायनद्ववादनुक्तत्वात् ॥ विवाहादिक्रियायां च शालायां वास्तुपूजने ॥ नियहोमे वृषोत्सर्गे  
 पूर्णहुतिं न कार्येदिति प्रयागरत्ने निषिद्धत्वाच्च विकल्पः ॥



(रुद्रजपकरणे प्रयवायो भवति) आचार्यः कुकुमेन वृषस्य दक्षिणपाश्विन्दूलं वामपाश्व चक्रमथवा वामे त्रिशूलं दक्षिणे चक्रं यथाचारं विलिख्य  
लोहकारमाहूय अंकयित्वा ततो वत्सवतीसहितं वृषभम् ॥ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायास्तुजातः कश्यपो यास्विन्द्रः ॥ याऽअग्निर्गर्भदधेरिविह  
पास्तान् आपः शंस्यो नाभवन्तु ॥ १ ॥ यासां राजा वरुणे याति मध्ये सत्यामृतोऽवपश्यन् जनानाम् ॥ मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्तान् आपः  
शंस्यो नाभवन्तु ॥ २ ॥ यासां देवा दिविकृण्वन्ति भक्षयाऽअन्तरिक्षं बहुधा भवंति ॥ याः पृथिवीपापसादात् शुक्रास्तान् आपः शंस्यो नाभवन्तु ॥ ३ ॥  
शिवेन माचक्षुषा पश्यतामः शिवया तनुवापस्य शतत्वं मे ॥ सर्वाऽअग्नीष्टिरं पृथुद्वे हवो मे यिव च बलमोजो निधत्त ॥ ४ ॥ इति चतसृभिः ॥  
अश्वत्थादेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शंय्यो रभिः खंवन्तु न ॥ १ ॥ इत्यनेन चरुना पयित्वा लोहवन्दानुपूरकन कपटिकादिभिः सर्वानलं  
कृत्य सा वित्रीमवमर्षणं रुद्राध्यायं पुरुषसूक्तम् अथ देवा देवदेवैर्देवाः सश्चक्रमाव्ययम् ॥ अग्निमातस्मादेन सो विश्वान्मुचत् ॥ १ ॥ यदि दि  
वायुर्दिनस्तमेन ॥ २ ॥ सिचक्रमाव्ययम् ॥ वायुर्मातस्मादेन सो विश्वान्मुचत् ॥ ३ ॥ यदि जगद्वादिस्वप्नेन ॥ ४ ॥ सिचक्रमाव्ययम् ॥ मृत्योर्मातस्मा  
देन सो विश्वान्मुचत् ॥ ५ ॥ हसि हसि हसि हसि ॥ कूष्माण्डमूर्त्तं शङ्कजेन ॥ ततो वृषभस्य दक्षिणकर्णे ॥ ६ ॥ पिता वत्सान् पतिरध्वन्यानामथो पिता मह  
तांगार्णान् वत्सो जरायुः प्रतिधुक् पीयूषऽआगुष्यावृत्तं तद्रस्यतः ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ वृषो हि भागवान्धर्मश्चतुष्पादः प्रकीर्तितः ॥ दृणांसि

१ अष्टांगुलं भवेच्चक्रं त्रिशूलं द्वादशांगुलं ॥ तज्जन्यास्तु प्रमाणेन दाहयित्वा जपेत्ततः ॥ इति क्षिपेत्स्यजेदिति ॥

तमहंभक्त्यासमांक्षतुसर्वतः ॥ २ ॥ इतिमंत्रद्वयजपित्वा उदङ्मुखः सव्येनवृषपुच्छं गृहीत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ देश  
कालौ संकीर्त्य० ॐ असुकृगोत्रस्य असुकृगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षय्यस्वर्गलोकप्राप्तिकामः एतद्वयं रुद्रदेवतं यथाशक्त्यलं  
कृतंगंधपुष्पाद्याचितं त्रिशूलचक्रांकितंवत्सतरंगयुतम् अहमुत्तुजामि ॐ एतंयुवानंपतिवोददामि तेनक्रीडन्तीश्चरथप्रेयेण मानः  
सात्यजनुषासुभगारायस्पोषणसमिषामदेम इत्युक्त्वा सतिलमुदकं धूमौ निक्षिपत् ॥ इत्युत्सृज्य चैशान्यादिशिपंचपदानि चालयेत् ॥ ततो  
वत्सतरंगसहितं वृषभम् ॐ वत्सतरंगसहितयवृषभायनमः इति षोडशोपचारैः संपूज्य तासां मध्यगतं वृषभमभिभंत्रयेत् ॥  
तत्रमंत्राः ॥ ॐ मयैभूरभिर्माब्वाहिस्वाहामारुतोसिमरुतांगिणः ॥ शंभुर्मयो भूरभिर्माब्वाहिस्वाहावस्यूस्सिंदुवस्वात् ॥ छंदूर्मयोभूरभि  
र्माब्वाहिस्वाहा ॥ १ ॥ यास्तेऽअग्नेमृग्यैरुचोर्दिवमातन्वन्तिरश्मिभिः ॥ तामिन्नोऽद्यसर्व्वामीरुचेजनयनस्त्रुधियात्रो देवाः सुख्यै  
रुचो गोष्वैश्वर्य्यारुचः३ इदं प्राप्ताभिः ॥ सर्व्वामीरुचं ब्रोधत्तबृहस्पते ३ रुचं प्रोयेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसुनस्त्रुधिरुचं विश्वेषु रुद्रेषु मयि वै  
हिरुचारुचम् ॥ २ ॥ तत्त्वयामि ब्रह्मणो वंदमानस्तदाशस्तेयजमानो हविर्भिः॥ अहंमानो ब्रह्मरुणे ह्यधु ररुष्टः समानऽआयुः प्रमोषी ॥ ॥  
३ ॥ स्वर्णधर्मः स्वाहास्वर्णाङ्कः स्वाहास्वर्णशुक्रः स्वाहा स्वर्णज्योतिः स्वाहा स्वर्णमूर्य्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ततोऽप सव्यं कृत्वा  
दक्षिणामुलः पातितवामजनुः ॥ यवतिलवृषपुच्छमोदकादीन्यादाय ॐ स्वधापितृभ्यो मातृभ्यो बंधुभ्यश्चापितृभ्ये ॥ मातृपशश्च ये के  
चिद्वैचान्येपितृपक्षजाः ॥ गुरुश्च गुरुबंधूनां ये कुलेषु समुद्रवाः ॥ येषं तभावमापन्ना ये चान्ये प्राद्वयजिताः ॥ वृषोत्सर्गेण ते सर्व्व लभन्तां प्रीतिमु

तमामिति त्रेणाजलिग्रयं दद्यात् ॥ ततो दाता ब्राह्मणानाहूय शक्रोक्तिभिः पदैः ॥ न चाल्प्य न च तत्क्षीरं पातव्यं केन चिच्छाचित् ॥ न वा ह्योसौ बृधश्च  
षामृतो ममूनामये ॥ १ ॥ इति श्रावयेत् ॥ ततः पायसं श्रयत्वा त्रिप्रभृतीन् यथा शक्तिरथा समं ब्रह्मणान्भोजयेत् ॥ ततो बहुतोय  
तुण्डण्ये अथ वा बहुगोधनं सुकुलगोकुलवत्सतरियुतो गोपतिः क्षेपणीयः ॥ निर्गते गोपता विप्रभ्या दक्षिणां रुद्रकुम्भं च दत्त्वा विष्णुं स्मरेत् ॥ एव  
वृषोत्सर्गविधिना रोयः करोति भक्त्या निजपूर्वजानाम् ॥ लङ्घ्यतान्दुर्गतिपङ्कमद्यान्वयसंलोकं समुपैति शंभो ॥ इति वृषोत्सर्गपद्धतिः समाप्ता ॥  
अथ गोदानविधिः ॥ तत्र आशौचं तद्वितीयेन ह्ये  
पुण्यदशयथोत्तलक्षणवर्ता कपिलांगप्राङ्मुसीमवस्थाय ॥ यथोत्तलक्षणं स  
त्पात्रं तद्भावे अनिषिद्धब्राह्मणम् उपवेश्य स्वयंगोपुच्छदेशे ग्राङ्मुखः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्यत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य ॥  
अथैकादशे ह्यह्नि अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य स्वर्गकामो गोदानं महं करिष्ये ॥ तद्गतया गोब्राह्मणस्य च पूजनं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ब्राह्मणपावा  
दिभिः संपूज्य हस्ते पुष्पचंदनतंबूलवास्यं स्यादाय करिष्यमाणगोदानार्थं भेनद्रव्येण त्वामहं हृणे इति वृणुयात् ॥ वृतोस्मीति प्रतिवचन  
म् ॥ अथ गोपूजनम् ॥ ॐ आवाहयाम्यहं देवी त्रैलोक्येषु च मातरम् ॥ यस्याः शरणमाविष्टः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ इत्यावाहनम् ॥  
त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुंधरा ॥ सवित्री त्वं चायत्री गंगा त्वं च सरस्वती ॥ तृणा निभक्षसे नित्यं मम तृप्तं हंसप्रभो ॥ भूत  
प्रेतपिशाचांश्च पितृदेवतमानुषान् ॥ सर्वस्तारयसे देवि नरकान्पापसंक्रातान् ॥ ॐ भूमुखः स्वः धेनो इह गच्छ ह तिष्ठ ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥  
ॐ सर्वदेवप्रियदेवि चंदनमलयोद्धवम् ॥ कस्तूरीकुंडुमाढ्यं च गोगंधः प्रतियुह्यताम् ॥ इति गंधम् ॥ १ ॥ एषा वत कुले जाता शतक्रतु प्रिया  
सदा ॥ यालक्ष्मीः सर्वभूतानां याचद्वेष्यवस्थिता ॥ धेनुरुपेण सा देवी मम पापं व्यपाह तु ॥ इति पुष्पाणि च निवेदयेत् ॥ २ ॥ अथांगपूजा ॥

ॐ आस्यायनमः ॥ ॐ शृंगाभ्यांनमः ॥ ॐ पृष्ठाभ्यांनमः ॥ ॐ पुच्छायनमः ॥ ॐ पूर्वपङ्क्त्यांनमः ॥ ॐ वनस्य  
 तिरसोद्भूतो गंघाढ्योगंधउत्तमः ॥ आग्नेयः सर्वदेवानां धूपेयप्रतिगृह्यताम् ॥ इति धूपः ॥ ३ ॥ ॐ साज्यं च वर्तिसुक्तं वह्निना योजितं  
 मया ॥ दीपं गृह्णामुसुरभे मया दत्तं हि भक्तिः ॥ इति दीपम् ॥ ४ ॥ वैष्णविसुरभे मानिन्यविष्णुपदे स्थिते ॥ नैवेद्यां हि मया दत्तं गृह्यतां पा  
 पहारीणि ॥ इति नैवेद्यम् ॥ ५ ॥ आच्छादनं च कौशेयं शुद्धं चैव सुनिर्मलम् ॥ सुम्यै दीयमानं तु प्रीयतां केशवः सदा ॥ इति वस्त्रम् ॥ ६ ॥  
 यत्तेभ्योर्पितं शुद्धं घंटाचामरसंयुतम् ॥ सुरभे तद्गृहाण दं मुनित्रिदशवंदितं ॥ इति घंटाचामरम् ॥ ७ ॥ एवं गंधादिभिः संपूज्य प्रदक्षिणां  
 कृत्वा उदङ्मुखो गोपुच्छगृहीत्वा कुशत्रययवतिलजलैस्तर्पणं कुर्यात् ॥ (सव्यम्) ॐ गणपतिस्तथा ब्रह्मा केशवो रुद्रदेवताः ॥ लक्ष्मीः  
 सरस्वती चैव ये चान्ये च नवग्रहाः ॥ १ ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ देवाधिदेवताः सर्वास्तथा प्रत्यधिदेवताः ॥ २ ॥ नक्षत्र  
 वसवोरुदा विश्वे देवा मरुद्गणाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ ३ ॥ किन्नराश्च पिशाचाश्च यक्षगंधर्वराक्षसाः ॥ इत्याश्च दानवाश्चैव  
 ये चान्येऽप्सरसंगणाः ॥ ४ ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ पुलस्त्यः पुलहश्चैव दत्तात्रेयो यभार्गवः ॥ ५ ॥ वसिष्ठा गिरिसर्वाणि  
 कश्यपश्चैव काश्यपाः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ ६ ॥ ऋगयोमनवो देवा अधस्थाभूमिदेवताः ॥ वज्राधारा जलाधाराः  
 साद्वयाक्षस्तथैव च ॥ ते सर्वे तृप्तिः ॥ ७ ॥ सारितः सागराश्चैव पर्वतावनेव च ॥ लता औषधयश्चैव मृगा आण्ड्रक्षिपः ॥ ते सर्वे तृप्तिः  
 ॥ ८ ॥ स्वाहा स्वधा तथा लक्ष्मीर्बुद्धिः श्रद्धा सरस्वती ॥ मेधा प्रीतिस्तथा लज्जा कीर्तिश्च दर्शनी तथा ॥ ताः सर्वे तृप्तिः ॥ ९ ॥ विश्वाद्याश्चै  
 व ये देवा ये चैव कुठवासिनः ॥ गरुडासनमाहूढा आगताः पुच्छगोचरे ॥ ते सर्वे तृप्तिः ॥ १० ॥ आदित्याद्याग्रहाः सर्वे ऋक्षाश्चाश्विनिकादयः ॥

मेषाद्याशयश्चैव योगविधुंभकादयः ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ ११ ॥ ( कंठी कृत्वायवादकैः ) सनकः सनन्दनश्चैव तृतीयश्च सनातनः ॥ कापिलश्चासुरिश्चैव वोढुः पंचशखस्तथा ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ १२ ॥ ( अपसव्यकृत्वा दक्षिणाधुलः कृष्णालोदकैः ) पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ मातामहस्तापिताच वृद्धमातामहस्तथा ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ १३ ॥ मातृपितामहीचैव तथैवप्रपितामही ॥ मातामह्यादयः सर्वास्तथैवान्यश्च गोत्रजाः ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ १४ ॥ पितृवशमृतायेच मातृवशेतथैवच ॥ गुरुश्चगुरुबंधूनां येचान्यबंधवाः स्मृताः ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ १५ ॥ येमकुललुप्तपिंडाः पुत्रदारविवाजिताः ॥ क्रियालोपगतायेच येचांधाः पंगवस्तथा ॥ ते सर्वेवृत्तिः ॥ १६ ॥ विरूपाआमगाभौये ज्ञाताऽज्ञातकुलमम ॥ वृक्षगोनिगतायेच येचकीटपतंगकाः ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ १७ ॥ नरकैरौवेसर्वे महारौरवसंस्थिताः ॥ असिपत्रवेनोरे कुंभीपाकेचयेगताः ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ १८ ॥ स्वार्थबंधमृतायेच शस्त्रादिविषमोहिताः ॥ तेसर्वेवृत्तिमायांतु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ १९ ॥ ब्रह्महस्तेर्मृतायेच सिंहसर्पैश्च शृंगभिः ॥ चांडालेनमृतायेच पथिलोपगताश्चये ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ २० ॥ जलमध्येमृतायेच ह्यलामृत्युगताश्चये ॥ बंदीमध्येमृतायेच स्त्रीहस्तेनैवयमृताः ॥ तेसर्वेवृत्तिः ॥ २१ ॥ येचब्रह्माण्डखण्डेच वसंतिपितृदेवताः ॥ सर्वेचमानवानां आगताः पुच्छगोचरे ॥ तेसर्वेवृत्तिमायांतुगोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ २२ ॥ देवासुरास्तथायक्षाः नागागंधर्वराक्षसाः ॥ पिशाचागृह्यकाः सिद्धाः कूर्भांडास्तत्त्वखाः ॥ २३ ॥ जलेचराभूनिनलया वाय्वधाराश्चजंतवः ॥ प्रातिभेतेप्रयांत्वांश्चु मद्तेनाभुनाविलाः ॥ २४ ॥ आब्रह्मणोयेपितृवंशजता मातृस्तथावंशभवाप्रदीयाः ॥ वंशद्वयेस्मिन्ममदासभृता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ तेसर्वेवृत्तिमायांतु गोपुच्छोदकतर्पणैः ॥ २५ ॥ इतितर्पणं कृत्वा ॥ सर्व्येनाचम्य ॥ ॐ गालक्ष्मीः सर्वभूतानां याचक्ष्वेववस्थिता ॥ धेनुरुपेणसादेवी ममपापव्यपोहतु ॥ १ ॥

गावोममश्रतःस्तु गावोमसंतुष्टतः ॥ गावोमहृदयेसन्दु गवांमध्यवसायहम् ॥ २ ॥ इतिप्रार्थ्य ॥ गोपुच्छंशुभादीनिचादय ॥ ॐ  
 अद्याशौचांतद्वितीयेहि अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य स्वर्गकामः इमांसांस्वत्सां सुपूजितां पयस्विर्नासुवर्णशृंगीरौप्यसुरातप्रपृष्टां  
 वस्त्रयुगच्छन्नां कांस्यपानीयपात्रां पैतिलदोहां रुद्रदेवताममुकगोत्रायामुकशमणे ब्राह्मणयतुभ्यमहं संप्रदे इतिसंकल्प्य गोपु  
 च्छंसाक्षतकुशोदकंविप्रहस्तेदद्यात् ॥ ॐ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् ॥ ततः ॥ यज्ञसाधनभूतात्वं विश्वस्याघप्रणाशिनी॥ विश्वरूपधरोदेवः प्री  
 ययतामनागवा ॥ १ ॥ इतिप्रार्थ्य ॥ हस्तेसुवर्णदक्षिणामादय ॥ ॐअद्यकृतैतद्गोदानप्रतिष्ठायांमिमांसुवर्णदक्षिणामग्निदेवताममुकगोत्रा  
 यामुकशमणेब्राह्मणयतुभ्यमहंसंप्रदे इतिदद्यात्॥ततःप्रतिग्रहीताॐस्वस्तीत्युक्त्वायथाशस्वकोदात्कस्माऽऽदादितिकामस्तुतिपठेत्॥इतिगो  
 दानप्रयोगःसमाप्तः ॥ [ इदमेवगोदानं शिष्टाः सर्पेडनदिनेपि कुर्वन्ति ] ॥४॥ अथदुर्मरणमृतानां नारायणबलिप्रयोगः॥तत्रतावत्सूक्तान्तेस  
 र्वोपहारागृहीत्वा तीर्थपुण्यक्षेत्रे वा तडागादिसमीपेगवांगोष्ठे गृहेद्वालयेवगत्वा तत्रभूमिपरिकल्प्य गोमयेदकाभ्यामुपलिप्य ज्वलद्गारैः  
 संशोध्यगौरसृत्तिकयाऽऽच्छाद्यतत्रसामश्रींस्थापयेत् ॥ ततोयथाविधानम् ॥ अथ नद्यादिस्नानप्रयोगः ॥ तत्रतावन्नदीतडागादिकं गत्वा सुप्र  
 क्षालितततीरं स्नानोपकरणानि संस्थाप्य ततःपाणिपदंप्रक्षाल्य नाभिमात्रंजलंगत्वाकुशपवित्रहस्तोवद्विशिवआचामेत् ॥ ततोदेशकालोत्स  
 कीर्त्य॥ ममशरीरशुद्धयर्थमस्मादिभिरष्टास्नानानिकारये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ वामहस्तेदक्षिणहस्तेनयज्ञियभस्मगृहीत्वा पश्चादुदकमिश्रणा  
 नंतरं दक्षिहस्तेनसमर्घ्य आभिर्भजयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥ ॐ आग्नीरितिभस्म ॥ ॐवायुरितिभस्म ॥ ॐजलमितिभस्म ॥ ॐस्थलमितिभस्म  
 ॥ ॐ व्योमेतिभस्म ॥ ॐ सर्वेठः हवाइदंभस्म ॥ ॐभनएतानिचक्षुषिभस्मानित्यभिर्मंत्र्य ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूता

नाम् ॥ ब्रह्माधिपतिब्रह्मणाधिपतिब्रह्माशिवमेऽयमसदाशिवोम् ॥ १ ॥ ॐ ईशानायनमः ॥ इतिशिरसिमदयेत् ॥ ॐ तत्पुरुषायविद्महे  
महादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ २ ॥ ॐ तत्पुरुषायनमः ॥ इतिमुखेमदयेत् ॥ ॐ अधोरेभ्योऽधोरेभ्योऽधोरेभ्योऽधोरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः  
सर्वशर्भेभ्यो नमस्तेऽस्तुत्तुद्ररूपेभ्यः ॥ ३ ॥ ॐ अधोरायनमः ॥ इतिहृदये ॥ ॐ धामदेवायनमोऽप्येष्टायनमः ॥ त्रेष्टायनमरुद्रायनमः ॥ कलायनमः  
कलविकरणायनमो बलविकरणायनमः ॥ ४ ॥ ॐ वामदेवायनमः ॥ इतिउद्ये ॥ ॐ सुद्योजातं प्रपद्यामिसद्योजातायवैनमनमः ॥ भवे  
भवेनातिभवे भवस्त्वामो भवोद्भवायनमः ॥ ५ ॥ ॐ सुद्योजातायनमः ॥ इतिपादयामेदयेत् ॥ ॐ प्रसद्यभस्मनायांनिमपश्चपृथिवीमग्ने  
सठं सृज्यमातृभिर्द्वं ज्योतिष्मानुनामदः ॥ ६ ॥ इतिमंत्रेणप्रणवेनवा सर्वज्ञैचभस्मविलिपेत् ॥ ततःस्नान्वा आचम्य गोमयस्नानं  
कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ शुद्धगोमयमादायप्रणवेनदिसुद्रक्षिणभागं तोथैचोत्तरभागं प्रक्षिप्य ॥ शेषम् ॐ अग्रमथश्चरतिनामौषधिनारसं  
वने ॥ तासांबुषभपत्नीनां पवित्रंक्रयशोधनम् ॥ यन्मेरोगांश्चशोकांश्च पापंमहर्गोमेया ॥ १ ॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानो  
ऽअश्वेपुरीरिषः ॥ मानोऽवीराद्भुभामिनोव्वर्धहविष्मन्तःसदमिवाहवामहे ॥ २ ॥ इत्यभिमंत्र्य ॥ सूर्यायदर्शयिन्वा ॥ ॐ गंधद्रागदुराधः  
र्षां नित्यपुष्टांकीर्षिणीम् ॥ ईक्ष्वरसर्वभूतानां तामिहोपह्वयेथियम् ॥ इतिमंत्रेणदक्षिणहस्तगृहीतेन गोमयेन शिरसोनाभ्यंतंवाभस्तगृही  
तेनमंत्राद्वृत्या नाभितः पादयतंतविलयनिमित्तंस्वर्गमालिष्यस्नान्वाद्राचामेत् ॥ अथमृत्तिकास्नानम् ॥ शुद्धतीर्थमृत्तिकामादाय ॥ ॐ  
अश्वक्रांतैरथक्रातिविणुक्रांतैस्सुधरे ॥ मृत्तिकेहमेपापं यन्मयाकायसंचितम् ॥ १ ॥ उद्धृतासिवाहणेन कृष्णनशतवाहुना ॥ मृत्तिकेह  
येमेपापं यन्मयादध्मक्रांतम् ॥ २ ॥ नव्याहतेनपापने सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ इत्यभिमंत्र्य ॥ ॐ इदंविणुर्विचक्रमेत्रेयानिदेधेपदम् ॥ समूढमस्य

पा० सुस्वाहा ॥ ३ ॥ इति मंत्राणां शिरःप्रभृत्यङ्गानि विलिपेत् ॥ ततो द्विराचम्य शुद्धोदकस्नानं कुर्यात् ॥ ॐ आपो हि द्यामयो भुवस्तानऽ  
 उज्जैर्दधातुः ॥ महरेणाय चक्षुः ॥ १ ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयेते हनः ॥ उधर्तारि वमातरः ॥ २ ॥ तस्माऽअङ्गमाभवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥  
 आपो जनयथा च नः ॥ ३ ॥ इति स्नात्वा आचम्य पंचगव्यस्नानं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धियो रजः ॥ १ ॥ गंध  
 द्वा रेति गोमयस्नानम् ॥ ॐ गंधद्वारं दुराधर्षा निन्द्य पुष्पाङ्करीणि गमि ॥ ईश्वरी समभूतानां तामिह पदह्वये श्रियम् ॥ २ ॥ आप्यायस्वेति पयःस्नानम्  
 ॐ आप्यायस्व स मेतुते विवश्वतः सोमं वृण्व्यम् ॥ भवाव्याजस्य संगथा ॥ ३ ॥ दधिक्वाणोति दधि स्नानम् ॐ दधिक्वाणोऽअकारि षिञ्जणो रक्षस्य  
 व्याजिनः ॥ सुरभिर्नो मुखकारत्पणऽआयू ० पितारिणत् ॥ ४ ॥ तेजो सीत्याज्यस्नानम् ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि प्रियदेवा  
 नामनाधृष्टदेव्य जनमसि ॥ ५ ॥ देवस्यैति कुशोदकस्नानम् ॐ देवस्य त्वासवितुः प्रसवोऽश्विनो वाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ ६ ॥ एवं पंचग  
 व्यस्नानं कृत्वा ॥ पौराणिक मंत्रैः शुद्धस्नानं कुर्यात् ॥ १ ॥ विष्णुपादाब्जसंभूते गणैत्रिपथगामिनि ॥ धर्मइवेति विल्याते पापमेहरजाह्नवि ॥ २ ॥ तिस्रः क्रो  
 दयार्धकोटीश्च तीर्थानां वायुरब्रवीत् ॥ दिवि भुव्यन्तरेक्षे च तानि ते संतुजाह्नवि ॥ ३ ॥ नंदिनीत्येव तेनाम देवेषु नलिनीति च ॥ वृंदापृथ्वी  
 च सुभगा विश्वकाया शिवास्ता ॥ ४ ॥ विद्याधरी सुप्रसन्ना तथा लोकप्रसादिनी ॥ श्यामा च जाह्नवी चैव शान्ता शान्तिप्रदायिनी ॥ ५ ॥ एता  
 नि पुण्यनामानि स्नानकाले प्रकीर्तयेत् ॥ भवेत्सन्निहिता तस्य गंगात्रिपथगामिनी ॥ ६ ॥ इति स्नात्वा जले ॐ ऋतं च सत्यं ० १ इत्यधमर्ष  
 णम् ३ ॐ द्रुपदादिवैति च वारत्रयमावर्तयेत् ३ ॥ ततः स्नानं द्वातर्पणम् ॥ सव्येन ॥ प्राङ्मुखः ॥ ॐ ब्रह्मादयो देवास्तु यन्ताम् १ ॐ गौतमाद



युक्लपयस्तृप्यताम् १ इतिदेवतीर्थेनएकैकमजलिलेक्षिषेत् ॥ ततउद्दुमुखायज्ञोपवीतकंठेन॥ असनकादयोमनुष्यास्तृप्यताम् २ इति  
 प्रजापतितीर्थेन अंजलिद्वयंदद्यात् ॥ ततोपसव्येन दक्षिणमुखः कृष्णतिलोदकैः ॥ अकव्यवाडनलादयोदेवपितरस्तृप्यताम् ३ अअस्म  
 निपतृपितामहप्रपितामहास्तृप्यताम् ३ अअस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहस्तृप्यताम् ३ अअस्मन्मातामहप्रमातामहद्वद्रप्रमातामहास्तृप्य  
 ताम् ३ अअस्मन्मातामहीप्रमातामहीद्वद्रप्रमातामहस्तृप्यताम् ३ अअप्रह्लास्तन्जपयंतजगत्तृप्यताम् ३ इतिपितृतीर्थेनत्रास्त्रिनिजलीन्द  
 द्यात् ॥ एवंतर्पणकृत्वा अयनयादूपिततोयं मलैःआगिरसंभैः ॥ तस्यपपस्यशुद्धं यस्मैत्तत्तिलोदकम् ॥ १॥ इति यक्षमणेजलदंष्ट्रातिर  
 मागत्य ॥ अअग्निदग्धाश्चयेजीवा येऽप्यदग्धाः कुलेमम ॥ भूमौदेत्तेनतृप्यतु तृतायांतुपरांगतिम् ॥ १॥ इतिजलंजलिदेनिक्षिपेत् ॥ ततः  
 सव्येन आचम्य मूयायाध्वं दद्यात् ॥ अएहिस्त्वमहसांशो तेजोराशेजगत्पते ॥ अनुकंपयमादेव गृहणाध्यनमोस्तुते ॥ १ ॥ ततो जला  
 द्दहिनिष्क्रम्य अहतश्चेत्सदृशोर्वैष्णवीर्यायउपवस्त्रगृहीत्वा स्नानवस्त्रस्थलेनिष्पीडयत्रिचम्यगृहं गच्छेत् ॥ ( इदंस्नानंस्त्रीशूद्रात्यानां  
 नकार्थम् ) इतिनद्यादिस्नानप्रयोगः ॥ एवंनदीतडागादौस्वगृहे उद्धृतोदकेनवास्नात्वास्नानेप्राङ्मुखउपविश्यनूतनयज्ञोपवीतिधारणकु  
 र्यात् ॥ तद्यथा ॥ अबोत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य ममश्रौतस्मात्कर्मभुगुणानसिद्धर्थमुत्तकान्तेतूतनयज्ञोपवीतिधारणंकरिष्ये ॥ इति सकल्पः ॥  
 यज्ञोपवीतं प्रहात्य दशगागायत्र्याभिमन्त्र्य ॥ अंतच्छुदेवहितमिति मूसूर्याय दर्शयित्वा ॥ अयज्ञोपवीतं परमपवित्रं प्रजापतेर्यस्य सहजं पुस्ता  
 दगुण्यमग्र्यं प्रतिमुच्युभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ इति मंत्रेण यज्ञोपवीतं धृत्वा जीर्णविमृज्या चाभेत् ॥ ततश्चंदनादिना यथाचारं तिलकं कृत्वा पं  
 चगव्यप्राशनं कुर्यात् ॥ तत्रादौ पंचगव्यकरणप्रकारः ॥ गायत्र्या गोमूत्रम् १ अंगंधद्रां रंति गोमयम् २ अं आप्यायस्व वेति क्षीरम् ३ अं द

धिक्कावणेतिदधि ४ अ० तेजोसीत्याज्यम् ५ अ० देवस्यवेतिकुरोदकम् ६ चदत्वा प्रणवेनालोडय अ० यत्त्वगस्थिगतंपापं देहेतिष्ठतिमामके  
 प्रश्रानात्यं चगव्यस्यदहस्यगिरिवेधनम् १ इतिप्राशयेत् इतिपचगव्यप्राशनंकृत्वा ॥ आचमनंचकुर्यात् ॥ ततः संध्यादिनित्यक्रियासमाप्य  
 गोमयादिसंस्कृतेदेशपाकद्वयंकुर्यात् बांधवादिद्वारावाकारयेत् ॥ ततः कुशपवित्रादिधारणं कृत्वा आचम्यप्राणानायम्य ॥ अ० अपवित्रः  
 यवित्रोवा० १ अ० पुंडरीकाक्षः पुनान्वितिकुशत्रयानीतजलेनसंभारान्वात्मानंचप्राक्ष्य ॥ अ० सुमुखश्चैकंदंतश्चेत्यादिस्मरणपूर्वकगणेशनम्रहा  
 न्यूजयेत् ॥ ततो दुर्भरणनिमित्तप्रायश्चित्तं कार्यम् ॥ तद्यथा-देशकालौसंकीर्त्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अमुकदुर्मरणदोषपरिहारार्थं  
 तथा रोगोत्पत्तिमरणवासनेच्छाच्छिद्योभयोच्छिद्यऽयश्छिद्योभयोच्छिद्यऽकृतस्नानमरणमरणसमयहरिनामोच्चारवर्जिते संध्याशौचलोपआशौच  
 मरणे तुलसीतिलकुशगोपीचंदनगंगोदकक्षाननराहिते तथा मागेशववाहे अशौचदेशे सर्वपास्थिचर्ममैथ्यकेशमाजारसंमार्जनीरजस्वलादिसं  
 स्पर्शेऽतीर्थेदक्षिणायनेपंचकमध्ये त्रिपुष्करयमलयोगे राज्यतरिते रात्राकृष्णपक्षे परकाष्ठे पराग्निदाहे मुखे आज्याहुतिराहिते चितामध्यकी  
 टपतंगादिज्वलितादिदोषपरिहारार्थं कुगतिनिवारणार्थम् उत्तमगतिप्राप्त्यर्थं पंचदशप्राजापत्यात्मकंप्रायश्चित्तंतत्प्रतिनिधिरूपंप्रतिप्राजा  
 पत्यंगोमूल्यमथवा प्रतैप्राजापत्यममुकसहस्रपारिमितगायत्रीजपब्राह्मणद्वारायथाकालेनअद्यवाअहमाचारिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ गोमूल्यगा  
 यत्रीजपतीर्थयात्राब्राह्मणभोजनादिद्वाराप्रायश्चित्तंसंपादयेत् ॥ इतिप्रायश्चित्तसंकल्पः ॥ एवंप्रायश्चित्तंकृत्वा आचम्य पुनर्देशकालौसंकीर्त्यअमु  
 कगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थम् अमुकदुर्मरणदोषपरिहारार्थं सद्गतिप्राप्त्यर्थनारायणबलिकर्माहंकारिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ पुनः अ०  
 अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यामुकदुर्मरणदोषपरिहारार्थं ममनारायणबलिकर्माधिकारार्थं पुरुषसूक्तेन श्रीमहाविष्णुपूजनमहंकारिष्ये इतिसं

कलय ॥ ग्राह्यसंस्थस्यदिलेधेतवमोपारितङ्गुलरदलकृत्वा तन्मध्येताम्रकलशंस्थापयेत् ॥ तद्यथा-अमूरसिभूमिस्त्यदितिरसिनिधवाया  
 विवक्षयमुवनस्ययत्री॥पृथिवीयच्छपृथिवीदठरदृथिवीमाहिठं सीः इतिकलशाधारमूमस्पृष्ट्वा ॥ तत्र अ धान्यमसिधिनुहिदेवान् प्राणा  
 गन्वदानयत्वाव्यानयन्त्वा दीर्घामनुप्रासितिमाधुपेधान्देवोवन्सविता हिरण्यपाणिद्वितितृत्यात्वाच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुषत्वाग्रहानपयो  
 सि॥इति धान्यमभिभन्व्य तस्योपरि अ आजिघ्नकलशमद्वात्वा विशान्तिदेवः पुनरुज्ज्वलन्स्वसानः सहस्रधुरोहरापर्यवनीपुनर्मा  
 विंशताद्वयिरितिताम्रकलशंस्थापयेत् ॥ ततः अ व्वरुणस्योत्तममसि व्वरुणस्यस्कभसजनीस्थोव्वरुणस्यऽग्रहतस्तदैन्यसिर्व्वरुणस्यऽ  
 ऋतसदनमसिर्व्वरुणस्यऽग्रहतसदनमासीद् ॥ इति कलशेजलमापूर्य ॥ अ त्वांगंधर्वा अवतस्त्वामिन्द्रस्त्वाबृहस्पतिः ॥ त्वामौषधे  
 सोमोराजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥ इति गंधम् ॥ अथ्यऽओषधीः पृवीजातादेव्यस्त्रियुगपुरा ॥ मनैतुबभ्रुणमहठं शतयामानि  
 सप्तच इति सर्वौषधीः ॥ अ कांडात्कांडात्प्राहतीपरुपः परस्परि ॥ एवानोद्व्वप्रतनुमहस्रेणशतेनच ॥ इतिदूवाः ॥ अ अक्ष  
 त्यवानिषदनं पण्णं वसतिष्कृता ॥ गोभाजऽइत्कलसथयत्सन्तथरूपम् ॥ इति पंचपल्लवान् ॥ अ स्येनापृथिविनाभान्नक्षत्रानि  
 वेशनी ॥ यच्छानं शर्मसप्रथाः इतिसप्तमृदः ॥ अ याः फलिनोर्थाऽफलऽअपुण्याश्चपुष्पिणीः-बृहस्पतिप्रभृतास्तानो मुंचे

त्वठं हंसः ॥ इति पूगीफलम् ॥ ॐ परिवाजपतिः कविरग्निहोत्रान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति पंचरत्नानि ॥ ॐ हिरण्यग  
 भः समवर्तते भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांक्रमै देवाय हविषा विधेम ॥ इति हिरण्यम् ॥ ॐ सुजातोज्योतिषा  
 सहस्रमिव हथमा सदस्वः ॥ व्यासोऽग्नेविश्वरूपऽसंख्ययस्वविभावसो ॥ इति वस्त्रम् ॥ ॐ पूर्णादविपरापतनसुपुण्यपुनरापत ॥ व्यस्नेव व्यिक्री  
 णावहाऽऽषमूर्जऽशतक्रतो ॥ इति तंडुलपूर्णपात्रनिधाय ॥ ॐ मनोज्ञतिष्णता इति प्रतियुक्तत्वात् ॐ तत्त्वाया मिब्रह्मणा वंदमानस्तदशा  
 स्तेयजमानो हविर्भिः ॥ अहं हमानो व्यरुणे हवो ह्यदुःशठऽसमानऽआयुऽप्रमोषः ॥ ॐ भूभुवऽस्वऽवरुण इहागच्छ हतिष्ठ इत्यावाह्य  
 ॐ अपांपतिवरुणाय नमः इति वरुणपौडशोपचारैः संपूज्य कलशस्य मुखे विष्णुरित्यादितीर्थान्यावाह्य ॥ देवदानवसंवादे इति प्राथयेत् ॥ ततः तदुप  
 रिपट्टवस्त्रं प्रसार्य तत्र शालग्रामप्रतिमाम् अथ वा सुवर्णमयीं विष्णुमूर्तिम् अश्रुतारणं कृत्वा स्थापयेत् ॥ तत्र स्वर्णमूर्तिं श्रेण्मूर्तिपात्रे निधाय तदुपरि  
 दुग्धधारां जलधारां च पातयेत् ॥ मूक्तधारद्वयं पठेत् ॥ तत्र मंत्राः ॥ ॐ समुद्रस्य त्वावक्याग्नेरिव व्यामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यं ठशिबो भव ॥ १ ॥  
 ॐ हिमस्य त्वाजरायुग्नेरिव व्यामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यं ठशिबो भव ॥ २ ॥ ॐ अपामिदं ययनठऽसमुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्यांस्तेऽअस्म  
 त्पंतुहेतयः ॥ पावकोऽअस्मभ्यं ठशिबो भव ॥ ३ ॥ ॐ नमस्तेऽहरसे शोचिपे नमस्तेऽअस्वर्चिषा ॥ अन्यांस्तेऽअस्म त्पंतुहेतयः ॥ पावकोऽअस्म  
 भ्यं ठशिबो भव ॥ ४ ॥ ॐ ग्राणदाऽपानदा व्यानदा वज्रोदा वग्विवादाः ॥ अन्यांस्तेऽअस्म त्पंतुहेतयः ॥ पावकोऽअस्मभ्यं ठशिबो भव ॥

॥ ५ ॥ इत्ययुत्तारणसूक्तम् ॥ ततः पंचामृतेन संस्थाप्य ॐ मना जतिष्ठतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं  
 तनोन्वा रं ध्येयज्ञं स मिन्दधातु ॥ विश्वे देवासऽहमाद्यतामोऽभ्यप्रतिष्ठ ॥ १ ॥ एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञो यत्र ते नयज्ञे नयजते ॥ सर्वमेव प्रतिष्ठितं भ  
 वति ॥ २ ॥ इति पुष्पाणि विकीर्य ॥ स्वशरीरे तथा देवगोचं पुरुषसूक्त्या संकुर्यात् ॥ तद्यथा ॐ सहस्रशीर्षा ॐ इति वामहस्ते ॥ पुरुषऽएवेदं  
 इति दक्षिणहस्ते ॥ एतावानस्य ॐ वामपादे ॥ त्रिपादूर्ध्वं ॐ इति दक्षिणपादे ॥ ततोऽविराडजयत ॐ वामजानुनि ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्ववहुतः संभृतं ॐ दक्षि  
 णजानुनि ॥ तमाद्यज्ञात्सर्ववहुतऽऽक्रुचः ॐ वामकट्याम् ॥ तस्मादूर्ध्वं ॐ दक्षिणकट्याम् ॥ तं यज्ञं ॐ नाभौ ॥ यत्पुरुषं ॐ हृदये ॥ ब्राह्मणोऽस्य ॐ कंठे ॥  
 चंद्रमामनसो ॐ वामबाहौ ॥ नाभ्याऽऽसीत् ॐ दक्षिणबाहौ ॥ यत्पुरुषणं ॐ मुखे ॥ सप्तास्यासनं ॐ नेत्रयोः ॥ यज्ञे नयज्ञं भयं ॐ इति मूर्ध्नि ॥ एवं न्यासं  
 कृत्वा पूजनं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्रक्षेत्रः सहस्रक्षपात् ॥ स भूमिं ठमस्व तं स्पृत्वा स्याति षडशऽङ्गुलम् ॥ १ ॥ श्रीमहाविष्ण  
 वे नमः ॥ आवाहनं समर्पयामि ॥ ॐ पुरुषऽएवेदं तं स्वर्ग्यद्रुतं यज्ञं भाज्यम् ॥ उतामृतं त्वस्येशानो यदेव नानातिरोहति ॥ २ ॥ श्रीमहाविष्णवे नमः  
 ॥ आसनं मुमर्पयामि ॥ ॐ एतावानस्य माहिमातोऽज्ययाश्च पुरुषः ॥ पादोऽस्य विविधा भूतानि ॥ त्रिपादस्य स्मृतं दिवि ॥ ३ ॥ श्रीमहाविष्णवे नमः ॥ पादं  
 समं ॥ त्रिपादूर्ध्वं उदरं पुरुषः ॥ पादोऽस्येहाभवत्युनं ॥ ततोऽविष्वङ्मध्यक्रामत्साशाना नशनेऽभि ॥ ४ ॥ महाविष्णवे नमः ॐ अर्घ्यं ॥ ॐ ततोऽविराड्

जायतविराजोऽयिधिरूष॥ सजातोऽत्यरिच्यतपश्चाद्रुमिमथोपु॥५॥ श्रीमहाविष्णवे० आचमनीयं॥ अ० तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृत  
 म्पृषदुज्यम् ॥ प० शूस्तं श्रेक्रेव्याव्यानाण्याग्राम्याश्चयो॥ ६ ॥ श्रीमहाविष्णवेनमः॥ स्नानं समर्पयामि ॥ ततः अ० पथः पृथिव्यापयऽओषधेषु  
 पयोदिव्यन्तरिक्षेयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः संतुमह्वम् ॥ अ० महाविष्णवेनमः पथः स्नानं पुनः शुद्धोदकस्नानम् ॥ १ ॥ अ० दधिकाव्याऽअकारिषं  
 जिष्णोरश्वस्यव्याजिनः ॥ सु० भिनोमुखाकरत्प्रणऽआयू० पिता रिषतः ॥ अ० महाविष्णवे० दधिस्नानं शुद्धोदकस्नानं च ॥ २ ॥ अ० धृतं धृतपावानः  
 पिबतवसां वसापावनः पिबतारिक्षस्यहविरसिस्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽअदिशोदिग्भ्यः स्वाहा अ० महाविष्णवेनमः धृत  
 स्नानं शुद्धोदकस्नानं च ॥ ३ ॥ अ० मधुव्याताऽऽकृतयते मधुहरन्ति सिन्धवः ॥ मा० धीत्रिः सन्वौषधीः ॥ मधुनत्सुतोषसो मधुम  
 न्यार्थिवठ्ठजः ॥ मधुद्वोरस्तुनः पिता ॥ मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तुमूर्त्यः ॥ मा० धीर्गोवोभवन्तुनः ॥ ३ ॥ अ० महाविष्णवेनमः  
 मधुस्नानं० शुद्धोदकस्नानं च ॥ ४ ॥ अ० अपा० अ० समुद्रयसठं० सूर्यसन्तठं० समाहितम् । अपा० अ० सस्ययो रसस्तं वागृह्णाभ्युत्तम  
 मुपयामगृहीतोऽनिन्द्रायत्वजुष्टुह्लाभ्यपेतेयोनिर्निन्द्रायत्वाजुष्टतमम् अ० महाविष्णवेनमः शकरोदकस्नानं० पुनः शुद्धोदकस्नानं च सम  
 यामि ॥ ५ ॥ अ० वरुणस्योत्तं भनमसि वरुणस्य रंभसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऽकृतसदनस्य सि वरुणस्यऽऽकृतसदनमसि वरुणस्यऽऽकृत  
 सदनमासीद ॥ अ० महाविष्णवेनमः शुद्धस्नानं समर्पयामि ॥ ६ ॥ एवं चासुतेन संस्नाप्या पुरुषमूत्तेन शंसोदकेन अभिषेकं कुर्यात् ॥  
 अ० तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऽकृतस्नामानियज्ञिरे ॥ छन्दऽसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ श्रीमहाविष्णवेनमः वक्ष्मस०

वद्वान्तेऽचमनंसं ॥ ॐ तस्मादर्थऽअजायन्तयेवोभयादतः ॥ गावोऽह्यज्ञिरे तस्मान्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥ ८ ॥ श्रीमहाविष्णवे ०  
उपवीतं ० उपवीतं तैऽचमनंसं ० ॐ संयज्ञम्बाहिषिऽश्विनुरुषं जातमग्रतः ॥ तेन देवाऽअयजन्तस्याध्याऽऋषयश्च ये १ श्रीमहाविष्णवे नमः चंदनं  
सं ॥ ॐ यनुरुषं वदधुः ॥ कतिधाव्यकल्पयन् ॥ मुविद्धि मस्यासीत्किवाहू किमूहपादाऽउच्यते ॥ १ ० ॥ श्रीमहाविष्णवे नमः पुष्पाणि तुलसीपत्रा  
णि च स ॥ ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्ब्राह्मणं जन्म ॥ ॐ अरुतदस्य यद्वैश्यः ॥ पद्भ्याऽश्वद्वौऽअजायत ॥ ११ ॥ श्रीमहाविष्णवे ० धूपं ॥ ॐ  
चंद्रमामनसो जातश्चक्षुः ॥ मृग्योऽअजायत ॥ श्रोत्रोद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ १२ श्रीमहाविष्णवे ० दीपं स ॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षं ठी  
ष्णोऽद्वौऽसमवर्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः ॥ श्रोत्रात्तथाहोकोऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ श्रीमहाविष्णवे नमः नैवेद्यं स ॥ नैवेद्यान्ते आचमनंसं ॥ ॐ  
यनुरुषेण हविषा देवाय ज्ञमर्तन्वता ॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यं इन्द्राग्निमिधमऽध्वमः शरद्धविः १४ श्रीमहाविष्णवे नमः मुखवासांतूलं स ॥ ॐ हिरण्य  
गर्भेऽसमवर्तते ० इति दिक्षिणां ० (ततो नीराजनम्) ॐ सप्तार्या सत्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः ॥ देवाय ब्रह्म तन्वताऽअवधं न्युरुषमप  
नुम् ॥ १५ ॥ ॥ श्रीमहाविष्णवे नमः प्रदक्षिणां स ॥ ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्ते देवास्ता निधर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ तेह नो कर्म हि मानः  
स वन्त यत्र पूर्वेऽमाध्याः सान्त देवाः ॥ १६ ॥ श्रीमहाविष्णवे नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ॥ अथ नमस्कारः ॥ ॐ अद्रचः समभूतः पृथिव्यै

रसाच्च ॥ विश्वकर्म्मणस्समवर्त्ततात्रे ॥ तस्यत्वष्टाविदधद्रूपमेतितत्प्रत्यर्थस्यदेवत्वमाजानमग्रे ॥ १ ॥ ॐ ऋद्धाहमेतत्पुरुषम्महां  
 तमादित्यवर्णन्तर्भसः परस्तात् ॥ तमेवैवदित्वादिमृत्युमेतिनाह्यः पंथाव्विद्यतेयनाय ॥ २ ॥ ॐ प्रजापतिश्चरतिगर्भेऽन्तरजा  
 यमानोबहुधाव्विजायते॥तस्ययोनिर्यग्निर्धरास्तस्मिन्तस्थुर्भुवनानिर्विश्वा ॥ ३ ॥ ॐ यदेवेभ्यऽआतर्पितियोदेवानामगरोहितं॥  
 धूर्वोयोदेवेभ्योजातो नमोरुचायव्ब्राह्मये ॥ ४ ॥ ॐ रुचं ब्राह्मज्जनयन्तो देवाऽअग्रेतदंब्रुवच्चायस्त्वेवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशः॥५॥  
 श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे प्राश्नन् क्षत्राणि रूपाश्च नैव्यात्तं प्राद्विषाणां मुग्धऽइषाणसर्वलोकम्भइषाण ॥ ६ ॥ श्रीविष्णवे  
 नमः स्तुतिपाठसमर्पयामि ॥ अनेनोडशोपचारपूजनेन श्रीमहाविष्णुः प्रीयतामिति पठित्वा प्रायश्चित्तधेनुं दद्यात् ॥ अशक्तश्चार्थना  
 मेव कुर्यात् ॥ ॐ पुराकृतमयाधोरं ज्ञानविज्ञानिकल्विषम् ॥ जन्मतो वादिनयाव्रतस्मात्पापात्पुनर्हीनाम ॥ विष्णोस्तव प्रसादेन स्वर्गलोकं  
 सगच्छतु ॥ अपराधसहस्राणि लक्षकोटिशतानि च ॥ नश्यन्ति तत्क्षणादेव तव पूजनमात्रतः ॥ नारायणनस्तुभ्यं मूर्त्तामूर्त्तस्वरूपिणे ॥  
 वासुदेवमृत्सिंहाख्यः कपिलोदिव्यभूधरः ॥ वाराहाच्युतयज्ञेश लक्ष्मीकान्तामृतेश्वरः॥शार्ङ्गपाणेनमस्तुभ्यं यज्ञेशायनमो नमः ॥ इति प्रार्थना॥  
 अथनालिकेरणार्घ्यदानम् ॥ यज्ञेशच्युते देवेश सत्यरूपसनातन ॥ अनेनार्घ्यप्रदानेन सर्वपापाद्भिमोचय ॥ १॥ सत्येशायनमस्तुभ्यं पाप  
 द्नः परमेश्वरः ॥ मया दत्तार्घ्यदानेन प्रेतमुक्तिप्रदो भव ॥ २ ॥ इत्यर्घ्यदत्त्वा साष्टांगं प्रणमेत् ॥ अथ विष्णुतर्पणम् ॥ ताम्रपात्रे जलदुग्धसर्वौ  
 बध्यक्षततिलसुवर्णकृत्वा विष्णुमुद्दिश्य शिखेन तर्पयेत् ॥ तत्र संकल्पः ॥ ॐ अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य प्रेतवनिवृत्त्यर्थम् अमुकदुर्भरण



दोषविनाशार्थं सद्गतिप्राप्त्यर्थं श्रीविष्णुप्रसन्नार्थं विष्णुतर्पणमहंकारिण्ये इति संकलय ॥ ॐ सहस्रशीर्षा इत्यादिपुरुषसूक्तेनप्रत्यृच  
 संतर्प्य मेत्रांते सर्वत्र भगवान्पापहाविष्णुस्तुष्यतामिति पठेत् ॥ ततः ॐ विष्णुस्तुष्यताम् ॐ गोविदस्तुष्यताम् ॐ  
 ॐ केशवस्तु ॐ माधवस्तु ॐ श्रीधरस्तु ॐ हृषीकेशस्तु ॐ पद्मनाभस्तु ॐ पुरुषोत्तमस्तु ॐ अनिरुद्रस्तु ॐ  
 कर्पणस्तु ॐ वासुदेवस्तु ॐ जनार्दनस्तु ॐ अच्युतस्तु ॐ वामनस्तु ॐ भृङ्गदीक्षास्तु ॐ मधुसूदनस्तु ॐ दामो  
 दस्तु ॐ अनन्तस्तु ॐ श्रीकृष्णस्तु ॐ आदिदेवस्तु ॐ वैकुण्ठस्तु ॐ श्रीपतिस्तु ॐ गोपालस्तु ॐ त्रिविक्रमस्तु  
 ॐ नारासिंहस्तु ॐ रामचंद्रस्तु ॐ नारायणस्तु ॐ पीतांबरस्तु ॐ त्रिपुरान्तकस्तु ॐ चतुर्भुजस्तु ॐ परमेश्वरीतु ॐ  
 ॐ परमेश्वरस्तु ॐ हिरण्यगर्भस्तु ॐ जगन्नाथस्तु ॐ अंगदाधरस्तु ॐ गरुडवाहनस्तु ॐ मुकुंदस्तु ॐ धरणीधरस्तु ॐ  
 देवकीनंदनस्तुष्यताम् ॥ ॐ पापपहमहाविष्णुस्तुष्यताम् ॥ ॐ अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षयः पुंडरीकाक्षः  
 प्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ १ ॥ ॐ विष्णुस्तुष्यताम् ॥ कृष्णकृष्णकृपालोत्थमगतीनिंगतिप्रद ॥ संसारणवमग्नानां प्रसिद्धपुरुषोत्तम ॥  
 ॥ २ ॥ विष्णुस्तु ॥ नारायणसुश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्तवरप्रद ॥ अनेनतर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ ३ ॥ जयवंदेवदेश जयजन्मज  
 यक्षर ॥ जयकाप्रदभक्तानां प्रभोविष्णो नमोस्तुते ॥ ४ ॥ हिरण्यगर्भपुरुष प्रधानव्यक्तिहृषिणे ॥ ॐ नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वरूपिणे ॥  
 ॥ ५ ॥ अच्युतानंतगोविंद विष्णोमाधवकेशव ॥ अस्यजीवस्यमोक्षार्थं सुप्रीतोभवतर्पणात् ॥ ६ ॥ अतस्त्रिपुण्यसंकाशं पीतवाससमच्यु  
 तम् ॥ येनमस्यतिगोविंदं नतेशविद्योतभयम् ॥ ७ ॥ इति संतर्प्य अमुकगोत्रस्यप्रेतवानिवृत्त्यर्थं सद्गतिप्राप्त्यर्थम् अमुकभरणनिमित्त

नारायणबलौ कृतैर्तद्विष्णुतर्पणसांगतासिद्धयर्थं दास्यमानांयशस्विनीं धेनुम् अथवा तन्मूल्यापकल्पितं द्रव्यंमनसोद्दिष्टम् असुकोगोत्राय प्रेताय कस्मैचित् ब्राह्मणायमदत्तमुपतिष्ठतामिति गोदानं कुर्यात् ॥ अनेनतर्पणेनश्रीमहाविष्णुः प्रीयतामिति पठेत् ॥ इति विष्णुतर्पणम् ॥ तैत्तिविष्णोर्दक्षिणभागप्राक्संस्थितं पंचकलशस्थापनम् तत्रादौदेशकालोत्सर्ग्य ॐ असुकोगोत्रस्यामुकप्रेतस्यअसुकुदुर्मरणनिमित्तनारायणबलिकभागतया विहितं पंचकलशपंचदेवतानां स्थापनं प्रतिष्ठापृजनचक्ररिष्ये इति संकल्प्यस्यांदिले पूर्वपश्चिमात्तद्दक्षिणमध्ये पुष्टकथयत् भूरसिंभिरसीत्यादिपुस्तकैर्मंत्रैः क्रमेणपंचकलशानंस्थाप्य तेषुब्रह्मादीनां पंचप्रतिमाअधुतागणपूर्वकंसंस्थापयेत् ॥ ब्रह्मरौप्यमयःकार्यौ विष्णुःस्वर्णमयोभवेत् ॥ रुद्रस्ताम्रमयःकुर्याद्यमोलोहमयःस्मृतः ॥ ससिक्स्तु भवेन्नैतो ह्यथवादर्भकस्तथा ॥ १ ॥ पंचकलशेपंचधान्यानांस्थापनमात्तब्रह्मकलशे गोधूमाः श्वेतवस्त्रं विष्णुकलशे तंडुलाः पीतवस्त्रं रुद्रकलशे मुद्गाः रक्तवस्त्रं यमः कलशे मायाः कृष्णवस्त्रं प्रेतकलशे तिलाः कृष्णवस्त्रंच इति॥अथावाहनमन्त्राः ॥ पूर्वकलशे ॐ अग्निमीळेपुर्वाहितंयज्ञस्यदेवमुत्विजम् ॥ हांतरात्तथातमम् ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मज्ज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीं मृतसुरैर्चा वेनऽर्वावः ॥ सवुध्याऽऽपमाऽअस्यविष्टाः सतश्च्योनिमसेतश्चविवः ॥ २ ॥ ॐ अस्मिन्कलशे भगवन् ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणेनमः ब्रह्माणं स्थापयामि ॥ इति स्थापयेत् ॥ १ ॥ पश्चिमे ॐ

१ अत्र केषुचिदुक्तैरेषु सत्येयपूजनं लिखितं तदथा-अद्येत्यादि० पत्न्या-सत्येयस्यापनतिष्ठापूजां करिष्ये इति प्रकृत्य पूर्वोक्तपदद्वयमेव ईशानादिभ्यो अमूर्तुः स्वः सविमये नमः सत्येयमावाहयामि स्थापयामि १ एवं सत्येयमां २ जांबवतीं ३ नर्मिकीं ४ कौलंडां ५ मित्रविहां ६ लक्ष्मणां ७ चारुहासिनीं ८ च आवाहायंस्थाप्य मध्ये पूर्वोक्तस्थापिते कलशे सत्येयप्रतिमां संस्थाप्य पुरुषमुक्तेन पीड्योपचारैः पूजयेत् ॥

इषेत्येतेषां वायव्यस्थेदेवैः सविताप्रापयतु श्रुतमायकर्मणऽआप्यायध्वमध्वयाऽइन्द्राद्यभागं प्रजावितेरनमीवाऽअयश्मामावस्तु न इति शतु  
 माघशठः सोऽध्ववाऽअस्मिन्नागोपतौ स्यात्बर्ह्यज्यजमानस्य पशून्गाहि ॥ १ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूहमस्य पाशं  
 सुरे ॥ २ ॥ ॐ अस्मिन्कलशे भगवन्विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ इति स्थापयेत् ॥ २ ॥ उत्तरे ॐ अग्नऽआयो हि यो ते यशानो हव्यदातये ॥  
 निहोता स त्सि बर्हिषि ॥ १ ॥ ॐ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ २ ॥  
 अस्मिन्कलशे भगवन् रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ इति स्थापयेत् ॥ ३ ॥ दक्षिणे ॐ शत्रो देवीरभिष्टयऽआपो भवतु पीतये ॥ शय्यो रभिस्रवन्तु नः  
 ॥ १ ॥ यमाय त्वाभवाय त्वाभूय स्य त्वापसे देवस्त्वा सविता मध्वान्कुपृथिव्याः ॥ मरुः स्पृशेत्स्याहि औचरिं शोचि रसि तपोसि ॥ २ ॥  
 अस्मिन्कलशे भगवन् यम इहागच्छ इति स्थापयेत् ॥ ४ ॥ मध्य (अपसव्येन) ॐ अक्रन् क्रम्य क्रम्य कृतः सहवाचा मयो भुवा ॥ देवेभ्यः कर्मभूक्त्वा  
 स्तं प्रेतस चाभुवत् ॥ १ ॥ ॐ प्रताप्य जयतां नऽइन्द्रं विश्वार्मयच्छता ॥ २ ॥ संतु बर्हो नाधृष्याथासथ ॥ २ ॥ ॐ अस्मिन्कलशे भगवन् तपुरुष इ  
 हागच्छ इह तिष्ठ ॐ तपुरुषाय नमः तपुरुषं स्थापयामि इति स्थापयेत् ॥ ५ ॥ वपंच देवतां न स्थापनं कृत्वा ॥ ॐ भर्ता भूतिं क्षिप्रतामा ज्यस्य बृह  
 स्पतिर्यज्ञमि मन्ते नो त्वा रय्यं जठं ॥ समि मं दधातु ॥ विश्वे देवाऽइह मादयन्तामो देव्यतिष्ठ इति प्रतिष्ठाप्य ॐ सहस्रशीर्षा इति पुरुषमूक्तेनाममंत्रेण

वा प्रत्येकं षोडशोपचारैर्गौर्वाण्योपचारैर्वैष्णव्यं प्रार्थ्यं पंचनारिकेलान्समर्प्य अनेन पूजनेन ब्रह्मा इत्यो देवाः प्रीयतामिति पिठिका विष्णुं  
 रेतु ॥ जितंतुण्डरीकाक्षं नमस्ते विश्वभावन ॥ नमस्तुभ्यं हृषीकेश महापुरुषपूर्वज ॥ १ ॥ अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अव्ययः  
 पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ २ ॥ इति प्रार्थ्यं पंचदेवतासूक्तं पठनार्थं पंचब्राह्मणान्वृणुयात् ॥ ते च ब्रह्मकलशे ॐ तेजोमि शुक्रममृतमित्यादि द्वा  
 विंशध्याये प्रोक्तं ब्रह्मसूक्तम् ॥ १ ॥ विष्णुकलशे ॐ सहस्रशीर्षा इत्यादि पुरुषसूक्तम् अ० ३१ ॥ रुद्रकलशे ॐ नमस्तै रुद्र इति रुद्राध्यायम् अ० १६  
 ३ ॥ यमकलशे ॐ तदेवाग्निस्तदादित्या इत्यादि द्वाविंशध्याये प्रोक्तं यमसूक्तम् ॥ ४ ॥ तत्पुरुषकलशे ॐ अपेतार्यं तु पण्यो इत्यादि पंचविंशध्याये  
 प्रोक्तं प्रेतसूक्तं च पठेयुः ॥ गायत्री-पंचाक्षर-द्वादशाक्षर-अष्टाक्षर-महामृत्युंजय-सूक्तानि च जपेयुः ॥ अथ पंचदेवतानां तर्पणम् ॥ तान् ब्रह्मपात्रे  
 जलदुग्धतिलचंदनसर्वाणि धत्वा देशकालौ संकीर्त्य ॐ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेततर्पणं विवृत्यर्था परलोके कर्महातृपानि वारणार्थं ममुक  
 दुर्भरणदोषं निवृत्यर्थं ब्रह्मादिदेवानां स्वैः स्वमंत्रैस्तर्पणं करिष्ये इति संकल्प्य पात्रस्थितं ब्रह्मसूक्तं शंखेन तर्पणं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॥  
 ॐ ब्रह्मजज्ञानमर्थमभ्यस्य भूरस्तादिसिभितः सुरुचोर्वेन ॐ आ वत्सुभ्याऽऽपमाऽस्य विष्टाः सतश्च्योनिमसतश्च विवर्धनः ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मा तृप्य  
 ताम् ॥ ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणे ब्रह्मवच्ची जायतामरागैर्गोत्रज्यं ह्यु  
 पुरिन्त्र्ययोर्गोत्रिष्णूश्चैष्टुः स मे भोग्युवा स्य यजमानस्य वीरो जायतां निष्कामाः कामेन तर्पन्त्येव्यपु फलकृत्या नऽओषययः पच्यन्तां यवो  
 गक्ष्मो नः कल्पताम् ॥ २ ॥ ब्रह्मा ॥ ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजस्य भर्तुर्व्येथ्यन्तं पसेद्वा द्रुतमसतः क्रत्रारकाय वीरहरणं ग्नाभनं क्ते

वमक्रियायाऽऽयोगाङ्कमायपूँश्चलूमातृदृष्टमागधम् ॥ ३ ॥ ब्रह्मातृ० ॥ ब्रह्मणमद्यविद्वद्यमित्तमन्तर्गतमन्यमृषिमप्ययः सु  
धातुदक्षिणम् अस्मद्भातादेववा गच्छतत्प्रदातरमाविशत ॥ ४ ॥ ब्रह्मणासः पितरः सोम्यासः शिनेनाद्याष्टयिविऽअनेहमा ॥  
पुषानः पातुदीतहतावृधोरक्षामा किन्नाऽअवशठ० सऽइशत ॥ ५ ॥ ब्रह्मणस्पतेत्वमस्ययन्तामृतस्यबोधितनयश्चजिन्व ॥ वि  
श्वंतद्रुद्रयद्वन्तिदेवावृहद्वदमा विद्वथसुवाराः ॥ यऽइमाविश्वाविश्वकर्मभार्योनेऽपिताव्रपतेत्रस्यनादिहि ॥ ६ ॥ ब्रह्मणोस्यसुखमासी  
द्बहुराजव्यवृत्तः ॥ अरुतदस्ययद्वथः पद्मा० शुद्रोऽअजायत ॥ ७ ॥ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेदेवयन्तस्त्वमेहे ॥ उपप्रयन्तुमरुतः मुदानवऽइन्द्र  
प्राभूवभासचा ॥ ८ ॥ युजेवाब्रह्मपूज्यन्नमोभिर्वि० श्योकेऽ एतुपथ्येवमूर्धा शृण्वतुविश्वेऽअमृतस्यपुत्राऽआयेयामानिदिव्यानितस्त्युः ॥ ९ ॥  
तत्वायामिब्रह्मणव्वन्दमानमरुतदु शस्तेयजमानाहविभिः ॥ अहदमानोव्वरुणहोषधुराठसमानऽआयुः प्रमोषीः ॥ १० ॥ ब्रह्मक्षत्रमय  
वतेजऽइन्द्रियऽसुरयासोपः सुतऽआसुतोमदाय ॥ शुक्रणेदेवकृताऽपिपृग्धरसेनाय्यजमानायधेहि ॥ ११ ॥ ब्रह्मसूर्यसमज्यातिर्बोः  
समुद्रसमऽसरः ॥ इन्द्रः पृथिव्यैवर्षायाश्चास्तुमात्रानिर्वह्यते ॥ १२ ॥ रुचब्रह्मजनयन्तोदेवाऽअग्रतेदुवृत्रन् ॥ यस्त्वैवब्रह्मणोविद्यात्तस्य  
देवाऽअसन्वशे ॥ १३ ॥ ब्रह्मणिमेमतयऽशठसुतासऽध्मऽइयतिप्रभृतामेऽअद्रिः आशमेतेप्रतिहर्थयन्तुष्वेकमाहारिव्वहस्तातोऽअ

च्छ ॥ १४ ॥ प्रैतुब्रह्मणस्पतिः प्रदेव्यैतुमुत्तुता ॥ अच्छं व्वीरुय्यग्याङ्गिरावसन्देवा यज्ञन्नयन्तुनः ॥ १५ ॥ अनेनतपेणनब्रह्माप्रीयताम् ॥  
अथविष्णुतर्पणम् ॥ तत्रमंत्राः ॐ ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाशसुरे ॥ ॐ विष्णुस्तुष्यताम् ॥ १ ॥ ॐ युजते  
मनऽतयुजते धियोविष्णोर्विष्णुबृहताविष्पाश्रितं ॥ विव्वात्रादधेवयुनावेकइन्द्रमहादेवस्यसवितुः ॥ १ ॥ इरावती धनुमती  
हिमरुतः भूयवसिनीमनवदशस्या ॥ व्यरद्वन्नारोदसीविष्णवेतदाथप्रथिवीमभितो मयूखः ॥ २ ॥ देवश्रुता देवैकावोपतभ्याचोप्रातमद्व  
रद्वुरयन्तीऽच्छ यज्ञन्नयतमाजिह्वतम् ॥ स्वङ्गोष्णमावददेविदुयऽआयुम्मानिर्व्यादिदृष्टप्रजाम्मानिर्व्यादिदृष्टमत्रमेयान्वम्भश्रुथिव्याः  
॥ ३ ॥ दिवावाविष्णुऽतवापृथिव्यामहावाविष्णुऽरुरोरेरिक्षात् ॥ उमाहिरस्तावसुनापृणस्वाप्रयच्छदक्षिणादोतसव्याद्विष्णवे  
त्वा ॥ ४ ॥ विष्णोर्नुकं वीर्याणिप्रधोच्यः पार्थिवाविष्ममेरजाऽसि ॥ योऽअस्कभायदुतरऽसुधस्थं विचक्रमणस्त्रिधोरुगायो वि  
ष्णवेत्वा ॥ ५ ॥ पराद्विष्णुस्तवोव्वीर्येणमुगोनभीमः कुचरागिरिष्ठाः ॥ यस्योरुषुत्रिषुविचक्रमणेष्वधिक्षियन्तिमुवतानिविक्शः ॥ ६ ॥  
विष्णोराटमसिविष्णोः शत्रेऽस्थोविष्णोः स्यूरसिविष्णोः ध्रुवोसिविष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ७ ॥ तद्विष्णोः परमंपदठः सदापश्य  
न्तिमूर्यः ॥ दिवावचक्षुराततम् ॥ ८ ॥ विष्णोः कम्भाणिपश्यतयतोव्वतानिपश्यशे ॥ इन्द्रस्ययुज्यः सखा ॥ ९ ॥ त्रीणिपदाविचक्रमे

[illegible]

आनऽइडाभिर्विदेयं ॥८॥ यदद्य कथं व्यवहृद्गुणं ॥९॥ तरणिर्विश्वदेशतो ॥ १० ॥ तत्सूर्यस्यैव तन्महिम् ॥ ११ ॥ तन्निर्म  
 न्नस्यैव रूपस्य ॥ १२ ॥ बणमहांऽसि ॥ १३ ॥ वदसूर्यश्रवसां ॥ १४ ॥ श्रयन्तऽवसूर्यम् ॥ १५ ॥ अद्यैव वाऽर्हितां ॥ १६ ॥  
 आकृष्णनरजसावर्त्तमानो ॥ १७ ॥ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोऽप्येव नमः बहुभ्यऽमुते नमः ॥ १८ ॥ रुद्रस्तृप्यताम् ॥ याते रुद्र  
 शिवात्तद्वर्धोर्वापकारिणी ॥ तद्योनस्तन्वाशान्तमयागिरिशन्तो भिचाकशीहि ॥ २ ॥ इमारुद्राय तव भूकपाद्देने अयदीराय प्रभरासहे  
 मतीः ॥ यथाशमसद्विपदे च तुष्णदे विष्णुश्च मृदुद्व्यामेऽस्मि भर्तृनातुरम् ॥ ३ ॥ अमरुद्राया तासहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम् ॥  
 तेषां सहस्रयोजनेनैव न्वानितमसि ॥ ४ ॥ नीलेऽग्नीयाः शितिकण्टादिवर्त्त रुद्राऽउपश्रिताऽहो तेषां सहस्रयोजनेनैव न्वानितमसि ॥  
 एतैरुद्रावसन्ते नरो मूर्जवतोऽर्हि ॥ अवततवन्वापि नाकावसः कृत्तिवासऽअर्हिऽसहः शिवोऽर्हि ॥ ५ ॥ अवरुद्रमदीमसु ब्रह्मदेव्यन्व  
 कम् ॥ यथानोव्वस्यसस्करद्वयानः श्रयसस्करद्वयानोव्ववसाययात् ॥ ७ ॥ एयते रुद्रभागः सहस्वसाभिः कया तज्जुगस्वस्वोऽप्येते रुद्रभा  
 गऽआसुस्तेषु ॥ ८ ॥ असौ यास्ताम्राऽअरुणऽउत वज्रः सुमङ्गलः ॥ येष नठः रुद्राऽअभिर्भो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वै पाऽहेऽर्हि मे ॥ ९ ॥  
 मानस्तोके तनयमानऽआयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषु रारिषः ॥ मानो वीराऽद्रुद्रभाभिर्नोव्वधीर्विष्मन्तः सदीमन्वाहवामहे ॥ १० ॥



नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कुराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ११ ॥ परिणोरुद्रस्य हेति गृण्य कुरु परिचेष  
 स्य दुर्मतिरिवायोऽवस्थिरामध्वस्तनुष्वमीदृक्स्तोकाय तनयाय मृद ॥ १२ ॥ पुनस्त्वादित्या रुद्रवसवः समिधतामपुनर्ब्रह्मणेव  
 मुनीययज्ञैः धृतेन तन्तन्वक्वद्वयस्य न्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ १३ ॥ ववधुस्तनारुद्रोऽभ्यस्त्वादिन्येभ्यस्त्वासाञ्जनाथान्या  
 वापृथिवीभिर्वावरुणैस्त्वावपृथवा ताम् व्यन्तु व्ययेक्तं ० रिहणामरुताम्युधतीर्गिच्छवशापृथुभूत्वादिवद्विच्छततोर्नवृष्टिमावहचक्षु  
 व्याऽअग्नीमिचक्षुर्मपाहि ॥ १४ ॥ रुद्राः सृष्टं मृज्यपृथिवीम्बृहज्यातिः सर्माधिरोति पाभमनुरजस्रइच्छुत्रो देवेषु रोचते ॥ १५ ॥ अनेन तप  
 णेन रुद्रः प्रीयताम् ॥ अथ यमतर्पणम् ॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वतोऽपितृभते स्वाहा स्वाहा वभर्माय स्वाहा यभर्माः पित्रे ॥ १ ॥ ॐ यमस्तृप्यताम् ॥  
 यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ब्रह्मेण स्वाहा ब्रह्मन्त्याय स्वाहा विक्षेभ्या देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥  
 मायैवाभवाय त्वाह्वयैव्यत्वा तपसे देवस्त्वा सवितामध्वानकुरुपृथिव्याः सृष्टं स्पृशस्पाहि ॥ अर्चिः सिरोचिरसितपोसि ॥ ३ ॥ यमेन  
 दत्तात्रितान्मायुनिर्द्रुणमथ माऽअद्वयातिष्ठत् ॥ गन्धर्वाऽअस्मशनामृगान्सुरादंश्च वसवान्निरतः ॥ ४ ॥ असि यमोऽअस्यादि  
 त्योऽअव्वन्नसि त्रितोर्ब्रह्मन क्रतेन ॥ असि सोमसमया विपुक्तऽअहुस्ते त्रीणि विविबन्धानि ॥ ५ ॥ मयैव यस्तापक्राधायिनि सूर्यो गायो

कार्ठं शोकायाभिस्तारङ्गमयि विमोक्षारमुत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्टिनवपुषमानस्कृतं ॥ लायाजनीकानीनिर्झर्यैकोशकारीयमाया  
 सुम् ॥ ६ ॥ यमाययममथव्योव्योवोकाऽसंवत्सरायपय्यायिणिम्पारिवत्सरायाविजातिमिदवत्सरायाती त्वरिमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीव  
 त्सरायव्विजर्जाऽसंवत्सरायपालीकामुभययोजिनसंधर्ठं साद्व्येभ्यश्चर्ममनम् ॥ ७ ॥ योदेवाऽयग्निनेत्राऽपुरऽसदस्तेभ्यऽस्वा  
 हायेदेवायमनेत्रादक्षिणासदस्तेभ्यऽस्वाहायेदेवाव्विधेदेवेनेत्राऽपश्चात्सदस्तेभ्यऽस्वाहायेदेवा मित्रावरुणेनेत्रावामहेनेत्रावोत्तरासदस्ते  
 भ्यऽस्वाहायेदेवाऽसोमनेत्राऽउपरिसदोदुवस्वन्तस्तेभ्यऽस्वाहा ॥ ८ ॥ क्रव्यादमग्निमग्निहिणोमिदूर्यमराज्यद्वच्छतुरिंप्रवाहऽइहे  
 वायमिनेत्राजितवेदेवेभ्योहव्यव्वहेतुप्रजाजनम् ॥ ९ ॥ अनेनतपणेनयमः प्रीयताम् ॥ अथतत्पुरुषतपणम् ॥ अक्रन्कम्भकम्भ  
 कृतः सहवचामयोमुवा ॥ देवेभ्यऽकम्भकृत्वास्तभ्रतसचामुवा ॥ १० ॥ अतत्पुरुषस्तप्यताम् ॥ प्रताजयतानऽइन्द्रोऽश्वार्भयच्छतु ॥ उ  
 ग्रावः सन्तुवाहवोनाधृष्यायथासथ ॥ ११ ॥ रूपेणिविरूपमभ्यागांतिथोविश्वेवदिविभजतुऽकृतस्यपथाप्रतेचन्द्रदक्षिणाव्विस्यत्पश्य  
 व्यन्तक्षिपतस्वसदस्यैः ॥ १२ ॥ यदाकृतात्समसुस्तोद्वदेवामनसोवासम्भृतश्शुषोवा तदनुप्रेतसुकृतोमुलोकेयन्ऽअहयोजगमुः प्रथ  
 मजाऽपुराणः ॥ १३ ॥ योऽअग्निऽकव्यवाहनऽपितन्यक्षदत्तावृधः ॥ प्रदुहव्यानिवोचितदेवभ्यश्चपितुभ्यऽआ ॥ १४ ॥ प्रेद्रे  
 ज्योतिष्मात्राहाशिवेभिभिष्टम् ॥ बृहद्विभानुभिभिसस्तन्माहिर्ऽसीस्तन्वाप्रजाऽ॥ १५ ॥ अपेतव्योतिव्वचस्पतातो येन

स्थपुराणा येचवृत्तनाः अदधामोवसानमपुच्छव्याऽ अक्रत्रिमिपतरालोकमस्मै ॥ ७ ॥ अपेतो येन्तुणयोसुम्भना देव  
पीयवं ॥ अस्यलोकाः सुतावतंशुभिरहोभिर्युभिर्व्यक्तय्यमोददात्ववसानमस्मै ॥ ८ ॥ येदेवाऽअग्निनेत्राहुरासदस्तेऽव्यः स्वाहायेद  
वायमनेत्राक्षिणासदस्तेऽव्यः स्वाहायेदेवाक्विंशेदेवनेत्राप्यश्वासदस्तेऽव्यः स्वाहायेदवाशिवावरुणेनेत्रावामरुद्रैवात्रासदस्तेऽव्यः  
स्वाहायेदेवाः सोमनेत्राऽऽरपरिसदुर्वस्वन्तस्तेऽव्यस्त्वाहा ॥ ९ ॥ अनेनतपेनश्रितयुरुपः प्रीयताम् ॥ इति तत्पुरुषतपणम् ॥ ततः  
पंचदेवतानां तपणपरिपूर्णास्तु ॥ अनेनपंचदेवतानांतपणं कृतेन अमुकगोत्रस्य अमुकप्राप्त्य अमद्वृत्तिविनाशः सहतिप्राप्तिश्चभवतु ॥  
इति पठित्वाधेनुतन्मूल्यदक्षिणां दद्यात् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ तत्रादौ आचम्य प्राणानामप्य देशकालौ संकीर्त्य ॥ अस्मिन्नाय  
णबलिकर्मणि पंचभू संस्कारपूर्वाग्निप्रतिष्ठापनं करिष्ये इति संकल्प्य तत्रहस्तपरिभितचतुरक्ष्यडिलंकृत्वाकुशः परिसमुद्यतौशनस्य  
निक्षिप्य गोमयेनोपलियसुवमूलेन प्रादेशमात्रमुत्तरांतरक्रमेण प्राग्रग्रं त्रिच्छल्य उल्लेखनक्रमेण अनाभिकां गुग्गुभाभ्यामुदंसमुद्धृत्य ॥ उदके  
नाभ्युदय कांस्यपात्रेणाग्निसुप समाधाय स्थंडिले अग्निदूतभूरोदधेहव्यवाहसुपुत्रे ॥ देवाँऽऽसादयादिह ॥ १ ॥ इति मंत्रेणस्थाप  
येत् ॥ ततः अन्यानीतप्रात्रे साशतेदं किंचिदप्य आग्नेध्यायेत् ॥ अं वज्राँऽधृद्गुत्रयोऽस्य पादद्वेशीपसतहस्तासोऽस्य ॥ त्रिधांबदे  
धूपभोरार्वीतिमहेदेवामन्थोऽआं विवेश ॥ १ ॥ अग्नेवश्चानर शाँडिल्यगोत्र शाँडिल्यासितदेवलेति त्रिप्रशान्वित भूमिमांतवरुणः पिता

मेपध्वजप्राङ्मुखमसन्मुखोभवद्विति विटनामाश्रयप्रतिष्ठाप्यश्रोक्षितन्वनानि निक्षिपेत् ॥ ततः ॐ अद्यकर्तव्यनारायणवल्लोहमर्मणिक्क  
 ताकृतावेशणरूपब्रह्मकर्मकर्तुममुक्तेनाश्रममुकशर्माणब्राह्मणमभिः पुष्पचन्दनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेनत्वामहं वृणेदिति ब्रह्माणं वृणुयात् ॥ वृत्तो  
 स्मृतिप्रतिवचनम् ॥ यथाविहितकर्मक्षुर्वितियजमानोक्तेकरवाणीति तेनोक्ते ॥ अग्रेदक्षिणतः शुद्धमासनं निधाय तदुपरि प्रागग्र्याङ्कुशानां  
 स्तीर्थं अग्निर्दक्षिणं कारयित्वा ब्राह्मणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य अस्मिन् नारायणबलिकर्मणि त्वमेव ब्रह्मा भव इत्यादिभाष्य भवानीति तेनोक्तं प्रणी  
 तार्थप्रागग्र्यः कुशैर्भूरुत्तरतः आसनद्वयकल्पयित्वा प्रणीता पात्रं भुतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य पश्चिमासने निधा  
 याऽऽलभ्य धूर्वा सने स्थापयेत् ॥ ततः परित्तरणम् ॥ बहिर्पश्चत्तुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानां तं ब्रह्मणो शिंपय्यंतं नैर्ऋत्या द्वायैव्यां तमाश्रित  
 प्रणीतां पच्यंतं ततोऽग्निरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनाथं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थमाश्रमन्तं तर्गमेकशः पत्रद्वयं श्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थालीचरु  
 स्थालीसंभार्जनार्थं कुशत्रयम् उपयमनार्थं कुशत्रयं प्रदेशमितपलाशसमिधस्तिष्ठः सुवः सुचः आज्यं च वर्थास्तंडुलाः तंडुलपूर्णपात्रं दक्षि  
 णावरोवा एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयानि ॥ ततः पवित्रच्छेदनकुशः यजमानप्रादेशमिति पवित्रच्छेदनम् सपवित्रकरे  
 ण प्रणीतोदकं त्रिभ्रोक्षणीपात्रेन धाय द्वाभ्यामनामिकं शुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरूपवनम् ततः श्रोक्षणीपात्रं सव्यहस्तं गृहीत्वा दक्षि  
 णाऽनामिकां शुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिङ्मनयनम् ॥ ततः प्रणीतोदकेन श्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य श्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनम् आज्यस्था  
 त्यादीनि पूर्णपात्रपर्यंतानि एकैकशः श्रोक्ष्य अग्निप्रणीतयोर्मध्ये श्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् ॥ ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्य प्रणीतोदकेन

१ उत्तराग्रः । २ पूर्वोऽग्रः । ३ उत्तराग्रः । ४ पूर्वोऽग्रः । ५ उत्तराग्रम् । ६ उत्तराग्रम् ।

तंडुलान्प्रशाल्य चरुपात्रे प्रणीतोदकं दत्त्वा तत्र तंडुलान्प्रक्षिप्य स्वयं चरुं गृहीत्वा ब्रह्माचार्यं वह्न्युत्तरतश्चरुं दक्षिणत आज्यं निदध्यात् ॥ ततः  
 सिद्धे चरुं तृणादिप्रज्वाल्य अथ योरुपीरप्रदक्षिणं भ्रामयित्वा ब्रह्मतत्प्रक्षेपः ॥ ततस्त्रिः श्रुवत्प्रतपनं समाजं कुशानामग्रे ततो मूलं बद्धतः खड्गं  
 संमूज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात् ॥ एवं चक्रप्रक्षेपयोरपि प्रतपनं समाजने कृत्वा खवाहुत्तरतः स्थापयेत् ॥  
 ततः आज्यमाग्नितश्चरुः पूर्वेणानीय अथ गृत्वा आज्यस्य श्चिमे चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् ॥ ततः आज्यस्य प्रोक्षणीया विचरुवचनम्  
 अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम् ॥ ततः प्रोक्षण्युत्पवनम् ततः उत्थाय उपयमनकुशान्वा महस्ते कृत्वा प्रजापतिमनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृ  
 ताक्ताः समिधः प्रक्षिपेत् ॥ ततः उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निपर्य्युक्ष्य प्रणीतापात्रपात्रे निधाय ब्रह्मणान्चारुवधः प्रा  
 तितसजघनदक्षिणजानुः समिद्धतमेग्नौ जुह्यात् ॥ तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये ततः दह्यन्तं रं खवाविस्थितं हृत्तशेषस्य प्रोक्षणीयात्रे प्रक्षेपः ॥ अग्रे रु  
 त्तभागौ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमः ॥ अग्नौ दक्षिणभागे ॐ इंद्राय स्वाहा इदं इंद्राय नमः इत्याचारौ ॥ मध्ये समिद्धतमे  
 ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमः ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमः इत्याज्यभागौ ॥ इति हुत्वा प्रायश्चित्ते विदूनामानं वैश्वानरं यज्ञ  
 पुरुषं वहिः षोडशोपचारैः संपूज्य ॐ वह्निपूजनविधेः परिपूर्णताऽस्तु इति पठेत् ॥ ततोऽन्वाग्ध्विना गुंजते इत्यनुवाकेन चतुर्गृहीताज्येन सु  
 चा जुह्यात् ॥ अथुं जतेमनऽज्यं जुजते धियोऽग्निं प्राविश्य बृहतोऽन्विष्य श्चिन्तः ॥ ब्रह्मोत्रादधेऽन्विना विदेकऽइन्महीमेत्यस्य सवितुर्गर्गिष्ठुतिस्त्वा  
 हा ॥ १॥ इदं विष्णवे नमः इति सर्वत्र त्यागः ॥ ॐ इदं ऋग्विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेऽपदम् ॥ समूढमस्य पात्रं भुरे स्वाहा ॥ २ ॥ इदं विष्णवे ०

अ० इरावतीधनुर्मतीहभूत० मृगशिरसीमनवेदशस्या ॥ व्यस्क० नारोदसीविण्णवेतेद० धर्थपृथिवीमिभोमयूखै० त्स्वाहा ॥ ३॥ अ० देवश्रुतेदेवे  
 ष्वाघोपतंप्राचीप्रेतमध्वरंकरयति ॥ ऊर्ध्वयज्ञंयतंभाजिह्वरंतस्योग्यमावदंतदेवीदुय० अ० गुम्मानिवादिष्टप्रजामानिवादिष्टमन्त्रमेथांवे  
 र्धमनपृथिव्या० त्स्वाहा ॥ १४॥ अ० विण्णोर्दुकं ध्वीयाणि प्रवोचं० पार्थावनिविममेरजा० ॥ १५॥ योऽस्मकं भाग्यदुत्तरं० समवर्थं विचक्रमणस्त्रे  
 धोरुगायो विवण्णवेत्वास्वाहा ॥ १६॥ अ० देवोवा विवण्णऽऽततवा पृथिव्यामहोवा विवण्णऽऽरोगन्तरिक्षाता० उभाहिहस्तावभुनपुणस्वाप्रथच्छदक्षि  
 णादोतसव्याद्विण्णवेत्वास्वाहा ॥ १७॥ अ० अथ तद्विण्णस्तवतेवीथ्येणमुनो नभीमः० कुचो गिरिष्ठाः॥ यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियति सुवतानि  
 विश्वास्वाहा ॥ १८॥ अ० विवण्णो रराटमसि विवण्णाः० श्रवस्थे विण्णोः० स्यू रसि विण्णोर्द्वौ सिवै पणवमसि विण्णवेत्वास्वाहा ॥ १९॥ इदं विण्णवे  
 नमम ॥ ततः पुरुषमूलेन पण्डशज्या हूती जुहुयात् ॥ अ० सहस्रशीर्षा० गुलठंस्वाहा ॥ ११॥ इदं विण्णवे नमम इति त्यागः सर्वत्र ॥ अ० पु  
 रुषवदेठं० तिस्राहा ॥ २०॥ अ० ताना० दिविस्वाहा ॥ २१॥ अ० त्रिपादूर्ध्व० अभिस्वाहा ॥ २२॥ अ० ततो विगडं० पुरस्वाहा ॥ २३॥ अ०  
 तस्माद्यज्ञान्सर्वहुतः० समर्पतं० येस्वाहा ॥ २४॥ अ० तस्माद्यज्ञान्सर्वहुतऽऽकचः० तस्वाहा ॥ २५॥ अ० तस्माद्यज्ञान्सर्वहुतऽऽकचः० तस्वाहा ॥ २६॥ अ० तं  
 यज्ञं० येस्वाहा ॥ २७॥ अ० यत्पुरुषं० च्येतेस्वाहा ॥ २८॥ अ० ब्राह्मणोऽस्य० यतस्वाहा ॥ २९॥ अ० चंद्रमा० यतस्वाहा ॥ ३०॥ अ०

नाभ्याऽआसीदं यन्स्वाहा ॥ १३ ॥ अ० यत्पुरुषेण० द्वविस्वाहा ॥ १४ ॥ असप्तास्यासन् पशुस्वाहा ॥ १५ ॥ अ० यज्ञेनयज्ञ० देवा  
 स्वाहा ॥ १६ ॥ इदं विणवे नमम ॥ ततः उत्तराणारणनेहोमः ॥ अ० अभ्यः सम्भृताः पृथिव्यः साक्षाद्विश्वकर्मणः समवर्त्ततामे ॥ तस्य  
 त्वष्टाविदधूपमेतितन्यस्यदेवत्वमाजानमये स्वाहा ॥ १७ ॥ इदं विणमे नमम ॥ अ० अद्वाहमेतपुरुषमहान्तमादित्यवर्णतमसः परस्तात् ॥  
 तमेवादिवातिमृदुमेतिनन्यः पथाविद्यतेयस्वाहा ॥ १८ ॥ अ० प्रजापतिश्चरतिगर्भेऽन्तरजायमानो बहुधा विजायते ॥ तस्ययानिपरि  
 पथ्यतिधीरास्तिस्मिन्मृत्युर्भुवनानिनिविशस्वाहा ॥ १९ ॥ अ० यो देवेभ्यऽआतपतिर्यो देवानां गुरोर्हितः ॥ पूज्यो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्रा  
 ह्मणे स्वाहा ॥ २० ॥ अ० रुचं ब्राह्मं जनयता देवाऽअग्रतर्दधुवत् ॥ यस्तैव ब्राह्मणो विद्वान्त्स्य देवाऽअसन्वैस्वाहा ॥ २१ ॥ अ० आश्रित्य तलक्ष्मी  
 श्रपत्या बहोरात्रेण श्वनक्षत्राणि रूपमाश्रित्यैव्यात्तमाऽदृणन्निषाणामुमऽदृषाण सर्वलोकमऽदृषाण स्वाहा ॥ २२ ॥ इदं विणवे नमम ।  
 ततः पुनः सुषेणज्याहुतयः । अ० लोमेभ्यः स्वाहा २ इदं लोमेभ्यो नमम ॥ अ० त्वचे स्वाहा २ इदं त्वचे नमम ॥ त्यागः सर्वत्र यथा  
 देवतम् ॥ अ० लोहिताय स्वाहा २ इदं लो० ॥ अ० मेदोभ्यः स्वाहा २ इदं ॥ अ० मा० भ्यः स्वाहा २ इदं ॥ अ० क्षात्रभ्यः स्वाहा  
 २ इदं ॥ अ० अग्निभ्यः स्वा० २ इदं ॥ अ० मजाभ्यः स्वाहा २ इदं ॥ इति षोडशाहुतयः ॥ अ० तेतिस्वाहा १ इदं ॥ अ० पायवे १ इदं ॥

अ०आयासाय० १ इदं० अ०प्रायासाय० १ इदं० अ०संय्यासाय० १ इदं० अ०न्यासाय० १ इदं० अ०उद्यासाय० १ इदं० अ०शुचस्वाहा १ इदं० अ०शोच  
 ते० १ इदं०॥ अ०शोचमानायास्वाहा १ इदं० अ०शोकाय० १ इदं० अ०तपसे० १ इदं० अ०तप्यते० १ इदं० अ०तप्यमानाय० १ इदं० अ०तप्याय०  
 १ इदं० अ०वर्माय० १ इदं० अ०निष्कृत्यै० १ इदं० अ०प्रायश्चित्त्यै० १ इदं० अ०भेषजाय० १ इदं० अ०यमाय० १ इदं० अ०अन्तकाय०  
 १ इदं०॥ अ०मृत्यवे० १ इदं० अ०ब्रह्मणे० १ इदं० अ०ब्रह्महत्यायै० १ इदं० अ०विक्षभ्यादेवेभ्यःस्वाहा १ इदं० अ०द्यावापृथिवीभ्या  
 स्वाहा १ इदं० द्यावापृथिवीभ्यान्नमम॥ १८२॥ अथ वृताक्तपायसचरुहोमः॥ तावद्गणेशनवग्रहदिवपालहोमः समाचारात् कार्यः॥ ततः अ०इदं विष्णु  
 विवस्वक्रमेत्रेधा निदधेपदम् ॥ समूहस्य पा० सुरेस्वाहा ॥ ११॥ इदं विष्णवेनमम ॥ अ० अपो देवामधुमतीरगृभ्णन् नृजस्वतीराजस्वश्चितानाः ॥  
 याभिर्मन्त्रावरुणवभ्यषिचन्याभिर्द्रुमनयव्रतयर्गतिः स्वाहा ॥ २॥ इदं० अ० प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठाब्रावश्चरन्ति स्वसिच इदयानाः ॥ ताऽआव  
 दृवन्नयराधुदक्ताऽअहिर्वुध्न्यमनुरीयमाणाः विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमभि विष्णोः ॥ ३॥ इदं० अ० विष्णो  
 नुर्कवीर्याणि प्रवोचंयत्प्राथिवानि विममेरजा० ११॥ योऽअस्मकमायुदुर्गठः स वस्य विचक्रमाणस्त्रेयोः रुगो यो विष्णवित्वा स्वाहा ॥ ४॥ इदं०॥  
 अ० दिवो वा विष्णोऽउत वा प्रुथिव्यामहो वा विष्णोः ॥ उरोगंतीरिशात् ॥ उभा हि हस्तावसुनापुणस्वग्रथं च दक्षिणादौ तसं व्याविष्णवे वा स्वाहा ॥ ५॥





गध्यस्मस्स्वाहा ॥४॥ इदमग्रीवरुणाभ्यांनमम ॥ ॐ सत्स्वाहोऽअग्नेव्यमोमेवोतीनेदिष्टोऽअस्याऽउपसोव्युष्टा॥अवयक्ष्वनोवरुणः॥राणोव्वीहि  
भृदीकठसुहोवैनऽपिस्वाहा ॥ ५ ॥ इदमग्रीवरुणाभ्याम् ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिरास्तिपाश्चस्यमित्यमयाऽअसि ॥ अयानोयज्ञ्वह्वास्या  
यानोवेहिभेषजठः स्वाहा ॥६॥ इदमग्नयेअयसे नमम॥ ॐ येतं शंतवरुणयंसहस्रयाज्ञियाः पाशाविततामहानः॥ तेभिर्नोऽअग्नसवितोविष्णु  
र्विश्वं मुंचतुमरुतःस्वर्काः-स्वाहा ॥ ७ ॥ इदवरुणायासवित्रेविष्णवेविश्वेभ्योदेवेभ्योमरुद्वाःस्वर्केभ्यश्च नमम ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्म  
दवाधमं वियमं द्युमठं श्रथाया॥ अथाव्ययमादित्यव्रतेतवानां गसोऽअदितयेस्यामस्वाहा ॥ ८ ॥ इदंवरुणायादित्यायादितयेच नमम ॥  
ॐ अजापतयेस्वाहा ॥ ९ ॥ इदं ब्रजापतयेनमम ॥ इति प्राजापत्यम् इति नवतुतयः ॥ ततोदिकपालेभ्योमाषक्तेन हुतशेषचरुणावा  
बलिदानम् ॥ तत्र देशकालौ संकथ्यं० इन्द्रादिकपालानां पूजापूर्वकबलिदानकारण्ये इतिसंकल्प्य ॐ दिकपालेभ्योनम इतिगं  
थादिसमर्प्यस्थंडिलपरितः पूर्वादिदिक्षुप्रथमपृथङ्नाममंत्रणमाषक्कबलीन्दत्वा आचामेत् ॥ अथपूर्णहुतिः ॥ तावत् आज्ये  
न भुंचपूरयित्वा तदुपरि गंधं कुमाक्षतं तंबूलकुसुमं धुतं नालिकेरं पूगीफलं वा घृतायावचं हस्ते गृहीत्वा ॐ स्वाहा शुणेभ्यः साधि  
यितुं भ्यः प्रुथिव्यै स्वाहाऽग्नेय स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्यायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥ १ ॥ दिग्भ्यः स्वाहा चं

द्रयस्वाहानक्षत्रव्यस्वाहाऽस्वाहा वरुणायस्वाहा नभ्यस्वाहा पूतायस्वाहा ॥ २ ॥ व्यावेस्वाहा प्राणायस्वाहा प्राणायस्वाहा  
 चक्षुषस्वाहा चक्षुषस्वाहा श्रोत्रायस्वाहा श्रोत्राय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ मूर्ध्ना देवोऽग्रनिष्ठिव्यवैश्वानरमृतऽअजातमग्निम् ॥ कविः  
 सम्राजमतिथिजननामासत्राय ज्ञनयन्तदेवास्वाहा ॥ ४ ॥ इन्द्रमुदाग्रये नमम इतित्यागः ॥ ततः ॐ आद्यावादिपूणाहुतिपर्वन्तम् अस्मि  
 न्प्रायश्चित्तोपकरणि स्वैस्वमैत्र्यैर्यस्य देवतायै वा वद्यावद् आहुतयः सासा देवता प्रीयताम् ॥ इत्युत्तरे ॥ ततः संस्तवग्रन्थम् आच  
 रन् चकृत्वा ॐ अद्यकृतैस्तन्नायणबलिहोमकर्माणि कृताकृता वैश्वानरपृथक्कर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदेवतमुक्तगोत्रायाऽमुक्तशर्मणे  
 नक्षत्राय ब्रह्मणे वादक्षिणां ह्यमहं संप्रददे इति पूर्णपात्रं दद्यात् ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततो ब्रह्मार्थविमोक्तः ॥ ॐ  
 सुमित्रियानऽआपऽओषधयस्तनु इति पवित्राभ्यां प्रणीता जलयात्रीय तेन यजमानशिरः समृज्य ॐ दुर्भित्रियास्तस्मै सन्तु ॐ स्मान्द्वेष्टियं च  
 वयं द्विषाः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जकरणं पवित्रे अग्नौ प्रतिपत्तिः ॥ ततः ॐ देवाणां विदेगाणां ब्रिचवाणां भितमनसस्तस्य इमं देव्यजुः  
 स्वाहा व्रते वा स्वाहा ॥ इति भेदत्रयबहिर्होमः ॥ ततः सुवेणभस्मान्नीयदक्षिणानामिगृहीतभस्मना ॐ अग्युषंजमदग्नेरितिलोटे ॥ ॐ  
 कथयस्व अग्युषम् इति श्रीवायम् ॥ ॐ यदेवेषु अग्युषम् इति दक्षिणबहुमुखे ॥ ॐ तन्नोऽअस्तु अग्युषमिति हवि इति अग्युषं कु  
 र्यात् ॥ ॐ अद्यामुक्तोत्रस्यामुक्तस्यामुक्तदुर्गनिमित्तकनारायणबलिहवनकर्मभणः सांगतासिद्धयर्थयथासंपन्नेनाज्ञेन यथासत्याकास्त्रं

ब्रह्मणान्मोजयिष्ये इतिसंकल्प्य विप्रान्संभोज्य अथवा आमानदक्षिणवाद्वा अनेनकर्मणाकर्मोद्धेदवताप्रियाताम् इत्युत्सृज्य  
 नारायणबलिहवनकर्मणिन्यूनातिरिक्तं विष्णुप्रसादात्सर्वपरिपूर्णमस्तु ॥ अनेनदुर्मरणप्रायश्चित्ताद्ब्रह्मोभक्ततेन अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्या  
 मुकदुर्मरणदोषनिवृत्तिः असद्गतिविनाशः सद्गतिप्राप्तिः इतिपठेत् ॥ इतिप्रायश्चित्तहोमविधिः ॥ अथैकादशविष्णुश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्रादौ  
 स्नात्वाधौतधैतवासीसपरिधाय गोमयादिनासंस्कृतश्राद्धदेशमागत्यत्रतिलतैलेनश्राद्धपवर्गस्थायिर्नदीपंप्रज्वाल्यस्थापयेत् ॥ काककु  
 क्टादींश्छाद्वापहंतनपसारयेत् ॥ श्राद्धदेशावरणंचकुर्यात् ॥ ततःस्वासनेप्राङ्मुखउपविश्य सव्येनकुशपवित्रादिधारणं कृत्वा आचम्य  
 प्राणानायम्य कर्मपात्रंजलेनापठ्यगंधपुष्पयवकुशत्रयादि निक्षिप्य ॐ अपवित्रः पवित्रोवां ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु इति कुशत्रयानीत  
 जलैः श्राद्धेद्रव्यव्याणि स्वात्मानंचासिञ्चेत् ॥ ततः ॐ भूम्यैनमः ॐ भगवत्यैगयायेनमः ॐ भगवतेगदाधरानयमः इतिनत्वाकुशत्रययवजला  
 न्यादाय अद्येत्यादिदेशकालोसकीर्त्य ॐ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्त्यर्थम् असद्गतिविनाशार्थं सद्गत्यक्षय्यविष्णुलोकप्राप्त्यर्थम्  
 दक्षिणशुद्धर्मरणांतर्गतः-मुकदुर्मरणनिमित्तकनारायणबलिकर्मपात्रभूतम् एकादशविष्णुश्राद्धं विष्ण्वादिविष्णुपयतानाम् एकोद्विष्टविधिना  
 एकतंत्रेणाहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य गायत्रात्रिजपित्वा ॐ देवताभ्य इतित्रिजपेत् ॥ ततोऽगौरसंपपानगृहीत्वा पृथादिदिक्षु ॐ नमोनम  
 स्तेगोविंद पुराणपुरुरोत्तम ॥ इदंश्राद्धहोमकेश रक्षतांसर्वतोदिशः ॥ १ ॥ पूर्वोत्तरायणःपातु वारिजक्षस्तुदक्षिणे ॥ प्रधुम्नःपश्चिमपातु  
 वासुदेवस्तथोत्तरे ॥ २ ॥ ऐशान्यांस्रतांविष्णुराघ्येय्यांचित्रिक्रमः ॥ नैऋत्यांपन्नानाभस्तु वायव्यामाधवोऽवतु ॥ ऊर्ध्वगो  
 वर्द्धनोरक्षेदुस्तत्राचित्रिक्रमः ॥ ३ ॥ इतिविकर्ष्य कार्स्मिन्श्रितपात्रेजलं गृहीत्वादेवैरालोडय ॐ यद्देवाद्बु हं देनं देवसश्च कृमाव्ययम् ॥ अग्नि

मातृभादेनसोऽविधांनुश्चर्तुं हंसः ॥ १ ॥ यदिदिवायदिनकर्मनोसिचकृमाव्ययम् ॥ व्ययुमातृस्मादेनसोऽविश्चानुश्चर्तुं हंसः ॥ २ ॥  
 यदिजगद्यदि स्मदप्रानोसिचकृमाव्ययम् ॥ भूय्यो मातृस्मादेनसोऽविश्चानुश्चर्तुं हंसः ॥ ३ ॥ इतिकृष्णान्दुक्तोनाभिर्मन्य एकदशविष्णु  
 श्रद्धोपद्व्योपहाराणां पवित्रतास्तु इतिपाकप्रोक्ष्य अं देशकालपाकपात्रद्वयश्रद्धासंपदस्तु इतिपठेत् ॥ अस्तुसंपत् ॥ ततश्चद्विमुलः  
 उत्तरोत्तरक्रमेण एकदशचटान्स्थाप्य प्रथमचटे अं विष्णवे इदमासनम् इतिपूर्वाप्रक्षुशत्रयमुत्सृजेत् ॥ १ ॥ एवमेवद्वितीयम् अं  
 शिवाय इदमासनं ॥ २ ॥ अं यमायसर्पारिवाय इदमासनं ॥ ३ ॥ अं सोमराजाय इदमासनं ॥ ४ ॥ अं हव्यवाहनाय इदमा  
 सनं ॥ ५ ॥ अं कव्यवाहनाय इदमासनं ॥ ६ ॥ अं मृत्यवे इदमासनं ॥ ७ ॥ अं रुद्राय इदमासनं ॥ ८ ॥ अं तत्पुरुषाय  
 इदमासनं ॥ ९ ॥ अपसव्येन अं प्रेताय इदमासनम् इतिदक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥ १० ॥ हस्तप्रक्षालनंसव्येन अं विष्णवे इदमासनम् ॥ ११ ॥  
 इतिएकादशमासनान्युत्सृजेत् ॥ ततः एकादशार्धपात्राणिधृत्वातेषु एकैकंपवित्रंरत्ना ॥ अं शत्रोर्दिवीरिभिर्घट्य आपोऽभवतुपतये शत्रयो  
 रभिस्त्रभवन्तु ॥ तिजलप्रक्षिप्य अं यवोसियवयस्मद्वेषयवयरातीरितिदशमुखशान्निक्षिप्य प्रेतपात्रे अं तिलोमीतिलान्निक्षिप्य गंधपु  
 ष्पाणिक्षिपेत् ॥ ततः एकादशार्धपात्राणाम् अर्घ्यार्चनविधेः परिपूर्णतास्तु इतिपठित्वाप्रथमार्धपात्रस्यपवित्रं पात्रेधृत्वा अं यादि  
 व्याऽआपः पयसासंभृदुयाऽआन्तरिक्षाऽज्जतपार्थिवीयाः ॥ हिरण्यवर्णयज्ञियास्तान्आपः शिवाः शठं स्योनाः सुहवाभंतु इत्य  
 र्घ्यापात्रम् अभिमंत्र्य अं विष्णो एषतेऽर्घः इति पवित्रोपरार्धदद्यात् ॥ एवमर्चत्रिशिवादिभ्योऽर्घदानम् ॥ अत्रनन्युब्जीकरणं

नार्धवंदनम् ॥ ततः एकादशचटेषु क्रमेण गंधपुष्पधूपदीपतंबूलादीनिधृत्वा ॐ एतानिगंधपुष्पधूपदीपतंबूलयज्ञोपवीतवासं  
 विष्णवे अक्षय्यमस्तु स्वाहा इतिप्रथममुत्तुजेत् ॥ १ ॥ एवं शिवाय० ॥ २ ॥ यमायसपरिवाराय० ॥ ३ ॥ सोमराजाय०  
 ॥ ४ ॥ हव्यवाहनाय० ॥ ५ ॥ कव्यवाहनाय० ॥ ६ ॥ मृत्यवे० ॥ ७ ॥ रुद्राय० ॥ ८ ॥ तत्पुरुषाय० ॥ ९ ॥ अपसव्येन प्रेताय०  
 ॥ १० ॥ पुनः सव्येन विष्णवे० ॥ ११ ॥ क्रमेणगंधादिउत्तुजेत् ॥ ततः ॐमीषमेकादशश्राद्धनामर्चनविधेः परिपूर्णतास्तु इतिप्रा  
 र्थ्यं हस्तौप्रक्षाल्य एकादशपात्रेषु पृथक्पृथक् पात्रसोपस्करान्नपरिवेषणंकुर्यात् ॥ ततः प्रथमपात्रमालभ्य ॐपृथिवीतिपात्रंद्यौरपिधानं त्रा  
 द्धानस्यमुत्तेऽअमृतोऽअमृतंछेदोमिस्वाहा॥ ॐइदंविष्णुर्विवक्रमे त्रेधादिदंवेपदम् समूढमस्यपात्रंमुने स्वाहा॥इतपठित्वा ॐविष्णोहव्यंरक्षस्व  
 इत्यंगुष्ठमेन्निवेद्य ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ॐसिवेदिपद इति परितोयवान्विकीर्य पात्रमत्यजन् ॐ एतदन्नसोपस्करम् अमृतरूपहव्यं  
 विष्णवेस्वाहा संपद्यतानमम इत्युत्तुजेत् ॥ १ ॥ एवं शिवाय० ॥ २ ॥ यमायसपरिवाराय० ॥ ३ ॥ सोमराजाय० ॥ ४ ॥ हव्यवाहनाय० ॥ ५ ॥  
 कव्यवाहनाय० ॥ ६ ॥ मृत्यवे० ॥ ७ ॥ रुद्राय० ॥ ८ ॥ तत्पुरुषाय० ॥ ९ ॥ असव्येन पात्रालंभनंविना प्रेताय० ॥ १० ॥ पुनः  
 सव्येन विष्णवे अन्नमुत्तुजेत् ॥ ११ ॥ ततः पिण्डदानार्थमेकादशस्थानानिनिर्माय प्रेतवज्यंसर्वत्र ॐ अपहतेतिसकृदेवाकरणम् ॐयेरूपा  
 णीति उल्लसुकम्राणंचकृत्वा प्रत्येकंकुशत्रयमास्तौर्य्यैकादशपात्रेषु जलयकगंधपुष्पाणिक्त्वाप्रथमपात्रेण ॐविष्णवेअवनेनिश्च इतिप्रथ  
 मदर्भोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ एवं शिवादिभ्योपिक्रमेणदद्यात् ॥ ततः तिलघृतमधुयुक्तेनन्नेन एकादशपिण्डान्कृत्वाघृतमधुभ्यामभिघार्य्य

एकं पिण्डं कुशादीनि चादाय अविष्णो एतौ पिण्डौ नम इति प्रथमदूषोपरि दद्यात् ॥ १ ॥ एवं द्वितीयं शिवाय ॥ २ ॥ तृतीयं यमाय सपरिवाराय ॥ ३ ॥ चतुर्थं सोमराजाय ॥ ४ ॥ पंचमं हव्यवाहनाय ॥ ५ ॥ षष्ठं कव्यवाहनाय ॥ ६ ॥ सप्तमं मृत्यवे ॥ ७ ॥ अष्टमं रुद्राय ॥ ८ ॥ नवमं तत्पुरुषाय ॥ ९ ॥ दशमम् अप्सव्येन असुक्रगोत्र असुक्रप्रेत एते पिण्डौ मया दीयते तवोपलिप्ता भिति दद्यात् ॥ १० ॥ ततो हस्तौ प्रशाल्य सव्येन एकादशं विष्णवे दद्यात् ॥ ११ ॥ ततो हस्तौ प्रशाल्य आचम्य पूर्ववत्प्रत्यवे जनेन प्रत्येकं दत्त्वा पिण्डेषु सूत्राच्छादनं गंधेषु ष्पतुलसीधूपदीपनैवेद्यतंबूलपूगीफलदक्षिणादीनि क्रमेण दद्यात् ॥ ततः पिंडानामर्चनाविधेः परिपूर्णतास्तु एभिरेकादशपिण्डैः ॥ अप्सव्यम् असुक्रगोत्रस्य असुक्रप्रेतस्य सद्गतिः उत्तमलोको प्राप्तिरस्तु इति पठित्वा सव्येन आचमनं कृत्वा एकस्मिन् न्यत्र पुटे ॐ शिवाय आपः संतु ॐ सौमनस्यमस्तु ॥ ॐ अक्षतंचारी पंचास्तु ॥ इति सुप्रोक्षितादि कुर्यात् ॥ ततः अक्षय्योदकदानम् ॥ २ ॥ विष्णोः यदुत्तमन्नपानादिकं तदुपतिष्ठताम् इति ॥ १ ॥ एवं सर्वत्र पृष्ठया विभक्त्या शिवदीनामक्षय्योदकं क्रमेण दद्यात् ॥ ततः पिंडानामुपरि एकादशसपवित्रान्दभोन्मसमर्घ्यप्रत्येकं जलधारां दद्यात् ॥ तद्वथा ताम्रपत्रे जलदुग्धसर्वाषाधितिलयवतुलसीचंदनहिरण्यानि प्रक्षिप्य पिण्डोपरि पृथक् पृथक् मंत्रेण शाखेन जलधारां दद्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॐ आपो देवा भूधुमीतीरगृध्रं ह्युच्चैस्वती राजस्वश्चिंतानाः ॥ याभिर्ममि ब्रह्मरूपं बभूव विश्वं न्याभिरिन्द्रमन्नं नयत्यराती ॥ प्रथमे विष्णुपिण्डे जलधारापयोधारा उपतिष्ठतु ॥ १ ॥ उपयामगृहीतोऽस्त्यन्तर्यच्छमद्य वन्यादि सोमम् ॥ उरुष्यरागऽप्योजस्वा ॥ द्वितीये शिवपिण्डे जलधारापयोधारा उपतिष्ठतु ॥ २ ॥ अथेनापवकवक्षसा भुरण्यन्तर्जनाऽनु ॥

त्वं चरणपर्यसि ॥ तृतीयमपि पदे जलधारा ० ॥ ३ ॥ अथ देवासो दिव्यकदशस्थप्रथिव्यामध्ये कदशस्थते ॥ अप्सुक्षितो महानैकदशस्थते  
 देवासो यज्ञमिमञ्जुपद्ममचतुर्थसोमराजपिण्डजलधारा ० ॥ ४ ॥ अमुद्रद्वन्द्वस्वाहान्तरिक्षद्वन्द्वस्वाहा देवउसवितारद्वन्द्वस्वाहा मित्रा  
 वरुणो गच्छस्वाहा इहो गच्छस्वाहा वावापृथिवी गच्छस्वाहा यज्ञं गच्छस्वाहा सोमं द्रव्यस्वाहा दिव्यम्रभोगच्छस्वाहा  
 त्रिवैश्वानरं द्रव्यस्वाहा मनो महद्दिगच्छदिवत्तद्भोगच्छतुस्वर्ज्योतिः प्रथिवी मभ्यमनापणस्वाहा ॥ पंचमहव्यवाहनपिण्डजलधारा ० ॥ ५ ॥  
 अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरस्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिरसूर्यस्वाहा अग्निर्वज्रो ज्योतिर्वज्रस्वाहा सूर्यो वज्रो ज्योतिर्वज्रस्वाहा  
 ज्योतिरसूर्यसूर्यो ज्योतिस्वाहा ॥ पृष्ठकव्यवाहनपिण्डे ॥ ६ ॥ अहिरण्यगर्भसमवर्ततोऽग्रतस्त्यजातः पतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथि  
 वीवाभुते माद्वस्मदुवायहविषा विवधेम ॥ ७ ॥ अ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोतऽइषवनमन्वाहुभ्यामुतेनमः ॥ अष्टमरुद्रपिण्डे  
 ॥ ८ ॥ अ यज्ञाग्रतो दूरमुदति देवतदुसुतस्य तथैवेति ॥ दूरद्रुमज्योतिषा ज्योतिरेकं तमेमनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ नवमेषुरषपिण्डे ॥ ९ ॥  
 (अपसव्येन) अथाऽऽलिनीर्य्याऽअफलऽअगुण्याश्च पुष्पिणीऽबृहस्पतिप्रभृतास्ता नो मुञ्चत्त्वठहंस ॥ दशमै प्रेतपिण्डे ॥ १० ॥ (सव्येन)  
 अं विवधतश्च सुरुत विवधतो मुवो विवधतो बहुरुत विवधत स्यात् ॥ सम्बाहुभ्यां धमसि सपतत्रैवावाभूमि जनय देव एकः ॥ एकादशे विष्णुपि

अ० वि० शतश्रुतमि० शतमाला वि० शततोष्यहृत् वि० शतवि० शतसप्तवि० शतसप्तवि० शतसप्तवि० ॥ एकदशवि० शतसप्तवि० ॥



डेजलधारापायोधारातेऽयतिष्ठतु ॥ ११ ॥ ततः अपसव्येन ॥ शेषोदकम् एकतंत्रेण एकादशार्पिण्डोपरिजलधारां दद्यात् ॥ ॐ अनादिनि  
धनो देवः शङ्खचक्रमादाधरः ॥ अक्षय्यः पुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ १ ॥ अतस्तीक्ष्णपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् ॥ येन मम स्यति गोविंदं  
न तेषां विद्यते भयम् ॥ २ ॥ कृष्णकृष्णकृष्णालोत्वमगतो नागतिर्भव ॥ संसारणवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ नारायणसुरश्रेष्ठ लक्ष्मी  
कांतवप्रद ॥ अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ ४ ॥ हिरण्यगर्भं पुरुषव्याक्ताव्यक्तस्वरूपिणे ॥ अस्य प्रेतस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्वदा ॥  
॥ ५ ॥ इति पठेत् ॥ ततः सव्यं कृत्वा दक्षिणार्थं पुरतो हिरण्यं वस्त्रं रजतं गुडज्यं लवणं लोहदंडं तिलान्धान्यं माहिषीमूल्यं चामरं च धृत्वा  
॥ अधोऽन्यादिपठित्वा ॥ असुक्रगोत्रस्य असुक्रप्रेतस्य असुक्रदुर्भरणनिमित्तकनारायणबलिं विहितैकादशश्राद्धानां सांगतां सिद्धयर्थम् इमां  
निहिरण्यदेवैकादशदानानि तत्तद्देवताप्रतिपद्ये असुक्रगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्तमे इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ततः ॐ तर्थाविष्णोः प्रसा  
दात् एकादशश्राद्धानां परिपूर्णं दास्तु ॥ एभिः एकादशश्राद्धैः असुक्रगोत्रस्यासुक्रप्रेतस्य प्रेतत्वं निवृत्तिः असहति विनाशः सद्गति प्राप्तिश्च भ  
वतु इति पठेत् ॥ ततः ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभ्यः जत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैर्देवैर्बुधैः ॥ ॐ मस्तनु भिव्यं शर्महि देवा हितं यदयुः-  
॥ १ ॥ इति पिंडविसर्जनं कृत्वा एकादशआमात्रानि तन्मूल्यं वा विभेद्यो देत्वा कर्मपूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् ॥ इति विष्णवो देकादशश्रा  
द्धप्रयोगः ॥ अथ पंचश्राद्धानां प्रयोगः ॥ तत्र तावत्स्नात्वा वाससी परिधाय विष्णोः पूजनं ब्रह्मादिपंचदेवतानां पूजनं च नाममंत्रेण पंचोपचारैः  
कृत्वा प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्राः ॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानर्थायं पुरस्ताद्विदीप्तिमत् ॥ सुरचोर्वेन आब ॥ सवुः ॐ ज्याऽऽपमाऽऽस्य विष्णुः ॥ ततश्च योनिमस्तंश्च

विवः॥ॐ ब्रह्मणे नमः॥१॥ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः शत्रुं स्तोत्रं विष्णोः सूर्यसि विष्णोः ध्रुवोः सविष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ॐ विष्णवे नमः॥  
 ॥२॥ॐ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवराय च॥ॐ शिवाय नमः॥३॥ॐ यमार्थं वा मखाय वा  
 सूर्यस्य वा तपसे देवस्त्वसविता मध्वानक्षुण्ठिष्याः सठुं स्पृशस्माह ॥ अविंशसि शोचि सितपोसि ॥ ॐ यमाय नमः ॥ ४ ॥ अक्रनृक  
 मर्मैर्कर्मकुतः सहं वाचा मयो मुवा ॥ देवेभ्यः कर्मैर्कृत्वास्तं प्रेतं स चामुवा ॥ ॐ तत्पुरुषाय नमः ॥ ५ ॥ इति प्रार्थ्य पंचश्राद्धानि ब्रह्मविष्णु  
 शिवत्रयमतत्पुरुषाणां कुर्यात् ॥ तत्रादौ पूर्ववच्छादस्थानं विवाय स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सव्येन आचम्य प्राणानायम्य कर्मपात्रं जलादि  
 नापारिपूर्य्य ॐ अपवित्रः ऽपुंडरीकाक्षः पुनात्वि तिकुशत्रयेण श्राद्धद्रव्याणि स्वात्मानं च संप्राक्ष्य ॐ भूम्यै नमः॥ॐ भगवत्यै गायत्र्यै ॐ भगवते ग  
 दाधराय नमः इति प्रणमेत् ॥ ततः कुशत्रययवजलान्यादाय ॥ अद्येत्यादि पठित्वा अमुकगोत्रस्यासुक्रप्रेतस्य प्रेतत्वा निवृत्तिं धृक्कासद्वाति विना  
 शार्थं सद्गतिप्रार्थनममुकदुर्मरणनिमित्तकनारायणबालिकर्मणां भूतब्रह्मादिपंचदेवताश्राद्धानि एकोद्दिष्टविधिना करिष्ये ॥ इति संकल्पयाय  
 त्रात्रिजिपित्वा देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततो गौरसर्पपत्र गृहीत्वा ॥ सर्वत्र ॐ नमोनमस्तं गोविंदे ॥ पूर्वं नारायणो रक्षेद्भारिजास्तु दुक्षिणे ॥  
 प्रद्युम्नः पश्चिमे पण्डु वासुदेवस्तोत्रे ॥१॥ ऐशान्यां रक्षतां विष्णुरात्रे य्याचत्रि विक्रमः ॥ नैऋत्यां पद्मनाभस्तु वायव्यां माधवोऽवतुः ॥२॥  
 ऊर्ध्वगोवर्द्धनो रक्षेदुधस्ताच्चत्रि विक्रमः ॥ इति विकीर्य कूर्मांडमुक्ताभिर्मात्रित जलेन पाकं प्रोक्ष्य उदङ्मुख उत्तरोत्तरं क्रमेण पंच चटान् स्थाप  
 येत् ॥ ततः प्रथमचेदे ॐ ब्रह्मणे इदमासनं स्वाहा ॥ इति पूर्वार्थं कुशत्रयमुत्सृजेत् ॥ एवं द्वितीयम् ॐ विष्णवे इदमासनं ॥२॥ तृतीयम्

अंशिराय इदमासनं ॥३॥ चतुर्थमभ्युपमाय इदमासनं ॥४॥ पंचमम् अतत्पुरुषाय इदमासनं ॥ इत्यासनं समुत्तेजत ॥ ततः पंचपात्राणि  
 अर्चयार्थं धृत्वा तेषु एकैकं पवित्रं दत्त्वा अंशत्रादेवैरिति प्रत्येकं जलप्रक्षिप्य यवोसियवाया इतियवान्न तूष्णीं गंधपुष्पाणि च निक्षिपेत् ॥ ततः  
 पंचार्घपात्राणां संपत्तिरस्तु इति पठित्वा प्रथमार्घपात्रस्य पवित्रं पात्रे धृत्वा अय्यादिव्या इत्यथ पात्रमभिर्मन्त्र्य अंश्रह्नन् एतेऽर्घो नमः इति  
 पवित्रोपरि अवर्षेद्वात् ॥ एवं सर्वत्र विष्णवादिभ्योऽर्घदानम् ॥ अन्नन्युब्जकिरणम् ॥ ततः पंचसु चटेषु क्रमेण गंधपुष्पपदीपादि दत्त्वा अं  
 एतानि गंधपुष्पपदीपातं ब्रूलयज्ञोपवीतवासोसि त्रह्मणे अक्षय्यमस्तु स्वाहा ॥ इति प्रथममुत्तेजत् १ एवं विष्णवे २ शिवाय ३ यमाय ४  
 पातपुरुष ५ चोत्तेजत् ॥ ततः अमीपां पंचश्राद्धानां च न विधेः परिपूर्णतास्तु ॥ इति प्रार्थ्य ॥ मंडलानि कृत्वा पंचसु पात्रेषु पुनः पुनः अक्षं  
 सोपस्करं सुशीतलजलं च परिषेयेत् ॥ ततोऽग्नेमधुदत्त्वा मधुमधुमध्वित्वा पठित्वा प्रथमपात्रमृजुपाणिभ्यामालभ्य अंश्रुयिर्वीते ० अंश्रुदं वि  
 ण्णुरिति च जप्त्वा विष्णोर्हव्यं रक्षस्व इति क्रचाकुष्ठम् अग्नेनि वश्य ॥ अंश्रुपहता इतियवान् निर्वर्ष्यामालभ्य पाणिना पात्रमत्यजन् कुशत्रयादि  
 द्वारा अंश्रुतद्वं सोपस्करमप्रतारुपदं द्यं ब्रह्मणे स्वाहा संपद्यतां नम इत्युत्तेजत् ॥१॥ एवं विष्णवे ० २ शिवाय ० ३ यमाय ० ४ तत्पुरुषाय ०  
 ५ चोत्तेजत् ॥ ततः पिंडदानार्थं पंचस्थानं वालुक्यानि मायप्रत्येकं पूर्ववदेवाकरणमुत्सृज्य क्रमेण च कृत्वा कुशत्रयमास्तीर्य पंचसु पात्रेषु  
 जलयवगंधपुष्पाणि कृत्वा प्रथमपात्रेण अंश्रह्मणे अवनेनिद्व इति प्रथमदर्शोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ १ ॥ एवं वि  
 ष्णवादिभ्योऽप्यवनेजनानि दद्यात् ॥ ततः तिलघृतमधुमुत्तेजनाग्नेन पंचपिण्डान्नि मायघृतमधुभ्यामभिचार्य एकपिण्डं कुशत्रयजला  
 दीनि चादाय अंश्रह्नन् एतेऽर्घो नमः इति प्रथमदर्शोपरि दद्यात् १ एवं विष्णवे २ शिवाय ३ यमाय ४ तत्पुरुषाय

च दद्यात् ॥ ततो हस्तौ प्रक्षाल्य आचम्य पूर्ववत्प्रत्यवनेजनं दत्त्वा पिंडेषु मुत्रांघ्रिपुण्यपद्वीपतांबूलदक्षिणादीनि क्रमेण  
 दत्त्वा पिण्डानामर्चनविधेः परिपूर्णतास्तु एभिर्पंचभिर्पिण्डैः अमुकप्रेतस्य सद्गतिक्रमलोकावाप्तिरस्तु इति पठेत् ॥ ततः  
 आचमनं कृत्वा एकस्मिन्पत्रपुटे ॐ शिवा आपः संतु इति जलम् ॐ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पाणि ॐ अक्षतचारिभूमस्तु इति यवांश्च प्र  
 क्षिपेत् ॥ ततः अक्षय्योदकदानम् ॥ ॐ ब्रह्मणो यद्दत्तमब्रह्म प्रप्नादिकंतु पतिष्ठताम् ॥ १ ॥ एवं विष्णोः २ शिवस्य इयमस्य षट्पुण्यपस्य ५ चाक्षय्यो  
 दकं दद्यात् ॥ ततः पिण्डानामुपरि पंच सपवित्रान्कुशांस्समर्प्य प्रत्येकं जलदुग्धमवापि धियवतुलसीसंयुतां जलधारां शंखेन दद्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॥  
 ॐ अग्निर्मिलिपुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नयातमम् ॥ १ ॥ ॐ आब्रह्मन् ब्रह्मणे ब्रह्मैव कुसुमं जयतामाराष्ट्रो जन्यः शुद्धं इदं पव्यो  
 तिव्याधीर्महारथो जायतां दोग्ध्रीं देवुर्बोधान् दृष्ट्वा ॥ सतिः पुं विद्यां विजिष्णुं रथे दद्यात् ॥ समे यो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामं निका  
 मेनः ॥ पर्जन्यैर्वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः ॥ पच्यंतां योगक्षेमानः ॥ २ ॥ इति प्रथमब्रह्मणि पण्डे जलधारां दद्यात् ॥ १ ॥ ॐ इदं पव्यो  
 जैत्वा ब्यायवर्षस्य देवो विसृजतां पर्यतु श्रेष्ठतमायुर्कर्मणऽआप्यायध्वमध्वन्याऽऽद्रेयभागं प्रजावीतरं नमीवाऽअयक्ष्मा मावसेत नऽइशतमाघश  
 ठी सोऽधुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य प्रशूनाहिः ॥ १ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रे धानि देयं पदम् ॥ समृद्धमस्य पाण्डुरम् ॥ २ ॥  
 इति द्वितीये विष्णुपिण्डे जलधाराम् ॥ २ ॥ ॐ अग्रऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातयो ॥ निहोतां सन्ति बर्हिषी ॥ १ ॥ ॐ नमः शंभवाय वमयो

भवायचनमं शंकरायचमयस्कारयचनमं शिवायचशिवतरायच ॥ २ ॥ इतितृतीयेतिविण्ण्डे ॥ ३ ॥ ॐ शंभोदेवीमिष्टयऽया  
पौभवंतुपुतियां शंभोरोभिस्ववन्तुनः ॥ १ ॥ ॐ यमायत्वास्वायत्वास्वयत्वात्पदेस्वस्वास्वितामध्वानकुयुथिव्याः सृष्टिः सृष्टोऽस्या  
हि अर्चिरसिशाचिरासितपामि ॥ २ ॥ इतिचतुर्थेयमिण्डे ॥ ४ ॥ ॐ प्रेताजयतानरुद्धद्रैवः शमयेच्छतु ॥ उग्रवः संतुबाह्वेनानुधुष्याय  
थासंथ ॥ १ ॥ ॐ अक्रन्कर्मकर्मकृतः सहस्रचापयेभुवा देवेभ्यः कर्मकृत्वास्तं प्रेतसचासुवः ॥ २ ॥ इतिपंचमेतदुरुषणिडेजल  
धारांदद्यात् ॥ ५ ॥ ततोऽधमव्यंशपेदकधारामेकत्रेणपंचपिण्डोपरिदद्यात् ॥ अनादिनिधनोदेव ॥ १ ॥ अतसिपुष्पसंकाशं ॥ २ ॥  
कृष्णकृष्णकृपालुस्त्वं ॥ ३ ॥ नारायणसुराश्रेष्ठ ॥ ४ ॥ हिरण्यगर्भभुरुष ॥ ५ ॥ इतिपठेत् ॥ ततः स्वयेनदक्षिणामादाय अद्येन्या  
दिपठित्वा अमुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्त्यर्थमुत्तमलोकेप्राप्त्यर्थममुकदुर्मणनिमित्तकनारायणबलिद्विहितब्रह्मादिपंचदेवानांश्राद्धकर्मणः प्र  
तिष्ठार्थम् इदं हिरण्यमग्निदेवतयथानामगोत्रेभ्योब्राह्मणेभ्योदत्तुमहमुत्तजे ॥ इतिस्वर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ ततः पंचदानानि ॥ भूमिः सस्यवती  
धेनुः सुवर्णचक्रमातिलात् ॥ दृपमंसहिरण्यं च पंचश्राद्धेषुदक्षिणा ॥ १ ॥ यथाशक्तिदद्यात् ॥ अथवा पंचदानप्रत्याग्रायेनयथाशक्तिद्वयं  
दद्यात् ॥ ततः कलशसंस्कारः ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्त्यर्थमुत्तमलोकेप्राप्त्यर्थम् अमुकदुर्मणनिमित्तकनारायणबलैब्रह्म  
कर्मणः प्रतिष्ठार्थं ब्रह्माप्त्यर्थमिदंतीर्थवारिपूरितं सफलवस्त्रोपवीतान्नप्रतिमानालिकरसहितं मृन्मयकलशं ब्रह्मदेवं ब्रह्मसूक्तज्ञापिने अमु  
कगोत्रायासुकरमणे ब्राह्मणयतुभ्यमहंसंप्रददे। अनेन ब्रह्माप्रीयतामिति दद्यात् ॥ १ ॥ एवं विष्णुरुद्रयमतदुरुषाणांकलशांस्ततस्मृकज्ञापि

नेद्यात् ॥ ततः तीर्थविणोः प्रसादाद्ब्रह्मादिपंचश्रादनांपरिपूर्णतास्तु ॥ एभिः कृतैः पंचश्रादैः अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य प्रेतचनिवृत्तिः असद्  
 तिविनाशः सद्गतिप्राप्तिश्चास्तु इति पठेत् ॥ ततः ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पर्यक्षेमक्षीमं विन्यजामः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाग्ँसस्तमू  
 भिव्यर्थं शमहि देवैर्भित्तं यदधुरिति पिण्डान्विमृज्य विष्णुस्मरेत् ॥ ततो नारायणबलिर्कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं धेनुम् अथवा तन्मूल्यं चावा  
 र्ययदत्त्वा ॐ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतचनिवृत्त्यर्थम् अमुकदुर्मरणनिमित्तकनारायणबलिकर्मणि पूजनतर्पणहोमश्राद्धादिषु यद्व्यना  
 धिकं तद्भवतां ब्रह्मणानां वचनातीर्थदेवताविणोः प्रसादात्सर्वपरिपूर्णमस्तु ॥ अस्तु परिपूर्णमित्युक्ते वेते मुखावलोकनं कृत्वा यथाशक्ति  
 ब्रह्मणान्दीनानां दीनं अन्नं संतोष्य कर्ममूर्त्तिकामः ॐ प्रसादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वेषु यत् ॥ स्मरणदेवताद्भिणोः संपूर्णस्या  
 दिति श्रुतिः ॥ १ ॥ यस्य स्मृत्या च नामोत्तया तपो यज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनसंपूर्णतायाति सद्यो विदेतमच्युतमिति पठित्वा विष्णुस्मृत्वाह्वानं  
 कुर्यात् ॥ इति श्राद्धप्रकाशेनारायणबलिप्रयोगः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

अथ नारायणबलिविहितब्रह्मादिपंचदेवजाप्यसूक्तानि ॥ तत्रादौ ब्रह्मसूक्तम् ॥ हरिः ॐ तेजोसि शुक्रममृतमायुष्यऽआयुभ्योऽपदि ॥  
 देवस्य त्वासवितुः प्रसवोऽक्षिनोऽर्वाहुभ्याम्पूष्णोऽहस्ताभ्यामाददे ॥ १ ॥ इमामगृह्णन् ॥ इमामगृह्णन् शनान्मृतस्य पूर्वऽआयुषि  
 विवदथेषु कव्या ॥ सानोऽस्मिन्मस्तुतऽआर्वाभूवऽकृतस्य सामन्तसमारपन्ती ॥ २ ॥ अभिधाऽअसि ॥ भुवंमसियन्तासि धर्ता ॥

सत्त्वमग्निर्वैश्वानरऽसप्रथमऽङ्गस्वाहाकृतः ॥ ३ ॥ स्वात्वा  
 देवैर्बभूवः प्रजापतयेतन्नक्षत्रम्भन्स्यामि देवैर्बभूवः प्रजापतयेतन्न  
 राद्धयासम् ॥ तन्नक्षत्रान्देवैर्बभूवः प्रजापतयेतन्नराहुह ॥ ४ ॥ प्रजापतयेत्वा ॥ जुष्टप्राक्षामीन्द्राग्निर्बभूवन्ताजुष्टप्राक्षामिवायवेत्वाजु  
 ष्टप्राक्षामि विश्वैर्बभूवन्तजुष्टप्राक्षामिसर्वं बभूवन्तजुष्टप्राक्षामि ॥ योऽअवन्तज्जिवाठसतितमवन्ममतिर्वरुणः  
 परोमर्तः परःश्वाहा ॥ ५ ॥ अग्नयेस्वाहा सोमयेस्वाहापामोदायेस्वाहासवित्रेस्वाहावायवेस्वाहाव्यण्विस्वाहेन्द्रायस्वाहाबृहस्पतयेस्वाहाभि  
 त्रायस्वाहाव्यरुणायस्वाहा ॥ ६ ॥ हिङ्करायस्वाहा हिङ्कृतायस्वाहाक्रन्दतेस्वाहावक्रन्दयस्वाहाप्रथतेस्वाहाप्रप्रथायस्वाहाग  
 न्धायस्वाहाग्रातायस्वाहानिर्विष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहामन्दितायस्वाहावल्लितस्वाहासीनायस्वाहाशयनायस्वाहास्वपतेस्वाहाजप्रतेस्वा  
 हाकृजतेस्वाहाप्रमुद्धायस्वाहाव्यजम्भमाणायस्वाहाव्यचृतायस्वाहामर्तुहनायस्वाहोपस्थितायस्वाहायनायस्वाहाप्रायणायस्वाहा ॥ ७ ॥  
 येत्स्वाधावतेस्वाहोद्विवायस्वाहोद्विवायस्वाहाशुक्रायस्वाहाशुक्रतायस्वाहा निपण्णायस्वाहोत्थितायस्वाहोजवायस्वाहाबलायस्वाहाव्य  
 त्तमानायस्वाहाव्यवृत्तायस्वाहाविष्वक्त्रेनायस्वाहाव्यवृत्तायस्वाहाश्रुपमाणायस्वाहाश्रुपतेस्वाहोक्षमाणायस्वाहोक्षितायस्वाहोक्षिताय  
 स्वाहानिमेपायस्वाहायदत्तायस्वाहायात्पवतस्मस्वाहायमृद्वङ्कुरेति तस्मैस्वाहाकुर्वन्तस्वाहाकृतायस्वाहा ॥ ८ ॥ तत्सवितुः ॥

तत्सर्वितुर्वरेण्यम्भोग्गोदिवस्यर्धमिह ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ९ ॥ हिरण्यपाणिस्मृतये स वितारमुपह्वये ॥ सचेत्तदेवता  
पदम् ॥ १० ॥ देवस्य चेत्ते महीम्नः प्रसवितुर्हवामहे ॥ सुमतिठस्य राधसम् ॥ ११ ॥ सुष्ठु तिष्ठसुमती वृधारा तिष्ठसवितुरीमहप्रदेवाय मती  
विदे ॥ १२ ॥ रातिठस्तपति महेस वितारमुपह्वये ॥ आसन्नदेवती तये ॥ १३ ॥ देवस्य सवितुर्मतिमसविविश्वेदं गम् ॥ धिया भ  
गम्भनामहे ॥ १४ ॥ अग्निं स्तोमेन ॥ बोधयसमिधानोऽमर्त्यम् ॥ हव्या देवेषु नोदधत् ॥ १५ ॥ सहस्रं वाडमर्त्यं ऽऽशिषदूत  
श्चानोहितः ॥ अग्निं द्वियासमृषति ॥ १६ ॥ अग्निन्दूतं पुरो देवे हव्यं वाहमुपकृष्व ॥ देवाः ऽऽसादयादिह ॥ १७ ॥ अजीजनो हि पर्वमा  
नमूय्य विवधारे शक्यमनायः ॥ गोजीर्यारुहमाणं पुरन्ध्या ॥ १८ ॥ विभूममात्रा ॥ प्रभुः पित्राश्चोसि ह्यस्येत्यासिमयोस्यव्यासिस  
तिरसि स्वाज्यसि वृषासि नृमणाऽसि ॥ यथुर्ब्रामासि शिशुनां स्यादित्यानाम्यत्वां च विदेवोऽआशापालाऽऽपतन्ने देवभ्योऽश्वमेधाय प्रो  
क्षितं ऽऽक्षते हरन्ति रीरमतामिह दृतिरिह स्वदृतिस्त्वाहा ॥ १९ ॥ कायस्त्वाहा कस्मैस्त्वाहा ॥ कृतमस्मैस्त्वाहा स्वाहा धिमा धीताय स्वाहा मनः  
प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञाताय दित्यस्त्वाहा दित्यै मवोस्त्वाहा दित्यै सुमदं क्रियेस्त्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावक्यै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै  
स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपन्त्याय स्वाहा पूष्णे नरो धियाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे नरो धियाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुषाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा



[illegible]

वेस्वाहादिभ्यः स्वाहाशाब्दभ्यः स्वाहोब्धौ दिशेस्वाहाव्यञ्ज्ये दिशेस्वाहा ॥ २७ ॥ नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाहोरात्रे  
भ्यः स्वाहाह्रस्मासेभ्यः स्वाहामासेभ्यः स्वाहऽहस्तुभ्यः स्वाहतिवेभ्यः स्वाहासिन्वत्सरायस्वाहाद्यावपृथिवीभ्योऽस्वाहाचन्द्रायस्वाहा  
सूर्यायस्वाहारिभ्यः स्वाहोवसुभ्यः स्वाहोहरेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहोमरुद्रेभ्यः स्वाहोविवस्वभ्योदेवेभ्यः स्वाहामूलेभ्यः स्वाहा  
शाखेभ्यः स्वाहावन्नस्पतिभ्यः स्वाहोपुष्पेभ्यः स्वाहोफलेभ्यः स्वाहोपथीभ्यः स्वाहा ॥ २८ ॥ पृथिव्यैस्वाहा अन्तरिक्षायस्वाहा दिवस्वा  
होसूर्यायस्वाहोचन्द्रायस्वाहानक्षत्रेभ्यः स्वाहोषधीभ्यः स्वाहोपरिप्लुकेभ्यः स्वाहोपरीष्वेभ्यः स्वाहोचराचरेभ्यः स्वाहासरी  
मुपेभ्यः स्वाहा ॥ २९ ॥ असेवेस्वाहावसवेस्वाहाविभुवेस्वाहा विवस्वतेस्वाहागणश्रियेस्वाहागणपतयेस्वाहाभिभुवेस्वाहाधिपतये  
स्वाहाक्षुपायस्वाहासठसूर्यायस्वाहाचन्द्रायस्वाहाज्योतिषेस्वाहाभलिम्बुचायस्वाहादिवपतयेस्वाहा ॥ ३० ॥ मधवेस्वाहा माधवाय  
स्वाहाक्षुक्रायस्वाहाशुचयेस्वाहानभसेस्वाहानभस्यायस्वाहोणयस्वाहोर्जायस्वाहासहस्रययस्वाहातपसेस्वाहातपस्यायस्वाहाऽहो  
सस्पतयेस्वाहा ॥ ३१ ॥ व्याजायस्वाहा ॥ प्रमवायस्वाहापिजायस्वाहाक्रतेस्वाहास्वःस्वाहा मूर्धेस्वाहाव्यशुविनेस्वाहान्यायस्वाहान्यायमौ  
दनायस्वाहाभुवनस्पतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहाप्रजापतयेस्वाहा ॥ ३२ ॥ आर्युजनेन ॥ कल्पताठस्वाहाप्राणयेज्ञेन कल्पताठस्वाहापानो

यज्ञेन करुणताऽस्वाहाव्यानो यज्ञेन करुणताऽस्वाहादो नो यज्ञेन करुणताऽस्वाहासमानो यज्ञेन करुणताऽस्वाहाचक्षुःशुद्धेन करुणताऽस्वाहा  
 श्रोत्रे यज्ञेन करुणताऽस्वाहाव्यायज्ञेन करुणताऽस्वाहासमानो यज्ञेन करुणताऽस्वाहावज्रायज्ञेन करुणताऽस्वाहावायज्ञेन करुणताऽस्वाहा  
 स्वाहाव्याति यज्ञेन करुणताऽस्वाहास्वयज्ञेन करुणताऽस्वाहापृष्ठयज्ञेन करुणताऽस्वाहायज्ञेन करुणताऽस्वाहा ॥ ३३ ॥ एकस्मिन्  
 स्वाहा द्वाव्ययं स्वाहाशताय स्वाहाहैकशताय स्वाहाव्ययस्वाहास्वर्गाय स्वाहा ॥ ३४ ॥ इति श्रीशुक्लयजुर्वेदवाजसनेयसंहितायां  
 धर्षपाद्वह्निविशोध्यायः ॥ २२ ॥ ॐ सुहस्रशीर्षा पुरुषं स ह स्वाहा ॥ स भूमिऽसुवतस्पृत्वात्यतिष्ठद्वाहुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽ  
 एवेदं सव्यं यद्भृत्यं च भाव्यम् ॥ उतामृतं च स्वशानो यद्रेणानिगेहति ॥ २ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्ययाँश्चरुषः पादोस्य विश्वा  
 भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादुद्धऽदं तपुरुषो यादोस्येहाभं वसुनः ॥ ततो विष्वङ्मृद्व्यक्रामत्स शानशनेऽभि ॥ ४ ॥  
 ततो विराडजायत विराजोऽधिपूरुषः ॥ स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिभयोपूरः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्संवेदुतः स भूतं पृथक् पृथक्  
 पशुं स्तोत्रैश्चक्रवायानारण्याग्राभ्याश्चरे ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्संवेदुतः ऋक्षत्सामानि जज्ञिरे छन्दाँऽमिजज्ञितस्माद्यजुस्तस्मादजायत  
 ॥ ७ ॥ तस्मादश्वाऽअजायन्ते केचो भयादंता गावाहजिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयवः ॥ ८ ॥ तं यज्ञं वहिषि प्राक्षन् पुरुषं जातमश्रतः ॥ तेन दे

वाऽअजयन्तसाध्याऽऽरुपयश्चये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ॥ मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमरूपादंऽउच्यते ॥ १० ॥  
 ब्राह्मणैर्मयसुखमासीद्ब्राह्मणजन्यं न कृतं ॥ अरुतदस्य दैत्यैः न पद्भ्यां ७ शृङ्गेऽअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमानसो जातश्चक्षुः ७ मय्येऽअजायत  
 श्रोत्राद्भ्युद्युश्च प्राणश्च सुखादगिरजायत ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षं ७ शीर्ष्णोऽबौऽसमवर्तत ॥ पद्बाभूमिदिशः श्रोत्रात्तथालोकं ७ अक  
 ल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञमतव्रता ॥ वसन्तोऽस्यासीदज्यग्रिभ्यऽध्वमक्षरद्धविः ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्परिययस्त्रिभ्यस्तस  
 मिधं न कृता ॥ देवायद्यज्ञान्ते न्वानाऽअबध्नन्पुरुषपशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्ता निधर्माणि प्रथमान्यासन्ते हनाकं महिमानं सच  
 न्तयन्त्रैव्यसाध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥ इति श्रीवाजसनेयसंहितायामेकविंशोऽध्यायः ॥ योक्तं विष्णुमूक्तं समाप्तम् ॥ २॥ अथ रुद्रसूक्तम् ॥ ७१ ॥ अनमस्ते  
 रुद्रमन्यवऽउतोऽइषं विनमः बाहुभ्यामुततेनमः ॥ १ ॥ यतोरुद्रश्चिवातनूरापपापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वाशान्तमयागिरिशन्ताभिर्वाकशी  
 हि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरशन्त हस्ते विभज्यस्ते वै शिवाङ्गिराता इकु रुमाहिंसीः पुरुषं जगत् ॥ ३ ॥ शिवेन वचसा त्वागिरिशोऽच्यवदामसि  
 यथानं सवर्गमिज्जगदयः ७ मठमुमानाऽअसत् ॥ ४ ॥ अर्धवोचदधि वक्ता प्रथमादिव्योभिषक् ॥ अर्धश्च सन्वज्जम्भयन् सन्वश्च यातु वान्यो  
 धराचीः परासुव ॥ ५ ॥ असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बभूव सुमंगलः ॥ ये चैनं रुद्राऽअभितो दिशुः श्रिताः स ह शशवो ७ ऽहेडऽई

महे ॥ ६ ॥ अमायविमर्षनिनीलाश्रयाविव्याहितः । उैनद्रोपादहश्चन्द्रशन्तुहः । सहस्रमुडयानिनः ॥ ७ ॥  
 नमोस्तुनीलश्रीवाय सहस्रशायमिदुप ॥ अथोयऽअस्यसत्त्वानोहन्तेव्याक्रमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्चन्मनस्तन्मयोरात्मन्य-  
 ज्याम् ॥ याश्चतेहस्तद्वपवः परताभगोव्यप ॥ ९ ॥ विज्यन्त्यनु-क्कपिदोनोविशह्योपायाः । उतऽअनेशस्ययाद्वपवामुर-  
 निषद्वाधिः ॥ १० ॥ यातेहानिर्मादुष्टमहस्तवैभूतेयुनः । तयास्मान्निवश्चतस्त्वभयदम्भयापारिभुज ॥ ११ ॥ पारिधन्वना-  
 हेतिस्मान्बृणक्तेव्विश्रुतः । अथोयऽद्विधुधस्तवारऽअस्मन्निधं दत्तम् ॥ १२ ॥ अवतत्ययमुडुः । हस्त्राभशतेपुत्रेनिशीर्थश्लयाना-  
 खाशिवोनः सुमनाभव ॥ १३ ॥ नमस्तऽआधुधायानततायः । पणवै । उमाव्याभुतेनभावाहुव्यान्तयन्वने ॥ १४ ॥ मानोमहा-  
 न्त सुतमानोऽअबर्कम्मानः । उक्षन्तसुतमानऽक्षितम्मानवधीः । पितरम्भोत मातरम्भानः । प्रियास्तन्वो रुद्रीरिपः ॥ १५ ॥ मानस्तो-  
 केतनयेमानऽआधुषिमानो गोपुमानोऽअश्वरीरपः । मानोव्वीरान्द्रुभाग्मिनोव्वधीविषन्तः । सदासित्वा हवामहे ॥ १६ ॥ नमोहिरण्यवाह-  
 वेसनाय्ये दिशाश्च पतये नमोनामा वृक्षभ्योहारकेशभ्यः । पशुनापतये नमोनामः । शिष्पिजरायत्तिधामते । पथानाम्पतये नमोनामो हार-  
 केशयोपवीतिने । पुष्टानाम्पतयेनमोनामा बळभुशाय ॥ १७ ॥ नमोबळभुशाय । व्याधिनेवानाम्पतये नमोनामो भवस्य हेत्यै जगताम् ।

तये नमोनमो रुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतये नमोनमः सुतायाहृत्यैववनानाम्पतये नमोनमो रोहिताय ॥ १८ ॥ नमोरोहितायस्थ  
 पतये वृक्षाणाम्पतये नमोनमो भुवन्तये वारिवस्कुतायौषधीनाम्पतयेनमोनमो भंत्रिणैवाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैवोषायाक्र  
 न्दयतेपत्तीनाम्पतयेनमोनमः कृत्स्नायतया ॥ १९ ॥ नमःकृत्स्नायतया धावते सर्वनाम्पतये नमोनमःसहस्रानायनिव्याधिनऽआव्या  
 धिनीनाम्पतये नमोनमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमोनमो निचरेव परिचाराणयानाम्पतये नमोनमोवञ्चते ॥ २० ॥  
 नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमोनमो निषङ्गिणऽइणुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः मुकायिभ्यो जिवाऽस्रद्योमुण्णता  
 म्पतये नमोनमोसिमद्योनलं चरद्भ्योविह्वन्तानाम्पतये नमो ॥ २१ ॥ नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमोनमऽइषुमद्वयो  
 धन्वायिभ्यश्चवो नमोनमऽआतन्वानेभ्यः प्रतियदधनिभ्यश्चवोनमो नमऽआयच्छद्भ्योस्यद्रव्यश्चवो नमो नमो विसुजद्रव्यः  
 ॥ २२ ॥ नमोविसुजद्रव्यो विद्वद्यद्रव्यश्चवो नमोनमः स्वपद्रव्योऽग्राद्रव्यश्चवो नमो नमः शयनेभ्यऽआसीनेभ्यश्चवो नमो नमस्तिष्ठ  
 द्रव्योधावद्रव्यश्चवो नमो नमः समाभ्यः ॥ २३ ॥ नमःसमाभ्यः समापतिभ्यश्चवोनमोनमोऽश्वेभ्यो श्वपतिभ्यश्चवो नमो नमऽआ  
 व्याधिर्निभ्योविद्वयन्तीभ्यश्चवो नमो नमऽउगणाभ्यस्तृट् हतीभ्यश्चवोनमो नमोऽगणेभ्यः ॥ २४ ॥ नमोऽगणेभ्योऽगणेपतिभ्यश्च

वो नमो नमो व्रतेभ्यो व्रतपतिभ्यश्चो नमो नमो गृहसंभोगसंपतिभ्यश्चो नमो नमो विहंपेभ्यो विहंपेभ्यश्चो नमो नमो  
 नमो नमः सेनाभ्यः ॥ २५ ॥ नमः सेनाभ्यः सेनाभिभ्यश्चो नमो नमो रथिभ्योऽअथेभ्यश्चो नमो नमः सवृत्तभ्यः सवृत्त  
 भ्यश्चो नमो नमो महद्भ्योऽअभ्यश्चो नमः ॥ २६ ॥ नमस्तक्ष्भ्योऽअभ्यश्चो नमः कुलोलेभ्यः कर्मभिरभ्यश्च  
 वो नमो नमो निपादभ्यः पुञ्जिभ्यश्चो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्चो नमो नमः श्वभ्यः ॥ २७ ॥  
 नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चो नमो नमो भवाय चरुहाय चनमः शर्वाय च पशुपते च नमो नीलाय च शिशिकण्ठाय च नमः कपदिने ॥ २८ ॥  
 नमः कपदिने च व्युत्क्राशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिस्थाय च शिपिस्थाय च नमो दुष्टमाय च पुमे च नमो द्वस्वाय ॥ २९ ॥  
 नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वृषीये च नमो बुधाय च सृष्टे च नमो ग्राय च पृथमाय च नमः आशवे ॥ ३० ॥ नमः आशवे चाजिराय  
 च नमः शीथ्याय च शीभ्याय च नमः उग्रभ्याय च अवस्वध्याय च नमो नादाय च वद्रीप्याय च ॥ ३१ ॥ नमोज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः  
 पुर्वजाय च अपजाय च नमो मध्यमाय च पारभाय च नमो जघन्याय च वध्याय च नमः सोम्याया ॥ ३२ ॥ चनमः सोम्याय च अतिसर्प्याय च नमः  
 याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोभ्याय च वसान्याय च नमः उर्व्व्याय च सख्याय च नमो वध्याया ॥ ३३ ॥ नमो वध्याय च कर्ण्याय च नमः श्रवा

यचप्रतिश्रवायचनमऽआशुपेणायचाशुरथायचनमऽशूरायचावमोदिनेचनमोबिल्मने ॥ ३४ ॥ नमोबिल्मनेचक्रचिनेचनमोबिल्मणे  
 चव्वरुथिनेचनमऽश्रुतायचश्रुतसेनायचनमोदुन्दुब्बयायचाहनन्यायचनमोधृणवै ॥ ३५ ॥ नमोधृणवै चप्रमृषाय चनमोनि  
 पङ्क्तिचेषुधिमतेचनमस्तीक्ष्णवैचाशुधिनेचनमऽस्वाशुधायचसुधवनेच ॥ ३६ ॥ नमऽहत्यायचपत्यायचनमऽकाट्टायचवनीप्याय  
 चनमऽकुल्ल्यायचसरस्यायचनमोनादेयायचव्वशंतायचनमऽल्लूप्याय ॥ ३७ ॥ नमऽल्लूप्यायचाव्वट्टायचनमोव्वीद्धायचातप्यायचन  
 मोमेग्ग्यायचव्विट्ठ्यायचनमोव्वप्यायचावप्यायचनमोव्वान्या ॥ ३८ ॥ नमोव्वान्यायचरेप्पम्यायचनमोव्वीस्तब्ब्यायचव्वस्तुपायचनमऽलो  
 मायचरुद्धायचनमस्ताम्मायचारुणायचनमऽशङ्खे ॥ ३९ ॥ नमऽशङ्खवैचपशुपतेयचनमऽउग्रायचभीमायचनमोअवधायचदूरधायचनमो  
 हन्तेचहनीयसेचनमोव्वक्षब्भ्योहरिकेशब्भ्यानमस्ताराय ॥ ४० ॥ नमऽशम्भवायचमयोभवायचनमऽशङ्करायचमयस्करायचनमऽशिवायच  
 शिवतरायचा ॥ ४१ ॥ नमऽपाय्यायचाव्यायचनमऽप्रतरणायचोतरणायचनमस्तोत्थायचकूल्ल्यायचनमऽशष्प्यायचफेठ्यायचनमऽसि  
 क्त्याया ॥ ४२ ॥ नमऽसिक्त्यायचप्रवाहायचनमऽकिंशिलायचक्षणायचनमऽकर्णनेचपुलस्तयेचनमऽशरीण्यायचप्रपत्त्यायच ॥ ४३ ॥  
 नमोव्वज्यायचमोष्ठायचनमस्तत्प्यायचगेह्वायचनमोदुदय्यायचनिवेप्यायचनमोक्काट्टायचगह्वेह्वायचनमोशुब्ब्याय ॥ ४४ ॥ नमोशुब्ब्या





[illegible]

एषोहर्षप्रदिशोनुसंख्याः पूर्वोहजातः सऽउगवमैऽअन्तः ॥ सऽपुवजातः सजनिष्यमाणः प्रप्यइजनास्तिष्ठतिसंवतोमुलः ॥  
॥ ४ ॥ यस्माज्जातन्नपुराकिञ्चनस्यऽआवभृवुनानिबिब्वः ॥ प्रजापतिः प्रजयासंहरणस्त्राणिज्यातिष्ठपिसचतेसषोडशी ॥ ५ ॥  
येनद्यौरग्राष्ट्रिथिवीचंद्रायेनस्वस्ताभितप्येनकः ॥ येऽअन्तरिक्षरजसोविमानः क्रम्मद्वेवाहविषाविधेम ॥ ६ ॥ यदङ्गन्तसीऽअव  
सास्तमानेऽअव्यैश्वस्ताभ्यनसारजमाने ॥ यत्राधिमुरऽइदितोविभातिक्रम्मद्वेवाहविषाविधेम ॥ ७ ॥  
वेनसत् ॥ पश्यन्निहितं दुग्गुहासद्वयं विब्वश्चुम्भमव्यैक्रीडम् ॥ तस्मिन्निदितं सच्चिचित्सर्वतः सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु ॥ ८ ॥  
प्रतद्रौ चेदमृतं नृविब्वान्गन्धर्व्व्याधामिविभृतं दुहासत् ॥ त्रीणिपदानिनिहितं गुहास्यस्तानिवेदसापितुः पतासत् ॥ ९ ॥ सनोबन्धुर्ब्रजनि  
तासविधातामनिब्वेदुभुवनानिविब्वः ॥ यत्रेवाऽअमृतमानशानस्तृतीयधामन्नद्वयैयन्त ॥ १० ॥ परीत्यप्रतानि ॥ परीत्यलोका  
न्परीत्यसर्वान्प्रदिशोदिशश्च ॥ उपस्थायप्रथमजमृतस्यान्मनात्मानमभिसावेश ॥ ११ ॥ परिधावाष्ट्रिथिवी ॥ सद्यऽइत्वापरि  
लोकांन्परीदिशः परीस्वः ॥ ऋतस्यतन्तुर्विधत्तं विचृत्यतदं पश्यतदं भवत्तदासीत् ॥ १२ ॥ सदैसस्पतिमद्भुतं ग्मिष्यमिन्द्रस्य काम्य  
म् ॥ सनिमेषामयासिपरिस्वाहा ॥ १३ ॥ यामेधादेवगणपितरश्चोपासते ॥ तयामामवमेधयाग्नेमेषाविनङ्कुरुस्वाहा ॥ १४ ॥

मेधाम्मे ॥ व्यरुणोददतुमेधामग्निः प्रजापतिः मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधान्धाताददतुमेस्वाहा ॥ १५ ॥ इदमो॥ ब्रह्मचक्षत्रञ्चोभेतिश्रयमश्रु  
 ताम् ॥ मयिदेवादधतश्चिथ्यमुत्तमान्तस्यैतेस्वाहा ॥ १६ ॥ इतिश्रीवाजसनेयसंहितायां द्वाविंशध्यायेत्तयमसूक्तसमाप्तम् ॥ १८ ॥ अथप्रत  
 सूक्तम॥ हारिः ॐ अपेतः ॥ अपेतोऽयन्तुपणयोमुन्मद्वादेवपीयवः ॥ अस्यलोकः सुतावतः ॥ द्युमिहो भिरक्तुमिव्यक्तयमोददाचवसा  
 नमस्मै ॥ १॥ सवितते ॥ शरिरेभ्यः हृथिव्याह्योक्तमिच्छतु ॥ तस्मैयज्यन्तासुसियाः ॥ २ ॥ व्याधुः पुनातु ॥ सवितापुनातुब्रह्म  
 जसामूर्यम्यवर्द्धसा ॥ विमुच्यन्तासुसियाः ॥ ३ ॥ अश्वथेवो निषदन्पणवोवसतिष्कृता ॥ गोभाज  
 इत्किलासथसन्वथपूरुषम् ॥ ४ ॥ सवितते शराणिमातुः प्रस्यऽआवपतु ॥ तस्मै पृथिविशम्भेव ॥  
 ॥ ५ ॥ प्रजापतैत्वा देवतायामुपोदके ॥ लोकेनिदधाम्यसौ ॥ अपनः शोऽधुचदधम् ॥ ६ ॥ परम्पृत्यो  
 अनुपरोहिपन्थय्यस्तऽअन्यऽइतरोदयानात ॥ चक्षुष्मतेऽशृणुवतेऽब्रवीमिमानः प्रजाऽरिषोमातव्वीरान् ॥ ७ ॥ शंवतः शठः  
 हितेघृणिः शन्तेभन्विषकाः ॥ शन्तेभन्त्वग्नयः ह्याथिवासोमात्वाभिः शूचन् ॥ ८ ॥ करुणन्तान्ते दिशस्तुब्ध्यमार्पः शिवतेमास्तु  
 बध्यभवनन्तुसिन्धवः ॥ अन्तरिक्षठः शिवन्तुब्ध्यङ्कुरपन्तान्तेदिशः सर्वाः ॥ ९ ॥ अश्वमश्वतीरीयते सठरभद्रमुनिष्ठतप्रतरता

सवायः ॥ अत्राजहीमोशिवायऽअसञ्जिवाव्ययमुत्तरिमाभिवाजान् ॥ १० ॥ अपाधमपकिर्त्तव्यमपङ्कृत्यामयोर्पः ॥ अपामागन्तव्य  
 मस्ममददुःष्वज्यऽसुव ॥ ११ ॥ सुमित्रियानऽआपऽआपधयऽसुतदुमित्रियास्तस्मस्तमस्तुयोस्माम्नान्द्रिष्टयश्चैक्यन्दिष्मः ॥ १२ ॥ अन  
 द्वाहमन्वारभामहेसौरभेयऽस्वस्तये ॥ सनऽइन्द्रऽइवदेवैक्योवाग्रिहठसन्तारणोभव ॥ १३ ॥ उह्यन्तमस्परिस्वऽपश्यन्तऽउत्त  
 रम् ॥ देवन्देवत्राम्यमग्नज्योतिरुतमम् ॥ १४ ॥ इमञ्जीवेक्यः पारिधिन्दधामिभपाद्गुगादपराऽअर्थमेतत् ॥ शतजीवन्तुशरदः  
 पुहूचिरन्तम्दुतुवदताम्पव्वतन ॥ १५ ॥ अग्नऽआयुऽपि पवसऽआसुवाजीमिषञ्चनः ॥ आरोबायस्वदुच्छुनाम् ॥ १६ ॥ आयुष्मा  
 नगने दविपव्वधानोघृतप्रतीकोघृतयोनिरेधि ॥ घृतम्पीत्वाभघुचाग्न्यम्पितघुत्रमभिरक्षतादिमानन्त्वाह ॥ १७ ॥ परीमे गाभनेप  
 तपय्यग्निमदहपत ॥ देवज्वकतश्शत्रुःकऽइमाऽआदधर्पति ॥ १८ ॥ ऋग्व्यादमग्निम प्राहिणोमिदुर्यमराज्यदुच्छुनरिप्रव्वाहः ॥  
 इहैवायमितरोजातवेदऽदेवैक्योहव्यव्वहृतपुजानन् ॥ १९ ॥ व्हवेषाजितवेदः पितृव्योयत्रैनाव्वेत्यनिहितोपराके ॥ मेदसः  
 कुत्स्याऽउपानत्सवन्तुसत्याऽषाभाशिपऽसन्नमन्ताऽस्वाहा ॥ २० ॥ स्योनाष्टथिवि नोभवान्नुक्षानिवेशिनी ॥ यज्योऽशर्मसप्र  
 थोः ॥ अपनऽशोऽुचदवम् ॥ २० ॥ अस्मात्त्वमधि जातोऽित्वदयज्यायताम्नः ॥ असौस्वर्गायलोकायस्वाहा ॥ २२ ॥

इति श्रीवाजसनेयसंहितायां पंचत्रिंशोऽध्यायोक्तं (तत्पुरुष प्रेतसंकृतसमाप्तम् ॥ इति श्रीगौडीयश्राद्धप्रकाशे ब्रह्मादिपंचमूक्तानि समाप्तानि ॥  
 ॥ ५ ॥ अथ नारायणबलि सामश्रीलिल्यते ॥ शालग्रामप्रतिमा साङ्गा १ स्वर्णमयी विष्णुप्रतिमा २ राजतो ब्रह्मप्रतिमा १ ताम्रमयी रुद्र  
 प्रतिमा १ लोहमयी यमप्रतिमा १ सीसकमयी प्रेतप्रतिमा १ सुवर्णखंड १ नारिकेलकफल ७ चंदन १ कुंकुम १ केशर १ कर्पूर  
 गोरोचन १ पुष्प विचित्रजैमेशशालोद्भवहो १ धूप १ दीपादीपवर्तिका १ यज्ञोपवीत कईजोडी १ तांबूल १ पूर्णफल ५० ऋतुफल १ तुलसी  
 पत्र १ बिल्वपत्र १ शमीपत्र १ गंगोदक १ अभावमै तडागकूपादिजल १ गोदुग्ध १ गोदधि १ गोमूत्र १ गोमय १ मधु १ श्वेतवस्त्र १ रक्तव  
 स्त्र १ पीतवस्त्र १ कृष्णवस्त्र १ पीतपट्टवस्त्र १ सर्वापधि १ कूठ १ जटामांसी १ हरिद्राद्वय १ देवदारु छड १ छडिलो १ चंदन १ वच १  
 चंपक १ मुस्ता १ सप्तमृत्तिका १ अक्षत १ वट १ पुक्ष १ आम्र १ उडुंबर १ इनपौचैकैकंचपल्लव ५ १ पंचरत्न १ तंडुल १ गोधूम १ मुद्गर १ माष  
 तिल १ यव १ शर्करा १ गोकघृत १ गन्ध १ गुग्गुलु १ मेवे १ मोदक १ लड्डु १ पेडा १ सिंदूर १ गौरसर्षपा १ दर्भा १ दूर्वा १ पलाशादिपत्रकेपात्रा १ आचमनपात्र १  
 कर्मपात्र १ ताम्रपात्र १ अर्घ्यपात्र १ आसन १ प्रोक्षणीपात्र १ प्रणीता १ आज्यस्थाली १ चरुस्थाली १ ब्रुकुशुव १ पलाशसमिध  
 शमीप्रभृतिसमिधः १ मृन्मयकलश ५ १ ताम्रकलश १ पूर्णपात्रपात्र ६ १ जलपात्र १ धेनु अथवा १ मौल्य १ लोहदंड १ रजतद्रव्य  
 पृथ्वीदान १ हिरण्य १ वस्त्र १ गुड १ लवण १ धान्य १ महिषीमूल्या १ चामरमूल्या १ धूपसी १ ताम्रदक्षिणा १ कार्पासोपेटिका १ सूत्रा १ आम्राव्रण १  
 ल १ यववृण १ सेटक भर ३ छायापात्र १ तिलतैल १ प्रायश्चित्तधेनु अथवा मूल्य १ प्राजापत्यव्रत १ ५ अथवा प्रतिप्राजापत्यगोदान  
 अथवा मूल्य अथवा प्रतिप्राजापत्य १ द्वादशसहस्रगायत्रीजप १ ब्रह्मादिपंचमूक्तपाठ १ शंख १ शरावा ५० १ मट्टीका घट १ जललानेको १ लघुड १  
 श्राद्धस्थानवेष्टनार्थवस्त्र १ गौरमृत्तिका १ गंगोदक १ भस्म ॥ इत्याद्युपकरणानि ॥ ७ ॥

॥ ७ ॥

अथ पंचकमरणशान्तिप्रयोगः ॥ तावन्मरणविधिर्लिल्यते ॥ तत्रादौ दहदेशशरीरान्ना शुद्धभूमौ संस्थाप्य तत्समीपे दर्भाणपंचप्रतिमाः  
 ऊर्णामूत्रवेष्टिताः यवपिष्टानुलिप्ताः सन्व्याकृतीः कृत्वा पूजयेत् ॥ तद्यथा देशकालौ संकीर्त्य अपसव्येन अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य  
 धनिष्ठादिपंचकमरणमुचितशान्तिपुनिष्ठा विनाशार्थं पंचकाविधिरप्ये इतिसंकल्प्य स्थंडिले स्थापितपंचप्रतिमाः ॥ प्रेतवाहाय नमः १ प्रेतस  
 खाय नमः २ प्रेतपाय नमः ३ प्रेतभूमिपाय नमः ४ प्रेतहन्न नमः ५ इति नाममंत्रेण प्रत्येकं गंधपुष्पगण्डीपनैवेद्यादिभिः संपूज्य दाहसमये प्रेत  
 स्योपरिविन्ध्यसेत् ॥ प्रथमां शिरसि १ द्वितीयां दक्षिणकुक्षौ २ तृतीयां वामकुक्षौ ३ चतुर्थानामौ ४ पंचमीपादयोर्मध्ये ५ एवं न्यस्य तदुप  
 रिताभ्यानामभिर्मन्त्रधृताहुतीर्दद्यात् ॥ प्रेतवाहाय स्वाहा ॥ प्रेतसखाय स्वाहा ॥ प्रेतपाय स्वाहा ॥ प्रेतभूमिपाय स्वाहा ॥ इति हु  
 त्वाताभिः सह विधिनशवंदहेत् ॥ मृतकंति ततः कुर्याद्भिध्नानपंचकं तथा ॥ अन्यथानगतस्तस्य प्रेतपुत्रसुशोभनमिति मरणसमयप  
 चकविधानम् ॥ अथ शान्तिप्रयोगः ॥ तत्रादौ मृतकान्ते पुत्रादिस्तीर्थेण्यक्षेत्रे वा तद्गागादिसमीपे गत्वा तत्र क्रमभूमिपरिकल्प्य गोम  
 योदकेनानुलिप्य गौरमुत्तिक्र्याऽऽच्छाद्य तत्र समाग्रास्थापयेत् ॥ ततः स्नात्वा धौतशुद्धवाससीतनयहोपवर्तिचपरिधाय संध्यादिनस्य  
 क्रियांसमाप्य होमार्थहस्तमात्रं स्थंडिलं कृत्वा तदीशान्यां शुद्धद्रवमंडलं च कृत्वा तत्र वस्त्रसमास्तीर्य तदुपरिकलशपंचकं पूर्वदक्षिण  
 पश्चिमांतरासुभयै च धान्यपुंजोपरिक्रमेण स्थापनीयम् ॥ आचम्य प्राणानायम्य अंअपवित्रः ॐ पुंडरीकाक्षः पुनात्विति शुभ्रश्रवणेण  
 संभारान्स्वान्नां च जलेन ग्राह्य गणेशनवग्रहादिदेवान् पूजयेत् ॥ ततो देशकालौ संकीर्त्य ॥ अपसव्येन अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य  
 धनिष्ठादिपंचकजनितदुर्भरणदोषनिवर्त्यम् (सव्यं कृत्वा) मम गृहे सपरिवाराणामाधुरोऽयमुत्सप्राप्त्यर्थं विष्णुपूजनपूर्वकं पंचक

शांतिकमहंकरिष्ये।इतिसंकल्प्य विष्णुषोडशोपचारैः संपूजयेत्॥ततो देशकालौ संकीर्त्य अमुकप्रेतस्य० पंचकशांतिकमार्गतया विहितं  
 कलशपंचकंदेवतानांस्थानंप्रतिष्ठापनंचकरिष्ये॥इत संपूजयेत् ॥ अ०भूमिर्भूमिस्तिकलशधारभूमिस्पृष्ट्वा॥अ०धान्यमसिधिनूहि इति  
 स्थापितधान्यमभिमंत्र्य॥तस्योपरि अ०आजिग्रकलशमिति क्रमेण कलशपंचकंस्थापयेत् ॥ ततः अ०वक्रणस्योत्तमितितुषुजलमापूर्य्य॥  
 अ०याऽओषधीः पूज्यंजाता इतिसवोषधीः॥कांडांक्वाण्डादितदूर्वाः॥अश्वत्थेवैनिपदनमिति पंचपल्लवान्॥स्योनपृथिविनो इतिसप्तद्रुः॥  
 याः फलिनोरिति पूगीफलानि॥परिवाजपतिरिति पंचरत्नानि ॥ हिरण्यगर्भेति सुवर्णखंडानिचक्षिपेत् ॥ ततः अ०व्वसोः पवित्रमसीति  
 प्रत्येकंवक्षेण मृत्रेणवावेष्टेय ॥ पूर्णादूर्विपरापत् इतिटुलधूरितानिपंचतप्रपात्राणिनिधाय ॥ अ० मनोजुतिषुपतामितिप्रतिष्ठां कृ  
 त्वा ।तेषुअ०तत्त्वायामिब्रह्मणवंदमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः॥अ०हृदयानोव्वरुणेहवोद्वचुरुशठिसमानऽआयुःप्रमोषीः ॥ अ०भूमिवः  
 स्वर्वरुणइहागच्छइतिष्टइतिरुणमावाह्य ॥ सर्वैसमुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयांतुयजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ १ ॥  
 इतितीर्थान्यावाह्य ॥अ०वरुणायनः ॥ इतिपंचोपचारैःसंपूज्यअ०कलशस्यमुखेविष्णुरित्यादिप्रार्थयेत् ॥ ततस्तेषुस्वर्णमयीःपंचप्रतिमाअयु  
 त्तारणपूर्वकंसंस्थापयेत् ॥ अथावाहनम् ॥ पूर्वकलशेदुग्धजलपूरितेवमूर्त्तौ अ०व्वसोःपवित्रमिसिरथरंव्वसोःपवित्रभूमिसहस्रवारंदेव  
 स्त्वासावितापुनातुव्वसोःपवित्रेणशतधारेणसुष्वामधुशः ॥ १ ॥ अ०भूमिवःस्वःवसवःइहागच्छइतिष्टतअ०धूम्रान्वावाहयामिस्थाप



यामि इतिस्थापयेत् ॥ दक्षिणकलशेदध्युदकप्रतिवरुणं० अ०व्वरुणस्यात्तन्मनसिक्वरुणस्यस्कभसर्जनीस्त्योक्वरुणस्यऽव्रतसद्वय  
 सिक्वरुणस्यऽव्रतमर्दनममिक्वरुणस्यऽव्रतसदनमार्निदं ॥ २ ॥ अ०भूर्भुवःस्वर्वरुणइहाच्छ० वरुणमावाहयामि अ०वरुणायनमः इति  
 स्थापयेत्॥ पश्चिमकलशेघृतोदकप्रति अजेकपदं० अ०उतत्रोहिद्व्यःशृणोन्विजऽणकपातपृथिवीसमुद्रः॥ विश्वेदेवाऽव्रतावृधोहवानास्तु  
 तामत्रोत्कविशस्ताऽअवन्तु ॥ ३ ॥ अ०भूर्भुवःस्वःअजेकपदमावाहयामिस्थापयामि॥ अ०अजेकपदेनमः इतिस्थापयेत् ॥ उत्तरकलशेगोमयो  
 दकप्रति अहिर्बुध्न्यम् अ०शिवोनामासिस्वधितोस्तोपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिर्गमी॥ निर्वतयाभ्यायुषेन्नाद्यप्रजननायरा  
 यस्योपायमुप्रजास्तायसुवाय्याय ॥ ४ ॥ अ०भूर्भुवःस्वः अहिर्बुध्न्यइहागच्छेह० अहिर्बुध्न्यमावाहयामिस्थापयामि॥ अ०अहिर्बुध्न्याय  
 नमः॥ मध्यकलशेगोमूत्रोदकप्रतिपूपाय अ०पूषन्तवव्रतेव्यनरिष्येमकदाचन ॥ स्तोत्रोस्तऽइहस्मसि ॥ अ०भूर्भुवःस्वः पूषवइहागच्छ  
 इहतिष्ठपूपाणमावाहयामिस्थापयामि अ०पूषेनमः इतिस्थापयेत् ॥ ५ ॥ इत्यावाह ॥ अ०मनोजृतिर्जुषतामाल्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिम  
 न्तनोवर्षिष्यंजृत्समिदंवातु ॥ विश्वेदेवास्त्वहमादयतामोऽम्यतिष्ठा॥ इतिप्रतिष्ठाप्रत्येकनाममन्त्रेषोऽष्टोपचारैः संपूजयेत्॥ ततस्तस्या  
 श्वेऽततपुंजेषु पुष्पीफलेषुवायमादिपंचदशदेवान्स्थापयेत् ॥ तद्यथाऽयमायनमःयमम् आवाहयामिस्थापयामि ॥ १ ॥ एवमग्रेऽध्यमग

जायनमधर्मराजं ॥ २ ॥ अ० मृत्युवेनमः मृत्युमावा ॥ ३ ॥ अ० अन्तकाय ० अन्तकं ॥ ४ ॥ अ० वैवस्वताय ० वैवस्वतं ॥ ५ ॥ अ० कालाय ०  
 कालं ॥ ६ ॥ अ० सर्वभूतक्षयाय ० सर्वभूतक्षयं ॥ ७ ॥ अ० औदुम्बराय ० औदुम्बरं ॥ ८ ॥ अ० द्वाय ० द्वयं ॥ ९ ॥ अ० नीलाय ० नीलं ॥ १० ॥  
 अ० परमेष्ठिने ० परमेष्ठिनं ॥ ११ ॥ अ० वृकोदराय ० वृकोदरं ॥ १२ ॥ अ० चित्राय ० चित्रं ॥ १३ ॥ अ० चित्रुतायनमः चित्रुतायनमावाहयामि  
 स्थापयामि ॥ १४ ॥ ऐशान्ये अ० अवोरभ्योऽवोरभ्योऽवोरभ्यः ॥ सर्वभ्यस्सर्वभ्यः ॥ अस्तुरुदरुपभ्यः ॥ अ० अवोरायनमः  
 अवोरायनमावाहयामि स्थापयामि ॥ १२ ॥ इत्यावाह्य अ० चतुर्दशमेभ्यो नम इति षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः पंचकलशेषु पंचमूक्तानिज  
 पेत् ॥ प्रथमकलशे अ० कृणुष्वपाजः प्रसिति व्रद्ध्या दिक्षोऽग्नीः पंचर्चः ॥ द्वितीयकलशे अ० विभ्राद्वृहत्पिबतु इत्याद्यनुवाकम् ॥ तृती  
 यकलशे अ० आहुः शिशानो इत्यादि अग्रतिरथम् ॥ चतुर्थे अ० नमस्ते रुद्रमग्न्यवद्व्यादिरुद्राध्यायः ॥ पंचमकलशे ॥ अ० ऋचं वाचं प्रपद्ये  
 इत्याद्याध्यायं च पठेत् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ तत्रादेशकालौ संकीर्त्य ॥ अस्मिन् पंचकशांति कर्मणि पंचसंस्कारपूर्वकं अग्निप्रतिष्ठापनं क  
 रीष्ये ॥ इति संकल्प्य पूर्वचित्स्थं इलं कुशैः परिसमुह्य तानैशान्यानि क्षिप्य गोमयादकेन पलित्य शुक्लमूलेन प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरं क्रमेण प्राग  
 ं त्रिचिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेण अनामिकां गुष्टाभ्यां मुदं सद्भृत्य उदकेनाभ्युक्ष्य कांस्थपात्रेणाग्निमुपसमाधाय स्थंडिले अ० अग्निदूतं पुरा देवह  
 व्यं ब्रह्मपुत्रं देवाँऽऽसादयादिह ॥ १ ॥ इति मंत्रेण स्थापयेत् ॥ ततः अस्यानीतपात्रे सक्षतोर्दकं निषिष्य अग्निं ध्यायेत् ॥ अ० चतुर्विंशद्वा  
 त्रयोऽस्य पादोद्देशोऽपि स हस्तासोऽस्य ॥ त्रिवाचद्वौ वृषभोरासनीति महो देवा मर्त्या २ऽऽविंश ॥ १ ॥ अग्नैवैश्वानरादिरुद्रा गोत्र



आज्यस्थात्यामाज्यनिर्हृय प्रणीतोदकेनतंडुलान्प्रक्षाल्य चरुपात्रेप्रणितोदकंदत्वा तत्रतंडुलान्प्रक्षिप्य चरुम् अग्नेर्दक्षिणत आज्यमुत्तर  
 तोनिदध्यात् ॥ ततः सिद्धे चरौतृणादि प्रज्वाल्य उभयोरुपरिप्रदक्षिणभ्रामयित्वा वह्नौतत्प्रक्षेपः ॥ ततस्त्रिः खुवप्रतपनं समार्जनकुशाना  
 मग्नैरन्तरतोमूलैर्बाह्यतः खुवंसं मृज्यप्रणितोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिःप्रताप्य दक्षिणतः स्थापयेत् ॥ ततः आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीय  
 अग्नेधृत्वा आज्यात्पश्चिमे चरुमानीयाज्यस्योत्तरतोनिदध्यात् ॥ ततः आज्यस्य प्रोक्षणीवन्निरूपवनम् अवक्ष्य सत्यपद्रव्येत्तन्निरसनम्  
 प्रोक्षण्युत्पवनम् ॥ ततः उत्थाय उपयमनकुशान्वाग्रहस्ते कृत्वा प्रजापतिमनसाध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्कास्तिन्नः समिधः प्रक्षिपेत् ॥ तत  
 उपविश्य ॥ सपवित्रप्रोक्षण्युदकेनप्रदक्षिणक्रमेणाग्निपयुक्ष्यप्रणितापात्रेपवित्रोनिधाय ब्रह्मणान्वारब्धः सजघनं दक्षिणजातु निपात्य  
 सुसमिद्धतमेगो जुहुयात् ॥ तत्रप्रथमाद्भुतिचतुष्टये तत्तदहुत्यनन्तरं खुवावस्थितदुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॥ अथहोमः ॥  
 अग्नंप्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये नमम इति अग्नरुत्तरभागे ॥ अग्नं द्रायस्वाहा इदमद्राय नमम इति अग्नेर्दक्षिणभागे इत्याचारौ ॥ अग्न  
 येस्वाहा इदमग्नये नमम ॥ असोमायस्वाहा इदसोमायनममइति मध्येसमिद्धतमे इत्याज्यभागौ ॥ इतिहुत्वा वहिरग्नेः पूजनंपोडशोपचारैः  
 कुर्यात् ॥ ततो वस्वादिप्रधानदेवतानंप्रत्येकं समिच्चरुतिलाज्यादिद्रव्यैरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टौवाऽऽहुती जुहुयात् ॥ तत्रमंत्राः ॥ अव्वसो  
 पवित्रमसिशतधरं व्वसो ॥ पवित्रमसिसहस्रधारमा ॥ देवस्त्वामवितापुनतु व्वसो ॥ पवित्रेण शतधरिणमुष्वाकाममुक्षस्त्वाहा ॥ इदं व्वसुभ्यो नमम  
 १०८। २८। ८। अव्वरुणस्योत्तरमनमसि व्वरुणस्यस्कमसजनीस्थो व्वरुणस्यऽन्नतसंदध्यसि व्वरुणस्यऽन्नतसंदनमसि व्वरुणस्यऽन्न

तस्मिन्मासादस्वाहा॥ इदं वरुणाय नमः १०८।२८।८। अ० उत नो हि वुञ्ज्यन्त्युणो नृजङ्गपात्पृथिवी समुद्रा विथेदेवाऽऽकृता वृधेद्वानास्तुता  
 मंत्रात्कविशस्ताऽअनन्तस्वाहा॥ इदमग्नेकादेनमः १०८।२८।८। अ० शिवे नो मासि स्वर्धिते तितान भस्तेऽस्तु मामा हि उसीः ॥ निचया  
 म्याथुषेनाद्याय प्रजननारयस्योपायमुग्रजास्वायसुवीर्याय स्वाहा॥ इदमग्ने अहिबुञ्ज्याय नमः १०८।२८।८। अ० पूतव्रते व्यन्नारि व्योमकद  
 चुनस्तौ तारस्तद्दृश्ये सिस्वाहा इदं पूणे नमः १०८।२८।८। ततो यमाद्यधारे तं प्रत्येकमेककहूति चरुणा जुह्यात् ॥ अ० यमाय स्वाहा । इदं  
 यमाय नमः ॥ १॥ अ० धर्मराजाय० इदं धर्म० ॥ २॥ अ० मृत्यवे स्वा० इदं मृत्यवे० ॥ ३॥ अ० अंतकाय० इदमन्तकाय० ॥ ४॥ अ० वैव  
 स्वताय० इदं वैवस्व० ॥ ५॥ अ० अक्रालाय० इदं० ॥ ६॥ अ० सर्वभूतक्षाय० इदं० ॥ ७॥ अ० औदुम्बराय० इदं० ॥ ८॥ अ० दक्षाय० इदं० ॥ ९॥  
 अ० नीलाय० इदं० ॥ १०॥ अ० परमेष्ठिने० इदं० ॥ ११॥ अ० वृकोदराय० इदं० ॥ १२॥ अ० चित्राय० इदं० ॥ १३॥ अ० चित्रशाय स्वाहा इदं चि  
 त्रशाय नमः ॥ १४॥ अ० अघोरभ्याथघोरभ्याघोरघोरभ्यः सर्वभ्यः सर्वशवेभ्यो नमस्तस्तेऽस्तु रुद्रभ्यः स्वाहा॥ इदम् अघोराय० ॥  
 ततः अ० नमस्तद्रुद्रभ्यवऽतो तद्विवेनमः ॥ बाहुभ्यामुततेनमः स्वाहा इदं रुद्राय इति मंत्रेणाष्टोत्तरशत १०८ । २८ । ८ समिद्धो  
 मः ॥ विष्णुमंत्राणि त्रयोऽष्टौ ॥ ततो वस्वादिदेवानामुत्तपूजनं कृत्वा ब्रह्मणान्वाख्यः अ० अग्नये सिन्धुते स्वाहा इदमग्नये सिन्धुते नमः  
 इति चरुशेषं कृत्वा ततः आज्येन अ० भूः स्वाहा॥ इदमग्नये नमः ॥ १॥ अ० भुवः स्वाहा॥ इदं वावे० ॥ २॥ अ० स्वः स्वाहा ॥ इदं सूर्याय० ॥  
 ॥ ३॥ अ० स्वन्नोऽग्नेऽग्न्यव्यवृत्वा न देवस्य वेदेऽअवयासि सीष्टाः ॥ यज्ञिष्टो वृक्षे तमः शशुचानो विधवाऽद्रवाऽसि प्रमृषुऽभ्यमन्तस्वाहा

इदमग्नीवरुणभ्याम् ॥ ४ ॥ ॐ सत्त्वं त्रैलोक्ये भवेति निदिष्टोऽस्य उपसो व्युष्टौ ॥ अवयध्वनो वरुणं नराणां व्याहिमृडीकठमुह्वान  
 ऽधि स्वाहा इदमग्नीवरुणभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्रे स्य न भिरास्ति पाश्चात् स्य मे त्वमयाऽसि ॥ अयाने गजं ब्रह्मस्य नो धेहि भेषजं  
 स्वाहा इदमग्रे अयसे नमः ॥ ६ ॥ ॐ यत् शतं वरुणये सहस्रं यज्ञियाः पशविततमहान्तः ॥ तो भद्रोऽद्य स वितो विष्णुर्विश्वमुचुतुम  
 रुतः स्वर्कान् स्वाहा इदं वरुणादिभ्यः ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणपाशं मरुदवायमं विमर्ध ० श्रथाय ॥ अथाव्यमोऽदित्य त्रैतवानां ग  
 मोऽर्दितये स्याम स्वाहा इदं वरुणादिभ्यः ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमः ॥ ९ ॥ इति नवाहुतयः ॥ ततो दिक्पाले  
 भ्यो बलिदानम् ॥ अथ पूर्णाहुतिः ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहा ग्रे स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्याये स्वाहा दिवे स्वाहा  
 सूर्याय स्वाहा ॥ १ ॥ दिभ्यः स्वाहा चंद्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा मध्यस्वाहा वरुणाय स्वाहा नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥ २ ॥ मूर्ध्ना  
 नं दिवोऽरति पृथिव्या वैश्वानरमृतं आजतमग्निम् ॥ कविर्ऽसम्राजमतिथिजनानामासन्नापात्रं जनयत देवाः स्वाहा ॥ ३ ॥ इदं मृदाग्रे नमः  
 इति त्यागः ॥ ततः संस्रवप्राशनम् आचमनं च कृत्वा ॥ ॐ अद्य कृतं तपं च कशांतिहोमकर्मणि कृता कृता वैष्णवहूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठा र्थं भिक्षुं  
 पात्रं प्रजापतिदेवतमुक्तगोत्राय सुकशमेष्णे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे इति पूर्णपात्रं दद्यात् ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनानन्तरं ब्रह्मार्थविमो  
 कः ॥ ॐ सुमित्रियान् आपोऽपोऽययः सन्तु ॥ इति प्रणैता जलेन यजमानशिरः संस्पृज्य ॥ ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टियं च वयं द्वि

ष्महादन्त्यैशान्यांप्रणतिान्मुजीकरणम् ॥ अग्नौपवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ततःस्तरणक्रमेणबहिरुत्थाप्याज्येनाभिवाय्य अंशेवागतुविदोगातुं  
 विवागातुमितमनसस्पता॥इमं देवद्वन्द्वं तस्याहाव्यतोधाःस्वाहा इति जुहुयात् ततःश्लेषेणभस्मानीयदक्षिणानामिकाग्रहीतभस्मना अत्र्यायुषज्  
 मदेग्निरितिललाटे ॥ अक्षुभ्यर्पस्य त्र्यायुषम् ॥ इति श्रीवायाम् ॥ अथ देवेषु त्र्यायुषम् इति वाहुमूले ॥ अतन्त्रोऽस्तु त्र्यायुषमिति हृदि ॥ इति  
 त्र्यायुषं कुर्यात् ॥ ततः आचार्याय नक्षत्रप्रतिमादानम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य ॥ इमां धनिष्ठाप्रतिमां वसुदेवतां सतिलान्नांसवदा  
 सोपस्कराम् असुक्रगोत्राया मुक्रशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रदे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिविचनम् ॥ १ ॥ एवं शतभिषक्प्रतिमां  
 वरुणदेवतां समापात्रांसवदा सोपस्कराम् ॥ २ ॥ पूर्वभाद्रपदश्रुतिनाम् अजैकपादेवतां संपपात्रांसवदा सोपस्कराम् ॥ ३ ॥ उत्तरा  
 भाद्रपदश्रुतिनाम् अहिबुध्न्यैवतां समुद्रान्नां सवदा सोपस्करां ॥ ४ ॥ रेवतीप्रतिमां पूषदेवतां सप्तथान्यघटसाहितं सोपस्कराम् ऋ  
 गोत्राया मुक्रशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रदे ॥ ५ ॥ स्वस्तीति प्रतिविचनम् ॥ ततः षड्ब्राह्मणभोजनसंकरणः ॥ ततः पंचदानानि  
 कुर्यात् ॥ पयस्विर्नीगां १ महिर्षीं २ सप्तथान्यानि ३ सहिरण्यं सतिलं कृष्णवस्त्रं ४ सहिरण्यं सघृतं कांस्यपात्रं च दद्यात् ५ ॥  
 अथवा पंचदानमूल्यद्रव्यदद्यात् ॥ ततः पंचकलशोदकेन यजमानं सपरिवारसमिभिर्पच्युः ॥ तत्र मंत्राः ॥ अथ त्रिभिर्विश्वरूपह  
 शन्नो भवत्स्वर्यमा ॥ शत्रुऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरुद्रमः ॥ १ ॥ शन्नो ब्रवातः पवता ॥ शन्नस्तपतु हूयः ॥ शन्नः कर्निकं देवः  
 पर्जन्योऽभिर्वषतु ॥ २ ॥ अहानि शभवंतु नः शर्ति रात्रीः ॥ शन्न इन्द्राग्नी भवतामवाभिः ॥ शन्न इन्द्रावरुणा रतहव्या ॥

शत्रुऽऽन्द्राणव्वाजसतौशमिन्द्रासोमसुवितायशंयोः ॥ ३ ॥ शत्रोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतेयः ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ ४ ॥  
 द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विधे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वेऽ  
 शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ५ ॥ इत्यभिपिच्यवृत्तुसावलोकनंकृत्वा ब्राह्मणेभ्यो भूयसी दक्षिणां दत्त्वा देवतानामग्रे  
 श्रविसर्जनंकुर्यात् ॥ ततोदेशकालौसकीर्त्यं प्राचीनावीती अमुकगोत्रस्यप्रतस्य अनेनपंचकशतिकृतेन पंचकजनितदुर्भरणदोषनि  
 वृत्तिः ॥ सव्यम् ॥ ममगृहेसकलदुरितोपशान्तिरस्तु इतिपठित्वा उभयस्यस्मृत्याचनामोत्तयातपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनसंपूर्णतायाति सद्योवै  
 देवमच्युतमिति कर्मपूत्तिकामो विष्णुंस्मरेत् ॥ ततः स्नात्वाशुक्लशुद्धवाससीपरिधायब्राह्मणन्यायसात्रेन भोजयित्वागृहंगच्छेत् ॥  
 एवयः कुरुतेपुत्रः शुभतस्यप्रजायते ॥ विधानंयोनिकुर्वीत विघ्नस्तस्यभवेत्सदा ॥ १ ॥ इतिब्रह्मपुराणोक्तपंचकशान्तिप्रयोगः समाप्तः ॥  
 ॥ अथत्रिपादनक्षत्रमरणशान्तिः ॥ तत्रादौएकादशहनिपंचकशान्तिवस्सर्वतीथादौपरिकल्प्यस्नात्वाधौतवाससीपरिधाय संध्यादिनित्य  
 कर्मसमाप्य देशकालौसकीर्त्यं अमुकगोत्रस्यामुकप्रतस्यत्रिपादनक्षत्रे त्रिपुण्ड्रयोगेवा दुर्भरणजनितदोषोपशान्त्यर्थं ममगृहे सपरिवार  
 स्यायुरारोग्यसुखश्रीप्राप्त्यर्थं विष्णुपूजनपूर्वकत्रिपादनक्षत्रशान्तिकारिष्ये इतिसंकल्प्य ॥ विष्णुणोऽशोपचारैः संपूज्य ॥ चतुर्लक्षस्तमात्रं  
 होमार्थंस्थंडिलंकृत्वातदीशान्यापूर्वाक्तपंचकशान्तिवत्कलशत्रयस्यापनतिपामुपरिस्वर्णमयीमूर्त्यः स्थाप्याः ॥ मध्यकलशोत्रिपादनक्षत्रं  
 मुख्यदेवतां तदक्षिणे तत्पूर्वनक्षत्रमधिदेवतामुत्तरेतदुत्तरनक्षत्रप्रत्यधिदेवतामित्येवप्रतिमात्रयंकलशत्रयप्रतिष्ठाप्यपूजयेदितरंपूर्वव



त्समानम् ॥ होममुपव्यदेवतायै अष्टोत्तरशतम् अधिप्रत्यधिदेवतायै अष्टाविंशत्यष्टाविंशतिसंख्येतिविशेषः ॥ कृत्तिकात्रिपादेप्राङ्मनक्षत्रं  
 भरणी तदेवता यमः तन्मंत्रः ॥ अयमायन्वाङ्गिरस्मते ॥ कृत्तिकादेवता अग्निस्तन्मंत्रः ॥ अ० अग्निदूतपुरोदेवे ॥ उत्तरमनक्षत्रं रोहिणीत  
 देवताप्रजापतिस्तन्मंत्रः ॥ अ० प्रजापतेनवदेता ० पुनर्वसुत्रिपादेप्राङ्मनक्षत्रम् आर्द्रा तदेवता रुद्रस्तन्मंत्रः ॥ अ० नमस्ते रुद्र ॥ पुनर्वसु  
 देवता अदितिस्तन्मंत्रः ॥ अ० अदितिर्द्यौ ॥ उत्तरमनक्षत्रं पुष्यस्तदेवता बृहस्पतिस्तन्मंत्रः ॥ अ० बृहस्पतेऽअति ॥ उत्तराफाल्गुनीत्रिपादे  
 प्राङ्मनक्षत्रं पूर्वा तदेवता भगस्तन्मंत्रः ॥ भगऽएव भर्गा ॥ उत्तराफाल्गुनीदेवता अर्यमातन्मंत्रः ॥ अ० अर्यमणंवृहस्पति ॥ उत्तरन  
 क्षत्रं हस्तस्तदेवता रविस्तन्मंत्रः ॥ अ० आकृष्णेनरजसा ॥ विशाखात्रिपादेप्राङ्मनक्षत्रं स्वातिस्तदेवता वायुस्तन्मंत्रः ॥ अ० वायोयेतसह  
 क्षिणो ॥ विशाखादेवेतद्वेन्द्रात्रीतन्मंत्रः ॥ अ० इन्द्रात्री आगत ॥ उत्तरमनक्षत्रमनुराधा तदेवता मित्रस्तन्मंत्रः ॥ अ० मित्रस्य चर्पणी ॥ उत्तराषाढा  
 त्रिपादेपूर्वमनक्षत्रं पूर्वाषाढा तदेवता जलम् ॥ अ० आपोहिष्टा ॥ उत्तराषाढादेवता विश्वदेवाः ॥ अ० विश्वेदेवास ॥ उत्तरमनक्षत्रं श्रवणस्तदेवता  
 विधिः ॥ अ० ब्रह्मजज्ञानं ॥ पूर्वाभाद्रपदात्रिपादे प्राङ्मनक्षत्रं तारका तदेवता वरुणः ॥ अ० व्यरुणस्योत्तं ॥ पूर्वाभाद्रपदादेवता अजैकपाद  
 अ० उत्तनोर्दिवुध्य ॥ उत्तरमनक्षत्रम् उत्तराभाद्रपदास्तदेवता अर्दिवुध्यः ॥ अ० शिवेनामासि ॥ ततः कलशत्रयेत्राणि मूर्त्तानि जपेत् ॥ प्रथमकलशे  
 कुण्डपूजः ॥ ५ ॥ द्वितीयकलशो वित्राडित्यनुवाकः ॥ तृतीयकलशे शिशानो इत्यप्रतिथं जपेत् ॥ ततो दक्षिणतो ब्रह्मसनादि चरु  
 श्रपणम् आज्यभागं तं पूज्य कृत्वा स्थापितदेवतानां समिच्छरितिलज्यादिद्रव्यैः प्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमिष्टावाजुद्वयात् ॥ मंत्रास्तपूज्य  
 उक्ताः ॥ ततः स्थापितदेवतानां मुत्तरपूजनम् ॥ ततः स्विष्टकृदाद्यभिषेकान्तं पंचक्रांतिवद्यथाशक्ति ब्रह्मणभोजनसंकरयः ॥ स्थापितदेवता

नाविसर्जनम् ॥ ततोभूमिहिरण्यवन्नदानिचदद्यात् ॥ भद्रातिथिमतस्य भूमिदानम् ॥ त्रिपादक्षहिरण्यदद्यात् ॥ रव्यंगारकगुरुवारणामेकस्मि  
 न्वारमृतस्य वन्नदानं कुर्यात् ॥ अन्यत्सर्वपूर्ववत् ॥ इति त्रिपादनक्षत्रमरणशान्तिप्रयोगः समाप्तः ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥  
 ॥ अथ कादशाहश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र तावत् प्रातर्नद्यादौ स्नात्वा शुद्धवाससीतनज्ञोपवीतं परिधाय संध्यादिनित्यक्रियाकृतवानद्यादित्ती  
 र्थे देवालये वा गत्वा तत्र श्राद्धभूमिपरिकल्प्य ॥ गोमयोदकाभ्यामुपालिप्य जलदंगारैः संशोध्य गौरमृत्तिकया ऽऽच्छाद्य तिलैर्गौरसर्पैश्च विकि  
 रेत् ॥ ततो मध्याह्ने पुनः स्नात्वा शुद्धवाससीपरिधाय पूर्वरेचितश्राद्धदेशमागत्य ॥ गोमयोपलिप्तायां भूमौ तिलान्विकीर्य तत्र सर्पिडादि  
 द्वारा स्वयं वा नूतनमृन्मयभांडैः सकृत्पोदशश्राद्धार्थपाकं कुर्यात् ॥ ततः पाकसिद्धे आसनसमीपे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत्  
 ॥ काककुक्कुडादींश्श्राद्धाहृतं नपासारयेत् ॥ श्राद्धदेशं च वस्त्रेण आवेष्टयेत् ॥ ततः कर्ता स्वासनं प्राङ्मुख उपविश्य पादयोरधः  
 कुशत्रयं दक्षिणार्धं धृत्वा सव्येन आचम्य प्राणानायम्य कर्मपात्रं जलेन परिपूर्य गंधपुष्पादिभिर्मन्त्रैश्च ॐ अपवित्रः पवित्रो वा  
 सर्ववस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरत्युडरीकाक्षं सर्वाह्वाभ्यंतरः शुचिः ॥ १ ॥ ॐ पुंडरीकाक्षः पुनातु इति पठित्वा कुशत्रयानीत जलेन  
 श्राद्धद्रव्याणि स्वात्मानं च प्रक्षेपयेत् ॥ ततः ॐ भूम्यनमः ॐ भगवते गदाधाराय नमः ॐ भगवते गदाधाराय नमः इति नत्वा ॥ कुशत्रयतिल  
 जलान्यादाय देशकालौ सतीत्यर्थं ( प्राचीनावीती ) अद्यामुक्तगोत्रस्यामुक्तप्रेतस्य प्रेतविमुक्त्यर्थं पितृसमन्वप्राप्त्यर्थम् आद्यमासिकत्रेपा  
 शिकाद्वितीयमासिकतृतीयमासिकचतुर्थपंचमो नवमषष्ठसप्तम अष्टमनवम दशमा एकादशमासिकानि स्वस्वकालकर्तव्यानि  
 षोडशश्राद्धानि सर्पिंडीकरणधिकारसिद्धयर्थमेकादशेऽह्नये अपहृष्य एकोद्विष्टविधिना कारिष्ये इति संकल्पयेत् ॥ एकाद

शमासाभ्यन्तेऽधिकमासपातेषोऽशपदस्यानेसप्तदशपदप्रयोज्यम् ॥ ततो गायत्रात्रिजिपित्वा अ० देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः इति त्रिजिपेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा ॥ दक्षिणामुखः सजघनवामजानु निपात्य अ० नमोनमस्ते गोविंद पुराणपुरोत्तम ॥ इदं श्राद्धं दध्यैकेश रक्तांसवतां दिशः ॥ १॥ इति तिलगौरसर्पपांसवत्राविकार्यं नीवीबंधं कुर्यात् ॥ ततः कस्मिंश्चित्पत्रे जलगृहीत्वा दमेरालोडया अ० यद्वा देवहृदने देवासश्च कृमाव्ययम् ॥ अग्नौ मातस्मादेन सोऽसौ विवशन्मुचत्वर्हसः ॥ १॥ यादिदिव्यादिनक्तमेना ० ० ० सिचकृमाव्ययम् ॥ व्यायुर्मातस्मादेन सोऽसौ विवशन्मुचत्वर्हसः ॥ २॥ यदि जगद्यद्विस्वप्रमेना ० ० ० सिचकृमाव्ययम् ॥ मृत्योर्मातस्मादेन सोऽसौ विवशन्मुचत्वर्हसः ॥ ३ ॥ इति कूर्पांडमृतेनाभिर्मन्त्र्य श्चादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिपूतभवात्ययुक्ता तेन पाकं प्रोक्षयेत् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अ० अद्यामुकगोत्रा मुकप्रत आद्याश्राद्धे इदमासं ते मया दीयते वोपतिष्ठतामियुक्त्वा ॥ ऋजु कुशत्रयरूपमासनं प्रथमं दक्षिणाग्रं सवतः पश्चिमगतमुत्तरेजेत् ॥ ( नात्र द्विगुणभुग्नामोऽन्यत्र ॥ ) ॥ ( सर्पदिकरणं यावद्दुर्गदूषः पितृक्रिया इति विष्णुपुराणीयात् ) ॥ पुनः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अ० अमुकगोत्र अमुकप्रतमासिकश्राद्धनिमित्तकमिदमासं ते मया दीयते वोपतिष्ठताम् इति द्वितीयमासनं दक्षिणाग्रमुत्तरेजेत् ॥ २ ॥ पुनः कुशत्रयादीन्यादाय अ० अमुकगोत्रा

१. विष्णुवायुगुरुदुवराणहेमाद्रिषु आशिषो द्विगुणा दर्भा जपाशीः स्मस्ति वाचनम् ॥ पितृशब्दः स्वसंबन्धः शर्मशब्दस्तथैव च ॥ आवाहः पात्रालभश्च उमुकोऽष्टेनादिकम् ॥  
द्वितीयं श्राद्धं विक्रिः शेषमश्रुतं च ॥ यदक्षिणविसर्गश्च संमार्तं गमनं तथा ॥ अष्टादशपदार्थास्तु त्रेतश्राद्धेषु वसेयेत् ॥

मुकुप्रेतत्रिपाक्षिकश्राद्धनिमित्तकमिदमासनंतेमयादीयतेवोपतिष्ठतामितृतायिमुस्तुजेत् ॥ ३ ॥ एवंद्वितीयमासिकं ॥ ४ ॥ तृतीयमा-  
 सिकं ॥ ५ ॥ चतुर्थमासिकं ॥ ६ ॥ पंचममासिकं ॥ ७ ॥ षष्ठमासिकं ॥ ८ ॥ सप्तमासिकं ॥ ९ ॥ अष्टम-  
 मासिकं ॥ १० ॥ नवमासिकं ॥ ११ ॥ दशमासिकं ॥ १२ ॥ एकदशमासिकं ॥ १३ ॥ अत्राष्टमासिकं ॥ १४ ॥ अत्राष्टमासिकं ॥ १५ ॥ अत्राष्टमासिकं ॥ १६ ॥  
 एवंतत्तच्छ्राद्धनिमित्तकान्यासनानिक्रमणद्वयात् ॥ ततः ॐअपहृतुःअसुररक्षःॐसिर्वदिवदः ॥ इतिवासावर्तेनसर्वत्रतिलान्विकीर्य दमे  
 हस्तोभूतले ॐइहलोकंपरित्यज्य गतोसिपरमांगतिम् ॥ मनसावायुरूपेण चरेत्वाहानिमंत्रये-इतिप्रेतमावाहयेत् ॥ ततोऽर्घपात्रपोदशोप-  
 रिप्रत्येकंदक्षिणाग्रकुशपत्रैकैकं धृत्वा तत्र ॐशत्रोर्देवीरिभिर्धुयऽ आपोभवंतुपीतेयैः शंभ्योऽग्निरभिसंवतुनःइतिप्रत्येकंजलंक्षिप्वा ॥ अतिलोसि-  
 सोमदैवत्यो गोसोदेवानिर्मितः ॥ प्रत्नमद्भिःपृक्तःस्वधयापितृल्लोकान्प्राणाहिनः स्वाहा इतिमंत्रेणतिलान्प्रक्षिप्य तूर्णगंधपुष्पाणिचप्रक्षि-  
 पेत् ॥ ततः प्रथमपात्रंवामहस्तेकृत्वा पवित्रंतदग्रेधृत्वा ॐयादिव्याऽआपःपयसांसंभूवृथ्याऽअन्तरिक्षाऽउतपार्थिवर्याः ॥ हिरण्यवर्णायजि-  
 यास्तानऽआपःशिवःसृष्ट्योनोःसुहवाभवन्तु-इतिपठित्वा ॥ कुशत्रयादीन्यादाय ॐ अद्यामुक्रोगोत्र अमुकप्रेत आद्यश्राद्धे एषतेहस्तावेति  
 मयादीयेतवोपतिष्ठतामिति प्रथमपवित्रोपार अर्घजलमुस्तुजेत् ॥ ततोद्वितीयार्घपात्रंगृह्णत्वा पवित्रंतदग्रेपलशपत्रोपरिधृत्वा ॥ ॐ या-  
 दिव्या इतिपठित्वा कुशत्रयादीन्यादाय ॐ अमुक्रोगोत्रासुक्रप्रेत मासिकश्राद्धे एषतेहस्तार्घोमयादीयेतवोपतिष्ठतामितिपवित्रोपार अर्घज-  
 लमुस्तुजेत् ॥ एवमेवत्रिपाक्षिकद्वितीयमासिकादिषुज्ञेयम् ॥ (अत्रपात्रान्यङ्गीकरणंकृताकृतम्) ॥ ततोऽगंधादिदानंतावद्गंधपुष्पद्रुपदीपवस्त्रादी-

न्यासावहस्तेकुशत्रयतिलजलन्यादाय ॐ अमुकगोत्र अमुकप्रेत आद्यादिद्वादशमासिकांतपोदशश्राद्धनिमित्तकान्येतानिगंधपुष्पपूषर्पदी  
पतांबूलवासोसि एकतंत्रेणतेमयादीयतेतवोपतिष्ठताम् इत्युत्सृजेत् ॥ ततः अर्भाणपोदशश्राद्धनामचर्चनविधेः परि र्णता इतिपाठत्वा ततः  
आसनानिवर्धयिष्याजलेनचतुष्कोणादिमंडलकुर्यात् ॥ अत्रपरकीयभूमिश्राद्धकरणे इममन्नमेतद्व्यामिषितृभ्योनम इतिदभूत्सृजेत् ॥ ततः  
उष्णमन्नंताम्रादिपात्रेणकराभ्यामादाय मृतंध्यन्यपोदशपात्रेषुप्रत्येकम् एकस्मिन्पात्रेवाधुरपुत्रमिश्रमपरिविष्यधृष्यकथकपुटकादिस्य  
तानिप्रत्येकंघृतजलख्यंजनानिचोपनीय अन्नमधुनाभिचार्य ॐ मधु० वाता०ऽहतायते० इतिमंत्रत्रयेणाभिर्मंत्र्य ॐ मधुमधुमाध्वितिचपठेत् ॥  
( नात्रपात्रालंभगणहौ नात्रपात्रालंभोनाशिषःश्रायिद्यदितिप्रचेतःस्मरणात् ) ॥ ततः सर्वपात्रावपारितः ॐ अपहताऽअमुरारक्षा०७॥सिर्वदिपद  
इतितिलांन्विकीर्य ॥ वामकरेणपात्रंस्पृशन्दक्षिणहस्तेकुशत्रयादीन्यादाय ॥ ॐ अमुकगोत्र अमुकप्रेत आद्यश्राद्धे इदमन्नघृताद्युपरस्कर  
सहितंतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतामिन्यासनावामागेजलमुत्सृजेत् ॥ इदमन्नंप्रेताय उपतिष्ठतुइतिपठेत् ॥ अनेनैवक्रमेण मासिकं० २  
त्रैपक्षिकं० ३ द्वितीयमासिकं० ४ तृतीयमासिकं० ५ चतुर्थमासिकं० ६ पंचममासिकं० ७ ऋणपाण्यासिकं० ८ पाण्मासिकं० ९ सप्तमं० १०  
अष्टमं० ११ नवमं० १२ दशमं० १३ एकदश० १४ अनार्षिकं० १५ द्वादशमासिकश्राद्धेषुज्ञेयम् १६ अथवा एकस्मिन्पात्रेस्त्रितमन्नम् ॐ  
अमुकगोत्रंप्रेतआद्यादिद्वादशमासिकान्तपोदशश्राद्धनिमित्तकमिदमन्नघृताद्युपरस्करसहितम् एकतंत्रेणतेमयादीयतेतवोपतिष्ठतामिदुत्सृजेत्  
( नात्रपौतृकोजपः ॥ नपौतृकोजपः कथ्य इतिहमाद्वाप्रेचेतःस्मरणात् ॥ विकिरमपिनकुर्यात् ॥ प्रेतश्राद्धे न विकिर इति स्मृतिरनवलया  
नविकिरंस्वधाकारम् इतिवायुपुराणञ्च ) ॥ ततोऽन्नपात्रसमर्पिपेदिदनाथसिक्ताभिः षोडशवेदिकाः दक्षिणप्लवाः कृत्वा गोमयादकेनोप

लिप्य प्रत्येकं दक्षिणाग्रं कुशत्रयास्तरणं कुर्यात् ॥ ततः षोडशत्रुपुटकेषु जलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा एकपुटकं गृहीत्वा ॐ अद्या  
 मुकुशगोत्रामुक्रप्रेत आद्यश्राद्धपिंडस्थाने अत्रावने निक्षेपे मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रथमं वेदिकायां छिन्नमूलकुशत्रयोपरि अवने जनज  
 लं किंचिद्व्यात् ॥ एवं मासिकादिपंचदशश्राद्धपिंडस्थाने प्रत्येकं मवने जनं दद्यात् यथाक्रमेण ॥ ततो घृतमधुतिलयुक्तेन वनेन षो  
 ढशपिंडानि चित्वा उपमात्रिभार्यमधुघृताभ्यामाभिचार्य प्रथमं पिंडं कुशत्रयातिलजलनिचादाय ॐ अमुकगोत्र अमुक्रप्रेत आद्यश्राद्धे  
 एते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रथमं वेदिकायां कुशोपरि अवने जनस्थाने सव्योपपणदीतदक्षिण करेण पिंडं दद्यात् १ पुनः कुश  
 त्रयादीनि पिंडं चादाय ॥ ॐ अमुकगोत्रामुक्रप्रेत मासिकश्राद्धे एते पिंडो मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति द्वितीयं वेदिकायां कुशोपरि द  
 द्यात् २ एवं त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासिकं ४ तृतीयमासिकं ५ चतुर्थमासिकं ६ पंचमं ७ अनपणमासिकं ८ पाणमा  
 सिकं ९ सप्तमासिकं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकदशं १४ उनाविंशकं १५ द्वादशमासिकं १६ श्राद्धेषु  
 पृथक् पृथक् पिंडं दद्यात् ॥ ततो हस्तौ प्रक्षाल्य सव्येनाचम्य हर्षिस्मृत्या अपमव्यं कुर्यात् ॥ ततः प्रथमं मवने जनपानत्रमादाय ॐ  
 अमुकगोत्रामुक्रप्रेत आद्यश्राद्धपिंडे अत्र प्रत्यवने निक्षेपे मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रथमं पिंडोपरि प्रत्यवने जनं दद्यात् ॥ १ ॥ एवं  
 मासिकादिपंचदशश्राद्धपिंडोपरि क्रमेण प्रत्येकं प्रत्यवने जनं दद्यात् ॥ ततः पिंडसमीपे नीवीं विमृज्य सव्येनाचम्य अपमव्येन प्रतिपिंडं  
 प्रक्षालितं सूत्रत्रयं दक्षिणहस्तेन दत्त्वा ॥ कुशत्रयादीन्यादाय ॐ अमुकगोत्रामुक्रप्रेत आद्यादि द्वादशमासिकान्न षोडशश्राद्धपिंडोपरि  
 एतानि वासांसिते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति तत्रैव मुत्तुजेत् ॥ ततः षोडशपिंडांगं यण्णपतुलसीपत्रधूपदीपं नैवेद्यात् बृहस्पती

फलदक्षिणाभिः संपूज्य ॥ ॐ अमुक० प्रेत आद्यादिषोडशश्राद्धपिंडेषुयद्दत्तंगंधाद्यर्चनं तत्तवोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ॥ ततः शभिः षोडशपिंडदानैरमुकगोत्रप्रेतस्यप्रेतत्वनिघृतिः ॥ सद्गतिप्राप्तिश्चास्तु ॥ इतिपठित्वा एकस्मिन्पत्रे ॐ शिवा आपः संतु-इतिजलम् ॥ सौमनस्यमस्तु-इतिपुष्पम् ॥ अक्षंतचारिणंचास्तु-इतिवतिलंश्च प्रक्षिप्य ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अमुकगोत्रस्यअमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धे यद्दत्तमन्नपानादिकंतदुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ एवं मासिकादिपंचदशश्राद्धेषुक्रमेणषष्ठीविभक्त्याक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः पिंडानामुपरि प्रत्येकंपत्रं निधाय तदुपरि सतिलदुग्धेनजलेनदक्षिणाग्राजलधारादद्यात् ॥ अनादिनिधनोदेवभारवचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यः पुंडरीकक्षः प्रेतमोक्षप्रदोभवा ॥ १ ॥ अतसीपुष्पमंकारं पीतवाससमच्युत्मायेनमस्यतिगोविंदं नतेषांविद्यतेभयम् ॥ २ ॥ कृष्णकृष्णकृपालुस्त्वमगीनगतिर्भव ॥ संमाराणंभयानां प्रसीदुषुरुपेत्तम् ॥ ३ ॥ नारायणसुरेश्च लक्ष्मीकान्तवप्रद ॥ अनेनतर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ ४ ॥ हिरण्यगर्भंरूपं व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणे ॥ अस्यप्रेतस्यमोक्षार्थमुप्रीतोभवसर्वदा ॥ ५ ॥ इतिपठित्वा अमुकगोत्रामुकप्रेतं अन्नजलधारास्तेभयादीर्यैतत्तवोपतिष्ठताम् इत्युत्सृजेत् ॥ ततो रजतद्रव्यं कुशत्रयादीनिचादाय ॐ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वनिघृत्तार्थं कृतैतदद्यादिद्वादशमासिकपर्यंतषोडशश्राद्धानांप्रतिष्ठासिद्धयर्थं भिर्दरजंतंचंद्रैवतममुकगोत्रायामुकराशमणेत्राह्मणयदातुमहमुत्सृजे इतिसंकल्प्य ब्राह्मणायदद्यात् ॥ ततः पिंडानुत्थाप्य चदविमर्जे नंकुर्यात् ॥ ततः ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्चेतित्रिजपित्वा रक्षादीर्पनिर्वाप्य हस्तौपादौप्रक्षाल्य सव्येनाचामेत् ॥ ततः कर्मभूतिकामो विष्णुंभजेत् ॥ ॐ प्रमदादाकुर्वतां कर्म प्रच्यवेताधेऽपुयत् ॥ स्मरणदेवताद्रिणोः संपूर्णस्यादितिश्रुतिः-इतिपठित्वा श्राद्धसत्तुनिधिप्राप्य

प्रतिपादयेत् ॥ पिंडादिकंगोभ्योवायसेभ्योवाद्यादगाधेजलेवा क्षिपेत् ॥ ततः एकादशप्रभृतिब्राह्मणभोजयेत्ताब्शय्यादिदानैः  
 परितोपयेत् ॥ ततः षष्ठ्युत्तरशतत्रयपिंडदानम् अंजलिदानं च कुर्यात् ॥ इत्याद्यादिषोडशश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 अथ षष्ठ्यधिकशतत्रयपिंडश्राद्धविधिः ॥ तत्रादौ सव्येनाचम्य प्राणानायम्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ देशकालौ सत्कीर्त्य अपसव्या  
 दिना अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य परलोकैकमहधुयातृपानिवारणार्थं मरणदिनादारभ्य संवत्सरपर्यन्तम् अहरहः सत्रोदकुम्भपिंडनि  
 भित्तकषष्ठ्यधिकशतत्रयपिंडश्राद्धं करिष्ये इति सकल्प्य ॥ गोमयापोलिते दक्षिणप्रवणस्थंडिले कुशोपरि त्रिंशद्विंशतिपिंडान् दद्यात् ॥  
 तद्यथा—एकस्मिन्तत्रपुटे ॥ जलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा तत्पुटकं गृहीत्वा ॐ अमुकं प्रेतषष्ठ्यधिकशतत्रयपिंडस्थाने अत्रावने  
 निश्चते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्—इति वेदिकयां कुशोपरि अवनंजनं किंचिदद्यात् ॥ ततस्ति लघुतमधुदधिदुग्धशर्करादियुक्तेन यवचूर्णेन  
 षष्ठ्युत्तरशतत्रयपिंडान्निर्माय जलेन प्राक्ष्य प्रथमं त्रिंशत्पिंडान् कुशत्रयादीनि चादाय ॥ ॐ अमुकगोत्र अमुकप्रेत परलोकैकमहधुयानि  
 वारणार्थम् एकादशाहं प्रथममासिकाहरहः श्राद्धनिमित्तकनीमानि त्रिंशत्पिंडानि ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति कुशोपरि दद्यात् १ ॥  
 एवं द्वितीयमासिकं ०२ तृतीयं ०३ चतुर्थं ०४ पंचमं ०५ षण्मासिकं ०६ सप्तमं ०७ अष्टमं ०८ नवमं ०९ दशमं १० एकादशं ११  
 द्वादशमासिकं १२ श्राद्धनिमित्तकानि क्रमेण त्रिंशत्त्रिंशत्पिंडानि दद्यात् ॥ ततोऽवने जनपात्रमादाय ॐ अमुकगोत्रं प्रेतषष्ठ्युत्तरशतत्रयपिंडो  
 परि प्रत्यवने निश्चते मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रत्यवने जनदत्त्वा पिंडान्मुत्रांगंधपुष्पयवपदीपतांबूलैः संपूज्य ॥ एभिः षष्ठ्यधिकशतत्रय  
 पिंडदानैः मुकगोत्रस्य प्रेतस्य संवत्सरपर्यन्तं धुयानि वृत्तिरस्तु—इति पठेत् ॥ ततो दक्षिणादानं रजतद्रव्यं जलकुशादीनि चादाय । अमुकगोत्र



स्यप्रतस्प्रतन्वनिवृत्त्यवृत्ततपद्यधिकशतत्रयपिडश्राद्धकर्मणः सांगतासिद्धयर्थमिदंजतचंद्रवतममुक्रगोत्रायामुक्रशर्मणोब्राह्मणायदक्षिणात्वेनदत्तुमस्तुजेइतिदद्यात् ॥ ततः पिदानुत्थाप्यजलादौशिर्यविष्णुस्मरेत् ततोऽजलिदानम् ॥ तत्रादौ अश्वत्थादिसमीपे गत्वातन्मूलदेशेदक्षिणामुख उपविश्यपातितवामजानुःअपसव्येन ॥ कुशत्रयतिलजलन्यादाय ॥ अमुक्रगोत्रस्यामुक्रप्रतस्यपरलोकेमहातृष्णानिवारणार्थम् अहरहःमात्रोदकुंभनिमित्तकपद्यधिकशतत्रयंजलिदानंकरिष्ये-इतिसंकल्प्य ॥ एकंवृत्तपात्रंजलेनापूरयत्तत्रदुग्धतिलगंधधूप्याणिनिक्षिप्य ऋजुदर्भयुक्तपूणाजलिना ॐअमुक्रगोत्र अमुक्रप्रत परलोकेमहातृष्णानिवारणार्थम् एतेपद्यधिकशतत्रयः तिलतोयाजलयस्तेभयादीयेतेवोपतिष्ठताम् इतिवाक्यंकृत्वापद्यधिकशतत्रयतिलतोयाजलिन्दद्यात् ॥ ततः अनादिनिधनोदेवशंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यः पुंडरीकाक्ष प्रेतमाक्षप्रदोभव ॥ इति प्रार्थयविष्णुस्मरेत् ॥ इति पद्यधिकशतत्रयपिडश्राद्धप्रयोगः ॥ अथशय्यादिदानम् ॥ तत्रप्रयोगः ॥ तत्रादौ ॥ सारदारुमर्थाद्वृद्धादंतपत्रहमपट्टाक्षरंछ्रुतांहंसवृत्तप्रतिच्छत्रांशुभ्रगण्डोपधानकां प्रच्छादनपट्टशुक्तांगयधूपादिवासितां पुष्पतंबूलकुंडमकरगुरुचंदनदीपानहच्छत्रचारुमव्यजनामनमतवाग्यवृत्तपूजाकुंभमहितां शय्यामासाद्यनवैकंअंचनपुरुषंस्थापयेत् ॥ ( सपिण्डनोत्तरशय्यादानकरणेल्क्ष्मीनारायणप्रतिमांस्थापयेत् ) ततः पूर्वामिसुख उद्धमूखोवा उपविश्य आचम्य प्राणानामभ्य देशकालौसंकीर्त्य ॥ ॐअद्याशौचान्तद्वितीयोद्विह ( अपसव्यम् ) अमुक्रगोत्रस्यामुक्रप्रतस्यस्वर्गकामः शय्यादानं करिष्ये इति संकीर्त्य देयब्राह्मणगंधादिनांसंपूज्य ॐइमांसोपकरणशय्याददामीति द्विजकेजलंस्त्रा ॥ ॐवदस्व इति प्रतिवचनांनन्तरं विप्रशय्यायामुपवेशयेत् ॥ ततः ॐसोपकरणशय्यायैनमः-इति शय्यांनमस्कृत्य कांचनपुरुषं गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यानां

बूलादिभिः संपूज्य नमस्कृत्य ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अब्राशौचातद्वितीयेति अमुकगोत्रस्यामुकप्रतस्यपरलोकेमुख  
 शयनार्थं स्वर्गलोकप्राप्त्यर्थमिमांसेपक्कराशय्यां कांचनपुरुषप्रतिमायुतविष्णुदेवत्याममुकगोत्रायामुकर्भर्गणे ब्राह्मणयत्तुभ्यमहंसंप्र  
 ददे-इतिसिलोदकंविप्रहस्तेदद्यात् ॥ ॐ स्वस्तीतिविप्रोवदेत् ॥ ततः शय्यादानप्रतिष्ठार्थं हिरण्यंकुशत्रयदीनिवादाय ॥ ॐ  
 अवधूतैतत्सोपकरणशय्यादानप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदेवतमुकगोत्रायामुकर्भर्गणे ब्राह्मणयदक्षिणात्वेनतुभ्यमहंसंप्रददे इति  
 दद्यात् ॥ ततःप्रतिग्रहीता ॐ स्वस्तीत्युक्त्वाशय्यांसंप्रशेत् ॥ ततोदाता ॐ यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया ॥  
 शय्या ममाध्यशून्यास्तु तथा जन्मनिजन्मनि ॥ इति पठित्वा प्रणम्यविभुजेत् इति शय्यादानप्रयोगः ॥ ( अत्रकेषुचिद्व्यं  
 षुद्विजदंपतीपूजनंलिखितम् तत्तुपर्वतीथानामैथिलानांचेक्ष्यम् ) ॥ अथत्रयोदशपददानानि ॥ तत्र आसनम् १ उपानहौ २ छत्रम् ३  
 मुद्रिकाम् ४ कमंडलुम् ५ अन्नम् ६ जलम् ७ भाजनानि ८ वस्त्राणि ९ आज्यम् १० यज्ञोपवीतम् ११ यष्टिम् १२ तांबूलम् १३ इमा  
 नित्रयोदशपददानद्रव्याणि यथाचारं यथाशक्तिसंपाद्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ देशकालौ संकीर्त्य ( अपसव्येन ) अमुकगोत्र  
 स्यामुकप्रतस्य परलोकेमुखप्राप्त्यर्थम् असहृतिनिवारणार्थम् इमानि आसनोपानहौछत्रमुद्रिकामंडल्वन्नजलभाजनवस्त्राज्यज्ञोपवीतय  
 ष्टितांबूलानित्रयोदशपदानिनादैवतानि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्योदातुमहमुत्तजे प्रेताय उपतिष्ठताम् इत्युत्तजेत् ॥ एभिः पददा  
 नेरमुकगोत्रस्यामुकप्रतस्यप्रेतत्वंनिवृत्तिः सद्गतिप्राप्तिः इतिपठित्वाब्राह्मणेभ्योदद्यात् ॥ इतित्रयोदशपददानम् ॥ ततः शक्तौसत्यां महाहो  
 णिरत्नानि गाःवाहनंयानानिदासीदासंवेक्षणैर्नतनुद्विश्यविप्रभ्योदद्यात् ॥ इत्येकादशाहदिनकर्म ॥ ॐ ॥ अथसर्पिडनश्राद्धम् ॥

तच्चानुनिकाः द्वादशहो अनुकलेनकुर्वन्ति तथैव लिख्यते ॥ तत्र पूर्वदिने एकादशहो श्राद्धं कृत्वा निगमिषमेकवारं मुष्कारात्राप्रदोषान्ते ब्राह्मणा  
 विभ्रंथित्वा सर्पिडनदिने नद्यादौ प्रातः स्नात्वा नियक्रियां समाप्य मध्याह्ने पुनः स्नात्वा श्वेतोपधारीधाय गोमये पलिताय धूमौ सुस्नातसप  
 डादिद्वारा स्वयं वा पाकं द्रव्यं कुर्यात् ॥ ततो मृत्तित्थाने श्राद्धं धूमिपरिकल्प्य गोमयादिकं भाग्यपुलिप्य ज्वलद्गौः संशोध्य गौरमृत्तित्थं कया च्छाद्य  
 तिलैर्गौरसर्पैश्च विक्रियेत् ॥ तत्र श्राद्धसामर्थ्या जलपूरितान्दशघटाश्चैकांकांकात्रपूरितां वर्धनीं च संपाद्य श्राद्धार्थं मंडलं द्रव्यं कुर्यात् ॥ तत्र  
 प्रथमेदं मंडलं चतुरस्रं कृत्वा तदक्षिणे प्रेतमंडलं तत्प्राकृपिता महादिमंडलं च वर्तुलं त्रिकोणं वा कृत्वा तत्र षड्दुर्भं वदा विवेशयेत् ॥ तत आसनसमी  
 पे तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत् ॥ काककुम्भं ऋट्दं विष्णूदापहंतनपसारयेत् ॥ श्राद्धदेशाव्रणं च कुर्यात् ॥ तत्र प्रथमं विधेयं देवास्ततः  
 प्रेतः प्रेतपित्रादिकमिति क्रमः ॥ तत्र प्रेतश्राद्धे द्विगुणं दर्मा आवाहनं स्वधाराब्दं पात्रालंभं अङ्गुष्ठनिवेशनम् अम्लोकराशेषदानम् उल्लुक्कत्रा  
 भणं शर्मादिशब्दं विसर्जनं च विविजयेत् ॥ भोटकस्थाने ऋजुर्दुर्भाः स्वधारास्थाने उपतिष्ठतामिति वक्तव्यं प्रेतशब्देनोद्देशः कर्तव्यः ॥ प्रेतपित्रा  
 दि श्राद्धं तु पावणवत्कर्तव्यम् ॥ अथ प्रयोगः ॥ तत्रादौ स्वासनं प्राङ्मुखं उपविश्य पादयोरयः कुशत्रयं दत्त्वा (सव्येन) पवित्रपरिधाय आ  
 चम्य प्राणानायम्य कर्मपात्रं जलेन पूर्य तत्र जलतिलगंधपुष्पाणि प्रक्षिप्य ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्ववस्थायं गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेन्मुडरी  
 कांशं सत्राद्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥ ॐ पुंडरीकाक्षः पुनान्ति कुशत्रयानीत जलेन श्राद्धं स्मृतुं निस्वात्मानं च सिंचेत् ॥ ततः  
 ॐ वैष्णव्यै नमः ॥ ॐ अक्षययै नमः ॥ ॐ अक्षययै नमः ॥ ॐ भूम्यै नमः ॥ श्राद्धे देशंगयात्मकत्वेन तदेकदेशस्थं  
 गदाधरं च ध्यात्वा तयोः ॐ भगवत्यै गयायै नमः ॥ ॐ भगवतै गदाधराय नमः ॥ इति मनोवाक्कायेन मन्त्रं कारं कुर्यात् ॥ ततः कुशा

त्रयतिलजलान्यादाय ॥ देशकालौंसकार्थं ॥ ॐ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्त्या उत्तमलोकप्राप्त्यर्थमेकोहिष्टपाविर्णोभया  
 त्मकंसोपडीकरणश्राद्धमहंकारण्ये इतिसंकरय ॥ गायत्रीविजित्वा ॥ ॐ देवताभ्यःपितृभ्यश्च महायोगिभ्यवच ॥ नमः  
 स्वाहायैस्वधायै नित्यमेवनमोनमः ॥ इतिविजिपत् ॥ ततः ॐ नमोनमस्तेगोविन्द पुराणपुरोत्तम ॥ इदंश्राद्धंयैकेश रक्ष  
 तांसंतादिशः ॥ इतिदेवप्रदेशयवान्विकीर्य ( अपसव्येन ) पैतृक्रादेशे ॐ अग्निष्वात्ताःपितृगणाः प्राचांसंतुमेदिशम् ॥  
 तथाविहंपदपांतु याम्यांगेपितरःस्थिताः ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्वुदीचीमपिसोमपाः ॥ अधोध्वमपिकोणेषु हविष्प्रन्तश्चमवदा ॥ रक्षो  
 भूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोपतः ॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमोक्षांकरौवै ॥ वायुभूतपितृणांच तृप्तिर्भवतुशाश्वती ॥ इत्यनेन  
 दिह्वधस्तादूर्ध्वकोणेषु तिलान्गौरसर्पणश्चविकीर्य वामेदक्षिणेवाकटिभागेनीवीवंधंकुर्यात् ॥ ततः ( सव्येन ) कस्मिंश्चित्पत्रेज  
 लंगृह्णत्वा दूर्भालोडय ॥ ॐ यदेवादेवैर्हर्दनेदेवासश्चकृमामव्ययम् ॥ अग्निर्मातस्मादेनसो विवशान्मुञ्चन्वठहंसः ॥ १ ॥ यदि  
 दिवायदिनक्तमेन<sup>१</sup>सिचकृमामव्ययम् ॥ व्यायुर्मातस्मादेनसो विवशान्मुञ्चन्वठहंसः ॥ २ ॥ यदिजाग्रद्यदिस्वप्न<sup>२</sup>सिचकृ  
 माव्ययम् ॥ सूर्योमातस्मादेनसोविवशान्मुञ्चन्वठ हंसः ॥ ३ ॥ इतिकृष्णान्दसूक्तेनाभिमन्त्र्य ॥ श्वोदक्यादिवृद्धद्विनिपातात्  
 शुद्रादिसंपर्कदोषाच्चापादीनां पवित्रताऽस्तु इतिपाकादीन्संप्राक्षयेत् ॥ अथासनादिदानम् ॥ तत्रातवत् उदङ्मुखउपविश्य  
 सव्येन सजघनदक्षिणजान्वाच्य ॥ कुशत्रयवजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यास्मिपितामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः कामकालसंज्ञका

विश्वेदेवाः इदमासनवेनमः ॥ इत्युच्चार्य देवतीर्थेनप्रथममंडले पूर्वाधं कुशत्रयदेवात् ॥ ततोयवहस्तः ॥ ॐ कामकालसंज्ञ  
 कान्विश्वान्वेद्वानवाहायिष्ये इत्युक्त्वा ॥ ॐ विश्वेदेवासु आगतशृणुतामद्गठहवम् ॥ एवंवाहीनिर्पित ॥ इत्यनेनावाह ॥ ॐ यवोसिय  
 वयास्मद्वेधेयवयारातीः ॥ इत्यनेनयवान्विकीर्य ॥ ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमठहवम्भयेऽन्तर्पक्षेयउपद्यविष्ट ॥ येऽअग्निजिह्वाऽउतवायज  
 त्राऽआसद्यास्मिन्बहिर्पिमाद्वध्वम् ॥ इतिजपेत् ॥ (विश्वेदेवार्पतनामोद्गाने) आगच्छतुमहाभागा विश्वेदेवामहाबलाः ॥ येयत्रयोजिताः  
 श्राद्धे सावधानाभवन्तुते ॥ इति श्लोकोऽप्युच्चारणीयः ॥ ततोऽर्घपात्रेष्वर्वांशंपवित्रधृत्वा ॥ ॐ शन्नोदेवीगभिष्टेयऽआपोभवन्तुपतये ॥ शय्यार  
 भिसंवतुन ॥ इतिजलक्षिवा ॐ यवोसियवयस्मद्वेधेयवयारातीः इतियवान् प्रक्षिप्यतृष्णामेवगंधपुष्पतुलसीदलानिक्षिपेत् ॥ ततः ॐ अर्घ  
 पात्रसंपत्तिरास्तु इति पठित्वा ॥ अर्घपात्रवामहस्तेकृत्वापवित्रधृत्वाश्वेदेवतात्रे पलाशपत्रेनिधाय ॥ ॐ योऽदिव्याऽआपः पयसांसंभूयऽआन्त  
 रिक्षाऽउतपार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णयज्ञियास्तान्ऽआपः शिवाः शठस्योनाः सुहवाभवंतिमित्रार्घपात्रमभिमन्त्र्य ॥ दक्षिणहस्तेन कुशत्रय  
 यवजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्धसं धिनः कामकालसंज्ञकाविश्वेदेवाएवहस्ताधः स्वाहानमः ॥ इत्युत्थ्यपवित्रोपरि  
 अर्घजलं दक्षिणहस्तस्य देवतीर्थेनक्षिपेत् ॥ ततोऽर्घपात्रंपवित्रादिसहितं देवदक्षिणपार्श्वे ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीत्युत्तानंस्थाप  
 येत् ॥ अथगंधादिदानम् ॥ तत्रगंधपुष्पधूपदीपवस्त्रादिकंधृत्वा ॥ कुशत्रयवजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्धसंवर्धिनः काम  
 कालसंज्ञकाविश्वेदेवाः एतानिगंधपुष्पधूपदीपतंबूलयज्ञोपवीतासांसिवानमः इत्युत्सृजेत् ॥ ततः ॐ विश्वेदेवानामचनं संपूर्णमस्त्विति

पठित्वा प्रणीतांशिमस्मना वारिणावा ब्राह्मणादिषु चतुरस्रत्रिकोणवर्तुलमंडलवद्वयित्वाकुर्यात् ॥ इतिगंधाद्यर्चनान्तर्द्वकांडनिर्वृत्य  
 प्रेतपित्रादिश्राद्धदेशमागच्छेत् ॥ तत्र आसने दक्षिणाभिमुख उपविश्य अपसव्यं कृत्वा सजघनं वामं जान्वाच्य ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥  
 अ० अमुकगोत्र अमुकप्रेत इदमासनं तमेयादीयते तवोपतिष्ठतामित्युक्त्वा ऋजुकुशत्रयरूपं दक्षिणाग्रमासनं मुत्सृजेत् ॥ ततोद्विगुणमुग्रकु  
 शत्रयतिलजलान्यादाय अ० अमुकगोत्र पितामहाकुशमन्वुरूप इदमासनं तुभ्यं स्वधा ॥ इति प्रथमासनं मोटक रूपं दक्षिणाग्रं पश्चिमग  
 तमुत्सृजेत् ॥ १ ॥ पुनर्द्विगुणमुग्रकुशत्रयादन्यादाय अ० अमुकगोत्रप्रपितामहाकुशमन् रुरूप इदमासनं तुभ्यं स्वधा ॥ इति द्वितीयासनं  
 प्रपितामहाय दद्यात् ॥ २ ॥ पुनर्द्विगुणमुग्रकुशान्यादाय अ० अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामहाकुशमन्त्रादित्यरूप इदमासनं तुभ्यं स्वधा इति तृती  
 यासनं सर्वतः पूर्वगतं वृद्धप्रपितामहायोत्सृजेत् ॥ ३ ॥ ततः पितामहादीनुद्दिश्य अ० पितृनावाहयिष्ये इत्युक्त्वा अ० उशन्तस्त्वा निधीमह्यु  
 शन्तः समिधीमहि ॥ उशन्तु शतऽआवर्ह पितृन् हविषेऽअन्वे ॥ इत्यावाह्य ॥ अ० अपर्हताऽअभुरक्षः ॥ सिवेदिपदः ॥ इति तिलांश्विकार्यं ॥  
 अ० आर्यंतुन ॥ पितरः ॥ सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः ॥ पथिर्भेद्वयानः ॥ अस्मभ्यज्ञे स्वधयामदंतोधिब्रुवन्तु वनस्वमान् ॥ इति जपेत् ॥ ततोर्व  
 पात्रचतुष्टयनिधाय प्रत्येकमेकं कंदं भलंधृत्वा ॥ तत्र अ० शन्नो देवीरभिष्युऽआपो भवंतु पीतये ॥ शंभ्यो रभिसवतुन ॥ इति जलं प्रक्षिप्य अ०  
 तिलोसिसोमेदेवत्यो गोसवो देवा निर्मितः ॥ ग्रानमाद्भिः प्रुक्तः स्वधया पितृल्लोकान्प्राणाहिनः स्वधा ॥ इति प्रत्येकं तिलान्प्रक्षिप्य तूष्णीमेव  
 गंधघुष्पाणि निक्षिपेत् ॥ ततोर्वपात्रचतुष्टयसंपत्तिरस्तु इति पठित्वा प्रतार्धपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रं पलाशपत्रे धृत्वा ॥ अ० या

दिव्याऽआपः पयसांसंभृज्याऽआन्तरिक्षाऽउत्तपाथवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान्आपःशिवाः शठः स्योनाः सुहवा भवतु ॥  
 इति पात्रजलमभिर्मन्त्र्य ॐअमुकगोत्रामुक्प्रेत सर्पिंडीकरणश्राद्धे एषतेहस्ताधोमयादीयते तवोपतिष्ठतामितिपवित्रापरि अर्घजलं  
 किंचिद्दद्यात् ॥ अर्घपात्रचवशिष्टजलपवित्रसहितमुतः स्थापयेत् ॥ अथपात्रमेलनम् ॥ तत्रादौकुशत्रयतिलजलान्यदाय देशकालौ  
 संकीर्त्य ॥ अमुकगोत्रस्यामुक्प्रेतस्य प्रेतत्वाविनिवृत्तिवृत्तवृत्तप्रत्यर्थं वसुरुद्रादित्यन्वप्रत्यर्थं च तन्पितृपितामहप्रपितामहाना  
 मर्थैः सहप्रतार्धसंयोजयिष्ये इति संकल्प्य ॥ ततः प्रेतोऽर्घपात्रस्यं पवित्रं पितामहार्घपात्रे निधाय प्रेतार्घपात्रं दर्शयित्वा हस्ते धृत्वा ॥  
 ॐअमुकगोत्रस्यामुक्प्रेतस्य प्रेतत्वाविनिवृत्त्यर्थं तद्वर्घपात्रस्य प्रथमांशजलम् अमुकगोत्रस्यापितामहस्यामुक्शर्मणोर्वसुरुहस्य अर्घपात्रेण सह सं  
 योजयिष्ये इति पठित्वा ॥ ॐयेसमानाः समनसः पितरो यमराज्ये तेषां लोकः स्वधानमोयज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥ १॥ ॐयेसमानाः  
 समनसो जीवा जीवेषु मामकाः ॥ तेषां श्रमांश्च कल्पतामस्मिंल्लोकेशतठः समाः इति मंत्रं द्रव्यान्ते ग्रथमांशमर्घजलमर्घक्षिपेत् ॥ तेन  
 वसुलोकप्राप्तिः ॥ १ ॥ ततः प्रेतपवित्रं प्रापितामहार्घपात्रे धृत्वा ॥ अमुकं प्रेतस्य प्रेतत्वाविनिवृत्त्यर्थं तद्वर्घपात्रस्य द्वितीयांशजलम् अमुकगो  
 त्रस्य प्रापितामहस्यामुक्शर्मणः रुद्ररूपस्य अर्घपात्रेण सह संयोजयिष्ये इति पठित्वा ॥ ॐयेसमानाः समनसः ॥ १॥ येसमानाः ॥ २॥  
 इति मंत्राभ्यां द्वितीयांशमर्घजलमर्घक्षिपेत् ॥ तेन रुद्रलोकप्राप्तिः ॥ २ ॥ पुनः प्रेतपवित्रं वृद्धप्रापितामहार्घपात्रे धृत्वा ॥ ॐ अमुकं  
 प्रेतस्य प्रेतत्वाविनिवृत्त्यर्थं तद्वर्घपात्रस्यं सर्वजलं वृद्धप्रापितामहस्यामुक्शर्मणः आदित्यरूपस्य अर्घपात्रेण सह संयोजयिष्ये इति पठित्वा ॥

अथ्येसमानां ॐ३३ येसमा० इतिमंत्राभ्यान्तृतीयांशमर्घजलमर्घक्षेपेत्॥तेनआदित्यलोकप्राप्तिः॥३॥इतिपात्रमेलनम्॥ स्त्रीसर्पिडकिरणेतुषुव  
 प्रयोगः ॥ अमुकगोत्रायाः अमुकप्रेतायाः उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं तदर्घपात्रस्यप्रथमांशजलम् अमुकगोत्रायाः पितामह्याः गंगारूपायाः  
 अर्घपात्रेणसहसंयोजयिष्ये इतिपठित्वा ॥ येसमानां० इतिमंत्रद्वयप्रतिप्रथमांशमर्घजलमर्घक्षेपेत् ॥ तेनवुल्लोकप्राप्तिः ॥ १ ॥ अमुक०  
 प्रेतायाः उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं तदर्घपात्रस्यद्वितीयांशजलम् अमुकगोत्रायाः ग्रणितामह्याः यमुनारूपायाः अर्घपात्रेणसहसंयोजयिष्ये इति  
 पठित्वा ॥ येसमानां० इतिमंत्रद्वयान्ते द्वितीयांशमर्घजलमर्घक्षेपेत् ॥ तेनरुद्रलोकप्राप्तिः ॥ २ ॥ अमुक० प्रेतायाः उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं  
 तदर्घपात्रस्यसर्वजलममुकगोत्राया वृद्धप्रपितामह्याः सरस्वतीरूपाया अर्घपात्रेणसह संयोजयिष्ये इति पठित्वा ॥ येसमानां० इतिमंत्र  
 द्वयान्ते तृतीयांशमर्घजलमर्घक्षेपेत् ॥ तेन आदित्यलोकप्राप्तिः ॥ ३ ॥ इतिस्त्रीसर्पिडनार्घपात्रमेलनविधिः॥ततः अनेन अर्घसंयोजनेन  
 प्रेतस्यसद्गत्युत्तमलोकप्राप्तिः इति पठित्वा प्रेतपवित्रं प्रेतार्घपात्रेकृत्वाप्रेतसमीपे उत्तानन्द्युज्जवापात्रंस्थापयेत् ॥ ततःपितामहादीनामर्घ्यदा  
 नम्॥तत्रादौ पितामहार्घपात्रंवाप्रेतसमीपे दक्षिणाग्रं पवित्रं पात्रधृत्वा अयादिव्याऽआपः पयमांसंभवुष्यऽआन्तरिक्षाऽउत्तपार्थिवीयाः  
 हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानऽआपः शिवाः शठःस्योनाः सुहवाभंतु इत्यभिर्मंत्र्याः॥द्विगुणभुक्तुःशत्रयादीन्यादाय ॐअमुकगोत्रस्यास्मत्पिताम  
 हाभुक्शर्मन् एतेहस्तार्घः स्वधा इति पवित्रोपय्यध्यजलंद्वात्॥अर्घपात्रंपवित्रजलमहितंचपुरतः स्थापयेत्॥ एवमेव प्रपितामहाय वृद्धप्र

१. आद्विवेकापितृस्यतिपु अर्थमेलनात्प्राप्तिपितामहार्घदानमुक्तं तन्मौल्यमांप्रापिकं ज्ञेयम् ।



पितामहायचदद्यात् ॥ अवाशिष्टजल्युतंपात्रद्वयमग्रेस्थापयेत् ॥ ततोवृद्धप्रपितामहप्रपितामहयोः पात्रस्थजलादीनि पितामहपात्रे कृत्वा ( सव्येन ) अथापः शिवाः शिवतमाः शांताः शांततमास्ते कृषन्तुभेजमितिमंत्रेणशिरस्यभिषेकं कृत्वा ( अपसव्येन ) अर्पितुं भ्यः स्थानमसीति प्रथमपितामहपात्रम् आसनवामप्रदेशध्रुमावधोमुखं संस्थाप्यतदुपरिप्रपितामहपात्रं वृद्धप्रपितामहपात्रंचदद्यात् ॥ एतानिस्थापितपात्राणि दक्षिणादानपर्यंतनेद्वेव्रंचालयेत् ॥ ततोर्गंधादिदानम् ॥ तत्रादौ गंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासोसिंप्रतासने धृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय असुक्रगोत्रासुक्रप्रेत सर्पदीकरणश्राद्धे एतानिगंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासोसिंप्रतासने दीयंतवोपेतिष्ठतामिति प्रेताय गंधादीन्युत्सृजेत् ॥ १ ॥ पुनः पितामहाद्यासनेषुक्रमेणगंधादिकृधृत्वा ॥ द्विगणभुशुकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अंसुक्रगोत्रास्मरितपितामहासुक्रमन् एतानिगंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासोसिंप्रतासनेभ्यः स्वधा इतिपितामहाय गंधादीन्युत्सृजेत् ॥ एवंप्रपितामहायवृद्धप्रपितामहायचंगंधादीन्युत्सृजेत् ॥ ततःपितृणामर्चनंसंपूर्णमस्त्विद्वयात् ॥ एवंगंधाद्यर्चनविधाय सव्यापसव्याभ्यांभोजनपात्रस्थापनदेशं समाज्यं ॥ गौरमृत्तिकाया जलेनवा ब्राह्मणादिषुचतुस्त्रिंशोत्रिकोणवर्तुलमंडलानि कृत्वा भोजनपात्राणिदद्यात् ॥ अथाग्नौकरणम् ॥ तत्रादौव्यंजनक्षारवर्जितंधृताक्तमुष्णपितामहादिश्राद्धीयाग्नयभागं कांस्यपात्रेसमुद्धृत्य अपसव्यंकृत्वा वामजानु निपात्य दक्षिणासुखः पत्रपटुकादिस्थजले अंग्रयेकव्यवाहनायस्वाहा इदमग्रयेकव्यवाहनायनमम ॥ २ ॥ सोमायापितुमतेस्वाहा इंसोमायापितुमतेनमम इत्यद्विद्वयंदक्षिणक्रेणजुह्यात् ॥ ततोद्दुतशेषमन्नंपितामहादिपात्रत्रये किंचित्किंचिदद्यात् ॥ नप्रेतपात्रेदानम् नचविश्वेदेवपात्रेपि ॥ ( नहिस्मृताः शेषभाजोविश्वेदेवाः पुराणगौरितवचनात् ) ततः सव्येनदेवपात्रे अपसव्येन

प्रेतपाकात्प्रेतपात्रेऽपितृपाकात् । पितामहादिपात्रेषु च उष्णमन्नं सधृतं व्यंजनजलसहितं प्रत्येकं पुरुषवृत्तिजनकं यथावत्परिविष्य मधुनाभिषा-  
 र्य्य ॐ मधुवृत्ताऽऽकृतायेतमधुशरान्तिसिधेवहा माध्विन्नेऽसन्वोषधीः ॥ मधुनक्तुतोपसो मधुमत्पाथिवठरजः ॥ मधुद्यौरस्तुनःपिता ॥  
 ॥ २ ॥ मधुमात्रेऽवन्स्पतिर्मधुमाऽस्तुसूयः माध्वार्गावीभवतुनः ॥ ३ ॥ ॐ मधुमधुमाध्वन्यमिमंत्रयेत् । ततः (सव्येन) उत्तानपणिभ्यां  
 देवपात्रमालभ्य अष्टृथिविपात्रद्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतं जुहोमि स्वाहा इति जप्त्वा ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥  
 समृद्धमस्य पाण्डुरे स्वाहा ॥ इत्येतां वैष्णवीमृचमुच्चार्या धोमुखं स्वांशुष्टमनस्वम् ॐ विष्णो हव्यठरक्ष इति यजुषा ब्रह्मे निवेश्य ॥ इदमन्नम्  
 इमा आपः इदमाज्यम् एतत्सर्व्वहविरित्युक्त्वा ॐ अपहताऽअसुरारक्षाऽसि वेदिपदं-इति यवान् अन्नपात्रपरितो विकीर्य्य वामेन करेण पात्रं पृश्न  
 नदक्षिण करेण कुशत्रययवजलान्यादाय ॐ अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्धसंवाधिनः कामकालसंज्ञका विश्वे देवा इदमन्नसोपस्करं परिबिष्टुहव्यम्  
 अमृतं रूपं स्वहानमः ॥ इत्युदकं देवतीर्थेनासनदक्षिणभागे निक्षिपेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा प्रेतपात्रवर्जं पितामहादिपात्रयालंभः ॥ प्रेत  
 पात्रस्य तु परितः ॐ अपहताऽअसुरारक्षाऽसि वेदिपदं इति तिलात् विकीर्य्य ॥ अमुकगोत्रासु कप्रेतसर्पिर्डाकरणश्राद्धे इदमन्नं वृत्ताद्युप  
 स्करसहितं ते मया दीयते वोपतिष्ठतामि त्युत्सृजेत् ॥ ततः पितामहापात्रं न्युच्चार्यां व्यस्ताभ्यां पणिभ्यां स्पृष्ट्वा ॥ अष्टृथिविपात्रद्यौरपिधानं  
 ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतं जुहोमि स्वाहा इति पठित्वा ॥ ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समृद्धमस्य पाण्डुरे ॥ इत्येतामृचं च ज

स्याधोमुखं स्वदक्षिणां शुभमनसम् ॐ विष्णोः क्रव्यं ० रक्ष इत्यन्नेन निवेद्य ॥ इदमन्नम् इमा आपः इदमाल्पम् एतत्सर्वह विरित्युक्त्वा ॐ अपह  
ताऽअसुरा रक्षां ७ सिवे दिपदे ॥ इति तिलान्पात्रपरीतोऽप्रदक्षिणेन विकीर्य वामेन करेण पात्रं स्पृशन् ॐ अमुकगोत्र पितामहमुकशर्मन्  
वसुरूप इदमन्नं सोपकरणं कंथयामस्तु रूपांतुभ्यं स्वधा इत्युदकं पितृतीर्थेन आसनवामभागे शिपत् ॥ एवं प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहा  
य चात्रामुत्तुजेत् ॥ ततः ॐ अन्नहीनाक्रियहीनं विधिहीनं च यद्वेत् ॥ तत्सर्वमाच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य (सव्येन) व्याहृति  
त्रयपूर्वासप्रणवां गायत्रीं त्रिः सकृद्भाजयेत् ॥ तथा ॐ भृगुं वाताऽऽकृताय ते भृगुशरन्ति सिन्धवे ॥ माध्वान्नैः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ मधुनक्त  
सुतोपसामधुमत्पाथिवं ० रजः ॥ मधुग्रावो ब्रह्मरस्तुनः पिता ॥ २ ॥ मधुमात्रो ब्रह्मन्स्यति मधुमार् ० ॥ अस्तु मूर्त्यः ॥ माध्वीगोविभन्तु  
नः ॥ ३ ॥ इति त्र्यम्बकम् ॥ ॐ यमु मधुमध्वि च जयेत् ॥ ततः ॐ कृणुष्व पाजः प्रस्रितिन्नृत्याया हिराजामवाऽइभेन ॥ तृष्णीमनुप्रसि  
तिन्दृणोऽस्तासि विव्यथ्य रक्षसस्तामिष्टैः ॥ १ ॥ तव भ्रमासऽआशुयापतन्यनुस्पृश धृपताशुचानः ॥ तपुं ७ ष्ये जुहातु ज्ञानसन्दिता  
व्यिभजं विष्वङ्गुल्काः ॥ २ ॥ प्रतिरप्पशां व्यिभृजं तूणितमो भव पायुर्विशोऽस्याऽअदं वः ॥ योनोर्होऽअवशठः सो योऽअन्यमे  
मो किं वृष्यथिरादधपीत् ॥ ३ ॥ उदग्रेतिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यमित्राऽओपतातिमहेते ॥ योनोऽअरातिठः समिधाननक्रेनीचातधक्ष्यत  
सन्नशुष्कम् ॥ ४ ॥ उद्धो भव प्रपति विध्याऽयस्माद्विष्वङ्गुष्वैव व्यान्यग्रे ॥ अवस्थिरातनुहियातु जूनां आभिमजाभिश्च मृणीहि श

३३ ॥ अग्नेष्टुतेजसासाद्यामि ॥ ५ ॥ इतिरक्षोघ्नीः पंचक्रवः पठित्वा धूमितिलैरास्तीर्य ॥ अँउदीरतामर्वऽउत्परासऽउभ्रमध्यमाः  
 पितरं-सोम्यासः ॥ असुय्यऽदुयुग्वृकाऽऽकृतज्ञास्तनोर्वन्तुपितरोहवेषु ॥ १ ॥ इत्यादि १३ पितृमंत्रान् अँसहस्रशीर्षापुरुषः सह  
 साक्षःसहस्रपात् ॥ सधर्मिष्ठं सर्वतस्मृत्वात्यतिष्ठद्वादुलम्-इत्यादि १६ पुरुषमुक्तम् ॥ अँआशुः शिशानोव्युपभेनर्भोमाधनावनः  
 क्षोभेणश्चर्पणीनाम् ॥ संक्रन्दनोनिमिषऽर्कवीरः शतठं सेनाऽअजयत्सकामिन्द्रः ॥ इत्यादि १७ अप्रतिरथंचपठेत् ॥ ततः मतव्याधाद्  
 शार्णेपु मृगाः कालऽरैगिरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्रीपे हंसाःसरसिमानसं ॥ तेऽभिजाताःकुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेदपारगाः ॥ ग्रस्थिताद्दुर्मध्वानं  
 ग्रूयतेभ्योऽवसीदत् ॥ इतिचपठित्वाथराक्षिस्तथादिकंपठेत् ॥ ततः (अपसव्येन) पितामहपानसन्निधौभूमिप्रोक्ष्य तत्रदक्षिणाग्रंकुशत्रयमा  
 स्तीर्य सर्वप्रकारमंत्रसव्यजनमुद्धृत्यसतिलमकीकृत्य ॥ अँ अग्निदधाश्चयेजीवा येयदग्वाः कुलमम ॥ धूमौ दत्तेनतृप्यन्तु तृतायान्तुप  
 रांगतिमा १ ॥ इतिमंत्रेणकुशोपरितदन्नविभजेत् ॥ ततः (सव्यंकृत्वा) आचम्य हरिस्मृत्वा (अपसव्येन) अँमधुवाताऽऽकृतायते इतित्र्यं  
 मधुमधुमाध्वितिचजेत् ॥ ततः उच्छिष्टमन्निधौहन्तात्तत्रप्रदेशेचतुरसंदक्षिणपञ्चमणीयहस्तमात्रं चतुरङ्गुलोच्छ्रितव्रतपिपडपतनार्थस्थानंनिर्मा  
 यात्तत्पूर्वतःअपरपितामहादित्रयपिपडनार्थनाहशमेवकुर्यात् ॥ ततः पितामहादिपिपडस्थानमध्येदर्भपिजुलीमूलेन अँअर्पहताऽअसुररक्षा१७  
 सिवेदिपदं-॥ इतिमंत्रेणसव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनदक्षिणाग्रैर्वांसकृदुल्लिख्य दर्भपिजुलीमुत्तरस्यादिशनिनिक्षेप्य अँग्रहपाणिप्रतिमुञ्चमा  
 नऽअसुराः सन्तः स्वधयाचरन्ति ॥ परापुरोनिपुरोयेभन्त्यग्निष्टौकात्पुनरात्समात् ॥ इतिमंत्रेण उल्मुकैरेवोपरिभ्रामयित्वादक्षिणतोनिद

ध्यात्वा तत् उभयत्र उपमूलसदृशच्छिन्नदक्षिणाग्रकुशत्रयमास्तीर्य देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततः पुटकचतुष्टये जलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा ।  
एकप्रतपुटकं गृहीत्वा अमुकगोत्रासुकप्रेत सपिंडीकरणश्राद्धे पिंडस्थाने अत्रावनेनिश्चयेत मया दीयते तवोपतिष्ठतामिति प्रथमवेदिकायां कुशोप-  
रि अवनेजनं दद्यात् ॥ ततोऽपपुटकं गृहीत्वा अमुकगोत्रापितामहासुकशमन्नावने निश्चेत् स्वधा ॥ इति कुशमूले पितामहाय पितृतीर्थेना-  
वनेजनं दद्यात् ॥ एवमेव प्रपितामहाय कुशमध्ये वृद्धप्रपितामहाय कुशप्रेऽवनेजनं दद्यात् ॥ ततः सर्वस्माच्छ्राद्धभावाद्गुणां किंचिदन्नसूद्रस्य  
दुर्गोपाश्रमं ध्याज्यतिलसर्वव्यञ्जनयुतपात्रकृत्वा विस्वोपमाश्रुतुरः पिंडाग्निमायं मधुघृताभ्यामभिघ्राय्य प्रथममतिस्थूलं प्रतीपिंडं  
कुशत्रयादीनि चादाय । अमुकगोत्रासुकप्रेत सपिंडीकरणश्राद्धे एतत्प्रेऽपिंडं मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ इति प्रथमवेदिकायां कुशो-  
परिपिंडं दद्यात् ॥ ततोऽद्वितीयापिंडं द्विगुणभुक्तशरीरं निचादाय अमुकगोत्र पितामहासुकशमन्त्रसुरूप एतत्प्रेऽपिंडं तुभ्यं  
स्वधा इति द्वितीयवेदिकायां प्रथमावनेजनस्थानेन सव्योपगृहीत दक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन पितामहाय दद्यात् ॥ एवं प्रपितामहाय वृद्धप्र-  
पितामहाय च तत्तदवनेजनस्थानेन दद्यात् ॥ ततः पितामहादिपिंडास्तरणकुशमूले अमुकगोत्रासुकप्रेतसपिंडीकरणश्राद्धे अमुकगोत्रापितामहाय  
त्वा दक्षिणहस्तं प्राञ्जल्य जलेन हस्तौ प्रक्षालयेत् ॥ ततः ( सव्येन ) त्रिराचम्य हारिस्मरेत् ॥ ततः ( अपसव्यं कृत्वा ) पूर्वदत्तप्रेतावने-  
जनापात्रं गृहीत्वा ॥ अमुकगोत्रासुकप्रेतसपिंडीकरणश्राद्धे पिंडे अत्र प्रत्यवने निश्चेत् मया दीयते तवोपतिष्ठताम् इति प्रतीपिंडोप-  
रि प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततः प्रतीपिंडं सूत्राच्छादनगंधपुष्पादीपपूगीफलादिभिः संज्व्य अनेन पिंडादनेन प्रेतस्य सद्भाति  
उत्तमलोकावाप्तिः इति पठेत् ॥ अथ पिंडमेलेन प्रकारः ॥ तत्रात्रावनेपिंडस्थसूत्रादिकमपनीय हस्तद्वयेन सुवर्णरजतशलाकां

तद्भावेदभैर्यैर्गुण्डुमधुघृताक्तामादायतयाप्रतोपिंडसमं त्रेधाविभजेत् ॥ ततोदेशकालौस्मृत्वा अमुकगोत्रस्यामुकप्रतस्य प्रेतत्वं  
निवृत्तिपूर्वकपितृसमत्वप्राप्त्यर्थं वस्वादिलोकप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्राणां तन्निवृत्तिपितामहप्रपितामहानांपिंडः सह अमुकप्रतस्यपिंडसंयो  
जनं कारिष्ये इति संकल्प्यात्प्रतपिंडस्यप्रथमभागमादाय वामहस्तेकृत्वादक्षिणहस्तपितामहपिंडधृत्वा अमुकगोत्रस्यामुकप्रतस्यप्रथमं  
पिंडशकलम् अमुकपितामहस्यामुकशर्मणो वसुरुहपस्यपिंडेनसहसंयोजयिष्ये इत्युक्त्वा अथसमानाः समनसदुपितरौयमराज्यातेपल्लोके  
स्वयानमौयज्ञोदेषुबुकरूपताम् ॥ १ ॥ येसमानाः समनसोजीवाजीवेषुभामकातेषां श्रमार्थं कल्पतामस्मिच्छेकेशतठसमाः ॥ २ ॥ इति  
मंत्रद्वयतेदक्षिणहस्तस्थपितामहपिंडं वामहस्तस्थप्रेतपिंडशकलेपितृतीर्थनक्षत्रामधुघृताक्तं कृत्वावर्तलंकुर्यात् ॥ अनेनप्रेतस्यप्रथमपि  
ण्डशकलस्य प्रेतपितृसंयोजनेनप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्तिरस्तु वसुलोकवाप्तिरस्तु इति पठेत् ॥ १ ॥ ततोद्वितीयपिंडशकलंप्रपितामहपिंडं  
चादाय ॥ अमुक० प्रेतस्यद्वितीयपिंडशकलम् अमुक० प्रपितामहस्यामुकशर्मणः रुद्ररूपस्यपिंडेनसहसंयोजयिष्ये इत्युक्त्वा अथेसमानाः ०  
इतिमंत्रद्वयेनपूर्ववत्प्रपितामहपिंडेनियोजयित्वा अनेन प्रेतद्वितीयपिंडशकलस्यप्रेतपितामहसंयोजनेन प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिरस्तु रुद्र  
लोकवाप्तिरस्त्वितिपठेत् ॥ २ ॥ ततः तृतीयप्रेतशकलंवृद्धप्रपितामहपिंडं चादाय ॥ अमुक० प्रेतस्यतृतीयपिंडशकलम् अमुक० वृद्धप्रपि  
तामहस्यामुकशर्मणः आदित्यरूपस्यपिंडेनसहसंयोजयिष्ये इत्युक्त्वा ॥ ३ ॥ येसमानाः ० इतिमंत्रद्वयेनवृद्धप्रपितामहपिंडेनियोजयित्वा  
अनेनप्रेतस्यतृतीयपिंडशकलस्यप्रेतप्रपितामहसंयोजनेनप्रेतस्यप्रेतत्वनिवृत्तिरस्तु आदित्यलोकवाप्तिरस्तु - इति पठेत् ॥ ३ ॥ ( अथब्रह्मसि

पिंडनेविशेषः) अमुकगोत्रायाः अमुकप्रेतायाः प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृसमन्वयार्थवत्सालिलोकप्राप्त्यर्थं च अमुकगोत्राणामस्मृत्यन्तिम  
 हीप्रपितामहीवृद्धप्रपितामहीनापिंडेः सहासुक्रप्रेतायाः पिंडसंयोजनकारिण्ये इति संकल्प्य ॥ सुवर्णशलाकादिनाप्रेतपिंडेत्रेधाविभजेत् ॥  
 ततः प्रथमभागं गृहीत्वा ॥ अमुक्र० प्रेतायाः पिंडप्रथमशकलम् अमुकगोत्रायाः पितामहाः पिंडनसहसंयोजयामीत्युक्त्वा ॥ अथैसमानाः ०  
 इति मंत्रद्वयं प्रथमशकलं प्रथमपिंडनसह संयोजयेत् ॥ तेन वमुलोकप्राप्तिः ॥ १ ॥ ततो द्वितीयभागं गृहीत्वा ॥ अमुक्र० प्रेतायाः पिंडद्विती  
 यशकलम् अमुकगोत्रायाः ग्रपितामहाः पिंडनसहसंयोजयामीति पठित्वा ॥ येसमानाः ० इति मंत्रद्वयान्ते द्वितीयशकलं द्वितीयपिंडनसह  
 संयोजयेत् ॥ तेन रुद्रलोकप्राप्तिः ॥ २ ॥ ततस्तृतीयभागमादाय अमुक्र० प्रेतायाः पिंडतृतीयशकलम् अमुकगोत्रायवृद्धप्रपितामहाः  
 पिंडनसहसंयोजयामि इत्युक्त्वा ॥ अथैसमानाः ० इति मंत्रद्वयान्ते तृतीयशकलं तृतीयपिंडनसहसंयोजयेत् ॥ तेन आदित्यलोकप्राप्तिः  
 इति वदेत् ॥ इति द्वीमपिंडनविशेषः ॥ ततः पिंडानामभिभृथेदं पठेत् ॥ एषोऽनुगतः प्रेतः पितरस्तदयामिवः ॥ शिवमास्त्विति शेषाणां  
 जायतां चिरजीविताम् ॥ १ ॥ समानीव आकूतिः समाना हृदयानिवः ॥ समानमस्तु वो मनो यथा वः सुमहासति ॥ २ ॥ गच्छस्व पितृलोकं व  
 प्रेतत्वं च परित्यज ॥ समानैः पितृभिः साह विहरस्व यथा सुखम् ॥ ३ ॥ (अत ऊर्ध्वं प्रात्यापि प्रेतशब्देन कार्यः) अत्रावसरे निश्वासधे  
 तुदां नमः ॥ तद्यथा (संयम) अत्रेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रस्यास्मानितुः पित्रादित्रयेण सह संयोजनेन चतुर्थस्य निवृत्तिर्जातचित्तो  
 कापनयक्षमार्थं ब्राह्मणाय निश्वासधेनुदाननिष्कयरूपं पूजतद्रव्यं दातुमस्तु मे इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ततः (अपमव्येन) ॥ अथैत्रं पितरो

मादयध्वयथाभागमावृषयध्वम्-इति पठित्वावाभावर्त्तनोदङ्मुखोभूत्वप्रातिमनाः मनाः कृत्वा सनियम्य तेनैव पथा परावृत्य ॥ ॐ अर्म्ममदन्त  
 पितरोर्यथाभागमावृषयिषत-इति जपेत् ॥ ततः पूर्वदत्तावनेजनजलेन ॥ ॐ अमुकगोत्रपितामहमुकशर्मन् अत्रप्रत्यवनेनिरुज्जते  
 स्वधा इति प्रथमपिंडोपरिप्रत्यवनेजनंद्यात् ॥ एवमेव प्रपितामहवृद्धप्रपितामहपिंडोपरिप्रत्यवनेजनंद्यात् ॥ ततोनीवीविस्त्रस्य सव्येन आच  
 म्य अपसव्यं कृत्वा ॥ ॐ नमोर्वपितरोरसायनमोर्वपितः शोणयनमोर्वपितरोजीवायनमोर्वपितरः स्वधायै ॥ नमोर्वपितरोघोराय  
 नमोर्वपितरोमन्यवे नमोर्वपितरो नमोर्वपितृहात्र-पितरोदत्तमृतोर्वपितरोदेवम् ॥ इति कृताञ्जलिः पठेत् ततः ॐ एतद्-पितरो  
 वासः-इति पठित्वा प्रत्येकं पितामहादिपिंडोपरिमूत्रत्रयंद्यात् ॥ ततोद्भिगुणमुमुकशत्रयादीन्यादाय ॥ ॐ अमुकगोत्रपितामहमु  
 कशर्मन्नेतत्तेवासः स्वधा-इति मूत्रमुत्सृजेत् ॥ एवं प्रपितामहायवृद्धप्रपितामहायचोत्सृजेत् ततः प्रत्येकं पितृवृद्धिश्चतदीयपिंडेषु तूर्णं  
 गंधपुष्पतुलसीधूपदीपतांबूलपुष्पीफलदक्षिणादीनि दद्यात् ॥ पिंडशेषान् पिंडसमीपे विभक्तिताततः (सव्येन) देवपात्रे (अपसव्येन) पितृपात्रेषु  
 ॐ शिवा आपःस्तु इति सकृत्सकृज्जलंदद्यात् ॥ ॐ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पाणि ॥ अक्षतं चारिष्टचास्तु इति त्रयांश्च दद्यात् ॥ ततः  
 ॐ अद्यामुकगोत्रस्यापितुरमुकशर्मणः सपिंडीकरणश्चाद्देत्तदन्नपानादिकमश्नय्यमुयतिष्ठतामिति पित्रेऽश्नय्योदकंदद्यात् ॥ ततः ॐ  
 अमुकगोत्रस्यपितामहस्यामुकशर्मणः दत्तेतदन्नपानादिकमश्नय्यमस्तु इति पितामहायदन्त्रा एव प्रपितामहायवृद्धप्रपितामहायचक्षय्यो  
 दकंदद्यात् ॥ ततः (सव्यं कृत्वा) प्राङ्मुखस्तन्मनाः सुमनाः कृताञ्जलिदक्षिणादिशंपश्यन् ॐ अवोराः पितरः सन्तु-इति पठित्वा समाचारा



तृव्यां जलयादद्यात् ॥ ततः अंगोत्रं नो वद्धतां दतारो नो भिवद्धत विदाः सन्ततिरेव च ॥ श्रद्धा च नो मा व्यमद्दुयं च नो ऽस्तु ॥ अन्नं च नो ब्र  
हुभवेदतिथिं श्रुत्वा भेमादि ॥ या चित्तरश्च न संतु मा च या चिपकं च न ॥ एताः सत्या आशिपः संतु - इति याचेत् ॥ ततोऽपमव्यादिकृत्वा पिंडोपरि स  
पवित्रां कुशानां स्तीर्य ॥ स्वधावाचयिष्ये इति पठित्वा पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यो वृद्धप्रपितामहेभ्यश्च स्वधोच्यताम् इति ह्ययात् अस्तु  
स्वधा इत्युक्ते अं ऊर्जं वहं तीरमुतृप्तं पथं - श्रीलालं परिश्रुतम् ॥ स्वधस्य तर्पयतमपितृन् इति कुशोपरि दक्षिणां जलयादद्यात् ॥  
ततोऽर्धपात्राण्युत्तानीकृत्य सव्यादिना देवदक्षिणां दद्यात् ॥ तत्र कुशत्रयवज्रजलहिरण्यद्रव्यमादाय देशकालौ स्मृत्वा अं अद्या स्मृतिताम  
हादित्रयाणां श्राद्धसंबंधिकामकालसंज्ञकानां विधेयां दद्यात् कृतं च्छाद्व्यतिष्ठार्थं मिदं हिरण्यमग्निदेवतममुकगोत्रायामुकरागणे ब्राह्मणाय द  
क्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे इति संकल्प्य ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ततोऽपमव्यादिकृत्वा रजतद्रव्यं मोदकदीनिचादाय अं अमुकगोत्रस्य  
पितृमुकरागणः कृतैतस्मापिंडाकरणश्राद्धप्रतिष्ठार्थं मिदं रजतं च देवतममुकगोत्रायामुकरागणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे - इति  
दद्यात् ॥ पुनः रजतद्रव्यं कुशादीनिचादाय अं अमुकगोत्रस्य पितामहस्यामुकरागणः कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थं मिदं रजतं च देवतममुकगोत्रा  
यामुकरागणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे - इति दद्यात् ॥ एवमेव प्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोः श्राद्धदक्षिणां दद्यात् ॥ देवे रजतनिषेधः  
स्वर्णासंभवे तां प्रफलादिकं दद्यात् ॥ ततोऽप्रीभूयापिंडानुयायस्य ल्यानिषा य आत्राय पिंडायां स कृदाच्छिन्नान्कुशान् उत्सृज्य  
च वह्नौ शिपेदात् ॥ ततः (सव्येन) अं वैश्वदेवाः प्रीयतामि प्रार्थय (अपमव्येन) अं वाजे वाजे शतवाजिनो नो धेनुष्विप्राऽअमृताऽऽनन्ताः ॥ अस्य

मध्यः पिवतमादयध्वंतुहा यातपथिभिर्देवयानैः—इतिमंत्रेण पितृन्विमर्जयेत् ॥ ततः (सव्येन) ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगि  
 भ्यश्चैव चानमः स्वाहायैस्वधायै नित्यमेव नमानमः इति त्रिजपेता अथ द्वादशकुंभसंकरणः ॥ तत्रादौ आचम्य (अपसव्येन) कुशत्रयादीन्यादाय  
 देशकालौ स्मृत्वा ॐ अद्यामुक्त्रगोत्रस्य पितुरमुक्त्रशर्मणः परलोके क्षुत्पिपासानिवृत्त्यर्थम् इमे द्वादशकुंभाः सान्नादकाः नानानामगोत्रभ्यो  
 ब्राह्मणेभ्यो दातुमहर्मुजे—इति संकल्प्य ॥ सुशीतलजलोपेताः सर्वोपस्करमंथुताः ॥ एते घटामया दत्ताः स्वर्गद्रष्टुं पतिष्ठताम् ॥ इति पठित्वा  
 यथाचारं दद्यात् ॥ विप्रासं भवे घटो दकमश्नत्यादिषु प्रक्षिप्य घटोपकरणं दिकं करमैचि दद्यात् ॥ ततः वर्धनीकुंभं पक्वावपूरितं संवल्लद  
 क्षिणां कनिधाय सव्येन द्वादशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्यामुक्त्रगोत्रस्य पितुरमुक्त्रशर्मणः स्वर्गलोके काम इदं पक्वावपूरितं कुंभमेकं वद्धनीसंज्ञकं  
 विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायामुक्त्रशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहर्मुजे इति संकल्प्य कस्यैचिद्ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ एवं कुंभमेकं यमाचित्रश्रुत  
 प्रीत्यर्थं प्रपि दद्यात् ॥ ततोऽपसव्येन श्राद्धदीपान्पाणिभ्यां निर्वप्य सव्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य आचमनं कुर्यात् ॥ ततः ॐ  
 प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वेषु यत ॥ स्मरणो देव तद्दिणोः संपूर्णस्यादिति श्रुतिरिति पठित्वा कर्मभूतिकां मोविष्णुं स्मरेत् ॥ ततः  
 पिण्डान्धेन्वादिभ्यो दत्त्वा वैश्वदेवबालकर्मणो पात्रं ददाचेत् ॥ उच्छिष्टमाजं न कुर्यात् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलन्यादाय देशकालौ संकी  
 र्त्य ॐ अद्यामुक्त्रगोत्रस्य पितुरमुक्त्रशर्मणः स्वर्गलोके प्रात्यर्थं सर्पिर्दक्षिणश्राद्धसांगतामिद्वयं च यथाशक्ति अमुकसंख्याकान् ब्राह्मणां  
 स्तुतिपर्यन्ते नान्नं भोजयिष्ये इति संकल्प्य दशप्रभृतिश्रोत्रियान् अनिपिद्ब्रह्मणान्वायथाशक्तियथाचारं भोजयेत् ॥ ततो ज्ञातिबंधवतिथिं

१ अत्रायुर्वेदिकाः शिष्टा एकादशाहानि भित्तकशरायावेवादिदानं कुर्यात् तद्दिने पात्रमावाहत् ।

श्रुतः स्वयमपिभोजनं कुर्यात् ॥ अस्मिन्दिने आगतान्सर्वानतिथिप्रभृतीन् अन्नं न तोषयेत् ॥ इति गौडियश्राद्धप्रकाशे सर्पिडनश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ अथ भैथिलोक्तसर्पिडनप्रयोगः ॥ पूर्वदिने नियमं कृत्वा श्राद्धदिने प्रातरादिकृत्य समाप्य मथ्याह्ने स्नातान्ब्राह्मणानाहूय स्वागतं पृष्ट्वा उपविश्यामंत्रयन्मिमांसां ब्रह्मणपदौ प्रश्नान्प्रादाद्वदद्यात् ॥ तत आचमनीयं दत्त्वा स्वयमेवाचम्यावृतस्थानानां श्लाघाभिप्रायेण सिद्धमिति पाणिचक्रं पृष्ट्वा ब्रह्मणानुष्वेयं तेषां पादयोर्दक्षिणाग्रं कुशपत्रत्रयं दत्त्वा प्रान्यासनं मुनिं पतिलं तैलेन दीपान्दत्त्वा रक्षाघ्नान् सन्निधाप्य श्राद्धं तनपसाय्य श्राद्धे देयं दद्यान्निर्दिशेत् ॥ अथ प्राङ्मुख उपविष्टः कुशजलतिलान्यादाय ॐ अग्रापितुः सर्पिडं करेण श्राद्धमहं करिष्ये-इति वाक्यं कृत्वा कुरुष्व इत्यनुज्ञातो गायत्रीं देवताभ्य इति च त्रिजपित्वा आसनाद्यन्नसङ्कल्पयन्तं देवाक्रियाकाण्डं निर्वर्त्य आसनादिदत्त्वा पितृनावाह्यं तिलां न्विकीर्य आयतुनः ०-इति जयाऽर्घ्यपात्रचतुष्टयं सपवित्रं जलतिलगंधपुष्पैः प्रपूज्यार्घ्यं दत्त्वा प्रेतपात्रस्थजलेन पितामहादिषु पात्रेषु पित्रवशिष्टजलानि संचेत् ॥ येन मानाः समनसः पितरं यमराज्यं ॥ तेषां ह्येकः स्वधानमैयं ज्ञाते देवेषु कल्पताम् ॥ १ ॥ ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः ॥ तेषां श्रीर्ममैयं कल्पतामस्मिं ह्येके शतं ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन ॥ ततः पात्राणि न्युब्जीकृत्य गंधादिदत्त्वा नीवारचूर्णेन मंडलानि कृत्वा अहुतिद्वयं दत्त्वा हुतशेषं पितामहादिपात्रत्रये दत्त्वा ॥ अन्नव्यंजनानि परिषिष्य मधुनाऽभिघार्य मधुज्वाता इति नृचेनाभिर्मंत्र्य पात्रमालभ्य पात्रस्थे त्रेद्रिज्जाडुष्टं संयोज्य तिलां न्विकीर्य धूममन्त्रं सकल्प्यान्नहनिमित्यादिपठित्वाऽऽ

१ अन्नं भैथिलद्वयेण पुष्टकत्रयवाणादिभिर्निषः प्रपंचः सकृच्च लिखितस्तद्वर्तिकः तथा निर्मूलत्वाच्छिष्टैर्न दीर्घायः ।

पोशनंदत्वा गायत्र्यादिजप्ताऽनुज्ञातोन्नविकीर्याचम्य हारिस्मृत्वा ब्राह्मणेभ्यः प्रत्येकं जलगंडूपदत्त्वा पूर्ववद्गायत्रीम् मधु  
 व्यक्ता० इति त्र्युचं मधुमधुमध्वितिजप्त्वाप्रेतोविंश्वदितम् इतिष्ट्वा इतरान् तृताः स्य इतियथाहतिरुक्ते शेषमन्नमनुज्ञाप्य पिंडानहंकरिष्ये  
 इतिष्ट्वा कुरुष्व इत्युक्तः एकप्रेतोपिंडार्थमपरं पितामहादिपिंडार्थस्थाननिर्माय उभयत्रेवाकरणं कृत्वा तदुपशुल्मुकंप्राप्तिमायत्वा तदक्षिण  
 तोऽङ्गारं निधायरेखोपरिछिन्नमूलकुशानास्तीर्य तदुपरि प्रेताय पितामहादिभ्यश्चानेजनंदत्वाऽब्रविशेषेण चतुरः पिंडान्निर्माय प्रेतायवह्नु  
 लंपिंडकृत्वा पितामहादिभ्योपिपिंडानंदत्वा दभर्मूलकंप्रोच्छयाचम्य हारिस्मृत्वा अत्रापितरः० इत्यादिपाठित्वादङ्गमुत्वीभूयश्वासं मनाङ्गनि  
 यम्यपुनः परावृत्य 'अमीमदंत' इतिजप्त्वा पिंडान्प्रत्यवनेज्य नीर्वीक्सिंस्य 'नमोवःपितरः' इत्यादिना ऋतुष्टकंरूपतया पितामहादीन्नत्वाऽऽ  
 शिषः संप्राथ्यपिंडेषुसूत्रादिदत्त्वाप्रेतोपिंडेगंधादिदत्त्वासुवर्णजतकुशैः प्रेतोपिंडत्रयाविभज्य पितामहादित्रयोयोजयेत् ॥ 'यसमानाः' इतिपूर्वा  
 क्तमन्नद्वयेन ॥ ततः पितामहादिपिंडत्रयं प्रेतोपिंडभागेनसमंवदेलंकृत्वा गंधादिभिरभ्यर्च्य ॥ ब्राह्मणानाचमय्यतत्करेषुजलपुण्याक्षतानिदत्त्वा  
 पितृगोत्राद्युच्चार्य दत्तमन्नादिकमुपतिष्ठतामिति विप्रकरेऽक्षय्येदंकंदत्त्वा पितामहादिविप्रकरेत्तन्नामगोत्राभ्यांदत्तमन्नादिकमक्षय्येदंकम  
 स्त्वातिप्रत्येकंदत्त्वा तत आशिषः प्रतिगृह्यापिंडोपरि सपवित्रकुशानास्तीर्य स्वधावाचयित्वा ऊर्जमित्यादिनापिंडान्पारिषिच्यत्रायेत्या  
 पयहर्भर्मुत्सुकंचवह्नां निक्षिप्याघपात्राण्युत्तानीकृत्यदक्षिणां दद्यात् ॥ ततो विश्वेदेवाः प्रीयंतामितिदेवाचयित्वा ब्राह्मणान्विसृज्य ॥ आमावा  
 जस्य इत्यादिनाऽनुब्रज्येदंकंधाराध्याक्षिणीकृत्यहर्भ्रविष्यश्चाद्धोताकर्मसमापयेत् ॥ इतिमैथिलश्रीदत्तकृतपितृभक्तोपापिंडीकरणप्रयोगः  
 संक्षिप्तः समाप्तः ॥ ४ ॥ अथसाम्राट्कुन्दानम् ॥ तच्चत्रयोदशदिनात्सप्तदशदिनाद्वाऽऽभ्यप्रत्यहमशक्तेनप्रीतिमांसवाकर्तव्यम् ॥ तत्रादौ

आचम्यप्राणानायम्य सान्नोदकुंभमुपनीय कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालोत्सकीर्त्य ॐ अद्यामुक्तोत्रस्यपितरमुक्तशर्मणश्चुतु  
 षोपशान्तर्यथावद्वत्सरांतवत्प्रतिमासं सान्नोदकुंभदानं करिष्ये-इति संकल्प्य कुर्यात् ॥ ततोऽपमथ्य कृत्वा दक्षिणामुखः पातितवामजानु  
 द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुक्तोत्रपितरमुक्तशर्मणं अनमासिकसान्नोदकुंभश्राद्धे इदमासनंतुभ्यं स्वया इति पित्रे आसनं  
 मोदकरूपं तिलजलग्नोक्षितं दक्षिणामुत्तरे ॥ पुनर्द्विगुणमुग्रकुशादीन्यादाय ॐ अद्यामुक्तोत्रपितरमुक्तशर्मणं अनमासिकश्राद्धे इदं  
 सान्नोदकुंभंतुभ्यं स्वया इति वाक्यं कृत्वा ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ततः सव्येन ॐ अद्य कृतैतत्सान्नोदकुंभदानं प्रतिष्ठार्थं इदं जतंचंद्रवैतममुक्तोत्रा  
 यामुक्तशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां न दत्तुमहमुत्तरे इति दक्षिणां दत्त्वा विष्णुस्मरेत् ॥ एवमेव मासिक ० २ त्रैपक्षिक ० ३ द्वितीय मासिक ० ४  
 तृतीय ० ५ चतुर्थ ० ६ पंचम ० ७ अनपाणमासिक ० ८ षष्ठ ० ९ सप्तम ० १० अष्टम ० ११ नवम ० १२ दशम ० १३ एकादश ० १४  
 अर्नाब्दिक ० १५ सांवत्सरिक ० १६ श्राद्धनिमित्तकसान्नोदकुंभदानं कुर्यात् ॥ प्रतिमासमशक्तेन वृद्धिप्राप्तौ अनपाणमासिके त्रैपक्षिके  
 सप्तदशेऽद्विनिवायथाचारं सर्वाण्यपकृष्य कुर्यात् ॥ वृद्धभूतं निषेधनात् ॥ तत्र प्रयोगः ॥ देशकालोत्सकीर्त्य ॥ ॐ अमुक्तोत्रस्य पितरमुक्त  
 शर्मणः क्षुत्तृषोपशान्त्यर्थम् अनमासिकं १ मासिकं २ त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासिकम् ४ तृतीयं ५ चतुर्थं ६ पंचमं ७ अनपाणमासिकं ८  
 पाणमासिकं ९ सप्तममासिकम् १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमम् १३ एकादशम् १४ अर्वापिकं १५ च एतानि पंचदश सान्नोदकुंभश्राद्धानि  
 स्वस्वकाले कर्तव्यानि इदानीमममकुलं भविष्यमाणं वृद्धिनिमित्तत्वात् सर्वाण्यपकृष्य सांक्ष्येन विधितं त्रैपक्षिकं करिष्ये इति संकल्पयेत् ॥  
 ततोऽपमथ्य कृत्वा द्विगुणमुग्रकुशत्रयान्यादाय अमुक्तोत्रपितरमुक्तशर्मणं अनमासिकान्नोदकुंभदानं पंचदश सान्नोदकुंभश्राद्ध

निमित्तकम् इदमासनपंचदशया विभज्यतुभ्यं स्वया इत्यासनं दक्षिणाग्रं द्विगुणभुक्कुरात्रयरूपमुत्तुजेत् ॥ पुनः ॐ असुक्रगोत्रपितर  
मुकशर्मन् उनमासिकाद्यनवार्पिकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तका इमे पंचदशसन्नोदकुंभास्तुभ्यं स्वया-इति संकल्प्य ॥ दानप्रति  
ष्ठादक्षिणासहितपंचदशसन्नोदकुंभान्ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् ॥ इति सन्नोदकुंभदानप्रयोगः ॥ अथ उनमासिकादिपंचदशश्राद्धम् ॥ तच्च  
त्रयोदशहनि चतुर्दशदिने भौमाकर्म दनदतिथिभूमिकपादद्विपादत्रिपादचतुर्दशीगुक्वारकृतनक्षत्रभद्राव्यतीपातादिवर्जिते कुर्यात् ॥  
तत्र तावदूनमासिकश्राद्धप्रयोगः ॥ श्राद्धपूर्वदिने एकभक्तादनियमं विधाय श्राद्धदिने प्रातः स्नात्वा श्वेतवस्त्रे परिधाय संध्यातर्पणादिनिय  
क्रियां चकृत्वा मध्याह्ने पुनः स्नात्वा आचमनं गोमयापोलितश्राद्धदेशमागत्य तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्वासने प्राङ्मुख उपविशेत् ॥ ततः कर्म  
पात्रं जलेनापूर्य गंधपुष्पकुरातिलादिनिक्षिप्या ॥ पवित्रवारणम् आचमनप्राणायामं चकृत्वा ॐ अपवित्रः पवित्रो वा इति पठित्वा ॐ पुंडरीकाक्षः  
पुनतु इति कुरात्रयनीतजलेन श्राद्धद्रव्याणि स्वात्मानं च प्रोक्षेत् ॥ ततः ॐ भूम्यैनमः ॥ ॐ गाययैनमः ॥ ॐ गदाधराय नमः इति नत्वा कुरात्रय  
तिलजलान्यादाय अद्येत्यादि पठित्वा ॐ असुक्रगोत्रस्य पितरमुकशर्मणः उनमासिकैको द्विदश्राद्धमहं करिष्ये-इति संकल्प्य ॥ गायत्रीं  
जपन्वादेताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततः (अपसव्येन) ॐ नमो नमस्ते गोविंदपुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धं ऋषीकेशरक्षतां सवतो दिशः ॥ १ ॥ अग्निष्वात्ताः  
पितॄन् इत्यादि पूर्वोक्तमंत्रैः सर्वत्र तिलान्गौरसर्पंश्च विकीर्य नीविंघं कुर्यात् ॥ ततः कूष्माण्डमूलाभिर्मंत्रित जलेन कुशः पाकं प्राप्य सनादि दद्यात् ॥  
तत्रादौ दक्षिणमुख उपविश्य (अपसव्येन) सजवनं वामं जान्वा च्य द्विगुणभुक्कुरात्रय तिलजलान्यादाय ॥ ॐ असुक्रगोत्रपितरमुकशर्मन् इदं  
मासनंतुभ्यं स्वया इति द्विगुणभुक्कुरात्रयात्मकमासनं दद्यात् ॥ ततः ॐ अपहता इत्यादिना तिलात् विकीर्य ॥ अर्घपत्रोपरि पवित्रधृत्वा

अंशत्रादेवीतिजलम् ॥ अंतिलोऽसीतितिलान् ॥ तूष्णीमिवगंधपुष्पेप्रक्षिप्य वामकरेऽर्घपात्रमादाय पवित्रं पलाशपत्रेधृत्वा अथादिव्या  
 आप इत्यभिमन्त्र्य अंशुकुशोत्रपित्तमुकशमन् एतदेहस्तावः स्वधा इतिदक्षिणकरेणपितृताथेन पवित्रोपारि अर्घदत्त्वा अंपित्रेस्थानम  
 सीति वामप्रदेशभूमावधेयमुखंनिदध्यात् ॥ एवंस्थितंपात्रमसिपय्यंतनचालयेत् ॥ ततोर्गंधादिधृत्वा द्विगुणभुक्तशान्यादाय अंशुक  
 गोत्रपित्तमुकशमन् एतानिगंधपुष्पपद्मपद्मद्वलवासांसितुभ्यस्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ ततोऽजलादिनामंडलंकृत्वा ॥ परकीयभूमौश्राद्धक  
 रणेतद्भस्वामिनेऽब्रवल्लिदत्त्वा अथोष्णमिष्टान्नपूष्णपात्रमादायकराभ्यां पितरं ध्यायन् पुं पतृक्षिममन्नंसधृतंपात्रेपरिविष्यात् ॥ तस्यैव  
 व्यंजनसुरीतलजलपात्राणिस्थापयेत् ॥ ततोऽन्नमंधुमयंकृत्वा अंशुधुब्ध्वाता इतित्र्यचे ॥ मन्त्र्य ततोऽन्नपात्रमालभ्य अंपृथिवीतेपात्रमि  
 तिजत्वा अं इदं विष्णुर्विचक्रमे० इत्यादिना स्वाहुष्टमनस्वम् अं विष्णो कव्यंऽक्ष इत्यन्नोनिवेश्य इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् इदंहविः  
 इतिपठित्वा अं अपहता० इत्यादिनाऽन्नपात्रपरितस्तिलान् विकीर्य अंशुकुशोत्रपित्तमुकशमन्नमन्नसंपोषकरणम् अमृतहृपंकव्यंतुभ्यं  
 स्वधा इत्युत्सृज्य ॥ ततः अं अन्नहीनमित्यादिपठित्वा गायत्रीम् अंमधुब्ध्वाता० इतिन्यृचं मधुमधुमध्वित्तिचजपेत् ॥ ततोर्गंधादीर्गंधः  
 पठित्वा भूमितिलैरास्तीर्य पितरं ध्यायन् पितृभ्रान्तपुरभूतमप्रतिरथमन्यानिचयथाशक्तिपठेत् ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधौ आसृत्  
 तदक्षिणाग्रकुरोपरि अं अग्निदग्धाश्चैत्यन्नभूमौप्रकीर्यसव्येनाचम्य हारिस्मृत्वा पूर्ववद्गायत्रीं अं मधुब्ध्वाता० इतिन्यृचंमधुमधुमध्वित्तिच  
 जपेत् ॥ ततः (अपसव्येन) उच्छिष्टसन्निधौ पिण्डार्थस्थानंदक्षिणप्रवर्णनिर्मायतन्मध्यधर्मेपिजुलमूलनः अं अपहता० इतिवामान्वाख्यदक्षिणक  
 रेणप्रादेशमितारैर्वादक्षिणाग्रसमुच्छिद्य दध्मेपिजुलीमुत्तरस्यादिशि निक्षिप्य अयेरूपाणि इतिमंत्रेणोत्सृज्यैवाग्रमयित्वादक्षिणतो

निदध्यात् ॥ ततः उपमूलसङ्खनकुशत्रयखोपरिस्तात्वा देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततः सतिलजलपात्रगृहीत्वा ॐ अमुकगोत्रपित-  
 रमुकशर्मन्त्रावनेनिश्चतेस्वधा इति कुशोपरिपितृतीर्थनावनेजनदद्यात् ॥ ततः सर्वस्मादन्नाकिंचिदन्नमुद्धृत्य मध्याह्न्यतिलजलमसहितपात्रे  
 कृत्वा पिण्डनिर्माय मधुघृताभिचारितीपिण्डं कुशादीनिचादाय ॐ अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् ऊनमासिकश्राद्धे एषोर्तेपिण्डः स्वधा इति  
 पितृतीर्थनदद्यात् ॥ ततो लेपभागमुजस्तृप्यन्तु इति द्रुममूलेकर्प्राच्छय हस्तौ प्रक्षाल्य सव्येनाचम्य हारिश्मरेत् ॥ ततः अपसव्येन ॐ अत्रपि  
 तर्मादयस्वयथाभागमावृषाथिस्व इति पठित्वा वामावर्त्तेनोदङ्मुखाभूयःप्रतिमनाः श्वासनियम्यतेनैव तथा परावृत्य ॐ अमीमदंतपितर्यथा  
 भागमावृषायिष्ट इति जप्त्वा पूर्ववत्पिण्डोपरिप्रत्यवनेजनदत्त्वा नीर्वीकिंस्त्रस्य कृतांजलिः ॐ नमस्ते पितारसायनमस्तेपितः शोषायनम  
 स्तेपितर्जीवायनमस्तेपितः स्वधागैरनमस्तेपितर्गोत्रायनस्तेपितर्मन्यवे नमस्तेपितः पितर्नमस्तेगृहहन्तः पितर्नमस्तेपितः पितर्देव्यम  
 इति पठित्वा ॐ एतत्तेपितर्वासः इति पिण्डोपरिसूत्रं धृत्वा ॐ अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् एतत्तवासः स्वधा इति सूत्रमुज्जेत् ॥ ततस्तूष्णीमे  
 वपितरमुद्दिश्य पिण्डगंधपुष्पधूपदीपतांबूलादिकंदत्त्वा ॐ शिवा आपः संतु इति जलमासाजनस्यमस्तु इति पुष्पमाश्रितं चारिष्टमस्तु इत्यक्षतां  
 श्रद्धयात् ॥ ॐ अमुकगोत्रस्य पितरमुकशर्मण ऊनमासिकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिक्रमक्षय्यमुपतिष्ठताम् इति तिलयुक्तमभ्योदकंदद्यात् ॥ ततः  
 प्राड्मुख उपवीतीकृतांजलि शिरोपश्लयात् ॥ अघोरः पितारस्तु ॥ गोत्रं नो वर्द्धताम् ॥ दातारो नो भिवर्द्धताम् वेदाः संततिरेव च ॥ श्रद्धाचनो मा  
 व्यगमद्द्रुदुयचनोस्तु ॥ अन्नंचनो बहुभेदतिथिश्चलभेमहि ॥ याचितारश्च न संतु मा चयाचिष्मकंचन ॥ एताः सत्या आशिषस्तु इति पठेत् ॥  
 ततोऽपसव्येन पिण्डोपरि सप्तवित्रर्मनास्तीर्थं ॐ उज्ज्वहंतारं तृप्तं पयः कीलालं परिसृजतु ॥ स्वधास्थतप्यतमेपितरमिति पिण्डोपरि जलधारा



दद्यात् ॥ ततः पिंडमुत्थाप्याग्राय पिंडाथ आस्तुतदर्भचोत्सुकमग्नौ निक्षिप्यार्घपात्रमुत्तानिह्नत्यथ शक्तिदक्षिणां दद्यात् ॥ तद्यथा-जत  
द्रव्यं कुशादीनिचादय अथामुक्तागोत्रस्य पितुः सुकशर्मणः कृतैतदूनमासिकश्चाद्व्यतिष्ठार्थं भद्रं जतं चंद्रदेवतमुक्तागोत्रायामुक्तागोत्रं  
ब्रह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्तरे इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ततः पिंडमुत्थाप्याग्राय पिंडाथ आस्तुतदर्भचोत्सुकमग्नौ निक्षिपेत् ॥  
ततः अग्निमृत्यामिति विज्ञेय देवताभ्य इति त्रिःपठित्वा दीपनिर्वाणं कृत्वा (सव्येन) हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य ॥ अश्रमादादिति  
पठित्वा कर्मपूर्विका माविष्णुं भवेत् ॥ ततः पिंडं गाम् अजं वायसान्वादादयेत् ॥ अग्नौ जले वा क्षिपेत् ॥ ततो वैश्वदेव बलिकर्मणा कृत्वा ब्रह्म  
णमेकं भोजयेत् १ एवमेव मासिक २ त्रैपक्षिक ३ द्वितीयमासिक ४ तृतीयमासिक ५ चतुर्थ ६ पंचम ७ अनयाण्मासिक ८  
षाण्मासिक ९ सप्तमा १० ऽष्टम ११ नवम १२ दशम १३ कादशो १४ नवार्थिक १५ मासिकानि कुर्यात् ॥ इति अनयासिका  
दिष्ट्युक्तश्चाद्व्यप्रयोगः समाप्तः ॥ प्रतिमासं करणाशक्तौ वृद्धिप्राप्तौ अनयाण्मासिके त्रैपक्षिके वा सप्तदशे हनियथाचारं भौमाकादिवर्जित  
एकद्वित्रिचतुर्नदिने सर्वाण्यपकृष्य कुर्यात् वृद्धचतुरनिषेवनात् ॥ तत्र प्रयोगः ॥ तत्रादौ पूर्वोत्तानमासिकश्चाद्वत्सर्वसंपाद्य ॥ देशका  
लौ संकीर्त्य अथामुक्तागोत्रस्य पितुः सुकशर्मणः क्षुद्रपोषांत्यथम् अनयासिकश्चाद्वं १ मासिकं २ त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासिकं ४  
तृतीयं ५ चतुर्थं ६ पंचमम् ७ अनयाण्मासिकं ८ षाण्मासिकं ९ सप्तमं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकादश  
मासिकम् १४ अतर्वाथिकं १५ च एतानि पंचदश अनयासिकादूनवार्थिकानि त्रिःपठित्वा नि स्वस्वकाले कर्तव्यानि ॥ इदानीं मम कुले  
भविष्यमाणवृद्धिनिमित्तात् सर्वाण्यपकृष्यैकोद्विगुविधिना तत्रेणसद्यः कारयेय इति संकल्प्य ॥ गायत्री देवतास्य इति च त्रिजपेत् ॥

ततः अपसव्येन अ० नमानमस्तेगाविं पुराणपुरयोत्तम ॥ इदं श्राद्धहृषीकेश रक्षतां सवतोदिशः ॥ १ ॥ अ० 'अग्निष्वात्ताः पितृगणा' इत्यादिपूर्वोक्तमंत्रैः सर्वत्र तिलगौरसर्षपांस्त्विकीर्त्य नौवा विंधृत्वा पाकं प्रोक्ष्या सनानि दद्यात् ॥ तत्रादौ द्विगुणमुग्रकुशादीन्यादाय अ० अमुकगोत्र पितरमुग्रशर्मन्नूनमासिकश्राद्धे इदमासनंतुभ्यं स्वधा इति प्रथमोऽटकरूपमासनं पश्चिमगतमुत्सृजेत् ॥ एवं मासिकश्राद्धनिमित्तकं २ त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासिकं ४ तृतीयं ५ चतुर्थं ६ पंचमं ७ ऊनषणमासिकं ८ षणमासिकं ९ सप्तमं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकादशमासिकं १४ ऊनसांवत्सरिकश्राद्धनिमित्तकं १५ आसनानि क्रमेणोत्सृजेत् अथवा अ० अमुकगोत्र पितरमुग्रशर्मन् ऊनमासिकाद्यूनवार्षिकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तकम् इदमासनं पंचदशधा विभज्यतुभ्यं स्वधा इत्येकमुत्सृजेत् ॥ ततः अ० अपहृता इति सर्वत्र तिलांस्त्विकीर्त्य पंचदशार्धपात्रापरिप्रत्येकं पवित्रं धृत्वा अ० श्रब्रो देवीति जलम् ॥ तिलोऽसीति तिलान्नतूणीमेव गंधपुष्पाणि प्रत्येकं प्रक्षिप्य वामकरे प्रथमार्धपात्रमादाय तत्र स्थं पवित्रं पात्रे धृत्वा ॥ अ० यादिव्याऽऽप० इति पात्रमभिमंत्र्य अ० अमुकगोत्र पितरमुग्रशर्मन् ऊनमासिकश्राद्धे एष ते हस्तावः स्वधा-इति दक्षिणकरेण पितृतीर्थेन पवित्रापरि अर्चय दद्यात् ॥ एवं मासिकादिचतुर्दशश्राद्धेषु क्रमेण दद्यात् ॥ अथवा अ० अमुकं पितरमुग्रशर्मन् ऊनमासिकाद्यूनवार्षिकान्तपंचदशनिमित्तकश्राद्धे एष ते हस्तावः स्वधा इति दद्यात् ॥ ततः अ० पत्रे स्थानमसीति स्वस्ववामप्रदेशभूमौ क्रमेण धामुखं पात्रं कुर्व्यात् ॥ एवं स्थापितानि पंचदशपात्राणि समाप्तिपर्यंतं न चालयेत् ॥ ततो गंधादिद्विगुणमुग्रकुशादीन्यादाय ॥ अ० अमुकगोत्र पितरमुग्रशर्मन् ऊनमासिकाद्यूनवार्षिकपय्यंतं पंचदशश्राद्धेषु एतान् गंधपुष्पधूपदीपतंबूलयज्ञोपवीतवाससि तुभ्यं स्वधा ॥ इत्येकतंत्रेण वात्सृजेत् ॥ ततः अ० अर्चनं संपूर्णमस्त्विति प्राथ्य

जलादिनाऽऽसनानिवेशयित्वा मण्डलकुर्यात् ॥ ततः पंचदशपात्रेष्वेकस्मिन्पात्रे वा उष्णमन्नबहुतरम् अनेकव्यञ्जनसहितं परि  
विष्य तदक्षिणपार्श्वे सुशीतलज्जपात्रं च धृत्वाऽन्नमधुमयंकृत्वा ॐ मधुव्वाता० इति तृचेनाभिर्मंत्रयेत् ॥ ततः पात्रं न्युज्जह  
स्ताभ्यामालस्य ॐ पृथिवीतेपात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतं अमृतज्ज्ञोमिस्त्वधा इति जन्वा ॐ इदं विष्णुर्विचक्रम०  
इति च पठित्वा स्वाङ्गुष्ठमधोमुखं लभनस्य ॐ विष्णो कव्यर्ठं नक्ष इत्यन्ने निवेश्य ॥ इदमन्नम् इमा आपः इदमाल्यम् इदं हविः इति प  
ठित्वा ॐ अपहता० इति पात्रपरितस्तित्वा निर्वकीर्य वामकरेण पात्रमन्यजन् दक्षिणहस्ते कुशदीन्यादाय ॐ असुक्रात्रोपितर  
मुक्रशर्मन् जनमासिकाद्युनवापिकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तकमिदमन्नं सोपकरणम् अमृतरूपकव्यंतुभ्यस्त्वधा इति वाक्यकृत्वा जलमास  
नवामभोगे भूमौ क्षिपेत् ॥ ततः ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनमिति पठित्वा गायत्री मधुव्वाता० इति त्र्यं च मधुमधुमाध्विति च जपेत् ॥ ततो रक्षो ह्री  
ऋचः पठित्वा भूमौ तिलरास्तीर्य पितरंध्यायन् उदीरतामवरइत्यादि पितृमंत्रान् पुरुषसूक्तमप्रतिरथ मन्यानि च रुचिस्तव प्रभृतीनि यथाशक्ति  
पठेत् ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधौ भूमिं प्रोक्ष्य तत्र दक्षिणाग्रकुशत्रयोपरि ॥ ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽयदग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूमौ दत्तेन तथ्यन्तु  
तृतायान् तुरंगमिति मंत्रेणाग्रप्रकीर्य सव्येनाचम्य हारिं स्मृत्वा पूर्वद्वारायत्रीं मधुव्वाता० इति त्र्यं च मधुमधुमाध्विति च जपेत् ॥ ततः  
पिंडदानार्थं पंचदशस्थानं दक्षिणपुर्वानिमाय तन्मध्ये क्रमेण दर्भोपि जुलूमूलेन ॐ अपहता० इति प्रादेशमितां रेखां दक्षिणा  
ग्रामुल्लिख्य दर्भोपि जुलूमुतरस्यां दिशि निक्षिप्य ॐ यैरुपाणीत्युल्लुं क्रुरेखोपरि भ्रामयित्वा दक्षिणतो निदध्यात् ॥ ततः उपमूलसकृल्लून  
कुशत्रयं सर्वत्र रेखोपरि क्रमणस्तीर्त्वा 'देवताभ्यः' इति त्रिजपेत् ॥ ततः पत्रपेटजलतिलगंधपुष्पाणि प्रक्षिप्य तत्पात्रं गृहीत्वा ॥ ॐ असुक्रात्र

१ अथवा एकमेव स्थानम् ।

पितरमुकशर्मन् ऊनमासिकाद्यनवार्षिकान्तपंचदशपिंडस्थानेषु अत्रावनेनिश्चतेस्वधा इतिकुशोपरि पितृतीर्थेनार्चिकिचिन्  
 चिज्जलंक्रमेणनिक्षिपेत् ॥ ततः सर्वस्मादन्नात्किंचिदन्नमुद्रृत्य मध्याह्न्यतिलजलसहितपात्रेकृत्वा तेनपंचदशपिंडान्निर्माय मधुघृताभ्याम  
 भिघ्राय्यै एकपिंडं कुशादीनिचादाय अं अमुकगोत्रापितरमुकशर्मन् ऊनमासिकंश्राद्धे एतेपिंडः स्वधा इतिपितृतीर्थेनयथमस्थानेकु  
 शोपरिदद्यात् १ एवं मासिकश्राद्धे २ त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासिकं ४ तृतीयं ५ चतुर्थं ६ पंचमं ७ ऊनवाणमासिकं ८ पाण्मा  
 सिकं ९ सप्तमं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकादशमासिकं १४ ऊनत्रार्षिकं १५ श्राद्धेषुक्रमेणतत्तदवनेजनस्थानेपिंडं  
 दद्यात् ॥ ततोलेपभागभुजस्तृथ्यन्तु इतिदर्ममूलेकंश्लिष्य हस्तौप्रक्षाल्य सव्येनाचम्य हारिस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना अत्रापितमादय  
 स्वयथाभागमावृषायस्व इतिपठित्वा वामावत्तेनोदङ्मुखोभूत्वाप्रितमनाः श्वासनियम्यतेनैवपथापरबृत्त्य अं अमीमदन्तपितर्यथाभागमा  
 वृषायिष्ट इतिजप्त्वा ॥ पूर्ववात्पिंडोपरिप्रस्थवनेजनंदत्वा नीर्वा विक्षस्यसव्येनाचामेत् ॥ ततः(अपसव्येन) अं नमस्तेपितारसाय नमस्तेपि  
 तः शोपाय नमस्तेपितर्जीवाय नमस्तेपितर्वाराय नमस्तेपितमन्यवेनमस्तेपितः पितर्नमस्तेगृहान्नः पितर्दत्तमस्ते  
 पितर्देषम् इतिकृतांजलिः पठित्वा ॥ अं एतत्तेपितर्वसः इति प्रत्येकं पिंडोपरि सूत्रंघृत्वा अं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् ऊनमासिकादि  
 ऊनवार्षिकान्तपिंडेषु एतानिवासांसितुभ्यंस्वधा इत्युत्तमेत् ॥ ततस्तृष्णीमिवपितरमुद्दिश्य पिंडान्गंधपुष्पतुलसीधूपदीपतबूलद्  
 क्षिणाभिः संपुज्य पिंडशेषान्नं पिंडसमीपेविकीर्य ॥ अं शिवा आपः संतु इति । सामनस्यमस्तु इतिपुष्पाणि जलम् । अक्षतं

१ अथवा अं अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन् ऊनमासिकाद्यनवार्षिकान्तपंचदशपिंडान्निर्माय इत्येकं वा दद्यात् ।

चारिष्टमस्त्वितयवतिलश्चापत्रप्रक्षिप्य कुशादीन्यादाय ॐ अमुकगोत्रस्यपितृमुकशर्मण  
 पुत्रैतत्तद्वपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामिति तिलयुक्तमक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः प्राङ्मुखः (उपवीती) कृतांजलिशशिषो गृह्णी  
 यात् ॥ ॐ अघोरः पिताऽस्तु ॥ गोत्रं नो वद्धताम् ॥ दातारो नो भिवद्धताम् ॥ वेदाः संतो रिव च ॥ श्रद्धाचनो मा गम्यमात् ॥ बहुदेयं  
 च नोऽस्तु ॥ अन्नचनो बहुभवेदतिथिश्च लभेमहि ॥ याचितारश्च नः सन्तु मा चयाचिष्म कंचन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु इति पठेत् ॥ ततोऽ  
 पसव्येन पिंडोपरिसर्पविज्राकुशानां स्तोत्रं ॐ ऊर्ज्वहंती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिक्षुतम् ॥ स्वधाश्च तर्प्य तमे पितरमिति पिंडोपरिदक्षिणां  
 जलधारं दद्यात् ॥ ततोऽर्घपात्राण्युत्तानीकृत्य यथाशक्तिदक्षिणां दद्यात् ॥ तद्वथा—जतद्व्यंकुशादीनि चादाय ॐ अद्यामुकगोत्रस्य  
 पितृमुकशर्मणः कृतैतदूनमासिकाद्यनवार्पिकान्तपंचदशश्राद्धप्रतिष्ठार्थम् इदं जतंचैव देवतमुकगोत्राया मुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणा  
 त्वेन दातुमर्हस्युजे इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ततः पिंडानुत्थाप्याग्र्यपिंडाध्यास्तुतदभां तुल्यकंच वद्धाक्षिपेत् ॥ ततः ॐ अभिरम्य  
 तामिति विमृज्य देवताभ्य ० इति त्रिः पठित्वा दीपनिर्वाणणादिकर्म समाप्य कर्मपूर्णां कामः ॐ प्रमादादिति पठित्वा विष्णु रभसेत् ॥ ततः  
 पिंडान् गामजं वायसान् स्वादयेत् ॥ अगाधे जले वाक्षिपेत् ॥ ततो वैश्वदेवलिङ्गकर्मणि कृत्वा पंचदश ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ ततः स्वस्ति वाचन  
 ब्राह्मणपूजां दिष्ट्वा आशिषो गृहीत्वा बृद्धिनिमित्तकमगलारं संकुर्यात् ॥ पुनः ऊनपदोच्चारणं न कर्तव्यम् ॥ ॥ इत्यूनमासिकाद्यनवा  
 र्पिकान्तश्राद्धपद्धतिः ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ अथ सांक्तरिकैर्कोटिद्विश्राद्धपद्धतिः ॥ तत्रादौ श्राद्धपूर्वादिने एकभक्तादिनयमं  
 विधाय श्राद्धदिने प्रातः स्नान्वाश्वेतौ धौतवाससं परिधाय संध्यादिनय कर्म समाप्य गोमये पले पनजलदंगारभ्रामणगौरमृत्तिकाच्छाद

नैः श्राद्धपाकयोर्भूमिस्संक्रान्तुवा वस्त्रादिनावेष्टयिष्यात् तिलगौरसर्षपैरवकीर्य श्राद्धदेयवस्तुन्यासाद्यास्वयंपाकं कुर्यात् ॥ अथवासुस्नात  
स्त्रीबांधवादिद्वारकारुधत् ॥ ततोमध्याह्ने पुनः स्नात्वा ॥ आचांतः श्राद्धदेशमागत्य तिलतैलेन दीपं प्रज्वाल्य काककुट्टादीनपसार्प्य स्वासने  
प्राङ्मुख उपविशेत् ॥ ततः कर्मपात्रं जलेनापूर्य तत्र गंधपुष्पतिलकुशादीनि निक्षिप्य पवित्रधारणं कृत्वा आचम्य प्राणानामय अं अपवित्रः  
पवित्रावा० सर्वावस्थामिति याठित्वा ॐ पुंडरीकाक्षः पुनान्तिविकुरात्रयानीतजलैः श्राद्धद्रव्याणि स्वात्मानं च प्रोक्षयेत् ॥ ततः ॐ भू  
म्यैनमः ॥ ॐ भगवतैर्यगयाथैनमः ॥ ॐ भगवते गदाधराय नमः ॥ इति नत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ देशकालौ संकीर्त्य ॥ ॐ अंबा  
मुकगोत्रस्य अस्मत्पितुमुकुशमणोवसुरुपस्य सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये- इति संकल्प्य ॥ गायत्रीं त्रिजप्य ॐ देवता  
भ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः ॥ इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुखः सजधनं वाम  
जानु निपात्य वामहस्ते तिलगौरसर्षपान्दृष्ट्वा ॐ नमोनमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धं द्व्यपीकेश रक्षता सर्वतो दिशः ॥ १ ॥  
अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीरक्षतु मे दिशम् ॥ तथा बर्हिषदः पांतु याम्यां यं पितरः स्थिताः ॥ २ ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचिमपिसो  
मपाः ॥ अधोर्ध्वमपिकोणेषु हविष्मन्तश्च सर्वदा ॥ ३ ॥ रक्षोभूतपिशाचैर्भ्यस्तैर्वासुरदोषतः ॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमोरक्षां करोतु वै ॥ १४ ॥  
वायुभूतपितृणां च तृप्तिर्भवतु शाश्वती ॥ इत्येतैर्मंत्रैर्दिशु अथस्तादूर्ध्वकोणेषु सर्वत्र तिलगौरसर्षपान्विकीर्य वामे दक्षिणे वा कटिभागे नीवी  
बंधकुर्यात् ॥ ततः कस्मिंश्चित्पात्रं जलं दृष्ट्वा दमरालोडय ॐ यैर्देवादेवैर्देन देवासश्च कृमावयम् ॥ अग्निमातस्मादेन सोविधांश्चान्दुस्त्व  
ठं हसः ॥ १ ॥ यदि दिवा यदित्तमनेनां ॥ १ ॥ सिच कृमावयम् ॥ वायुर्मातस्मादेन सोविधांश्चान्दुस्त्व ॥ २ ॥ यदि जगद्वादिस्वप्नानां

ॐ सिचकृमावयम् ॥ मूर्त्यो मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चतुर्हसतः ॥ ३ ॥ इति कूर्मांडमूर्तेनाभिर्भय श्वेदय्यादिदुष्टदृष्टिनिपाताच्छूद्रा  
दिसर्पकंदोषाच्च पाकादीनां पवित्रताऽस्तु इति पाकादीन्संप्रोक्षयेत् ॥ ततः आसनादिदानम् ॥ तावत् अपसव्यादिना द्विगुणमुग्रकुशत्रय  
तिलजलान्यादाय ॐ अमुकगोत्रास्मत्पितरमुकशर्मन्स्वरूप इदमासनतुभ्यंस्वया इतिद्विगुणमुग्रकुशत्रयानमकमासनं दक्षिणार्थं दद्यात् ॥  
ततः ॐ अपहताऽभुराक्षऽसिचेदिपद्- ॥ इतितिलांस्विकीर्य एकस्मिन्नर्धपात्रेर्धमलमेकसाग्रं प्रादेशमात्रं दक्षिणां धृत्वा ॐ  
शत्रोर्देवीरभिष्टयऽआपोऽभंवतुपीतये ॥ शंभ्योऽभिस्तवंतुन-इतिजलम् ॥ ॐ तिलोसिसोमदेवत्यो गोसवोदेवनिर्भितः ॥ प्रत  
मद्भिःपृक्तः स्वधयापितृल्लोकान्प्राणाहिनःस्वया-इतितिलांश्च प्रक्षिप्य तूष्णीमेव गंधपुष्पे निक्षिपेत् ॥ ततोर्वपात्रंवामहस्तेकृत्वापवित्रपात्रे  
धृत्वा ॐ याद्व्याऽआपःपयसांसंबभूवुय्यऽआन्तरिक्षा उत्पार्थीवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णायिद्विज्यास्तानऽआपः शिवाः शठः स्योनाः सुहवाम  
वंतु ॥ इतिपात्रजलमभिर्भय दक्षिणहस्ते द्विगुणमुग्रकुशादीन्यादाय ॥ ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन्स्वरूप एषतेहस्तार्थः  
स्वया इतिपवित्रोपरि अर्धजलं दत्वा ॐ पित्रेस्थानमसीतिवासप्रेक्षभूमावधोऽस्मत्पितरमुकशर्मन्स्वरूप एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीत  
ततोर्गंधादिधृत्वा ॥ द्विगुणमुग्रकुशादीन्यादाय ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्मन्स्वरूप एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीत  
वासामितुभ्यंस्वधा इत्युत्तुजेत् ॥ ततः अर्चनसंपूर्णमस्त्वितिपठित्वाजलदिनामंडलकृत्वा परकीयभूमौश्राद्धकरणेत्तद्वस्वामिनेऽब्रव  
ल्लिङ्गं दद्यात् ॥ ततः पात्रं दत्त्वा तत्र उष्णमन्नं सधृतं पितरं ध्यायन्पुरुषं तृप्तिसं कराभ्यां परिधिष्य तत्पार्श्वे व्यंजनमुरीतलजल

पात्राणिस्थापयेत् । ततोऽन्नमधुमयंकृत्वा ॐ मधुञ्जताऽऽकृतायेते मधुशरतिःसर्ववः ॥ माध्वीर्वाऽन्वाषधीः ॥ १ ॥ मधुनक्तमुतोषलोमधुम  
 त्पाथिविठरजः ॥ मधुद्यौरस्तुनरपिता ॥ २ ॥ मधुमात्रोव्वनस्पतिर्मधुमाऽस्तुमूर्यः ॥ माध्वीर्गावोऽभंतुनः ॥ ३ ॥ ॐ मधुमधुमध्वि  
 न्यभिर्मंत्रयेत् ॥ ततोऽन्नपात्रंनुजकराभ्यांव्यस्ताभ्यामालभ्य ॥ ॐ पृथिवीतेपात्रद्वोरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतं ॥ अमृतं जुहोमि  
 स्वधा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदं यदमृतं ॥ समूढमस्य पात्रं मुरे-इति पठित्वा ॐ विष्णो कव्यठरक्ष इत्यनेन स्वाहुष्टमधोमुत्तमनखस  
 अन्नो निवेक्ष्य ॐ इदं मन्त्रम् ॐ इमा आपः ॐ इदमाज्यम् ॐ एतत्सर्वं कव्यमिति पठित्वा ॐ अपहताऽअगुराक्षाऽसि वेदिपदः इत्यन्नपात्रपरितस्ति  
 लां निवकीर्य वामकरेण पात्रमन्यजन्दक्षिणकरेण कुरादीन्यादाय ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशामन्वसु रूप इदमन्नं सोपकरणम् अमृत  
 रूपं कव्यतुभ्यस्वधा इत्युत्सृजेत् ॥ ततः ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भजेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य गायत्रीं त्रिः सङ्क  
 द्वाजयेत् ॥ तथापि विजपाणिर्द्वैर्भेज्यासीनः ॐ मधुञ्जताऽऽकृतायेत इत्यादि मंत्रत्रयम् ॐ मधुमधुमध्वि वितचिजेत् ॥ ततः ॐ कृष्णवपाज  
 प्रसिते तन्न पृथ्व्या हि राजा मर्वा इभेन ॥ तृष्णीमनुप्रसितेन्द्रानोस्तोसि बिन्द्यद्वयस्य मस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥ तवं व्यमासऽआशुयापतन्यनुसृष्ट  
 शधृपताशोऽनुचानः ॥ तपूऽन्येऽनुहोपतज्ञानं सितो विमृजं विष्वक्काः ॥ २ ॥ प्रतिस्पशो विमृजं तूष्णीं तमाभवापायुर्विशोऽअ  
 स्याऽअदं वशीयानो दूरेऽअवशठः सो योऽअन्यग्रे माकिष्ठे व्यथिरादं धर्षीत ॥ ३ ॥ उदयातिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यमित्राऽओषतात्तिमहेते ॥





इति त्रिजिपेत् ॥ ततः (अपसव्येन) एकस्मिन्पत्रपुटके जलतिलगंधपुष्पाणि कृत्वा तत्पुटकमादाय अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्म  
 न्वस्यु रूप अत्रावनेन हस्ते स्वया इति कुशोपरिक्षिणहस्तेन पितृतीर्थनावने जनं दद्यात् ॥ ततः सर्वस्माद्वद्गुणं किंचिच्चिद्वस्त्रमुद्रृत्य  
 मध्याज्यतिलजलसहितपानकृत्वा बिलोपमापिंडानि माय मधुवृताभिघारितकुशादीनि चादाय अमुकगोत्र अस्मत्पितरमुकशर्म  
 न्वस्यु रूप संवत्सरिकश्राद्धे एतत्पिंडः स्वधानमः ॥ इति सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन पितृतीर्थेन अवेन जनस्थाने दद्यात् ॥ ततः अलेपमा  
 गभुजस्तृप्यतु इति दर्भमूलकंप्राञ्ज्यहस्तेन प्रक्षाल्य सव्येनाचम्य हारिस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना अमुकगोत्रपितरमादयस्वयथाभागमावृषा  
 यस्व इति पाठित्वा वामावतौ नोददुमुखोभूत्वा प्रीतमनाः श्वासं नियम्यतेन पथपरावृत्त्य अर्भिमदन्तपितृतीर्थमागमावृषायिपत इति  
 श्वासमुत्सृजेत् ॥ ततोऽवेन जनपानगृहीत्वा अमुकगोत्रपितरमुकशर्मन्त्रप्रत्यवनेन हस्ते स्वधानमः इति पिंडोपरि प्रत्यवनेन जनदत्त्वानीवा  
 विंशस्य सव्येनाचम्य अपसव्येन अन्मस्ते पितरसायनमस्ते पितः शोपायनमस्ते पितर्जीवायनमस्ते पितस्वघायेन मस्ते पितवर्षायनमस्ते  
 पितर्भग्वेन मस्ते पितः पितर्नमस्ते गृहाह्नः पितर्दत्तसतस्ते पितर्द्वेष्य इति कृतांजलिः पठेत् ॥ ततः अंशुते पितर्वासः ॥ इति पिंडोपरि सूत्रं  
 धृत्वा अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन्वस्यु रूप एतत्तेवासः स्वया इति सूत्रमुत्सृजेत् ॥ ततः पितरमुद्रिश्य नदीयपिंडे तूर्णां गंधपुष्पतुलसी  
 धूपदीपतंबूलपूजाफलदक्षिणादीनि दद्यात् ॥ पिंडशोषान्नपिंडसमीपविक्रित् ॥ ततः अंशित्वा आपः संतु इति जलं सौमनस्यमस्तु इति  
 पुष्पम् अक्षतं चारिणं चास्तु इति यवतिलं श्राद्धपाने दद्यात् ॥ ततः अमुकगोत्रस्यास्मान्ति तुरगुकर्माणेषु वसुहूपस्य दत्तैतदन्नपानं  
 दिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामिति तिलयुक्तमक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः प्रादुसुखः (उपवती) कृतांजलिदक्षिणादिशंपश्यन् आशिषो गृह्णीयात् ॥

अँअचोरःपिताऽस्तु इतिपठित्वा अँगोत्रनोवदन्तां दातागोनोभिषदन्तां वेदाः सन्ततिनेत् ॥ यन्मननोपल्यगणद्वयं चनोऽस्तु ॥ अत्रच  
नोबहुभवेदतिथीश्वलभेमहि ॥ याचितारश्चनः संतुमाययाचिष्यकंचन ॥ एताः सत्याआशिर्यसन्तु इतिषदेत् ॥ ततोऽयमच्येन पिंडोपरि  
सपविंशकुशत्रयमास्तीर्य अँअर्चनं हतारमुतधृतं यन्-आलालं परिक्षुपम् ॥ स्वधात्यतर्पय मेपितरम् ॥ इति मंत्रेण पिंडोपदिक्षिणाग्रांजल  
घारां दद्यात् ॥ ततः अर्घपत्रमुत्तानीकृत्य यथाशक्ति रजतदक्षिणां कुरादनि चादाय अँअमुक्रात्रस्यास्मत्पितुरमुक्रशर्मणे विसुरूपस्य कृतौ  
तत्सर्वत्सारैककोदित्वा द्रष्टृश्राद्धप्रतिष्ठार्थं मिदं रजतंचदं देवतममु क्रोत्रायासु कशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमु त्स्त्रजे इति संकल्प्य दद्यात् ॥  
ततः पिंडमुत्थाप्य स्थाल्यानिधाय अवघ्राणं कृत्वा पिंडाद्यः स्य संकुल्लन कुशत्रयमुत्सु कंच वद्धां क्षिपेत् ॥ ततो देवताभ्य इति त्रिजपित्वा अँ  
अभिरम्यतामिति विमृज्य रक्षादीनि वाप्यसव्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ ततः अँ प्रमाददिति पठित्वा कर्मभूतिकामो विष्णुस्म  
रेत् ॥ ततः पिंडंगमजवायमान्वावाद्येद्यौ जले वा क्षिपेत् ॥ ततो वैश्वदेवबलि कर्मणं कृत्वा ब्राह्मणभोजयेत् ॥ एवमेव मातृभ्रातृपितृ  
व्यादीनां श्राद्धज्ञेयम् ॥ इति सांख्यसरिकैकोदित्वा द्रष्टृश्राद्धप्रदत्तः ॥ ६॥ ॥ ६॥

॥ अथ मातृकैकोदित्वा द्रष्टृश्राद्धपद्धतिः ॥ श्राद्धपूर्वदिने एकभक्तादिनियमविधाय श्राद्धदिने प्रातः स्नात्वा श्वेतधौतवाससीपरिधाय संध्यादिनस्य  
कर्मसमाप्य गोमयापलेपनज्वलां श्राद्धागणैरस्मृत्ति कच्छादनैः श्राद्धयाक्योर्ध्वमिंसंस्कारं कृत्वा वस्त्रादिनोवेद्येन तिलगौससर्षपैरव  
कीर्य श्राद्धेयवस्तून् यासाद्य स्वयं स्त्रीप्रां ववादिद्रावापाकं कुर्यात् ॥ ततो मध्याह्ने पुनः स्नात्वा आर्चातः श्राद्धदेशमागत्य तिलतलेन दीपे  
प्रज्वाल्य काककुटुम्बदीनपसार्थं स्वासनैः प्राङ्मुख उपविशेत्ततः कर्मपात्रं जलेनापूर्य तत्र गंधपुष्पातिलकुशादीनि निक्षिप्य पवित्रधारणं

कृत्वा आचम्य प्राणानायम्य । ॐ अपवित्रः पवित्रोऽहम् १ इति पठित्वा । ॐ पुंडरीकाक्षः पुनान्विति कुशत्रयानीतजलैः श्राद्धद्रव्या-  
 णि स्वात्मानं च प्रक्षेपेत् ॥ ततः ॐ भूम्यनमः । ॐ भगवत्यै गायै नमः । ॐ भगवते गदाधराय नमः । इति नत्वा कुशत्रयतिलजलान्या-  
 दाय । देशकालौ संकीर्त्य अद्यामुक्कगोत्राया अस्मन्मातुरमुकदेव्या गंगारूपायाः सांवत्सरिकैकोद्विष्टश्राद्धमहं करिष्ये । इति संकल्प्य । गायत्रीं  
 त्रिजपत्वा ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः १ इति त्रिजपेत् ॥ ततोऽपस्तव्यं कृत्वा  
 दक्षिणमुखः पातितवामजानुः तिलगौरसर्पपान्दृष्ट्वा ॐ नमो नमस्ते गाविं द पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धं हवीं केश रक्षतां सर्वतो दिशः ॥ १ ॥  
 अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्रार्चय रक्षतु मे दिशम् ॥ तथा बर्हिषदः पांतु याम्याये पितरः स्थिताः ॥ २ ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तदद्रुदीचीमपि सोमपाः ॥  
 अधोर्ध्वमपिकोणेषु हविष्मंतश्च सर्वदा ॥ ३ ॥ रक्षभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ॥ सर्वतश्चाधिपस्तेषां यो मे रक्षं करोतु वै ॥ ४ ॥ वायुभूत  
 पितॄणां च तृप्तिर्भवतु शाश्वती ॥ इत्येतैर्भद्रैर्दिक्षु विदिक्षु अधस्तादूर्ध्वं च सर्वत्र तिलगौरसर्पपान्विकार्य ॥ वामे दक्षिणे वा कटिभागे नीवीबंधं कु-  
 र्यात् ॥ ततः कस्मिंश्चिन्पत्रे जलं गृहीत्वा दर्भैरालोडय ॥ ॐ यदेवा देवदेवं देवं देवासश्च कृमावयम् ॥ अग्निमातस्मादेन सोविश्वान्मुञ्चत उहसः ॥ १ ॥  
 यदि दिवा दिनतमेना ॐ सिचकृमावयम् ॥ वायुर्भमातस्मादेन सोविश्वान्मुञ्चत उहसः ॥ २ ॥ यदि जगद्वादिस्वप्न ॐ सिचकृमावयम् ॥  
 मूर्धन्यो मातस्मादेन सोविश्वान्मुञ्चत उहसः ॥ ३ ॥ इति कृष्णमांडमूतेनाभिर्भ्यः शोदकयादिदुष्टदृष्टानि पातच्छूद्रादि संपर्कदोषाञ्च पाकदा-  
 नां पवित्राऽन्तु इति पाकादीन् प्रक्षेपेत् ॥ ततः आसनं दिदानम् ॥ तावदपसव्यादिना द्विगुणमुशकुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौ स्मृत्वा ।  
 ॐ अमुकगोत्रेऽस्मन्मातुरमुकदेवि गंगारूपिण सांवत्सरिकोद्विष्ट श्राद्ध इदमासनं तुभ्यं स्वधा इति द्विगुणमुशकुशत्रयात्मकमासनं दक्षिणा

ग्रंसेतिलमुत्सृजेत् ॥ ततः ॐ अपहताऽअसुरारक्षाऽसिखेविषदः ॥ इतिवामावर्तेनतिलात्निष्क्रियं एकस्मिन्नवर्धपात्रेपवित्रदक्षिणग्रधृत्वा ॥ तत्र अशन्नोदेवीरभिपृष्टऽआपोभवंतुपीतये ॥ शंयोरभिसंवतुनः-इतिजलक्षित्वा ॥ अतिलोसिसोमदैवत्यागोसवोदेविनिर्मितः॥ प्रत्नमाद्रिः प्रुक्तःस्वधयापितृह्यैकान्त्रीणाहिनः स्वधा-इतितिलात् ॥ तृष्णीमेवगंधघुष्येचक्षिपेत् ॥ ततोऽर्घपात्रायामहस्तेकृत्वापवित्रपात्रधृत्वा । ॐ यादिव्याऽआपः पयसासंबभूवुर्याऽआन्तरिक्षाऽउतपाथीवीर्याः ॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ताऽआपः शिवाः शर्तस्योनाः सुहवामंवतु-इति पात्रजलमभिमंत्र्य ॥ दक्षिणहस्तेद्विगुणमुग्रकुशदीन्यादाय ॐअमुकगोत्रेऽस्मन्मातमुकदेविपतेहस्तार्धःस्वधा-इतिपवित्रापरिअर्घजलं दत्त्वा अवशिष्टजलसहितं सपवित्रचार्घपात्रम् ॥ अम्नात्रेथानमसीतिआसनवामप्रदेशभूमायधोमुखेनिदद्यात् ॥ एवंस्थितंपात्रदक्षिणादानं पयतोनादरेवचालयेत् ॥ ततोर्गंधादिकंधृत्वा । द्विगुणमुग्रकुशत्रयादीन्यादाय ॐ अमुकगोत्रेऽस्मन्मातमुकदेवि सावत्सरिककोदिष्टाद्वा एतानिगंधघुष्यधूपदीपतांबूलसिंदूरवासांसि तुभ्यंस्वधा-इत्युत्सृजेत् ॥ ततः अर्चनसंपुष्णमस्तिवतिप्रार्थ्य जलादिनामण्डलं कृत्वा ( परकी यभूमौश्राद्धकरणे-ॐइदमन्नमेतद्द्रव्यामिपितृभ्योनमः-इतिकुशोपागभूत्स्वामिनेऽन्नवलिदद्यात् ॥ धूमौस्वसेवनावश्यकता) ततोभोजनपात्रं दत्त्वा तत्र उष्णमन्नसंघृतं पितरं ध्यायन्पुरुषं पतिक्षमं क्राम्यां परिष्विष्य तत्पात्रं ध्वंजनं शुश्रूष्य जलजलापात्राणि च स्थापयेत् ॥ ततोऽन्नमधुमयं यं कृत्वा ॐ प्रधुक्वाताऽऽहतायेते मधुक्षरान्ति सिधवः ॥ माध्वीर्नः सन्तोषयीः ॥ १ ॥ मधुना कमुतोपसोमधुमनाथं वठरजः ॥ मधुद्वारस्तु नः पिता ॥ २ ॥ मधुमान्नोऽन्नं वनस्पतिमधुमौऽयस्तु सूर्यः ॥ माध्वीर्गोवो भवंतु नः ॥ ३ ॥ ॐ भुधुमधुमध्विरभ्यभिभंत्रयेत् ॥ ततोऽन्नपात्रं न्युज्याभ्यां व्यस्ताभ्यां कराभ्यामालभ्य ॐ पृथिवीति पात्रं द्वारपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽअष्टोऽअतृजुहोमिस्वधा ॥ १ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेया

निदधेपदम् ॥ समूहमस्यपांशुरे ॥ २ ॥ इतिपठित्वा ॥ अविष्णो कथ्यं रक्षइत्यनयास्वांशुमुमधोमुखमनखमन्नेतिवेक्ष्य ॥ अइदम  
ब्रम् अइमाआपः अइदमाज्यम् ॥ अइदं कविारितपठित्वा ॥ अपहताऽअसुरक्षांसेवेदिपदः ॥ इत्यन्नपात्रपरितोवाभावतेनतिलान्वि  
कीर्य वामकरेणपात्रमत्यजन्दक्षिणकरेणकुशादीन्यादाय ॥ असुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुदेवितांवरसैरैकोदिष्टाद्धे इदमनंसेषकरणम्  
अमृतरूपंकथ्यंतुभ्यंस्वधा-इत्युत्तुजेत् ॥ ततः अअन्नहीनक्रियाहीनं विधिहीनचयद्भजेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इतिप्रार्थ्य गायत्रींत्रिः  
सकृद्भजेत् ॥ ततः अ मधुं वाताऽऽकृतायते ॥ इत्यादिमंत्रत्रयम् ॥ अ मधुमधुमाध्वितिचजेत् ॥ ततः अ कृणुज्जपाजइत्याधार  
क्षोत्रींऋचः ५ पठित्वा भूमितिलोरातीर्थं मातरंध्यायन् ॥ अ उदीरतामवरं इत्यादिपितृमन्त्रान् १३ ॥ असहसशीर्षां इत्यादिपुरु  
षं १६ इतिपुरुषमूक्तम् ॥ अआशुः शिशानो ॥ इत्यप्रतिरथं पठित्वा अन्यानिरुचिस्तवप्रभृतीनिपठेत् ॥ तत उच्छिद्रसमीपेभूमिं  
प्रोक्ष्य तत्रास्तुतदक्षिणाग्रकुशोपरि अअग्निदग्धाश्चेज्जीवा येप्यदग्धाः कुलेभ्यः ॥ भूमौ दत्तेन त्वय्यं तु तृतायांतु परंगतिम् ॥ १ ॥ इति  
मंत्रेणान्नं प्रकीर्य (सव्येन) आचम्य हिरंस्वत्वा गायत्रीं मधुब्वाता इतिवृचम् मधुमधुमाध्वितिवजपेत् ॥ ततोऽपसव्येन चतुरस्रं दक्षिणद्वं  
पिंडदानार्थस्थाननिर्माणं तन्मध्येदमपजुलीमूलेन ॥ अपहताऽअसुरक्षांसेवेदिपदः-इतिमंत्रेणसव्योपग्रहीतदक्षिणहस्तेन दक्षि  
णार्थसकृद्धेवामालिल्य दमपजुलीमुत्तरस्यांदिशिनिक्षिप्य अग्रेरूपाणिप्रतिमंचमनाऽअसुराः सन्तः स्वधयाचरंति ॥ परापुरोनिपुरोभयभन्न्य  
मिष्टांल्लोकां नृणुदन्त्यस्मात् ॥ १ ॥ इतिमंत्रेणज्वलदुल्लुभंस्वोपरिभ्रामयित्वा दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ ततउपमूलसकृद्धनकुशत्रयरेखो  
परिस्तीर्त्वा सव्येन अवेवताभ्यः-इतित्रिजपेत् ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा पत्रपुटके जलतिलगंधपुष्पाणिहृत्वा तपुटकं कशादीनिचादाय अ

अमुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोदृष्टाद्द्विपिडस्थानेऽत्रावनेतिस्वयादितिकुशोपरि अवनेजनंदद्यात् ॥ ततः सर्वस्माद्वा  
दुष्णकिंचित्किंचदन्नमुदृत्य मध्वाज्यतिलजलसहितपात्रेकृत्वा विष्णोर्पमपिंडनिर्माय मधुघृताभ्यामभिवाय्य द्विगुणभुङ्क्नुशादीनिपिंडं  
चादाय अँअमुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोदृष्टाद्द्विपिडः स्वयानमः-इतिसव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनपितृतीर्थेनकुशोप  
रिपिडमवनेजनस्थानंदद्यात् ॥ ततः लेपभागमुज्ज्वलितमिदुदित्य दम्भूलेकरप्रोञ्ज्य हस्तौप्रक्षाल्य सर्व्वेनचर्म्यविष्णुस्मरेत् ॥ ततोऽपस  
व्यादिकृत्वा दक्षिणामुखः अँअत्रमातमादयस्व यथाभागमावृषास्वयत्न-इतिपठित्वा वामावर्त्तेनोदङ्कमसीभृत्वा प्रीतमनाः श्वासनियय्य  
तेनैवयथापरावृत्य अँअमीमदंतमातर्यथा भागमावृषायिषत् इतिश्वासमुदृत्यजेत् ॥ ततोऽवनेजनपात्रगृहीत्वा अँअमुकगोत्रेऽस्मन्मा  
तरमुकदेवि अत्रप्रत्यवनेतिह्येतस्वया इतिपिडोपरिप्रत्यवनेजनंदत्वा नीर्विचित्रस्य सव्येनाचामेत् ॥ ततोऽपसव्यादिकृत्वा अँनमस्तेमाता  
रसायनमस्तेमातः शोपायनमस्तेमातर्जाविषयनमस्तेमातः स्वधायै नमस्तेमातवोरियनमस्तेमातर्मन्यवेनमस्तेमातर्मनस्तेगृह्णात्रोमातर्दे  
हिसस्तेमातर्देषम इतिकृतांजलिः पठित्वा अँएतन्तेमातर्वासः-इतिपिडोपरिमृन्धृत्वा कुशादीन्यादाय ॥ अँअमुकगोत्रेऽस्मन्मातरमुकदेवि  
एतन्तेवासः स्वया-इतिमृन्धृत्यजेत् ॥ ततोमातरमुदित्यतदीयपिडेवृष्णगंधकुम्पुष्पधूपदीपतांबूलपूगीफलदक्षिणादीनिदत्त्वा पिंडशे  
षात्रपिंडमभीषेविक्रित् ॥ ततोऽन्नपात्रे अँशिवायाणःसंतु-इतिजलम् ॥ अँसामनस्यमस्तु-इतिपुष्पम् ॥ अँअक्षंतचारिषंचान्तु-इतिय  
वांश्चदद्यान्नतंडुलात् ॥ ततोदेशकालौस्मृत्वा अँअमुकगोत्रायाअस्मन्मातुमुकदेव्यांगारूपिण्याःसांवत्सरिकैकोदृष्टाद्द्विपिडमस्तेनदन्नपानादि  
कमक्षय्यमुपतिष्ठतामिति तिलयुक्तमक्षय्योदकंदद्यात् ॥ ततः ग्राह्मुसः सव्यंकृत्वा कृतांजलिदक्षिणादिशंपश्यन् आशिषोहृत्वाय ॥

अ० अवधोराभाताऽस्तु-इतिपठित्वापिण्डोपरिपूर्वाग्राजलधारदत्त्वा अ०गोत्रनोवद्धतां दातारोनोभिवद्धतां वेदाः संततिरेवच ॥ श्रद्धाचनोमा  
 व्यगमद्बुद्धेयंचनोऽस्तु ॥ अन्नचनोबहुभवेदतिथीश्चलभेमहि ॥ याचितारश्चनः संतुमाचयाचिष्मकंचन ॥ एताः सत्याः आशिषः संतु-  
 इतिप्रार्थयेत् ॥ ततोऽपसव्यादिकृत्वा पिण्डोपरिसप्तविंशत्रयदक्षिणाग्रमास्तीर्य जलेन अ०उज्ज्वहंतारमृतघृतपयःकलालपरिस्तुतम् ॥  
 स्थधास्थतर्पयेत्तमेमातरम् ॥ १ ॥ इतिदक्षिणाग्राजलधारदद्यात् ॥ ततः अर्घ्यपात्रमुत्तानीकृत्ययथाशक्तिरजतदक्षिणादद्यात् ॥ द्विगुणमु  
 गृह्णन्नादीनिदक्षिणांचादाय अ०अमुकगोत्राया अ०स्मन्मातुरमुकदेव्याः सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदंरजतंचंद्रदेवतममुकगो  
 त्रायाऽमुकशर्माणेब्राह्मणायदक्षिणात्वेनदातुमहमुत्सृजे-इतिसंक्षप्य यथासंभवेयथाचारंचदद्यात्ततः पिंडमुत्थाप्यस्थाल्यानिघाय अन्नप्रा  
 णकृत्वा पिंडाधःस्थंसकृल्लुनकुशत्रयमुत्सुकंचवह्नौक्षिपेत् ॥ ततः सव्येन अ०देवताभ्यइतित्रिजिपित्वाअपसव्येन अ०अभिस्मृत्यताम्  
 इतिविमृज्य रक्षदीपंनिर्वाप्य सव्येनहस्तौपादौप्रक्षाल्य आचमेत् ॥ ततः अ०प्रमादादितिपठित्वा कर्मघूर्तिकामोविष्णुस्मृत्वा पिंडंगवादि  
 भ्योदत्त्वा श्राद्धीयवस्तूनिब्राह्मणायप्रतिपाद्य वैश्वदेवबलिकर्मणीकृत्वा ब्राह्मणन्भोजयेत् ॥ ततः इष्टैः सहशेषभोजनंकुर्यात् ॥ एवमेव  
 सापन्नमातृपितृव्यपत्नीभ्रातृपत्नीस्वस्त्रीप्रभृतीनांश्राद्धज्ञेयम् ॥ इतिश्रौण्डीयश्राद्धप्रकाशेमातृकैकोदिष्टश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥ ॥ ६५ ॥  
 ॥ अथह्नीकृतैकोदिष्टश्राद्धप्रयोगः ॥ पूर्वदिनेएकभक्तादिनियमंकृत्वा श्राद्धदिनेप्रातःस्नात्वा शुक्लवस्त्रगुग्धारिणीनित्यकर्मसमाप्य  
 गोमयेपलितसुसमावृतेशेस्वयंपांककृत्वा मध्याह्नेऽनुःस्नात्वा पूर्वोपकल्पितश्राद्धशेषमागत्यतिलैलेनदीपंप्रज्वाल्यस्वासेनप्रादुमुक्षी  
 लुपविशेत् ॥ ततः कर्मपात्रजलेनाष्टूर्यतत्रगंधघुष्णतिलकुशादीनिनिक्षिप्यरजतादिपवित्रधारणंकृत्वा आचम्य अपवित्रः पवि



त्रोवा० ॥ १ ॥ पुंडरीकाक्षः पुनान्वितिकुशत्रयेणश्राद्धाद्यद्रव्याणिस्वाभ्यानंचप्रशयेत् ॥ ततोभूम्येनमः ॥ काशयथ्येनमः ।  
 अक्षय्याथेनमः । भगवत्यैगयाथेनमः । भगवतेगदाधारायनमः । इतिभनोवाक्काथेनमस्मरंकुर्यात् ॥ ततःकुशत्रयतिलजलान्या-  
 दाय देशकालौसकीर्त्य अद्यामुकगोत्रस्य अस्मत्पत्युः मुकशर्माणो वसुरुपस्यसांवत्सरिकैकोदिएश्राद्धमहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य देवताभ्यः  
 इतित्रिःपठेत् ॥ ततोदक्षिणामुखीपातितवामजानुस्तिलगोरुसर्पपाण्यर्हत्वा । नमोनमस्तेगोर्देवे पुगणपुरोत्तम ॥ इदंश्राद्धहविर्देवे ॥ १ ॥  
 तांसर्वतोदिशः ॥ १ ॥ इतिसर्वत्रप्रयादिदिशुर्विकार्यं नवीवांधंकुर्यात् ॥ अथामनादिदानम् ॥ द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय अत्रा-  
 मुकगोत्र अस्मत्पतेऽमुकशर्मन्सांवत्सरिकैकोदिएश्राद्ध इदमासन्तुभ्यंनमः । इतिपितृतीर्थेनदक्षिणाग्रमासनमुत्सृजेत् ॥ ततः-तिलो-  
 नमःइतितिलांस्विकीर्त्य अर्घवापत्रेणविंधृत्वा अद्योनमः-इतिजलप्राक्षिप्यतिलेभ्योनमः-इतितिलांस्तूष्णींघंघपुण्याणिचिनिक्षिपेत् ॥ ततोऽत्र-  
 पात्रसंपत्तिरस्तु-इतिपठित्वा अर्घवापत्रवामहस्तेकृत्वा तत्रस्थंपवित्रंपलशपत्रेदक्षिणाग्रधृत्वा अद्योनमः-इत्यभिभ्यद्विगुणमुग्रकुशानिलज-  
 लान्यादाय-अद्यामुकगोत्र अस्मत्पतेऽमुकशर्मन्सांवत्सरिकैकोदिएश्राद्ध एतेहस्तावोनमः-इत्यर्घवापत्रेणपरिदददुत्सृजेत् ॥ ततोऽर्घवापत्र-  
 मासनवामपार्श्वे पत्येस्थानमासि इतिन्युब्जीकुर्यात् ॥ ततोर्गंधादिदानम् ॥ द्विगुणमुग्रकुशत्रयतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्र अस्मत्पते-  
 ऽमुकशर्मन्सांवत्सरिकैकोदिएश्राद्ध एतानिःपुष्पधूपद्विपदाबूलयज्ञोपवीतवासामितुभ्यंनमः-इत्युत्सृजेत् ॥ ततः अर्घनंसंपूर्णमासित्वेपि  
 ठित्वा जलेन आसनपदविधिवर्धमंडलंकुर्यात् ॥ ( अत्रपरकीयभूमौश्राद्धकरणे इदमन्नमेतद्वृत्तामिपितृभ्योनमः-इतिघृतादिशुक्लमन्नदद्यात् )  
 ततोभोजनपात्रे उष्णमन्नंसंवृत्यजंनंमुशीतलजलसहितंथवावर्गविष्यमधुदत्त्वा मधुमधुमक्षित्यभिभ्यं अन्नपात्रंन्यजुष्यान्व्यस्ताभ्यां

पाणिभ्यांस्पृह्य विष्णवेनमः-इतिस्वांगुष्ठमनखमन्नेनिवेश्य इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् । एतत्सर्वकव्यमित्यन्नजलवृत्तेषु निक्षिप्य  
तिलेभ्योनमः-इतितिलान्यात्रपरितोषिकीर्य पात्रवापकरेणस्पृशन्दक्षिणकोकुशदीन्यादाय अद्यामुकगोत्र अस्मत्पतेऽमुकशर्मन्सावत्र रि  
कैकोदिष्टश्चाद्व इदमन्नं सोपस्करं कव्यममृतरूपं तुभ्यंनमः-इत्युत्सृजेत् ॥ ततः अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं चयद्भवेत् ॥ तत्सर्वमाच्छिद्रमस्तु  
इतिप्रार्थ्य मधुमधुमध्वित्वजपेत् ॥ ततोभूमौ तिलान्विकीर्य यथालाचिस्तवादीनियथाशक्तिपठित्वा-नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेकचक्षुषे  
नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्तायैवैनमः ॥ १ ॥ इति श्लोकमपि पठेत् ॥ ततश्चिद्रसन्निधौ सूर्मिप्रोक्ष्य तत्र दक्षिणाग्रकुशत्रयमास्तीर्य व्यंजनघृ  
ततिलसहितमन्नगृहीत्वा अग्निदग्धयाश्च येज्या येप्यदग्धाः कुलेमम ॥ भूमौ दत्तेन त्वय्यंतु वृत्तायां तु परांगतिम् ॥ ३ ॥ इतिकुशोपरितदन्नवि  
कीर्य सव्येन आचम्य विष्णुस्मृत्यामधुमधुमाध्वित्वजपेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना उच्छिद्रसन्निधौ चतुरस्रदक्षिणपङ्क्त्या न निर्माय तन्मध्ये दूर्भे  
पिंजुलीमूलेन दक्षिणाग्रां प्रादेशमात्रं रखांकृत्वा दूर्भेपिंजुलीमुत्तरस्यादिशिक्षिप्य ज्वलदुर्भुकरौ खोपरिभ्रामयित्वा दक्षिणतो निदध्यात् ॥ तत  
उपमूलसकृल्लनकुशत्रयेरौ खोपरिस्तीर्त्वा प्राङ्मुखी देवताभ्यः-इति त्रिःपठित्वा दक्षिणासुखीपुटके तिलजलगंधपुष्पाणि कृत्वा पुटकं गृहीत्वा  
अद्यामुकगोत्र अस्मत्पतेऽमुकशर्मन्सावत्सारिकैकोदिष्टश्चाद्व पिंडस्थानेऽत्रावने निक्षतेनमः-इतिकुशोपरि अवने जनं दद्यात् ॥ किंचिज्जलपात्रे  
अवशेषयेत् ॥ ततस्तिलजलव्यंजनमधुधृतयुताग्नेन पिंडं निर्माय मधुधुताभ्यामभिधाय कुशादीनि पिंडं चादाय अद्यामुकगोत्र अस्मत्पतेऽमुकश  
र्मन्वसुरूप सांवत्सारिकैकोदिष्टश्चाद्व एतौ पिंडोनमः-इत्यवने जनस्थाने कुशोपरि पिंडं दद्यात् ॥ ततो दूर्भे मूले कं प्राञ्च्य हस्तौ प्रक्षालय सव्येना  
चम्य विष्णुस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना पत्येनमः-इति पठित्वा वामावने नोदङ्मुखी भूत्वा श्वासं नियम्य पतिध्यायन् दक्षिणासुखी पत्येनमः

इतिश्वासमुत्सृजेत् ॥ ततः पूर्वदत्तावेनजनप्रांशुहीत्वा अद्यामुकगोत्र अस्मत्पतेऽमुकशर्मन्सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धपिंडेऽत्र प्रायश्चनेनैव  
तेनमः-इतिप्रत्यवनेजनंदं दद्यात् ॥ ततोनिर्वाधिकस्य आचम्य अपसव्येन । वसंतायनमस्तुभ्यं ग्रीष्मायचनमोनेनमः ॥ वर्षाभ्यश्चशरत्संज्ञ  
ऋतवेचनमःसदा ॥ १ ॥ हेमंतायनमस्तुभ्यं नमस्तेऽशिरायच ॥ मासंवत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्योनमोनेनमः ॥ २ ॥ इति कृतांजलिः पठेत् ॥  
ततः एतत्तेतवासोनेनमः-इतिपिण्डोपरिग्रीष्णुणितमूत्रमृण्णदंशावदत्वा कुशादीन्यादाय अद्यामुकगोत्रास्मत्पतेऽमुकशर्मन् एतत्तेवासोनेनमः-  
इत्युत्सृजेत् ॥ ततः पितरमुदिश्यतदीयपिण्डेऽंधपुष्पधूपदीपं तंबूलदक्षिणादीनि दत्त्वा पिण्डशेषपान्निपिण्डसमीपे विकीरेत् ॥ ततो भोजन  
पात्रेशिवा आपःसंतु-इतिजलम् । सौमनस्यमस्तु-इतिपुष्पम् । अक्षतंचांगिष्टंचास्तु-इतिवतिलांश्च दद्यात् ॥ ततः अद्यामुकगोत्रस्य  
अस्मत्पत्युरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धैस्तदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः प्राङ्मुखी सव्येन कृतां  
जलिराशिपान्हीयात् अघोरः पतिरस्तु-इति पूर्वाग्रां जलधारं दद्यात् ॥ ततः प्राङ्मुखी कृतांजलिः ॥ गोत्रेनोवर्द्धतामित्यादि पठित्वा  
एताः सत्या आशिषः संतिन्याशिषः प्रार्थयेत् ॥ ततः पिण्डोपरि दक्षिणामुखी सपवित्रकुशत्रयं दक्षिणाग्रमास्तीर्य तदुपरि दक्षिणाग्रां  
जलधारं दद्यात् ॥ ततोऽवपानमुत्तानीकृत्य दक्षिणादानम् । अद्यामुकगोत्रस्यपत्युरमुकशर्मणः कृतैतत्सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थं  
मिदं जतं चंद्रैर्वृतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दत्तुमस्तु जे इति दक्षिणां दद्यात् ततः पिंडमुत्थाप्य स्थाल्यानित्रय अवघ्राणं  
कृत्वा पिंडाधः स्तूतदर्भचोत्सुकं च वह्नौ क्षिपेत् ॥ ततोऽभिरम्यतामिति विसर्जनम् ॥ ततः प्राङ्मुखी देवताभ्य इति त्रिः पठेत् ॥ ततो दक्षि  
णामुखी हस्ताभ्यादीर्पनिर्वाप्य ततो हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य प्रमादात्कुर्वतामित्यादि पठित्वा श्राद्धसंपूर्णकामतया विष्णुस्मरेत् ॥ ततः

श्राद्धीयवस्तूनिब्राह्मणायाप्येत् ॥ ततो यथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयित्वा बन्धवैः सहस्वयमपिभोजनं कुर्यात् ॥ इतिगौडीयश्राद्धप्रकाशे  
 स्त्रीकर्तृकौदिष्टश्राद्धप्रयोगः ॥ अथविधवाकर्तृकमहालयदिषुपार्षणप्रकारः ॥ तत्र अपुत्रविधवास्वभर्तृत्विष्टपितामहानां सपत्नी  
 कानां तथा स्वपितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां च महालयापरपक्षीयपार्षणश्राद्धं कुर्यात् ॥ तत्रसंकल्पः ॥ देशकालौ संकीर्त्य  
 अवाभुक्तगोत्राणां ममभर्तृत्विष्टपितामहानां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणां ममपितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां तुभ्यर्थं  
 महालयापरपक्षश्राद्धं करिष्ये इतिसंकल्प्य पूर्वोक्तषड्वैदव्यपार्षणविधिना अभ्यर्च्य श्राद्धं कुर्यात् ॥ अथवास्वयं संकल्पं कृत्वा ब्राह्मण  
 द्वाराकारयेत् ॥ तत्र (ब्राह्मणकर्तृकपक्षेऽवसंकल्पः) अमुकगोत्राया अमकनामन्या ममयजमान्या भर्तृत्विष्टपितामहानां तथा तस्याएव  
 पितृपितामहप्रपितामहानां तुभ्यर्थं महालयापरपक्षपार्षणश्राद्धं करिष्ये इत्युच्चार्य पूर्ववत्समंत्रकंप्रयोगं कुर्यात् ॥ इति विधवाकर्तृकषड्वै  
 दव्यपार्षणविधानम् ॥ इतिश्रीबीकानेरराज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगरनिवासिना श्रीवसिष्ठगोत्रोद्भवपण्डितश्रीरामकृष्णपौत्रेण श्रीकस्तूरीच  
 द्रमुनौ श्रीमहोदयभक्तवाजसनेयिना गौडपण्डितश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचितेगौडीयश्राद्धप्रकाशे पद्धतिखण्डे प्रेनृतिसिद्धि  
 यकं पंचमप्रकरणं समाप्तम् ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

॥ अथ जीवच्छूद्रपद्धतिः ॥ तावत् पुत्राद्याधिकाररहितः स्वीयमन्यस्यवा देशकालश्राद्धनव्यवसायाधिक्येसति जीवच्छूद्रकर्तृमिच्छु  
 र्यस्याकस्याचिच्छूद्रादश्याप्रातःस्नानं कृत्वाशुक्लवाससीपरिधाय संध्यादिनित्यावश्यकसमाप्य निर्विघ्नतार्थगणेशादिदेवान्पूजयेत् ॥  
 तद्वथा आचम्यप्राणनायभ्यदेशकालौसंक्रान्त्य ॐ अवकृष्णद्वादश्यां करिष्यमाणजीवच्छूद्रे निर्विघ्नकामो गणेशनमश्चकुलदेवतानां पूजन

महंकारिष्ये इतिसंकरस्य चंदनादिनागोशनवधहान्कुलदेवतांश्च पूजयेत् ॥ ततस्ताम्रपात्रेजलगंधक्षतंपुष्पाणिगृहीत्वा अँसूर्ययानमः  
इतिमूर्ययाऽर्घ्यं दत्त्वा देशकालौसंकीर्त्य अँ अद्यकृष्णद्वादश्यांजीवच्छूद्राद्भूतमुपासन्तं करिष्ये इतिसंकरस्योपवासं कुर्यात् ॥  
ततो मध्याह्नेस्नान्त्वा मध्याह्नमध्याह्नत्वा श्रीमहाविष्णुषोडशोपचारैः संपूज्य तदेवयथायुक्तप्रायश्चित्तं वैतरणीधेनुदानं तिलादिमहाष्ट-  
दानानि तिलपूर्णताम्रपात्ररुद्रगवेषुपावेन्यादिदानं च यथाशक्तिप्रतकरूपतत्कुर्यात् ॥ एवं यथासंभवं दानानि कृत्वा पुरुषभूक्तोपनिषद्भागव-  
तानि गीताविष्णुसहस्रनामादीनपुण्यन्तोत्राणि च पठच्छृणुयाद्वा भगवत्पुंजयजमपि कुर्यात् ॥ इतिद्वादशोक्तृत्यम् ॥ अथत्रयोद-  
शीकर्म ॥ तत्रादौ प्रातःस्नानादिनित्यक्रियां समाप्य गंगातिरादिदेशे तदऽसंभवे शुद्धया भूमौ गोमयेपलितायां धौतवस्त्रद्वयधरः कुश-  
पाणिः प्राङ्मुखो बद्धशिरसः स्वासने उपविश्य आचम्य कुशत्रययजलन्यादाय देशकालौसंकीर्त्य अँ अद्यकृष्णत्रयोदश्यां ममाभुक्तगो-  
त्रस्याऽभुक्तशमणो जीवितआत्मनः कर्तव्यौद्धेदहिकक्रियाया मरणोत्तरभविष्यप्रपञ्चविमुक्तिकामः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जीवच्छूद्र-  
महंकारिष्ये-इतिसंकरस्य जलमैशान्यादिशिक्षिषेत् ॥ ततः अँ भूरसिद्धमिरसीत्यादिनाकलशंसंस्थाप्य मनोजूतिरितिप्रतिष्ठा कृत्वा तत्र  
वरुणंसंपूज्य प्राथ्य तदुपरिस्वर्णमयीं विष्णुप्रतिमां स्थापयेत् ॥ ततो देशकालौस्मृत्वा अँ अद्यजीवच्छूद्रांगभूतषोडशोपचारैर्विष्णुपू-  
जां कारिष्ये-इतिसंकरस्य अँ सहस्रशीर्षां दत्त्वादिपुरुषभूतेन षोडशोपचारैः संपूज्य अँ विष्णो क्षमस्व इतिक्षमाप्य तदग्रतिसौजलयधेनूः सोप-  
स्कराः सतिलाः संस्थाप्य पूजयेत् ॥ तद्यथा-विष्णोऽग्रे चतुर्हस्तपरिमितमण्डलकृत्वा तत्रपंचविंशतिकुराणत्राचिंतविपरमेकमादाय अँ सो-  
मायपितृभूतस्वधानमः-इतिउत्तरदिशिदक्षिणाग्रं संस्थाप्या ॥ एवं द्वितीयं विष्टम् अँ अग्रेयकव्यवाहनयस्वधानमः-इतिदक्षिणदिशिदक्षिणाग्रं

स्थापयेत् ॥ ततस्तृतीयं द्वयोर्मध्ये अयमायागिरिस्स्वधानमः—इतिदक्षिणाग्रंस्थापयेत् ॥ ततस्तत्रक्रमेणत्रीन्कुम्भान् अञ्जिप्रकलशे  
 तिसंस्थाप्यप्रत्येकं अक्षरुणस्योत्तममितिजलेनापूर्य्य अपरिवाजपरितिरिपंचारत्नानिअंकाण्डात्काण्डादितिदूर्वाःअक्षस्थेव इतिपंचपल्ल  
 वांश्च निक्षिप्यअञ्जसोःपवित्रमसीतिसित्युग्ममवघ्नेणवधेयत् ॥ ततःप्रतिकलशंत्रिणिकास्यपात्राणिपृथक्पृथग्दृत्तमधुदधिधूपरितानिमुखस्थाने  
 स्थापयेत्॥(मुखस्थानंकुशाविष्टमूले)तत्रैवकुटुम्भासी-मुरा-उशीर-आमलक-इति पंचोषधिं घ्राणदेशंस्थाप्य (घ्राणदेशमपिकुशविष्टमूलम्)  
 ततः प्रियगुपत्राणिआदायप्रत्येककर्णयोःस्थाप्य ( कुशविष्टस्यघ्राणसुमपिकर्णदेशे ) ततोयज्ञापवीर्तशिरःस्थानेप्रत्येकंस्थापयेत् ॥  
 ततश्चतुस्ताम्रपात्राणितिलपूरितानिप्रत्येकंभुंभंचतुर्दिक्षुसंस्थाप्यप्रत्येकंकुम्भार्थेऽत्रपुपान्तंस्थापयेत् ॥ ततःप्रत्येकंस्वर्णशृंगाणि रौप्य  
 खुराणिचसंस्थाप्यएवंप्रकारेणचतुर्थांशेनत्रीणित्रसहपाणितत्रैवकारयेत् ॥ इतिजलधेनुस्यापनमृकारः ॥ अथपूजनप्रकारः ॥ तत्रतत्रदेश  
 कालौसंकारौ अथकृष्णत्रयोदश्यांजीवच्छ्रद्धाङ्गभूतजलधेनुत्रयपूजनमहंकारिष्ये इतिसंकरुष्यअसोमोद्देश्यसवत्सयैजलधेनवेनमः—इ  
 त्युत्तरस्थाषोडशोपचारःसंपूजयेत् ॥ ततः अथदुद्देश्यसवत्सयैजलधेनवेनमः—इतिदक्षिणस्थाद्वितीयां० ॥ अयमोद्देश्यसवत्सयैजलधेन  
 वेनमः—इतिमध्यस्थातृतीयांचपाडशोपचारःपूजयेत् ॥ एवंसंपूज्यअसोमायत्वापितृमतेस्वधानमः—इतिमंत्रेणउत्तरस्थानिविदेयेत् ॥ अथ  
 येकव्यवाहनयस्वधानमः—इतिदक्षिणस्थां० ॥ अयमायागिरिस्स्वधानमः—इतिमध्यस्थांचनिवेदेयेत् ॥ ततोऽपराह्णेनिमंत्रितपंचब्राह्मणान्ना  
 तान्यजमानसर्वेनहूतान्ग्रांगेण्युचिः कृतांजलिदंभेषुतिष्ठन्स्वागतमितिव्रूयात् ॥ सुस्वागतमितितैरुक्ते गोमयापलितमायाभूमौपीठद्यासने  
 पूरवेक्ष्य दक्षिणहस्तेनब्राह्मणानुसृष्ट्वा देवब्राह्मणौप्राङ्मुखैवस्वादिव्राह्मणांस्त्रीनुदङ्मुखान्निमंत्रयेत् ॥ तद्यथा—अथजीवच्छ्रद्धाङ्गसंघि

विश्वदेवश्राद्धार्थयुवमहमंत्रये-इतिदेवाविप्रानिमंत्रय ॥ अ० अथवसुश्राद्धार्थवामहमंत्रये-इत्येकं वसुश्राद्धार्थचनिमंत्रय एवमेवद्रादित्य  
 श्राद्धार्थचणकैकविप्रानिमंत्रयेत् ॥ एवंपंचब्राह्मणभवंति ॥ आमंत्रितस्मातिप्रतिवचनम् ॥ ततः अ० अक्रोधैवैशौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः ॥  
 भवितव्यमवद्विश्य मयाचश्राद्धकारिणा-इतिब्राह्मणञ्छ्रावयेत् ॥ भवितव्यमितिप्रतिवचनम् ॥ ततः इदं पाद्यमितिपाद्यमुपनीय विनीतः  
 स्वयमेवेतेपां पादौ प्रक्षालयेत् ॥ ततः अ० विश्वेदेवाहमर्घ्यं वस्वाहानमः-इत्युभयब्राह्मणपादयोर्व्यपुष्पगंधोदकैरर्घदत्त्वा अ० अद्यवस  
 वर्षोऽथैष्युष्मभ्यं स्वयानमः इतिवसुब्राह्मणपादयोर्घदद्यात् ॥ एवमेवरुद्रादित्यब्राह्मणपादयोर्घदद्यात् ॥ ततः अ० इदमाचनीय  
 मितिब्राह्मणेभ्य आचमनार्थजलदत्त्वा स्वयमध्याचमनं कृत्वा ब्राह्मणः सहश्राद्धभूमिमागत्यात्राभिप्रायेणसिद्धमित्युक्त्वा आसनानिकल्प  
 यित्वा उपस्पृश्य ॥ अत्राध्वमितिदेवब्राह्मणौ प्राङ्मुखौ वस्वादिब्राह्मणानुदङ्मुखानुपवेशयेत् ॥ ततस्तेपां पादयोरेधस्तात्कुशत्रयंदत्त्वा  
 प्रत्यासनसमापितलैलेनदीपान्प्रज्वाल्य काक्कुक्कुटादिभ्यः श्राद्धपहंतनपसारयेच्छ्राद्धदेशावरणचक्षुर्यात् ॥ ततः कर्तुं ब्राह्मणानुपुतः  
 स्वासनेप्राङ्मुख उपविश्य सव्येनकुशपवित्रावरणमाचनं चकृत्वा अ० अपवित्रं अ० पुंडरीकाक्षः पुनातिविपठित्वा कुशत्रयानातजलेन  
 श्राद्धयद्रव्याणि स्वात्मानं चांसिचेत् ॥ ततः अ० भूयैनमः अ० गयौयैनमः अ० भगवतोदाधाराय नमः-इतिनत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय  
 अ० अद्यज्रीवच्छ्राद्धांगभूतवसुद्रादित्यानां सदैवपावपावश्राद्धकारिण्ये इतिसंस्मर्य कुरुष्वेतिब्राह्मणानुज्ञातो गयत्रिजपित्वा अ० देव  
 ताभ्य-इतित्रिजपेत् ॥ ततस्तिलगौरसर्षपान्गृहीत्वा अ० नमोनमस्तेगोविंद इत्यादिमंत्रैः पूर्वोक्तपवित्रवत्सर्वत्रिकार्येनविधिबंधकुर्यात् ॥ ततः  
 अ० यथेदेवादेवेहदनामित्यादिकृष्ण्मांडमूलाभिर्मंत्रितजलेनंप्रोक्ष्यहरथनिवेदयेत् ॥ तत उदङ्मुखोदक्षिणजान्वाच्य यज्ञोपवीत्यतजनुकरो

जलयवसन्मिचतमुज्जुशत्रयमादाय अ०अद्यजीवच्छाद्वेस्वादिश्राद्धसंविधानेविश्वेदेवाः इदमासनंवनमः इत्युच्चाप्यभिलतद्भिजह  
स्तयोर्जलमासिच्य आसनदक्षिणभागस्यापरिदेवतार्थेनपूर्वाग्रकुशत्रयंयजेत् ॥ ततोदक्षिणाभिमुखः प्राचीनवीतीपातिवामजानुःद्विगु  
णभुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय अ०अद्यजीवच्छाद्वे इदमासनंभुभ्यःस्वधानमः-इतिपठित्वा प्रथमविप्रकोरजलंदत्त्वा आसनवामभागस्यो  
परिमोटकरूपंकुशत्रयपितृतीर्थंनदद्यात्॥एवमेवरुद्रादित्यभ्योप्यासनंदद्यात् ॥ ततःसव्येनअ०विश्वान्वानावाहायिष्ये-इतिदेवब्राह्मणौपश्रु ॥  
आवाहय-इत्यनुज्ञातोदेवब्राह्मणौगुह्यहात्वा अ०विश्वेदेवासः-इत्यावाह्य ॥ यवोसियवया०इतियवान्विकीर्य अ०विश्वेदेवाःशृणुत०इत्यादिप  
ठेत्॥विश्वेदेवोपत्तिनामोर्ज्ञाने-आगच्छतुमहाभारा०इतिश्लोकमपिपठेत्॥ अ०स्ततोऽपसव्येनअ०पितृनावाहायिष्ये-इतिपितृब्राह्मणौगुह्यहा  
त्वा अ०उशन्तस्त्वा-इत्यावाह्य अ० अपहता०इतितिलान्विकीर्य अ०आयंतुन० इत्यादिमंत्रंपठेत् ॥ ततोऽर्घपात्रपंचके प्रत्येकमेकैकपवित्रं  
धृत्वा अ०शत्रोदेवीरितिमंत्रावृत्त्याप्रतिपात्रंजलंप्रक्षिप्य अ०यवोसीतिदेवपात्रद्वययवान्प्रक्षिप्यअ०तिलोसि० इत्यादिमंत्रावृत्त्यावस्वादिपात्रये  
तिलान्प्रक्षिप्य पंचस्वापिगंधपुष्पाणिपुष्पाणिक्षिपेत्॥ ततःसव्येन अ०देवार्घपात्रपंचपत्तिरस्तु-इतिपठित्वा अस्तुसंपत्तिरित्यनुज्ञातप्रथमदेवार्घ  
पात्रंवामहस्तेकृत्वा तत्रस्थपवित्रंदेवविप्रकोरपूर्वाग्रदत्त्वाकिंचिदुदकान्तरंचदत्त्वाअ०यादिव्या० इत्यभिमंत्र्य अ०विश्वेदेवाणषावहस्तावस्वाहान  
मः-इतिदक्षिणहस्तेनपवित्रोपरि अर्घ्यदत्त्वा पवित्रसहितमध्यपात्रंप्रुतःस्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्येनवमुपात्रंवामहस्तेकृत्वा तत्रस्थपवित्रंतद्वि  
प्रकोर उत्तराग्रंदत्त्वा अ०यादिव्या०इतिपठित्वा ॥ मोटकादीन्यादाय अ०अधवसवः एषवर्धः स्वधानमः-इतिपितृतीर्थेनपवित्रोपरि अर्घजलं  
दत्त्वा पवित्रसहितमर्घपात्रमग्रे स्थापयेत् ॥ एवमेवरुद्रादित्येभ्योपितृतन्नामार्घ्यंदद्यात् ॥ अत्रसंक्षयबहुत्वाऽभावेनसमवनयनाभावात्पात्र



न्युञ्जीकरणाभावः अतः सर्वपात्राणामुत्तानमेवस्थापनम् ॥ ततःसव्येनविप्रकर्यार्जलमामिच्य गंधपुष्पधूपदीपादिकंधूचा कुशत्र  
ययवजलान्यादाय ॐ विधेदेवाः एतानिगंधपुष्पधूपदीपत पूल्यज्ञोपवीतवामाभि वोनमः इत्युत्सृजेत् ॥ ततःकृतांजलिः ॐ  
विशेषांदवानामर्चनसंपूर्णमस्तु-इतिब्रूयात् ॥ ॐ अन्वचर्नसंपूर्णमितिप्रतिप्रतिचनम् ॥ ततोऽपमव्येन गंधादिकंधूचाविप्रकरजलमामि  
च्य मोटकादीन्यादाय ॐ अग्नवसवः एतानिगंधपुष्पधूपदीपतपूल्यज्ञोपवीतवामास्युष्मस्यस्ववानमः-इतिउत्सृजेत् ॥ एवमेवरुद्रा  
दिव्येभ्योपिगंधादिद्वयात् ॥ ततः पितृणामर्चनसंपूर्णमस्तिनिपठित्वा अस्त्वचर्नसंपूर्णमित्यनुज्ञातः अयंवागंधः इहोमाख्यमित्यादि  
क्रमेणप्रत्येकं ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपादयेत् ॥ तथ्यपुण्याणिशिखात्रयनयार्थिणि॥ अत्रावमरे अन्यन्यप्याभरणकमंडलुशय्यासनप्रभृतीनिद्रव्या  
णिफलार्थितयाद्वयानि ॥ ततो वसुभ्यस्तन्वाभहविप्र भोजगामि॥ रुद्रेभ्यस्तन्वाभहविप्र भोजगामि ॥ सूभ्यस्तन्वाभहविप्र भोजगामि-इतिपठि  
त्वा भोजनपात्रस्थानदेशंसमाज्यं नोवारचूर्णेनगोरमृत्तिकयावा प्रणीताग्निभस्मनजलेनवा ब्राह्मणान्वेषयित्वाकमंडलानि कुर्यात् ॥  
ततो भोजनपात्राणिदत्त्वा हस्तप्रक्षालनाथप्रत्येकं जलंदद्यात् ॥ अथग्नौकरणम् ॥ तत्रनावद्वचर्जनक्षारवर्जितं घृताक्तमुष्णश्राद्धया  
व्रात्रभागंकांस्यपात्रे समुद्रय ॐ अग्नौकरणंकरिष्ये-इतिष्टुत्वा कुरुज्वन्यनुज्ञातः पित्र्यविधिनामस्तुब्राह्मणहस्तेजलेवा ॐ अग्नयकव्यवा  
हनायस्वाहा ॥ इदमभयकव्यवाहनाय ॥ ॐ सोमायपितृभस्वाहा ॥ इदं सोमायपितृभस्ते-इत्याहुतिद्वयं जुहुयात् ॥  
ततः शेषमंत्ररुद्रादित्यपात्रयोर्दत्त्वा पिडार्थंचावरोपयेत् ॥ ततः सव्येनदेवपात्रद्वये अपमव्येन वस्त्रादिपात्रेषुच उष्णममंत्रसघृतमनेकव्यं  
जनयुतं सुशीतलजलसहितं यथावत्पारिविष्य मधुनाभिघार्य ॐ मधुव्वाताऽऽक्रतागते इत्यादिच्यंचामधुमधुमध्विन्नेनचाभिभवेयेत॥ ततः

(सव्येन) उत्तानपाणिभ्यां देवपात्रमालभ्य ॐ पृथिवीते ० इति जप्त्वा इदं विष्णु ० इत्येतत् वैष्णवीमुचमुच्चार्य्यऽधोमुखद्विजह्नुमनसं स्वहस्ते नगृहीत्वा ॐ विष्णो हव्यठि रक्ष-इति यजुषा जेनिवेश्य इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् एतत्सर्वं हविर्विरिणुक्वा ॐ अपहता ० इत्यज्ञपात्रं परि तोयवान्विकीर्य दक्षिण करेण कुशत्रयं यजलन्यादाय ॐ अथ वस्वादिश्राद्धसंज्ञिने निवेश्य देवाः इदमन्नं सोपस्करं हव्यं परि विष्टं परिवेश्य मा णं च ब्रह्मणत्तिपत्यतममृतरूपं वः स्वाहनमः ० इत्युच्चार्य्य उदकं देवतीर्थेन विप्रदक्षिणभागे भूमौ क्षिपेत् ॥ ततोऽपसं धेनन्त्युजपाणिभ्यां व्या स्ताभ्यां वसुपात्रमालभ्य ॐ पृथिवीते ० इदं विष्णु ० इत्यादि पठित्वा ॐ विष्णो कथ्यठि रक्ष इत्यनया पूर्ववदंष्ट्रां निवेश्य अपहता ० इत्यादिना तिलान्यात्रं परितो विकीर्य द्विगुणमुद्रात्रयं दान्यादाय ॐ अथ जीवच्छाद्वे वसवः इदमन्नं सोपस्करं कंठ्यं परि विष्टं परिवेश्य मा णं च ब्रह्म णत्तिपत्यतममृतरूपं युष्मभ्यं स्वधानमः ० इत्युदकं पितृतीर्थेन विप्रधामभागे भूमौ निक्षिपेत् ॥ एवमेव रुद्रादित्येभ्यो पितृसत्तान्नानोत्सृजेत् ॥ ततः ॐ अन्नहानिमित्यादिप्रार्थ्य जुषध्वमिच्छातः इति चेक्त्वा भवंतः ग्रथायन्तु इति ब्राह्मणेभ्यः सङ्कृतसङ्कटशानं दद्यात् ॥ ते च वा ग्यताः नियमवंतः ॐ क्रारपूर्वमुं जेरञ् ॥ श्राद्धकर्त्तृतेष्वश्रसु व्याहृतित्रयपूर्वमप्रणवांगायत्री त्रिसङ्कटाजपेत् ॥ ततः पवित्रपाणिद्वि र्भेष्यासीनः ॐ मधुवाताऽक्रतायते ० इति त्र्यृचं मधुमगुमध्वतिच पठेत् ॥ ततः (सव्येन) ॐ कृणुष्वपाजः-इत्यादि रक्षोघ्नीः पंचक्रवः पठित्वा भूमौ तिलाविकीर्य वस्वादिरूपतया ब्रह्मणान्वधायन् ॐ उदीरतामवर-इत्यादि पितृवंतः सहस्रशीर्षिन्यादि पुरुषसूक्तम् ॥ ॐ आहुः शिशानः-इत्याद्यप्रतिश्च पठेत् ॥ ततः अन्यान्यपि रक्षिस्त्वप्रभृतीनि पवित्राणि पठेत् ॥ अथ तृताञ्जान्वा (अपसव्येन) ॐ उच्छिष्ट सान्निधौ विप्रश्रोत्रोष्मप्रोक्ष्य तत्र दक्षिणाप्रकुशत्रयमास्तीर्य सर्वप्रकारसंन्यंजनमुदृत्य सतिलमेकीकृत्य ॐ अग्निदग्धश्चेति मंत्रेण

कुशोपरिदन्त्राविक्रिेत् ॥ ततः ( सव्येन ) आचम्य हारस्मृत्वा ब्राह्मणेभ्योजलगङ्गादन्त्वा गायत्रीं मधुवता० इत्यादित्र्यंमधुमधुमध्विति चजपेत् ॥ ततस्तृताःस्थ-इतिष्टुत्रा तृताःस्मइतिरुक्ते शेषमन्त्रांक्रियतामितिष्टुत्रादष्टैः सहभुज्यतामिन्युक्ते पिंडानहंकारेभ्य-इति पृच्छेत् ॥ कुरुष्वेत्यनुज्ञातोऽपमव्यादिनावस्वादिब्राह्मणाच्छिष्टमनिवौ चतुस्तमण्डलाकारवाचतुगुलीच्छित्तमेकतं वस्वादिपिंडदानास्थ्या नंनिर्मायतन्मध्यदेशेर्धमिजुलीमूलेन अ० अपहता० इतिमव्योपगृहीतदक्षिणहस्तनदक्षिणाग्रां रेखांसकुडिलेभ्य दर्भमिजुलीमुत्तरास्थ्यादि शिनिक्षिपेत् ॥ ततः अ० येरूपाणीतिमंत्रेणज्वलदुर्मुखैर्योपरिश्रामयित्वा दक्षिणतानिदध्यात् ॥ ततः उपमूलसकृदाच्छिन्नदक्षिणाग्र कुशत्रयं रेखोपरिस्तीर्त्वा देवताभ्य० इतित्रिजपेत् ॥ ततः पुटकत्रये जलतिलगंधपुष्पाणिहृत्वा ॥ एकंपुटकं वामहस्तेकृत्वा मोटकादीन्या दाय अ० अद्यजीवच्छ्रद्धैवसवः अत्रावननिगंध्युष्मभ्यंस्वधा इति कुशमूले अवनेजनंदत्वा एवमेवरुद्रादित्येभ्यः कुरामध्याग्रायदद्यात् ॥ ततः सर्वस्माच्छ्रद्धैरपात्रादुष्णमन्नमुद्धृत्य मध्याज्यतिलसर्वव्यजनयुतपात्रेकृत्वा विलोपमाल्लानिपडाग्निर्याय मधुघृताभ्यामभि वाय्यं प्रथमपिंडमादाय मोटकादिना अ० अमुक्तागोत्रस्यममामुक्तागर्माणो मरणोत्तरमविध्येषेतवविमुक्तयर्थं जीवच्छ्रद्धैवसवः एषपिंडः युष्मभ्यंस्वधा-इतिकुशमूलेदत्त्वा एव रुद्रेभ्यः कुशमध्ये पुनः आदित्येभ्यश्चकुशाग्रापिंडदद्यात् ॥ ततः कुशमूले लेपभुजंतिमुदि श्य लेपभागभुजः पितरस्तुयन्तु-इति करौप्रोञ्च्य जलेनप्रक्षाल्य मध्येनत्रिाचम्यविष्णुंममेत् ॥ ततः ( अपसव्येन ) अ० अत्राणितरोमा दयध्वंयथाभागमावृषायध्वमितिपठित्वा वामावर्त्तनोदङ्मुखोभूत्वा श्वासंनिम्य तेनैवपथपरिवृत्य अ० अमीमदंतिपितरयथाभागमावृषा यिषत-इतिजपेत् ॥ ततः पूर्वदत्तावेनजनाविशिष्टजलेनपिण्डोपरिप्रत्यवननेजनंदत्वानिर्वो विंस्तस्यसव्येनावचम्य (अपसव्येन) अ० नमोवः पितरो

रसाय-इति कृतांजलिः पठेत् ॥ ततः ॐ एतद्दः पितरोवासा-इति पठित्वा पिण्डेषु मूत्राणि प्रतिपिण्डमूर्णादशवादत्त्वा ॐ अद्यव  
 सवः एतद्दसो युष्मभ्यंस्वधा-इत्युत्सृज्य एवं रुद्रादित्यभ्यामुत्सृजेत् ॥ ततोवस्वादितुं दिश्य तदीयपिण्डेषु नृप्यङ्गिगंधपुष्पघृषपदीपतो  
 ब्रूलक्षिणादीनि दद्यात् ॥ ततो ब्राह्मणहस्तेषु ॐ शिवा आपः संवित्सिद्धस्तकृजलं दद्यात् ॥ ॐ सौमनस्यमस्त्रातिपुष्पाणि ॐ अक्षतं  
 चारिष्टमस्त्वित्यवांश्च दद्यात् ॥ ततः कुशलिजलान्यादाय ॥ ॐ अद्यजीवच्छ्रद्धं नूनं दत्तैतदन्नपानादिकं  
 मक्षय्यमस्तु-इति विप्रकरे जलं दद्यात् ॥ एवं रुद्राणामादित्यानां च तत्तद्विप्रकरे दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा श्राद्धमुत्सृज्य नमनाः कृतांजलिदं  
 क्षिणां दिशपश्यन् ॐ अघोराः पितरः संवितिवेदेतासन्वितैरुक्ते ॐ गोत्रं नो वद्धतामित्यादिवेदेत् ॥ सन्वितिप्रतिवचनम् ॥ ततः  
 (अपसव्येन) पिण्डोपरिसपवित्रान्कुशानां स्तरीयं स्वधावाचायिष्ये-इति त्रयांशो वाच्यतामित्यनुज्ञातः पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यश्च  
 स्वधोच्यतामिति वेदेत् ॥ अस्तु स्वधा तैरुक्ते ॐ ऊर्जवहतीरिति मंत्रेण सपवित्रकुशोपरि दक्षिणां जलधारां दद्यात् ॥ ततः पिण्डानुत्थाप  
 याभि ॥ सत्यापय-इत्यनुज्ञातः पिण्डानुत्थाप्य स्थाल्यानि धायाऽवघ्राणं कृत्वा पिण्डाधः स्थान्सकृदाच्छिन्नं दत्तानुलुप्तं कंचाश्राक्षिपेत् ॥  
 ततोऽधोपात्राणि संचाल्य देवब्राह्मणाभ्यां दक्षिणां दद्यात् ॥ तदथा (सव्येन) कुशत्रययजलान्यादाय ॐ अद्य दृतं तज्जीवच्छ्रद्धां गभूतस्वधा  
 दिश्राद्धसंबंधिष्वपदिवानां श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं तिलपूरितकांस्यपात्रं सदक्षिणमुक्तगोत्राभ्यामुक्तशर्मभ्यां ब्राह्मणाभ्यामहंसप्रदे  
 इति सकल्य पात्रं त्राभ्यां प्रतिपादयेत् ॥ स्वर्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततः ॐ अद्यजीवच्छ्रद्धं नूनं श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमांस्तु रस्थोसि मां हेभ्यः कांसो  
 परस्करांजलधेनुमुक्तगोत्रायाः कुशमण्डपेन प्रसुथानीय ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसप्रदे-इति प्रतिपादयेत् ॥ ततः ॐ अद्यजीवच्छ्रद्धां दत्तं भूत रुद्राणां श्रा

द्वप्रतिष्ठार्थमिमांशुदक्ष्यक्रामोपकरांजलधेनुमुक्रगोत्रायामुक्रशरणेरुद्रस्थानीयब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रददे-इतिदद्यात् ॥ पुनः  
 अ०अब० आदित्यानांश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमांशुदक्ष्यक्रामोपकरांजलधेनुमुक्रगोत्रायामुक्रशरणेरुद्रस्थानीयब्राह्मणायतु  
 भ्यमहंसंप्रददे-इतिब्राह्मणायप्रतिपादयेत् ॥ ततःअ०वैश्वदेवाःप्रियतामितिभवंतोऽधिब्रुवंतु-इतिदक्षद्विजान्वाचयित्वा अ०प्रियतंवोविश्वे  
 देवाः इतिप्रतिवचनान्तरम् अ०वाजेवजेइतिमंत्रेणवस्वादिव्राह्मणानुयाय पंक्तिमूढ्-न्यमंगुनेनगृहीत्वा गृहीतोदकपात्राविसर्जयेत् ॥ एवमत्र  
 देवब्राह्मणौविसर्जयेत् ॥ ततस्तान्वहिःस्थितान् अ०आमावाजस्यइतिप्रदक्षिणहृत्याष्टौपदान्यमुद्रज्यगृहंप्रविशेत् ॥ ततोऽक्षादीपान्निर्वाप्य  
 उच्छिष्टांपनयनं पिण्डप्रतिपत्तिंजलादिप्रक्षेपणरूपंकृत्वा हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य अ०नमोनारायणाय-इतिजपन्विष्णोक्षमस्व स्वस्थानर-  
 च्छ-इत्युच्चापुष्पांजलिनाविष्णुविमृज्य ब्राह्मणेभ्योभूरीभोजनंदत्त्वा वैश्वदेवान्तेनस्यपापणंदृत्वा सायंसंध्यादिकर्मसमाप्यकामकालशान्तिवि-  
 शेषपक्विष्णुस्मरन्त्यथशक्तिजागरणंकुर्यात् ॥ इतित्रयोदशीकृत्यम् ॥ अथचतुर्दशीकृत्यम् ॥ तावदप्रातःस्नानादिपंचयज्ञांतित्यहृत्य  
 निर्वर्त्य ब्राह्मणोग्रामस्यपूर्वद्वारेण उत्तरेणक्षत्रियः पश्चिमेनवैश्यः दक्षिणेनशूद्रेयवान्वस्त्राणिलोहखंडानिच अ०जततेपुंडरीकाक्ष नमस्ते  
 विश्वभावन ॥ नमस्तेस्तुहृदीकेश महापुरुषपूर्वज-इतिपठन्विकिरन् महानद्यादिकेरीरकूरेतजलायेवायथासंभंगच्छेत् ॥ तत्रभूमिसं  
 शोध्य दक्षिणाभिमुखोभूत्वा स्मृतौशिलौकिर्वाग्वस्वयंप्रज्वाल्य चितार्थस्थानसंचित्य त्रैवीर्णकद्रागचित्तिनिर्मायपूर्वज्वालितेभ्यो आ-  
 ज्येनाहुतित्रयंजुहुयात् ॥ अ०भूम्यैस्वाहा ॥ १ ॥ अ०भूम्यैस्वाहा ॥ २ ॥ अ०रुद्रायस्वाहा ॥ ३ ॥ इतिहुत्वा ततःपंचाशत्कुशान्युही-  
 त्वापुराकाराप्रतिष्ठातंकुर्यात् ॥ तदथा-अ०अधब्रह्मलोकामनेतुकाम आत्मप्रतिष्ठातिकारिभ्ये-अथवा अमुकत्रैवीर्णकद्राकारायिभ्ये-इति

संकरूप्य मनुष्याकारपुत्तलकंकृत्वा ऊर्णामूत्रेणप्रत्यंगंवद्धायवपिपेनलिधा अगयादीनिचतीर्थानि-इत्यादिमंत्रजलेसर्वतीर्थान्यावाह्यतेन  
जलेनप्रतिहृतिस्नाप्य गोपीचंदनगंगोदकादिनोपलिप्य शुद्धवस्त्रयज्ञोपवीततुलसीपत्रमालादिभिर्भूषितशक्लपिण्कृत्वा पूर्वनिर्मितचित्ता  
यामास्ताणिकुशायाभूर्ध्वमुखसंस्थायवस्त्रेणाच्छाद्यपिडदानकुर्यात् ॥ तत्रदक्षिणाभिमुखः कुशत्रयतिलजलन्यादाय अत्रयममामुक्  
गोत्रस्यमरणोत्तरभविष्यप्रेतत्वाविनष्टृत्यथयवपिडदानमहंकरिष्ये-इतिसंकरूप्य चतुष्कोणमंडलंकृत्वा तत्रदक्षिणाश्रान्दर्भानास्तोऽप्यपि  
सुव्यंकृत्वा यवपिपेनतिलमधुप्लुतदुग्धयुक्तेनपंचपिण्डाभिर्माय एकपिंडंकुशादीनिचादाय अमुकगोत्रस्यममामुक्शर्मणो भविष्यमरणो  
त्तरमृत्युस्थानभूयधिष्ठानदेवताप्रीत्यर्थमेवमपिण्डः स्वधा-इतिकुशोपरिदद्यात् ॥ १ ॥ पुनः द्वितीयपिण्डमादाय अमुकद्वारदेशे  
गृहवास्त्वाधिदेवताप्रीत्यर्थमेवमपिण्डः स्वधा-इतिद्वितीयं ॥ २ ॥ तृतीयदक्षमूलं अत्रयममुकं मरणोत्तगविश्रांतस्थानेपिशाचराक्षस  
यक्षप्रीत्यर्थमेवमपिण्डः स्वधा-इतितृतीयं ॥ ३ ॥ चतुर्थमअद्यामुकं मरणोत्तरचत्वरधिप्लुतखेचरदेवताप्रीत्यर्थमेवमपिण्डः स्वधा-इतिदद्या  
त् ॥ ४ ॥ ततःपाषाणलोष्टसंचयश्मशानदेवताःसंपूज्य गोमयोपलिप्तायाभूमौपंचभूसंस्कारान्कृत्वा तत्रतुलसीचंदनादियज्ञियकाष्ठे  
नचिर्तिनिर्माय तत्रात्मप्रतिहृतिस्थाप्यः तदक्षिणभागेकुशोपरि अअद्यचित्तास्थानेश्मशानवासिभूतादिप्रीत्यर्थमेवमपिण्डः स्वधा-इतिपि  
ण्डदद्यात् ॥ ततःतदक्षिणकुशौपष्टंपिण्डंदत्त्वाततोऽर्पिणज्वालय अक्रव्यादायनमः इतिगंधादिनासंपूज्य अअस्माच्चमभिजातोसि इतिघृ  
ताहुतिदत्त्वा प्रथमंशोभागेस्वयंदहेत् ॥ ततःस्थलान्तरेभूमिमुद्धृत्वा तत्र अय्यंतंग्रज्वालय मुद्गतं दुलतिलतंदुलचरस्थालीद्वयनिर्वाप  
कृत्वा प्रत्येकमधुशिरघृतोदकैः पूरयेत् ॥ तत्समीपमुद्गूरितानित्रीणिशरावाणिक्कृत्वा अंयुथिव्यै नमस्तुभ्यमित्येकंभूयैनिवेद्य अय्य

मायनमस्तुभ्याभिर्यननद्वितीयमाय० अरुद्रायभशानपतयनमः इति तृतीयरुद्राय निवेदयेत् ॥ ततोदितप्रतिष्ठातिदाहमाग्निम् अक्रव्या  
 दग्धिततायै मध्येनमः इति पठन्दीराक्तजलकुम्भजलेन निवापयेत् ॥ ततः नद्यादिकेस्तादा, नामिमात्रेजले स्थित्वा दक्षिणामुखा  
 ( प्राचीनवीती ) अयमायस्वधानमः ॥ अयमराजायस्वधानमः ॥ अमृत्यवे० ॥ अअन्तकाय० ॥ अ वैवस्वताय० ॥ अकालायस्व  
 धा० ॥ अ सर्वप्राणहरायस्वधानमः-इति प्रत्येकमतिलजलांजलिदत्त्वा बहिरागत्य अरुद्रायभशानपतयेनमः-इति मन्त्रेण तिलोदकपूर्णकुम्भ  
 भुवि विकीर्त्त ॥ ततो भूमादक्षिणप्रक्षुरायमास्तीर्य अयुक्कवाहाय रुद्रायस्वधानमः इति मन्त्रं स्मरन् अअमुकगोत्रादमुकशर्मन्  
 इदं तिलोदकं तुभ्यमस्तु-इति तिलोदकं स्वस्मै दर्भापरिदद्यात् ॥ ततः पूर्वकृतचरुद्रयोद्धृताभ्यां मुद्राभक्त १-तिलभक्ताभ्यां २-प्रत्येकान  
 पंच-इत्येवं दश पिण्डा विमाय मरणोत्तराय दशपिण्डदानेन विकर्तय्यतया प्रेतशब्दोच्चारणरहिततया दशपिण्डान् दद्यात् ॥ तथा अ  
 अवासुकगोत्रस्य ममासुकशर्मणः कर्तव्योऽयं दहिक क्रियायां शरीरावयवपूरकदशपिण्डदानप्रकारिष्ये-इति संकल्प्य ॥ गौरमृत्ति  
 कांस्थाप्य ( अपसव्येन ) दर्भस्तरणमवनेजनचकृत्वा तिलजलमधुतृक्षीयुक्तमुष्णपिण्डं कुरातिलजलानि चादाय ॥ अअद्योत्यादि  
 ममासुकगोत्रस्य जीवत आत्मनः कर्तव्याद्वैदहिक क्रियायां स्मशरसंपादनार्थं एष शिशूः पूरकः प्रथमः पिण्डो मे स्वधा-इति दर्भापरि  
 दद्यात् ॥ १ ॥ एवं कर्णाक्षिनासिकाग्रसंपादनार्थाद्वितीयः ॥ २ ॥ गलांसुजवक्षसंपादनार्थतृतीयः ॥ ३ ॥ नाभिं लिंगमुदरपूरकः  
 चतुर्थः ॥ ४ ॥ जानुजंघापादपूरकः पंचमः ॥ ५ ॥ सर्वमर्धपूरकः षष्ठः ॥ ६ ॥ सर्वनाडीपूरकः सप्तमः ॥ ७ ॥ इन्तलोमादिपूरकाऽ  
 ष्टमः ॥ ८ ॥ वीर्यपूरको नवमः ॥ ९ ॥ पूर्णत्वत्तिवक्षुनिपिपासाविपर्ययपूरको दशमः ॥ १० ॥ ततः प्रत्येकप्रत्यवनेजनं गंधादिदानं च

दत्त्वा प्रतिदिनसंस्थयातिलतोऽंजलयस्ति लतोऽयपात्राणि च दद्यात् ॥ ततः सर्वेषामक्षयोऽस्तु-इति पठित्वा प्रसन्नवदनः श्रीविष्णुस्मरेत् ॥ ततः  
 पिण्डानामुष्णत्वेन वृत्ते एकैकपिण्डजलकुम्भे निधाय नाभिमात्रे जलगत्वा एकैकदेशिणामुखे जलमध्यक्षिपेत् ॥ ततः पंचपंचाशजलकुम्भान्  
 तदुमावेशरावाणिवाजलजलिनामगोत्राभ्यां दद्यात् ॥ तद्यथा-ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकशर्मणो मम जीवत आत्मनः कर्तव्योद्देहिकक्रिया  
 यामरणोत्तरगतव्यपारलोके शुभातृपानिवाणार्थमेतपंचपंचाशकुम्भांस्तिलमधुशिरदुताः अथवा अंजलयः अश्वत्थमूलमेस्वधा-इति दद्यात्  
 त् ॥ ततो गृहमागत्य सायं गृहद्वारे पतितत्रिकाष्टिकादौ पात्रद्वयं जलक्षीराभ्यामापूर्य्य ॐ जीवात्र ह्राहि-इति जलपात्रम् ॐ जीव इदं दुग्धं पिबे  
 त्ति दुग्धपात्रं च निवेदेत् ॥ यद्यप्यत्र माल्यनोक्तं तथापि तदपि बोध्यं प्रकृतो दर्शनात् ॥ ततो रात्रौ देशिणाग्रदंभेषु उदङ्मुखः स्वपेत् ॥ रात्ररा  
 द्यादिश्राद्धविधानादेकरात्रमाशौचं वदन्ति ॥ इति चतुर्दशीकृत्यम् ॥ अथामावास्याकृत्यम् ॥ प्रातरमावास्यायां मूर्त्योदयानंतरं स्नात्वा विप्रा  
 दिक्रमेण वाययुधप्रतोदयार्तिस्पृष्ट्वा ततो नद्यादितो गन्धुमिश्रुद्धिं कृत्वा गोमयांकेनोपलिप्य ॥ तत्र सपिण्डस्त्रीद्वारा वा नूतनपात्रैः पाककार  
 भेत् ॥ पाके कृते प्रथमं पट्टुत्तरात्रिशतघट ३६०-दानं जलिदानं वा अश्वत्थमूलं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॐ अबोस्यादिपठित्वा अमुकगोत्रस्य  
 ममामुकशर्मणो जीवत आत्मनः कर्तव्योद्देहिकक्रियायां मरणोत्तरमपि व्यप्रेतव विमुक्तिकामः पट्टयधिकशतत्रयघटदानं वा अंजलिदानं  
 करिष्ये-इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ततः आद्यादिपोडशश्राद्धप्रेतशब्दग्रहितं स्वयांतेन कुर्यात् ॥ तद्यथा-कुशत्रयतिलजलान्यादाय अबोः ॥ दि  
 पठित्वा ॐ अमुकगोत्रस्य ममामुकशर्मणो जीवत आत्मनः कर्तव्योद्देहिकक्रियायां मरणोत्तरमपि व्यप्रेतव विमुक्तिकामः आद्यादिपोडश  
 श्राद्धान्यहं करिष्ये इति संकल्प्य पूर्वोक्तप्रेतकल्पायाद्यादिपोडशश्राद्धविधानप्रेतशब्दवज्यस्वधादिप्रयोगेण कुर्यात् ॥ ततः पट्टुत्तरशतत्रयघ



विपिण्डादीनां दद्यात् ॥ आद्यादिश्राद्धसमीपे कर्पूत्रयं घृताम्रदधिभिः पूजयेत् ॥ ततः शय्यादानं कान्चनघृतदानं वृषोत्सर्गादिकर्मकृत्वा  
 ततो वामरुद्रादित्यैः सह सपिण्डनोक्ता विधिनो सपिण्डनश्राद्धं कुर्यात् ॥ ततो मोक्षधनुदानं ब्राह्मणभोजनविष्णुस्मरणम् ॥ इति श्रापे० चतुर्थी  
 लालगाढं श्राद्धं ० ब्रह्मपुराणहोमादिकल्पतरुप्रोक्तजीविच्छ्राद्धपद्धतिः ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥  
 अथ जलधेनुदानप्रयोगः ॥ ॥ तत्र तवत्पूर्वाक्ता विधिनो सवसांगां परिकल्प्य प्रातः स्नानादिनित्यक्रियसमाप्य शुद्धावरधरः शुद्धासनोपरि  
 प्राङ्मुख उपविश्य गणेशं सूयादिग्रहांश्च पूजयेत् ॥ ततो देशकालौ सौम्यं सर्वपापक्षयपूर्वकं शेषयज्ञफलप्राप्तिसहितं मुक्तिमुक्तिमोजीवच्छ्रा  
 द्धनिमित्तं हतैव जलधेनुदानमहं करिष्ये-इति संकल्प्य ॐ कुरु जन्तुज्जातः स्वस्त्ययनं पुण्याहवाचनमाचार्यवरणं च कुर्यात् ॥ ततो वरणद्रव्यं  
 गृहीत्वा ॐ अव्यक्तं त्वजलधेनुदानकर्मण्येभिर्द्रव्यैस्त्वा महं वृणे ॥ वृत्तोऽस्मीति प्रतिवचनम् ॥ इति घृत्वा हिरण्मयं श्रीजलशायिनं भगवंतं पुरुषम्  
 तेन षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततो धेनुपूजनम् ॥ ॐ स्वस्व जलधेनवे नन्दिन्यै सुभायै सुशालायै सुभद्रायै कामधेनवे नमः ॥ आवाहनं समप्यामि  
 इत्यावाह्यप्रतिष्ठाप्य आसनपाद्याद्याचमनीयस्नानवस्त्रगंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यांतं बृल्लगोशालादिभिः श्रव्यक्षगोदानं प्रकारैः पूजयेत् ॥ ततः  
 प्रदक्षिणीकृत्य ॐ यालक्ष्मीः सर्वभूतानां याच देवेष्ववास्थिता ॥ धेनुरुपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ १ ॥ देहस्यायाचरुद्राणां शंकरस्य पदा  
 प्रिया ॥ धेनुरुपेण ० ॥ २ ॥ विष्णोर्वैक्षसिया लक्ष्मीः स्वाहा चैव विभावसोः ॥ चंद्रांश्च शक्रांस्तिया धेनुरुपेण सा स्थिता ॥ ३ ॥ चतुर्भुवनस्य  
 यालक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च ॥ लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुवर्दास्तु मे ॥ ४ ॥ स्वधा त्वं पितृभ्यो नानां स्वाहा यज्ञभुजं तथा ॥ सर्वपाप  
 हरा धेनु तस्माच्छांतिं प्रयच्छ मे ॥ ५ ॥ शेषपथं कश्यपनः श्रीशार्ङ्गं धूम्रपणः ॥ जलशायी जगद्धोनिः प्रायतां भयिकेशवः ॥ ६ ॥ इति प्राथम्यं

गोपुच्छगृहीत्वा ॥ अद्येत्यादिदेशकालोक्तोक्त्यर्थः । आत्मनः सर्वपापक्षयपूर्वकमगवद्भसुदेवप्रीतिकमोर्जावत आत्मनः कर्तव्योद्धेदहिक्रिया  
 यांभरणोत्तरभाविष्यश्रेयसमाविनष्टुत्तयेकतव्यजीवच्छूद्धेवसुखद्वैदित्यरूपब्राह्मणेश्वरोदात्तव्यदेशिणार्थमिमांजलयेन श्राद्दिगणमयविषणुप्रति  
 माधुतां मृन्मयकलशजलयूतिपंचरत्नगर्भमष्टादशान्नोर्निमितां सितवस्त्रयुगच्छन्नां दूर्वापल्लवशोभितां कुट्टमांसीसुरेशशिमलकनासि  
 कायुतां प्रियंगुपत्रवर्णां यज्ञोपवीतशिरां गुडास्यां शर्कराजिह्वां नवनीतस्तनां स्वर्णनेत्रयुतां क्षौमपुच्छादिकचक्रुष्टयस्यापितताम्रमयानि  
 लपात्रयुतां कांस्यदोहाघृतक्षौद्रवन्मुखीं छत्रोपानद्युतांमृगाजिनेपरिविनिर्मितां दम्बिष्टरसंस्थितामिशुदंडपादां सितकमलांसितमूत्रशिर  
 लामगरुकाष्टनासिकां सुगंधपुष्पयुतां पुगीफलदंतांसितसर्परोमकां स्वर्णशृंगैरौघसुरांताम्रपृष्ठांगंधादिनासुपूजितांचतुर्भुगवत्ससहितां  
 यथानामगोत्रायब्राह्मणायदातुमहमुत्सृजे ॥ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् ॥ इतिदत्त्वा पूर्वोक्तप्रार्थनाकृत्वा दानप्रतिष्ठार्थं दक्षिणं दद्यात् ॥ इतिजलधे  
 नुदानविधिः ॥ अथ जीवच्छूद्धकर्मणः सामग्रीलिल्यते ॥ स्वर्णमयविष्णुप्रतिमा १ स्वर्णशकले २ सुवर्णशलका १ पंचरत्नपुडिकाः  
 ५ चंदनं कुंडुमं केशरम् अगरु कर्पूरं पुष्पाणि पुष्पमाला धूपः दीपवर्तिका मोदकादिनैवेद्यं पुगीफलानि तांबूलानि ऋतुफलानि  
 यज्ञोपवीतानि ताम्रकलशाः १ मृन्मयकलशाः ३ तिलपूर्णताम्रपात्रं १ श्वेतवस्त्रं रक्तमूत्रं दूर्वा आम्रपल्लवाः कांस्यपात्राणि घृतमधु  
 दधिघूरतानि १२ कुट्ट-जटामांसी-मुरा-उशीर-आमलकानि तिलपूरितताम्रपात्राणि १२ छत्राणि ३ उपानहौ ३ स्वर्णशृंगाणि ६ रौप्य  
 सुराणि १२ ताम्रपृष्ठाणि ३ चतुर्थांशद्रव्यरचितवत्साः ३ श्राद्धसामग्री-वस्त्राणि उत्तरायवस्त्राणि आसनानि ५ जलपात्राणि ५ भो  
 जनपात्राणि ५ पत्रपुट्टकानि ५० कर्मपात्रे २ आचमनपात्रम् १ अर्घ्यपात्रेताम्रमेयेर तिलाः पीतसर्पपाः तैलदीपकपात्राणि ५ भक्ष्यभो

ज्याद्यन्नं शाकानि द्रुतदाधिमधूनि गंगाजलं कांस्यपात्रं सुशीतलजलं यथाः तंडुलाः वद्वलंडानि लोहखंडानि पंचशदभरचितानि  
 घ्राणि ४ पंचशदभरचितंपुरुषकारपुत्तलम् १ ऊणभूत्राणि, यवपिण्डं, तुलसीपत्रमाला, यद्विककट्टराचिताचिता १ गोपीचंदनं गंगादु-  
 त्तिका शालग्रामप्रतिमासांगा १ गोमयं पंचगव्यं दधि दुग्धं शर्करा चरुश्रपणथतंडुलाः । शरावाणि मुद्राः सप्तयान्यम् ॥ गोदानसमाश्र-  
 शय्यासोपप्रस्करा गोदानम् ऋणघेतुः मोक्षघेतुः प्रायश्चित्तघेतुः दूषोत्सर्गद्रव्याणि कांचनपुरुषः अष्टौ महादानानि पददानं दक्षिणाभयसा-  
 ब्राह्मणभोजनं प्रियंगुपत्राणि गुडं नवनीतं क्षौमवस्त्रं पीतवस्त्रं द्रोहनपात्रं मृगजानानि ३ इक्षुदंडाव् ४ कंकालानि ३ घण्टाः ३ इत्याद्युपकरण-  
 नि ॥ अथलिङ्गपुराणोक्तजीवच्छादपद्धतिः ॥ तत्रतावत्पुत्राद्याधिकाररहितः स्वीयंश्राद्धं कर्तुं भिक्षुभरणकाले समासन्ने कृष्णद्वंद्वश्यामुप-  
 वासं कृत्वा पर्वतेवानदीतीरे वनेदेवालयेवा गंधपर्णरसादिभिर्भूमिविधानि परीक्ष्य तत्रत्वननसंस्तुतवागुह्यमगोभयोपलेपनादिभिः शुद्धिसंपादय-  
 दश्यामुक्तस्थाने संभारानुपकल्पयेत् ॥ ततस्तद्देहेन प्राप्तं नद्यादिकेयथाविधिस्नात्वा शुक्लवासपीरिधाय संध्यादिनित्यकर्मसमाप्य मध्ये  
 पूजार्थं स्थण्डिलं कृत्वा तत्रालिंगतोभद्रसर्वतोभद्रवाविलिख्य तत्राग्निरिदं शिहस्तमानं चतुर्मुखं इमं तथा इषुमानं स्थण्डिलं कैकेयं कुर्यात् ॥  
 ततः स्वासनं शङ्खमुखं उपविश्य आचमनं प्राणायामं च कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्यामुक्तगोत्रस्यामुक्तशर्मणे भूमजीवाभिनः कर्त-  
 व्योद्धृदहिक्रियाभ्यामगोत्राभिव्यप्रेतविसृक्तिपूर्वकजीवनसुखार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं लिंगपुराणोक्तजीवच्छादविधिं करिष्ये-इति सं-  
 कल्प्य सुमुखश्चेत्यादिस्मरणपूर्वकगणेशनम्रहकुले देवानं पूज्य पुण्याहं स्मर्य अनंवाचयित्वा आचार्यादिवरणं च कृत्वा तान् वस्त्रादु-  
 लीयकदक्षिणाभिः स्तोत्रं कुंडे स्थण्डिले वा पंचभूसंस्कारानं संपाद्य तत्र त्वत्पुत्रोक्तविधानं प्रस्थापयेत् ततः पूजास्थण्डिलं यश्चिमतः प्राङ्-

सुखरूपविश्व्य ॐ अद्यजिवच्छ्रद्धांगभूतं ब्रह्मादिदेवस्थापनपूजनचक्रारण्ये-इतिसंकरुध्य पुष्पाण्यदायमंडलेब्रह्मादीन्स्थापयेत् ॥ (तत्र  
 मंत्राः) ॐ भूः ब्रह्मणेनमः ब्रह्माणंस्थापयामि ॥ १ ॥ ॐ भुवः विष्णवेनमः विष्णुंस्थापयामि ॥ २ ॥ ॐ स्वः रुद्रायनमः रुद्रंस्थापया  
 मि ॥ ३ ॥ एवंद्वितीयोद्देशेनसर्वत्र ॥ ॐ महः ईश्वरायनमः ॥ ४ ॥ ॐ जनः प्रकृतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐ तपः पुद्गलायनमः ॥ ६ ॥ ॐ  
 ऋतंपुरुषायनमः ॥ ७ ॥ ॐ सत्यंशिवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शर्व्वधरमिगोपाय ब्राणेगंधशर्व्वोयदेवायभूतनमः ॥ ९ ॥ ॐ शर्व्वधरमिगोपाय  
 ब्राणेगंधशर्व्वोयदेवस्य पत्न्यैभूतनमः ॥ १० ॥ ॐ भवजलंभेगोपायजिह्वायांसंभवायदेवायभुवननमः ॥ ११ ॥ ॐ भवजलंभेगोपायजिह्वायां  
 रसंभवस्यदेवस्यपत्न्यैभुवननमः ॥ १२ ॥ ॐ रुद्राग्निंभेगोपायनेत्ररूपं रुद्रायदेवायस्वनमः ॥ १३ ॥ ॐ रुद्राग्निंभेगोपायनेत्ररूपं रुद्रस्यदेव  
 स्यपत्न्यैस्वनमः ॥ १४ ॥ ॐ उग्रवांशुंभेगोपायत्वचिस्पशसुग्रायदेवायमहानमः ॥ १५ ॥ ॐ उग्रवांशुंभेगोपायत्वचिस्पशसुग्रास्यदेवस्य  
 पत्न्यैमहानमः ॥ १६ ॥ ॐ भीमसुपिंभेगोपायश्रोत्रशर्व्वंभीमायदेवायजननमः ॥ १७ ॥ ॐ भीमसुपिंभेगोपायश्रोत्रशर्व्वंभीमस्यदेव  
 स्यपत्न्यैजननमः ॥ १८ ॥ ॐ ईशरजोभेगोपाय द्रव्येतृष्णमीशायदेवायतपोनमः ॥ १९ ॥ ॐ ईशरजोभेगोपाय द्रव्येतृष्णमीशस्यदेव  
 स्यपत्न्यैतपोनमः ॥ २० ॥ ॐ महादेवं सत्यंभेगोपायश्रद्धांधर्ममहादेवाय ऋतनमः ॥ २१ ॥ ॐ महादेवसत्यंभेगोपायश्रद्धांधर्ममहादे  
 वस्यपत्न्यैऋतनमः ॥ २२ ॥ ॐ पशुपतेपाशभेगोपाय भोक्तृत्वंभोग्ये पशुपतयेदेवायसत्यंनमः ॥ २३ ॥ ॐ पशुपतेपाशभेगोपाय  
 भोक्तृत्वंभोग्ये पशुपतेदेवस्यपत्न्यैसत्यंनमः ॥ २४ ॥ ॐ शिवायसत्यंनमः शिवसत्यंस्थापयामि ॥ २५ ॥ एवंसंस्थाप्य ॐ मनोज्ञं त्रिजु  
 ष्ठामितिप्रतिपादकत्वा उत्तक्रमेणप्रत्येकम् ॐ ब्रह्मादिशिवसत्यंस्थापितदेवताभ्यानमः-इतितत्रेणवापोऽशोषचरैः संपृज्य ततः समा

चारान्मडलमध्ये ताप्रफलशयथाविधिसंस्थाप्य तत्रहमरुद्रपूजयेत् ॥ ततः अग्नःपरिस्तरणादिप्रक्षणेणयत्यंतयथाशाखंसमाप्य समिद्धतेमे  
 ग्नौघृतेन आचारावाज्यभागौहवा स्थंडिलेऽग्निंसंपृच्य समिक्करुचैतः पृथक्पात्रस्थैः पृथक्पृथक् होमंकुर्यात् ॥ (तत्रमंत्राः) ॐ भूब्रह्मणेस्वा  
 हाइंद्रब्रह्मणे ॥ १ ॥ ॐ भुवः विष्णवेस्वाहा इदं विष्णवे ॥ २ ॥ ॐ स्वः रुद्रायस्वाहा इंद्र रुद्राय ॥ ३ ॥ ॐ महः ईश्वरायस्वाहा इंद्रं ॥ ४ ॥  
 ॐ जनः प्रकृतयेस्वाहा इंद्रं ॥ ५ ॥ ॐ तपः पुद्गलायस्वाहा इंद्रं ॥ ६ ॥ ॐ ऋतं पुरुषायस्वाहा इंद्रं ॥ ७ ॥ ॐ सत्यं शिवायस्वाहा  
 इंद्रं ॥ ८ ॥ ॐ शर्वधर्मागोपायप्राणगेधं शर्वदेवायभूः स्वाहा इंद्र शर्वदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ शर्वधर्मागोपायप्राणगेधं शर्वस्यदे  
 वस्यपन्त्यैभूः स्वाहा इंद्र शर्वस्यदेवस्यपन्त्यै ॥ १० ॥ ॐ भवजलं मे गोपायजिह्वायारंसं भवायदेवायभुवःस्वाहा इंद्रं भवाय ॥ ११ ॥  
 ॐ भवजलं मे गोपायजिह्वायारंसं भवस्यदेवस्यपन्त्यैभुवःस्वाहा इंद्रं भवपन्त्यै ॥ १२ ॥ रुद्राग्निं मे गोपायनेत्ररूपं रुद्रायदेवायस्वःस्वाहा  
 इंद्रं रुद्राय ॥ १३ ॥ ॐ रुद्राग्निं मे गोपायनेत्ररूपं रुद्रस्यदेवस्य पन्त्यैस्वःस्वाहा इंद्रं रुद्रपन्त्यै ॥ १४ ॥ ॐ अग्रवायुं मे गोपायन्चिस्पशं  
 मुग्रायदेवायमहः स्वाहा इद्रमुग्राय ॥ १५ ॥ अग्रवायुं मे गोपायन्चिस्पशं मुग्रायदेवस्यपन्त्यैमहः इद्रमुग्राय ॥ १६ ॥ ॐ  
 भीमसुषिं मे गोपायश्रोत्रेशंद्रं भीमायदेवाय जनः स्वाहा इंद्रं भीमाय ॥ १७ ॥ ॐ भीमसुषिं मे गोपायश्रोत्रे शंद्रं भीमस्यदेवस्यपन्त्यैजनः  
 स्वाहा इंद्रं भीमपन्त्यै ॥ १८ ॥ ॐ ईशराजो मे गोपायद्व्येतृणां मिशायादेवायतपः स्वाहा इद्रमीशाय ॥ १९ ॥ ॐ ईशराजो मे गोपाय  
 द्व्येतृणां मिशायादेवस्यपन्त्यैतपः स्वाहा इद्रमीशपन्त्यै ॥ २० ॥ ॐ महादेवं सत्यं मे गोपायश्रद्धां धर्मं महादेवायकृतं स्वाहा इंद्रं महा  
 देवाय ॥ २१ ॥ ॐ महादेवं सत्यं मे गोपायश्रद्धां धर्मं महादेवस्यपन्त्यैकृतं स्वाहा इंद्रं महादेवस्यपन्त्यै ॥ २२ ॥ ॐ अणुपतेपाशं मे

गोपाय भोक्तृत्वभोग्येपशुपतये देवायसत्यं स्वाहा इदं पशुपतये ॥ २३ ॥ अ०पशुपतेपाशमोगोपायभोक्तृत्वं भोग्येपशुपतेदेवस्य  
 पत्न्यैसत्यं स्वाहा इदं पशुपतेः पत्न्यै ॥ २४ ॥ अ०शिवायसत्यं स्वाहा इदं शिवायसत्यम् ॥ २५ ॥ अ०शिवस्यपत्न्यै स्वाहा इदं शिव  
 स्यपत्न्यै ॥ २६ ॥ इत्येतैः पञ्चशतमन्त्रहुत्वा पुनः संहारक्रमेण अस्य शिवायेत्यादिब्रह्मणस्वाहा इत्यतमष्टौ तथा पशुपतिपत्न्यादि  
 सर्वान्तमुक्तक्रमेणसंपूज्यधृतचरुसामिक्तमात्रत्यैकं होतव्यम् ॥ ततः केवलनवतेन अश्वर्षगमिछिन्धि प्राणगंधंछिन्धि मेऽवजहिभूः  
 स्वाहा ॥ १ ॥ अ०भवजलमेछिन्धि जिह्वायांसं छिन्धिमेऽवजहिभूवः स्वाहा ॥ २ ॥ अ० रुद्र आग्नेमेछिन्धेनत्ररूपंछिन्धिमेऽवजहिस्वः  
 स्वाहा ॥ ३ ॥ अ० अवयुमे छिन्धित्वचिस्पशं छिन्धिमेऽवजहि भूभुवः स्वः स्वाहा ॥ ४ ॥ एतैश्चतुर्भिर्मन्त्रैः सहस्रपंचशतंवाद्योत्तरशतं  
 जुहुयात् ॥ ततः आज्येनैव अ० प्राणेनिविद्योऽमृतं जुहोमिशिवोमिवाविशाप्रदाहायप्राणायस्वाहा ॥ १ ॥ अ० प्राणाधिपतयेरुद्रायपृषात  
 कायस्वाहा ॥ २ ॥ अ०भूः स्वाहा ॥ ३ ॥ अ०भुवः स्वाहा ॥ ४ ॥ अ० भूभुवः स्वः स्वाहा ॥ ५ ॥ अ० भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ ६ ॥ एतैः षण्मन्त्रै  
 रद्योत्तरशतहुतीजुहुयात् ॥ एवं सप्ताहंन्यहं यथोक्तंहुत्वास्वद्योक्तस्विष्टकृदादिपूणहुत्यंतकर्मसमाप्य सप्तमेऽहनि विप्रान्निभ्यं ॥  
 शर्वं १ भव० २ रुद्र० ३ इन्द्र० ४ भीम० ५ ईशान० ६ महादेव ७ पशुपात० ८ इत्यभ्योऽष्टौपिण्डान्दत्त्वा निमंत्रितानद्यौब्राह्मणञ्चूढार्हान्भोज  
 यित्वा वस्त्राभरणवाहनशयनकास्यासनभाजनसुवर्णरजतधेनुतिलक्षेत्रहृदासीदासदक्षिणादिभिः संतोष्य ब्राह्मणसहस्रसदक्षिणं भोज  
 येत् ॥ दिनत्रयंरुद्रस्यबहुचरुनिवेदनम् ॥ एवंकृतेजनिमुक्तः स्यात् ॥ इति लिङ्गपुराणोक्तजीवच्छूद्रपद्धतिः ॥ इतिश्रीबीकाने  
 राज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनगरनिवासिना  
 श्रीयविसिष्टकुलोद्भवश्रीरामकृष्णपौत्रेणश्रीकस्तूरिचन्द्रसूनुनाश्रीमहादेवभक्तमाध्यंदिनवाजसने  
 यिनापंडितगौडश्रीचतुर्थालालशर्मणा विगचिते गौडायश्राद्धप्रकाशे महानिबन्धेपद्धतिसंग्रहे पद्यप्रकरणं समाप्तम् ॥ ६ ॥ ॥ ४४ ॥



स्थानिपतिशिरसः अपगतप्राणस्यमुले नासिकाद्वये चक्षुर्द्वयेश्चात्रद्वयेष्वपरत्नानि स्वर्णशकलानिवाघृतविन्दुन्दिशत्वा दर्भवत्याम्भो तिला  
 निर्वकीर्य तत्रोद्विच्छसंस्वापयेत् ॥ ततः प्राणोत्क्रमणानन्तरं पुत्रादयो यथाचारं स्वपनंकारयित्वा स्नात्वा नववस्त्रैकदेशपरिधाय तदे  
 कदेशमुत्तरीयकृत्वा प्रतं पुनःस्नापयित्वा वाससाच्छाद्य पुष्पाद्यैरलंकृत्य चितायामुत्तानंदक्षिणशिरसं शवंस्थापयेत् ॥ अथपिण्डदानप्र  
 योगः ॥ पुत्रादिरपसव्येन वामजान्वाच्य भृतदक्षिणपार्श्वदक्षिणाभिमुख उपविश्य ॥ अद्यामुक्त्रोगोत्रस्यामुक्त्रेतस्येतत्त्वनिवृत्तिपूर्वकमुत्तम  
 लोकप्राप्त्यर्थमौर्व्वदेहिककर्म करिष्ये-इतिसंकल्प्य दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीयावनेज्य ॥ अद्यामुक्त्रोगोत्रामुक्त्रेत मृत्तिस्यनेशव  
 निमित्तक ( ब्रह्मदेवतोवा ) एतोपिण्डोभयादीयते तत्रोपतिष्ठतामित्येकपिण्डमातिलं पितृतोथेनदत्त्वा गृहद्वारानयेत् ॥ तत्र अद्यामुक्  
 गोत्राष्टुक्प्रेत द्वारदेशे पांथानिमित्तक ( विष्णुदेवतोवा ) एतोपिण्डोभयादीयते तत्रोपतिष्ठतामिति पिण्डं दत्त्वा पुत्रादयो बालपुरःसरा  
 लौकिकार्तिं पिण्डादिकं च गृहीत्वा शवं प्रच्छादितमूलं प्राक्छिरसमूर्ध्वमुखं पुरदक्षिणद्वारेणारण्येश्मशानदेशं प्रतिनयेयुः ॥ ततोऽग्निरभम  
 शानयोर्मध्ये विश्रामे ॥ अद्यामुक्त्रोगोत्रामुक्त्रेत विश्रान्तौ भूतनिमित्तक ( रुद्रदेवतोवा ) एतोपिण्डोभयादीयते तत्रोपतिष्ठतामिति विश्राम  
 पिण्डं दद्यात् ॥ ततः सर्वे बांधवा बृहदादयः प्रेतमनुगच्छेयुः ॥ अथ श्मशानदेशं प्राप्य शुचिदेशे शनैर्दक्षिणशिरसं शवं स्थाप्य चिता  
 स्थाने कुशत्रयोपरि अमुक्त्रोत्र अमुक्त्रेत चितास्थाने वायुनिमित्तक ( यमदेवतोवा ) एतोपिण्डोभयादीयते तत्रोपतिष्ठतामिति पिण्डं दद्यात् ॥  
 ततः खननसंस्थानादिना भूमिं संशोध्य गोमयं नोपलिप्य तत्र यज्ञियकाष्ठैर्दहनपर्याप्तं दक्षिणोत्तरागतं दारुचयं कृत्वा चिताकाष्ठं

१ अत्र चत्वारो खेचरानिमित्तपिण्डदानं यथावाच्यम् ।



जलेनप्राप्तस्य तत्र दक्षिणशिरसं सर्वस्वसुत्तानमुत्वं श्रवचितौ निदध्यात् ॥ ततः शिरःप्रदेशं शुद्धमदुर्वोदिकृत्वा पंचसंस्कारान्संपाद्य तत्रक्रव्यादसंज्ञकमार्थिप्रज्वाल्य ॥ क्रव्यादायनमः इतिगंधमाख्यादिभिः संपूज्य ॥ त्वंभूतभृजगद्योनिस्त्वं भूतपरिपालकः ॥ मृतः संसारिकस्तस्मादेनं त्वंस्वर्गातिनय ॥ १ ॥ इतिप्रार्थ्य श्वहस्ते साधकनाम्ना पिण्डदद्यात् ॥ अमुकगोत्रासुक्रप्रेत श्वहस्ते साधक निमित्तक एते पिण्डो मयादीयतेतवोपतिष्ठतामिति दद्यात् ॥ ततः पुत्रादिर्यथाचारं बहुलतृणान्हीत्वा अग्नौप्रज्वाल्य प्रदक्षिणंपरि क्रम्य ॥ कृत्वातुदुष्कृतं कर्म जानतावाप्यजानता ॥ मृत्युकालवशाप्राप्य नरंपंचत्वमागतम् ॥ १॥ धर्मार्थमसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम् ॥ देहयसर्वगात्राणि दिव्यौल्लोकांसगच्छतु ॥ २॥ इतिमंत्रद्वयंनशिरःस्थानेऽर्पिंदद्यात् ततोर्थेदग्ने आंग्यंहुतिदत्त्वासजलकुंभमादायपदतोऽप्रदक्षिणंत्रिःपरिक्रम्ययथाचारमश्मनाकुम्भंभित्त्वा ॥ अनेवक्षमाणा बालपुरःसराःस्नानार्थनद्यादिकेगच्छेयुः ॥ तत्रोदकसमीपंगत्वापूर्वधृतं वस्त्रंक्षाल्यपुनःपरिधायवमानामिकयाजलमालोदयधृद्वाद्याःस्नात्वाशु द्वाससमीपिधाय सवेधेन चभ्याऽपसवेधेनजले पापणपुत्रेनाशु चित्तिरेशेदक्षिणशक्रशत्रयोपरि ऋजुदर्भतिलपूर्णजलिना पितृतीर्थेन अमुकगोत्रासुक्रप्रेतपतिलतोयाञ्जलिस्तेमयादीयतेतवोपतिष्ठतामिति सर्वदक्षिणमुवाः संस्क्रुद्विदशवादयुः ॥ ततःसव्यंकृत्वा आचम्यजलाशयादुत्तीर्थस्नानवस्त्रान्निर्णीड्य शुचौदेशाद्वूलवयुपविष्टा न्सापिण्डानन्येमुहद इतिहासपुणादिविविधकथाभिःसंसारऽनित्यतं दर्शयेयुः ॥ ततःपश्चादमवलोकयेतोऽधोमुखा बालानग्रतःकृत्वा यमं

१ किरःस्फोटनानंतरं तिलपिण्डाद्यामिति । २ हेमाद्रिविष्णुपुण्यपत्रोः--सापिण्डकण्ठपावहकुम्भैः पितृक्रिया । सापिण्डकः रणादृर्ध्वं द्विगुणविविधवेदेति । ३ एकमा रं त्रिवाखा दशगणमथापिवा-इतिहासकृत । ४ अदहर्हर्नयमानो गामन्धं पुनर्पश्यतु । वैवस्वतो न तृप्येन सुखा इव दुर्भागिति ।

गार्गायन्तःपंक्तिभूताग्रामं प्रयायाति ॥ ततो गृहद्वारसमीपे स्थित्वा निबपत्राणि दत्तौ विदश्याचम्य गोमयमर्षपवृषाबुधवाग्नीनालभ्य पादेन  
 पापाणामाक्रम्य गृहं प्रविश्युः वृद्धाः श्लोकाणोदनं कुर्युः ॥ इति दाहविधिः ॥ अथ सूर्यास्तमयादूर्ध्वरात्रावन्तरिक्षे चतुष्पथेश्मशाने वा त्रिका  
 ष्टिकायोमकस्मिन् राक्षसेभ्यो पात्रे उदकं द्वितीये क्षीरं च निधाय अपसव्येन दक्षिणमुख उपविश्य ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य आप्यायनार्थं  
 तापोपशमनार्थं चाकाशे मृन्मयपात्रे क्षीरद्वयोर्निधानं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ श्मशानानलदग्नासि परित्यक्तो सिवाध्वैः ॥ इदं नीरमिदं  
 क्षीरमत्र स्नाहिदं पिब ॥ १ ॥ इति पठित्वा ॥ अमुकगोत्रा मुकप्रेत अनेन जलेन स्नाहि इदं क्षीरं पिब इति निवेदयेत् ॥ एतत्क्षीरो दक्षिणनिधानमेकाहं  
 वा दिनत्रयं वा दशाहं यथाचारं प्रत्यहं रात्रौ कर्तव्यम् ॥ ततः त्र्यहमुपवासः क्रीतलब्ध्याशनं वा अथ शय्यासनं सर्वेषां यावदशौचम् ॥ इच्छया  
 प्रथमादि दशाहपर्यंतं कुटुंबैः सह भोजनं तच्च दिव्ये ॥ बहिः प्रेताय दीपो देयः ॥ इति दाहप्रकरणम् ॥ अथाऽस्थिसंचयनम् ॥ तच्च प्रथमतः तीयच  
 तुर्थसप्तमनवमेषु भौमाकर्मं दत्तिथिषु भौमैकपादद्विपादत्रिपादकर्तुं नक्षत्रघनिष्ठादिपंचक्रवर्जदिनेषु कार्यम् ॥ शुद्धाणां विशेषतो दशमे हि ॥ तत्र प्रयो  
 गः ॥ श्राद्धदिने सामग्रीं संपाद्य श्मशानसमीपे गत्वा शुचिभूमौ श्राद्धस्थानं प्रकल्प्य गोमयादकेन प्राक्ष्य गौरमृत्तिकायाच्छाद्य तिलैर्विकीरेत् ततो न  
 द्यादिकैस्सन्त्वा स्वासने उपविश्य कुशपवित्रादिघातं कृत्वा आचम्य 'पुण्डरीकाक्षाय नमः' - इति श्राद्धसामग्रीं स्वात्मानं च प्रोक्षेत् ॥ ततो  
 देशकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन) अमुकगोत्रस्याऽमुकप्रेतस्य प्रेतत्वं निवृत्त्या उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं मस्त्यिसंचयनश्राद्धं करिष्ये - इत्युक्त्वा  
 दक्षिणामुखां वा मज्जुनिपात्य कुशचटं निधाय ॥ इह लोकं परित्यज्य गतो मम परमांगतिम् ॥ मननावायुरूपेण च देवाहं नियोजये ॥ १ ॥ इति  
 निमन्त्रयेत् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अमुकगोत्रा मुकप्रेत इदं मामनेते मया दीयते तेषां षिट्वा मित्या समनृकुत्रय रूपमनुत्



दक्षिणायां जलधारां दद्यात् ॥ ततः पिण्डमुत्थाप्य पात्रे निधाय दक्षिणाद्रव्यं कुशत्रयादीनि चादाय अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य कृतं तदस्थि संचयनि  
 मित्तकश्चाद्वप्रतिष्ठार्थं मिदं जतंतं मूल्योपकारि पतं वा द्रव्यममुकब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमर्हमुत्तुजे - इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ततः कर्मपूर्तिं का  
 मो विष्णुं स्मृत्वा श्राद्धवस्तूनि विप्राय प्रतिपादय जले वा क्षिपेत् ॥ पिण्डादिकं गवादिभ्यो दद्यात् ॥ इति श्राद्धप्रयोगः ॥ एवं श्राद्धविधाय गंधपुष्प  
 धूपदीपनैवेद्यादिकं गृहीत्वा श्मशानसमीपमागत्य चिताया उत्तरत उपविश्य ॥ क्रव्यादुसुखेभ्यो देवभ्यो नमः इति मंत्रेण श्मशानवासि देवा  
 न्गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिभिः श्मशाने नृजयेत् ॥ ततो बलिदानं - गंधपुष्पाद्या चित्तमाभावा बलिगृहीत्वा ॥ येऽस्मिञ्छ्मशाने देवाः स्युर्भगवतः स  
 नतनाः । तेऽस्मत्सकाशाद्गृह्णंतु बलिमष्टांगमक्षयम् । प्रतस्त्यास्य शुभलोकान् ग्रयच्छंतु च शाश्वतान् ॥ अस्माकमाशुरारोग्यं सुखं च ददातु । अस्म  
 इति पठित्वा एषोऽष्टाङ्गबलिः शंकरादि श्मशानवासि देवताभ्यां नमः - इत्येकं बलिं दत्त्वा एवं प्रादक्षिण्यक्रमेणाऽपरं बलित्रयं पूर्वादिषु त्रिपुद्गारेषु  
 दद्यात् ॥ ततस्तान्बलीन्क्षीरेणाभ्युक्ष्य शंकरादि देवताः स्वीयं स्वीयं स्थानं गच्छंतु - इति विमृज्य ततोऽपमस्य कृत्वा स दुग्धजलेन चितिं प्रादक्ष्य  
 पलाशशालया चितेर्भस्मापेक्षाद्गुह्यकनिष्ठक्राभ्यां शिगमः उरसः पाण्याः पार्श्वयोः पादयोः रस्थीन्यादाय पंचगव्येन प्रादक्ष्य गंगोदकेन मथारस्य  
 गंधाद्या चितानि क्षौमवस्त्रेण वेष्ट्य मृन्मयेन वकुभे निधाय शरावणे पिधाय वने वृक्षमूले वा मूमानि स्वाय भस्मन द्यादितो ये क्षिप्वा चितिं देशे भिक्षु  
 त्वा गोमयेन विलिप्य तत्र प्रवृत्ताः स्युः पुजयित्वा बलिमंत्रेण आभावा बलिचतुष्टयं दद्यात् ॥ तान्क्षीरेणाभ्युक्ष्य धिमजयेत् । ततो गृहमागत्य भ्य

१ अत्र अक्षयुर्गणे पिण्डत्रयं दातुं शक्यं । अत्र नो । १५ वत् अतोपरं तु मध्यमम् ॥ एतेभिः पलाशैश्च न्यादा । तस्य भद्रादिति ।

चैलेबधुभिः स्नायात् ॥ शिष्टान्यस्थीनिगंगायाक्षिपेत् ॥ तत्रकारः-कदाचित्तिदिवेवाप्रुनादिरस्थिकुं भृशंहीत्वा तान्यस्थीनिपंचगव्येन प्रक्षाल्य हिरण्यमुक्ताह्वयप्रवालमध्वाज्यतिलःसर्पोज्य मृतसुटेनिधाय तीर्थात्वास्नात्वा दक्षिणादिशपथ्यन्नमोस्तुयमाय इतिजलंप्रविश्य समेप्रीतोऽस्तु इतिगंगायाक्षिप्त्वा स्नात्वा मूयनमस्कृत्य विप्रभ्योदक्षिणादंत्वा गृहमागत्य यथाचारंश्राद्धतर्पणब्राह्मणभोजनादिकुर्यात् ॥ एवं कृते प्रेतक्रियाकर्त्रेऽश्वस्वर्गः स्यात् ॥ इत्यस्थिसंचयनम् ॥ अथदशगात्रश्राद्धानि ॥ तत्रप्रयोगः ॥ पुत्रादिग्रामाद्बहिर्देवतायतनेवानद्यादितोवा गृहद्वारिगुचिदेशेयथाचारंप्रतस्यमृदोदिनिष्पत्यथपिण्डदानंकुर्यात् ॥ तत्रादौनद्यादिकेस्नात्वा दूतनमृन्मयभांडेनजलमानीयश्राद्धस्थाने गत्वा पवित्रपरिधाय आचम्य शुचिभूमौपिण्डदानस्थानादेशान्यादिशि अग्निप्रज्वाल्य तत्रैतजमेवामृन्मयेतंडुलाज्जपयेत्वा अपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुत्स उपविश्य पातितवामजानुगारमृत्तिकायापिण्डार्थदक्षिणपुर्वस्थाननिर्मायगोमयादेकेनोपलिप्य तत्रदक्षिणग्रंथुरत्रयास्तारं णंकुर्यात् ॥ ततःपत्रपुटकेजलतिलगंधपुष्पाणिप्रक्षिप्य तत्पुटकं गृहीत्वा अमुकगोत्रासुकप्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्षेप्य मयादीयेतवोपतिष्ठतामिति कुशत्रयोपरि किंचिजलंपितृतीर्थेन दद्यात् ॥ ततश्चरुणा अथवासक्तुनावीयवचूनेन तिलघृतमधुगुग्गुशर्कराधुतकं पितृयमात्रं पिण्डं कृत्वा कुशत्रयादीनि पिण्डं चादाय ॥ अमुकगोत्रासुकप्रेत शिरःपूरकरणप्रथमः पिण्डस्तेमयादीयेतवोपतिष्ठतामिति वा मान्वास्वदक्षिण करेण पितृतीर्थेन कुशोपाशपिण्डं दद्यात् ॥ ततः प्रायवनेजनदानम् ॥ अमुकं प्रेत शिरःपूरकप्रथमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्षेप्य

१ दशहोम्यन्तरं यस्य गंगातीरेष्य मज्जति । गंगायां मरणं यादत्ता हस्तफलभाष्यादिति गण्डात् । २ हेमाद्रौ-पितृशब्दं स्वर्गां चैव न प्रयुजीत कर्हिचित्ताडपतिष्ठतमय पिण्डः प्रेषायति समुज्जेत् ॥ तूर्णं वृषं भोके च दीपं पुष्पं तथैव च ॥ अनुष्टुप्छन्दःपुष्पेषु इदं दद्यान्न संशय इति ॥ ३ अस्थिसंचयनादूर्ध्वं दशगात्रं समाचरेदिति गण्डात् ।

तेमयादीयेतवोपतिष्ठतामिति पिण्डोपापपूर्वदद्यात् ॥ ततः प्रेतमुद्दिश्य तूष्णीमेवोष्णसूत्रगन्धधूपजपुष्पधूपदीपतांबूलानि पिण्डे दत्त्वा ॥ अमुकगोत्रप्रेतशिरः पूरकप्रथमपिण्डे एतान्यूष्णसूत्रगन्धधूपदीपतांबूलपूगीफलानि तेमयादीयेतवोपतिष्ठतामिच्छुत्सृजेत् ॥ ततः पिण्डस्थार्चनविधेः परिपूर्णतास्तु ॥ ततः पात्रे जलदुग्धतिलगन्धपुष्पाणि कृत्वा ॥ अमुकगोत्रे ० प्रेत शिरः पूरकप्रथमपिण्डे एष तिल तोयांजलिस्तेमयादीयेतवोपतिष्ठतामित्येकं त्रयं वा दशकंजलजलिपिण्डोपापदद्यात् ॥ ततस्तिलतोयपूर्णपुटकं पिण्डसमीपे धृत्वा ॥ अमुकगोत्रे ० प्रेत शिरः पूरकप्रथमप्राद्वे एतत्ते तिलतोयपात्रमयादीयेतवोपतिष्ठतामित्येकं दद्यात् ॥ ततः अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ १ ॥ अतस्मिं पुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतमोघनमस्यतिगां विदं न ते पाविद्यते भयम् ॥ २ ॥ इति प्राश्रये कोकभ्यो बलिं दद्यात् ॥ काकोसियमदूतोसि गृहाण बलिमुत्तमम् ॥ यमद्वारं गते प्रेते तमाप्यायितुमर्हसि ॥ १ ॥ ततः पिण्डं जलक्षिपेद्देवादद्याद्वायसान्वाखादयेत् ॥ ततः स्नात्वा गृहमागत्य गोप्रांसं दत्त्वा निरामिपमेकवारं भक्षयेत् ॥ इति प्रथमदिनकर्म ॥ एवमेव द्वितीयादिदिवसेषु द्वितीयादिपिण्डदानम् ॥ तत्र विशेषः ॥ द्वितीयदिने—अमुकगोत्रप्रेत कर्णाक्षिनासिकापरको द्वितीयः पिण्डस्तेमयादीयेतवोपतिष्ठताम् ॥ अमुकप्रेत द्वितीयदिने—द्वे तिलतोयाञ्जलिद्वे तिलतोयपात्रे च तेमयादीयेतवोपतिष्ठतामिति दद्यात् ॥ २ ॥ तृतीयदिने—गलांसभुजवक्षः पूरकस्तृतीयः पिण्डस्तेमयादीयेतवोपतिष्ठताम् ॥ अमुकप्रेत तृतीयदिने त्रयस्तिलतोयाञ्जल्यस्त्रिणि तिलतोयपात्राणि च तेमयादीयेतवोपतिष्ठताम् ॥ ३ ॥

१ मृतश्च अस्मादभ्युपगच्छतः सन्नतोपि वा ॥ पायसेन गुण्डेनापि पिण्डान्दद्याद्दशकमात्रा ॥ एकदशं द्वादशं च वृणोत्सर्गविधिं विना ॥ महदानं विहं च पांगण्डे कृत्यमाचरेत् ॥ जीवमानं च पितरि न पांगण्डे मापिण्डनम् ॥ अतस्तस्य द्वादशाहं न्येकोद्दिष्टं समाचरेदिति गारुडात् ॥

चतुर्थदिने नाभिलिङ्गदुर्भूकश्चतुर्थः पिण्डस्ते मयादीयते० ॥ चत्वारस्तिलतोयाञ्जलयः चत्वारितिलतोयापात्राणि च ते मया दीयन्तं वोप  
 तिष्ठतामिति ॥ ४ ॥ पंचमदिने जानुजं वा पादपूरकः पञ्चमः पिण्डस्ते मया दीयते० ॥ पंचतिलतोयापात्राणि च ते मया दी-  
 यन्ते० ॥ ५ ॥ षष्ठदिने सर्वमर्मपूरकः षष्ठः पिण्डस्ते मया दीयते० ॥ षट् तिलतोयाञ्जलयः षट् तिलतोयापात्राणि च ते मया दीयन्ते० ॥ ६ ॥ सप्तमदिने  
 सर्वनाडीपूरकः सप्तमः पिण्डस्ते मया दीयते० ॥ सप्ततिलतोयाञ्जलयः सप्ततिलतोयापात्राणि च ते मया दीयन्ते० ॥ ७ ॥ अष्टमदिने दन्तलोमादिपूरकोऽ-  
 ष्टमः पिण्डस्ते मया दीयते० ॥ अष्टौ तिलतोयाञ्जलयः अष्टौ तिलतोयापात्राणि च ते मया दीयन्ते० ॥ ८ ॥ नवमदिने वीर्यपूरको नवमः पिण्डस्ते  
 मया दीयते० ॥ नवतिलतोयाञ्जलयः नवतिलतोयापात्राणि च ते मया दीयन्ते० ॥ ९ ॥ दशमदिने असुकगोत्रे तक्षुत्पिपासापूरको दशमः पिण्डस्ते  
 मया दीयते वोपतिष्ठताम् ॥ अमुकग्रेते० दशतिलतोयाञ्जलयः स्ते मया दीयन्ते० ॥ १० ॥ अन्यथा स्मृतौ दिनत्रयवापि पिण्डानं कार्यं न्यहोशौ चतुर्थमदिनसत्रां निपण्डान्द्वितीयदिने चतुरस्तुतीयदि-  
 ने त्रिपिण्डान्द्व्यात् ॥ ११ ॥ सद्यः आशौचश्चेत्तु एकस्मिन्नेव दिने दशपिण्डान्द्व्यात् ॥ येन द्रव्येण प्रथमपिण्डो दत्तस्तत्सजातिर्येनैव पिण्डान्तर्दद्या-  
 त् ॥ येन पुत्रादिना प्रथमः पिण्डो दत्तः स एव पिण्डान्तरमपि दद्यात् ॥ अत्र केचिन्नेव श्राद्धं विषमदिवसे दशाहमध्यं कुर्वन्त तत्राधिकं फलं भवति ॥ अ-  
 करणेन प्रत्यवायो नास्ति ॥ इच्छा चेत्कर्तव्यम् ॥ विधितुं पुत्रवत् ॥ इति दशगात्रश्राद्धनि ॥ अथाशौचान्तिदिनद्वयम् ॥ तत्र प्रेतस्मृदुषासां स्यान्नामा  
 श्रितानां च दत्त्वा मृन्मया पाकभांडादीनि च त्र्यम्बाह्नुद्विधाय के शलोमनस्यान्यथा चारं पायित्वा सर्पपक्वकेन तिलमलकैर्वा शिरश्चोन्मु-  
 ल्यं शुद्धजलेन स्नानं च कृत्वा वा सोऽयुगं परिधाय आचम्य वाग्यते तद्वृषभां सुवर्णगोरानं दधे धिदूषां च स्पृष्ट्वा शुद्धायांसि स्पर्शय शुद्धो भवेत् ॥ अथैका

दशहदिनकर्म। तत्रावाच्छृणां वृषोत्सर्गः ॥ तस्य प्रयागः ॥ प्रागुदकप्रवणे विविक्षे निजनेवने गोमध्वे वत्सरी चतुष्टयेन द्वाभ्यामेकेन वा सहितं त्रि-  
 हायनं सर्वलक्षणविशिष्टवृषसम-त्यकिं किणी वंटाहेमपाटिकादिभिर्धूपयित्वा तत्रानयेत् ॥ तत आचम्य पूर्वाभिमुखः कुशत्रयतिलजलान्या-  
 दयदेशकालौसकीर्त्य ॥ अथैकादशे हि अमुकगोत्रस्यामुकप्रतस्य प्रतच निवृत्त्यथस्वर्गलोकाप्रार्थं वृषोत्सर्गकरीष्ये-इति संकल्प्य ऐशा-  
 न्यांकलशं संस्थाप्य तत्राग्नं रुद्रनिधाय नाममंत्रेणोदशोपचारैः संपूज्य अग्निं स्थापयेत् ॥ ततो हस्ते पुष्पचंदनतंबूलवासंस्यादाय देश-  
 कालौसकीर्त्यं अथ कर्त्तव्यवृषोत्सर्गागभूतहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणभेभिः पुष्पचन्द-  
 नतंबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहंवृणे ॥ वृत्तोऽस्मीति प्रातिवचनम् ॥ इति ब्रह्माणंवृत्त्वा एवमेव होतारं वृणुयात् ॥ ततो होता हस्तमात्रं चतुस्त्र-  
 स्थण्डिलं कृत्वा कुशैः परिसमुह्य तानैशान्यापरित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य क्षुद्रमूलेन मध्ये प्रागप्रदेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरु-  
 ह्नित्य अनामिकां गुष्टाभ्याममुदमुदृत्य ऐशान्यां शिखा तं देशं जलेन अभ्युक्ष्य तत्र वृज्ज्वाकां स्य पात्रस्थमाग्निं स्थापयेत् ॥ ततोऽग्नेर्दक्षि-  
 णतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानां स्तीर्य ब्रह्माणमाग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय अत्र त्वमे ब्रह्मा भव इत्यभिधाय ब्राह्मणं तदभावे  
 कुशनिर्भिंतं कल्पितासने उपवेशयेत् ॥ ततः प्रणीतापात्रजलेनापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्माणमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निध्यात् ॥  
 ततः प्रागग्रैश्चतुर्भिर्दक्षैः आग्नेयादीशानां तं ब्रह्माणमाग्निपर्यंतं नैर्ऋत्या द्राघव्यान्तमाग्निः प्रणीतापर्यंतं क्रमेण अग्नेः परित्तरणं कृत्वा  
 अग्नेः पश्चिमादिशि पवित्रच्छेदनाथं कुशत्रयम् ३ पवित्रार्थं साम्नमन्तर्गभं कुशपत्रद्वयम् २ प्रोक्षणीपात्रम् ज्यस्थाली आचरुस्थाली समाजने

१ (हेमाद्रौ) एकादशाहे प्रेतस्य यस्य नात्स्यज्यते वृषः । पिशाचत्वं स्थिरं तस्य दत्तः श्राद्धशतगपि इति ।



कुशत्रयमुपयमनकुशत्रयंसमिधस्तिस्रः भुव आज्यगव्यंतडुलान्दुग्धं तण्डुलपिष्टं तण्डुलाद्यान्नपूर्णपात्रं दक्षिणांच पवित्रच्छेदनकुशान्  
 पूर्वदिशि क्रमेणसादनीयम् ॥ ततः कुशपत्रद्वयमादाय अग्रतः २ प्रादेशमात्रप्रमाप्य कुशत्रयेणच्छित्त्वा पवित्राभ्यां प्रणीतोदकमुत्पूय  
 प्रणीतोदकत्रिशोक्षण्यानिधाय प्रोक्षणदुकंभूमौत्रिःक्षिवापवित्रे प्रोक्षण्यानिधाय प्रणीतोदकेनप्रोक्षणीप्रोक्षणं प्रोक्षणीजलेनसादित  
 वस्तुसेचनमग्निप्रणीतयोर्मध्यप्रोक्षणीपात्रनिधाय आज्यस्यात्यामाज्यनिरूप्य चरुस्याख्यांतण्डुलान्निक्षिप्य प्रणीतोदकेनतान्निप्र  
 क्षाल्य तत्रप्रणीतोदकदुग्धंचप्रक्षिप्य आज्यपायसापिष्टचरुचक्रपणार्थं दुग्धदग्नानिधाय तृणप्रज्जाल्य प्रदक्षिणमाज्यचव्यैः समंतद्भा  
 मयित्वा वह्नौतत्रक्षिप्य दक्षिणहस्तेनश्रुवमादायाधोमुखमग्नौतापयित्वा सव्येपाणौकृत्वा दक्षिणहस्तेन समार्जनकुशानामश्रयं  
 ध्यैर्मध्यमूलमूलंश्रुवसमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनःप्रतप्य भुवंदक्षिणतोनिदध्यात् ॥ ततः स्वयमाज्यंचरुच उद्भास्य स्वपुरतः  
 आज्यं तदुत्तरतश्चरुनिधाय आज्यंप्रोक्षणीवदुत्पूयावेक्ष्य सत्यपद्रव्येतन्निरसनम् ॥ पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् ॥ ततउत्थाय उपयमनकुशा  
 न्वामहस्तेकृत्वा प्रजापतिमनसाध्यात्वा तूष्णीमग्नौधृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत् ॥ तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेनान्निपुं  
 क्ष्य प्रणीतापात्रेपवित्रेनिधाय पातितदक्षिणजानुः कुशाग्रणब्रह्मणान्वारब्धः सुसमिद्धेऽग्नौ आज्येनजुहुयात् ॥ तत्र ब्राह्मणद्वारातूर्णोहोमः॥  
 इहरतिः स्वाहा इदमग्नये १ इहमध्वंस्वाहा इदमग्नय २ इहधृतिः स्वाहा इदमग्नये ३ इहस्वधृतिःस्वाहा इदमग्नये ४ अग्नयेस्वाहा  
 इदं ५ अग्नयेस्वाहा इदं ६ इतिपठ् कृत्वा ॥ प्रजापतये स्वाहा इदं १ इद्राय ० इदं २ अग्नये ० इदं ३ सोमाय ० इदं ४ इत्या  
 घारावाज्यभागैचहत्वा पायसंतंडुलपैषंचादाय संस्रवाविनैव जुहुयात् ॥ अग्नयेस्वाहा इदं १ रुद्राय ० इदं २ शर्वाय ० इदं ३ पशुप

तथे० इदं० ४ उग्राय० इदं० ५ अशनये० इदं० ६ भवाय० इदं० ७ महादेवाय० इदं० ८ ईशानाय स्वाहा इदमीशानाय ९ इति हुत्वा  
पिष्टकेन पूणे स्वाहा इदंपूणे १ ततः पायसपिष्टकाभ्याम् अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृते इति जुहुयात् ॥ तत  
आज्येन अग्नये० इदं० १ वायवे० इदं० २ सूर्याय० इदं० ३ अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा इदं० ४ अग्नये० इदं० ५ वरुणा  
दिभ्यः स्वाहा इदं० ६ वरुणाय० इदं० ७ प्रजापतये० इदं० ८ इति मनसा हुत्वा स्थंडिलपरितो दिक्पालेभ्यो माषभक्तवलीन्द्रयात् ॥  
अत्र पूणाहुति होमो विहि होमश्च कृताऽकृतः ॥ ततो भस्मवदं संस्रवश्राशनमाचमनं च कृत्वा प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य पवित्रे अग्नाप्रक्षिप्य ऐशा  
न्यां प्रणीतां न्युजि कुर्यात् ॥ ततो ब्रह्मणे पर्णपात्रदानं ब्रह्मप्रथिविभोक्त्र्य ॥ ततो होत्रे सुवर्णदक्षिणां दत्त्वा रुद्रं नमस्कृत्य दक्षिणपार्श्वे त्रिशू  
लेन परस्मिन्श्च्रेण व्यत्ययेन वा यथाचारं कुंकुमेन वृषपं कथित्वा लोहकारमाहूय चिह्नयेत् ॥ ततो वरसतरीसहितं वृषभं स्नापयित्वा  
लोहवटानुपुरकनकपाटिकादिभिः सर्वानलंकृत्य ग्रणभ्य वृषभस्य दक्षिणकर्णे नृषोहि भगवान्धर्मश्चतुष्पादः प्रकीर्तितः ॥ वृणो मितमहं  
भक्त्या समारंक्षतु सर्वदा ॥ १ ॥ इति जपित्वा उदङ्मुखः (सव्येन) वृषपुच्छं गृहीत्वा ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्यैकादशे ह्नि  
काशयपगोत्रस्यामुकप्रतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकाशयस्वर्गलोकाप्राप्तिकाम एनवृषरुद्रदेवतं यथाशक्त्यलंकृतं गंधाद्यार्चितं त्रिशूलवक्रां  
कितं शुवानं वरसतरीयुतममुकगोत्रायामुक्त्रेताय अहमुत्सजामि युष्मभ्यं पतिं दाम्येतेन पत्यास्वच्छंदं चरत तेन श्रीरुद्रः प्रीयता  
मित्युक्त्वा सतिलजलं धूमौ क्षिपेत् ॥ ततोऽपसं व्यकृत्वा सतिलपुच्छं गृहीत्वा दक्षिणामुखः असुकगोत्रे प्रेत इदं ते वृषभसतयैः पुच्छो  
दकमुपतिष्ठतामित्युक्त्वा अंजलिं दत्वा ॥ नमः पितृभ्यो मातृभ्यो बंधुभ्यश्च वितृतेभ्ये ॥ मातृपक्षाश्च ये केचिद्येचान्ये पितृपक्षाः ॥

गुरुशुभं धनं ये कुलपुत्रमुद्रवाः ॥ ये प्रेतभावापन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः ॥ वृषात्सर्गेण ते सर्वे लभन्तां प्राप्तिमुत्तमाभित्यजलित्रयं  
दद्यात् ॥ ततः (सव्येन) अयं हि वा मया दत्तः सर्वासं पतिरुत्तमः ॥ तुभ्यं वै धनमया दत्ताः पत्न्यः सर्वा भर्तृणाः ॥ वृषपमया दत्तस्तं  
तारयतु सर्वदा ॥ १ ॥ इति प्रार्थ्य ॥ दाता ब्राह्मणानां ह्यवक्रोक्तिभिः हदैः ॥ न चाज्यं चतत्सरीं पातव्यं केन चिक्वचित् ॥ नवाब्धौ सौवृष  
श्रैषामृते गोमूत्रगोमये ॥ १ ॥ इति श्रावयेत् ॥ ततः आमात्रेन त्रिभृतीन् ब्राह्मणान् संतोष्य ॥ बहुनायदृणैः अथवा बहुगोधनं संकुले  
गोकुले वा स्तरश्रुतोगोपतिक्षेपणीयः ॥ निगतिं गोपतौ विप्रेभ्यो दाक्षिण्यं रुद्रकुम्भं च दत्त्वा विष्णुं स्मरेत् ॥ एवं वृषोत्सर्गविधिं नरो यः करोति  
भक्त्या निजधृजानाम् ॥ उद्धृत्य तान्दुर्गतिपङ्कमन्नान् स्वयं मलकं समुपेत शभोः ॥ इति वृषोत्सर्गपद्धतिः ॥ अथ गोदानप्रयोगः ॥ तत्र आशा  
चान्तद्वितीये हि पुण्यदेशे यथास्तलक्षणवर्तीगांसं प्राप्य स्वयं गोपुच्छदेशं प्रादुभुसः कुरात्रयतिलजलान्यदाय अथ  
न्यादिदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य स्वर्गकामो गोदानमहं करिष्ये ॥ तदगतया गोब्राह्मणस्य च पूजनमहं करिष्ये-इति  
संकल्प्य ब्राह्मणपाद्यादिभिः संपूज्य हस्ते पुष्पचंदनतंबूलवासांस्त्यादाय करिष्यमाणो दानार्थमेनमद्वयेण त्वामहं वृणे ॥ वृते स्म प्रतिप्रति  
वचनम् ॥ इति वृत्वा धेनुं पुजयेत् ॥ तद्यथा-आवाहयाम्यहं देवी सुरभिलोकमतरम् ॥ यस्याः शरणमा विटः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥ इत्यावाहनम् ॥  
सर्वदेवा प्रियदेवि चंदनं मलयोद्भवम् ॥ कस्तूरीकुंभमाढ्यं च गोगंधं प्रतिगृह्णताम् ॥ २ ॥ इति गंधम् ॥ एतत्तत्कुले जाता शतक्रतु प्रिया सदा ॥ यालक्ष्मीः  
सर्वभूतानां या च देव्यत्र स्थिता ॥ धेनु रूपेण सा देवी मम पापव्यपोहन्तु ॥ ३ ॥ इति पुष्पा ॥ अथाद्गुप्ता ॥ अस्याय नमः ॥ शृङ्गभ्यां नमः ॥ पृष्ठाभ्यां  
नमः ॥ पुच्छाय नमः ॥ पूर्वपद्मां नमः ॥ पश्चिमपद्मां नमः ॥ धनस्पर्शिर सा द्रुतोगंधाढ्यगंध उत्तमः ॥ आब्रूयः सर्वदेवानां धूपाय प्रतिगृह्णताम् ॥ ४ ॥ इति

धूपं ॥ साज्यंचवर्त्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितमया ॥ दीपग्रहाणसुरभे मयादत्तं हि भक्तिः ॥५॥ इति दीपं ॥ वैष्णवीसुरभे मातर्नित्यं विष्णुपदे  
 स्थिता नैव द्वाहिमया दत्तं गृह्णतां पणहारीणि ॥ इति नैव द्वां तृणानि च ॥ आच्छादन् च कोशेयं शुद्धं चैव मुनिर्मलम् ॥ सुरभ्यं दीयमानं तु प्रीयतां किंश  
 वः सदा ॥ ७ ॥ इति वस्त्रम् ॥ यत्तेभ्यार्पितं शुद्धं वटां चामरं भंडितम् ॥ सुरभे तद्गृहणंदं मुनित्रिदशवर्दिने ॥ ८ ॥ इति घटाचामरौ ॥ एवं गंधा  
 दिभिः संपूज्य प्रदक्षिणां कृत्वा उदङ्मुखो गोपुच्छं गृहीत्वा कुशत्रयं तिलजलैरर्पणं कुर्यात् ॥ तत्राथा—देवा सुरास्तथायक्षा नागा गंधर्वराक्षसाः ॥  
 पिशाचां गृह्यकाः सिद्धाः कूर्मांडास्तरवः खगाः ॥ जले च राक्षानिलया वा व्याधाराश्च जन्तवः ॥ प्रातिभेते प्रयात्वा शुभदेत्तेनाम्बुना खिलाः ॥ २ ॥ आ  
 ब्रह्मणा ये पितृवंशजा मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः ॥ वंशद्वये स्मिन्मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितं सेवकाश्च ॥ ३ ॥ ते सर्वे त्वं सिमायां तु गोपुच्छे दक  
 तर्पणैः ॥ इति तर्पणं कृत्वा ॥ गावो ममाश्रतः संतु गावो मे संतु पृष्टतः ॥ गावो मे हृदये संतु गर्वा मध्यं वसाम्यहम् ॥ ४ ॥ इति प्रार्थ्य गोपुच्छं कुशादीनि चादाय  
 अद्याशौचान्तिद्वितीये हि अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य स्वर्गकामः इमां गां सवत्सं सुप्रजितां पयस्विनीं सुवर्णशृंगारैर्यत्सुराताम्रपृष्ठां वस्त्रयु  
 गच्छन्नां कांस्यपानीयपत्रपैतलदोहां रुद्रं देवताममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं महं संप्रददे ॥ इति गोपुच्छं स तिलकुशोदकं हस्ते दद्यात् ॥  
 स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततो दानप्रतिष्ठार्थं हिरण्यदक्षिणां दत्त्वा विभुजेत् ॥ इति गोदानप्रयोगः ॥ अथ शुद्धाणां मेकादशाहश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र प्रात  
 र्नद्यादौ स्नात्वा शुद्धवाससं परिधाय नित्यावश्यकं समाप्य नद्यादितीरे देवालेखा गत्वा तत्र श्राद्धभूमिं परिकल्प्य गोमया दकाभ्यामुपलिप्य  
 ज्वलद्गारैः संशोध्य गौरमृत्तिकां ऽऽच्छादय तिलैः गारसं षष्पैश्च विकीरेत् ॥ ततो मध्याह्ने पुनः स्नात्वा पूर्वरचितं श्राद्धं देशभागन्या तिलैः तेलनदी  
 पंप्रज्वाल्य संस्थाप्य ककुब्जं दद्यात् श्राद्धं पतनं पसारयेत् ॥ तत आसने उपविश्य सव्येनाचम्य ॥ अपवित्रः ० ॥ पुंडरीकक्षः पुनान्विति

जलेनश्राद्धद्रव्याणिस्वात्मानचंप्रोक्ष्य॥भूयैनमः॥गदाधायनमः॥इतिनवाकुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौसंकीर्त्य अप  
सव्येन ॥ अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यप्रेतत्वविमुक्त्यर्थं पितृसमन्वत्प्राथम्यादमासिकत्रैपक्षिकद्वितीयमासिकतृतीयमासिकचतुर्थं पंच  
मं ऊनषष्ठं षष्ठं सप्तमं अष्टमं नवमं दशमं एकादशं ऊनाब्दिकं द्वादशमासिकानि स्वस्वकालेकर्त्तव्यानि षोडशश्राद्धानि  
सिंपिडीकरणाधिकारिसिद्धयर्थमेकादशहन्त्यपकृत्यएकोदियविधिनातन्त्रेणकर्त्तव्ये इतिसंकरूपेत् ( एकादशमासाभ्यन्तरेऽधर्मासपाते  
षोडशपदस्थानेसप्तदशपदंयोज्यम् ) ततोदेवताभ्यहतित्रिजपित्वा अपसव्येनदक्षिणाभिमुखः पतितवामजानुः तिलगौरसर्पपान्दही  
त्वा ॥ नमोनमस्तेगोविंद पुराणपुरोत्तम ॥ इदंश्राद्धहृषीकेश रक्षतंसर्वतोदिशः ॥ १ ॥ इतिसर्वत्रविकीर्यनिर्विबंधकुर्यात् ॥ ततः  
कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ काश्यपगोत्रामुकप्रेत आद्यश्राद्धे इदमासनंतमयादीयतेतवपतिष्ठतामित्युक्ता ऋजुकुशत्रयरूपमासनंप्रथमं  
सर्वतः पश्चिमगतंदक्षिणाग्रमुत्तरेजत १ ( नात्रमोटकरूपम् ) एवंमासिकश्राद्धनिमित्तकं २ त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासिकं ४ तृतीयं  
५ चतुर्थं ६ पंचमं ७ ऊनपणमासिकं ८ पणमासिकं ९ सप्तमं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकादशं १४  
ऊनाब्दिकं १५ द्वादशमासिक १६ निमित्तकान्यासनान्निक्रमेणपूर्वपूर्वगतान्युत्तरेजत ॥ ततः तिलेभ्योनमः-इतितिलांस्त्रिकीर्य  
दर्भहस्तस्तेषु ॥ इहलोकंपरित्यज्य गतोसिपरमांशतिम् ॥ मनसवायुरूपेण चरेत्वाहानिमंत्रये ॥ १ ॥ इतिप्रेतमावाहयेत् ॥ ततःपो

१ जातृकर्णः-द्वादश प्रतिमास्यानि आद्यपामासिके दद्या ॥ त्रैपाक्षिकाब्दिकेचेति श्राद्धान्येतानि षोडश इत्यतः १२ स्मृतिरग्नवध्याम्-द्वादशहे यदा कुर्यात्तदुः पुत्रः म  
पिडनम् ॥ एकादशहृदिर्वीति प्रेतश्राद्धानि षोडश इति ३ संवत्सस्य मध्ये तु यदि स्यादधिवासकः ॥ तदा त्रयोदश मासि क्रिया प्रेतस्य वार्षिकी ॥ इति गारुडे ।

डशऽर्धपात्रोपरि एकैकंप्रादेशमात्रसंश्रद्धं भदलं धृत्वा तेषु अद्यो नमः इति जलं क्षिप्वा तिलेभ्यो नमः इति तिलात् तूर्णगंधपुष्पाणि च  
 प्रक्षिपेत् ॥ ततः प्रथमपात्रगृहीत्वा तत्र स्थितं भदलं पलाशपत्रे धत्वा अद्यो नम इत्यर्धपात्रमभिमंथ्य काश्यपगोत्रासुक्रप्रेत आद्यश्राद्धे  
 एषतेहस्ताद्यौ मया दीयते तवोपनिष्ठतामिति पवित्रसंज्ञकदर्भोप्यर्धजलं क्षिपेत् ॥ एवं मासिकादिपंचदशश्राद्धनिमित्तकान्यर्धजलानि निक्षि  
 पेत् ॥ अर्धपात्राणि च पुनरुत्तानतया एव स्थापयेत् ( नन्युजम् ) ॥ ततो गंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासं सिद्धत्वा काश्यपगोत्रासुक्र  
 प्रेते आद्यादि द्वादशमासिकांतपोडशश्राद्धनिमित्तकान्येतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासं सिते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठतामित्येकतेजो  
 त्सृजेत् ॥ ततो गौरमृदूस्मादिनामंडलं धृत्वा ( परकीयभूमौ श्राद्धकरणे तद्भूस्वामिने इदमब्रमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः इति बाल  
 दत्त्वा ) एकस्मिन्वापोडशपात्रेषु आपान्नसोपस्करं संजलं परि विष्य मधुदत्त्वा मधुमधुमध्विति चाभिमंत्रयेत् ( नात्र पात्रालम्भावाहौ )  
 ततः अन्नपात्रं परितस्तिलान्विकीर्य वामकरेण पात्रं स्पृशन् ॥ काश्यपगोत्रासुक्रप्रेत आद्यादि द्वादशमासिकान्तपोडशश्राद्धनिमित्तक  
 मिदमंत्रं घृताद्युपस्करसहितं मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यासनवामभागे जलमुत्सृजेत् ( नात्र पैतृकोजपः ) ॥ विक्रमणि  
 कुर्यात् ॥ ततोऽन्नपात्रसमीपे पिण्डदानार्थं सिकताभिः षोडशवेदिकाः कृत्वा गोमयोदकेनाभ्युक्ष्य प्रत्येकं दक्षिणाप्रकुशत्रयास्तरणं  
 कुर्यात् ॥ ततः षोडशपुटकेष्वेकस्मिन्पुटके वा जलतिलगन्धपुष्पाणि कृत्वा तत्पुटकं गृहीत्वा ॥ काश्यपगोत्रासुक्रप्रेत आद्यश्राद्धपिण्ड

? हेमाद्रिः पण्डितः कारिकासु—आशिषो द्विगुणा दर्शो जपाशीः स्वस्तिवाचसम । पितृशब्दः स्वमन्त्रः शर्मशब्दः स्वमन्त्रश्च वा आवाहः पात्रालम्भश्च उत्सुकोऽङ्गलान्दिकम् । द्वाद  
 शश्रश्च विक्रिः श्रेयप्रश्रमनयव च । अन्नदक्षिणाविमर्शश्च गोमातं गमनं नया । अष्टादश पदार्थास्तु प्रतश्राद्धं विषयत्रयव—इति ।

स्थानेऽत्रावनेनिक्षेपेभ्योऽप्युपेत्य त्वोपतिष्ठतामिति वेदिकायां कुशत्रयोपरि अवनेजनजलांश्चिद्व्यात् ॥ १ ॥ एवमेव मासिकादिपिण्ड-  
स्थानेषु प्रत्येकमवनेजनं दद्यात् ॥ ततश्चरुणामनुनावा आमन्त्रेन घृतमधुतिलशुक्लेन षोडशपिण्डान्निमित्तं प्रथमपिण्डं कुशत्रया-  
दीनि चादाय ॥ काश्यपगोत्रासुक्रप्रेत आद्यश्राद्धे एतत्ते पिण्डं भयादीयते त्वोपतिष्ठतामिति सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन कुशोपरि पितृ-  
तीर्थेनावनेजनस्थानेन दद्यात् ॥ १ ॥ एवं मासिकं २ त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासि ४ तृतीयमासि ५ चतुर्थं ६ पंचमं ७ ऋणषणमासि ८  
षाणमासिकं ९ सप्तमासिकं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकादशं १४ उनाब्दिकं १५ द्वादशमासिकं १६  
श्राद्धनिमित्तकापिण्डानि क्रमेण दद्यात् ॥ ततो हस्तौ प्रहास्य सव्येनाचम्य हारिस्मृत्वा अपसव्येन अवनेजनपात्रं गृहीत्वा काश्यप-  
गोत्रासुक्रप्रेताद्यश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्षेप्य ते भयादीयते त्वोपतिष्ठतामिति प्रथमपिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ एवमेव मासिका-  
दिपंचदशपिण्डेषु क्रमेण प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततो निर्वाधिसव्यं सव्येनाचम्य हारिस्मृत्वा अपसव्येन प्रतिपिण्डं सूत्रत्रयं दत्त्वा  
काश्यपगोत्रासुक्रप्रेत आद्यादिद्वादशमासिकान्तर्षोडशश्राद्धपिण्डेषु एतानि मासि ते भया दीयन्ते त्वोपतिष्ठतामित्युत्सृजेत् ॥  
ततः पिण्डान्गंधपुष्पघृपदीपतैलपूजाफलानिभिः संपूज्य एकस्मिन्त्रयपटुके शिवा आपः मन्तु इति जलं सौमनस्यमस्तु  
इति पुष्पम् अक्षतं चारुं चास्तु इति तिलांश्च दत्त्वा कुशत्रयादीन्यादाय काश्यपगोत्रस्यासुक्रप्रेतस्य आद्यादिद्वादशमासिकान्त-  
र्षोडशश्राद्धेषु यदन्तर्गतानि दिक् तदुपतिष्ठतामित्यस्य योदकं दद्यात् ॥ ततः पिण्डोपरि सूत्रत्रयं कुशत्रयं निधाय ॥ सतिलदुग्धेन जलेन  
दक्षिणाश्राधारं दद्यात् ॥ अनानिधनेनैवः शंखचक्रगदायः ॥ अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमक्षोभदायः ॥ १ ॥ अनमी पुष्पमंकाशं पीतवाम-

समच्युतमायेनमस्यतिगोविन्दं नतेषांविद्यतेभयम् ॥२॥नारायणसुरेश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रदा॥अनेनतप्तेनाद्य प्रेतमोक्षप्रदोभव ॥ ३ ॥  
 काश्यपगोत्रामुक्तेत अत्रजलयागस्तेमयादीयन्ते तवोपतिष्ठन्तामितिदद्यात् ॥ ततः पिण्डानुत्थाप्य कुशानमौक्षित्वाहस्तौप्रशालयेत् ॥  
 ततो रजतदक्षिणामादाय काश्यपगोत्रस्यामुक्तेतस्यप्रतवान्वृत्तिपूर्वकसद्गतिप्राप्त्यर्थं कृतैतदाद्यादिद्वादशमासिकान्तर्षोडश  
 श्राद्धकर्मणः सांगतासिद्धयर्थमिदंरजतंचन्द्रद्वैतममुकगोत्रायामुक्तरूपेण ब्रह्मणाय दक्षिणात्वेनदातुमहमुत्सजे इतिदद्यात् ॥ ततो देव  
 ताभ्यः० इतित्रिःपठित्वा रक्षादीपंनिर्वाप्य हस्तौपादौप्रशाल्याचामेत ॥ ततः कर्मपूत्तिकामोविष्णुस्मृत्वा प्रमादादितिपठित्वा  
 श्राद्धवस्तूनि विप्राय प्रतिपादयेदगाधेजलेवाक्षिपेत् ॥ ततः पिण्डानगोभ्यो वायवेभ्यो वा दद्याद्गगाधेजलेवाक्षिपेत् ॥  
 ततः एकादशमात्रानि विप्रेभ्योदत्त्वा शय्यादिदानैः परितोपयेत् ॥ इत्याद्यादिषोडशश्राद्धपद्धतिः ॥६॥ ॥ अथशय्यादिदानम् ॥ तत्र  
 प्रयोगः ॥ तत्रादौ सारदारुभयाहट्ठां दन्तपत्रहमपट्टद्वारलंकृतां हंसतूलीप्रतिच्छिन्नशुभ्रगण्डोपयानकां प्रच्छादनपीयुक्तां गन्ध  
 धूपधिवासितां पुष्पतंबूलकुंकुमकूर्पूरागरुचन्दनदीपकोपानच्छत्रचामरव्यजनासनसप्तधान्यघृतपूणकुंभमहितां शय्यामासाद्य तत्र  
 हेमंकांचनपुरुषस्थापयेत् ॥ ततो देशकालौंसंकीर्त्य अद्याशौचान्ताद्वितीयेति काश्यपगोत्रस्यामुक्तेतस्य स्वर्गकामः शय्या  
 दानंकरिष्य-इतिसंकरष्य देयब्राह्मणं गन्धादिनासंपूज्य इमां सोपकरणशय्यां ददामीतिद्विजकरेजलदत्त्वा ददस्वेतिप्रतिवचना  
 नन्तरं विप्रंशय्यामुपवेशयेत् ॥ ततः सोपकरणशय्यौनेमः-इतिशय्यांनमस्कृत्य कांचनपुरुषं गन्धपुष्पाघूपदीपनैवेद्यतांबूला  
 दिभिः संपूज्य नमस्कृत्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्याशौचान्ताद्वितीयेति काश्यपगोत्रस्यामुक्तेतस्यपल्लोकेमुवशयनार्थं स्व



र्गलोकप्राथम्यमिमांसोपस्कारं शय्यां कांचनपुरुषप्रतिमायुतां विष्णुदेव्याममुकुत्रायासुकुशमणेब्राह्मणायतुभ्यमहंसप्रददे-इतिसतिल  
कुशोदकं विप्रहस्तदद्यात् ॥ स्वस्तीति विप्रोवदेत् ॥ ततः शय्यादानप्रतिष्ठार्थद्विगुणं दत्त्वा शय्यासंस्पृशेत् ॥ ततोदाता-यथानकृष्ण  
शयनं शून्यं सागरजातया ॥ शय्याममाप्यशून्यास्तु तयाजन्मजन्मनि ॥ १ ॥ इतिप्राथम्यप्रणयविमृजेत् ॥ इतिशय्यादानम् ॥ अथत्रयो  
दशपदानम् ॥ तत्र आसनम् १ उपानहौ २ छत्रं ३ मुद्रिकां ४ कण्ठडलुम् ५ अन्नं ६ जलं ७ भाजनानि ८ वस्त्राणि ९ आज्यम् १०  
यज्ञोपवीतम् ११ यष्टिम् १२ तांबूलम् १३ इमानित्रयोदशदानद्रव्याणि यथाशक्तिसंपाद्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौंसकौत्स्य  
(अपसव्येन) काश्यपगोत्रस्यामुक्तेप्रतस्यपरलोकं सुखप्राप्त्यर्थमसद्भूतिनिवाणार्थमिमानि आसनोपानच्छत्रमुद्रिककण्ठडल्वन्नजल  
भाजनवस्त्राज्ययज्ञोपवीतयष्टितांबूलानि त्रयोदशदानानि नानादेवतानि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्योदातुमहुस्तुजे-प्रतायउपनिष्ठताम् ॥  
एभिः पदानैरमुक्तेप्रतस्य प्रतत्त्वनियुक्तिः सद्भूतिप्राप्तिरिति पठित्वा यथाचारं दद्यात् ॥ ततः शक्तौ सत्यांगाः वाहनयानं दासीदासेवं शर्मन्नादी  
निचोत्तमुद्दिश्य विप्रेभ्यो दद्यात् ॥ इति त्रयोदशपदानम् ॥ अथोदकुंभदानम् ॥ तत्रैकादशहादाभ्ययावत्संवत्सरांतव्यम् ॥ परञ्चायु  
निका आपकल्पेन सपिण्डनस्य मुल्यतया द्वादशाहकालत्वादेकस्मिन्नेव दिने पूर्वोक्तसन्नादकुंभं निमित्तकपट्टाधिकशतत्रयजलिदानं पि  
ण्डानादानं च कुर्वन्त्यतस्तथैवल्लिख्यते ॥ तत्रप्रयोगः ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय काश्यपगोत्रस्यामुक्तेप्रतस्य मरणदिनादाभ्यसन्तसर  
पर्यंतं तृषानिवृत्त्यर्थं प्रतिदिनसन्नादोदकुंभं निमित्तकपट्टाधिकशतत्रयजलिदानं करिष्ये-इतिसकल्प्य दक्षिणामुखः पातितवामजा

१ स्मृतिप्रमुखे-एकादशाहादमयुतः ॥ दिनेदिने प्रयतव्यो यावत्स्यद्भस्मः सुनिगति ।

उरुपसव्येन ऋजुश्रयतिलजलैस्तर्पयेत् ॥ अमुकगोत्रासुकप्रेत एषतिलतोयांजलिस्ते मयादीयेतेवोपतिष्ठतामियश्वत्थादौ ३६०  
 दद्यात् ॥ एवमेव क्षुधानिवारणार्थं ३६० पिण्डदानं कुर्यात् ॥ तत्र काश्यपगोत्रस्यासुकप्रेतस्य संवत्सरपर्यंतं क्षुधानिवारणार्थं प्रतिदिनश्राद्ध  
 निमित्तकषपृथगधिकशतत्रयपिण्डदानं करीष्य इति संकल्प्य हस्तमात्रेस्थपिण्डलेदभानस्तीर्य अमुकगोत्रासुकप्रेतप्रथममासिकश्राद्धनिमित्त  
 त्तकानीमानि त्रिंशत्पिण्डानि ते मया दीयन्तेवोपतिष्ठतामिति त्रिंशत्पिण्डानि ३० दद्यात् ॥ एवमेव द्वितीयादिमासेषु ॥ इत्येकादशाहदिन  
 कर्म ॥ ३७ ॥ अथ शूद्राणां सपिण्डनश्राद्धम् ॥ तच्चाधुनिका द्वादशाहे अनुकल्पेन कुर्वति तैथवल्लभ्यते ॥ तत्रादौ सपिण्डनदिने प्रातः स्नान्वा  
 नित्यावश्यकं समाप्य मध्याह्ने पुनः स्नान्वाशुक्लधौतवाससी परिधाय गोमयोपलितायांभूमौ सपिण्डादिद्वारा पाकं कारयेत् ॥ ततो मृति  
 स्थाने श्राद्धभूमिपरिकल्प्य गोमयोदकेनोपलिप्य गौरमृत्तिकया च्छाद्य तत्र श्राद्धसामग्रीं जलपूरितान्द्वादशघटैश्चैकामात्रपूरितां त्र्यर्घ  
 नीं च संपाद्य आसनसमीपे तिलैलेन दीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत् ॥ काककुट्टादीनपसारयेच्छ्राद्धदेशावरणं च कुर्यात् ॥ ततः स्वासने प्राङ्  
 मुख उपविश्य (सव्येन) दर्भपत्रधारणं कृत्वा आचम्य ॥ अपवित्रः पवित्रोऽतिपठित्वा पुण्डरीकाक्षः पुनान्विति श्राद्धवस्तूनि स्वात्मा  
 नं चोत्सरेत् ॥ ततः भूयै नमः ॥ भगवते गदाधराय नमः इति प्रणम्य ॥ कुशत्रयतिलजलन्यादाय देशकालौ  
 स्मृत्वा ॥ (अपसव्येन) काश्यपगोत्रस्यासुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्या उत्तलोकप्राप्त्यर्थमुकगोत्रैरमुकप्रेतपितृपितामहप्रपितामहै  
 रमुकसुकदासैः सह मृतद्वादशाहपार्ष्णैकोद्दिशोभयात्मकं सपिण्डीकरणश्राद्धमहं करीष्य इति संकल्पयेत् ॥ ततो देवनाभ्यः पितृभ्य

१ हेमाद्रिमाधवगारुडेणु-यान्त्याकुल्यमाणानां पुता चैवायुपः क्षयात्। अस्थितेश्च शरीरस्य द्वादशाहः प्रयास्यते-इति तन्त्र-मंत्रवर्जं हि शूद्राणां द्वादशाहनि कीर्तितमिति ।

श्रुतिभिः पठित्वा तिलमयमार्गपान्नीत्वा ॥ नमो नमस्तो गोविन्द पुराणपुरोत्तम ॥ इदं श्राद्धपिकेश शतसंवत्तोदितः ॥१॥ अपि  
 ष्वत्ताः पितृणाः श्रान्तं च भुवि शान्तिं प्राप्नुयान्ति ॥ यत्नं यथापि पितरः स्थिताः ॥२॥ प्रसीचीमाल्यपास्तद्विदुर्दीवीभिः सिमपाः ॥ अत्र  
 धर्मपिकेशो हविर्धनं च ॥ २ ॥ रक्षाभ्यां पशोश्चालयान् यथायुतः ॥ सर्वश्चापि स्तोत्रं यामरक्षां करोतु ॥ अथ भुतपितृणां च दूरी  
 र्भवतु शांती ॥ इत्यनन्तरं ॥ अयं तद्विषयं च नमस्कृत्य ॥ ३ ॥ इति श्री श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अथ अस्मान् पितृमाहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः कामकालमंज्जका विश्वदेवा इदमासनं वेनमः  
 सजघनं दर्शजान्वाच्यं ॥ कुत्र यत्र यत्र ॥ अथ अस्मान् पितृमाहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः कामकालमंज्जका विश्वदेवा इदमासनं वेनमः ॥ आगः  
 इत्युच्चार्य देवतीर्थं न पवार्थं कृत्वा न भिक्षुमंडलं उत्सृजेत् ॥ ततः कामकालमंज्जकान्विश्वदेवानावाहयिष्ये इत्युक्त्वा कामकालेभ्यो नमः ॥ आगः  
 च्छन्तु महाभागा विश्वदेवा महादया गोयत्रयो जिताः श्राद्धमावयथ नमं वतुते ॥१॥ इत्यनेन श्राद्धाहयेत् ॥ ततोऽर्घ्यपात्रे देवकुशपत्रेषु चार्घ्यं देवतीर्थे  
 न देवेभ्यो नम इति जलं यवेभ्यो नम इति श्रवणं येषु च शिषेत् ॥ ततोऽर्घ्यपात्रमादाय तत्रस्थं पात्रं पलाशपत्रेषु च ॥ अद्यो नमः इत्यभिमुख्य  
 अद्यापितमाहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः कामकालमंज्जका विश्वदेवा एवमहस्तं श्राद्धं यः इयं धत्त्वा पात्रे विना दिकृत्वा विशेष्यो देवेभ्यः  
 स्थानमसीत्युक्तं न स्थापयेत् ॥ ततोऽर्घ्यादिदानम् ॥ तत्र गंधपुष्पपत्रदीपपत्रादिकमासनं धृत्वा कुशत्रयवजलान्यादाय ॥ अद्यापितमाहा  
 दित्रयश्राद्धसंबन्धिनः कामकालमंज्जका विश्वदेवा एतानि गंधपुष्पपत्रदीपतांबूलवासान् तिग्ने नमः इत्युत्सृजेत् ॥ ततो विश्वदेवानाम  
 च नमः पूर्णमस्त्विति पूर्णतां च यित्वा श्रेष्ठं सुसंयुज्य पलाशादिपत्रावलीन्यस्य गोमृत्तिकायां भस्मनवाधमंडलं कुर्यात् ॥ एवं देवक्रिया क्राण्ड

१ कात्यायनः - अन्तर्गामिणं मात्रं काशं दिदलमव च ॥ प्रादेवं मात्रं विहंतं पात्रं यत्र कुत्र चित् ॥ एतदेव हि पिच्छूल्या लक्षणं समुदाहृतेति ॥

निर्भर्यं पित्रादिश्राद्धशमागत्यासनेदक्षिणामुखउपविश्य अपसव्यं कृत्वा सजवनं वा मंजान्वाच्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अद्य  
 काश्यपगोत्रस्यामुकदासप्रेतस्य इदमासनमुपतिष्ठतामितिकुरुकुशत्रयरूपंदक्षिणाग्रमासनं प्रेतमंडले स्थापयेत् ॥ ततो द्विगुणमुग्रकुश  
 त्रयतिलजलान्यादाय काश्यपगोत्रपितामहामुकदास इदमासनं तुभ्यनमः ॥ इतिप्रथमासनमोटकरूपंदक्षिणाग्रपश्चिमगतं पितामहाय  
 उत्सृजेत् ॥ एवंप्रेतिमहायवृद्धप्रेतिमहायचात्सृजेत् ॥ ततः पितृनावाहयिष्ये इत्युक्त्वा आवाहय इत्यनुज्ञातस्तिलान्विकीर्य पितृ  
 भ्योनमः इतिपठेत् ॥ ततोऽर्घपात्रचतुष्टये दुर्भदलमैकैकंपवित्रसंज्ञकंदक्षिणाग्रं धृत्वा ॥ अद्वोनम इतिप्रत्येकं जलंप्रक्षिप्य तिलेभ्योनम  
 इतितिलान् तूष्णीं गंधपुष्पाणि च निक्षिपेत् ॥ ततः प्रेतार्घपात्रमादाय तत्रस्थंपवित्रं पलाशपत्रे धृत्वा अद्वोनमः इतिपात्रमभिमन्त्र्य ॥ अ  
 मुकगोत्रामुकप्रेत एतेऽर्घ्यामयादीयेततत्रापतिष्ठतामित्युक्त्वा पितृतीर्थेनपवित्रोपरि अर्घजलं किंचिदध्यात् ॥ अर्घपात्रंचपवित्रजलसहितंपुरतः  
 स्थापयेत् ॥ अथपात्रमेलनम् ॥ एवंप्रेतायाध्यदत्त्वा प्रेताध्यशेषंपितामहादिपात्रेषु संयोजयेत् ॥ तत्रप्रयोगः ॥ (सव्येन) कुशत्रयादीन्यादायदे  
 शकालौ संकीर्त्य (अपसव्येन) काश्यपगोत्रस्यामुकदासप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकंसद्वितीयास्यर्थं तन्पितृपितामहप्रेतिमहानामधः सहा  
 र्घसंयोजयिष्ये इतिसंकरयेत् ॥ ततः प्रेतार्घपात्रं गृहीत्वा तत्रस्थंपवित्रं पितामहार्घपात्रे निधाय प्रेतार्घपात्रंदक्षिणहस्ते कृत्वा ॥ अमुक  
 प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं पितृसमत्वप्राप्त्यर्थंचतदर्घपात्रस्थं प्रथमांशजलं काश्यपगोत्रस्य प्रेतापितुरमुकदासस्य वसुधुस्यार्घपात्रेण  
 सहसंयोजयिष्ये - इतिप्रथमांशमर्घेणैवाधेक्षिपेत् ॥ ३॥ पुनः प्रेतपवित्रं प्रपितामहार्घपात्रे निधाय अमुकप्रेतस्य ०

१. मथिलकदसरकृतश्राद्धविवेके-॥ तत्रयमग्रदत्त्वाह्यादिप्रपंचः सकृत्वा एकलिप्तः स शिष्टिर्गार्दणीयः प्रमाणज्ञान्यत्वात् ।

तदवपात्रस्य द्वितीयांशजलं काश्यपगोत्रस्य प्रेतपितामहस्यामुकदासस्यरुद्ररूपस्यावपात्रेण सहसंयोजयिष्ये-इति द्वितीयांशं प्रतावपात्रजलमवर्णवाधे क्षिपेत् ॥ तदनरुद्रलोकप्राप्तिः ॥ २ ॥ ततः प्रेतपवित्रं वृद्धप्रपितामहावपात्रे कृत्वा ॥ अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वं तदवपात्रस्य तृतीयांशजलं काश्यपगोत्रस्य प्रेतप्रपितामहस्यामुकदासस्यादित्यरूपस्यावपात्रेण सह संयोजयिष्ये-इति तृतीयांशप्रतावपात्रजलमवर्णवाधे क्षिपेत् ॥ तेन आदित्यलोकप्राप्तिः ॥ ३ ॥ इति पात्रमेलनम् ॥ ततः प्रेतपवित्रं प्रतावपात्रे कृत्वा तत्पात्रे प्रतासनवामप्रदेशं थापयेत् ॥ अथ पितामहादिभ्योवर्धदानम् ॥ तत्र पितामहावपात्रं गृहीत्वा तत्रस्थपवित्रं तदग्रे पलाशपत्रे धृत्वा ॥ अद्यो नमः-इत्यवपात्रमभिमुखं दक्षिण करे कृत्वा ॥ काश्यपगोत्रपितामहामुकदास एतदेहस्ताड्यो नमः ॥ इति पित्रर्चनं पवित्रोपरि जलं दद्यात् ॥ एवमेव प्रपितामहवृद्धप्रपितामहाभ्यां दद्यात् ॥ अवशिष्टजलसंहितान्यवपात्राणि पुरतः स्थापयेत् ॥ ततो वृद्धप्रपितामहावपात्रस्यानिजलादीनि प्रपितामहावपात्रे कृत्वा ॥ तत्सर्वपितामहावपात्रे कृत्वा ॥ तत्स्मृत्यभ्यः स्थानमसीत्यासनवामप्रदेशं भूमावधोमुखं स्थापयेत् ॥ तदुपरि प्रपितामहावपात्रद्वयं स्थापयेत् ॥ स्थापितान्यवपात्राणि दिक्षिणादानपथं ततो दक्षेन्न वालयेत् ॥ ततो गंधादिदानम् ॥ गंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासामिधूत्वा कुर्यात्तिलजलान्यादाय ॥ अमुकगोत्रप्रेतसर्पिर्दिकरणश्राद्ध एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासामिधूत्वा दीर्यते तत्रोपतिष्ठतामिति प्रतायात्सृजेत् ॥ पुनर्दिग्गुणमुशुकुर्यादन्यादाय ॥ काश्यपगोत्रपितामहामुकदास एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासामिधूत्वा-इति प्रपितामहायात्सृजेत् ॥ एवमेव प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय चोत्सृजेत् ॥ ततः पितृणामर्चनसंपूर्णं भस्त्रिवाति पाठित्वा सर्वत्र भुवं समुद्रपलाशादिपत्रावलीं स्थापयेत् ॥ अथ भौकरणम् ॥ ततः श्राद्धाद्यादामान्नद्वंद्वं गृहीत्वा भौकरणं कारयिष्येति

प्रुष्टा कुरुष्वेत्यनुज्ञातः (अपसव्येन) पत्रपुटकादिस्थजलेऽप्यंजनक्षारवर्जितम्। अग्नयेकव्यवाहनायनमः इदमग्नये १ सोमायपितृमतेनमः  
 इदं सोमायपितृमते २ इतिहुत्वाहुतशेषं पितामहादिपात्रेषुतूर्णोदत्तापिण्डार्थमवशेषयेत् ॥ (न प्रेतपात्रेदानम् नचविश्वेदेवपात्रे ॥ नहि  
 स्मृताः शेषभोजो विश्वेदेवाः पुराणैरितिवाक्यात्) ततः (सव्येन) देवपात्रेऽन्यदाभाद्रदत्तचैवपूर्वचतुर्गुणं द्विगुणसंभवा आम्रां सोमोपस्कृदत्त्वा  
 मधुनाभिर्घार्य मधुमधुमाध्विन्यभिर्मंत्रयेत् ॥ ततः संव्यादिनादेवपात्रमुत्तानकराभ्यामालभ्य विष्णवेनमः इत्यहुष्टुदत्त्वा यवेभ्योनम इतिप  
 रितोयवान्विकीर्ष्य वामकरणपात्रं स्पृशन् दक्षिणकरणकुशत्रययवजलान्यादाय ॥ अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्धसंश्रद्धिनः कामक्रालसंज्ञ  
 काविश्वेदेवा इदमाभां सोपस्कृरंहव्यममृतरूपेनमः—इत्युदकं देवतीर्थेन दक्षिणभागैर्भूमौ क्षिपेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना प्रेतपात्रवर्जं पितामहा  
 दिपात्रत्रयालंभः ॥ प्रेतपात्रस्य तु परितः तिलेभ्योनम इतितिलान्विकीर्ष्य कुशत्रयादीन्यादाय काश्यपगोत्रासुक्रप्रेतसपिण्डाकरणश्राद्धे इदं  
 मंत्रं सोपस्कृरंजलेतेमयादीयेत तत्रोपतिष्ठतामिति वामभोगेजलमुत्सृजेत् ॥ ततोहस्तप्रक्षालनं कृत्वा पितामहपात्रं न्युञ्ज्याभ्यां व्यस्ताभ्यां  
 पाणिभ्यां स्पृष्ट्वा ॥ विष्णवेनमः इत्यहुष्टुदत्त्वा ॥ तिलेभ्योनम इतितिलान्परितो विकीर्ष्य ॥ वामकरणपात्रं स्पृशत् द्विगुणभुग्नकुशत्र  
 यादीन्यादाय ॥ काश्यपगोत्र पितामहामकदास इदमंत्रं सोपस्कृरंजलममृतरूपं तुभ्यंनमः इतिपितृतीर्थेन आसनवामभोगेजलमुत्सृ  
 जेत् ॥ एवमेव प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय चामात्रमुत्सृजेत् ॥ ततः अन्नहानिक्रियादीनं विधिहानंचयद्भवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्त्विति प्रार्थ्य  
 मधुमधुमाध्विनचिचपठेत् ॥ ततः सप्तव्याधादशाणेषु मुगाः कालंजरेगिरौ चक्रवाकाः शरद्वपि हंसाः सरसिमाने सोतेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेद  
 पारगाः ॥ प्रस्थितादूरमध्वानं ध्रुयन्तेभ्योऽवसीदता इति पठित्वा रुचिस्तवादि कपठेत् ॥ ततः पितामहपात्रसन्निधौ भूमिप्रोक्ष्य तत्र दक्षिणां शुकुशत्र

यमास्तीर्थ्य आम्रात्रमादायसव्यंजनतिलमेकीकृत्य॥अग्निदग्धाश्चयेजीवा येयदग्धाः कुलेमम॥भूमौदत्तेनहृयंतु तृतायान्तुपरंगतिम्॥३॥  
इतिकुशोपरिपितृतीर्थेनाविक्रिते॥ततः सव्येनाचम्यविष्णुस्मृत्वा अपसव्येनप्रेतपिण्डायवेदिनिमायततद्वगतमपरंपितामहादित्रयपिण्डदा-  
नार्थंचर्वेदिकुर्यात् ॥ ततः पितामहादिवेदिमध्येदममूलेनदक्षिणग्रिवाकृत्वा उल्मुकंप्राभयित्वा उभयत्रसङ्गदाच्छिन्नकुशान्दक्षिणाग्रा-  
स्तीत्वापात्रचतुष्टयजलतिलगंधपुष्पाणिकुर्यात्॥ततःप्रथमपात्रमादाय ॥ काश्यपगोत्रामुक्रतेतसपिण्डीकरणश्राद्धे अत्रावनेनिक्ष्वेतेमयादी-  
यतेतवोपातिष्ठतामितिप्रथमवेदिकायांकुशोपरि अवेनेजनंदद्यात् ॥ ततोऽपरपुच्छहृत्वा काश्यपगोत्रपितामहामुक्रदास अत्रावनेनिक्ष्वेते  
नमः इतिद्वितीयवेदिकायांकुशमूलेपितामहायावनजनंदद्यात् ॥ एवमेवप्रापितामहायकुशमध्ये वृद्धपितामहायकुशोऽवेनेजनंदद्यात् ॥ त-  
तोऽगृहपात्रकेनवापायसेनसकुभिर्वाऽऽमात्रेनमध्वज्यतिलव्यंजनसहितेन चतुरः पिण्डान्कृत्वा मधुघृताभ्यामभिचार्य्य ॥ प्रथमपिण्डं कुशत्र-  
यादीनिचादाय काश्यपगोत्र अमुक्रदासप्रेत सपिण्डीकरणश्राद्ध एततोपिण्डमयादीयते तवोपातिष्ठतामिति पितृतीर्थेन प्रथमवेदि-  
कायां कुशोपरिदद्यात् ॥ ततोद्वितीयपिण्डं द्विगुणभुक्कुशान्द्विनादाय काश्यपगोत्रपितामहामुक्रदास एततोपिण्डंनमः इतिद्वितीय-  
वेदिकायां प्रथमावेनेनस्थाने सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनपितृतीर्थेनपितामहायपिण्डंदद्यात् ॥ एवमेवप्रापितामहाय वृद्धपितामहायच-  
पिण्डंदद्यात् ॥ ततः पितामहादिपिण्डास्तरणकुशमूले लेपभागमुजस्तुभ्यन्तु-इतिकंप्रोञ्ज्य हस्तोपशाल्यसव्येनावचम्यविष्णुस्म-  
रेत् ॥ ततोऽपसव्येन प्रेनावनेजनपात्रमादाय काश्यपगोत्रामुक्रेतात्रमयवनेनिक्ष्वेतेमयादीयते तवोपातिष्ठतामितिप्रेतपिण्डोपरि प्रत्य-  
वनेजनंदद्यात्॥ततः प्रेतपिण्डं मुत्राच्छादनगंधपुष्पधूपदीपतांबूलादिभिरभ्यर्च्य ॥ अनेनपिण्डदानेन प्रेतस्यसद्गतिः उत्तमलोकावाप्तिः ॥

अथपिण्डसंयोजनम् ॥ तत्रादौ पिण्डमूत्रादिकमपनीयहस्तद्वयेनसुवर्णरजतशलाकां तदभावे दर्भमर्यांरज्जुं मधुघृतात्तामादाय तथा  
 प्रेतपिण्डसमंत्रेधाविभजेत् ॥ तत्रदेशकालौस्मृत्वा काश्यपगोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतनिवृत्तिपूर्वकपितृसमन्वप्राप्त्यर्थं वस्वादिलोकप्रा  
 र्थ्यर्थं अमुकगोत्राणां तत्पितृपितामहप्रपितामहानांपिण्डैः सह अमुकप्रेतस्यपिण्डसंयोजनकारिष्ये-इतिसंकल्प्य ॥ ततः प्रेतपिण्डस्य  
 प्रथमभागमादाय वामहस्तेकृत्वा दक्षिणहस्तेपितामहपिण्डधृत्वा काश्यपगोत्रस्यामुकप्रेतस्य पिण्डप्रथमशकलममुकगोत्रस्य  
 प्रेतपितृरमुकदासस्यवसुरूपस्य पिण्डेनसहसंयोजयिष्ये-इत्युक्त्वा पितामहपिण्डेनसह मधुघृतात्तांवर्तुलंचकृत्वा काश्यपगोत्रपितामहसु  
 कदासपुत्रे पिण्डेनमः इतिकुशमूले पितृतीर्थेनदद्यात् ॥ तेनवसुलोकप्राप्तिः ॥ १ ॥ ततोद्वितीयं प्रेतपिण्डभागं तत्पितामहपिण्डं च  
 गृहीत्वा ॥ काश्यपगोत्रस्यामुकप्रेतस्य द्वितीयपिण्डशकलं काश्यपगोत्रस्य प्रेतपितामहस्य रुद्ररूपस्य पिण्डेनसह संयोजयिष्ये  
 इत्युक्त्वा प्रपितामहपिण्डेनियोज्य काश्यपगोत्र प्रपितामहमुकदास एषतेपिण्डेनमः इतिकुशमध्येदद्यात् ॥ तेनरुद्रलोकप्राप्तिः ॥ २ ॥ पुन  
 स्तृतीयभागमादाय ॥ काश्यपगो० अमुक प्रेतस्य तृतीयं पिण्डशकलं काश्यपगोत्रस्य प्रेतप्रपितामहस्यादित्यरूपस्यपिण्डेनसह संयोज  
 यिष्ये इत्युक्त्वा वृद्धप्रपितामहपिण्डेपूर्ववन्नियोज्य० काश्यपगोत्र वृद्धप्रपितामहमुकदास एषतेपिण्डेनमः इतिकुशग्रेदद्यात् ॥ तेन आदित्य  
 लोकप्राप्तिः ॥ ३ ॥ एवंप्रेतभागानसह पिण्डत्रयं प्रत्येकमेकीकृत्य समवर्तुलंकृत्वा ॥ ततः-एषवोत्तगतः प्रेतः पितरस्तं ददामिवः ॥ शुभं  
 भवतु शेषाणां जायतांचिरजीविनः ॥ १ ॥ इतिपिण्डानभिमृशत् ॥ ( अत ऊर्ध्वकदाचिद्भ्रात्यापिप्रेतशब्देनकार्यः ) ॥ ततस्तूर्णानामा  
 वर्तेन उदङ्मुखोभूत्वा श्वासंनियम्य तेनैवपथापरावृत्य पितृभ्यानमः इतिपिण्डोपरि श्वासमुत्सृजेत् ॥ ततः पूर्वदत्तावेनजनपात्रं



गृहीत्वा ॥ काश्यपगोत्रं पितामहमुकदास अत्रप्रत्यवनेनहवतेनमः इतिपितामहपिण्डोपरिप्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ एवमेव अपितामहवृद्धं  
 प्रपितामहपिण्डोपरिप्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततोनीवीं विंशस्य आचम्यावसंतायनमस्तुभ्यं ग्रीष्मायचनमोनमः ॥ वर्षाभ्यश्चशरत्संज्ञकृतवेच  
 नमः सदा ॥ हेमंतायनमस्तुभ्यं नमस्तेशिशिरायच ॥ माससंक्रमरेभ्यश्च दिवसेभ्योनमोनमः ॥ इतिऋतुरुपापनिपतृन्नमस्तुय्यात् ॥  
 ततः पितृभ्योनमः इतिप्रत्येकंपितामहादिपिण्डोपरिमुत्रत्रयंदत्त्वा कुशादीन्यादाय काश्यपगोत्राः पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपिता  
 महा असुकामुकदासा एतानिवासांसि युष्मभ्यंनमः इत्युत्तरेजेत् ॥ ततः पिण्डानंगंधपुष्पधूपदीपतंबूलदक्षिणादिभिः संपूज्य पिण्ड  
 शेषान्नं पिण्डसमीपेविकिरेत् ॥ ततः सव्यंकृत्वाहस्ताप्रक्षाल्य उरुद्धमुबोदेवात्रपात्रे शिवा आपः संतु इतिजलम् ॥ सौमनस्यमस्तिव  
 तिष्ठणम् ॥ अक्षतंचारिष्ट्वास्तु-इतियवांश्चनिक्षिपेत् ॥ एवमेव (अपसव्येन) पित्रादिपात्रचतुष्टये प्रत्येकंजलपुष्पतिलात् दत्त्वा ॥ काश्यपगोत्र  
 स्यपितरमुकदासस्य सपिण्डीकरणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामिति पित्रेऽक्षय्योदकंदद्यात् ॥ एवमेवपितामहादीनामप्य  
 क्षय्योदकंदद्यात् ॥ ततः(सव्येन) श्राद्धमुखः कृतांजलिर्दक्षिणांदिशंपश्यन् अवोराः पितरःसंतु-इति पठित्वा समाचारात्पूर्वांग्रजलधारां द  
 द्यात् ॥ ततः गोत्रनेवद्वर्त्ता दातारोनोऽभिवद्वर्त्ता संततिश्चवद्वर्त्ता श्राद्धाचनोमाव्यगमद्द्रव्यंचनोऽस्तु ॥ अन्नंचनोबहुभवेदतिथीश्चलभेमहि  
 याचितारश्चनःसंतु माचयाचिष्मकंचन ॥ एताः सत्या आशिषः संतु-इतिब्राह्मणद्वारायाचेत् ॥ ततोऽपसव्येन पिण्डोपरिसपवित्रान्कुशाना  
 स्तीर्थ ॥ पितृभ्योनमः इति तदुपरि दक्षिणात्रांजलधारां दद्यात् ॥ ततः पिण्डानुत्याग्यात्रास्थाल्यानिधापयेत् ॥ पिण्डाधारसंकुदा  
 ङ्छिन्नदमर्नुलुमुकंचवह्नांक्षिपेत् ततोऽवपात्राण्युत्तानीकृत्य सव्येनेवदक्षिणां दद्यात् ॥ तत्रकुशत्रययवजलहिरण्यद्रव्यमादाय ॥

अद्यास्मिन्पितामहादिव्यसंवाधिकामकालसंज्ञकानां विश्वेषादेवानां कृतैतच्छ्रद्धप्रतिष्ठाथमिदं हिरण्यमग्निदेवतमुक्तगोत्रायामुक्तशर्मणे  
 ब्राह्मणायदातुमहस्तुजे इति दद्यात् ॥ ततोऽपसव्यादिनाद्दिगुणभुगुरुशत्रयादि रजतद्रव्यं चादाय ॥ काश्यपगोत्रस्य पितुमुक्तासस्य  
 कृतैतत्सपिण्डीकरणश्रद्धप्रतिष्ठाथमिदं रजतं चन्द्रदेवतमुक्तगोत्रायामुक्तशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहस्तुजे-इति पितृश्रद्धदक्षिणां दद्यात् ॥  
 एवमेव पितामहप्रणितामहश्चर्यपितामहानां क्रमेण श्रद्धदक्षिणां दद्यात् ॥ ( देवैरजतनिषेधः ) ततः सव्येन देवताभ्यः ० इति त्रिजोपत्तावि  
 श्वदेवाः प्रीयतामिति ब्रूयात् ॥ ततोऽपसव्येन द्वादशसजलघटसंकरं कुंभं कुर्यात् ॥ तत्राद्दिगुणभुगुरुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ काश्यपगोत्रस्य स्म  
 न्पितुमुक्तासस्य परलोके क्षुत्पिपासासनिवृत्त्यर्थमिमे द्वादशकुंभाः सात्रोदका नानानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यो दातुमहस्तुजे-इति संकरय्य  
 सुशीतलजलोपेताः सर्वोपस्करसंयुताः एते घटाभयदाताः स्वर्गद्वारं पतिष्ठतामिति पठित्वा यथाचारं दद्यात् ॥ ततः पितृन्विष्टुज्य । श्राद्धी  
 यदीपां न्याणिभ्यां निर्वाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य आचम्य कर्मपूतिकामो विष्णुस्मरेत् ॥ ततः पिण्डानामजं वायसान्वाखादयेत् ॥  
 अग्नौ जले वा क्षिपेत् ॥ ततो बलिकर्म कृत्वा यथाशक्ति दशप्रभृति ब्राह्मणान् आमोत्रेन तोषयेत् ॥ ततोऽतिथिवाधवादिभिः सह स्वयमपि भोजनं  
 कुर्यात् ॥ इतिसापिण्डनश्रद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ अथ द्वादशोहसपिण्डनोत्तरं वैतरणीधेनुनां शय्यादानं च कुर्वति ॥ एकादशाहं सद्ब्राह्मणाला  
 भात् ॥ तद्विधिस्तु पूर्वज्ज्ञेयः ॥ अथ द्वादशानाम् ऊनमासिकादिपंचदशसाम्नोदकुंभदानं तत्र सप्तदशाहं चतुर्दशदिनादारभ्य प्रतिमासं कार्यमात्रत्र  
 तावदाचम्य विष्णुस्मृत्या साम्नोदकुंभमुपनीय ॥ कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ देशकालौ संकीर्त्य ॥ काश्यपगोत्रस्य पितुमुक्तासस्य

? गोपिलः-यस्य सप्तसप्तर्वाविहता तु सपिण्डता । विधिवत्तानि कुर्वति पुनः श्राद्धानि षोडश-इति ।

क्षुत्पेषांशान्यर्थं यावद्दत्तरं तावन्नतिमासं सान्नोदकुम्भदानंकारयेत्ये इति संकरांकुर्यात् ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा दक्षिणामुसः पानित्वाम  
जानुद्विगुणभुशकुशत्रयतिलजलान्यादाय ॥ अमुकगोत्रपितरमुकदास अनमासिकसान्नोदकुम्भश्राद्धे इदमासनंतेनमः इति पित्रेभ्यो  
करूपमासनं तिलजलसहितदक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥ पुनर्द्विगुणभुशकुशत्रयान्यादाय ॥ काश्यपगोत्रपितरमुकदास अनमासिकश्राद्धे  
अयं सान्नोदकुम्भस्तुभ्यंनमः इतिसंकल्प्य ब्राह्मणायदद्यात् ॥ ततः अथकृतैतत्सान्नोदकुम्भदानप्रतिष्ठाभिर्दत्तं चंद्रवतं यथानामगोत्राय  
ब्राह्मणाय दक्षिणादुत्तमदुत्सृजे-इति दक्षिणादद्यात् ॥ एवमेवमासिकादिचतुर्दशश्राद्धनिमित्तकसान्नोदकुम्भदानंकुर्यात् ॥  
प्रतिमासंकरणाशक्तौ पुत्रजन्मादिवृद्धिप्राप्तौ अनयाणमासिकैत्रैपाक्षिकेवा सप्तदशेऽहनियथाचारं सर्वाण्यपकृष्यतंत्रेणकुर्यात् ॥ (बृद्ध्युत्तर  
निषेधनात्) ॥ तत्रप्रयोगः ॥ देशकालौसंकीर्त्य ॥ अमुकगोत्रस्यपितरमुकदासस्यक्षुत्पेषांशान्यर्थमुनमासिकं १ मासिकं २ त्रैपाक्षिकं ३ द्वि  
तीयमासिकं ४ तृतीयमासिकं ५ चतुर्थं ० ६ पंचमं ० ७ अनयाणमासिकं ८ षणमासिकं ९ सप्तमं ० १० अष्टमं ० ११ नवमं ० १२ दशमं ० १३  
एकादशं ० १४ अनाब्दिकं १५ च एतानिपंचदशसान्नोदकुम्भश्राद्धानिस्वस्वकालकर्तव्यानि इदानीममुकुलेभविष्यद्वृद्धिनिमित्तत्वात्सर्वाण्यप  
कृष्यसंकरणेनविधितंत्रेणसद्यः करिष्ये इतिसंकल्पयेत् ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा द्विगुणभुशकुशत्रयान्यादाय ॥ काश्यपगोत्र पितरमुक  
दास अनमासिकाधूनाब्दिकान्तपंचदशसान्नोदकुम्भश्राद्धनिमित्तकमिदमासनं पंचदशवाविभज्यतुभ्यंनमः इत्यासनदक्षिणाग्रमुत्सृजेत् ॥  
पुनः काश्यपगोत्र पितरमुकदास अनमासिकाधूनाब्दिकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तकानि इमानिपंचदशसान्नोदकुम्भानितुभ्यंनमः इतिसंक

१ द्वादशहोत्रेणमासे त्रिपक्षेवाथबत्सरं । उदकुम्भाभ्यदत्तव्या मागतस्यसुवायवे ॥ इतिगण्डव्या ।

लय दानप्रतिष्ठादक्षिणसहितपंचदशसब्रोदेकुं भानिब्राह्मणभयोदद्यात् ॥ इतिसब्रोदेकुं भदानम् ॥ अथऊनमासिकादिपंचदशश्राद्धानि ॥  
 तावच्चतुर्दशेऽहनि । ऊनमासिकोद्दिष्टकृत्वा क्रमेणमासिकादिश्राद्धानिकुर्यात् ॥ प्रतिमासंकरणाऽशौकौपुत्रजन्मविवाहादिद्विष्टाप्ता  
 ऊनमासिके त्रैपक्षिके वा ऊनषणमासिके एकद्वित्रिचतुर्दशे भौमाकर्ममंदनातिथियुग्मैकपादद्विषादत्रिषादचतुर्दशीशुक्लवारकर्तृनक्षत्रभद्रा  
 व्यतीपातादिवर्जिते एकस्मिन्नेवादिने पंचदशश्राद्धानिकुर्यात् ॥ तत्रप्रयोगः ॥ श्राद्धपूर्वदिने एकभक्तादिनियमविधाय श्राद्धदिने प्रातः  
 स्नात्वा घौतवाससीपरिधाय नित्यकार्यकृत्वा मध्याह्ने पुनः स्नात्वा गोमयादिना संस्कृतं श्राद्धदेशमागत्य तिलतैलेन दंष्ट्रं प्रज्वाल्य स्वासने  
 प्राङ्मुख उपविशेत् ॥ ततः पवित्रधारणं कृत्वा आचम्य अपवित्रः पवित्रो वा० इति पठित्वा पुंडरीकाक्षः पुनातु इति जलेन द्रव्याणि स्वात्मा  
 न च प्रोक्षेत् ॥ भूम्यै नमः ॥ गयायै नमः ॥ गदाधराय नमः इति नत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्य अद्य कारश्यपगोत्र  
 स्य पितृमुकदासस्य यावत्सांवत्सरं तावत्क्षुत्तृत्यर्थमनमासिकं १ मासिकं २ त्रैपक्षिकं ३ द्वितीयमासिकं ४ तृतीयं ५ चतुर्थं ६  
 पंचमं ७ ऊनषणमासिकं ८ षष्ठमासिकं ९ सप्तमं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकादशमासिकं १४ ऊनाब्दिकं  
 १५ च एतानि पंचदशश्राद्धानि स्वस्वकाले कर्तव्यानि इदानीममकुलं भविष्यद्विनिमित्तत्वात् सवर्ण्यपकृष्य एकोद्दिष्टविधिनतंत्रेण

१ गालवः-ऊनषणमासिकं षष्ठे मासाद्धैतुममासिकम् ॥ त्रैपक्षिकं त्रिषेस्य दूनब्दं द्वादशे गथा-इति । २ एकद्वित्रिदिने लूनं त्रिभागो न एव ॥ श्राद्धान् ऊनाब्दिकादीनि  
 कुर्यादित्याह गौतमः-इति । ३ हेमाद्रौ गार्ग्यः-नंदायां भार्गवदिने चतुर्दशी त्रिषुष्करे ॥ ऊनश्राद्धं न कुर्वीत इती पुत्रपनक्षयात्-इति । ४ माधवीये शांल्यायनिः-तापदी  
 करणादर्वागपकृष्य कृता न्यापि ॥ पुनरप्यपकृष्यते वृद्धचरानिषेधनादिति ॥ निषेधश्चात्पादनेनोक्तः-निवृत्त्यवृद्धिर्न त्रु मासिकानि नतंत्रयेदिति ।

सद्यः करिष्ये इतिसंकल्प्य विष्णुस्मरेत् ॥ ततोऽपमव्यंकृत्वा । दक्षिणामुलः पातितवामजानुस्तिलगौरसर्षपानृहीत्वा नमोनमस्तेगां विंद पुराणमुखोत्तम ॥ इदंश्राद्धद्विपक्रिश रक्षतां सर्वतोदिशः ॥ इतिसर्ववत्रविकीर्य निर्विबंधं कुर्यात् ॥ ततो मोटकतिलजलान्यादाय काश्य पणोत्र पितरमुकदास ऊनमासिकार्थनाद्विकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तकैर्काद्विष्टश्राद्धे इदमासनंतुभ्यनमः इत्युच्चार्य पितृतीर्थेन मोटक रूपदक्षिणग्रकशत्रयात्मकमासनमुत्सृजेत् ॥ ततः तिलेभ्योनमः इतितिलान्विकीर्य अर्घ्यपात्रोपरिपवित्रंधृत्वा तत्र अब्रोनमः इतिज लंप्रक्षिप्य तिलेभ्योनमः इतितिलान् तृष्णंगंधधुष्पनिक्षिपेत् ॥ ततोऽर्घ्यपात्रसंपत्तिरस्तु इतिपठित्वा अर्घ्यपात्रं वामहस्ते कृत्वा तत्र स्थपवित्रं पलाशपत्रे धृत्वा अब्रोनमः इत्यर्घ्यपात्रमभिमंथ्य मोटकादीन्यादाय अद्य काश्यपगोत्र पितरमुकदास ऊनमा सिकार्थनाद्विकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तक एतेहस्ताघोनमः इत्युच्चार्य दक्षिणकणे पितृतीर्थेन पवित्रोपरि सावशेषम् अर्घदद्यात् ॥ अर्घ्यपात्रंच पितृवामपार्श्वे पित्रेस्थानमसीतिन्युब्जिकुर्यात् ॥ दक्षिणादानपर्यंतं न चालयेत् ॥ ततो गंधधुष्पधूपदीपादिकं धृत्वा मोटकादीन्यादाय अद्यकाश्यपगोत्र पितरमुकदास ऊनमासिकार्थनाद्विकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तकानि एतानि गंधधुष्प धूपदीपांतंबूवासोसितुभ्यनमः इद्युत्सृजेत् ॥ ततः अर्चनं संपूर्णमस्तिन्युक्त्वा गौरमृत्तिकया जलेनवा आसनं वेष्टयित्वा र्घ्य मंडलंकुर्यात् ॥ अत्रपरकीर्यभूमौश्राद्धकरणे इदमंत्रंभूत्वापिपितृभ्योनमः इतिघृतादिभुक्तमंत्रदद्यात् ॥ ततो भोजनपात्रे उष्णमन्नं सद्युत्तम अनेकव्यजनयुतं सुशीतलजलसहितं यथावत्पारिविष्यमधुदत्त्वा मधुमधुमाध्वन्याभिमंत्रयेत् ॥ ततः अन्नपात्रं न्युज्जपां णिभ्यांव्यस्ताभ्यां स्पृष्ट्वा विष्णवेनमः इतिपठित्वा स्वाह्मधुमनसम् विष्णवेनमः इत्यन्नेनिवेश्य इदमन्नम् इमाआपः इदमा

ज्यम् एतत्सर्वकव्यमिति पठित्वा तिलेभ्यो नमः । इत्यत्र पात्रपरितस्तिलान्विकीर्य वामकरणपात्रमन्यजन्दक्षिणकरणमोटकादीन्या-  
 दाय अद्य काश्यपगोत्रपितरमुकदासऊनमासिकाधूनाब्दिकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तकमिदमन्नसोपस्करकव्यम् अमृतहपतुभ्यं नमः इत्यु-  
 दकंपितृतीर्थेन पित्रासनवामभोगे भूमौ क्षिपेत् ॥ ततः अन्नहीनं क्रियहीनं विधिहीनं च यद्रवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य मधुमधुमधि-  
 त्तिजपेत् ॥ ततः सप्तव्याघ्रादृशणेषु मृगाः कालं जरे गिरौ । चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसिमानसे ॥ १ ॥ तेभिजताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेदपारगाः ॥  
 प्रस्थितादूरमध्वानं ग्रथेत्तेभ्योऽस्मीदृथा ॥ २ ॥ इति पठित्वा अन्यानि समाचरु विस्तव प्रभृतीं नियथाशक्तिजपेत् ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधौ भूमिप्रो-  
 क्ष्य तत्र दक्षिणग्रंथुशत्रयमास्तीर्य सर्वप्रकारमन्नसंव्यंजनमुद्धृत्य सतिलमेकीकृत्य अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले ममा ॥ भूमौ देतेन तु  
 प्यन्तु तृप्ता यांतु परांगतिम् - इति कुशोपरितद्वर्गविकीर्य (सव्येन) आचम्य हारं स्मृत्वा मधुमधुमध्वित्तिजपेत् ॥ ततोऽपसव्येन उच्छिष्टसन्निधौ  
 चतुरस्रदक्षिणघ्णुवंस्थानं निर्माय तन्मध्ये दर्भेपि जूलीमूलनदक्षिणाग्रां दशमात्रं रिखां कृत्वा दर्भेपि जूलीमुत्तरस्यादिशिशिपेत् ॥ ततो  
 ज्वलदुल्बुकरैखोपरि आभियन्त्वा दक्षिणतो निदध्यात् ॥ ततः उपमूलसकृत् लूतकुशत्रयरैखोपरि स्तीर्त्वा देवताभ्यः ० इति त्रिः पठेत् ॥ ततः सतिलज-  
 लपात्रं गृहीत्वा अद्य काश्यपगोत्रपितरमुकदास ऊनमासिकधूनाब्दिकान्तपंचदशश्राद्धपिण्डस्थानेऽत्रावने निक्षते नमः इति कुशो-  
 परि अवने जनं दद्यात् ॥ किंचिज्जलात्रे अवशेषेत् ॥ ततो गृह्यकेन वा पायसेन सकुम्भे वा यवपिष्टेन मध्वाज्यतिलव्यंजनसहितं बिल्वोपमं पि-  
 ण्डं निर्माय मधुघृताभ्यामभिचार्य मोटकाद्युत्तमादाय अद्य काश्यपगोत्रपितरमुकदास ऊनमासिकाधूनाब्दिकान्तपंचदशश्राद्धनिमि-  
 त्तक एषे तोपिण्डो नमः - इति सव्योपगृहीत दक्षिणहस्तेनावने जनस्थाने पिण्डं दद्यात् ॥ ततो लेपभागमुजस्तृप्यतु - इति दर्भमूले करं प्रोञ्च्य

हस्तौ प्रहास्य सव्येनाचम्यद्वर्हिस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना पित्रेन इति पठित्वा वामावर्तेनोदङ्मुखो भूत्वा प्रीतमनाः श्वासं नियम्य तेनैव पथा  
 परावृत्य पित्रेनमः इति श्वासमुत्सृजेत् ॥ ततः पूर्वदत्तावने जनपात्रजलेन अद्य काश्यपगोत्रपितरमुकदासअप्रत्ययवने निक्ष्वेत नमः इति  
 पिण्डोपरि प्रत्ययवने जनदत्त्वा नोर्वी विंशस्य सव्येनाचम्य (अपसव्येन) वसताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च नमो नमः ॥ वर्षाभ्यश्च शरत्संज्ञकृते वचनमः  
 सदा ॥ १ ॥ हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिराय च ॥ माससंवत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्यो नमो नमः ॥ २ ॥ इति कृताञ्जलिः प्रार्थयेत् ॥ ततः एतत्ते वासा  
 नमः इति पिण्डोपरि सप्तमूर्णां दशां वा दत्त्वा काश्यपगोत्रपितरमुकदास एतत्ते वासानम इत्युत्सृजेत् ॥ ततः पितरमुद्दिश्य तदीयपिण्डे गन्धपुष्पद्रुप  
 दीपतंबूलदक्षिणादीनि दत्त्वा पिण्डशेषान्त्रिपिण्डसमीपे विकिरेत् ॥ ततो भोजनपात्रेशिवा आपः संतु इति जलं सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम् ॥ अक्षतं  
 चारिष्टमस्त्विष्यवांस्तिलंश्च दद्यात् ॥ ततः अद्य काश्यपगोत्रस्य पितुः मुकदासस्य जनमासिकाद्वृणां विद्वकान्त्पंचदशश्राद्धादिभित्तकदं  
 तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः प्राङ्मुखः (सव्येन) कृताञ्जलिग्रीष्मोद्गीयात् ॥ अघोरः पिताऽ  
 स्तु इति ॥ ततः गोत्रनोर्वद्धतां दत्तारो नोऽभिर्वद्धतां संततिश्च द्धतां श्रद्धावनेनाव्यगमद्बहुदयंचनोऽस्तु ॥ अन्नंचनो बहुभवेदतिथिश्च लभे  
 महि ॥ याचितारश्च नः संतुमाचयाचिष्मकंचन ॥ एताः सत्या आशिषः संतु इति वदेत् ॥ ततोऽपसव्येन पिण्डोपरि सप्तविंशश्रयमा  
 स्तीर्थ्य पित्रेनमः इति दक्षिणां जलघारां दद्यात् ॥ ततः पिण्डमुत्थाप्य स्थाल्यानि धाय अवघ्राणकृत्वा पिण्डाद्यस्तुतदमं  
 चोत्सुकं वह्नीनिक्षिप्य अर्घपात्रमुत्तानीकृत्य यथाशक्ति रजतदक्षिणां दद्यात् ॥ अद्य काश्यपगोत्रस्य पितुः मुकदासस्य कृततदूनमासिका  
 द्धूनां विद्वकान्त्पंचदशश्राद्धादिभित्तकौ द्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चंद्रवैतममुकगोत्रायामुक्थमपि तत्र ब्राह्मणाय दक्षिणां तेन दत्तुमहमुत्सृजे

इतिदद्यात् ॥ ततः अभिरम्यतामिति विमृज्य देवताभ्यः इति त्रिपठित्वा रक्षादीर्णनिर्वापयेत् ॥ ततः (सव्येन) हस्तोपादेः प्रशाल्य  
 आचम्य प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्येषु यत् ॥ स्मरणादेव तद्दिग्गोः संपूर्णस्यादिति श्रुतिः—इति पठित्वा कर्ममूर्त्तिकामो विष्णुं  
 स्मरेत् ॥ ततः पिण्डंगमजं वायसान्वादादयेत् ॥ अग्नौ जले वा क्षिपेत् ॥ ततो वैश्वदेवलिङ्गमणीकृत्वा श्राद्धद्रव्याणि ब्राह्मणाय प्रातिपाद्या  
 यथाशक्ति ब्राह्मणान् आमन्त्रेन तोषयेत् ॥ ततः यस्य स्मृत्या वनामोत्तया तपोयज्ञा क्रियादिषु न्यूनं संपूर्णं तां याति सद्यो वेदं तमच्युतम् ॥ १॥ इति प  
 ठित्वा अतिथि सुतभृत्यबांधवादिभिः सह स्वयं भुंजीत ॥ ततो मंगलचरणं कुर्यात् ॥ एवमेव मातृपितृव्यभ्रात्रादि श्राद्धप्रयोगः ॥ इति शूद्राणाम्  
 ऊनमासिकाद्यनादिकान्तपंचदशश्राद्धनिमित्तकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः ॥ ७॥ अथ शूद्रसंवात्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपद्धतिः ॥ तावत्क्षयाह पूर्वदिने नि  
 राभिषमे कवारं मुक्त्वा तद्दिने रात्रौ प्रदोषान्ते विप्रनिमंत्रणं कृत्वा श्राद्धदिने प्रातः श्वेतवस्त्रगुलेन स्नान्त्वा नित्यावश्यकं समाप्य श्राद्धभूमिं  
 गोमयोदकेनोपलिप्य ज्वलद्गौरैः संशोध्य गौरमृत्तिकायाच्छाद्य तिलैर्गौरसर्पैश्च विकीर्य वस्त्रादिनावेषयित्वा तत्र श्राद्धसामग्रीं संपाद  
 येत् ॥ ततो मध्याह्ने पुनः स्नान्त्वा शुक्लवाससी परिधाय श्राद्धभूमिमागत्यासनसमीपे तिलैर्नदीपं प्रज्वाल्य स्थापयेत् ॥ दीपरक्षाद्विजे  
 न कार्या ॥ काकरुक्षुटादीञ्छूद्राहंतं न पसारयेत् ॥ ततः कर्ता स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सव्येनोचम्या ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्ववस्थान्तो  
 पि वा ॥ यस्मिन् पुंडरीकाक्षं सब्राह्मण्यतरं शुचिः ॥ १॥ पुंडरीकाक्षः पुनातु इति पठित्वा कुशत्रयानीतजलेन श्राद्धदेयद्रव्याणि स्वात्मानं च  
 सिञ्चेत् ॥ ततः वेषणव्यैनमः ॥ अक्षय्यायैनमः ॥ इति नत्वा भगवत्यै गयै नमः ॥ भगवते गदाधाराय नमः  
 इति मनोवाक्कायै नमस्कां कुर्यात् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौ सक्त्यै अद्यामुक्तगोत्रस्य पितुरमुक्तदासस्य सौवत्सरीकैको



दिष्टश्चाद्धमहंकारिष्ये इतिसंकरत्य विष्णुर्विष्णुर्विजिपित्वा ॥ देवताभ्यःपितृभ्यश्चेतित्रिःषेठ् ॥ ततोऽपसव्यंकृत्वा द  
 क्षिणामुखः पातितवामजालुः तिलगौरिसर्पपान्गृहीत्वा नमोनमस्तेगोविंद पुण्यपुरोत्तम ॥ इदंश्चाद्धद्व्यंशैश्च रक्षतांसर्वतोदिशः ॥ १ ॥  
 अप्रव्यात्ताःपितृगणा° इत्यादिपठित्वा पूर्वादिदिक्षु अवस्ताद्धूर्ध्वकोणेषुचसम्बन्ध तिलान्नौरिसर्पपान्गृहीत्वा वामे दक्षिणेवा कटिभागे  
 नीविबंधुकुर्यात् ॥ ततः आसनादिदानम् मोटकतिलजलान्यादाय ॥ अद्यक्राश्रयगोत्रपितृसुकदास सांवत्सरिकैकोदिष्टश्चाद्धे इदमासनं  
 तुभ्यंनमः इत्युच्चार्यपितृतीर्थेन मोटकरूपंदक्षिणग्रामासनमुत्सृजेत् ॥ ततः तिलेभ्योनमः इतितिलान्विकीर्य अर्घपत्रोपरि  
 पवित्रंधृत्वा तत्र अद्भ्योनमः हतिलजलंश्लिष्य तिलेभ्योनमः इतितिलान् तूष्णगंधपुष्पे निक्षिपेत् ॥ ततोऽर्घपत्रांसर्पानिस्तु इतिपठित्वा  
 अर्घपत्रां वामहस्तेकृत्वा तत्रस्यंपवित्रं पलाशपत्रेधृत्वा अद्भ्योनमः इत्यभिषंड्य मोटकादीन्यादाय काश्रयगोत्रपितृसुकदास  
 एषते हस्तावोनमः इत्युच्चार्य दक्षिणकरणे पितृतीर्थेन पवित्रोपरिसावशेषमवर्धेदद्यात् ॥ अर्घपत्रांच पितृवामपार्श्वे पित्रेस्थानमसी  
 तिन्युब्जीकुर्यात् ॥ दक्षिणादानपर्यंतं नचालयेत् ॥ ततोऽगंधपुष्पधूपदीपादिकृत्वा मोटकादीन्यादाय अद्यक्राश्रयगोत्रपितृसुक  
 दास एतानिगंधपुष्पधूपदीपतारबूलवासान्सितुभ्यंनमः इत्युत्सृजेत् ॥ ततः अर्चनसंपूर्णमस्त्वितिपठित्वा गौरिसृत्तिकयजलेनधा  
 आसनंषष्ठ्यन्यार्घमंडलंकुर्यात् ॥ ( अत्रपरकीयभूमौश्चाद्धकरणे इदमन्नमेतदूस्वामिपितृभ्योनमः इतिघृताद्यिक्तमन्नंदद्यात् ) ॥  
 ततोभोजनपात्रे उष्णमन्नं सघृतन्यंजनं सुशीतलजलसहितम् आमन्त्रवायथावत्पारिविष्य मधुदत्त्वा मधुमधुमध्वित्यभिभत्रयेत् ॥  
 ततः अन्नपात्रं न्युब्जपाणिभ्यांग्यस्ताभ्यास्पृष्ट्वा विष्णवेनमः इतिपठित्वा स्वाहुट्टमनखमन्त्रे निवेश्य इदमन्नम् इमाआपः इदमाज्यम्

एतत्सर्वकव्यम् इतिपठित्वा तिलेभ्योनमः इतितिलांस्विकीर्य वामकरणपात्रं स्पृशन् दक्षिण करेण मोटकादीन्यादाय अद्य क्राश्य  
 पगोत्र पितरसुकदास सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धे इदमन्नसोपस्करं कव्यम् अमृतरूपं तुभ्यं नमः इत्युदकं पितृतीर्थेन पित्रासनाद्रामभागेभूमे  
 क्षिपेत् ॥ ततः अन्नहानिक्रियाहीनं विविहीतं च यद्देवेतात्सर्वमच्छिद्रमस्तु इतिप्रार्थ्य मधुमधुमध्विचिचजपेत् ॥ ततः सप्तव्याधादर्शणेषु  
 मृगाः कालंजरीगैराः चक्रवाकाः शार्ङ्गापि हंसाः सरसिमानसे ॥ तेभिजाताः कुलक्षेत्रे ब्राह्मणवेदपारगाः ॥ प्रस्थितादूरमध्वानं यूयं तेभ्योऽवसा  
 दय ॥ २ ॥ इतिपठित्वा अन्यान्यपि सप्तार्चिकृचिस्तप्रभृतीनियथाशक्तिपठेत् ॥ ततः उच्छिष्टसन्निधौ भूमिप्रोक्ष्य तत्र दक्षिणाग्र कुशत्रयमा  
 स्तीर्य व्यंजनघृततिलसहितमन्नगृहीत्वा अग्निदग्वाश्वयेजीवा येयदग्वाः कुलेमम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तुसायान्तु परांगतिम् इतिकुशोप  
 रितदक्षविकीर्य सव्येनाचम्य हारिस्तृत्वा मधुमधुमध्विचिचजपेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना उच्छिष्टसन्निधौ चतुस्रं दक्षिणपुंस्थानं निर्माय  
 तन्मध्ये दर्भापज्जलीमूलेन दक्षिणाग्रां प्रादेशामन्नाखिवां कृत्वा दर्भापिज्जलीमुत्तरस्यादिशिर्शिषेत् ॥ ततोऽज्जलदुलुभूखोपरिआमयि  
 त्वा दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ ततः उपमूलसकृच्छूनुकुशत्रयखोपरिस्तीर्त्वा देवताभ्यः ० इतित्रिपठेत् ॥ ततः सतिलजलपात्रं गृहीत्वा अद्य क्राश्य  
 पगोत्रपितरसुकदास अत्रावनेनिक्षतेनमः इतिकुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ किञ्चिजलपात्रे अवशेषयेत् ॥ ततो गृहपाकेन वा पायसेन सकृ  
 धिर्वा यवपिष्टेन मध्वाज्यतिलव्यंजनसहितं बिलोपमपिण्डं निर्माय मधुघृतभ्यामभिवात्य मोटकाद्युत्तमादाय अद्य क्राश्य पगोत्रपित  
 रसुकदास सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धे एतपिण्डेनमः इतिसव्योपगृहवदक्षिणहस्तेनावनेनमः पण्डं दद्यात् ततोलेपमागमुजस्तु  
 प्यन्तु इति दर्भमूलेकं प्रोञ्च्य हस्तौ प्रक्षाल्य सव्येनाचम्य हारिस्मरेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना त्रिनमः इतिपठित्वा वामावनेनोदुम्भूखोभूत्वा

प्रीतमनाःश्रांसंनियम्य तेनैवपथापरावृत्य पित्रेनम इतिश्वासमुत्सृजेत् ॥ ततः पूर्वदत्तावनेजनपात्रजलेन अद्यकाश्यपगोत्रापितरमुकदास  
अन्नप्रत्यवेननिश्चतनमः इतिपिण्डोपरिप्रत्यवेनजनदत्त्वा नीर्विविस्त्र्य सव्येनावय ( अपसव्येन ) वसंतायनमस्तुभ्यं ग्रीष्मायचनमो  
नमः।वर्षाभ्यश्चरस्तद्गृहवचनमःसदा॥१॥हेमंतायनमस्तुभ्यंनमस्तेशिरायच।माससंवत्सरेयश्चदिवसेभ्योनमोनमः॥२॥इतिवृताज  
लिः पठेत् ततः एतत्तोपितवांसोनमः इति पिण्डोपरि त्रिगुणितमूत्रमूर्णा दशावा दत्त्वा काश्यपगोत्रापितरमुकदास एततोवांसोनमः  
इत्युत्सृजेत् ॥ ततः पितरमुद्दिश्य तदीयपिण्डे गंधपुष्पधूपदापताबूलदक्षिणादीनिदत्त्वा पिण्डशेषेन्नापिण्डसमीपे विकीरेत् ॥ ततोभोज  
नपात्रे शिवाआपः संतु इतिजलं सौमनस्यमस्तु इतिपुष्पम् अक्षतंचारिष्टं चास्तु इतियवतिलंश्चदद्यात् ततः अद्यकाश्यपगोत्रस्य  
पितुरमुकदासस्य सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकप्रक्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्यदेकंदद्यात् ॥ ततः प्राङ्मुखः ( सव्येन ) वृताज  
लिगशिषो गृह्णीयात् ॥ अवगारः पिताऽस्तु इति ॥ ततः गोत्रंनोवर्द्धतां दातारोनोभिर्वर्द्धतां संततिश्चवर्द्धतां श्रद्धाचनोभाव्यगमद्बहुद्वय  
चनोऽस्तु।अन्नचनोबहुभवेदतिथीश्चलेभेमहि।याचितारश्चनःसंतुमाचयाचिष्मकंचन।एताः सत्या आशिषः संतु इतिवेदेत्।ततोऽपसव्येन  
पिण्डोपरि सपवित्रकुशत्रयंधृत्वा पित्रेनमः इतिदक्षिणाग्रांजलधारांदद्यात् ॥ ततः अवर्षपात्रमुत्तानिहृत्य यथाशक्तिरजतदक्षिणांदद्यात् ॥  
अद्यकाश्यपगोत्रस्यपितुरमुकदासस्य कुतैतत्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठाधर्मिंदत्तंचंद्रैवतमुक्तागोत्रायामुक्ताशरणेनब्राह्मणायदक्षिणा  
त्वेनदातुमहमुत्सृजे इतिदत्त्वा पिंडमुत्थाप्य स्थाल्यानिधाय अवघ्राणकृत्वा पिण्डाधस्तुतदर्भंचोत्सुकंचवह्नाक्षिपेत् ॥ अभि  
रम्यतामितिबिभृज्य देवताभ्यः० इतित्रिःपठित्वा रक्षादीपनिर्वापयेत्॥ततः ( सव्येन ) हस्तौपादौप्रशास्य आचम्य प्रमदादितिपठित्वा कर्म

पूतिकांमो विष्णुस्मरेत् ॥ ततःपिण्डं गामजं वायसान्वा खादयेत् ॥ अग्नौ जलेयाक्षिपेत् ॥ ततो वैश्वदेवबलिकर्मणी कृत्वा श्राद्धद्रव्याणि  
ब्राह्मणाय प्रतिपाद्य यथाशक्ति ब्राह्मणान् आमन्त्रेन तोषयेत्ततोऽतिथिमुत्तम्यबाधवादिभिः सह स्वयं भुंजीत ॥ एवमेव मातृभ्रातृ  
पितृव्यादिश्राद्धप्रयोगः ॥ इतिश्रीश्राद्धप्रकारेशुद्धश्रयाहकोटिष्टश्राद्धप्रद्वितिः समाप्ता ॥ ७४ ॥ ७४ ॥ ७४ ॥

॥ अथशुद्धस्यपार्वणश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्रतावत्पूर्वदिनकृत्यम् ॥ कर्तापूर्वद्युर्निरामिषमेकवारंभुक्त्वा तद्दिनरात्रौप्रदोषान्ते असंभवे प्रातर्वा  
श्राद्धारभसमयेवा यथावकाशं विप्रग्रहंगत्वा ब्राह्मणानिमंत्रणंकुर्यात् ॥ ततः श्राद्धकर्त्ता द्विभोजनं दूग्गमनं मैथुनं भारोद्धहनं श्रमं  
हिंसां क्रोधं त्वरां प्रमादं कलहं क्षौरं च वर्जयेत् ॥ शुचिः सत्यवादी क्षमी ब्रह्मचरीचर्भवेत् ॥ अथश्राद्धदिनपूर्वाह्नकृत्यम् ॥ कर्ताब्रह्मे  
मुहूर्ते उत्थाय यथोपदेशं शौचविधिंकृत्वा आचम्यदत्तधावनं नतुकुर्यात् ॥ ततो नद्यादौस्नात्वा धौतवाससिपरिधाय नित्यकर्मस  
माप्य श्राद्धभूमिगोमयादकेनोपालय्य गौरमृत्तिकयाऽऽच्छाद्य तिलगौरसर्षपैश्चविक्रीत् ॥ तत्रश्राद्धसामग्र्यांसंपाद्य अपराह्णे स्नात्वाशुक्ल  
वाससी द्वेपरिधाय ब्राह्मणैः सहश्राद्धभूमिमागत्य आसनानिदत्त्वा देवब्राह्मणान्प्राङ्मुखान्पितृब्राह्मणानुदङ्मुखान्वातुपवेशयेत् ॥ तदभावे  
कुशमयद्विजान् वास्थापयेत् ॥ ततः प्रत्यसनसमीपे तिलतैलेनदीपंप्रज्वाल्य काककुक्कुटदीपंश्राद्धपहंतुनपसारयेत् ॥ दीपश्राद्धिजैवका  
र्यां श्राद्धदेशावरणंचकुर्यात् ॥ ततः कर्तास्वासने प्राङ्मुखउपविश्य सव्येनाचम्य कमपात्रजलेनप्रपूय गंधपुष्पकुशान्निक्षत्वा तजलेन  
अपवित्रः पवित्रावा० इतिपुंडरीकाक्षायनमः० इतिश्राद्धीयद्रव्याणिस्वात्मानंचप्रोक्षयेत् ॥ ततः वैषण्येनमः काश्यप्येनमः अक्षरयाये

१ सचोपदेशंब्राह्मणपञ्चादिनयथाशक्या कारयेत् इति मदनपालः तत्र ॥ अनियतस्य धर्मवाऽप्योगात्तेन श्रद्धावागमनेतिन इति गौडग्रंथे दक्षोक्तर्हीहिरभाष्यादिसंवादीच्छ

शचारात्र माध्यंदिनशाखयोच्यतेइति ।

नमः भूभ्योनमः इतिभूमिंनत्वा श्राद्धशंशयात्मकत्वेन तेदकदेशस्थं गदाधरंचध्यात्वा तयोः भगवत्यैगयायेनमः भगवतेगदाधरायनमः इतिमनेवाक्कार्येनमस्कारंकुर्यात् ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय देशकालौसंकीर्त्य अद्यामुक्तगोत्राणामस्मन्तिपुत्रपितामहयपितामहानाममुक्तमुक्तदासानां तथाऽस्मन्यमातमहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुक्तमुक्तदासानां मदैवंपणवणश्राद्धं पितृवृत्तिकामोहंकरिष्ये-इतिसंकरय्य विष्णुत्रिभूतेतु ॥ ततो देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यएवच ॥ नमःस्वाहायैस्वधायै नित्यमेवमनमः-इतित्रिः स्मृत्वा यवतिलगौरसर्षपान्गहीत्वा ॥ नमोनमस्तेगोर्वेद पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदंश्राद्धदृष्यकेश रक्षतांसर्वतोदिशः ॥ १ ॥ तिलारक्षंतसु राहभारक्षंतुराक्षसात ॥ वह्निर्वैशोत्रियंरक्षदतिथिःसर्वक्षकः ॥ २ ॥ इतिपठित्वा अग्निपवाताःपितृगणाः प्राचारंक्षतुर्मेदिशम् ॥ तथाबर्हिर्हृदः पान्तु याम्योयेपितरःस्थिताः ॥ ३ ॥ प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमापिसोमपाः ॥ अधोऽध्मोपिकोणेषु हविष्मन्तश्चसर्वदा ॥ ४ ॥ इत्यादि भिरधस्तादूर्ध्वकोणेषु सर्वत्रतिलान्गौरसर्षपांश्च विकीर्य (अपसव्येन) वामेदक्षिणेत्राकटिभागे यथाचारं नीविंबोधिविधेयः ॥ अथा सनादिदानम् ॥ तत्रादौ उदङ्मुखः सजघनंदक्षिणं जान्वाच्य (सव्येन) कुशत्रयमादाय अद्यास्मान्नित्रादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः पुरूरवा द्रैवसंज्ञका विश्वेदेवा इदमासनं वोनमः इत्युच्चार्य्य देवतीर्थेन पूर्वान् कुशत्रयमुत्सृजेत् ॥ एवंमातामहादिदेवैर्योऽपिदद्यात् ॥ ततो दक्षिणामुखः (अपसव्येन) वामंजान्वाच्य द्विगुणभुक्तभुक्तत्रयतिलजलान्यादाय अद्यकारभ्यगोत्रास्मान्तिपुत्रपितामहप्रपितामहामुक्ता मुक्तदासा इदमासनं त्रैयात्रिभज्य युष्मभ्यनमः इत्युच्चार्य्य पितृतीर्थेन मोटक रूपमासनं दक्षिणग्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेव माताम हादिभ्योप्यासनं दद्यात् ॥ ततः सव्यादिना सयवकरः पुरूरवाद्वैवसंज्ञकान्विश्वान्देवानवाहायिये इत्युच्चार्य्य आगच्छतुमहाभागा विश्वेदेवामहाबलाः ॥ येचात्रव्योजिताःश्राद्धे सावधानाभवंतुः॥इत्यावाह्य यवेभ्योनमः इतियवान्विक्रिेत् ॥ ततोऽप्यसव्यादिनासतिलहस्तः

पितृनावाहयिष्ये मातामहार्दशावाहयिष्ये इत्युक्त्यातिलेभ्योनमः इतितिलान्त्रिकरेत्ततः (सव्येन) देवपात्रद्वये (अपसव्येन) पितृपात्र  
 द्वयं च दर्भपात्रत्रिमैकं कथृत्वा अद्भ्योनम इति प्रत्येकं जलं प्राक्षिप्य देवपात्रयोः यवेभ्योनमः इति यवान् पितृपात्रद्वये तिलेभ्योनमः इतितिलान्त्र  
 क्षिप्य सर्वत्रतूष्णीमेव गंधपुष्पाणि निक्षिपेत् ॥ ततोऽर्घपात्राणि संपन्नानि इत्युक्त्वा (सव्येन) प्रथमं देवार्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा तत्रस्थं प  
 वित्रं पलाशपत्रे दत्त्वा अद्भ्योनमः इत्यभिमुखं कुशत्रयं वज्रालान्यादाय अद्यास्मत्पित्रादित्रयं श्राद्धसंबन्धिनः पुरुषत्वाद्वसंज्ञकानि विश्वेदेवा एषवो  
 ऽर्धोनमः इति दक्षिणहस्ते न देवतीर्थेन पवित्रोपरि अर्घ्यं दत्त्वा पवित्रसहितमर्घपात्रं देवपुरतः स्थापयेत् ॥ एवमेव मातामहार्दशे देवेभ्योऽर्घ्यं द  
 द्यात् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितृर्घपात्रं गृहीत्वा पवित्रं पलाशपत्रे दत्त्वा अद्भ्योनमः इति पात्रमभिमुखं मोदकादीन्यादाय अद्याकथ्य प  
 गोत्रास्मत्पितृपितामहं प्रपितामहमुका मुकदासा एषहस्तार्घ्येधाविभज्य युष्मभ्यं नमः इति दक्षिणहस्ते स्थपितृतीर्थेन पवित्रोपरि अर्घ्यं जलं  
 सावशं पदं दद्यात् ॥ अर्घपात्रं च पुरतः स्थापयेत् ॥ एवमेव मातामहार्दशेभ्योऽर्घ्यं दद्यात् ॥ ततः सव्यं कृत्वा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीति प  
 वित्रजलयुते देवार्घपात्रमासनदक्षिणपार्श्वे उत्तानं क्रमेण स्थापयेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितामहप्रपितामहार्घपात्रजलादीनि पितृपात्रे कृत्वा  
 एवमेव प्रमातामहवृद्धप्रमातामहयोः पात्रस्थजलादीनि मातामहपात्रे कुर्यात् ॥ ततः सव्येन पितृपात्रस्थजलेन प्राङ्मुखो नैत्रांजनं कृत्वा शिर  
 सि अभ्यो नमः इत्यभिषेकं कुर्यात् ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा पितृभ्यः स्थानमसीति प्रथमं पितृपात्रं पित्रासनं वामप्रदेशभूमावधौ मुखं संस्थाप्य  
 तदुपरि पितामहपात्रं तदुपरि प्रपितामहपात्रं च दद्यात् ॥ एवं मातामहेभ्यः स्थानमसीति मातामहपात्रं न्युज्जीकृत्य प्रमातामहवृद्धप्रमाता  
 महपात्राभ्यामाच्छादयेत् ॥ एतत्पात्रद्वयं दक्षिणादनपथं नोद्गच्छेन्न चालयेत् ॥ अथ गंधादिदानम् ॥ सव्यादि कृत्वा गंधपुष्पधूपदीपादिकं  
 धृत्वा कुशत्रयं वज्रालान्यादाय अत्रास्मत्पित्रादित्रयं श्राद्धसंबन्धिनः पुरुषत्वाद्वसंज्ञकानि विश्वेदेवा एतानि गंधपुष्पधूपदीपादीनि जलोपवीत

वासांसि वानेनमः इत्युच्चायगंधादुत्सृजेत् ॥ एवमेवमातामहादिदेवभ्योपिदद्यात् ॥ ततः कृतांजलिः कर्ता विषयदेवानामचनं संपूर्णमस्त्विति  
 ब्रूयात् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितृपक्षे गंधादिंकथ्वाद्रिगुणसुभक्तुशत्रयतिलजलान्यादाय अद्यकाश्यपगोत्रा अस्मान्पितृपितामहप्र  
 पितामहामुकासुकदासा एतानिगंधपुष्पदीपतंबूलवाससित्रिधाविभक्त्य युष्मभ्यनमः इतिपित्रादिभ्योगंधादुत्सृज्य एवमेव मातामा  
 हादिभ्योऽप्युत्सृजेत् ॥ ततः कृतांजलिभूत्वा पितृणामचनं संपूर्णमस्त्वितिब्रूयात् ॥ एवं गंधार्चनं विधाय भोजनपात्रस्थापनदेशंसमाज्यं पा  
 त्राणिदत्त्वा गौरमृत्तिकयाजलेनवाप्रयेकमासनंवेष्टयित्वाक्रमेणमंडलम् अभ्युक्षणंवाकुर्यात् ॥ अथाग्नौऋणम् ॥ तत्रव्यंजनशार्वर्जितंघृताक्त  
 मन्त्रंकोत्स्यपात्रेसमुद्धृत्य (सव्येन) दक्षिणकरेणरजतादिपात्रस्थजले अग्नयेकव्यवाहनायनमः इदं सोमायपितृमतेनमः इदं-इत्याहुति  
 द्रयंजुह्यात् ॥ ततोऽहोतरशेषमंत्रेद्वयपात्रद्वये अपसव्येन पित्रादिपात्रद्वयेचदत्त्वापिण्डार्थमवशेषयेत् ॥ अत्रपरकीयभूमौश्राद्धकारे इदमन्नमे  
 तद्धस्त्वामिपितृभ्योनमः इतिघृतादियुक्तमन्नदंभुषुदद्यात् नत्सगृहे ॥ ततः सव्येन देवपात्रद्वये अपसव्येन पित्रादिपात्रद्वयेच आमन्त्रं सष्ट  
 तमनकव्यंजनयुतं सुशीतलजलमहितंयथावत्परिविप्यमधुदत्त्वा मधुमधुमध्वन्यभिमन्त्रयेत् ॥ ततः सव्येन उत्तानपाणिभ्यांश्रय  
 मंदेवाग्नपात्रमालभ्य विष्णवेनमः इतिपाठित्वा अथोमुखंस्वाहुष्टमनसम् अग्नौनिवेश्य इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् एतत्सर्वहविरियुक्त्वा  
 अन्नपात्रपरितोयवान्विकीर्य वामेनकरेणपात्रंस्पृशन्दक्षिणकरेणकुशत्रयादीन्यादाय अद्यास्मान्पित्रादित्रयश्राद्धसंबन्धेनपुरुषवद्भि  
 वंसंज्ञकाविश्वेदेवा इदमन्नंमोपरस्करंहयम् अमृतरूपंपरिविष्टवोनमः इत्युदकेदेवतीर्थेनदक्षिणभागेभूमौनक्षिपेत् ॥ एवमेवमातामहा  
 दिदेवभ्योऽप्युत्सृजेत् ॥ ततोऽपसव्यादिना पितृपात्रंयुज्यपाणिभ्यांन्यस्ताभ्यांस्पृष्ट्वा विष्णवेनमः इतिपाठित्वा अथोमुखंस्वाहुष्टमनसम्  
 अग्नौनिवेश्य इदमन्नम् इमा आपः इदमाज्यम् एतत्सर्वकव्यम् इत्युक्त्वातिलेभ्योनमः इतितिलान् अन्नपात्रपरितोविकीर्य वामकरेणपात्रंस्पृश

नक्षिणकोणेद्रियुगमुशुकुशत्रयादीन्यादाय अद्यास्मात्पितृपितामहप्रपितामहसुकासुकादासा इदमन्नसोपस्करंकव्यम् अमृतरूपपरिविश्वेधो  
 विभज्य युष्मभ्यंनमः इत्युदकं पितृतीर्थेन पित्रासनवामभागेभूमौ निक्षिपेत् ॥ एवमेव मातामहादिभ्योऽप्युत्तुजेत् ॥ ततः अन्नहीनक्रिया  
 हीनं विविहीनंचयद्भवेत् ॥ तत्सर्वमाच्छिद्रमस्तु ॥ इति प्रार्थ्य मधुमधुमध्विति च जपेत् ॥ ततः सप्तव्याधादशाणेषु मृगाः कालजरे  
 गिरी ॥ चक्रवाकाः शरद्रीपे हंसाः सरसिमानसे ॥ १ ॥ तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदधाराः ॥ प्रस्थिता दूरमध्वानं द्यूयते भ्योऽवसीदथ ॥ २ ॥  
 इति पठित्वा सतार्चित्तं सर्वं शृणुयात् ॥ अमृतानां च मृतानां पितृणां दत्तजसाम् ॥ नमस्यामि सदा तेषां ध्यायिनां दिव्यचक्षुषाम् ॥ १ ॥ इन्द्रा  
 दीनां च नेतरो दक्षमारी च योस्तथा ॥ सप्तर्षिणां तथान्येषां तान्नमस्यामि कामदान् ॥ २ ॥ मन्वादीनां मुनीन्द्राणां सूर्यावंद्रमसोस्तथा ॥ तान्न  
 मस्याम्यहंसवार्णिवेषु च ॥ ३ ॥ नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्न्योर्नभसस्तथा ॥ द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृतांजलिः ॥ ४ ॥ देवर्षी  
 णां ग्रहाणां च सर्वलोके नमस्कृतान् ॥ अमरस्यसदा दातृन् नमस्येहं कृतांजलिः ॥ ५ ॥ प्रजापतेः कश्यपाय सोमाय वरुणाय च ॥ योगेश्वरे भ्यश्च  
 तथा नमस्यामि कृतांजलिः ॥ ६ ॥ नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथालोकेषु सप्तसु ॥ स्वयंभुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योगचक्षुषे ॥ ७ ॥ सोमाधारा न्यि  
 तृगुणान्योगमूर्तिधरास्तथा ॥ नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम् ॥ ८ ॥ अग्निरुपास्तथैवा न्यान्नमस्यामि पितृनहम् ॥ अग्नीषाममयं वि  
 श्वं यतस्तदशेषतः ॥ ९ ॥ येतु जसियै चैते सोमसूर्याऽग्निमृत्युः ॥ जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः ॥ १० ॥ तेभ्योऽसिलेभ्यो  
 योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसः ॥ नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदंतु स्वधाभुजः ॥ ११ ॥ पितरञ्जुः ॥ स्तोत्रेणानेन च नरो योऽस्मांस्तोष्यति भक्ति  
 तः ॥ तस्य तुष्टावयं योगानाम् ज्ञानं तथोत्तरम् ॥ १२ ॥ शरीरोग्रयमर्थं च पुत्रपौत्रादिकं तथा ॥ प्रदास्यामो न संदेहो यच्चान्यदपि वाञ्छितम्  
 ॥ १३ ॥ तस्मात्पुण्यफलं लोके वाञ्छद्भिः सततं नैः ॥ पितॄणां चाक्षयांतृप्तिं स्तव्यस्तोत्रेण मानवैः ॥ १४ ॥ पठिष्यंति द्विजप्राण्यां भुञ्जतो



पुतःस्थिताः ॥ अस्माकमक्षयंश्राद्धं तद्विविक्त्यसंशयम् ॥१५॥ इति ॥ ततोऽन्यान्यपिहचिस्तोत्रप्रभृतौनियथाशक्तिशृणुयात् ॥ ततः  
 चच्छिष्टसन्निधौभिप्रोक्ष्य तत्रदक्षिणग्रंथकुशत्रयमास्तीर्य्य आमन्त्रमादायसव्यंजनतिलमेकीकृत्य अग्निदग्धाश्वयेजीवायेव्यग्धाःकुलेप्रम  
 ॥ भूमौदेतेनृत्यन्तु तृतायातुपरंगतिम् ॥ १ ॥ इतिकुशोपरिपितृतीर्थेनतदन्नविकरेत् ॥ ततः सव्येन आचम्यहोर्सृत्वा  
 मधुमधुमध्वितिपठेत् ॥ ततोऽपसव्येनपित्राछिष्टसन्निधौचतुस्तदक्षिणपूवमणीयं पित्रादित्रयपिण्डपातनार्थसिकताभिःस्थानंनिर्माय  
 तथामातामहाछिष्टसन्निधौपितामहादिपिण्डपातनाथतादृशमेवस्थानकुर्यात् ॥ तत्र उभयत्रमध्यदेशेदर्भापिजलीमूलेनतूष्णींदिशिप्रा  
 रेखांसकृच्छ्रित्वा दर्भापिजलीमुत्तरस्यांदिशिनिक्षिप्यज्वलदुल्लुक्खोपरिभ्रामयित्वा दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ ततः उपमूलस  
 कुदाच्छिन्नदक्षिणग्रंथकुशत्रयंखोपरिस्तीर्त्वा पत्रपटुकपटुकजलतिलगंधपुष्पाणिधृत्वा अद्यकाश्यपगोत्रपितर  
 मुकदास अत्रावर्त्तनेनक्षतेनमः इतिकुशमूलेपित्रेपितृतीर्थेन अवेनजननदद्यात् ॥ एवंपितामहायकुशत्रयमध्यप्रेषितामहायकुशाग्रे अव  
 नजननदद्यात् ॥ एवमेवमातामहादिभ्यापिदद्यात् ॥ ततोऽग्न्याकेन वा पायसेन सक्तुर्भिवायवपिष्टेनमध्वज्यतिलव्यजनसहितानिच  
 त्वापमान्यदूषिण्डान्निमाय मधुघृताभ्यामभिघ्राय्य पित्रादिभ्योदद्यात् ॥ तत्रप्रथमपिण्डमोटाकादीनिचादाय अद्यकाश्यपगोत्रपितरमु  
 कदास एतौपिण्डेनमः इतिप्रथमवनेजनस्थानेसव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेनपितृतीर्थेनदद्यात् ॥ एवमेवपितामहादिभ्यः पंचभ्यः  
 प्रत्येकतत्तदवनेजनस्थानेपिण्डदद्यात् ॥ ततः प्रपितामहादूध्वत्रयाणालिपुजान्तमित्युद्दिश्यपित्रादिकपिण्डापरकुशमूले लेपभागभुजः  
 पितरस्तुष्यतु इतिपठित्वा हस्तंप्रोच्छन्नजलेनहस्तौप्रक्षालयेत् ॥ ततः सव्येन द्विराचम्यहोर्समेततोऽपसव्येन पितृभ्योनमः इतिपठि  
 त्वा वामावर्त्तनादङ्गुलौभूत्वाप्रीतमनाः श्वासंनियम्यतेनैवपथापरावृत्यपितृभ्योनम इतिश्वासमुत्सृजेत्॥ एवंमातामहपक्षेपिकुर्यात्॥ततः पूर्व

दत्तावेनजनपात्रंहीत्या अद्यकाश्यपगोत्रापितमुक्तादास अत्रप्रत्यवनेनिश्चेतनमः इतिपिण्डोपरिप्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ एवमेवापितामह  
 पिण्डोपरिप्रत्येकंप्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततोर्नावाविंशस्य आचम्य अपसव्येनकृतांजलिः—वसंतायनमस्तुभ्यं ग्रीष्मायचनमोनमः ॥ वर्षा  
 भ्यश्शरत्संज्ञं ऋतुभ्यश्चनमः सदा ॥ १ ॥ हेमंतायनमस्तुभ्यं नमस्तेऽशिरायचा ॥ मासवत्सुरेभ्यश्च दिवसेभ्योनमोनमः ॥ २ ॥ इतिपाठत्वा पितृ  
 भ्योनमः ॥ मातामेहेभ्योनमः ॥ ततः पितृभ्योनमः ॥ मातामेहेभ्योनमः इतिपाठत्वा षट्सुपिण्डेषु सुत्राणिप्रतिपिण्डमूर्णा  
 दशावादत्वा ॥ अद्यकाश्यपगोत्रादस्मत्पितृपितामहप्रपितामहादमुकामुक्तादासा एतानिवासांसिपुष्पभ्यंनमः इत्युत्सृजेत् ॥ एवमांताम  
 हादिभ्योप्युत्सृजेत् ॥ ततः पित्रादीनुद्दिश्यतदीयपिण्डेषु तूर्णगंधपुष्पधूपदीपतांबूलदक्षिणादीनिदद्यात् ॥ पिण्डशेषान्नंचपिण्डसमपि  
 विकिरेत् ॥ ततः सव्यापसव्याभ्यां देयपितृभोजनपात्रेषु शिवाआपः संतु इतिसकृत्सकृज्जलं सौमनस्यमस्तु इति पुष्पाणि अक्षतं  
 चारिष्टमस्त्वित्यवांश्चदद्यात् ॥ ( नतंडुलान् ) ततः मोटकादीन्यादाय अद्यकाश्यपगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुक्ता  
 दासानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु इतिसतिलमक्षय्योदकभोजनपात्रेदद्यात् ॥ एवमेवमातामहेभ्योऽप्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः सव्येन  
 प्राङ्मुखस्तनूनाः कृतांजलिर्दक्षिणादिशंपश्यन् अवोराः पितरः संतु अवोरांमातामहाश्चसंतु ॥ गोत्रंनोवर्धतां दातारोभिवर्धतां संततिश्चव  
 र्द्धतां श्रद्धाचनोमाव्यगमत् बहुदुश्चनोस्तु अन्नंचनोबहुभवेत् अतिथीश्चलभमहि याचितारश्चनः संतु माचयाचिष्यकंचन इत्याशिष्योद्धी  
 यात् ॥ ततः पिण्डोपरि सपवित्रकुशानांस्तोत्रं पित्रादिभ्योमातामहेभ्यश्च स्वयंच्यतामितिपठिते दक्षिणांजलयारादद्यात् ॥ ततोऽवपात्रा  
 ण्युत्तानीकृत्य ( सव्येन ) देवदक्षिणादद्यात् ॥ तत्रहिरण्यकुशत्रयादीनिचादाय अद्यास्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसंबंधिनांपुरुषाद्देवसंज्ञकानांविशेषां  
 देवानां कृतैतत्पार्ष्वणश्राद्धप्रातिपद्यार्थमिदं हिरण्यमाग्निदेवतमुकगोत्रायामुक्ताशर्मणब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे—इतिसकलं

दद्यात् ॥ एवंमातामहादेवश्राद्धदक्षिणामपि दद्यात् ॥ तताऽपसव्यादिना रजतद्रव्यकुशादीनि चादाय अथ काश्यपगोत्राणामस्मभिरपितृ-  
 पितामहप्रापितामहानामभ्युक्तसुकृदासां हतैतत्तत्पावणश्राद्धप्रातिष्ठाथमिदं रजतचंद्रदेवतमसुकशभणैर्ब्राह्मणाय दक्षिणत्वेन दातुमर्हदुत्सृजे-  
 इति पितृदक्षिणां दद्यात् ॥ पसवमातामहादिश्राद्धदक्षिणामपि दद्यात् ॥ (देवेजतनिषेधः) ततः पिण्डानुत्थाप्यस्थाल्यानि धाय  
 अघघ्राणं कृत्वा पिंडावस्थानसुकृदाच्छिन्नान्दभानुसुश्रद्धयं च वह्निं क्षिपेत् ॥ ततः सव्येन विश्वेदेवाः प्रीयतामिति प्रार्थ्य  
 (अपसव्येन) उचिष्टात्पितरः विश्वेदेव सह इति पितॄन् विभृज्य मंडलं दक्षिणां कृत्य नमस्कृत्योपविशेत् ॥ ततो देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा-  
 योगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमः इति त्रिः पठित्वा रक्षादीपं निर्वाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य आचम्य प्रमादात्कुर्वतां  
 कर्म० इति विष्णुं स्मरेत् ॥ ततः पिण्डान्गामज्वायसान्वादादभेत् ॥ अग्नौ जलवा क्षिपेत् ॥ (पुत्रकामः पितामहपिण्डं ऋतुस्ततयै  
 पितृभक्त्या यैसां व्यैथमप्यन्यै दद्यात् ॥ साशुचि वाग्यतापुत्रकामा पितृभ्यो नमः इति पठित्वाऽश्रीयत् ततो विश्वेदेवलिकर्मणि कृत्वा श्राद्धी-  
 यद्रव्याणि ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपाद्य दशऽष्टावा ब्राह्मणानामात्रादिना तोषयेत् ॥ ततः अतिथिभुक्तभृत्यवांधवादिभिः सह स्वयमपि भोजनं कु-  
 र्यात् ॥ तद्दिने श्राद्धकृता द्यूताध्वगमनमैथुनाय सकलहनुभोजनहिंसादीनि न कुर्यात् ॥ इति पठितगौडश्रीचतुर्थालोका-  
 चितेश्राद्धप्रकाशश्रुद्र्यावर्णश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रुद्राणामभ्युदयिकश्राद्धम् ॥ तच्च पुत्रजन्मविवाहयज्ञप्रतिष्ठावृषोत्सर्गतीर्थयात्रादिमंगलकृत्येषु कर्तव्यम् ॥ तत्र तावच्छ्रद्धात्पूर्वं  
 षोडशमातरः पूजनीयाः ॥ तत्राविधिः ॥ कर्तो प्रातः स्नानादिनियकर्मसमाप्य स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्या चम्य देशकालौ-  
 संकीर्त्य अथ काश्यपगोत्रोऽमुकदासाहं कारिष्यमाणामुक्कर्मनिमित्तकाम्बुदुदयिकश्राद्धभूतगणपतिसहितेषोऽशमातृकास्थापनं पूजनं

चकारिण्ये इति संकल्प्य ॥ सुमुखश्चैकदंतश्च इत्यादिस्मरणपूर्वकगणेशादिस्तुलपुंजेषु स्थापयेत् ॥ तत्रादौष्याण्यादाय श्रीगणपते इहागच्छ इहतिष्ठ १ गौरि इहागच्छ इहतिष्ठ २ पद्मे इहागच्छ इह० ३ शशि इहागच्छ इह० ४ मेघे इहागच्छ इह० ५ सावित्री इहागच्छ इह० ६ विजये इहा० ७ जये इहा० ८ देवसेने इहा० ९ स्वधे इहा० १० स्वाहे इहा० ११ मातर इहागच्छत इहतिष्ठत १२ लोकमातरः इहागच्छत इहतिष्ठत १३ लक्ष्णे इहागच्छेहतिष्ठ १४ पुष्टे इहा० १५ तुष्टे इहा० १६ आत्मकुल देवते इहागच्छ इहतिष्ठ १७ इत्यवाब्रू मातरः सुप्रतिष्ठिताः भवंतु इति पुष्पाणि विकीर्य नामंत्रेण प्रत्येकं तंत्रेण वा पाद्यार्वाचननीय स्नानवल्लग्धपुष्पपदीपनैवेद्यतांबूलदक्षिणादीनि समर्थ्य गणपतिसंहिताः षोडशमातरः प्रीयंतामिति प्रार्थ्य क्षमध्वामितिक्षमापये दिति ॥ ततः ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥ वाराही च तथैद्राणी चांमुडाः सप्तमातरः—इति सप्तमातरावाब्रू संपूज्य ॥ कुडचे घृतेन सप्तपंचवाधारा उत्तरोत्तरक्रमेण कृत्वा ॥ वसोर्वारयैनमः इति षोडशोपचारैः संपूज्य नंदीं श्राद्धं कुर्यात् ॥ तत्र प्रयागः ॥ तावच्छ्राद्ध सामर्थ्यं संपाद्य ब्राह्मणैः सह श्राद्धभूमिमागत्य आसनानि दत्त्वा देवपितृब्राह्मणानष्टौ चतुरंगे वा प्राङ्मुखानुदङ्मुखान्चोपवेशयेत् ॥ तदभावे कुशमयचटान्वास्थापयेत् ॥ ततोक्षादीनि धाय आचम्य स्वांसने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आचम्य कर्मपात्रं जलेन प्रपूर्य गंधपुष्पद्वयवदध्यादिनिक्षिप्य तज्जलेन अपवित्रः पवित्रो वा गुंडरीकक्षायनमः इति श्राद्धद्रव्याणि स्वात्मानं च प्रक्षेपयेत् ॥ ततो भूम्यै नमः विष्णवे नमः इति नत्वा कुशत्रययजलान्यान्यादाय देशकालौ स्मृत्या ॥ अवाभुक् गोत्राणामस्मन्मातृपितामही प्रतिमा हीना ममुका मु कदेवीनां नंदीमुखीनाम् अभुक् गोत्राणामस्मन्मातृपितामहप्रतिमा ह प्रपितामहानाममुका मु कदासानां नंदीमुखानां तथा अभुक् गोत्राणामस्म न्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुका मु कदासानां नंदीमुखानाम् अभुक् कर्मनिमित्तकाभ्युदयिकश्राद्धग्रहकारिण्ये—इति संकल्प

विष्णुस्मरेत् ॥ ततोयवगोः सर्पपान्दहीत्वा नमोनमस्ते गोविंद पुण्यपुरयोत्तम ॥ इदंश्राद्धहृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः ॥ १ ॥ इति पठित्वा सर्वत्राविकीर्य नीविबंधं कुर्यात् ॥ अथपाद्यादिदानम् ॥ ( सर्वं सव्येन देवतीर्थेन प्रदक्षिणकर्मणा यवैश्च कर्तव्यम् ) पाद्यपात्रं गृहीत्वा अद्यमात्रादित्रयपात्रादित्रयमातामहादित्रयश्राद्धसंबन्धिनः सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः इदं वः पाद्यं पादावेन जेन पादप्रक्षालनं वृद्धिनमः इति दद्यात् ॥ ततः काश्यपगोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपितामहोऽमुकामुकदेव्यः नंदिमुखाः इदं वः पाद्यं पादावेन जेन पादप्रक्षालनं वृद्धिनमः काश्यपगोत्रास्मात्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकदासाः नंदिमुखाः इदं वः पाद्यं पादावेन जेन पादप्रक्षालनं वृद्धिनमः ॥ द्वितीयगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकदासाः नंदिमुखाः इदं वः पाद्यं पादावेन जेन पादप्रक्षालनं वृद्धिनमः ॥ अथासनम् ॥ मन्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः इदमासनं वोनमः अत्राध्वम् इत्युक्त्वा कुशत्रयपूर्वाग्रमुत्तुजेत् ॥ एवं सर्वत्र नंदिश्राद्धे क्षणः कर्तव्यः प्राप्नुतौ भवतौ प्राप्रवाव इति पठेत् ॥ काश्यपगोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपितामहोऽमुकामुकदेव्यः नंदिमुखाः इदमासनं त्रेधा विभज्य वोनमः अत्राध्वं प्राप्नुतां भवतौ नमः अत्राध्वम् इत्यासनं च त्वा नंदिश्राद्धे क्षणः कर्तव्यः प्राप्नुतां भवतौ प्राप्रवाव इति ॥ काश्यपगोत्राऽस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकदासाः नंदिमुखाः इदमासनं त्रेधा विभज्य वोनमः अत्राध्वं प्राप्नुतां भवतौ नमः अमुकामुकदासाः नंदिमुखाः इदमासनं त्रेधा विभज्य वोनमः ॥ अत्राध्वं नंदिश्राद्धे क्षणः कर्तव्यः प्राप्नुतां भवतौ प्राप्रवाव इति ॥ द्वितीयगोत्राऽस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकदासाः नंदिमुखाः इदमासनं त्रेधा विभज्य वोनमः अत्राध्वं प्राप्नुतां भवतौ नमः अत्राध्वम् इत्यासनं दद्यात् ॥ ततोऽर्घ्यपात्रमादाय ॥ सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवा एष वो धानमः इत्यर्घदत्त्वा काश्यपगोत्राः मातृपितामहीप्रपितामहाः एष हस्तार्वेक्षेधा विभज्य शुष्मभ्यन्नमः ॥ काश्यपगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः एष हस्तार्वेक्षेधा विभज्य शुष्मभ्यन्नमः ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा एष हस्तार्वेक्षेधा विभज्य शुष्मभ्यन्नमः इत्यर्घदानं कुर्यात् ॥ ततः सर्वत्र ग्रंथपुण्यपदपादप

तांबूलवासिसिक्केभणधृत्वाकुशत्रययवजलान्यादाय अथ सत्यवसुसंज्ञकभ्यो विश्वेभ्योदेवभ्य इदंगंधाद्यर्चनंनमः संपद्यतांवृद्धिः॥ काश्यपगो  
 त्राभ्यःमातृपितामहीप्रपितामहीभ्यानांदिसुखीभ्यः इदंगंधाद्यर्चनंनमः संपद्यतांवृद्धिः॥ काश्यपगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्योनांदिसु  
 खेभ्य इदंगंधाद्यर्चनंनमः संपद्यतांवृद्धिः ॥ अमुकगोत्रेभ्योमातामहप्रमातामहहृदप्रमातामहेभ्योनांदिसुखेभ्यः इदंगंधाद्यर्चनंनमः संपद्यतां  
 वृद्धिः॥ततः एतेगंधपुष्पधूपदीपतांबूलाच्छादनंताः सर्वे उपचाराः संपूजाभवंतु इति प्रार्थयत् ॥ ततोपचंद्रमंडलभभ्युक्षणवाकृत्वा पात्रेष्वा  
 मात्रानिद्रिगुणानिसमाविनाहिरण्यदंत्वा प्रोक्ष्य पात्रमालभ्ययवात्किंयात्रे विष्णवेनमः आममूल्यभृतंयथाशक्ति हिरण्यं वा अमृतरूपेण संप्रदे  
 ज्जकाविश्वेदेवाःनांदिसुखाःइदंभ्यः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तं द्रिगुणमामंसोपस्करम् आममूल्यभृतंयथाशक्ति हिरण्यं वा अमृतरूपेण संप्रदे  
 नमम् संपद्यतांवृद्धिः ॥ ततः काश्यपगोत्रा मातृपितामहीप्रपितामहोऽमुकामुकदेव्यः नांदिसुख्य इदंभ्यः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तं द्रिगुण  
 मामंसोपस्करम् आममूल्यभृतं यथाशक्तिहिरण्यं वा अमृतरूपेणसंप्रदेनमम् संपद्यतांवृद्धिः॥काश्यपगोत्राःपितृपितामहप्रपितामहाःइदंभ्यः  
 युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तं द्रिगुणमामंसोपस्करम् आममूल्यभृतंयथाशक्तिहिरण्यं वा अमृतरूपेण संप्रदेनमम् संपद्यतांवृद्धिः ॥ अमुकगोत्रा  
 मातामहप्रमातामहहृदप्रमातामहाः इदंभ्यः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तं द्रिगुणमामंसोपस्करम् आममूल्यभृतंयथाशक्तिहिरण्यं वा अमृतरूपेण  
 संप्रदे नमम् संपद्यतांवृद्धिः अत्रपिण्डाः कृताऽकृताः पिण्डदानपक्षे वेदित्रयनिर्माणं पूर्वाश्राखाः तिस्रः कृत्वादर्भानास्तार्य नवपात्राणि  
 जलयवगंधपुष्पैः पूरयित्वा पात्रमेकमादाय काश्यपगोत्रे मातरमुकदेवि नांदिसुखि अत्रावनेनिश्चनेनमः इति कुशमूले मात्रेऽवने  
 जनंदत्वा पात्रान्तरेण कुशमध्ये पितामहौ कुशाग्रे प्रपितामहौचावनेजनंदद्यात् ॥ एवं द्वितीयेवेदिकायांपित्रादिभ्यस्तृतीयेवेदिकायां माता  
 महादिन्यश्चप्रत्येकमवनजनंदद्यात् ॥ ततोयवदधिवदग्धृतमिश्रितामात्रेनमस्तुनावानवपिण्डान्निर्माय एकंपिण्डंकुशदिश्वदाय अत्र

काश्यपगोत्रेमातरमुकुदविनादीमुखिणपतापिंडानमः इतिदेवतीर्थेनमानत्रतदवेजनस्थानेपिण्डदत्त्वा  
जनस्थानेपिण्डं दद्यात् ॥ एवमेवपितृपितामहप्रपितामहेभ्योमातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यश्चतदवेजनस्थानेकमेणपिण्डान्दद्यात् ॥  
तत् ॥ ततोऽवेजनपात्रं गृहीत्वा काश्यपगोत्रमातृमुकुदविनादीमुखि अत्रप्रत्यवनेनित्स्वेतनमः इतिमातृपिण्डोपरिप्रत्यवनेजनं दत्त्वा  
पितामह्यादिभ्योपिकमेणतत्पिण्डोपरिप्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ ततोनीर्विशिष्य आचम्यहरिर्मरेत् ॥ ततःपिण्डेषुसूत्राणिदत्त्वा संकल्प्यगं  
धपुण्यधृपदापतांबूलादिभिः प्रत्येकंपिण्डानभ्यर्च्यशिवोवापः संतु इतिजलं सौमनस्यमस्तु इतिपुष्पाणि अक्षतचारिण्यस्तु इतियवां  
श्चप्रत्येकपात्रेषुनिक्षिप्य नदीमुखोवापतरः प्रीयतां नदीमुखाःपितरःप्रीयतांदिमुखाःमातामहाश्चप्रीयताम् इत्युक्कंदत्त्वा कृतांजलिःगोत्र  
नोवर्द्धताम् दातरोनोभिवर्धताम् संततिश्चवर्द्धताम् श्रद्धाचनोभाव्यगमत् बहुदेयचनोस्तु अन्नचनोबहुभवेत् अतिथिश्चलभेमहि याचितारश्च  
नःसंतु माचयान्निष्पंकंचन । इत्याशीःप्रार्थयेत् ॥ ततः । पिण्डोपरिपवित्रकुशान्धृत्वा तूर्णान्तदुपरिपूर्वांजलधारादृष्ट्वादक्षिणं दद्यात्  
( अन्नफलमूलयवमयी एवदक्षिणातन्निष्कयहरिण्यद्रव्यंवा ) दक्षिणद्रव्यं कुशत्रयादींश्चादाय ॥ अद्यसत्यवसुसंज्ञकानांविशेषदेवानांकृते  
तन्नादींश्चादक्रमणः सांगतामिद्वयार्द्रद्राक्षामलकयमूलभृततन्निष्कयद्रव्यंवा दक्षिणादातुमहसृजे इतिसंकल्प्यदद्यात् ॥ पुनः का  
श्यपगोत्राणां मातृपितामहीनामसुकासुकदेवीनांदिमुखीनां कृतैतन्नादींश्चादक्रमणःसांगतामिद्वयार्द्रद्राक्षामलकयमूलभृत  
निष्कयद्रव्यंवादक्षिणादातुमहसृजे इति ॥ एवंपितृणामातमहानां चश्रद्धदक्षिणाक्रमेण दद्यात् ॥ ततः मातापितामहीचैव तथैवप्रपि  
तामही ॥ पितापितामहश्चैव तथैवप्रपितामहः ॥ ३॥ मातामहस्तत्पिताच प्रमातामहकादयः ॥ एतेभंतुसुप्राताः प्रयच्छंतुसुमंगलम् ॥ २॥  
इतिप्रार्थ्य पिण्डान्निवृज्यकर्मपूतैश्चमोविष्णुर्मरेत् ॥ इतिश्राद्धप्रकशेशूद्राणामभ्युदयिकश्राद्धपद्धतिः समाप्ता ॥ २३ ॥

अथ दुर्भरणमृतांशुद्वर्णानारायणबलिप्रयोगः ॥ तत्रतावत्तुतकान्तेषुण्यदेशेतिथेर्गृहेवापचमूसंस्कारंविधाय तत्रसामग्रींस्तथाप्यनद्या  
 दौर्नान्ताघौतवाससद्विपरिधाय नित्यकर्मसमाप्यगणपतिनयद्राहूजयेत् ॥ ततोदुर्भरणमृतप्रायश्चित्तकार्यम् ॥ तदथा-देशकालौस्मृत्वा  
 अमुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्यामुकदुर्भरणदोषपरिहारार्थं कुगतिनिवारणार्थं सद्गतिप्राप्त्यर्थंनारायणबल्यधिकारार्थंचपंचदशप्राजापत्यात्मकं  
 प्रायश्चित्तं प्रतिप्राजापत्यथशक्तिधेनुमूल्यम् अथवा अमुकसंख्यापरिभितगीताविष्णुसहस्रनामपाठान्वाहणद्वारायथाकालेनाचरिष्ये इति  
 संकल्प्य यथाशक्तिधेनुमूल्यगीताविष्णुसहस्रनामपाठा आम्राव्रतीथियात्रादिद्वारासंपादयेत् ॥ ततः आचम्य देशकालौस्मृत्वा अमुक  
 गोत्रस्यामुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकाक्षय्यस्वर्गलोकप्राप्तिकामस्तथा चतुःषष्टिदुर्भर्णांतर्गतयत्किंचिदुर्भरणदोषपरिहारार्थं श्रीना  
 रायणप्रीत्यर्थंनारायणबलिकर्माहंकरिष्ये-इतिसंकल्प्य स्तुपुरतश्चतुरस्रस्यडिलंकृत्वा तदुपरिश्चेतवन्नमास्तीर्य तत्रतंडुलंगृहलंसंपाद्य  
 ईशानादिष्वष्टशक्तीनांस्थापनम् ॥ तदथा-कुशत्रयतिलजलान्यादाय अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य रोगोत्पत्तिमरणवासने ऊर्ध्वोच्छिष्टाव  
 उच्छिष्टोभयोच्छिष्टाकृतस्नानाशौचमरणमरणसमयहरिनामोच्चारणविजतामेध्यकेशास्थिस्पर्शेत्यादिनानादोषपरिहारार्थं प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थम्  
 असद्गतिविनाशार्थं सद्गतिविष्णुलोकप्राप्त्यर्थंच सत्येशस्थापनप्रातिष्ठापूजनमहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य पुष्पाण्यादाय ईशाने रुक्मि  
 ण्यै नमः रुक्मिणीमावाहयामिस्थापयामि १ एवंसर्वत्र ॥ पूर्वं सत्यभामार्थं सत्यभामां २ आग्नेय्यां जांबवत्यै जांबवतीं ३  
 दक्षिणे नाग्निजिन्यै नाग्निजितां ४ नैऋत्ये कालिद्वै कालिदीं ५ पश्चिमे मित्रविदायै मित्रविदां ६ वायव्ये लक्ष्मणायै  
 लक्ष्मणां ७ उत्तरे चारुहासिन्यै नमः चारुहासिनीमावाहयामिस्थापयामि ८ इतिसंस्थाप्य मध्ये ताम्रकलशस्थापयेत् ॥ तस्यविधिः ॥  
 तत्रादौभूमिसंपूज्यपृथिव्यत्वाधृतालोका देवित्वंविष्णुनाधृता ॥ कलशाधारभूतंहि पवित्रंकुरुचासनम् इतिभूमिस्पृशेत् ॥१॥ तत्र यवोसिधा



न्यसजोमि सर्वोत्पत्तिकः शुभः॥प्राणिर्नाजिवनोपायः कलशाद्यः शिपायम्हम्॥२॥ इति वान्यक्षिप्वात्स्योपरिकलशंस्थापयेत्॥ गीमेचयुने  
 वैव गोदावारसरस्वति॥ नमो देवि धुकोरि कुंभे स्मिन्सन्निधिं कुरु॥३॥ इति जलेन प्रयूय गंधं क्षिप्त्वा सर्वेष्वध्यः सप्तमदः पंचपल्लवान्पूर्वा पंचर  
 तानि हिण्यं प्रगीफलं च निक्षिपेत्॥ ततः जीवनं सवेलोकानां लज्जायां क्षणं परमं॥ सुवेषधामि वस्त्रं हि कलशं वैष्णव्याभ्यहम्॥४॥ इति वस्त्रेण सर्वेष्व  
 धान्यपूर्णं मिदं पात्रं स्थापितं कलशे यतः॥ तिनार्थं कलशः पूर्णः॥ सुतुमनोरथाः॥५॥ इति पूर्णपात्रं त्रिधा यथाफलं धृत्वा पुष्पमालादिभिः शोभितं  
 कृत्वा तत्र-भकरं थं पाशहस्तं शुभवर्णकिरीटिन्म् ॥ आवहयेत्प्रतीचां शिवरुणं जलनायकम् ॥ भोवरुणहृद्गच्छ हतिष्ठ इत्यावाह्य ॥  
 वरुणाय नमः इति संपूज्य कलशं न्यमुखे विष्णुः कठेरुद्रः समाश्रितः ॥ मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥१॥ कुक्षौ तु सगराः  
 सप्त सप्तद्वीपा वसुंधरा ॥ ऋग्वेदोऽथ जुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥२॥ इत्यभिषंध्य देवदानवसंबादे  
 इत्यादि प्रार्थयेत् ॥ इति कलशस्यापनम् ॥ अतः परं स्वर्णमर्थ्यासत्येशमूर्तिदुग्धजलपामृतक्ष्मापितं कलशं परिसंस्थाप्य अष्टशक्तिमहितः  
 सत्येशः सुप्रतिष्ठितो वादो भवतु इति प्रार्थित्वा कुर्यात् ॥ अथ पूजनम् ॥ उज्यक्षीरं समुद्रे स्मिन्व्योमि सत्ये च संस्थितः ॥ अत्र त्वं सत्ययासाद्वै सत्ये  
 श भवसन्निधौ॥१॥ भगवन्सत्येशहृद्गच्छ हतिष्ठ इत्यावाहनम्॥ सोममृद्यामिसंकाशं पद्ममष्टदलान्वितम्॥ गृहाण सनं सत्येश त्रैलोक्ये स्थिति  
 कारण ॥२॥ सत्येशाय नमः आसनं मम पर्यामि॥ रत्नाभरणसर्वगं सर्वदेवं नमस्कृतं ॥ पादौ गृहाण सर्वेश गंधपुष्पाक्षतैर्बुधम्॥३॥ इति पादौ सत्ये  
 श मुखमृष्टमत्येशमुक्तिदायकम्॥ सत्येश सत्ययायुक्तं गृहाण धर्ममोस्तुते॥४॥ इत्यर्थं ० गंगाजलसमापनितं सुवर्णकलशं स्थितम् ॥ गृहाणा  
 च मनर्वेत्रलोक्ये स्थापिष्यावना॥५॥ इत्याचमनम्॥ क्षीरसागं कच्छेत् लाहृपपानिदूना॥ त्राहि मां भूतभक्ष्येश दत्तेन जलविदुना॥६॥ इति स्नानम्  
 ततः पंचामृतस्नानम् ॥ अभिषेकः आचमनं हारस्वसर्वदुरितं येनाहं वैष्टिताहरे ॥ वस्त्रेण नेन रुद्रेण सत्येश कुरु वस्त्रिञ्जितम्॥७॥ इति वस्त्रं ० यज्ञे

योगतथामाल्यपवित्रत्वं सद्योच्यते॥ यज्ञोपवीतदानेन कुरुमां सर्वपावनम् ॥ ८ ॥ इति यज्ञोपवीतं ॥ सुगंधचंदनं दिव्यकेशरगरुसंयुतम् ॥ विलेपनं  
सुरश्रेष्ठं सर्वपापहरो भव ॥ ९ ॥ इति चंदनं ॥ सत्येशाय नमस्तुभ्यं मूर्तामूर्तस्वरूपिणे ॥ वासुदेवमहात्म्यकपिलदित्यभूधरा ॥ १० ॥ इति पुष्पाणि ॥  
वल्हभतिजगन्नाथकोमलतिमनोहरम् ॥ गृहाण तुलसीविष्णोयथास्तोषितो हरिः ॥ १ ॥ इति तुलसीपत्राणि ॥ शक्तिं द्रुद्युतो देवपूजाधूपसुरेश्वर ॥  
गृहाण त्वंतु सत्येश सत्यया सहस्रमाम् ॥ २ ॥ इति धूपं ॥ ज्योतीरूपमरूपं वा वंदति मुनिपुंगवाः ज्योतिर्मध्यस्थितो देवदीपं गृह्णन्नमोस्तुते ॥ ३ ॥  
इति दीपम् ॥ त्रातात्वमेव सत्येश सत्यया सह चिंत्यते ॥ गृहाण देववेशमनवेद्यमुतमम् ॥ १ ॥ इति नैवेद्यं ॥ नागयानमस्तेस्तु वासुदेवनमो नमः ॥  
त्रैलोक्यजगदधारत्राहिमामधुमुदतम् ॥ २ ॥ इति आचमनं ॥ नमस्ते देवेश पुराणपुरुषोत्तम ॥ पापेषां पशुमनार्थाय प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३ ॥  
इति क्रतुफलम् ॥ भूर्गीफलं सकपूरं बृलं मुमनोहरम् ॥ पवित्रकरणं नित्यं तंबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ इति तंबूलं ॥ अनेकजन्मसंभूतं पापं छिन्धि  
सुरेश्वर ॥ मया दत्तावदानेन भुक्तिमुक्तिप्रदो भव ॥ १ ८ ॥ इति हिरण्यदक्षिणं ॥ वाराहाच्युतयज्ञेशलक्ष्मीकान्तसुरेश्वर ॥ पुत्रपौत्रप्रदो विष्णोपापशत्रो  
निर्जना ॥ १ ९ ॥ इति नाराजनम् ॥ प्रभो सत्येश सत्यानां विभो विष्णो सुरेश्वर ॥ हरदुःखचरणचपापं जन्मशतोद्भवम् ॥ २ ॥ अनिरुद्धेश गोविंद विष्णो  
चक्रिन्नमोस्तुते पूजां गृहाण देवेश प्रीत्यस्वगुरुद्वज ॥ २ १ ॥ इति नमस्कारः ॥ (अत्राष्टौ शक्तीनां पूजाप्रथक् कार्या) अथ प्रार्थना ॥ अपराधमह  
त्वाणि लक्ष्मकोट्यदुतानि चानश्रयति तक्षणात्पापं सत्येशस्य च पूजनात् ॥ सत्येशपंचवक्त्रस्त्र्यंशसहजगतो वासुदेवः स्थितः पूर्वेन सिंहोद  
क्षिणो स्थितः ॥ कपिलः पश्चिमास्येतु वाराहश्चोत्तरे स्थितः ॥ ऊर्ध्ववक्त्रे च्युतो ज्ञेय एतद्देवक्यं पंचकम् ॥ सत्येशसंस्थितं राजपूजाकाले सदैव हि ॥ क्षी  
रोदूर्णं चंद्रस्य पद्मार्णिकं संस्थितम् ॥ पद्मकौमोदकं शंखचक्राण्यस्त्राणि विभ्रतम् ॥ २ ॥ इति प्रार्थना ॥ सनातिकेरावदानम् ॥ सत्येशाय नमस्तुभ्यं  
पापपरमेश्वर ॥ मया दत्तावदानेन भुक्तिप्रदो भव ॥ १ ॥ इत्यध्वं दत्त्वा नालिकेरमर्पयत् ॥ ततः प्रार्थयित्वा द्वाष्टा ब्राह्मणेन संकल्पः ॥ ततो हस्ते

जलमादाय कृतेनानेनपूजनेन अदृशक्तिमहितः श्रीसत्येशः प्रीयतामित्युज्जेत ॥ अथपंचकलशस्थापनम् ॥ तत्रादौ कुशत्रयतिलजलन्या-  
दाय देशकालौघंकीत्य काश्यगोत्रस्य ० प्रेतस्यप्रतत्त्वविमुक्तिपूर्वकविष्णुलोकप्राप्तिकामस्तथाचतुष्षट्पुमरणंतगतयत्किंचिदुमरणनिमि-  
त्तकनारायणबलिकर्मागतयाविहितपंचकलशपंचदत्तास्थापनपूजनमहंकरिष्ये इतिसंकल्प्य सत्यशहाक्षिणभागे स्थंडिलप्रवृद्धिदिक्षुमध्य-  
च क्रमेणपंचकलशान्यौक्तविधिनान्स्थापयेत् ॥ वक्ष्येनंपृथक्पृथक् ॥ पंचकलशेषु पंचधान्यानांस्थापनम् ॥ ब्रह्मकलशोधाधूमाः १ विष्णु  
कलशंतंडुलाः २ रुद्रकलशमुद्गाः ३ यमकलशोभाषाः ४ प्रेतकलशेतिलाः स्थाप्याः ५ ब्रह्मरौप्यमयःकार्यो विष्णुःस्वर्णमयाभवेत् ॥  
रुद्रस्ताम्रमयःकुयाद्यमोलोहमयःस्मृतः ॥ सीसमयस्तत्पुरुषः पंचमूर्तिकरुद्राहताः ॥ १ ॥ ततोब्रह्मादिमूर्तीनां दुग्धजलयारयाशुतागण-  
कृत्वाक्रमेणपंचकलशोपरिसंस्थाप्य पंचदेवानामावाहनंकुर्यात् ॥ तत्रप्रयोगः ॥ पूर्वदिशिश्नैरेदकपूरितेकलशे श्वेतवस्त्रवेष्टितायार्जत-  
प्रतिमायांब्रह्माणम् ॥ आवाहयामिदेवेशं ब्रह्मसूतौपितामहम् ॥ पुस्तकंचक्षुमूत्रच शूलहस्तकमंडलुम् ॥ १ ॥ हंसपुष्टसमाहृतं देवागणसे-  
वितम् ॥ आगच्छभगवन्ब्रह्मन्कुंभेस्मिन्संस्थितोभव ॥ २ ॥ भगवन्ब्रह्मन्निहागच्छ इदतिष्ठ इत्यावाह्यब्रह्मणेनमः इतिस्थापयेत् ॥ १ ॥  
पश्चिमादिशिगणेशकपूरितेकलशेपितवस्त्रवेष्टितायस्वर्णप्रतिमायांविष्णुम् ॥ आवाहयामिदेवेशं विष्णुत्रैलोक्यपूजितम् ॥ शंखचक्रादापद्म-  
चतुर्बाहुसौभनम् ॥ १ ॥ गरुडचसमाहृतं लक्ष्मीगणसमायुतम् ॥ आगच्छभगवन्विष्णो कुंभेस्मिन्संस्थितोभव ॥ २ ॥ भगवन्वि-  
ष्णोइहागच्छ इदतिष्ठ ॥ विष्णवेनमः इतिस्थापयेत् ॥ २ ॥ उत्तरादिशिभधुवृतसंयुतेकलशेस्तवस्त्रवेष्टितायाम्प्रतिमायांशिवम् ॥ आवा-  
हयामिदेवेशं शिवत्रैलोक्यधारिणम् ॥ वृषभंचसमाहृतं चंद्रावकृतशंखम् ॥ १ ॥ त्रिशूलपुष्पसंयुक्तं मुंडमालाविभूषितम् ॥ उभगा-  
णसमायुक्तं नागयज्ञोपवीतकम् ॥ आगच्छदेवेश कुंभेस्मिन्संस्थितोभव ॥ २ ॥ भगवन् शिव इहागच्छ इदतिष्ठ ॥ शिवायनमः

इतिस्थापयेत् ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशिकलशे कृष्णवस्त्रवेष्टितायांलहप्रतिमायांधर्मराजम् ॥ आवाहयामिदेवेशं यमजंतुभयंकरम् ॥ रौद्र  
 मूर्तिविरूपाक्षं कृष्णांजनसमप्रभम् ॥ १ ॥ माहिंरथमाहूढं दंडगुघ्रसमन्वितम् ॥ कर्मणांसाक्षिणं देवं धर्मार्थकामचितनम् ॥ आगच्छ  
 धर्मराजेंद्रं कलशेस्मिंस्थितो भव ॥ २ ॥ भगवन्यमराज इहागच्छइहतिष्ठ इत्यावाह्य यमायनमः इतिस्थापयेत् ॥ ४ ॥ मध्यमेकलशेकृ  
 ष्णवस्त्रवेष्टितायांसासकप्रतिमायांतत्पुरुषम् ॥ तत्पुरुषमावाहयामिस्थापयामि भगवैस्तत्पुरुष इहागच्छइहतिष्ठ तत्पुरुषायनम इति  
 स्थापयेत् ॥ ५ ॥ एवमावाहनंस्थापनचक्रत्वापुष्पाक्षतान्विकीर्यनामंत्रेणप्रत्येक्योऽंशोपचारः संपूज्य नमस्कृत्य इदमत्रांगयपुष्पधूप  
 दीपनैवेद्यफलतांबूलदक्षिणधूपचाराः पंचदेवताभ्योनमम ॥ पंचदेवतापुत्रजनविधेः परिपूर्णास्तु इति प्रार्थयेत् ॥ ततः पंचाक्षद्व्यंश  
 क्षराष्टक्षरमंत्रजपकरणार्थं ब्राह्मणान्दृत्वाजपांस्तद्वाराकारयेत् ॥ अथ पंचदेवतानार्तिर्पणम् ॥ तावद्देवपुष्पतिलदुग्धगंगोदकसर्वा  
 पधियवमिश्रितजलेनपात्रंप्रपूर्य कुशत्रयतिलजलान्यादाय अद्यकाश्यपगोत्रस्य अमुकप्रेतस्यासद्भविदुर्मुत्थुविनाशसद्भविप्रार्थयर्थं ब्र  
 ह्मादिदेवानां स्वैस्वैर्नाममंत्रैस्तर्पणंकारिष्ये इतिसंकल्प्य देवमुद्दिश्यतर्पयेत् ॥ तत्रादौ ब्रह्मतर्पणम् ॥ ब्रह्मातृप्यताम् १ आत्मभूस्तृप्य  
 ताम् २ सुरज्येष्ठस्तृप्यताम् ३ परमेष्ठीतृप्यताम् ४ पितामहस्तृ ५ हिरण्यगर्भस्तृ ६ लोकेशस्तृ ७ स्वयंभूस्तृ ८ चतुराननस्तृ ९  
 ९ धातातृप्यताम् १० अग्नयोनिरस्तृ ११ दुहिणस्तृ १२ विरिषिस्तृ १३ कमलासनस्तृ १४ स्रष्टातृ १५ प्रजापतिस्तृप्यताम्  
 १६ वेधास्तृप्यताम् १७ विधातातृप्यताम् १८ विश्वमृदृप्यताम् १९ विधितृप्यताम् २० कमलोद्भूतस्तृ २१ रजोमूर्तिस्तृ २२ सत्य  
 कस्तृ २३ हंसवाहनस्तृप्यताम् २४ निधनस्तृप्यताम् २५ नाभिजन्मातृप्यताम् २६ अनेन तर्पणेन भगवान्ब्रह्माप्रियताम् इति ब्रह्मतर्पणम् ॥

अथ विष्णुतर्पणम् ॥ केशवस्तृप्यताम् १ नारायणस्तृप्यताम् २ माधवस्तृप्यताम् ३ गोविंदस्तृ ४ विष्णुस्तृ ५ मधुहदनस्तृ ६ त्रि-  
 विक्रमस्तृ ७ वामनस्तृ ८ श्रीधरस्तृ ९ हृषीकेशस्तृ १० पद्मनाभस्तृ ११ दामोदरस्तृ १२ वासुदेवस्तृ १३ संकर्यण-  
 स्तृ १४ प्रद्युम्नस्तृ १५ अनिरुद्धस्तृ १६ मात्स्यस्तृ १७ कूर्मस्तृ १८ वाराहस्तृ १९ नारसिंहस्तृ २० वामनस्तृ २१  
 रामस्तृ २२ श्रीरामस्तृ २३ कृष्णस्तृ २४ बुद्धस्तृ २५ कल्किस्तृ २६ शौरिस्तृ २७ वैकुण्ठस्तृ २८ महाबलस्तृ २९  
 पुरुषोत्तमस्तृ ३० अजस्तृ ३१ पद्मनाभस्तृ ३२ अनंतस्तृ ३३ कपिलस्तृ ३४ शेषस्तृ ३५ हलायुधस्तृ ३६ बलभद्र-  
 स्तृप्यताम् ३७ अच्युतरत्नृप्यताम् ३८ श्रीपतिस्तृप्यताम् ३९ सत्येशस्तृप्यताम् ४० अनेनतर्पणनभगवान्निष्णुः प्रीयतामिति प्राथयेत् ॥  
 इति विष्णुतर्पणम् ॥ अथ रुद्रतर्पणम् ॥ भवस्तृप्यताम् १ भवनाशस्तृ २ महादेवस्तृ ३ उग्रस्तृ ४ उग्रनाशनस्तृ ५ शर्वस्तृ  
 ६ शशिमौलिस्तृ ७ रुद्रस्तृ ८ नीलकण्ठस्तृ ९ शिवस्तृ १० भवहारिस्तृ ११ ईशानस्तृ १२ सर्वकामप्रदस्तृ १३ देवाधि-  
 देवस्तृ १४ शंकरस्तृ १५ झूलपाणिस्तृ १६ शंभुस्तृ १७ स्वयंभूस्तृ १८ पार्वतीपतिस्तृ १९ स्थाणुस्तृ २० त्रिनेत्रस्तृ  
 २१ शशिमूषणस्तृ २२ महेश्वरस्तृप्यताम् २३ हरस्तृ २४ पशुपतिस्तृप्यताम् २५ अनेनतर्पणनभगवान्बुद्धः प्रीयतामिति प्राथयेत् ॥  
 इति रुद्रतर्पणम् ॥ अथ यमतर्पणम् ॥ यमस्तृप्यताम् १ धर्माग्रस्तृ २ मृत्युस्तृ ३ अंतकस्तृ ४ वैवस्वतस्तृ ५ कालस्तृ  
 ६ सर्वभूतक्षयस्तृ ७ औदुंबरस्तृ ८ दध्नस्तृ ९ नीलस्तृ १० परमेश्वरिस्तृ ११ वृकोदरस्तृ १२ चित्रस्तृ १३ चित्रगुप्तस्तृ  
 प्यताम् १४ पितृपतिस्तृ १५ समवर्तीतृप्यताम् १६ पतेरादृत्तृप्यताम् १७ कृतांतस्तृ १८ यमुनाभ्रातास्तृ १९ शमनस्तृ २० यम-  
 रादृत्तृप्यताम् २१ दंडधरस्तृ २२ श्राद्धदेवस्तृ २३ अनेनतर्पणनभगवान् प्रीयतामिति प्राथयेत् ॥ इति यमतर्पणम् ॥ अथ तत्पुरुष

तर्पणम् ॥ अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यपुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदाभव ॥ १ ॥ तत्पुरुषस्तुष्यताम् ॥ नारायणसुर  
 श्रेष्ठ लक्ष्मीकान्तवरप्रद ॥ अनेनतर्पणेनाद्य प्रेतमोक्षप्रदाभव ॥ २ ॥ तत्पुरुषस्तुष्यताम् ॥ जयत्वंदेववेश जयाजन्मजयाधर ॥  
 जयकामदभक्तानां प्रमोविष्णोन्मोनामः ॥ ३ ॥ तत्पुरुषस्तुष्यताम् ॥ हिरण्यगर्भपुरुषप्राधान्यस्वरूपिणे ॥ श्रीनमोवासुदेवायतु  
 द्ब्रजानस्वरूपिणे ॥ ४ ॥ तत्पुरुषस्तु ० ॥ अच्युतानंतगोविंद विष्णोर्माधवकेशह ॥ अस्यजीवस्यमोक्षार्थं सुप्रतीभवतर्पणे ॥ ५ ॥ तत्पुरु  
 षस्तु ० ॥ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् ॥ येनमस्यतिगोविंदं नतेपाविद्यतेभयम् ॥ ६ ॥ तत्पुरुषस्तुष्यताम् ॥ अनेनतर्पणेनभगवां  
 स्तत्पुरुषः प्रीयतामितिप्रार्थयेत् ॥ ततः पंचदेवतानांतर्पणं परिपूर्णमस्तु ॥ अनेनपंचदेवतातर्पणेनकृतंन(अपसव्यम्) काश्यपगोत्रस्य अमुक  
 प्रेतस्य असद्वृत्तिविनाशः सद्वृत्तिप्राप्तिरितिपठेत् ॥ ततस्तर्पणकर्मणः सांगतासिद्धये आमंत्रांतत्रिष्कयद्रव्यंवासंक्रव्यदद्यात् ॥ इति  
 पंचदेवतर्पणम् ॥ अथप्रायाश्चित्तहोमः ॥ तत्रतवदग्निस्थापनम् ॥ होतहरस्तमांत्रचतुरस्रस्थंडिलं कृत्वा कुशैःपरिसमुद्य तनैशा  
 न्यांपरित्यज्य गोमयोदेकेनापलिप्यष्टुवमूलेन मध्यप्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेणत्रिह्रिद्वयानामिकांगुष्ठाभ्यामृदमुद्रत्य पेशान्यां  
 क्षिप्वा तेंदशजलेनाभ्युक्ष्य तूर्णां कांस्यपात्रस्थमग्निस्थापयेत् ॥ ततोऽग्नेर्दक्षिणतःकुद्रमासनंविधायतदुपरिप्रागग्रान्कुशानास्तीर्थे  
 अग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा ब्रह्माणमुद्रमुत्तत्रोपरिविस्थास्मिन्नारायणब्रह्महोमकर्मणि स्वप्ने ब्रह्माभव इति प्रार्थयेत् ॥ ततः प्रणीतापात्रं  
 पुरतः कृत्वा वारिणापरिपूर्य्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्माणमवलोक्याग्नेरुत्तरतःकुशोपरि निदध्यात् ॥ ततः परित्तरणं प्राग्यैश्वर्यमिश्नुतु  
 भिर्देभः आग्नेयादीशानांतं ब्रह्मणेऽग्निपर्यंतं नैऋत्याद्वाय्वातमग्निः प्रणीतापयत परित्तरणं कृत्वा अग्नेरुत्तरतः पश्चिम  
 दिशिपवित्रच्छेदनाथं कुशत्रयं पवित्रार्थाग्रमनन्तर्गभेकुशपत्रद्वयं प्राक्षणीपात्रमाज्यस्थालीं चरुस्थालीं संमाज्जनकुशाः ३

उपयमनकुशाः ३ समिधस्तिस्रः श्रुवः आज्यं तंडुलात् अन्नपूर्णपात्रं च पवित्रच्छेदनकुशानापूर्ववृद्धिदिशि क्रमेणसादनीयम् ॥  
 ततः कुशपत्रद्वयमादाय अग्रतः प्रदेशमात्रप्रमाप्य कुशत्रयेण च्छित्त्वा सपवित्रकरणे प्रणीतोदकं त्रिःश्रेक्षणीपात्रेनिधाय अनामिकाङ्गुष्ठा-  
 भ्यापविव्रेणहीत्वा त्रिरूप्यवनम् ॥ ततः श्रेक्षणीपात्रं गृहीत्वा पवित्राभ्यां त्रिरुद्धत्वा प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तु  
 सेचनम् ॥ अग्रिप्रणीतयामध्ये श्रेक्षणीपात्रं निदध्यात् ॥ ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं निक्षिप्य प्रणीतोदकेन तंडुलान्प्रक्षाल्य चरुपात्रे  
 प्रणीतोदकं दत्त्वा तत्र तंडुलान्प्रक्षिप्य चरुमाज्यचण्डूहीत्वा युगपदशौ निधाय सिद्धे चरौ तृणादिप्रज्वाल्य प्रदक्षिणमुभयोरुपरिभ्रामयित्वा वह्नौ  
 प्रक्षिपेत् ॥ ततः श्रुवप्रतपनं सम्मार्जनकुशानामग्रेऽन्तरतो मूले वृद्धत् खुरसंमुख्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः त्रिःश्रेक्षणीपात्रे निदध्यात् ॥  
 ततः आज्यचरुचानीयं स्वपुतः आज्यं तदुत्तरतश्चरुनिधाय आज्यं प्रोक्षणीविक्षिप्तसूयं अवक्ष्य सत्यपद्रव्यतन्निरसनं पुनः प्रोक्षणीयुन्यवनम् ॥  
 ततः उश्वापोपयमनकुशान्चामहस्तद्वन्त्वा प्रजापतिमनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्तास्तिस्रः समिधः प्रक्षिपेत् ॥ ततः उपविश्य  
 सपवित्रप्रोक्षणयुदकेनाग्निपथुक्ष्य प्रणीतापात्रेपवित्रे निधाय पातितदक्षिणजातुः कुशाग्रेण ब्रह्मणान्वारव्यः सुसमिद्धतमेग्नौ आज्येन जु-  
 ह्यात् ॥ ( तत्र ब्राह्मणद्वारा तूष्णीं स्वाहातोहोमः ) प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये १ इति मनसा इन्द्राय स्वाहा इदं २ इत्याद्यारौ  
 अग्नये स्वाहा इदं ३ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय इत्याज्यभागौ ४ ॥ ततोऽग्निं सतृज्यं विष्णवे स्वाहा इदं विष्णवे २ इति चतुर्विंशत्यज्या-  
 हुतीर्हुत्वा ॥ लोमभ्यः स्वाहा इति लोमभ्यः २ त्वचे स्वाहा इदं २ लोहिताय ० इदं २ मेदोभ्यः ० इदं २ मोक्षिभ्यः ० इदं २ स्याभ्यः ०  
 इदं २ अस्थिभ्यः ० इदं २ मजाभ्यः ० इदं २ तेतेसे ० इदं १ पायवे ० इदं १ आयासाय ० इदं १ प्रयासाय १ सयासाय ० १ विद्या-  
 साय १ उद्यासाय १ श्रुचे १ शोचते १ शोचमानाय १ शोकाय १ तपसे १ तप्यते १ तप्यमानाय १ तप्ताय १ धर्मसाय १

निष्कृत्यै० १ प्रायश्चित्त्यै० १ भेषजाय० १ यमाय० १ अंतकाय० १ मृत्यवे० १ ब्रह्मणे० इदं० १ ब्रह्महत्यायै० इदं० १ विश्वेभ्यादेवेभ्यो०  
इदं० १ द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा इदं० १ इतितृष्णां ४२ आज्याहुतीहुत्वा चरुमादायाभिवायहस्तेनैव जुह्यात् ॥ गणपतये स्वाहा इदं० ४  
सूर्याय० इदं० ४ चंद्रमसे० इदं० ४ भौमाय० इदं० ४ बुधाय० इदं० ४ बृहस्पतये० इदं० ४ शुक्राय० इदं० ४ शनैश्चाराय० इदं० ४ राहवे० इदं० ४  
केतवे० इदं० ४ इतिहुत्वा॥ विष्णवे स्वाहा इदं० विष्णवे नम इति षोडशचर्वाहुतीः पुनर्जुह्यात् ॥ ततः नमो भगवत वासुदेवाय स्वाहा इदं० वि  
ष्णवे इति तिलयवाहुतयः १०८ अष्टोत्तरशतं हुत्वा अग्नये स्विष्टकृते० इदं० इति स्विष्टकृत् आज्येन अग्नये० इदं० १ वायवे० इदं० २ सूर्याय०  
इदं० ३ अग्निवायुसूर्येभ्यः० इदं० ४ अग्निवरुणाभ्यां० इदं० ५ अग्नये० ६ वरुणादिभ्यः० वरुणाय० ८ प्रजापतये० इति हामं कुर्यात् ॥  
ततः स्थंडिलस्य समतास्रुर्वादिदिक्षु इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो माषभक्तबलिदानं कृत्वा ॥ मृडाग्नये स्वाहा इदं० मृडाग्नये नम इति पूर्णाहु  
तिं दद्यात् ॥ ततः स्तरणक्रमेण बहिरुत्थाप्याज्येनाभिचार्य ॥ अग्नये स्वाहा इदं० इति हस्तेनैव जुह्यात् ॥ ततो भस्मवंदनं संसंवप्राशन  
माचमनं च कृत्वा प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य पवित्रे अग्नौ प्रक्षिप्य ईशान्यां प्रणीतान्युज्जीकुर्यात् ॥ ततो ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ अद्यकृतत्रा  
रायण बलि कर्मागतय विहितं प्रायश्चित्तं होमसांगता सिद्धयर्थं मिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिं वतमुक्तगोत्रायामुक्तराशौ ब्रह्मणाय दातुमहमुत्सृ  
जे इति संकल्प्य दद्यात् ॥ ब्रह्मार्थविमोक्तः ॥ ततो यथाशक्ति ब्रह्मणान् आमाम्रेन तन्निष्कृत्य द्रव्येण वा संतोष्य अनेन कर्मागदेवताः  
प्रयंतस्म इति प्राथयेत् ॥ प्रायश्चित्तं होमविधेः परिपूर्णतास्तु ॥ अनेन प्रायश्चित्तांगहोमेन कृतेन अमुक्तगोत्रे प्रतस्य दुर्भरणदोषनिवृत्तिः  
सद्गतिप्राप्तिः ॥ इति प्रायश्चित्तं होमः ॥ अथैकादशविष्णुश्राद्धानि ॥ तत्रादौ पूर्वाभिमुखः उपविश्य पवित्रधारणकृत्वा आचम्य एकादश  
चदानं संस्थाप्य विष्णुः शिवो यमश्चैव सोमश्च हव्यवाहनः ॥ कथ्यश्च मृदू रूद्रश्च पुरुषश्च क्रमानिमान् ॥ प्रेतस्तु दशमः प्रोक्तो विष्णुरेकादशः



स्मृतः ॥ इत्यैकादशप्रोक्ताः श्रद्धेस्मिन्नधिकारिणः ॥ अपवित्रः पवित्रोवा० पुंडरीकाशायनमः इति कुशत्रयजलेन श्रद्धयिद्वयाण्यात्मानं  
 चाप्तिचेत् ॥ ततोयवान्गृहीत्वा प्रथमचंद्रे विष्णुश्रद्धेक्षणमुपतिष्ठताम् ॥ द्वितीये शिवश्रद्धेक्षणमुपतिष्ठताम् ॥ तृतीययमश्रद्धे ० चतुर्थे  
 सोमराज ० पंचमहव्यवाहन ० षष्ठे कव्यवाहन ० सप्तममृत्यु ० अष्टमरुद्र ० नवमरुष ० दशमप्रतश्रद्धे ० एकादशे विष्णुश्रद्धेक्षणमुपति  
 ष्ठताम् ॥ इतिसर्वविकीर्य प्रथमविष्णवे एतत्पाद्यं पादवेन जनपादशालनं ॥ एवमवत्र एषवः पादावः ॥ इदमत्र चंदनपुष्पम् ॥ इदमा  
 चमनम् ॥ एवं चटपूजां कृत्वा आचमनम् ॥ यवगौरसर्पपदमंडपः ॥ पूर्वैर्नारायणः पातु वारिजाक्षस्तुदक्षिणे ॥ प्रबुद्धः पश्चिमे पातु सुदेव  
 स्तथोत्तरे ॥ उध्वगोवधनारक्षदधस्ताच्चित्रविक्रमः ॥ १ ॥ इति ॥ ततः कुशत्रययवजलान्यादाय देशकालास्मृत्वा असुकागोत्रस्य असुकाग्र  
 तस्य प्रेतत्वनिरूप्यमसहतिविनाशार्थं सहतिप्राप्त्यर्थं चतुःषष्टिदुर्मरणतर्गतयात्किंचिदुर्मरणदोषनिवृत्त्यर्थं नारायणबलिकर्माङ्गभूतै  
 कादशविष्णुश्रद्धानि विष्णवादि विष्णुपर्यन्तानि एकादिष्टविधिना एकतंत्रेण हंकारिण्ये इतिसंकरस्य एकादशचटेषु क्रमेण आसन  
 दानम् ॥ प्रथमं विष्णवे इदमासनम् १ द्वितीयं शिवाय इदमासनम् २ एवं सर्वत्रायमायसपरिवाराय ० ३ सोमराजाय ० ४ हव्यवाहनाय ० ५ कव्य  
 वाहनाय ० ६ मृत्यवे ० ७ रुद्राय ० ८ पुरुषाय ० ९ (अपसव्येन) प्रेताय इदमासनमुपतिष्ठतां ० १० (सव्येन) हस्तप्रक्षालनं सवत्र विष्णवे इदमासन  
 मा ॥ १ ॥ ततः एकादशार्घपात्रपूरणमौचित्यैकैकंदर्भदलपवित्रम् ॥ अष्टौ नाम इत्युदकपूरणम् ॥ येन्येनाम इतियवप्रक्षेपः ॥ प्रेतपात्रे तिलेन्येनाम  
 इतितिलान् तूष्णीं चंदनपुष्पाणि एकादशार्घपात्राणाम् अर्घ्याचनविधेः परिपूर्णतास्तु इति पठेत् ॥ ततः अर्घपात्रस्य पवित्रं पलाशपत्रे  
 धृत्वा अर्घपात्रमादाय अष्टौ नामः इत्यभिमन्त्र्य ॥ विष्णो एतदेवो नामः १ इति देवतीथेन पवित्रोपयर्थं जलक्षिं स्वासपवित्रमर्घपात्रं धृतः  
 स्थापयेत् ॥ एवं सर्वत्र ॥ शिव ० २ यमसपरिवार ३ सोमराज ४ हव्यवाहन ५ कव्यवाहन ६ मृत्यो ७ रुद्र ८ पुरुष ९

(अपसव्येन) अमुकगोत्रं प्रेत एतेहस्तावोभयादीयतेवोपतिष्ठतामिति १० ततः (सव्यम्) हस्तप्रक्षालनं पुनः विष्णो एतेऽर्चनमः ११ अत्र नपात्रन्युञ्जीकरणं नापर्वदनं तत्र एकादशचटेषु गंधपुष्पपट्टपदीपतांबूलवासांसिधृत्वा कुशत्रयवज्रालान्यादाय अधोत्यादिपठित्वा एतानिगंधपुष्पपट्टपदीपतांबूलवासांसिविष्णवादिविष्णुपर्यन्तैभ्यः प्रत्येकं एकतंत्रेणवा अक्षय्यमस्तु इत्युत्सृज्य ॥ अभीषेकैकादशश्राद्धानामर्चनविधेः परिपूर्णतास्तु इतिप्रार्थयेत् ॥ ततः एकादशपात्रेषु आमंत्रं निष्कण्ड्व्यवापृथक् परिविष्यमधुदत्त्वा पात्रमालभ्य विष्णवेनमः इत्यगुष्टनिवेश्य यवान्विकीर्य इममंत्रसोपस्करमदत्तमनृत्तपविष्णवेनमः इत्युत्सृजेत् १ ॥ एवं शिवाय २ यमायसपरिवाराय ३ सोमराजाय ४ हव्यवाहनाय ५ कव्यवाहनाय ६ मृत्यवे ७ रुद्राय ८ पुरुषाय ९ (अपसव्येन) अमुकगोत्रं प्रेत इदमन्नसोपस्करं तेभयादीयतेतवोपतिष्ठताम इत्युत्सृजेत् १० ॥ ततः (सव्येन) हस्तौप्रक्षाल्य विष्णवे ११ अन्नमुत्सृजेत् ॥ ततः पिण्डदानार्थं चतुरस्याः प्रादशमात्रा एकादशवेदिकाः कृत्वासर्वत्रकुशानस्तीर्य ॥ अवेनेजनपात्रेण प्रथमविष्णो अवेनेनिद्वतेनमः इत्यवनेज्य एवं शिवादिभ्योपिक्रमेणदद्यात् ॥ ततः पिण्डदानम् ॥ तिलघृतमधुधुतेनान्नैः एकादशपिण्डान्कृत्वा ॥ एकंपिण्डं कुशादां न्यादाय विष्णो एतेपिण्डोनमः इतिप्रथमस्थाने कुशोपरिदद्यात् ॥ १ एकक्रमेण शिव २ यमसपरिवार ३ सोमराज ४ हव्यवाहन ५ कव्यवाहन ६ मृत्या ७ रुद्र ८ पुरुष ९ (अपसव्येन) अमुकगोत्रं प्रेत एते पिण्डोभयादीयतेतवोपतिष्ठतामितिपितृतीर्थेन दशमस्थाने कुशोपरिपिण्डं दद्यात् ॥ १० ॥ ततः सव्येनाचम्य विष्णो एतेपिण्डोनमः इत्येकादशं दद्यात् ॥ ततः हस्तौप्रक्षाल्य आचम्यविष्णुस्मरेत् ॥ ततोऽवनेजनपात्रेण विष्णो अत्रप्रत्यवनेनिद्वतेनमः इतिप्रथमपिण्डेप्रत्यवनेजंनदत्वाक्रमेण शिवादिभ्योदद्यात् ॥ ततः सर्वत्रमूत्रचंदनपुष्पतुलसीशमीपत्रपट्टपदीपतांबूलपूगीफलदीनिदत्वा ॥ पिण्डानामर्चनविधेः परिपूर्णतास्तु (अपसव्येन) एभि

रेकादशश्राद्धपिण्डैः अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य सद्गतिः उत्तमलोकप्राप्तिः ॥ ततः (सव्येन) आचमनम् ॥ एकस्मिन्पत्रवृटे शिवा आपः संतु ॥ इति जलम् ॥ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम् ॥ अक्षतचारिणं चास्तु इति यवाश्चानि क्षिपेत् ॥ (अपसव्येन) सुप्राक्षितजलेन पिण्डोपरि सिंचनम् ॥ अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य सद्गतिः उत्तमलोकप्राप्तिः ॥ ततः (सव्येन) विष्णोः यद्दत्तमन्नपानादिकं तदुपतिष्ठतां यस्यादिष्टं तस्योपतिष्ठताम् ॥ एवं सर्वत्र शिवादीनां दद्यात् ॥ ततः पिण्डोपरि एकादशपवित्राणि समर्थं एकादशपिण्डोपरि जलधाराः पयोधारा वा अहस्तुत्सृजामीति पठित्वा ताम्रपत्रजलदुग्धसर्वापचितिलयवतुलसीचन्दनहिरण्यादिप्राक्षिष्य ताम्रपत्रेण पिण्डोपरि पृथक् पृथक् नाममंत्रेण विष्णवे नमः १ शिवाय नमः २ यमाय नमः परिवाराय ० ३ सोमराजाय ० ४ इन्द्रवाहनाय ० ५ कव्यवाहनाय ० ६ रुद्ररूपाय ० ७ मृत्यवे ० ८ पुरुषाय ० ९ प्रताय ० १० विष्णवे नमः ११ इति जलधारां दद्यात् ॥ ततः अनादिनिधनीदेवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ ११ ॥ अतस्मिन्पुष्पसंकाशं ० ॥ १२ ॥ कृष्णकृष्णकृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव ॥ संसारणवमशानां प्रसीदतु रुरुपतमः ॥ नारायणसुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्तजना देना ॥ अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ १३ ॥ इति प्राथयेत् ॥ ततो दक्षिणादानं तावत् ॥ हिरण्यं वस्त्राजते गुडज्यं लवणं तथा ॥ लोहदंडं स्तिला धान्यं महिषीं चामरं देत् ॥ एतानि एकादशदानानि तन्मूल्यद्रव्यं वा पुरतः संस्थाप्य देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रस्य प्रेतस्य दुर्मरण निमित्तकनारायणबलिं विहितैकादशश्राद्धसंगतासिद्धयर्थमिमानि हिरण्यादीन्येकादशदानानि विष्ण्वादि विष्णुपयतानां प्रीतये नानानाम गोत्रभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दत्तुं न हस्तुजे इत्युत्सृज्य विष्णोः प्रसादे देकादशश्रादानां परिणतांस्तु ॥ (अपसव्यम्) एभिरेकादशश्राद्धैः कृतै रमुकप्रेतस्य प्रेतस्वनिवृत्तिः असद्गतिविनाशः सद्गतिप्राप्तिः ॥ ततः (सव्येन) पिण्डानुत्थाप्य प्रवाह्य चटान्विमृज्य आचम्य

कर्मभूतिकामोविष्णुर्भवेत् ॥ श्राद्धीयवस्तुब्राह्मणायदद्याजलेवाक्षिपेत् ॥ इत्येकादशश्राद्धप्रयोगः ॥  
 तत्रादौसव्येनाचमनं कर्मपात्रपूरणम् ॥ अपवित्रःपवित्रोवाहितप्रोक्षणम् ॥ कुशत्रयवज्रान्यादाय अद्यन्नारायणबल्यंगमृतपचदेवताश्रा-  
 द्धान्येकतंत्रेणाहंकारिष्ये इत्युच्चार्य्य पंचचटान्स्थापयेत् ॥ ततःश्राद्धमुखःकुशोपग्रहःयवान्गृहीत्वा प्रथमंब्रह्मश्राद्धेक्षणमुपतिष्ठताम् १ विष्णु-  
 श्राद्धेक्षणम् ० २ रुद्रश्राद्धेक्षणम् ० ३ यमश्राद्धे ० ४ तत्पुरुषश्राद्धेक्षणमुपतिष्ठताम् ५ इतिसर्वत्राविकीर्य ब्रह्मणेत्तपाद्यंपादानेजनंपादशालनं  
 नमः एवंविष्णवादिभ्यः ॥ ततःएषवःपादाघातद्वमंत्रचंदनंपुष्पम् इदंवाःआचमनम् इतिचटपञ्जाविधाय आचमनंकृत्वा यवगौरमृपपान्गृहीत्वा  
 पूर्व्वेनारायणःपातु वारिजाक्षस्तुदक्षिणे ॥ प्रद्युम्नःपश्चिमेपातु वासुदेवस्तथोत्तरे ॥ ऊर्ध्वगोवर्धनेरक्षेदधस्ताच्चित्रिक्रमः ॥ १ ॥ इतिसर्वत्राविकी-  
 र्य्य नीविबंधंकुर्यात् ॥ ततः पंचश्राद्धेपहाराणांपवित्रतास्तु इति अन्नादिप्रेक्ष्य कुशत्रयादीन्यादाय देशकालौ स्मृत्वा ( अपमसव्यम् )  
 अमुकगोत्रस्यामुकप्रतस्यसद्गतिप्राप्त्यर्थं नारायणबल्यंगभूतं पंचदेवताश्राद्धमहंकारिष्ये इतिसंक्रुध्य ( सव्येन ) ब्रह्मणे इदमासनंनमः १  
 विष्णवे इदमासनंनमः २ रुद्रायइदं ३ यमायइदं ० ४ तत्पुरुषायइदं ० ५ इतिप्रत्येकंकुशत्रयं पूर्व्वायमुस्तुजेत् ॥ ततोहस्तप्रक्षालनम् अर्घपा-  
 त्रपूरणम् ५ कुशपवित्रधारणम् ५ अब्धोनामः इत्युदकं यवेभ्येनामः इतियवान् तूष्णींगंधपुष्पाणिचप्रक्षिपेत् ॥ ततः अर्घपात्राणामर्चनं  
 विधेः परिपूर्णतास्तु इतिपठित्वा प्रथमपात्रस्थंगंधवित्रंलशपत्रधृत्वा अब्धोनामः इत्यभिषंग्य ब्रह्मन्नेषतेहस्तावोनामः इतिदेवता  
 र्थेनपवित्रोपरि अर्घजलंदद्यात् ॥ एवमर्चयन् ॥ ततः पूजनंगंधपुष्पधूपदीपतांबूलवासोसिप्रत्येकंधृत्वा अब्धेत्यादिपठित्वा एतानिगंधपुष्प  
 धूपदीपतांबूलवासोसि ब्रह्मादितत्पुरुषेभ्यः प्रत्येकमक्षयमस्तु इत्युस्तुज्य अमीषांपंचश्राद्धानामर्चनविधेः परिपूर्णतास्तु इतिप्रा-

र्थयेत् ॥ आचमनम् ॥ ततः पंचपात्रेषु आम्रातंत्रिफ्रयाद्रव्यवांशुषकृषकृ परिविध्य मधुसूत्रा पात्रमालय्य विष्णवेनमः इत्यंगुष्ठं निवेश्य यवान्विकीर्य इदमन्नं सोपस्करं मदत्तममृतरूपं ब्रह्मेणमः इत्युत्सृजेत् १ ॥ एवं विष्णवे ० २ रुद्राय ० ३ यमाय ० ४ तत्पुरुषाय ० ५ चोत्सृजेत् ॥ ततः पिंडदानार्थं पंचस्थानानि निर्माय प्रत्येकं कुशत्रयमास्तीर्य ॥ अनेन जनपात्रेण ब्रह्मन् अत्रावनेनिश्चयेतमः ॥ इति प्रथमस्थाने अवेनज्य ॥ एवं विष्णु ० २ शिव ० ३ रुद्र ० ४ तत्पुरुषेऽप्योत्थवेननेन क्रमेण दद्यात् ॥ ततः तिलघृतमधुघृतेनात्रेण पंच पिंडान्कृत्वा एकापिंडं कुशत्रयादीन्यादाय ब्रह्मन् एषते पिण्डेनमः इति प्रथमस्थाने कुशोपरि दद्यात् ॥ १ ॥ एवं क्रमेण विष्णवे ० २ रुद्राय ० ३ यमाय ० ४ तत्पुरुषाय ० ५ च दद्यात् ॥ ततो हस्तप्रक्षालनमाचमनं विष्णुस्मरणचक्रुर्यात् ॥ ततोऽनेन जनपात्रेण ब्रह्मन् अत्र प्रत्यवनेनिश्चयेतमः इति प्रथमपिण्डे प्रत्यवनेन जनदत्त्वा क्रमेण विष्णवादिभ्यो दद्यात् ॥ ततः सर्वेषु पिण्डेषु मुत्राच्छादनं धूपधूपद्वीपतीर्तवल् पूगीफलदीर्निदत्त्वा पिण्डार्चनाविधेः परिपूर्णतास्तु इति प्रार्थ्य एभिः पंचश्राद्धपिण्डैः (अपसव्यम्) असुक्कात्रं ० प्रेतस्य सद्गतिं प्राप्तिः असद्गतिविनाशः इति पठेत् ॥ ततः (सव्येन) आचमनं मुद्राक्षितादिकरणं शिवायानः संतु सोमनस्यमस्तु अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति जलपुष्पाक्षतान्निक्षत्वा ॥ ब्रह्मेण यदत्तमन्नपानादिकं तदुपतिष्ठतामिति ॥ एवं विष्णवादीनाम् अक्षय्योदकं दद्यात् ॥ ततः पिण्डोपरि पवित्राणि समर्प्य ताम्रपात्रे जलदुग्धतिलसर्वापधियवतुलसीहिरण्यवादीनि प्रक्षिप्य तेन जलेन पिण्डोपरि पृथक्पृथक् नाममंत्रेण ब्रह्मेणनमः ब्रह्म इमांति जलधारासुतसुजामि इति प्रथमपिण्डे जलधारां दद्यात् ॥ एवं विष्णुरुद्रयमतनु रूपपिण्डेषु क्रमेण दद्यात् ॥ ततः अनादिनिधनो देव ० १ अतमोऽपि पुष्पसंकाश ० २ नारायणसुरश्रेष्ठ ० ३ कृष्णकृष्णकृपालोत्तम ० ४ इति प्रार्थ्यां दिक्षिणाद्रव्यगृहीत्वा अयकृते तत्पंचश्राद्धकर्मणः सां गतासिद्धयामिमां दिक्षिणां ब्रह्मादिप्रेतपयतेभ्यः प्रत्येकमक्षय्यमस्त्विदि दद्यात् ॥ ततः पंचदानानि ॥ धर्मस्य वर्ततेतु सुवर्णचक्रमाप्ति

लान् ॥ वृषभं संहिरण्यं च पंचश्राद्धेषु बुद्धिगता ॥ ३ ॥ यथाशक्ति कुर्यात् ॥ ततः पंचघटदानम् ॥ अद्येत्यादि पठित्वा अमुकगोत्रस्य ० प्रेतस्य प्रे  
 तवनिवृत्त्यर्थमुत्तमगतिप्राप्त्यर्थममुकदुर्मरणनिमित्तकनारायणबन्धुगभूतब्रह्मकर्मणः सांगतासिद्धयर्थं ब्रह्मप्रसन्नतार्थमिमं तर्थापूरितसफ  
 लं वस्त्रोपवीतान्नप्रतिमानालिकेः सहितं मुन्ययकलशं ब्रह्मदेवतमुकगोत्रायामुक्तशमणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ अनेन ब्राह्मप्रीयताम् ॥  
 एवं विष्णुरुद्रयमतत्पुरुषाणां प्रीतये क्रमेणोत्सृज्य दद्यात् ॥ ततः पंचश्राद्धपरिपूर्णतास्तु ॥ एभिः पंचश्राद्धैः कृतैः अमुकप्रे  
 तस्य सद्गतिप्राप्तिरसद्गतिविनाशः इति पठेत् ॥ ततः पिण्डानुत्थाय प्रवाह्य चटान्चिन्मृत्युदीपनिर्वाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या  
 चम्य कर्मपूर्त्तिकां मोविष्णुं स्मरेत् ॥ श्राद्धीयवस्तूनि ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपादयेज्जले वा क्षिपेत् ॥ ततो यथाशक्ति ब्राह्मणान् दीनंधपंगुप्रभृती  
 श्चामात्रेन निष्कृत्य द्रव्येण वा संतोष्य घृते सुखावलोकनं कृत्वा स्नानं कुर्यात् ॥ इति श्राद्धाणां नारायणबलिप्रयोगः ॥ अथ नारायणबल्युपक  
 रणानि ॥ विष्णोः स्वर्णप्रतिमे २ । रजतप्रतिमा १ । ताम्रप्र० १ । लोहप्र० १ । सीसकप्र० १ । स्वर्णशकलानि ८ । पंचरत्नानि ५ । चंदनम् । केशरम् ।  
 कर्पूरम् । धूपः । दीपवर्तिकाः ५० । पुष्पाणि विचित्राणि ॥ तुलसीपत्राणि । बिल्वपत्राणि । द्वर्गाः । नैवेद्यमोदकादि । तांबूलानि । पूर्णा  
 फलादि २५ । अतुलानि । एला । नालिकेरफलानि । दिव्यमृदा । धातुमृत्रम् । गोमयम् । गोमयम् । मधु । यज्ञोपवीतानि ५ । रक्तमूत्रम् । कुंकुमम् । श्वेतवस्त्राणि  
 १५ । रक्तवस्त्रे २ । पीतवस्त्रे २ । कृष्णवस्त्रे २ । कौशेयम् । तंडुलाः । गोधूमाः । मुद्गाः । मापाः । तिलाः । यवाः । मेवा । गुग्गुलुः । शर्करा । ताम्र  
 कलशः १ । मुन्ययकलशः ५ । शरावाः ५० । पत्रपुटकानि ५० । मृनयोपकुम्भाः १० । सप्तमृत्तिकाः ७ । पंचपल्लवाः ५ । सर्वौषधयः । गंगासृ  
 त्तिका । गंगोदकम् । सिंदूरम् । गौरसरपपाः । समिधः । आज्यम् । गव्यम् । क्षुवा । प्रणीता १ । प्रोक्षणी १ । आज्यस्थाली १ । चरुस्थाली १ । पत्रावल्यः १० ।  
 कार्पासम् । लवणम् । रजतम् । वस्त्रम् । गुडम् । तैलम् । धान्यम् । लोहदंडः १ । महिषीमूल्यम् । धेनुमूल्यम् । चापः । मूल्यम् । पलाशपत्राणि ।



पूगफलपंचरत्नादीनिनिक्षिप्य वस्त्रवेष्टनं धान्यसमर्पणं चकृत्वा तदुपरि पंचनक्षत्रदेवानां प्रतिमाः स्वर्णमयीः स्थापयेत् ॥  
 अथावाहनपूजनं च ॥ पूर्वदिशिदुग्धजलयूरीति कलशवस्त्रवेष्टितायां स्वर्णप्रतिमायां वसून् ॥ वसुभ्योनमः वसून् आवाहयामि  
 स्थापयामि ॥ १ ॥ इति स्थापयेत् ॥ दक्षिणे दधुदकपूरिते वरुणं वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥ इति स्थापयेत् ॥ पश्चिमे  
 घृतोदकपूरिते कलशे अजैकपादयनमः अजैकपादमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥ इति स्थापयेत् ॥ उत्तरे गोमयादकपूरि-  
 ते कलशे अहिर्धुन्यम् ॥ अहिर्धुन्यमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥ इति स्थापयेत् ॥ मध्यस्थे गोमूत्रोदकपूरिते कलशेषु  
 णं पूष्णेनमः पूष्णमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥ इति स्थापयेत् ॥ इत्यावाह्यवस्त्रादयो देवाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु इति प्रतिष्ठाप्य आ-  
 वाहनमंत्रैः षोडशोपचारैः प्रत्येकं पूजयेत् ॥ अनेन पूजेन वस्त्रादयो देवाः प्रीयन्तामिति पठित्वा चतुर्दशयमानां स्थापनं कुर्यात् ॥ तद्यथा-  
 यमायनमः यममावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ एवं सर्वत्र ॥ धर्मराजम् ० धर्मराजम् ० २ मृत्युर्वे ० मृत्युम् ० ३ अंतकायनमः अंतकम् ०  
 ४ वैवस्वताय ० ५ कालाय ० ६ सर्वभूतक्षयाय ० ७ औदुम्बराय ० ८ दक्षाय ० ९ नीलाय ० १० परमेश्वरिणे ० ११ वृकोदराय ० १२ चि-  
 त्राय ० १३ चित्रानुतायनमः चित्रानुतमावाहयामि स्थापयामि १४ हत्यावाह्यपुष्पाणि विकीर्य चतुर्दशयेभ्योनमः इति षोडशोपचारैः पू-  
 जयेत् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ होता हस्तामंत्रं चतुर्मुखं स्थण्डिलकृत्वा कुशः परिसमुद्भूतौ नान्यपरित्यज्य गोमयादकेनोपलिप्य सुभूलेन  
 मध्ये प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तारोत्क्रमेण त्रिरुल्लिख्य अनामिकां गुष्ठाभ्यां मृदुमुदृत्य ऐशान्यां क्षिप्वा तं देशं जलेनाभ्युक्ष्य तूर्णं किं स्तपत्रस्थम्  
 ग्निस्थापयेत् ॥ ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनादि च रुद्रपणाग्निपशुशणतकर्मकृत्वा आज्यनेजुद्वयात् ॥ ब्राह्मणद्वाराहमः ॥ प्रजापतये स्वाहा  
 इदं ० १ इन्द्राय ० इदम् ० २ अग्नये ० इदम् ० ३ सोमाय ० इदं ० ४ इत्याघारावाज्यभागो हुत्वा अग्निं संपूज्य गणपतिनवग्रहभ्यश्च रुहोमं कु-



र्यात्ततः वस्त्रादिपंचप्रधानदेवानांप्रात्येकं समिच्चरुतिलाज्यादिद्रव्यैष्टान्तरातमष्टाविंशतिमष्टौवाहुतीजुह्यात् ॥ तत्रमंत्राः ॥ वसुभ्यः स्वाहा इदं १०८ वरुणायस्वाहाइदं १०८ अजैकपदेस्वाहाइदम् १०८ अहिबुध्न्यायस्वाहा इदम् १०८ पूषणेस्वाहा इदं १०८ इति ॥ यमायस्वाहा इदं ८ धमराजाय ॥ इदं ८ मृत्यवे ॥ इदं ८ अंतकाय ॥ इदम् ८ वैवस्वताय ॥ इदं ८ कालाय ॥ इदं ८ सर्वेशाय ८ औदुवराय ८ दद्याय ८ नीलाय ८ परमिष्टेने ८ वृकोदराय ८ चित्राय ॥ इदं ८ चित्रगुप्ताय ॥ इदं ८ इतितिलहोमकृत्वा ॥ वरुणा ॥ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदं ॥ इतिस्विष्टकृद्वहोमं कुर्यात् ॥ ततः आज्येन अग्नये ॥ इदं १ वायवे ॥ इदं २ सूर्याय ॥ इदं ३ अग्निवाधुमूर्येभ्यः ॥ इदम् ४ अग्निवरुणाभ्यां ॥ इदम् ५ अग्नये ॥ इदम् ६ वरुणादिभ्यः ॥ इदम् ७ वरुणाय ॥ इदं ८ प्रजापतये ॥ इदं ९ इतिनवाहुतीर्ह्रस्वस्थंडिलं परितोदिकपालेभ्योमामभक्तवलीन्द्यात् ॥ अथपूणाहुतिः ॥ मृडाग्रयेस्वाहा इदमृडाग्रयेनमम-इतिपूणाहुतिर्ह्रस्वस्वरणक्रमेणबर्हिर्ह्रस्वाग्न्याध्वनाभिधाय्य अग्नये ॥ इदम् ॥ इतिहस्तेनैवजुह्यात् ॥ ततोभस्मवदनं संस्रवप्राशनमाचनंचकृत्वाप्रणीताजलेनशिरः संजुयपवित्रे अग्नौप्रक्षिप्य ऐशान्यांप्रणीतान्युच्चीकुर्यात् ॥ ततोब्रह्मणेपूण्यात्रदानं ब्रह्मप्रथिविमेकश्च ॥ ततःपंचमूर्तिदानम् ॥ अबोल्यादिपाठित्वा असुकप्रतस्यपंचकमृदुदोपपारिहाद्वारापुत्रादीनांस्वार्थिष्टानिवृत्त्यर्थमिमांस्वर्गभर्याधनिष्ठाप्रतिभामंडुवतांसतिलाग्रांसघटामोपस्करामसुकगोत्रायामसुकशर्मिणेनब्रह्मणायदातुमहमुत्सजे इतिसंकल्प्यदद्यात् ॥ १ ॥ एवं द्वितीयांवरुणदैवतांसमापान्नां ॥ २ ॥ तृतीयांमजैकपादद्वतांससर्षपान्नां ॥ ३ ॥ चतुर्थीमहिदुर्जन्यदैवतांसमुद्गान्नां ॥ ४ ॥ पंचमीपूषदैवतांससप्तधान्यां ॥ ५ ॥ इति ॥ ततः षड्ब्राह्मणभोजनसंस्करणः ॥ ततः पंचकलाशोदेकेनयजमानस्यसर्पारिस्त्राभ्यर्चकः ॥ ततः पंचदानानि ॥ पथस्विनीगाम् १ महिषीम् २ सप्तधान्यम् ॥ ३ ॥ सहिरण्यकृष्णवस्त्रातिलदानम् ॥ ४ ॥ सहिरण्यघृतम् ॥ ५ ॥ इतिदत्तचार्मकरायेत्रेदक्षिणदद्यात्ततोदेवताः

अग्नेच विमुच्यब्राह्मणेभ्योऽथ्यस्योदशिर्णादन्वा अनेनपंचकशांतिकर्मणा ( अपसव्यं ) अमुक ० प्रेतस्य पंचकजनितादुर्मरणेनपनित्र  
 तिः ( सव्यं ) ममगृहसकलदुरितोपशान्तिस्तु इतिपठेत् ॥ ततः कर्मपूतिकाभोविष्णुस्मृत्वा शान्त्युपकरणानि ब्राह्मणेभ्योदन्वा घृतेमुबल  
 कनं कृत्वास्नयात् ॥ इतिपंचकशांतिप्रयोगः ॥ अथ ग्रंथाऽलंकारो ग्रन्थकर्तृणामुभयकुलवर्णनं चादेशे विशाले हि मरौ बभूव वीकोजिनामा  
 नृपतिः पुरा हि ॥ तस्यैव नाम्ना खलु राज्यानी लोके विकानेर इति प्रसिद्धा ॥ १ ॥ तच्छास्ता राजनीतिज्ञो गङ्गासिंहो महीपतिः ॥ विद्रा  
 ज्जुरो हि धर्मात्मा गोविप्रप्रतिपालकः ॥ २ ॥ यस्य प्रीतिरभूदस्या गोरुण्डे सप्तमे नृपे ॥ नृपाणां भारतीयानां प्रातोच्चा पदपद्धतिः ॥ ३ ॥  
 तस्यैव राज्येऽतिमनोहरे पुरे श्रीरत्नदुर्गे नृपदुर्गमे शुभे ॥ विद्यासदाचारशुनैश्च सद्विजैर्धर्मनाढ्यैर्बहुभिश्च मण्डिते ॥ ४ ॥ आसिद्धिसिद्धा  
 न्ययगौडविप्रो माध्यन्दिनीयो बुधजीवराजः ॥ विवृद्धमानो विदुषां समाजे सुज्ञैर्नैः सर्वसमृद्धिभाक्सः ॥ ५ ॥ तस्यात्मजा बाणमितास्तु  
 सद्गुणाः सुवेदविद्याध्ययने च नैपुणाः ॥ आयातयातद्रिजशुद्धप्राङ्गणा वीर्येण संताडितैर्वीरदुर्गणाः ॥ ६ ॥ एतेषु मुख्यः किल रामकृष्णो  
 ज्ञानेन स्वर्पीकृतसर्वतृष्णः ॥ स्वबुद्धितः खण्डितवारिप्रश्रः सुभक्तिसंतपितदेवकृष्णः ॥ ७ ॥ तस्याऽभवत्राममिताः सुपुत्राः स्वधर्मरक्ताः  
 सुकलत्रभिन्नाः ॥ गृहेषु संलेखितस्यचित्राः श्रीकान्तपूजानिरताः पवित्राः ॥ ८ ॥ इमानि नामानि भवन्ति तेषां चतुर्षुजाल्यो विबुधो  
 ऽग्रजातः ॥ कस्तूरिचन्द्राभिधसज्जनेऽप्योऽपरो गुणी ज्येष्ठमुखस्तु रामः ॥ ९ ॥ तत्रापि मध्या निजवंशपालकाः कस्तूरिचन्द्राख्यमहत्सु  
 सन्तृताः ॥ तेषां सुपुत्रावसन्धवन्दितावास्तां किल द्वौ नितरां धरातले ॥ १० ॥ चतुर्थिलालाख्यगुह्यमुखाख्यौ सुज्ञौ गुणाढ्यौ निजघ  
 र्भरक्ता ॥ ज्येष्ठस्तथैव खलु पण्डिताग्र्यः श्रीशम्भुपादाब्जविलायचित्तः ॥ ११ ॥ पट्टशस्त्रवेत्ता श्रुतिकर्मरक्तः परोपकारी सुनिबन्धकर्ता ॥  
 दाता मनस्वी द्विजदेवभक्तो हुतावशिष्टासप्तानुरक्तः ॥ १२ ॥ यत्रमूर्ध्ववर्तिनि पिता कस्तूरिचन्द्रकः ॥ मातामहश्च श्रीरामो मातुलो निष्पु

दत्तकः ॥ १३ ॥ मुत्रं कात्यायनं यस्य शाखा माध्यन्दिनी किल ॥ श्रीवसिष्ठकुलं वित्तं स चतुर्थालयपण्डितः ॥ १४ ॥ एतादृशो गौड  
कुले शताब्द्यां निबन्धकर्त्ता न बभूव कश्चित् ॥ द्विःपण्णिबन्ध्या रचिता हि येन शिवस्य साम्बरस्य वप्रसादात् ॥ १५ ॥ शान्तिप्रतिष्ठाश्रा  
द्धानां ज्योतिषात्सर्गकर्मणाम् ॥ अनुष्ठानविधेश्चापि संस्काराणां विधेस्तथा ॥ १६ ॥ प्रायश्चित्तेश्च शुद्धेश्च वैद्यकद्वयापनस्य च ॥ तथा  
सद्धर्मणां ग्रन्था रचिता द्वादश त्विमे ॥ १७ ॥ ग्रन्थस्तृतीयस्तत्रायं पूर्णतामगमच्छुभः ॥ अनेन प्रीयतां शम्भुर्भवान्या सह सर्वदा ॥ १८ ॥  
स्वस्ति श्रीरामनगराजो भूपालिवरहरिकः ॥ चिरंजीवास्ततां मान्यो गङ्गासिंहो महीपतिः ॥ १९ ॥ धनवृद्धिर्धर्मवृद्धिः प्रजावृद्धिः सुख  
प्रदा ॥ आयुर्वृद्धिश्च भूयाद्वै महाराजस्य सन्ततम् ॥ २० ॥ श्रीमत्प्रभुप्रतापेन गोल्यात्रादिगणोऽखिलः ॥ युगपदैकदेशे हि जलं पास्यति  
निर्भयः ॥ २१ ॥ सर्वाः प्रजाः प्रजायन्ते सुखिनः खलु राजनि ॥ श्रीमति शासति राज्यं विद्यावृद्धिर्भविष्यति ॥ २२ ॥ इति श्रीमन्महा  
राजाधिराजराजजेन्द्रशत्रियकुलार्कमरुदेशाधिपतिश्रीगङ्गासिंहवर्मदेवानेराज्यान्तर्गतश्रीरत्नगढनिवासिना गौडवंशावतंसवासिष्ठ  
गोत्रोद्भवपण्डितश्रीरामकृष्णपौत्रेण श्रीकस्तूरिचन्द्रात्मजेन श्रीमहादेवभक्तनानाविधकर्त्रा पण्डितश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते  
चतुर्थीलालभास्करे महानिबन्धे गौडीयश्राद्धप्रकाशे तृतीये ग्रन्थे शूद्रश्राद्धविधानप्रकरणं समाप्तम् ॥ ७ ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥ ४४ ॥

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां खेमराजश्रीकृष्णदास इत्यनेन स्वकीये “श्रीविष्णुदेव” (स्टीम) मुद्रणालये मुद्रितम् ।

संवत् १९६६, शुके १८३० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पर्णनदाहविधानम्-वृद्धाहडे-अस्थीनि चैत्र लभ्यन्ते प्रोषितस्य नरस्य च । तेषां च हि गतिस्थानं विधानं  
 कथयाम्यहम् ॥ १ ॥ पश्चात्पुत्तलकं काट्यं सर्वोषधिसमन्वितम् ॥ पलाशस्य च वृत्तानां विभागं शृणु काश्यप ॥ २ ॥ कृष्णाजिनं  
 समास्तीर्णं कुशैश्च पुरुषाकृतिम् ॥ शतत्रयपाट्युक्तवृत्तैः प्रोक्तोऽस्थिसञ्चयः ॥ ३ ॥ विन्यस्य तानि वृत्तानि अङ्गेष्वेव पृथक्पृ  
 थक् ॥ चत्वारिंशच्छिरोभागे ग्रीवायां दश विन्यसेत् ॥ ४ ॥ विशतुरःस्थले दद्याद्दशतिर्जठरे तथा ॥ बाहुद्वये शतं दद्यात्कटि  
 देशे च विंशतिम् ॥ ५ ॥ ऊरुद्वये शतं चापि त्रिंशज्जघाद्वये न्यसेत् ॥ दद्याच्चतुष्टयं शिरसे षड् दद्या षण्द्वये ॥ ६ ॥ दशपा  
 दाङ्गुलीभागे एवमस्थीनि विन्यसेत् ॥ नारिकेलं शिरःस्थाने तुम्बं दद्याच्च तालुके ॥ ७ ॥ पञ्चान्तं मुखे दद्याज्जिह्वायां कदली  
 फलम् ॥ अन्त्रेषु नालिकं दद्याद्बालुकां घ्राणमेव च ॥ ८ ॥ वसायां मृत्तिकां दद्याद्धरितालमनःशिलाः ॥ पारदं रेतसः स्थाने पुरीषे  
 पित्तलं तथा ॥ ९ ॥ मनःशिला तथा गोत्रे तिलकल्कं तु संघिषु ॥ यवपिष्टं तथा मांसे मधु शोणितमेव च ॥ १० ॥ केशेषु च  
 जटाजूटं त्वचायां च मृगतवचम् ॥ कर्णयोस्तालपत्रं च स्तनयोश्चैव गुञ्जिका ॥ ११ ॥ नासायां शतपत्रं च कमलं नाभिमंडले ॥  
 वृत्ताकं वृषणद्वन्द्वे लिङ्गे स्याद्गुजनं शुभम् ॥ १२ ॥ घृतं नाभ्यां प्रदेयं स्यात्कर्णौ च त्र्युः स्मृतम् ॥ मौक्तिकं स्तनयोर्मध्ये कुंडु  
 मेन विलेपनम् ॥ १३ ॥ कर्पूरागुरुधूपैश्च शुभैर्माल्यैः सुगन्धिभिः ॥ परिधानं पट्टसूत्रं हृदये दीपकं न्यसेत् ॥ १४ ॥ ऋद्धिवृ  
 द्धी भुजौ द्वौ च चक्षुभ्यां च कपर्दकम् ॥ दन्तेषु दाडिमीबीजान्यङ्गुलीषु च चम्पकम् ॥ १५ ॥ सिन्दूरं नेत्रकोणे च ताम्बूलधूप  
 हारकम् ॥ सर्वोषधियुतं प्रेतं कृत्वा पूजां यथोदिताम् ॥ १६ ॥ साग्निकं चापि विधिना यज्ञप्रात्रं न्यसेत्क्रमात् ॥ श्रियः पुनन्तु

मे शिर इमं मे करुणेन च ॥ १७ ॥ प्रेतस्य पावनं कृत्वा शालग्रामशिलोदके ॥ विष्णुमुद्दिश्य दातव्या सुशीला गौः पयस्विनी ॥ १८ ॥  
 तिला लोहं हिरण्यं च काप्यासं लवणं तथा ॥ सप्तयान्यं क्षितिर्गाव एकैकं पावनं स्मृतम् ॥ १९ ॥ तिलपात्रं ततो दद्यात् पददानं  
 तथैव च ॥ कर्तव्यं वैष्णवं श्राद्धं प्रेतभुक्त्यर्थमात्मनः ॥ २० ॥ प्रेतमोक्षं ततः कुर्याद्धृदि विष्णुं प्रकल्प्य च ॥ एवं पुतलकं कृत्वा  
 दाहयेद्विधपूर्वकम् ॥ २१ ॥ तच्छुद्धये तु संस्कर्ता पुत्रादिनिष्कृतिं चरेत् ॥ त्रीन्कृच्छ्रान्पद्मादश च तथा पंच दशापि च ॥ २२ ॥  
 प्रायश्चित्तनिमित्तानुसारेण विधिवस्मृतः ॥ अशक्तौ गोहिरण्यादिप्रत्याग्रायं चरेदपि ॥ २३ ॥ आत्मनोऽनधिकारित्वे शुद्धिमेवं चरे  
 दधः ॥ अनुद्धेन तु पदतमुद्दिश्याशुद्धिमेव च ॥ २४ ॥ नोपतिष्ठति तत्सर्वभन्तारक्षे विनश्यति ॥ शुद्धिं सम्पाद्य कर्तव्यं दहनाद्यौ  
 द्धेद्विहिकम् ॥ २५ ॥ अकृत्वा निष्कृतिं यस्तु कुरुते दहनादिकम् ॥ मतिपूर्वममत्या च क्रमात्तन्निष्कृतिं शृणु ॥ २६ ॥ कृत्वाश्विमु  
 दके स्नानं स्पर्शनं वहनं कथाम् ॥ रज्जुच्छेदाशुपातं च तप्तकृच्छ्रेण नुध्यति ॥ २७ ॥ एषामन्यतमं प्रेतं यो वहेत दहेत वा ॥  
 कटोदकक्रियां कृत्वा कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत् ॥ २८ ॥ निमित्ते लघुनि स्वरूपं महम्महति कल्पयेत् ॥ मया तेऽयं समाख्यातो दुर्मृ  
 तस्य विधिः सग ॥ २९ ॥ तदा मृतं विजानेयादीपनिर्वाणमागतः ॥ अग्निदाहं ततः कुर्यात् सूतकं च दिनत्रयम् ॥ ३० ॥ दशाहं  
 गत्तोपहं च कर्तव्यं प्रेतपूर्वकम् ॥ एवं विधिं ततः कुर्यात्ततः प्रेतश्च मुक्तिमाप्नु ॥ ३१ ॥ मतिप्राप्त्या प्रतिकृतेः कृते दाहे स वै  
 यादि ॥ आयाति तेन कर्तव्यमब्जनं घृतकुण्डके ॥ ३२ ॥ जातकर्म्मोदिसंस्काराः कर्तव्याः पुनरेव तु ॥ उद्धामेव स्वकां भार्यामु  
 द्रवोद्विधिवनुमान् ॥ ३३ ॥ वर्षे पंचदशे पक्षिन् द्वादशे वा गते सति ॥ अज्ञातस्य प्रोषितस्य कृत्वा प्रतिकृतिं दहेत् ॥ ३४ ॥

आश्वलायनगृह्यसूत्रेण ॥ अस्थिनाशे पलाशवृत्तानां त्रीणि षष्टिशतानि च । पुरुषप्रतिकृतिं कृत्वाऽशीन्यूध्वं तु शिरसि । ग्रीवायां दश योजयेत् । उरसि त्रिंशत् दद्याद्विंशतिं जठरे तथा । बाहुभ्यां च शतं दद्याद् दद्यादंगुलिभिर्दश । दशाद्धं वृषणयोरष्टाद्धं शिश्रु एव च । ऊरूभ्यां च शतं दद्यात्त्रिंशत् जानुजंघयोः । पादंगुलिषु च दश एतत्प्रेतस्य लक्षणम् ॥ ऊर्णामूत्रेण संवेष्टय यवापिष्टेन लेपयेत् ॥ वायुपुराणे-कृष्णपक्षे पंचदश्यामष्टम्यां वा समाहितः । एकादश्यां विशेषेण ततः प्रभृतिं सूतकम् । त्रिात्र सर्ववर्णानामेष धर्मो व्यवस्थितः ॥ शुद्धितत्त्वे-पर्णनरं देहैव प्राक् त्रिपक्षात्कथंचन । पितृहा मातृहाष्टम्यां नैव दर्शं देह्यदि । आशौचाभ्यन्तरे यदि दहं न कुर्यात्तदा मरणदिनावधि त्रिपक्षानन्तरम् अमावास्यायां कृष्णाष्टम्यामेकादश्यां वा दाहः कार्यः । इति पर्णनरदाहविधानम् ॥ अथ पर्णनरदाहप्रयोगः ॥ त्रिपक्षादन्तरममावास्यायां कृष्णाष्टम्यामेकादश्यां वा तीर्थादौ गत्वा यथाविधि स्नानं कृत्वा संध्यादिन्यायश्चकं विधाय विष्णुं षोडशोपचारैः संपूज्य विदेशमरणजन्यदोषपरिहारार्थमष्टौ कृच्छ्रान् प्रायश्चित्तत्वेन कुर्यात् । तद्यथा । देशकालौ संकीर्त्य अमुकस्य विदेशमरणजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थमष्टौ कृच्छ्रान् अमुकप्रत्याप्तायेनाऽहमाचरिष्ये इति संकल्प्य । तदानीमेव ब्राह्मणेभ्यो यथा शक्तिप्रत्याम्नायद्रव्यं दद्यात् ॥ असंभवे संकल्पमात्रं कृत्वा अन्यत्कुर्यात् । पुनर्देशकालौ स्मृत्वा । अमुकस्य देशांतरमृतस्य एव दाहार्थं पर्णवृत्तादिभिर्नराकृतिं करिष्ये, इति संकल्प्य।शुद्धायां भूमौ कृष्णमृगचर्मास्तीर्य तदुपव्यंकं शिरो दक्षिणोत्तरायतं निधाय तदुपरि पलाशवृत्तानि तदभावे शारवृत्तानि न्यसेत् । तद्यथा । चत्वारिंशच्छिरसि ४०, दश ग्रीवायां १०, त्रिंशतमुरसि ३०, विंशतिं जठरे २०, बाहुद्वये शतम् १००, दश हस्तांगुलिषु १०, पंच वृषणयोः ५, चत्वारि लिंगे ४, ऊरुद्वये शतम् १००, जानुजंघयोः त्रिंशत् ३०, दश पादंगुलिषु च १०,

दद्यात्। एवं षष्ठ्यधिक३६० शतत्रयमितैः शरणैः शरीरं निर्माय उर्णासूत्रेण शरण सह बद्धा जलालोडितयवपिष्टेन अनुलिम्प्येत ततः शक्तौ सत्यां वक्ष्यमाणान्यन्यापि तत्तदंगेषु कार्याणि । शिरसि नारिकेलम् । तालस्थाने वतुलं तुवीफलम् । मुखे पंचारत्नम् । जिह्वायां कदलीफलम् । दंतेषु दाडिमबीजानि । कर्णयोस्तालपत्रे । नेत्रयोः कपहकौ । नेत्रकोणेषु सिंदूरम् । नासिकायां तिलपुष्पे वालुकां वा ॥ स्तनयोर्गुजाद्वयम् । नाभिमंडले कमलम् । आम्रफलं वा । वृषणयोर्वृताकद्वयम् । लिंगे गुंजनमृनाभौ घृतम् अंत्रेषु नालिकाम् भुजद्वये ऋद्धिवृद्धीअंगुलीषु चम्पकमवाते मनःशिलामापित्ते हरितालम्। कफं समुद्रफेनम्। रुधिरे मधु। पुरीषे गोमयम् । मूत्रे गोमूत्रम्। केशेषु जटा-जुटम् । त्वचायां मृगत्वचम्। रात्रे मनःशिलां लेपयेत्। लोमसि उर्णासूत्राणि। मांसस्थाने यवपिष्टम्। रोतेसि पारदम्। कौपीनि त्रिपुमूर्ध्नि कुंडुमेन विलेपनम् । परिधाने पद्मत्रयम् । उपहारे तांबूलम् । एवं सुशोभितं कृत्वा पंचगव्येन पंचाऽमृतेन च स्वस्वमंत्रेण प्रोक्षणं कुर्यात् ॥ तदथा । गायत्र्या गोमूत्रेण मानस्तोत्रे० इति गोमयेन आचम्यस्वेति दुग्धेन दधिक्राव्णो इति दक्षा तेजोसीत्याज्येन च प्रोक्षयेत् । पुनः पयः पृथिव्यामिति गोदुग्धेन । दधिक्राव्णो इति दक्षा । घृतं घृतं इति घृतेन मधुवाता इति मधुना अपाठं० रसमुद्रयेति शर्करादेकेन च स्नापयेत् । ततः आपोहिष्ठेति तिसृभिः । वरुणस्योक्तं० तत्त्वायामि० इममेवरुण० इत्यादिवारुणमंत्रैः कुशोदकेन प्रोक्ष्य अहतं वस्त्रं परिधापयेत्। यज्ञोपवीतद्वयं मंत्रेण परिधापयेत् । ततो गंधपुष्पमालादिभिः कर्पूराऽऽस्तुधूपैश्च तं भूषयित्वा मंत्रेण प्राणप्रवेशं भावयेत् । ॐ प्राणाः शिशुर्महीनां० १ इति मन्त्रं पठित्वा । ॐ यन्मेयमं वैवस्वतम्० १ इति स्पृष्ट्वा जपेत् । ॐ अयं स देवदत्त इति तमभिमुख्य । उश्वाग्निश्चेन्मृताधानवदग्निं श्रौतं रमार्तं चोत्पाद्य । अयमस्यावसथ्याग्निरयमस्यश्रौताग्निरिति वदेत् । ततः । शालग्रामशिलोदकेन

गंगोदकेन च संग्रहेष्वैतरेण्यादिदानम् । अष्टौ महादानानि च दत्त्वा समाचारस्तस्य नाभिदेशे घृतदीपमदीर्घकालवस्थायिनं न्यस्य  
 दीपस्य नाशे तस्य प्राणस्योत्कातिह्यतिव्या । ततो दहविधिना पुतलं दग्ध्वा स्वशुद्धयर्थं त्रीन् षट् द्वादश पञ्चदश  
 वा कृच्छ्रान् प्रायश्चित्तानुसारेण गोहिरण्यादिप्रत्याम्नायद्वारा संपाद्य दशगत्राद्यौधदेहिकं सर्वं कुर्यात् । एवं कृते प्रेतस्य मुक्तिर्भवति  
 इति पर्णनरदाहप्रयोगः ॥ अथ त्रिपिण्डीश्राद्धविधानम् ॥ स्कंदपुराणे-नारद उवाच ॥ देवदेव महादेव त्रैलोक्यस्याघनाशन ॥ प्रेतपीडा-  
 भिभूतानां कथं मुक्तिर्वद् प्रभो ॥ १ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ बाला युवानो वृद्धश्च कुले यस्य मृता ननु ॥ लुप्तपिण्डा लुप्ततोयाः स्नानं धर्मं  
 विना मृताः ॥ २ ॥ खट्वायां दुष्टसंस्पृष्टा ये मृता वंदित्वेभ्यः ॥ विना मन्त्राग्निना दग्धा येऽपमृत्युवशं गताः ॥ ३ ॥ शूद्रहस्तेविनो ये च  
 तत्कलत्रापहारिणः ॥ परदारता ये च परद्रव्यापहारकाः ॥ ४ ॥ वेदशास्त्रविहीनाश्च तथा ये वेदार्जदकाः ॥ आत्माभिमानिनो ये च  
 परपीडापरायणाः ॥ ५ ॥ एवं नानाविधा विप्राः प्रेत्य प्रेता भवन्ति ते ॥ स्त्रियश्च पुरुषाश्चैव इहैवाप्यन्यजन्मनि ॥ ६ ॥ कुले ग्रामे वने  
 गेहे पीडां कुर्वन्ति ते च वै ॥ कलहो यत्र नित्यं हि मलिनत्वं दारिद्र्यता ॥ ७ ॥ दैन्यं विपर्ययमृतिः सा पीडा प्रेतसंभवा ॥ राजचौराग्नि  
 दुष्टैश्च ह्रियन्ते यद्धनं वने ॥ ८ ॥ पापकर्मरतं वित्तं सा पीडा प्रेतसंभवा ॥ आत्मधर्मविहीनो यः परधर्मतो भवेत् ॥ परगेहनिवासश्च सा  
 पीडा प्रेतसंभवा ॥ ९ ॥ परस्त्रीषु परस्वेषु परद्रोहेषु ये स्ताः ॥ परवृत्तिं हि चेच्छन्ति सा पीडा प्रेतसंभवा ॥ १० ॥ पुत्रद्वेषः पितृद्वेषस्तथा द्वेषस्तु बंधुषु ॥  
 नानाजातिषु यो द्वेषः सा पीडा प्रेतसंभवा ॥ ११ ॥ एवं नानाविधाः पीडाः प्रेताः कुर्वन्ति जंतुषु ॥ तेषां पीडाविनाशार्थं त्रिपिण्डीश्राद्ध  
 माचरेत् ॥ १२ ॥ तीर्थे देवालोये नद्याः संगमे चाश्रमे तथा ॥ तडागोऽथत्यमूले वा त्रिपिण्डीश्राद्धमिष्यते ॥ १३ ॥ अद्वैतं श्राद्धमे



तद्धि विप्राभावे वदुत्रयम् ॥ दर्भणां तत्र बालस्तु युवानः स्थविरास्तथा ॥ १४ ॥ अनादिष्टमुगोत्रं तु प्रेतश्राद्धे प्रपूजयेत् ॥ यवपिष्टैः  
पायसेन तिलैः पिण्डत्रयं त्यजेत् ॥ १५ ॥ देशकालादिकं स्मृत्वा विष्णुपूजां समाचरेत् ॥ पौरुषेण तु मुक्तेन विष्णुमन्त्रेण वा सुतम् ॥  
॥ १६ ॥ स्थाप्य रम्यं तु कलशं सर्वोपस्करसंयुतम् ॥ प्रतिपूज्य महाविष्णुं बद्धा चैव वदुत्रयम् ॥ १७ ॥ कलशेषु तिथौ चैतं मंत्रराज  
मुदीरयेत् ॥ इमं लोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम् ॥ १८ ॥ मनसा वायुरूपेण कुशे त्वां योजयाम्यहम् ॥ दत्त्वा पिण्डत्रयं विप्रं  
प्रतिपूज्य यथाक्रमम् ॥ १९ ॥ गोदानं भूमिदानं च तिलदानं तथैव च ॥ हिरण्यसर्पिदानं च वस्त्रदानं गुडस्य तु ॥ २० ॥ रौप्यदानं  
लवणकं दश दानानि भगवतः ॥ दत्त्वा तानि महाबाहो विष्णुवर्णमाचरेत् ॥ २१ ॥ शंखोदकेन पयसा मिश्रेण तु तिलैः  
सह ॥ मुक्तेन पौरुषेणाथ मंत्रैरन्यतमैः शुभैः ॥ २२ ॥ ततस्तु प्रार्थयेद्देवं शंखचक्रगदाधरम् ॥ हृषीकेशं जगन्नाथं पुंडरीकायतेक्षणम्  
॥ २३ ॥ त्वया संरक्षिता देवा दैव्यभोजितर्जनादनं ॥ तथा मां प्रेतपीडाभ्यो रक्षस्व शरणगतम् ॥ २४ ॥ ततो विसर्जनं कृत्वा वदतां  
कलशैः सह ॥ गोदानानि ततो दत्त्वा यथोक्तानि यथाक्रमम् ॥ २५ ॥ ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्ष्या पायसेन घृतेन च ॥ एवं यः कुरुते  
मन्यस्तस्य पीडानिवारणम् ॥ २६ ॥ भविष्यति सदा पुत्रमुखं भुङ्क्ते स्ववेश्मनि ॥ इति त्रिपिण्डाश्राद्धविधानम् ॥ ॥ २७ ॥  
श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ त्रिपिण्डीश्राद्धपद्धतिः प्रारभ्यते ॥ तत्रादौ कर्ता तीर्थं गत्वा शुचिः सत् पूर्वमेव प्रकल्पिते गोमयोपलि-  
तस्थाने कृतकुशोपग्रहः स्वाचान्तः प्राणायामाऽङ्गन्यासं कृत्वा देशकालौ संकीर्य श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुपोडशोपचारपूजासहं करिष्ये।  
इति संकल्प्य पोडशोपचारशक्तौ पञ्चोपचारैर्यथोक्तपूजनं कुर्यात् ॥ ततो दक्षिणाभिमुख उपविश्य सम्मुखे कलशत्रयस्थापनं कुर्यात् ॥

भूरासीति मंत्रेण भूम्यै नमः । भूमिस्पर्शः ॥ धान्यमसीति धान्यम् ॥ आजिघ्नकलशमिति कलशाय नमः कलशं स्थापयामि । वरुणस्योत्तं  
 भनमसीति वरुणाय नमः जलम् ॥ यवोसियवयास्मादिति यवाच्च । याओषधीरिति ओषधीः ॥ याः फलिनीरिति फलम् ॥ हिरण्यगर्भेति  
 पंचरत्नम् ॥ तदुपरि सुवर्णमूर्तिस्थापनम् ॥ मूर्तेर्वेक्षणं वेष्टनम् ॥ मनोज्ञतिरिति प्रतिष्ठाप्य देवानवाहयेत् । प्रथमकलशे ॐ इदं विष्णु  
 विचक्रमेत्रेधानिदधेदम् ॥ समूढमस्य पा० सुरे ॥ इति सत्त्वरूपं विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥ द्वितीयकलशे—ब्रह्मज्ञानं प्रथमपुरस्ता  
 द्वितीयमतः सुरुचोवेनऽनावः ॥ सद्बुद्ध्याऽप्यमाऽस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ इति रजोरूपं ब्रह्माणमावाहयामि  
 स्थापयामि ॥ तृतीयकलशे—ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽततोत्तऽद्वेषेनमः ॥ बाहुभ्यामुत्तेनमः ॥ इति तमोरूपं रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥  
 ततस्त्रयाणां पूजनम् ॥ तत्र त्रयाणां ब्रह्मणानां वरणम् ॥ तेभ्यः कुण्डलमुद्रिकावस्त्रदानम् ॥ अथ चटत्रयस्थापनम् ।  
 आचमनम् । विष्णुस्मरणम् । ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुख उपविश्य प्राग्रेषु कुशेषु उदङ्मुखोपविष्टानां त्रयाणामेव  
 ब्रह्मणानां निमन्त्रणं कुर्यात् ॥ कुशजलतिलान्गृहीत्वा ॐ श्राद्धेक्षणं क्रियताम् । करवाम इति ॥ यथा प्राप्नुवन्तु भवन्तः ।  
 प्राप्ताः स्मः “अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः । भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकारिणा ॥ सर्वायासविनिमुक्तैः  
 कामक्रोधविष्विजैः ॥” भवद्भिन्निषिण्डीश्राद्धं पितृकार्यं सम्पाद्यमेव प्रसीदत ॥ इति नियमाऽथावेत् । यथा नामगोत्र अनिर्दि  
 ष्टसापेक्षकः सत्त्वरूपविष्णुशर्मन् एतत्ते पाद्यं पाद्यावनेजनं पादप्रक्षालनम् । एष अर्घः । इदमत्र चन्दनं च पुष्पं पादावे इदमाचमनी  
 यम् । एवमपरद्वये—यथानामगोत्र अनिर्दिष्टसापेक्षक रजोरूपब्रह्मशर्मन् एतत्ते पाद्यं पाद्यावनेजनं पादप्रक्षालनम् । एष अर्घः । इदमत्र

चंदनं च पुष्पं पादार्घ्यं । इदमाचमनीयम् ॥ एवं तृतीये-यथानामगोत्र अनिर्दिष्टसापेक्षक तमोहरूपद्रशर्मन् एतत्ते पादं पादावनेजनं पादप्रक्षालनम् । एष अर्घः । इदमत्र चन्दनं च पुष्पं पादार्घ्यं इदमाचमनीयम् ॥ ततः सव्यम् । आचमनम् । उपग्रहकुशान्यागः । पुनः कुशोपग्रहः । प्राणायामः । अपसव्यम् । दिग्बन्धनम् । “पूर्वे नारायणो देवो दक्षिणे मधुमदनः ॥ पश्चिमे वामनो देव उत्तरे च गदाधरः ॥ १ ॥ ऊर्ध्वं तु पुण्डरीकाक्ष अधस्ताद्विष्णुदेवताः ॥ निविबन्धनम् । सव्यम् । “श्राद्धभूमौ गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् ॥ ताभ्यां चैव नमस्कारं कृत्वा श्राद्धं समाचरेत् ॥ १ ॥ सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालंजरे गिरौ ॥ चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ॥ २ ॥ तेषुपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः ॥ प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ॥ ३ ॥ ” ततो देवताभ्य इति त्रिजपेत् ॥ ततः कर्मपात्रोदकपूरणम् ॥ आसनम् । मध्ये तिलयवतुलसीचन्दनप्रक्षेपः । कर्मपात्राभिभंजनम् । ॐ यद्देवा अवरो वरेण्यो वरदो वाहोऽधरणीधरः ॥ इत्यामन्नैः पाकप्रोक्षणम् । अपवित्रः पवित्रो वा इत्यादिश्लोकं पठेत् । त्रिपिण्डीश्राद्धोपहाराणां पवित्रता-स्तु । सव्यम् । देशकालादिकं स्मृत्वा मम शरीरस्य पुत्रकलत्रादेश्च सर्वेष्वनेनस्य प्रेतपीडापशान्त्यर्थं [अपसव्यम्] यथानामगोत्राणामनिर्दिष्टसापेक्षकानां सत्त्वरजस्तमोहरूपाणां विष्णुब्रह्मरुद्रशर्मणाम् । असद्वृत्तिविनाशपूर्वकस्वर्गलोकाद्यक्षयविष्णुलोकप्राप्त्यर्थं त्रिपिण्डीश्राद्धं महं करिष्ये इति संकल्पः ॥ आसनम् । यथानामगोत्राय अनिर्दिष्टसापेक्षकाय सत्त्वरूपाय विष्णुशर्मणे इदमासनं स्वधा । हस्तप्रक्षालनम् । उपग्रहविष्टरार्थम् । इमे कुशाः । एवम् । यथानामगोत्राय अनिर्दिष्टसापेक्षकाय रजोरूपाय ब्रह्मशर्मणे इदमासनं स्वधा । यथानामगोत्राय अनिर्दिष्टसापेक्षकाय तमोहरूपाय रुद्रशर्मणे इदमासनं स्वधा ॥ अर्घ्यपात्रपूरणम् । एकैकं पवित्रम् । शत्रो देवीत्युद-

कम् । तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनामतः ॥ प्रनमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृल्लोकान्प्रीणाहि नः स्वया ॥ इदमत्र चंदनं च पुष्पम् ।  
 अर्घपत्राणामर्चनविधेः परिपूर्णाऽस्तु स्वया भवतु । अस्तु स्वया । पवित्राणां पूजनम् । या दिव्या आपः पयसा संबभूवुयाऽ  
 आन्तरिक्षाऽउत पार्थिवीयां हिरण्यवर्णां यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः सऽस्येनाः सुह वा भवन्तु ॥ यथानामगोत्र अनिर्दिष्टसापेक्षक  
 सत्त्वरूप विष्णुशर्मन् एष तैर्दर्वः ॥ एवं रजोरूपः । एवं तमोरूपः । अत्र संस्रग्भावः । नाध्वनन्दनम् । न पात्रन्धुवर्जीकरणम् ।  
 [ सव्यम् ] ब्राह्मणानां पूजनम् । वाससां संप्रदानम् । पुष्पमालायज्ञोपवीतदानम् । धूपदीपौ । अर्चनसंस्करणः । [ अपसव्यम् ] यथादत्त  
 गन्धाद्यर्चनम् । यथानामगोत्राय अनिर्दिष्टसापेक्षकाय सत्त्वरूपाय विष्णुशर्मणे अक्षय्यमस्तु स्वया ॥ एवं रजोरूपाय तथा तमोरूपाय  
 अर्चनं गन्धादिकं स्वया ॥ अस्य श्राद्धस्य विधेः परिपूर्णाऽस्तु [ सव्यम् ] आचमनम् । ब्राह्मणानां परिवेषणम् । मधुपायसमिष्टान्नकृ  
 शरमाषान्नैर्भोजयेत् । ब्राह्मणभोजनसंस्करणः ॥ [ अपसव्यम् ] इदमन्नं घृताद्युपस्करसहितं यदत्तं यच्च दास्यामि तृप्तिर्यन्तं तत्सर्वं यथा  
 नामगोत्राय अनिर्दिष्टसापेक्षकाय सत्त्वरूपाय विष्णुशर्मणे अक्षय्यमस्तु स्वया ॥ एवं रजोरूपाय तमोरूपायेति वक्तव्यम् [ सव्यम् ]  
 ततस्तेभ्योऽपोशनार्थं जलदानम् । ब्राह्मणैस्तु वलिदानादिवर्जं जले प्राशनमात्रपूर्वकं भोक्तव्यं यथा विधिः ॥ ततो यज्ञोपवीती ग्राह्यमु  
 खो यजमानो गायत्र्यादिकं जपित्वा मधुवातेति त्र्यृचं च ब्राह्मणा स्वदितमिति वक्तव्यम् । सुस्वदितमिति प्रतिवचनम् । [ अपसव्यम् ]  
 पिण्डस्थाने रेखाकरणम् । अपहताऽअसुरा रक्षाऽसि वेदिषदः ॥ इति रेखोपरिक्षिणश्रात् कुशानास्तीर्थं ततोऽवनेजनं दद्यात् ।  
 यथानामगोत्र अनिर्दिष्टसापेक्षक सत्त्वरूप विष्णुशर्मन् अवनेनिह्व एवं ब्रह्मन् । एवं रुद्रः । यदि तु प्रेतोऽज्ञातनामगोत्रो

भवेत् तदाऽमुकोत्र सत्त्वरूप असुकोत्र एवं रजोरूपाऽमुकोत्र तमोरूपाऽमुकोत्रेति प्रयोक्तव्यमिति ॥ ततः पिण्डद्वये--मधुवा-  
ताऽकृतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ॥ माध्वीनः सन्त्वोपधाः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमन्यार्थव ठं रजः ॥ मधुधौरस्तु नः पिता ॥  
मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाऽस्तु सूर्यः ॥ माध्वीगावो भवन्तु नः ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥ ततः पिण्डस्थाने समूलदक्षिणाग्रान् कुशांकृत्वा तत्र  
सर्वतस्तिलान्माक्षिपेत् ॥ ततो यवादिपिष्टेषु मधुत्रयं संयोज्य क्रमेण पिण्डत्रयं कृत्वा प्रथमं यवापिण्डमादाय पितृवंशान्यादिश्लोकान्पठेत् ॥  
तिलयुक्तं पिण्डं वक्ष्यमाणैर्भद्रं दद्यात् "पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च ॥ गुरुश्चरुवधूनां ये चान्ये बान्धवाः स्मृताः ॥ १ ॥ ये मे  
कुले लुप्तापिण्डाः पुत्रदरैर्विवर्जिताः ॥ क्रियलोपगता ये च जात्यन्धाः पंगवस्था ॥ २ ॥ विरूपा आमरागभञ्ज ज्ञातज्ञाताः कुले मम ॥  
भूमौ दत्तेन पिण्डेन तृता यातु परां गतिम् ॥ ३ ॥ इदं यवमयं पिण्डं मधुसर्पिः समन्वितम् ॥ ददामि तस्मै प्रेताय यः पीडां कुरुते मम ॥ ४ ॥  
ये कोचप्रेतरूपेण वर्तते पितरो मम ॥ यवापिण्डप्रदानेन तृतिं गच्छन्तु शाश्वतीम् ॥ ५ ॥ ये केचिद्विवि तिष्ठन्ति प्रेताः सात्त्विकरूपिणः ॥  
सात्त्विकपिण्डदानेन तृतिं गच्छन्तु मेऽक्षयम् ॥ ६ ॥ यथानामगोत्र अनिर्दिष्टसाम्येऽपेक्षकसत्त्वरूपविष्णुशर्मन् एष ते पिण्डः स्वधा नमः  
॥ १ ॥ द्वितीयं ब्रीहपिण्डमादाय पितृवंशेति पूर्ववत्पाठेन वा पिण्डं दद्यात् ॥ तत्र मन्त्राः ॥ "इमं ब्रीहमयं पिण्डं मधुत्रयसंयुतम् ॥ तत्सुक्तयै  
प्रयच्छामि पीडां ये कुर्वते मम ॥ १ ॥ ये केचिद्वायुरूपेण वर्तन्ते पितरो मम ॥ तण्डुलपिण्डदानेन व्रजन्तु गतिमुत्तमाम् ॥ २ ॥ अन्तरीक्षे  
च ये जाता राजसा वायुरूपिणः ॥ राजसपिण्डदानेन तृत्यन्तु संसुदान्विताः ॥ ३ ॥ यथा ॥ रा० ब्रह्मशर्मन् एष ते पिण्ड इत्यादिकं पठेत्  
तृतीयं तिलमयं पिण्डमादाय पितृवंशेति पठेत् ॥ "इमं तिलमयं पिण्डं मधुना सर्पिणा युतम् ॥ तेभ्यो ददामि ये पीडां मे कुले कुर्वते



श्रितं जलं कृत्वा शंखोदकेन शालग्रामशिलोपरि तद्भावकुशखण्डौ वैदिकपौराणिकैव णवमंत्रान्पठन् तर्पणं कुर्यात् ॥ असहस्रशार्पा ॥ २२ ॥  
 अदित्यै व्युन्दनमसि ० । तद्विष्णोः ० । उर्गसि ० । एषा ते शुक्र ० । अग्रेस्तनूरसि ० । रक्षाहणो वो बलगह ० । उरुविष्णो ० ।  
 अत्यन्यौ २ याते धामान्युधमसि ० । मित्रावरुणाभ्यां त्वा ० । उपया ० स्यादित्ये धातारातिः इन्द्रश्च विधेदेवा अं० अन्यष्टु० सोमं०  
 राजानं ० । अग्निरकाक्षरेण ० । प्रपर्वतस्य ० । वरास्त्वाधायंतु ० विष्णोः क्रमोऽसि ० । विष्णोः कर्माणि ० । तद्विष्णोः ० । अग्निभा-  
 गोऽसि ० । प्रोथदक्षो ० । आपितन् अग्रयेस्वाहा ॥ वायुश्चा ० । अश्वस्तु ० । वृश्निस्तिरश्चीन ० । कृष्णग्रीवा ० । उन्नतऋषभो ० । एता-  
 ऐन्द्राश्चा ० कृष्णाभौमा ० । धूमा च संन्यया ० । कृष्णग्रीवा ० । बभ्रव उपधस्ता धूमा बभ्रुनीकाशाः प्रजापतये च ० ॥ ऐरापहोरे ० । सुद्धो-  
 वैश्वदेवः ० । शादन्दद्वि ० । इंद्राग्न्योः पक्षतिः । अथैतान् ० । तन्मित्रस्य ० । आकृष्णेन ० । अग्न इन्द्र ० । त्रीणि पदा ० । तद्विप्रासो ० । एवमेतैर्मन्त्रै-  
 स्तर्पणं कृत्वा पौराणिकैर्मन्त्रैस्तर्पणं कुर्यात् । ते च मन्त्राः--अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षयः पुण्डरीकाक्षः प्रंतमो-  
 क्षप्रदोभव ॥ १ ॥ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् ॥ ये नमस्यति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥ २ ॥ कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमग-  
 तीनां गतिर्भवा ॥ संसाराणवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ नारायण सुरेश्चष्ट लक्ष्मीकांत वरप्रद ॥ अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भवा ॥ ४ ॥  
 हिरण्यगर्भः पुरुषः प्रजानां व्यक्तिकारकः ॥ अस्य प्रेतस्य मोक्षार्थं सुप्रतीतो भव तर्पितः ॥ ५ ॥ अथ विष्णुनामभिस्तर्पणम् ॥ केशवस्तु  
 प्यतु ० । पद्मनाभस्तु ० । जनार्दनस्तु ० । अनंतस्तु ० । दामोदरस्तु ० । हृषीकेशस्तु ० । लक्ष्मीकेशस्तु ० । माधवस्तु ० । मधुसूदनस्तु ० ।

वामनस्तु० । कृष्णस्तु० । वासुदेवस्तु० । वैकुण्ठस्तु० । विष्णुस्तु० । अच्युतस्तु० । श्रीपतिस्तु० । श्रीधरस्तु० । गोविन्दस्तु० । त्रिविक्रमस्तु० ।  
 चक्रपाणिस्तु० । गदाधरस्तु० । नारासिंहस्तु० । श्रीरामस्तु० । नारायणस्तु० । उपेन्द्रस्तु० । शार्ङ्गपाणिस्तु० । श्रीवत्सलाब्जनस्तु० ।  
 पीताम्बरस्तु० । असुरान्तकस्तु० । चतुर्भुजस्तु० । नरोत्तमस्तु० । पुरुषोत्तमस्तु० । अनिरुद्धस्तु० । संकर्यणस्तु० । वासुदेवस्तु० । अधोक्षजस्तु० ।  
 यज्ञवाराहस्तु० । गोपालस्तु० । गोपीपतिस्तु० । गुणतीतस्तु० । गरुडध्वजस्तु० । चाणूरमथनस्तु० । परमात्मा तु० । परमेश्वरस्तु० ।  
 निरामयस्तु० । निर्विकारस्तु० । निर्विकल्पस्तु० । निष्कलंकस्तु० । निर्गुणस्तु० । सर्वेश्वरस्तु० । हिरण्यगर्भस्तु० । वेदपुरुषस्तु० । उद्यो-  
 तिःस्वरूपस्तु० । प्रद्युम्नस्तु० । शेषशायीतु० । जगन्नाथस्तु० । गदाधरस्तु० । गरुडवाहनस्तु० । मुकुन्दस्तु० । धारणीधरस्तु० । अक्ष-  
 यमोक्षप्रदस्तु० । शेषोदकं शालग्रामशिलोपरि पिंडोपरि च ॥ [ अपसव्यम् ] यथानामगोत्राणां मोक्षार्थम् इदमुदकमुपतिष्ठतु ॥ अथ  
 कलशोदकं पिंडोपरि सिञ्चेत् । प्रथमं कलशं गृहीत्वा--“विष्णुकलशे स्थितं तोयं विष्णुसूक्ताभिर्मंत्रितम् ॥ अभिषिञ्चन्तु ततोयं प्रेतत्वं  
 च निर्वर्तयेत्” ॥ १ ॥ विष्णुलोकप्राप्तिरस्तु ॥ द्वितीयं कलशं गृहीत्वा--“ब्रह्मकलशे स्थितं तोयं ब्रह्मसूक्ताभिर्मंत्रितम् ॥ अभिषिञ्चन्तु  
 ततोयं प्रेतत्वं च निर्वर्तयेत्” ॥ २ ॥ ब्रह्मलोकप्राप्तिरस्तु ॥ तृतीयं कलशं गृहीत्वा--“रुद्रकलशे स्थितं तोयं रुद्रसूक्ताभिर्मंत्रितम् ॥ अभिषि-  
 ञ्चन्तु ततोयं प्रेतत्वं च निर्वर्तयेत्” ॥ ३ ॥ रुद्रलोकप्राप्तिरस्तु ॥ [ सव्यम् ] आचमनम् । मुद्रांशोदिकरणम् । ततो ब्राह्मणाः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।  
 इति ब्रूयात् । स्वस्ति सर्वेभ्यः इति प्रतिवचनम् ॥ [ अपसव्यम् ] अक्षय्योदकदानम् । यथानाम । यद्दत्तमन्नपानादिकं तदुपतिष्ठताम् ।  
 एवं रजोरूपतमोरूपस्य । येषामुद्दिष्टेषामक्षय्यमस्तु । [ सव्यम् ] गोत्रं नो वद्धनाम् । दातारो नोऽभिर्वर्द्धन्ताम् । वेदाः संततिरेव च”



॥ श्रद्धा च नो माव्यगमद्वुद्दयं च नोस्तु । अन्नं च नो बहु भवेदतिथीश्च लभेमाहे । याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन ॥  
 मायाचेथाः । एताः सत्या आशिपः सन्तु ॥ [ अपसव्यम् ] स्वर्वा वाचयिष्ये । वाच्यतामित्यनुज्ञातः अनिर्दिष्टसापेक्षकेभ्यः स्वधोच्य  
 ताम् । अस्तु स्वधेयुच्यमाने उर्जं वहतस्मृतं घृतं पयः कीलालम्परिब्रुतम् ॥ स्वधास्थतर्पण्यत मे पितृन् ॥ इत्युदकधारां दद्यात् ॥  
 दक्षिणादानम्-कृतैतन्निर्दिष्टाद्रसांगतामिद्व्यर्थं वस्त्रं तन्निष्क्यारीभूतं द्रव्यं वा दक्षिणां मुसवासताम्बूलं यथानामगोत्राय० अक्षय्यमस्तु ।  
 स्वधाकृतैस्त्रिपिण्डी० । यथानामगोत्राय० रुद्रशम्भणे अक्षय्यमस्तु । स्वधावस्त्रदानम् । शय्यादानम् । कमण्डलुदानम् । छत्रदानम् ।  
 उषानदानम् । भूमिदानम् । अन्नमिष्टान्नादिसकलपदार्थदानम् । हीरकमुक्ताफलदिदानम् । ततस्तान्प्राथयेत् । “दिव्यन्तरी  
 क्षभूमिस्थाः सत्त्विका राजसास्तथा । प्रेताश्च तामसा येऽन्ये शान्तिं यच्छन्तु तर्पिताः” ॥ [ सव्यम् ] “अन्नं च नो भवेदतिथीश्च लभे  
 महि ॥ याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन ॥ १ ॥ मा याचेथा एता आशिपः सत्याः सन्तु ॥ स्वयमेव तिलकं कुर्यात् ॥  
 [ अपसव्यम् ] पिंडोद्धरणभाजनानि चालयेत् ॥ हस्तप्रक्षालनम् । पुनः पृच्छ्या । अथ पूर्वोच्चारिते काले भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रुतिर्था  
 विष्णुप्रसादात्० ॥ अमुकमासे पक्षे तिथौ वासरे नक्षत्रे करणेत्यादि । एवंगुणविशिष्टशुभपर्वणि तिथौ [ अपसव्यम् ] यथानामगो  
 त्राणां सत्त्वरजस्तमोर्हृणामनामयशाश्वतब्रह्मविष्णुशिवलोकप्राप्त्यर्थं त्रिपिण्डीश्राद्धस्य विधेः परिपूर्णतास्तु० अस्त्विदं ब्राह्मणो ब्रूयात् ।  
 अभिरम्यताम् । आमामाजस्य प्रसवो जगम्यादे मे द्यावापृथिवी विश्वरूपे ॥ आमारांताम्पितृमातरा चामासामोऽअमृतत्वेन गम्यात्

[ सव्यम् ] आचमनम् । “अणुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च । प्रयच्छन्तु तथा राज्यं प्रीता नृणां पितामहाः ॥ १ ॥ इति ब्राह्मणैः कर्तुराशिषो देवाः । ययं कामं कामयते सोऽस्मै कामः समृध्यते । श्राद्धं च परिपूर्णार्थं स्वर्गं मोक्षं सुखानि च ॥ १ ॥ विष्णुपूजनमहं करिष्ये । यस्य स्मृत्या च नामोत्तया तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ १ ॥ यन्न कृतं तत्परिपूर्णमस्तु । स्वास्ति भवंतो ब्रुवन्तु स्वास्ति ॥ इति त्रिपिण्डिश्राद्धपद्धतिः सम्पूर्णा ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥



इदं पुस्तकं सुमन्य्यां खेमराजश्रीकृष्णदास इत्यनेन स्वकीये “श्रीविष्णुधर” (स्टीम्) मुद्रणालये मुद्रितम् । संवत् १९६५, शके १८३० ॥

# कर्मकाण्डप्रयोगादि ग्रंथाः ।



नाम.	नाम.
संस्कारास्ताः—( शुद्धयजुर्वेदाय गमोयानादिभिर्लक्षे सम प्रस्ताकं संस्कारां विधि, प्रयोग और संस्तुति ) संस्काराणां कर्तव्यतापर्यन्तव्यक्तो अति उपयोगी है .... .... २॥॥)	श्राद्धभोगाख्या—( शुद्धयजुर्वेदाय ) गुर्जर और दक्षिणायवर्गको कर्तव्य- न्मप्रविधानपद्धतिः—मनुष्यको यह आर्य हस्तपर प्रत्येक ग्रहके सोत्र पाठादि पठनेको अवश्य लेना चाहिये .... .... १)
शान्तिप्रकाश—इसमें पहिले गणपत्यादिपूजन, पुण्याहवाचन, कथ्यन्यासानादि और विनयकादि ३० शान्ति प्रयोग आनुशान्तिप्रयोगादि संस्तुति हैं .... .... २)	द्वाराधिकनारायण—पञ्चोदयनाथके वैदिक मंत्रोंमें यथापचार पूजा प्रकरणादि श्राद्धविधिक—सम प्रस्ताकं श्राद्धको विधि प्रमाणयुक्त .... .... ३)
गौडियश्राद्धप्रकाश महाविधि—इसमें श्राद्धयज्ञका श्राद्धमें आनाथ यज्ञाण महाल- यादि निर्य और श्राद्धप्रयोग श्राद्धश्राद्ध संकल्पश्राद्ध हस्तश्राद्ध पञ्चदश- दिश्राद्ध मासिकश्राद्ध मन्वादिश्राद्ध नाराश्राद्धादि बहुतसे श्राद्ध और विष्ण्य दिपूजन पितृतर्पणादि अर्घ्य संहार हैं चारावर्णाश्राद्ध उपयोगी हैं .... ग्रहशान्ति—( शुद्धयजुर्वेदाय ) यज्ञोपवीत विधादि उपक्रममें बहुत उपयोगी हैं .... .... ४)	श्राद्धमयूक— मंत्रोवापनको मुनि—मंत्रोंके उवाचनमें अति उत्तम है .... अन्योपनर्क—( यजुर्वेदाय प्रतिलेखका ) प्रमदितसमें लक्ष पञ्चदशदिश्राद्ध और मासिकश्राद्ध रजवत्यादिमण्ये कर्तव्यप्रायश्चित्तादि अत्यन्त उपयोगी हैं गथायात्रापद्धतिः—गथाओंमें श्राद्धादि कर्तव्यता विधि है ....

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—  
खेमराज श्रीकृष्णदास, “श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टोर्स-मेस-मुंबई

